HAREM HISTORIES

Envisioning Places and Living Spaces

Table of Contents

[xxxxxxx 3 xxx, xxxxxx xxx xxx xx xxxxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxx xxxx xxx, xx xxxxx xx xxxxx xx xxxxxxxxx xxxxx xx xxxxxxxx xxxx xxxx xxxxx xxxx xxxxx xxxx xxx xx xx xxxxxxx xxxxxxx xx xxx xxx xxx xx xxxx xxxxx xxxx xxxx xx xxxx xx,
xx xxx xxx xxxxxxxx

HAREM HISTORIES

Envisioning Places and Living Spaces

MARILYN BOOTH, EDITOR

हरेम इतिहास 8

स्थानों और रहने की जगहों की कल्पना करना 8

मैरिलिन बूथ, संपादक

8

ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, डरहम और लंदन, 2010
© 2010 ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस

सर्वाधिकार सुरक्षित
संयुक्त राज्य अमेरिका में एसिड-मुक्त कागज पर मुद्रित ♾ जेनिफर हिल द्वारा डिज़ाइन किया गया
त्सेंग इन्फॉर्मेशन सिस्टम्स, इंक. द्वारा एडोब जेन्सन प्रो में टाइपसेट किया गया।
लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा इस पुस्तक के अंतिम मुद्रित पृष्ठ पर उपलब्ध है।

8

विषय-सूची 8

8

1 परिचय
मैरिलिन बूथ

मानक छवियां और बदलते स्थान

23 प्रारंभिक महिला उदाहरण और निर्माण
लैंगिक स्थान का (पुनः) स्त्रीत्व को परिभाषित करना नैतिक उत्कृष्टता: अस्मा अफसरुद्दीन

49 सार्वजनिक और निजी की दो मानक धारणाएँ प्रारंभिक इस्लामी संस्कृति यासीन नोरानी

69 तीन हरम को लैंगिक स्थान और स्थानिक के रूप में लिंग का पुनरुत्पादन इरविन सेमिल शिक

II कमरे और दहलीज
स्थान, सामाजिकता और कानून के रूप में हरम

87 खलीफा के चार हरम, घरेलू हरम
चौथी शताब्दी में बगदाद
इस्लामी युग नादिया मारिया एल शेख

104 पांच घरेलू कामुकता, ओटोमन साम्राज्य के कानून में हरम संस्कृति, लेस्ली पियर्स

136 छह सर्वव्यापी निकाय काले हिजड़े संरक्षक के रूप में
टोपकापी हरेम जतीन लाड

177 सात जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं, हरम का दौरा, समुद्र में स्नान और औपनिवेशिक काल से पहले के ट्यूनीशिया में सामाजिकता,
लगभग 1800-1881 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

211 आठ हरम एक जीवनी के रूप में: आधुनिक सीरिया में घरेलू वास्तुकला, लिंग और पुरानी यादें
हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉ

III हरम की परिकल्पना की गई

239 नौ हरम/घर/सेट घरेलू आंतरिक सज्जा की तस्वीरें, उत्तरार्ध ओटोमन काल से
नैन्सी मिकलराइट

261 दस पोशाक और कपड़े उतारना, उन्नीसवीं सदी के दृश्य निरूपणों में वस्त्र और कामुकता
हरम की जोन डेलप्लाटो

290 ग्यारह हरम, महिलाएं और राजनीतिक अत्याचार (रचनाओं में)
जुरजी ज़ायदान ओरिट बाश्किन

319 बारह हरम को मध्यवर्गीय उद्योग के केंद्र के रूप में
और नैतिकता अहमद मिधात की कथा
ए. होली शिस्लर

342 तेरह हरम और हाउसबोट के बीच "पतन,"
लिंग-आधारित स्थान, और महिला राष्ट्रीय
1920 के दशक के मिस्र में विषय: मर्लिन बूथ

375 ग्रंथसूची
401 योगदानकर्ता
405 सूचकांक

परिचय

मैरिलिन बूथ

8. 1909 में, ओटोमन साम्राज्य की ग्रीक मूल निवासी डेमेट्रा वाका ब्राउन (1877-1946) ने 'हरेमलिक: तुर्की महिलाओं के जीवन के कुछ पन्ने' नामक पुस्तक प्रकाशित की। मुख्य रूप से उत्तरी अमेरिकी पाठकों के लिए अंग्रेजी में लिखते हुए, उन्होंने अपने अंदरूनी/बाहरी स्थिति का चतुराई से उपयोग करते हुए हरम को उन पाठकों के सामने प्रस्तुत किया, जिन्हें शायद लगता था कि वे पहले से ही इस शब्द का अर्थ जानते हैं।
अगर उन्हें साम्राज्य की महिलाओं के लिए सामाजिक वास्तविकताओं या "तुर्की महिलाओं के जीवन" के बारे में बहुत कम जानकारी होती, तो
समय के साथ बदलाव आया। वाका ब्राउन—जो वहां रहे, काम किया,
और संयुक्त राज्य अमेरिका में शादी करने के बाद, वह अपने पैतृक शहर कॉन्स्टेंटिनोपल (अब इस्तांबुल) लौट आईं, ताकि तुर्की मुस्लिम समुदाय से मिल सकें।
अपने दोस्तों के साथ मिलकर, उसने अपने नए देश के नागरिकों के लिए उनके जीवन के आंतरिक दृश्यों का खाका तैयार किया। उसने इसकी शुरुआत अपने घर के अंदरूनी हिस्से से की,
जैसा कि उसने कहा, "पुरानी सराय... अंधेरी और रहस्यमयी थी..."
इसकी दीवारों के भीतर किए गए अपराध।"1 वह भरोसा कर सकती थी
श्रोतागण: पुस्तक के शीर्षक में हरम शब्द का प्रयोग पाठकों को एक ऐसी छवि से लुभाने के लिए किया जाता था जिसे अक्सर पश्चिमी यूरोपीय या अमेरिकी पर्यवेक्षकों द्वारा एक संपूर्ण समाज या पूर्व के एक विशाल भूभाग की विशेषता के रूप में माना जाता था।2 वाका ब्राउन एक तरह से एक "स्थानीय सूचनादाता" थीं—एक ऐसा व्यक्ति जिसने सामाजिक और शारीरिक रूप से 2 परिचय को पार किया और धुंधला कर दिया।
हरम शब्द से उत्पन्न आंतरिक/बाह्य विभाजन ने पाठकों के बीच उनकी विश्वसनीयता को बढ़ाया, क्योंकि उन्होंने निजी जीवन के अपने चित्रण में हेरफेर किया।

सार्वजनिक राजनीतिक, अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू उद्देश्यों के लिए स्थान।
यदि वाका ब्राउन ने एक छवि के रूप में हरम की आकर्षण शक्ति का फायदा उठाया।
अपने उत्तरी अमेरिकी मित्रों और पाठकों के लिए विदेशीपन और रहस्य की छवि प्रस्तुत करते हुए, उन्होंने अपने पाठकों के लिए उस छवि को जटिल बनाने का भी प्रयास किया, और इसकी तुलना अन्य चीजों से की।
उसने अमेरिकियों को तुर्की के प्रति जो "घृणा और तिरस्कार" व्यक्त करते सुना था,
क्योंकि उन्होंने उसे आश्वस्त किया था कि तुर्की की "महिलाएँ दयनीय प्राणी हैं।"3 उसकी पुस्तक में जिन "हरमों" का वह दौरा करती है, वे अक्सर एकविवाही परिवार होते हैं; यदि वे
बहुविवाह प्रथा वाली महिलाओं को सामंजस्यपूर्ण समुदायों के रूप में चित्रित किया जाता है, जो त्रुटिहीन फ्रेंच बोल सकती हैं, बाहरी गतिविधियों का आनंद ले सकती हैं और एक महानगरीय दृष्टिकोण रखती हैं। सौंदर्यबोध के बारे में सीधे-सादे, चतुर प्रश्नों से आगंतुक को भ्रमित करना।
यूरो-अमेरिकी धारणाएँ कि "स्वतंत्रता" और "महत्वाकांक्षा" में क्या शामिल है। दूसरे शब्दों में, वे हरम की एक ऐसी छवि प्रस्तुत करते हैं जो एक घरेलू दृश्य के रूप में है।
उत्तरी अमेरिका की उच्च वर्गीय महिला पाठकों के लिए यह रचना सुखद और परिचित प्रतीत होगी—हालांकि इसमें विदेशीपन की कमी शायद निराशाजनक हो सकती है। इस पाठक वर्ग के लिए, उनकी पुस्तक में वर्णित हरम आतिथ्य और शालीनता का आश्रय भी प्रदान करते हैं:
जल्दी-जल्दी खाए गए भोजन, उत्तम वस्त्र, अच्छी संगति, मनमोहक उद्यान, और इन सबका आनंद लेने के लिए समय और समझ। "मैं इतने लंबे समय तक एक सभ्य देश में रहा था," उसने सोचा।
वाका ब्राउन ने चतुर व्यंग्य के साथ कहा, "मैं भूल ही गई थी कि कुछ मामलों में असभ्य तुर्की कितना अधिक सभ्य है।"4 उनकी शालीन रचना
कुछ उच्चवर्गीय तुर्की परिवारों का चित्रण भी स्पष्ट रूप से विध्वंसक था। हरम के बारे में पश्चिमी प्राच्यवादी पूर्वधारणाओं के बारे में—और, विस्तार से कहें तो, उस संस्था के बारे में पश्चिमी लोगों की धारणाओं के बारे में—कि वह संस्था किस बारे में सिद्ध करती है।

तुर्की समाज, और सामान्य तौर पर मुस्लिम-बहुसंख्यक समाज। अंग्रेज़ी भाषी पाठक के लिए उतना ही भ्रामक एक अन्य यात्री और लेखिका, ज़ैनब हनोम (एक छद्म नाम) की टिप्पणी हो सकती थी, जो एक
ब्रिटेन की संसद की यात्रा। 1913 में प्रकाशित अपनी पुस्तक, 'ए टर्किश वुमन्स यूरोपियन इंप्रेशन्स' में एक मित्र को संबोधित करते हुए ज़ेनेब हनोम ने कहा: “लेकिन, मेरी प्रिय, तुमने मुझे कभी क्यों नहीं बताया कि लेडीज़ गैलरी एक हरम है? जालीदार खिड़कियों वाला हरम! सरकार का हरम! ... तुम अंग्रेज़ कितने असंगत हो! तुम अपनी महिलाओं को पूरी दुनिया में असुरक्षित भेजते हो, और यहाँ उस कार्यशाला में जहाँ तुम्हारे कानून बनते हैं, तुम उन्हें सुरक्षा के प्रतीक से ढकते हो।”5 ज़ेनेब हनोम और वाका ब्राउन पश्चिमी, और विशेष रूप से पुरुषवादी, हरम के लगातार कामुकतापूर्ण चित्रण के विरुद्ध सचेत रूप से लिखना, जो एक व्यापक निर्णय का प्रतीक था।
ऐसा माना जाता था कि यह समाजों को व्यवस्थित करता है। जैसा कि रीना लुईस ने स्पष्ट रूप से कहा है: "पुरुषों के लिए,
क्रूर बहुविवाह यौन कारागार में फंसी हरम की महिला एक तिरस्कारपूर्ण महिला थी।
परिचय 3

विकृत कामुकता और निरंकुश सत्ता का एक निराशाजनक लेकिन दयनीय प्रतीक जो "गैर-ईसाई पूर्व की सभी बुराइयों को चित्रित किया गया था।"6 वाका ब्राउन और ज़ेनेब हनोम जिस प्रतिनिधित्व के बोझ को उठाने की कोशिश कर रहे थे, जबकि वे हरम की व्यावसायिक क्षमता का भी फायदा उठा रहे थे,
इससे एक अन्य ओटोमन नागरिक, जो थोड़ी बाद की पीढ़ी का था और प्रारंभिक तुर्की गणराज्य में एक प्रमुख अधिकारी बना, ने आह्वान किया
इस शब्द को पूरी तरह से त्यागने के लिए। यह पूछे जाने पर कि अंग्रेजी महिलाएं कैसे मदद कर सकती हैं।
तुर्की महिला हलीदे एडिब अदिवर (1884-1964) ने कहा: "उनसे कहो कि वे 'हरम' शब्द के उस गलत अर्थ को हमेशा के लिए हटा दें और हमारे बारे में हमारी तुर्की भाषा में बात करें।"
‘घर’।”7
ये “प्रति-यात्रा” पुस्तकें, जिनके लेखकत्व पर कभी-कभी संदेह होता है,

कभी-कभी अस्पष्ट रूप से, उन यूरोपीय/अमेरिकी छवियों के संचय को समाप्त करने का प्रयास किया गया, जिन्होंने स्पष्ट रूप से "पूर्वी" महिलाओं को पश्चिमी निर्मित एक काल्पनिक हरम में रखा था। फिर भी, उन काल्पनिक हरमों का आकर्षण
पश्चिमी यात्रियों का प्रभाव अभी भी मजबूत बना रहा। इस्तांबुल या काहिरा की यात्रा करने वाली यूरोपीय महिलाएं कभी-कभी घरेलू वास्तविकता को लेकर निराशा व्यक्त करती थीं।
उन्होंने जो देखा वह आरामकुर्सी पर बैठे हरमों द्वारा जगाई गई अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाया।
अंग्रेजी या फ्रांसीसी भाषा के यात्रा साहित्य और अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी की यूरोपीय प्राच्यवादी कला की दृश्य छवियों का प्रभाव आज भी बना हुआ है।
ये ग्रंथ और चित्र हरम के बारे में आम धारणाओं को आकार देना जारी रखते हैं, विशेष रूप से उन समाजों में जिन्होंने इस कला और साहित्य का निर्माण किया, लेकिन कुछ अन्य समाजों में भी।
मध्य पूर्वी लोगों के बीच के मामले। दुनिया भर के विद्वान इस पर चर्चा करने में व्यस्त रहे हैं।
पूर्वी परिदृश्यों का विश्लेषण करना और उन्हें यूरोपीय और अमेरिकी मानसिकता, कलम और महत्वाकांक्षाओं के राजनीतिक रूप से भारित और रोमांटिक रूप से प्रेरित उत्पादों के रूप में स्पष्ट करना—
समय के साथ बदलाव आते हैं। फिर भी, पश्चिम में, प्राच्यवाद के प्रवचनों और छवियों द्वारा गढ़ी गई छवियां और दृष्टिकोण, धारणाओं को आज भी प्रभावित करते हैं।
मध्य पूर्वी, अरब, मुस्लिम और पूर्वी महिलाओं के बारे में निर्णय लेने के लिए—
उनके समाजों के बारे में टिप्पणियाँ। आखिरकार, "पश्चिमी" और "पूर्वी" दोनों समाजों में, महिलाओं के शरीर और उन स्थानों का प्रतिनिधित्व, जहाँ उन्हें होना चाहिए, हो सकता है,
या फिर वे निवासी भारी प्रतीकात्मक बोझ ढोते रहे हैं, अक्सर विशिष्ट राजनीतिक एजेंडों का प्रतिनिधित्व करते हैं, कथित सामाजिक समस्याओं को दर्शाते हैं, और—

युद्ध के औचित्य साबित करने या "नैतिक" अभियानों का भार उठाने के संदर्भ में।
हम देखेंगे कि हरम का कल्पित, प्रस्तुत और अनुभव किया गया स्थान—अपने व्यापक अर्थों और अभिव्यक्तियों के साथ—इनमें से एक रहा है।
विभिन्न उपयोगों के लिए उपलब्ध प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के स्थल।
हरेम हिस्ट्रीज़ ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट और व्यापक श्रृंखला प्रस्तुत करती है।
उन संस्थाओं और छवियों के उदाहरण जिन्हें हरम शब्द ने भौगोलिक क्षेत्रों और सदियों से समाहित किया है। हमारा ज़ोर इस पर है - 4 परिचय
मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के समाजों में हरम की अवधारणा/संस्था/छवि को जिस प्रकार से आकार दिया गया है और प्रस्तुत किया गया है, उस पर भी हम ध्यान देते हैं।
इन समाजों के आगंतुकों और पर्यवेक्षकों द्वारा किए जाने वाले प्रतीकात्मक और राजनीतिक उपयोग। इस परियोजना की शुरुआत प्रोफेसरों द्वारा आयोजित एक सम्मेलन से हुई थी।
मई 2004 में मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में नासिर रब्बत और हेघनार वाटनपॉ ने "इतिहास और कल्पना में हरम" विषय पर व्याख्यान दिया। एमआईटी में आगा खान इस्लामिक आर्किटेक्चर प्रोग्राम द्वारा वित्त पोषित। इस खंड में शामिल निबंध उस सम्मेलन के लिए लिखे गए थे; तब से और भी निबंध आमंत्रित किए गए हैं।8 हम सामूहिक रूप से पूछते हैं कि हरम और उन समाजों में लैंगिक स्थान की समझ, जहाँ हरम ने संरचना बनाई, किस प्रकार प्रभावित हुई है?
महिलाओं और पुरुषों के जीवन को उन समाजों के भीतर दर्शाया गया है जिनमें यह मौजूद था।
क्या यह एक ऐतिहासिक हिस्सा है? हरम शब्द को कितनी सफलतापूर्वक परिभाषित किया जा सकता है? इसके अलावा, वास्तुकला के विभिन्न स्वरूपों और साहित्यिक-राजनीतिक विमर्शों को, जिन्होंने लिंग-विशिष्ट अलगाव की स्थानिक प्रथाओं को आकार दिया है, लेकिन जिन्हें हमेशा स्पष्ट रूप से "हरम" के रूप में नहीं जाना जाता है, इस शब्द से कैसे जोड़ा जा सकता है जो कभी-कभी सर्वव्यापी और मायावी दोनों प्रतीत होता है? निबंधों का यह संग्रह हरम को एक सामाजिक संस्था, वास्तुकला के संदर्भ में देखता है।

यह ढांचा मुस्लिम-बहुसंख्यक समाजों और यूरोपीय/अमेरिकी कल्पनाओं दोनों में एक प्रतिनिधि आकृति के रूप में काम करता है। यह हरम को एक स्थिर इकाई के रूप में नहीं देखता है।
स्थान को एक ऐतिहासिक रूप से परिवर्तनशील और भौगोलिक एवं सामाजिक रूप से परिवर्तनशील अवधारणा के रूप में देखा जाना चाहिए, जो हमें लैंगिक स्थान की व्यापक धारणाओं को समझने में मदद करती है।
मुस्लिम बहुल संस्कृतियों में, हरम तो बस एक शुरुआती बिंदु है।
हम—इस पुस्तक के योगदानकर्ता—हरम से क्या तात्पर्य रखते हैं? सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात, हम इसकी परिवर्तनशीलता का सुझाव देते हैं, क्योंकि हम इसकी सांकेतिक शक्ति को पहचानते हैं।
न केवल पश्चिम में बल्कि उन समाजों में भी जहां इस शब्द का संस्थागत अर्थ था और अभी भी राजनीतिक महत्व है। उदाहरण के लिए, मिस्र में लेखन में
1987 में, अनुभवी नारीवादी और पत्रकार अमीना अल-सईद ने इस शब्द का प्रयोग किया।
जब उन्होंने लोकप्रिय मासिक पत्रिका में तर्क दिया, तो उन्होंने लाक्षणिक आधार रेखा का उल्लेख किया।
अल-हिलाल का मानना था कि 1967 के बाद मिस्र की कठिन राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों में, मिस्रवासियों की कथित विफलता की कीमत महिलाओं को चुकानी पड़ रही थी। उन्होंने अपने लेख का शीर्षक दिया: "क्या महिलाएं हरम के युग में लौट रही हैं?"9
यदि अल-सईद के लिए, "हरम" पिछले साठ वर्षों के संघर्ष में महिलाओं द्वारा अर्जित सभी उपलब्धियों के नुकसान को संक्षेप में व्यक्त करने का एक तरीका था,10
इसमें सार्वजनिक राजनीतिक अधिकारों के साथ-साथ पारिवारिक कानून और शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों में बदलाव भी शामिल हैं; यदि वाका ब्राउन के लिए, यह महिलाओं का एक क्षेत्र था
यह समुदाय विशेष रूप से प्रमुख यूरो/अमेरिकी वर्चस्व का मुकाबला करने के लिए बनाया गया था।
“हरम” की धारणाएँ एक ऐसे स्थान के रूप में जहाँ कैद और यौन स्वतंत्रता का बोलबाला होता है; और
परिचय 5

यदि, इस पुस्तक में जिन लेखकों और लोगों के समूहों से हम मिलेंगे, उनके लिए यह
इसका अर्थ सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्थाओं के कुछ निश्चित (लेकिन भिन्न-भिन्न) स्वरूप थे।
और उनके स्थानिक सहसंबंधों के आधार पर, कम से कम उन विशिष्ट अर्थ-परिक्रमों को नोट करना संभव है जो शब्द इंगित करता है। अरबी का अर्थ क्षेत्र
हॉलीवुड फिल्मों या यूरोपीय चित्रकारी की पृष्ठभूमि में—या यहाँ तक कि अमीना अल-सईद की रचनाओं के संदर्भ में भी—हराइम शब्द शायद ही किसी को अपेक्षित लगे।
राजनीतिक रूपक। इरविन शिक कुछ बुनियादी परिभाषात्मक मूलों पर चर्चा करते हैं।
इस पुस्तक के अध्याय 3 में। फिर भी, और दोहराव का जोखिम उठाते हुए, शायद यह कुछ तात्कालिक भाषाई संकेत देना उपयोगी होगा। अरबी क्रियाएँ हरामा हर्रामा और हर्रामा का अर्थ है "वंचित करना" और "मना करना", लेकिन ये विशेष रूप से लिंग-विशिष्ट नहीं हैं; इनमें "वंचित करना" या "मना करना" का कोई पूर्व-निर्धारित अर्थ नहीं है।
महिलाओं के लिए स्थान या आवागमन। इसके विपरीत, हरम शब्द से महिलाओं, बच्चों और करीबी रिश्तेदारों को उस स्थान में रखा जाता है जो "निषिद्ध" है। इन क्रियाओं से संबंधित संज्ञाओं का अर्थ क्षेत्र "निषिद्ध" या "अवैध" (हराम) से लेकर महिला साथी या पवित्र क्षेत्र (हराम) तक फैला हुआ है। मक्का में मस्जिद परिसर "पवित्र अभयारण्य" (अल-हरम अल-शरीफ) है, जबकि मक्का और मदीना, दो सबसे पवित्र शहर हैं।
इस्लाम में, दो "हराम" हैं। बोलचाल की भाषा में, हराम 'अलयक का अर्थ है "तुम पर शर्म!" (शाब्दिक रूप से, "यह तुम्हारे लिए वर्जित है"), जबकि हरिमी, अपने समकालीन और पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष अर्थ में, महिलाओं की वस्तुओं, जैसे महिलाओं के कपड़ों को संदर्भित करने वाला एक विशेषण है। हरिम एक ऐसे पवित्र स्थान को संदर्भित कर सकता है जिसमें महिलाएं और केवल करीबी पुरुष रिश्तेदार ही प्रवेश कर सकते हैं, और महिला या पत्नी (इस अर्थ में) को भी संदर्भित कर सकता है।

(एकवचन या बहुवचन)। एक संस्था के रूप में, यह अवधारणा घरेलू स्थान की एक निश्चित व्यवस्था को दर्शाती है जो विभिन्न प्रकार के घरों में आम रही है। कई शताब्दियों तक इस्लामी समाजों में इसका प्रभाव देखा गया है। यह अवधारणा किसी एक स्थापत्य या वर्ग-परिभाषित विस्तार तक सीमित नहीं है— उदाहरण के लिए,
यूरोपीय चित्रों में अक्सर जिस शाही हरम का संकेत मिलता है। इस पर जोर देना हरम की एक रूढ़िवादी और संकीर्ण धारणा को बनाए रखना होगा, एक ऐसी धारणा जिसे यह पुस्तक चुनौती देती है।
हरम के लगातार चित्रणों में विशिष्ट और शानदार अनुप्रयोगों पर ही ज़ोर दिया गया है, जबकि सामान्य पहलुओं को नज़रअंदाज़ कर दिया गया है।
और सामाजिक रूप से परिवर्तनशील घटनाएँ जिनके लिए यह शब्द प्रयुक्त किया गया है।
बहुत हाल का अतीत, यूरो/अमेरिकी शब्दकोश परिभाषाएँ, या थिसॉरस
जूडी माब्रो के अनुसार, हरम शब्द के समूहीकरण का इससे बहुत कम लेना-देना था।
अरबी शब्द के अर्थ; बल्कि, वे अशुद्धता से युक्त हरम या प्रेम-घोंसला रखते हैं—ये समानार्थी अर्थ केवल अंग्रेज़ी भाषी उपयोग के एक ऐतिहासिक शब्दकोश के भीतर ही हैं।11
हरम पर यूरोपीय/अमेरिकी विद्वत्ता का ध्यान 6 परिचय पर केंद्रित रहा है।

इस विषय पर यूरोपीय/अमेरिकी दृष्टिकोण से जो संदेह है, वह समझ में आता है। बीसवीं शताब्दी से पूर्व के पश्चिमी यात्रा वृत्तांत, जिन्होंने हरम की लोकप्रिय धारणाओं को आकार देने में मदद की, विद्वानों द्वारा विश्लेषण के लिए और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर केंद्रित कॉलेज पाठ्यक्रमों में हमेशा से लोकप्रिय ग्रंथ रहे हैं।
यूरोपीय कला का दृश्य प्रभाव, जिसे हममें से कई लोग कला इतिहास के पाठ्यक्रमों और संग्रहालय भ्रमणों के माध्यम से जानते हैं, ने अनेकों की कल्पनाओं पर अपनी छाप छोड़ी है। फिर भी,
जैसा कि मोहजा कहफ हमें याद दिलाती है, हरम एक लगभग सर्वव्यापी तत्व के रूप में

पूर्वी देशों के प्रति पश्चिमी दृष्टिकोण यूरोप के इस विशेष पूर्व के प्रारंभिक दृष्टिकोण का हिस्सा नहीं था, बल्कि यह कुछ समय बाद उभरा। यूरोपीय मध्ययुगीन काल के बाद का समय, और जब यूरोपीय लोग पहले से ही अरब और मुस्लिम-बहुसंख्यक समाजों से अवगत हो चुके थे और उनका प्रतिनिधित्व स्वयं के लिए कर रहे थे।12 और प्रबुद्ध यूरोप में, हरम एक बन गया
राजनीतिक अधिनायकवाद की एक प्रभावशाली छवि—व्यक्तिगत अधिकारों के शासन के बिल्कुल विपरीत, जिसके बारे में प्रबुद्धता युग के विचारकों ने तर्क दिया था कि यह आधार होना चाहिए।
वैध राजनीतिक संप्रभुता। पश्चिमी समाजों की राजनीतिक बहसों और सामाजिक तनावों के भीतर हरम ने अपना एक प्रतीकात्मक अस्तित्व बना लिया।
संक्रमण में।
इस खंड में ऐसे निबंध शामिल हैं जो यूरोपीय संस्कृति को हरम चित्रणों के भंडार के रूप में देखते हैं। हालाँकि, अध्यायों की एक बड़ी संख्या अन्य विषयों पर भी चर्चा करती है।
घर के स्थानों के स्वदेशी प्रतिनिधित्व और सामाजिक स्थान में पुरुषों और महिलाओं, लड़कियों और लड़कों के शारीरिक वितरण के लिए उनका महत्व, प्रारंभिक इस्लामी मक्का से लेकर बीसवीं सदी के आरंभिक काहिरा तक। कुछ अध्याय अरब और तुर्की बुद्धिजीवियों की इस जागरूकता पर भी प्रकाश डालते हैं कि पश्चिम के पर्यवेक्षकों ने काहिरा, इस्तांबुल या ट्यूनिस जैसे शहरों में किसी घर की दीवारों को देखते हुए क्या देखा—या क्या समझा—या क्या देखा। इस प्रकार, इन निबंधों में एक प्रमुख विषय है, आंतरिक और बाहरी मुठभेड़ों के माध्यम से "पश्चिम" और "पूर्व" का घनिष्ठ अंतर्संबंध।
हरम के इर्द-गिर्द, चाहे औपनिवेशिक काल से पहले के ट्यूनिस के कुलीन सामाजिक परिवेश में हो या उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से इस्तांबुल और काहिरा में प्रकाशित ऐतिहासिक उपन्यासों में, और साक्षरता के अधिक सामान्य होने के साथ-साथ तेजी से बढ़ते पाठक वर्ग के बीच लोकप्रिय हुआ। अरबी प्रेस को पढ़ने मात्र से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है।
उदाहरण के लिए, उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में स्थित काहिरा में, साक्षर शहरी आबादी के बीच यूरोप और उत्तरी अमेरिका के महानगरों में उन्हें किस दृष्टि से देखा जाता था, इस बारे में उच्च स्तर की जागरूकता और संवेदनशीलता पाई गई। अरब, तुर्की,

और फ़ारसी कथा और निबंधकार पश्चिम की ओर देखते थे (सामान्य रूप से
अल-घरब (अरबी में) को साहित्यिक आदर्शों और सामाजिक संगठन के विचारों के लिए स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया गया, लेकिन साथ ही, उन्होंने उन मापदंडों की आलोचना भी की जिनके माध्यम से उनके अपने विचार प्रस्तुत किए गए।
समाजों का प्रतिनिधित्व किया गया, और उन्होंने अपने स्वयं के प्रतिनिधित्व पर जोर दिया।
परिचय 7

क्षमताओं। उन्होंने यह भी पहचाना कि ये कितने जटिल और वास्तव में अंतरसांस्कृतिक हैं।
सांस्कृतिक कलाकृतियों का मानवीय प्रसार—इसके रास्ते कितने घुमावदार हैं!
जिसके माध्यम से छवियां यात्रा करती हैं। मिस्र की कवयित्री आयशा तैमूर (1840-1902) की जीवनी और आलोचनात्मक अध्ययन में, लेबनानी लेखिका मय्य ज़ियादा ने लिखा है कि
(1886-1941) ने उल्लेख किया कि उन्होंने 1901 में धारावाहिक रूप में प्रकाशित एक उपन्यास के अरबी संस्करण को बड़े चाव से पढ़ा था, जिसे कथित तौर पर एक तुर्की महिला लैला ने अंग्रेजी में लिखा था।
हनीम—जिनके पिता, खलील पाशा शरीफ, एक मंत्री थे
ओटोमन साम्राज्य। ज़ियादा ने इस उपन्यास के बारे में कहा, "मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह उन दिनों के इस्तांबुल के 'हरिम' का वर्णन अन्य उपन्यासों की तुलना में कहीं अधिक सच्चाई से करता है।"
इस विषय पर यूरोपियों द्वारा लिखी गई हर चीज़।"13 हरम पर चर्चा करते समय, विचार करने योग्य एक प्रमुख अवधारणा (और कार्यप्रणालीगत आधार) स्थानिक चिंतन की है। स्थान को निष्क्रिय, तटस्थ या अपने परिचित स्वरूपों में प्राकृतिक रूप से नहीं, बल्कि मानवीय रूप से निर्मित और मानवीय पहचान और समझ के एक शक्तिशाली निर्माता के रूप में सोचने से विद्वानों को यह विचार करने के लिए प्रेरित किया है कि समूह में लोग शारीरिक और रचनात्मक रूप से लिंग के इर्द-गिर्द खुद को कैसे संगठित करते हैं। गैस्टन के सूत्र

बैचलार्ड, हेनरी लेफेब्रे, यी-फू तुआन, एडवर्ड सोजा और अन्य लोगों ने मनुष्यों द्वारा निर्मित स्थानों और वास्तविक जीवन के अनुभवों के बीच संबंधों पर जोर दिया है, साथ ही अंतरंग शारीरिक अभिव्यक्तियों के महत्व पर भी बल दिया है—कि कैसे
लोग अपने शरीर का उपयोग करते रहे हैं और उसी तरह से हम उन स्थानों के बारे में सोचते और उनका निर्माण करते हैं जिनमें हम रहते और घूमते हैं।14 अग्रणी कार्य
शर्ली आर्डेनर, डोलोरेस हेडन और डोरेन मैसी ने नारीवादी आंदोलन को ऊर्जा प्रदान की।
विद्वानों को न केवल इस बात पर विचार करना चाहिए कि निर्मित वातावरण किस प्रकार कुछ स्थानों को महिलाओं या महिलाओं से संबंधित मानने वाली मौजूदा सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप रहे हैं।
पुरुषों और लिंगों की उचित भूमिकाओं के साथ-साथ, वास्तुकला स्वयं समय के साथ इन समझों और प्रथाओं को कैसे स्थापित और बनाए रखती है—अन्य संदर्भों में भी।
शब्दों में कहें तो, स्थान निर्माण किस प्रकार लैंगिक पहचान बनाने में सहायक होता है। उदाहरण के लिए, डैफ्ने स्पेन का सुझाव है कि घर, शैक्षणिक संस्थानों और कार्यस्थलों में अलग-अलग स्थान—साथ ही "महिला" और "पुरुष" स्थानों के बीच भौगोलिक दूरी—महत्वपूर्ण रही है क्योंकि इसने महिलाओं को ज्ञान के उन महत्वपूर्ण केंद्रों से दूर कर दिया है जो—
सामाजिक पदानुक्रम लिखें।15
इन विद्वानों के कार्यों से यह भी स्पष्ट होता है कि लिंग-आधारित पृथक स्थान केवल मुस्लिम-बहुसंख्यक समाजों की ही विशेषता नहीं रहे हैं—यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है।
लीला अहमद ने मिस्र में अपने बचपन और विश्वविद्यालय की शिक्षा के लिए इंग्लैंड जाने के अपने संस्मरण में इस बात को बखूबी दर्शाया है। हाल ही में वहाँ बसी लीला अहमद ने...
कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में, उसने सोचा कि क्या पूरी तरह से महिलाओं के लिए बना गर्टन कॉलेज
यह "हरम का परिपूर्ण रूप" नहीं था, जिसमें सौहार्द की सकारात्मक भावनाएँ निहित थीं। 8 परिचय

एक महिला समुदाय में, यह शब्द उसके लिए क्या मायने रखता था।16 अहमद का लाक्षणिक
"हरम" शब्द का प्रयोग कुछ यूरोपीय महिलाओं के प्रयोग से मिलता-जुलता है, जिनका अनुसरण यात्री करते हैं।
लेडी मैरी वर्टली मोंटेगु (1689-1762) के ऊर्जावान पदचिह्न, जिन्होंने इस्तांबुल की यात्रा की और इंग्लैंड में अपने पाठकों के लिए इसके बारे में लिखा।
उनकी प्रसिद्ध और मरणोपरांत प्रकाशित तुर्की दूतावास पत्र (1763)। मोंटागु और अन्य यात्रियों जैसी कुलीन महिलाएं शुरुआत में रहती थीं। औद्योगिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में संक्रमण जिसने घर को अलग कर दिया कार्यस्थल से दूर होकर उन्होंने घर को महिलाओं के लिए उचित स्थान घोषित किया। यदि कुछ यूरोपीय पुरुष टिप्पणीकारों का मानना था कि उनकी महिला देशवासियों को शुक्रगुजार होना चाहिए कि वे कुलीन मुस्लिम घरों की भौतिक सीमाओं के भीतर नहीं रहे (जैसा कि इन पुरुष यात्रियों ने दर्शाया)।
उनमें से कुछ (उदाहरण के लिए, मोंटागु और बाद में वाका)
ब्राउन ने अरब या तुर्की शहर में घरेलू जीवन के महिला-संचालित स्थानों में मूल्यवान पहलुओं को देखा। मोंटेगु को लगा कि घूंघट से ढके और कथित तौर पर एकांत में रहने वाले
तुर्की महिलाओं को अपने पूरे शरीर को ढकने वाले आम कपड़ों के "पोर्टेबल हरम" द्वारा सुनिश्चित गुमनामी में अधिक स्वतंत्रता प्राप्त थी।
अपने समय की अधिकांश यूरोपीय महिलाओं की तरह। ये यात्रा करने वाली और लिखने वाली महिलाएं।
उन्हें शायद यह भी एहसास हो गया होगा कि हरम का जिक्र करने से उन तरीकों की आलोचना को चुप कराया जा सकता है जिनसे यूरोपीय या अमेरिकी महिलाओं को स्थानिक (और अन्य) रूप से प्रतिबंधित किया जाता था।
आज भी, स्थान और शरीर से जुड़े मुद्दे केंद्रीय, बल्कि अत्यंत महत्वपूर्ण बने हुए हैं।
मुस्लिम बहुल समाजों और मुस्लिम समुदायों में, और कोई भी इसका पता लगा सकता है

ये मुद्दे ऐतिहासिक रूप से हरम की अवधारणा और प्रथा से जुड़े हुए हैं, जो कई रूपों में मौजूद है। इसी प्रकार, स्थानिक और शारीरिक बिंब भी केंद्रीय महत्व रखते हैं।
पूर्व-पश्चिम मुठभेड़ की राजनीति के लिए। मुसलमानों के बीच, इस्लाम को कैसे जीना चाहिए, इस बारे में कुछ समकालीन व्याख्याएं इस बात पर जोर देती हैं कि
लिंग-परिभाषित स्थानिक सीमाओं को पुनः स्थापित करने के लिए, चाहे प्रोत्साहन देकर
महिलाओं को घर पर रहने के लिए मजबूर करके या महिला शरीर को ढकने और छिपाने के महत्व पर जोर देकर। (इसका मतलब यह नहीं है कि महिलाओं के पास घर पर रहने के कई कारण नहीं हैं)
हिजाब पहनना, और अधिकांश मुस्लिम समुदायों में उन्हें ऐसा करने या न करने का विकल्प होता है। न ही इसका अर्थ यह है कि घरेलू जीवन और उससे जुड़े मुद्दों को नकारा जाए।
पोशाकें अन्य जगहों पर और अन्य धार्मिक समुदायों में भी महत्वपूर्ण हैं— उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ समुदायों में।) आज अरब जगत में सड़कों पर बिकने वाले चमकदार लेकिन बेहद किफायती संस्करणों में मध्ययुगीन ग्रंथों और फतवों (दैनिक जीवन के मुद्दों पर न्यायिक राय) का पुनर्प्रकाशन महिलाओं के व्यवहार और उनकी स्थानिक व्यवस्था पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करता है, जैसा कि प्रसिद्ध महिलाओं की समकालीन जीवनियाँ करती हैं जो स्पष्ट रूप से महिलाओं को घर में स्थान देती हैं, जैसा कि पहले की जीवनियों में नहीं होता था।17 मो-
परिचय 9

रक्कन विद्वान और कार्यकर्ता फातिमा मर्निसी इस घटना को सामूहिक पहचान संकट की प्रतिक्रिया के रूप में देखती हैं: "पहचान की तलाश में मुसलमान एक गंभीर संकट के समाधान के रूप में महिलाओं को कैद में रखने पर जोर दिया जा रहा है। महिलाओं को घूंघट में बांधकर और उन्हें समाज से अलग-थलग करके उन्हें बदलाव से बचाया जा रहा है।

दुनिया में समुदाय को पश्चिम से बचाने के लिए उसे बंद करने की गूंज सुनाई देती है।”18 विडंबना यह है कि पश्चिमी गैर-मुसलमानों के बीच, यह “उच्चारण” पुनर्जीवित होने का जोखिम पैदा करता है
मुस्लिम महिलाओं को हरम के पर्याय के रूप में देखने की पुरानी रूढ़िवादी सोच—
भले ही हरम के बारे में प्रचलित पश्चिमी रूढ़िबद्ध धारणा ढके हुए शरीर की तुलना में "अश्वेत" शरीर की छवियां अधिक प्रस्तुत करती हो, जैसा कि जोन डेलप्लाटो ने कहा है।
यह बात उनके अध्याय में दिखाई देती है।
हरम पर अंग्रेजी भाषा में लिखे गए लेखों को आमतौर पर तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है।
श्रेणियाँ। पहली श्रेणी में संस्मरणात्मक अभिव्यक्तियाँ, व्यक्तिगत चिंतन और
यात्रा वृत्तांत।19 इनमें वाका ब्राउन, ज़ेनेब हनोम और अन्य जैसे लेखकों की पहले की रचनाओं के हालिया पुनर्प्रकाशन शामिल हैं, जिन्होंने पाठकों को
और यात्रियों को हरम संस्कृति का एक कथित स्वदेशी दृष्टिकोण मिलता है, हालाँकि कुछ लेखकों पर सवाल उठाए गए हैं।20 दूसरा, हरम पर चर्चाएँ हैं यूरोपीय और अमेरिकी संस्कृतियों में एक प्रचलित धारणा, जैसा कि इन समाजों की दृश्य कलाओं और साहित्य (यात्रा वृत्तांतों सहित) में दर्शाया गया है, अक्सर प्राच्यवाद के पहलुओं के व्यापक अध्ययन के हिस्से के रूप में (पश्चिमी देशों में विकसित उत्तरी अफ्रीकी और एशियाई आबादी के सामूहिक प्रतिनिधित्व के अर्थ में, जिन्हें मूल रूप से भिन्न और हीन माना जाता है, जैसा कि एडवर्ड सईद ने विशेष रूप से रेखांकित किया है)।
और कई अन्य विद्वानों द्वारा इसे और विकसित किया गया)।21 तीसरा समूह इसमें शामिल है
विशेष ऐतिहासिक संदर्भों में संस्थाओं के एक समूह के रूप में हरम के ऐतिहासिक उपचारों22 या संस्थागत संदर्भों के भीतर हरम के सिद्धांतों के बारे में।

और इस्लाम और मुस्लिम-बहुसंख्यक समाजों द्वारा परिभाषित विवेचनात्मक मापदंड, जो मध्य युग की भाषाओं, अभिलेखागारों और विशिष्ट इतिहासों पर केंद्रित हैं।
पूर्व (साथ ही कभी-कभी, जैसा कि पहले समूह की रचनाएँ करती हैं, पर भी विचार करते हुए)
(यह खंड प्राच्यवादी विमर्शों में हरम द्वारा उत्पन्न कल्पनाओं पर आधारित है)।23 यह खंड इन और अन्य विद्वानों की अंतर्दृष्टि और अभिलेखीय कार्यों पर आधारित है।
लेकिन हम प्रतिनिधित्व संबंधी श्रम विभाजन को समाप्त करने, या कम से कम उस पर सवाल उठाने की उम्मीद करते हैं, जिसने अधिकांश प्रकाशनों को चिह्नित किया है।
हरम पर साहित्य। इस्लामी समाजों (तीसरी शताब्दी) पर केंद्रित अध्ययन। ऊपर दिए गए समूह ने स्वाभाविक रूप से हरम को एक ऐतिहासिक रूप से दस्तावेजी संस्था के रूप में देखने पर ध्यान केंद्रित किया है। कलात्मक और साहित्यिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने वालों ने
हरम को एक छवि के रूप में प्रस्तुत करने वाले निरूपणों ने आम तौर पर प्राच्यवादी ग्रंथों (दृश्य कला और फिल्म सहित) पर जोर दिया है जो इस क्षेत्र पर "नज़र डालते हैं"।
हालाँकि, यह पुस्तक लैंगिक स्थान और उसके प्रतिनिधित्व पर ज़ोर देती है। हरम (और हरम के रूप में लैंगिक स्थान) का निर्माण समाजों में और उनके द्वारा किया गया 10 परिचय

जिनमें वे भाग लेते हैं—साथ ही यह प्रश्न भी उठाते हैं कि निरंतर सांस्कृतिक गति से निर्मित समय और स्थानों में 'में' और 'द्वारा' का वास्तव में क्या अर्थ हो सकता है। निबंधों का कालिक और भौगोलिक केंद्र प्रारंभिक अरब इस्लामी हृदयभूमि, मध्यकालीन इस्लामी साम्राज्य, मध्य और उत्तरकालीन इस्लामी काल को शामिल करता है।
ओटोमन साम्राज्य, और आधुनिक तुर्की, मिस्र, सीरिया और ट्यूनीशिया—साथ ही उन्नीसवीं सदी का यूरोप।
इस प्रकार, यह खंड हरम पर रूपक के रूप में—और अक्सर एक रूपक के रूप में— ध्यान केंद्रित करता है।

एक मंडराती हुई, अप्रत्यक्ष संस्था जो घरेलू और सार्वजनिक स्थान से महिलाओं के संबंधों को दर्शाती थी, भले ही हरम स्वयं एक पहचान योग्य भाग के रूप में मौजूद हो।
पहचान योग्य निवासियों वाला एक परिवार या तो पहले से सक्रिय नहीं था, या अभी तक सक्रिय नहीं था, या अब सक्रिय नहीं रहा (जैसा कि अमीना अल-सईद ने बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इस शब्द का प्रयोग किया था)। प्रारंभिक इस्लामी समाज के चित्रण से लेकर बीसवीं शताब्दी के आरंभिक मिस्र के शहरी स्थान के बारे में चर्चाओं और उत्तरार्ध के ओटोमन फोटोग्राफी तक, विद्वान यहाँ अंतर्संबंधों के पहलुओं का अन्वेषण करते हैं।
निर्मित वातावरण, शरीर और सामाजिक संगठन एवं प्रक्रिया के बीच। पुस्तक को विषयगत अनुभागों में विभाजित किया गया है जो कमोबेश एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।
कालानुक्रमिक। पहला खंड, "मानक छवियां और बदलते स्थान,"
यह पुस्तक इस्लामी संदर्भों में लैंगिक स्थान का विश्लेषण मानक निरूपणों और समय के साथ उनमें आए परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य से करती है। अध्याय 1, "प्रारंभिक" में...
"महिला आदर्श और लैंगिक स्थान का निर्माण" विषय पर हम घरेलू संबंधों से जुड़ी महिलाओं की धारणाओं की पड़ताल से शुरुआत करते हैं।
अस्मा अफसरुद्दीन पैगंबर मुहम्मद के समय की उन महिलाओं के जीवन के चित्रण की पड़ताल करती हैं जो उनकी सहयोगी थीं और महिलाओं के लिए आदर्श बनीं, और इस तरह सार्वजनिक स्थान अलग-अलग ऐतिहासिक क्षणों में बदल गया।
विभिन्न सामाजिक परिवेशों में और उनके साथ होने वाली अंतःक्रियाओं पर केंद्रित। वह अलग-अलग समयावधियों में उनके जीवन के जीवनी संबंधी विवरणों की तुलना करती हैं ताकि यह पता चल सके कि ये जीवन-कथाएँ महिलाओं की नैतिक उत्कृष्टता की बदलती अवधारणाओं के बारे में क्या बताती हैं।
और उत्तर मध्ययुगीन काल के दौरान मुस्लिम समाजों में उनकी सार्वजनिक भूमिकाएँ," उन्हें उसी युग के आचरण नियमावली के साथ मिलाकर पढ़ना। उन्होंने महिलाओं के लिए आदर्श व्यवहार को स्पष्ट किया। इन महिलाओं के चित्रण के उनके विश्लेषण से न केवल इसमें निहित आकस्मिकता और ऐतिहासिक भिन्नता का पता चलता है, बल्कि...

महिलाओं की सार्वजनिक स्थानों तक पहुंच के संदर्भ में ही नहीं, बल्कि हमें यह भी याद दिलाना चाहिए कि प्रारंभिक मुस्लिम
महिलाएं सामुदायिक नेता और योद्धा थीं—यह छवि हरम में एकांतवास करने वाली महिला की छवि से बिल्कुल अलग थी, लेकिन बाद के जीवनी संबंधी शब्दकोशों और आचरण नियमावलीयों में इस छवि को दबा दिया गया, जिनमें घर पर रहने के महत्व पर जोर दिया गया था। (जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, इनमें से कुछ आचरण नियमावलीयों को वर्तमान में पुनः प्रकाशित किया गया है और वे समाचार दुकानों पर बिकती हैं।)
(काहिरा और अरब भाषी दुनिया के अन्य हिस्सों में रहने वाली महिलाओं और पुरुषों के लिए।)
परिचय 11

फिर भी, जैसा कि यासीन नूरानी अध्याय 2 में हमें याद दिलाते हैं, "मानक धारणाएँ
प्रारंभिक इस्लामी संस्कृति में सार्वजनिक और निजी का, "सार्वजनिक" और "निजी"
ये स्वयं ऐसी श्रेणियां हैं जिनकी ऐतिहासिक रूप से गहन जांच-पड़ताल करनी चाहिए, और इस मुद्दे पर गहराई से विचार करना चाहिए कि लोग अपने सामाजिक संबंधों को किस प्रकार विभाजित करते हैं।
जीवन, और वे इन विभाजनों को किस प्रकार का महत्व देते हैं, और इसके अलावा स्वयं की अवधारणाएँ किस प्रकार शरीरों के स्थान से संबंधों को नियंत्रित करती हैं। नूरानी, जुर्गन हैबरमास द्वारा उद्भव की व्याख्या का सहारा लेती हैं।
अठारहवीं शताब्दी के यूरोप में सार्वजनिक क्षेत्र, परिवार की अवधारणाओं से परे, "मनोवैज्ञानिक आंतरिकता" के उत्कृष्ट स्थान के रूप में, इन अवधारणाओं के विपरीत है।
प्रारंभिक इस्लामी साहित्यिक ग्रंथों में सार्वजनिक और निजी की समझ के साथ-साथ व्यक्ति-पहचान, परिवार और सामाजिक स्थान की एक बहुत अलग अवधारणा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
अरबी शब्द हरीम (हारेम) के बदलते उपयोग और विशिष्ट सामाजिक क्षेत्रों और मानक स्थितियों से संबंधित निश्चित स्थानों की अनुपस्थिति के साथ, ये

ग्रंथ सार्वजनिक/निजी भेद पर आधारित सामाजिक-स्थानिक संगठन से बिल्कुल अलग मॉडल प्रस्तुत करते हैं। और नूरानी हमें महत्वपूर्ण रूप से याद दिलाती हैं कि हरीम हमेशा एकसमान नहीं रहा है।
अरब-मुस्लिम इतिहासों में या उनसे जुड़े साहित्यिक कल्पित परिदृश्यों में "महिलाओं के क्षेत्र" के संदर्भ में। जैसा कि हम लैंगिक बोध के घरेलू परिवेश से संबंधों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिन्हें हमारे अन्य योगदानकर्ताओं ने रेखांकित किया है, नूरानी का कार्य हमें हरम के बारे में उन मान्यताओं के अवशेषों के विरुद्ध कार्य करने के लिए बाध्य करता है जिन्हें हम अपने अध्ययन में शामिल कर सकते हैं।
इस खंड के अंत में, इरविन शिक का अध्याय, "लिंग-आधारित हरम" प्रस्तुत है। "स्थान और लिंग का स्थानिक पुनरुत्पादन" ऐतिहासिक संदर्भों से हटकर कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं को सामने रखता है जो अफसरुद्दीन और नूरानी के कार्यों के साथ-साथ बाद के अध्यायों में भी गूंजती हैं। हमें यह समझाते हुए कि...
जैसा कि मैंने यहाँ संक्षेप में बताया है, हरम शब्द की उत्पत्ति के बारे में सोचें। शिख हरम को लिंग निर्माण के लिए महत्वपूर्ण स्थलों के एक समूह के रूप में परिकल्पित करते हैं। विभिन्न सिद्धांतकारों का हवाला देते हुए, और विशेष रूप से भूगोलवेत्ताओं और स्थान के सामाजिक निर्माण का अध्ययन करने वाले अन्य लोगों के कार्यों पर आधारित होकर, वे
यह पुस्तक हमें इस खंड के सभी अध्यायों का गहन अध्ययन करने के लिए कहती है ताकि उस स्थानिक-सामाजिक प्रथा के राजनीतिक निहितार्थों का पता लगाया जा सके जो शरीरों को लिंग, आयु और रिश्तेदारी के आधार पर अलग करती है, जहाँ वह अलगाव दर्शाता है और
यह विभेदक सामाजिक और आर्थिक शक्ति को सक्षम बनाता है। अध्यायों का दूसरा समूह, "कमरे और दहलीज: हरम के रूप में"
"स्थान, सामाजिकता और कानून" नामक अध्याय ऐतिहासिक स्थानों और कानूनी विमर्शों के विश्लेषण पर केंद्रित है। इन अध्यायों में प्रतिनिधित्व से जुड़े मुद्दों को भी शामिल किया गया है।
और मानकता; हालाँकि, पुस्तक के विभाजन कुछ हद तक कृत्रिम हैं।
क्योंकि सभी अध्याय कार्यप्रणाली, स्रोत सामग्री और विषयवस्तु के मामले में व्यापक हैं। यह 12 वां परिचय है।

"जीवंत हरम" का अध्ययन उन तरीकों पर ध्यान दिए बिना असंभव है जिनसे यह चाहे प्राच्यवादी चित्रकला में हो या यूरोपीय यात्रियों की चित्रकला में, इसका प्रतिनिधित्व किया गया है।
संस्मरणों, अरबी उपन्यासों या कानूनी ग्रंथों में ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट होना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि संस्मरणों में। नादिया मारिया अल शेख अध्याय 4 में, जीवन के अनुभवों पर चर्चा करते हुए, इस बात को दोहराती हैं।
अब्बासिद बगदाद में स्थित स्थानों पर, जहाँ वह खलीफा अल-मुक्तादिर (908-
932) के हरम और शहरी परिवारों के आवासों पर चर्चा करती है, चित्रों का उपयोग करते हुए।
इतिहास और साहित्यिक संग्रहों से संकलित। दोनों ही मामलों में, हरम के रूप में पहचाने जाने वाले स्थानों की बहुलता हमें महिलाओं द्वारा शक्ति के प्रयोग को ध्यान में रखने और यह देखने के लिए बाध्य करती है कि एकांत अक्सर आंशिक, बहुआयामी या बाधित होता था। इसके अलावा, खलीफा का हरम एक अत्यंत जटिल, बहुविवाही संस्था थी, लेकिन शहरी अभिजात वर्ग का घर ऐसा नहीं था। वहाँ,
एकविवाह प्रथा अधिक प्रचलित थी। हरम एक अखंड इकाई के रूप में नहीं, बल्कि विभिन्न प्रकार के स्थानों के समूह के रूप में उभरता है जो किसी भी तरह से अभेद्य, स्थिर या एक दूसरे से अप्रभेद्य नहीं हैं।
अध्याय 5 में, "यौनिकता का घरेलूकरण: ओटोमन साम्राज्य कानून में हरम संस्कृति," लेस्ली पियर्स ने ओटोमन संस्कृति में आए बदलावों पर विचार किया है।
पंद्रहवीं शताब्दी और सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, यह जाँच करते हुए कि वे क्या थे
सामाजिक स्थान की बदलती धारणाओं और लैंगिक भेदभाव के बारे में कहना शरीरों के संदर्भ में, पियर्स ने कानून-ए-उस्मानी (ओटोमन साम्राज्य की विधि-पुस्तक) का अध्ययन किया है, जिसे क्रमिक सुल्तानों ने मानक व्यवहार के केंद्रीय संहिताकरण के रूप में आकार दिया था। वह यह प्रश्न उठाती हैं कि यौन विकारों से संबंधित फरमानों का घर-परिवार के संगठन पर क्या प्रभाव पड़ा और समय के साथ कानूनों में क्या परिवर्तन आए।

उनका सूक्ष्म विश्लेषण, जो ओटोमन शाही हरम पर उनके पूर्व के काम पर आधारित है, आपराधिक कानूनों और अवैध यौन कृत्यों से संबंधित कानूनों की गहन जांच करता है।
वे हमें घरेलू स्थान की बदलती मानक स्थिति के बारे में क्या बताते हैं, जिसमें विभिन्न आयु वर्ग, स्थिति और लिंग के लोग निवास करते हैं - जिसे वह "ऊपर से नीचे की ओर देखे जाने वाले जमीनी स्तर से घरेलू जीवन का पठन" कहती हैं।
अध्याय 6 में, जतीन लाद हमें ओटोमन साम्राज्य के सामाजिक परिवेश में ले जाते हुए, शाही केंद्र से परिकल्पित घरेलू स्थान की कल्पना करते हैं। शाही परिवार ने एक निबंध और तस्वीरों के माध्यम से हिजड़े को एक सीमांत व्यक्ति, एक दहलीज चिह्न के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसकी विभिन्न स्थानों को पार करने की क्षमता है।
हरम वास्तव में उन सीमाओं को उजागर करता है जो उन स्थानों को अलग करती हैं। एक दूसरे। लाड इस बात पर जोर देते हैं कि शाही ओटोमन हरम नहीं था
यह एक स्थान नहीं बल्कि स्थानों का एक जटिल क्रम है, जिसमें स्थानिक व्यवस्थाओं का निवासियों पर अनुशासनात्मक प्रभाव हो सकता है। शक्तिशाली और पूजनीय हिजड़े "महत्वपूर्ण मध्यस्थ" और "मजबूत अवरोधक" थे, और उनकी अपनी स्थिति एक साथ शक्तिशाली और दयनीय थी।
जूलिया क्लैंसी-स्मिथ के उन्नीसवीं सदी के मध्य के ट्यूनीशियाई परिदृश्य के साथ
परिचय 13

(अध्याय 7) में, हम इस्तांबुल के घेराबंदी और साम्राज्यवादी शक्ति के प्रक्षेपण से हटकर उत्तरी अफ्रीका के क्रियोल अंतर्संबंधों की ओर मुड़ते हैं।
यूरोपीय उपनिवेशों का समय। "वेयर एलीट्स मीट: हरेम विजिट्स, सी बाथिंग, एंड सोशिएबिलिटीज इन प्रीकोलोनियल ट्यूनीशिया" में क्लैंसी-स्मिथ तर्क देती हैं कि
ट्यूनिस और उसके आसपास रहने वाले यूरोपीय लोगों ने शासक प्रणाली की स्थानिक अभिव्यक्तियों में भाग लिया और बे के ग्रीष्मकालीन महल के पास

आवासीय रूप से बसने का प्रयास किया, जिससे उनके अपने सामाजिक दायरे स्थापित हो गए।
स्थानीय अभिजात वर्ग के सामाजिक जीवन में, जिसमें समुद्र स्नान के इर्द-गिर्द लैंगिक सामाजिकता भी शामिल थी। यूरोपीय और ट्यूनीशियाई दोनों महिलाएं कूटनीति के लिए महत्वपूर्ण थीं क्योंकि वे एक-दूसरे के सामाजिक जगत का हिस्सा बन गईं। उत्तरी अफ्रीका की परिचित प्रथाएं जो सामाजिकता और स्वच्छता संबंधी चिंताओं को जोड़ती थीं—और
स्थान का लैंगिकीकरण—यात्रा के प्रति यूरोपीय लोगों की नई रुचि से मेल खाता है
स्वास्थ्य संबंधी पर्यटन, विशेष रूप से गर्म झरनों के स्वास्थ्यवर्धक प्रभाव। इस प्रकार, उन्नीसवीं सदी के ट्यूनिस के संदर्भ में, हरम को एक पृथक स्थान के रूप में देखना।
सार्वजनिक जीवन से अलग, या 'हम-वे' के विभाजन के प्रतीक के रूप में, इसे बिल्कुल भी न देखना ही एकमात्र तरीका है।
अध्याय 8 में, हेघनार वाटनपॉघ, शहरी स्थान की जांच करते हुए
बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अलेप्पोवासियों द्वारा पुनर्निर्मित उन्नीसवीं शताब्दी के सीरिया में, स्थानों के उदासीन निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
पुराने आंगन वाले घर, न केवल समकालीन रेस्तरां के स्थल और आवासीय अपार्टमेंट के आंतरिक सज्जा के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में, बल्कि
जैसा कि यह पूर्व जीवन के समकालीन पुनर्लेखन में व्याप्त है। विशेष रूप से, वह
यह लेखिका और सैलून की संस्थापक मारियाना मार्रैश (1848-1919) की हालिया जीवनियों का विश्लेषण करता है, और उन जीवनियों के साथ एक स्थानिक संबंध पाता है जो प्रतीत होता है
इस अरब महिला बुद्धिजीवी के शरीर, मन और बौद्धिक रचनाओं के स्थान पर घर और मेज़बान के कर्तव्यों को प्रतिस्थापित करना। उन्नीसवीं सदी की एक अरब महिला लेखिका एक विशेष प्रकार के लैंगिक उदासीन विमर्श के निर्माण का केंद्र बन जाती है, जो महिला/घर समीकरण पर केंद्रित है, और इस प्रकार स्वयं महिला को ही उपेक्षित कर दिया जाता है। वाटेनपॉघ हमें इसका एक उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

घरेलू परिवेश में महिला की यह छवि वर्तमान समय में व्यापक रूप से परिभाषित राजनीतिक एजेंडों को किस प्रकार पूरा कर सकती है।
निबंधों का अंतिम समूह, "हरम की परिकल्पना", हरम का विश्लेषण करता है। साहित्यिक और कलात्मक प्रस्तुतियों का एक समूह। अध्याय 9, "हरम/घर/सेट" में, नैन्सी मिकलराइट हमें तस्वीरों की एक श्रृंखला के माध्यम से ले जाती हैं।
ओटोमन काल के ऐसे आंतरिक सज्जा चित्र जो यूरोपीय प्राच्यवादी चित्रकला की परंपराओं को जारी रखते हुए उन पर सवाल भी उठाते हैं। फोटोग्राफरों ने अपने यूरोपीय फोटोग्राफर उपलब्ध कराए।
इस्तांबुल में पर्यटक ग्राहकों के साथ काल्पनिक हरम के स्टूडियो संस्करण।
यूरोपीय कला और यात्रा साहित्य में निर्मित, ऐसे सेट पीस जिन्होंने 14 परिचय की अनुमति दी

उन्हें क्षण भर के लिए हरम में प्रवेश करने की अनुमति दी गई, हालांकि वह हरम ज्यादातर अस्तित्व में था
यूरोपीय कल्पना में। इस बीच, जैसे ही ओटोमन प्रजा ने तलाश की
उनके घरों और जीवन के फोटोग्राफिक चित्रण के परिणामस्वरूप, महानगरीय आंतरिक सज्जा सामने आई जो लगातार भौतिक चिह्नों को झुठलाती थी।
यूरोपीय हरम की कल्पना, जो डेमेट्रा वाका ब्राउन के कुलीन ओटोमन परिवारों के उन चित्रणों से अधिक मेल खाती है जिनमें पूर्व-पश्चिम की सीमाएं धुंधली दिखाई देती हैं।
सीमाएँ (हालाँकि वे सीमाएँ पहले से ही कृत्रिम थीं)। अध्याय 10, "पोशाक और नग्नता" में, जोन डेलप्लाटो हमारा ध्यान हरम के यूरोपीय चित्रों में सेट से हटाकर वस्त्रधारी और नग्न शरीरों की ओर मोड़ती हैं।
इन छवियों को पश्चिमी यूरोप को ओटोमन साम्राज्य से जोड़ने वाली शाही राजनीति और व्यापारिक प्रवाह से जोड़ना, साथ ही यह दिखाना कि छवियां किस प्रकार
हरम की गूंज लैंगिक स्थान और घरेलू मुद्दों के विरुद्ध सुनाई दी।

लिंग संबंधी राजनीति। इंग्रस, मॉरिन, लुईस और लेन की कलाकृतियों में चित्रित महिला हरम निवासी की कामुकता—जिसका डेलप्लाटो विश्लेषण करते हैं।
प्रत्येक कलाकार के परिवेश की कला-आलोचनात्मक टिप्पणी और लोकप्रिय यात्रा वृत्तांत के विरुद्ध—छवियों के संकेतात्मक दांव-पेच के माध्यम से इन्हें सामने लाया जाता है।
कपड़े, चाहे पहने हुए हों या फेंके हुए। प्रत्येक प्रस्तुति का विवरण दर्शकों को यह दावा स्वीकार करने के लिए राजी करना कि हरम में यूरोपीय लोगों की ये निगाहें प्रामाणिक हैं।
अगले तीन अध्यायों में हरम के काल्पनिक चित्रणों पर चर्चा की गई है, जो लेखकों की समकालीन राजनीतिक दुनिया से जुड़ाव का एक स्थल है।
और पाठकों के लिए। ओरिट बश्किन के उन्नीसवीं सदी के अरबी भाषा के विश्लेषण के साथ।
अध्याय 11 में ऐतिहासिक उपन्यासों के संदर्भ में, हम (एक बार फिर) घरेलू स्थान के स्वदेशी चित्रणों की ओर मुड़ते हैं। फिर भी, यहाँ हमें ओटोमन साम्राज्य के मामले से समानता मिलती है।
फोटोग्राफी: जब उपपत्नी जे, विपुल सीरियाई लेखक और पत्रकार जुरजी ज़ायदान (1861-1914) के ऐतिहासिक उपन्यास में अपनी स्वायत्तता का दावा करती है। मिस्र में, स्वदेशी और बाहरी लोगों के बीच की सीमा निश्चित नहीं है, बल्कि यह तेजी से अस्पष्ट होता जा रहा है। ज़ायदान हरम और "ओरिएंटल" की प्राच्यवादी धारणाओं का सहारा लेते हैं और साथ ही साथ उनकी आलोचनात्मक नकल भी करते प्रतीत होते हैं।
अपने युग में लैंगिक अधिकारों और मिस्र में लिंग और जीवन स्थान के बदलते समीकरणों से संबंधित बहसों में हस्तक्षेप करने के लिए उन्होंने "तानाशाही" का सहारा लिया।
उन्नीसवीं शताब्दी और बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों के दौरान ओटोमन साम्राज्य। बश्किन का तर्क है कि चाहे ज़ायदान अपनी कहानियों की सामग्री मध्यकालीन बगदाद से ले रहे हों या समकालीन इस्तांबुल से, उनके चित्रण
हरम में रहने वाली या उससे जुड़ी महिलाएं (सुल्तान की मां से लेकर गुलामों के नस्लीय चित्रण तक, उपपत्नी जे से लेकर उसकी सहेली तक), आधुनिक, किताब-प्रेमी महिलाएं

शिरिन लिंग संबंधी बाधाओं के माध्यम से राजनीतिक अत्याचार का प्रतीकात्मक चित्रण करती हैं।
अलग-थलग घरेलू और पारिवारिक संरचना। यह दिलचस्प है कि ज़ायदान है
परिचय 15

ठीक उसी समय, 1890 के दशक में, जब (रीना लुईस के अनुसार)
अंग्रेजी भाषी "हरम साहित्य" अपने चरम पर है।24 यदि यह दर्शक वर्ग नहीं होता
ज़ायदान की प्राथमिक चिंता, संभवतः एक विश्वव्यापी बुद्धिजीवी की है। उनके जैसे लोग, जिन्होंने अपने अरबी जर्नल अल-हिलाल (अर्धचंद्र) के लिए अधिकांश सामग्री यूरोपीय स्रोतों से ली थी, हरम की अंतरराष्ट्रीय—लेकिन असंगत—प्रतीकात्मक प्रतिध्वनि से अवगत थे। (और यह कितना उपयुक्त है कि लगभग सौ साल बाद इसी पत्रिका में अमीना ने यह बात लिखी।)
अल-सईद ने अपने लाक्षणिक हरम का इस्तेमाल महिलाओं के अधिकारों से प्राप्त लेकिन खतरे में पड़ी चीजों के आलोचनात्मक प्रतिवाद के रूप में किया।
हो सकता है कि यह केवल उस दौर में हुआ हो जब महिलाओं का एकांतवास धीरे-धीरे कम होने लगा था—या कम से कम निकट भविष्य में कम होने की संभावना प्रतीत होने लगी थी।
कि ज़ायदान जैसे लेखक (और अन्य भी थे) सचेत रूप से ऐसा कर सकते थे
बदलते सामाजिक परिदृश्य में हरम को एक महत्वपूर्ण, प्रश्नगत स्थान के रूप में उपयोग करें। तुर्की के बुद्धिजीवी के समकालीन उपन्यासों पर विचार करें।
अहमेट मिधात एफेंडी, अध्याय 12 में, ए. होली शिस्लर घरेलू जीवन के स्थानों और हरम को सामाजिक संगठन के एक सिद्धांत के रूप में पाती हैं (जैसा कि शिस्लर कहती हैं, "महिलाओं को दुनिया से अलग करना और उन्हें एक विशेष स्थान पर रखना")।
इन कहानियों में "पुरुष संरक्षण के अंतर्गत" को एक केंद्रीय और सकारात्मक मूल्य के रूप में दर्शाया गया है, एक ऐसी संस्था जो "परिवार की सबसे गहरी संरचना को बाजार की ताकतों से बचाती है।" मध्यवर्गीय हरम—जो शाही महल से बहुत अलग है—एक ऐसी जगह है जहाँ निजी सद्गुण सीखे और अभ्यास किए जाते हैं, और जहाँ नैतिकता व्यक्तिगत विकल्पों और उनके पूरकों में निहित होती है।

लैंगिक भूमिकाएँ, ये सब (उपन्यासों के अनुसार) व्यापक समाज के लाभ के लिए हैं। ये पुरुष सुधारक, कुछ प्रकार के विकल्पों का पूरी निष्ठा से समर्थन करते हैं और
युवा महिलाओं और युवा पुरुषों के लिए नए प्रकार की शिक्षाएँ हरम स्थलों के बारे में उस तरह की विद्रोही सोच प्रदान नहीं करती हैं जो हमें अन्य विषयों में देखने को मिलती हैं।
कुछ अंग्रेज़ीभाषी संस्मरण और अन्य ग्रंथ जो महिलाओं द्वारा लिखे गए हैं बीसवीं शताब्दी की शुरुआत—असाधारण रचनाएँ जो एक साहसिक कल्पना को दर्शाती हैं, फिर भी लेखक के अपने भीतर से कहीं अधिक, उससे परे एक एकाकी मार्ग को उजागर करती हैं।
समाज, और (जैसा कि उल्लेख किया गया है) एक ऐसा पाठक वर्ग तैयार करता है जो जरूरी नहीं कि स्वदेशी हो। रूप बदलने वाली मेलेक हनीम (उर्फ मैरी डी जीन) पर विचार करें।
1814-73), जिनकी 1872 में प्रकाशित पुस्तक 'थर्टी इयर्स इन हरम', जो संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित हुई थी, वास्तव में घर-परिवार की बजाय विशाल भूभागों की यात्रा को अधिक दर्शाती है। लेखिका दिखाती हैं कि कैसे ओटोमन महिलाएं अपनी जालीदार खिड़कियों से पुरुषों को निहारती हैं, जो प्रत्यक्ष संवाद की शुरुआत है; रमज़ान की रातों में लड़कियां और महिलाएं बाहर घूमती हैं; और ओटोमन राजकुमारियां...
यूरोपीय कपड़े पहनकर महल से चुपके से निकल जाना, यह दर्शाता है कि वे यूरोपीय महिलाओं के हरम दौरों का उपयोग वे अपने स्वार्थों के लिए कर पाते थे। 16 परिचय

उन महिलाओं का रूप धारण करके। और मेलेक हनीम के एकांतवास का सबसे सशक्त उदाहरण तब सामने आता है जब उसे उसकी सास के घर भेज दिया जाता है।
रोम में। इस बीच, वह दिखाती है कि कैसे लैंगिक पदानुक्रम अन्य पदानुक्रमों द्वारा नियंत्रित होते हैं: ओटोमन राजकुमारियों के आम पति थोड़े
अपनी पत्नियों के कैदियों से भी अधिक, और ओटोमन सुल्तान को उसके महल में कैद कर दिया गया है और उसे राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण जानकारी तक पहुँच से वंचित कर दिया गया है।25

यह लेख उस पूरी धारणा को चुनौती देता है जिसे कुछ पश्चिमी विद्वानों ने नाम दिया है।
मुस्लिम क्षेत्रों के रूप में समरूप रूप से26—जैसा कि ज़ायदान के उपन्यासों में भी है, हालांकि बहुत अलग तरीके से। या, ओटोमन तुर्की से भारत की ओर प्रस्थान करना
ब्रिटिश शासन के संदर्भ में, रोकेया सखावत हुसैन की नारीवादी आदर्शवादी कल्पना पर विचार करें, जो उनकी विवादास्पद रचना बंगाली के बजाय अंग्रेजी में लिखी गई थी।
सियाल के निबंध "द सीक्लूडेड वन्स" में, सुल्ताना के सपने में, पुरुषों को हरम में बंद कर दिया जाता है, और राष्ट्रवादी बयानबाजी पर एक उत्कृष्ट व्यंग्य में रानी पुरुषों से "सम्मान और स्वतंत्रता की खातिर" ज़नाना (हरम) में प्रवेश करने के लिए कहती है।
पुरुषों को एकांतवास में अनुशासित दिखाया गया है: रीति-रिवाज की शक्ति नियंत्रित सीमाओं की आवश्यकता को समाप्त कर देती है। यह एक ऐसा अनुशासन है जिसे फातिमा
1936 में जन्मी मर्निसी, लगभग एक सदी बाद, अपने भाषण में इस बात पर जोर देंगी।
अपने संस्मरण उपन्यास 'ड्रीम्स ऑफ ट्रेसपास' में उन्होंने लड़कियों के समाजीकरण के बारे में बताया है, जिसमें उन्हें "अदृश्य" सीमाओं को सीखना सिखाया जाता है: बचपन सीमाओं की एक श्रृंखला है, लेकिन
सीमाएँ ही सरहदें भी बनाती हैं।27 दोनों ग्रंथों में, महिलाओं के समुदाय आत्मनिर्भर हैं, हरम उन महिलाओं को शरण प्रदान करता है जो अपने जीवन में संघर्षों से जूझ रही हैं।
जीवन, और भव्य सैलून के ऊपर स्थित अंतरंग कमरे, जिनमें पुरुष निवास करते हैं,
रचनात्मकता के लिए स्थान। आंटी हबीबा की कहानी सुनाने की आवाज़ "जादुई कांच के दरवाज़े खोलती है, जो चांदनी रातों में जगमगाते घास के मैदानों की ओर ले जाती है"28—भले ही स्वप्न का भाव क्रिया पर सीमाओं का सुझाव देता हो। और जिन घरों में वह युवती रहती है, वहाँ पितृसत्तात्मक और संयुक्त परिवार का सामाजिक संगठन है।

वास्तुकला के रूप में संस्थागत रूप दिया गया है। फिर भी, युवा पीढ़ी ने उन सिद्धांतों को अपनाया है जिन्हें अहमद मिधात एफेंडी (और उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के उनके अरब समकक्षों) ने अपने उपन्यासों और अन्य रचनाओं में प्रचारित किया था।
विवाद: मर्निसी के पिता और चाचा के लिए, एकविवाह और एकल परिवार के लिए प्राथमिकता राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के केंद्र में है।29
शिस्लर के अध्याय की तरह, मेरा अध्याय भी वेश्यावृत्ति के काल्पनिक चित्रणों की पड़ताल करता है, जो बीसवीं शताब्दी के आरंभिक काल से होते हुए दक्षिण में काहिरा तक जाता है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद शहर में, जैसा कि मेरे द्वारा विश्लेषित ग्रंथों में दर्शाया गया है,
हरम के नैतिक रूप से विपरीत माने जाने वाले "वेश्यालय" वास्तव में युवा महिलाओं को घर के एकांत स्थानों की तुलना में अधिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।
मेलेक हनीम, इन युवतियों के लिए, खुले स्थानों में घूमना एक ऐसा तरीका है जिससे...
खुद को बचाना। इन किरदारों के लिए सपने बुरे सपने बन जाते हैं। "बिटवीन" में
परिचय 17

"हरम और हाउस बोट" में, मैं वेश्यावृत्ति को एक शाब्दिक अनावरण के रूप में देखता हूँ।
आधुनिक बनने की प्रक्रिया में क्या गड़बड़ी हुई है, इस दृष्टिकोण से?
वे अभिजात वर्ग जो प्रारंभिक ओटोमन और अरबी कथा साहित्य का निर्माण (और पठन) कर रहे थे। जिन्हें मैं वेंट्रिलोक्विज़्ड संस्मरण कहता हूँ—जहाँ महिला और/या अधीनस्थ कथावाचक को संस्मरणकार के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, फिर भी पाठ्य संकेत बताते हैं कि यह कथावाचक पाठ का लेखक/प्राधिकारी नहीं है—वे आपस में जुड़े हुए हैं।
1920 के दशक के मिस्र में एक व्यापक सांस्कृतिक परिदृश्य के संदर्भ में, यह तर्क दिया जा सकता है कि जैसे-जैसे अधिक आवाजें जुड़ती गईं, वैसे-वैसे और अधिक आवाजें इसमें शामिल होती गईं।

या राजनीतिक कार्रवाई के माध्यम से। घूंघट—अपने असंख्य रूपों में, एक ऐसी विविधता जिसे उत्तरी अमेरिकी विमर्श में हमेशा मान्यता नहीं मिलती— एक प्रतीक बन जाता है।
समझ की अस्पष्टता जो उन लोगों के बीच संचार को रोकती है
विभिन्न सांस्कृतिक मूल, ठीक वैसे ही जैसे यह (और हरम) उन्नीसवीं सदी के यात्रा लेखकों के वृत्तांतों में रहस्य और दुर्गमता का प्रतीक था।
लॉर्ड क्रोमर से राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश को संबोधित करते हुए, पश्चिमी पुरुष नेताओं ने "अन्य महिलाओं को बचाना" जैसे इशारों का इस्तेमाल किया है—शायद ईमानदारी से—
जो राजनीतिक और सैन्य अतिक्रमणों को सुदृढ़ करने वाले औचित्य भी हैं। सीमाओं के पार। और घूंघट और हरम दोनों अपने प्रतीकात्मक 18 परिचय के भीतर समाहित हैं।

“कपड़े उतारना” और “प्रवेश करना” की धारणाओं तक पहुँचना: परिकल्पित कृत्य जो
ये शब्द यौन प्रभुत्व, हिंसक उल्लंघन और औपनिवेशिक विजय के भावों को समाहित करते हैं, जबकि घूंघट और हरम से जुड़ी पुरानी रूढ़िवादी धारणाएं निष्क्रियता, मौन, कारावास और कामुकता को दर्शाती हैं। यदि ये प्रतीक जीवन के विविध अनुभवों को धुंधला करते हैं, तो हमें इन्हें अनुभव के पहलुओं के रूप में भी देखना चाहिए, लेकिन ऐसे पहलू जो पर्यवेक्षकों और टिप्पणीकारों की अपेक्षा या "देखे" गए तरीकों से काम नहीं करते थे।
इस प्रकार, यदि यूरोप और उत्तरी अमेरिका में हरम को आमतौर पर अतीत की बात माना जाता है, तो इसकी पुरानी धारणाएँ, नई और समान रूप से लैंगिक छवियों के संचय के साथ, इस क्षेत्र की समग्र छवि को प्रभावित करती रहती हैं। वैचारिक रूप से जटिल और प्रतीकात्मक रूप से भारित शब्द 'हरम' का विश्लेषण करना इस बात पर विचार करना है कि कैसे यह संस्था, अपने गतिशील इतिहास और विभिन्न समाजों में असंख्य अभिव्यक्तियों के साथ, लोकप्रिय कल्पनाओं में स्थापित है, साथ ही यह भी समझना है कि यौन और लैंगिक पहचान की समझ किस प्रकार संपूर्ण सांस्कृतिक क्षेत्रों को एक दूसरे के लिए आकार देती है और प्रस्तुत करती है। एक अवधारणा और संस्था के रूप में हरम हमें याद दिलाता है कि...

हमें यह पता चलता है कि सांस्कृतिक क्षेत्रों के भीतर और उनके पार ये प्रतिनिधित्व हमेशा मौजूद रहते हैं।
सामाजिक स्थान और ऐतिहासिक समय में स्थित। इस खंड में शामिल निबंधों को समग्र रूप से देखने पर यह पता चलता है कि हरम किसी भी रूप में, किसी भी आकार या प्रकार से
यह एक स्थिर अवधारणा या तुरंत पहचाने जाने योग्य, दोहराए जाने योग्य स्थान नहीं है। यह एक परिवर्तनशील संस्थागत प्रथा है जिसने कई लोगों के जीवन को आकार दिया है, और यह बनी हुई है।
यह इस बात पर विचार करने के लिए एक उपयोगी केंद्र है कि लिंग किस प्रकार मायने रखता है।
मनुष्य उन स्थानों का निर्माण, उपयोग और प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें हम अपना जीवन व्यतीत करते हैं—और दूसरों के जीवन और स्थानों के बारे में सोचते हैं।

नोट्स

इस पूरे खंड में, हम ओटोमन तुर्की शब्दों का लिप्यंतरण करते हैं।
समकालीन तुर्की मानक। अरबी के लिए, हम यथासंभव सरलतम प्रणाली का उपयोग करते हैं।
केवल ‘ऐन और आंतरिक हम्ज़ा को चिह्नित किया गया है, सिवाय हरीम के मामले में और स्पष्टता के लिए कभी-कभार अन्य शब्दों के। सभी अनुवाद मेरे हैं, जब तक कि अन्यथा इंगित न किया गया हो। 1 वका ब्राउन, हरेमलिक, 2।
2 इस अवधि के अंग्रेजी भाषा के प्रकाशनों में हरम शब्द की विपणन क्षमता पर, लुईस, रीथिंकिंग ओरिएंटलिज़्म, अध्याय 1 देखें। 3 वाका ब्राउन, हरेमलिक, 13।
4 वही, 15.
5 ज़ेनेब हनोम, एक तुर्की महिला की यूरोपीय धारणाएँ, 194. 6 लुईस, प्राच्यवाद पर पुनर्विचार, 13.
7. उक्त में उद्धृत, 45.
परिचय 19

8. इस परियोजना की जिम्मेदारी संभालने के दौरान आयोजकों द्वारा किए गए उत्साहपूर्ण सहयोग के लिए मैं उनका आभारी हूं, और नासिर रब्बत का भी उनके कुछ सुखद सुझावों के लिए ऋणी हूं।
इस प्रस्तावना में प्रयुक्त मुहावरे, सम्मेलन में उनके द्वारा दिए गए परिचय से प्रेरित हैं।
9 अल-सईद, "हाल ताउदु अल-मारा इला 'असर अल-हरिम?"
10 वही, 30.
11 माब्रो, छिपे हुए आधे सच, 7.
12 कहफ़, मुस्लिम महिला के पश्चिमी चित्रण।
13 ज़ियादा, 'आइशा अल-तैमूर, 98।
14 बैचलार्ड, द पोएटिक्स ऑफ स्पेस; लेफेब्रे, द प्रोडक्शन ऑफ स्पेस; टुआन, स्पेस एंड
स्थान; सोजा, उत्तरआधुनिक भूगोल और तृतीय स्थान।
15 आर्डेनर, महिलाएँ और स्थान; हेडन, महान घरेलू क्रांति और पुनर्रचना- अमेरिकी सपने को साकार करना; मैसी, श्रम का स्थानिक विभाजन, स्थान, जगह और पीढ़ी-
डेर, और फॉर स्पेस; स्पेन, जेंडर्ड स्पेसेस।
16 अहमद, ए बॉर्डर पैसेज, 181.
17 बूथ देखें, मे हर लाइक्स बी मल्टीप्लाइड, अध्याय 8; बूथ, “जॉन स्टुअर्ट मिल. . .
इस्लामवादी?; मर्निसी, घूंघट और पुरुष अभिजात वर्ग।
18 मर्निसी, द वेल एंड द मेल एलीट, 99.
19 उदाहरण के लिए, शारवी की 'हरम इयर्स' और मर्निसी की 'ड्रीम्स ऑफ ट्रेसपास' देखें। 20 इन स्रोतों से लिए गए अंशों का संग्रह भी देखें: लुईस और मिकलराइट की 'जेंडर, मॉडर्निटी एंड लिबर्टी'। इस श्रृंखला की समीक्षा के लिए बूथ की 'आर्मचेयर' देखें।
हरम।"
21 मालेक अलोला का प्रारंभिक और प्रभावशाली कार्य आज भी महत्वपूर्ण है और इसमें शामिल हो गया है
कई हालिया अध्ययनों द्वारा। देखें अलोला, द कोलोनियल हरेम; डेलप्लेटो, मल्टीपल

पत्नियाँ, अनेक प्रकार के सुख; ग्राहम-ब्राउन, महिलाओं की छवियाँ; लुईस, पुनर्विचार
प्राच्यवाद; मेलमैन, महिलाओं का प्राच्यवाद; येज़ेल, मन के हरेम। 22 देखें लाल, प्रारंभिक मुगल जगत में घरेलू जीवन और शक्ति; पीयर्स, द इंपीरियल हरम और नैतिक कथाएँ।
23 गोले, द फॉरबिडन मॉडर्न देखें; स्किक, द इरोटिक मार्जिन; येयेनोग्लू, औपनिवेशिक
कल्पनाएँ।
24 लुईस, प्राच्यवाद पर पुनर्विचार, 14.
25 मेलेक हनीम, हरम में तीस वर्ष, 12–13, 25, 28–29, 20–21, 182, 41. 26 उदाहरण के लिए स्पेन, जेंडर्ड स्पेसेस, अध्याय 2 देखें। स्पेन का विशिष्ट मानवशास्त्रीय उदाहरणों और भौगोलिक स्थलों से "इस्लामी पर्दा" पर सामान्य टिप्पणी की ओर बढ़ना बहुत समस्याग्रस्त है, विशेष रूप से "कालहीन" वर्तमान काल के उनके उपयोग के साथ।
मुस्लिम, अरब और भारतीय जैसी श्रेणियों के बीच आसानी से घुलमिल जाने की उसकी प्रवृत्ति, जबकि
वह “इस्लामी राष्ट्रों” से क्या तात्पर्य रखती है, इसे परिभाषित करने में विफल रही (51)। 27 मर्निसी, ड्रीम्स ऑफ ट्रेसपास, अध्याय 1. 28 वही, 19.
29 वही, 35.
30 अफसरुद्दीन, “परिचय,” 7.

भाग I • मानक छवियां 8 और स्थानांतरण स्थान
जिन अध्यायों से हम शुरुआत करते हैं, वे बताते हैं कि इस्लाम के उदय के बाद की शताब्दियों में, महिलाओं द्वारा आबाद (या नहीं) स्थानों का प्रतिनिधित्व करना, जैसा कि अस्मा अफसारुद्दीन अध्याय 1 में कहती हैं, "महिलाओं की दृश्यता और बाहरी गतिविधियों" के "अत्यधिक विवादास्पद मुद्दों" का अभिन्न अंग बन गया।
घर।" वह तर्क देती हैं कि पैगंबर की महिला सहयोगियों की छवि के मानक निर्माण, बाद की महिलाओं के लिए आदर्श के रूप में, तेजी से घरेलू एकांत पर जोर देते थे।
अध्याय 2 में, यासीन नूरानी महिलाओं और पुरुषों के सामाजिक स्थान में निर्धारित मानदंडों के निर्माण पर भी चर्चा करती हैं।
लेकिन उनका तर्क है कि प्रारंभिक इस्लामी साहित्यिक प्रवचन प्रतिनिधित्व करते हैं
स्पष्ट रूप से परिभाषित स्थानों की तुलना में सामाजिक संबंधों के संदर्भ में स्थानिक विभेदन। आत्म-अवधारणाएँ अंतर्निहित हैं।
सामाजिक संबंधों पर यह जोर, विशेष रूप से "महिलाओं का अपने से ऊपर अधिकार रखने वाले पुरुष के साथ संबंध"। ये प्रारंभिक
चर्चाओं में हरम को एक संस्था के रूप में नाम नहीं दिया जाता क्योंकि, नूरानी ने पाया कि संबंधित रूप हुरमा अधिक महत्वपूर्ण है, 22 मानक छवियां और बदलते स्थान

जिसका अर्थ है “किसी व्यक्ति या वस्तु की पवित्रता और अक्षुण्णता।” इसी प्रकार,

अध्याय 3 में, इरविन शिक हरम और संबंधित शब्दों के दोहरे महत्व पर जोर देते हैं, जो

स्थान और लोगों की श्रेणियों दोनों को

संदर्भित करते हैं। तीनों लेखक सुझाव देते

हैं कि एक स्थानिक अवधारणा के रूप में हरम

को इसके बराबर नहीं माना जा सकता है,

या फिर इन्हें आधुनिक युग में विकसित सार्वजनिक और निजी की अवधारणाओं के संदर्भ में ही समझा जाना चाहिए। इसके अलावा, जीवन के स्थानों की ये साहित्यिक रचनाएँ अस्थिर और पारगम्य हैं, भले ही वे इन्हें अलग-अलग भागों में बाँट देती हों।
महिलाओं और परिवार जैसे सीमित स्थान का एक दायरा। अफसरुद्दीन और नूरानी द्वारा रचित ग्रंथों के लिए इन संरचनाओं का स्थायी महत्व है।
जिन ग्रंथों का विश्लेषण किया जा रहा है, वे ऐसे ग्रंथ हैं जिन्होंने अरबी परंपरा के उच्च साहित्य के हिस्से के रूप में और मानक ग्रंथों के रूप में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया है।
इन अध्यायों में एक सवाल अप्रत्यक्ष रूप से उठता है—और यह एक सवाल है पूरी किताब में जो एक महत्वपूर्ण सवाल बना रहेगा, वह यह है: स्थान का प्रतिनिधित्व उसके निवासियों के स्वरूप को किस प्रकार आकार देना शुरू करता है? यानी, क्या महिलाओं या पुरुषों के स्थान के प्रकारों के बारे में विवरण और धारणाएँ उन आकृतियों को ढकने और नया रूप देने लगती हैं?
क्या ये लेखक शरीर, हाथ और पैर के माध्यम से शरीर की एक आवश्यक स्थानिक व्यवस्था का संकेत देते हैं?

1 • प्रारंभिक महिला उदाहरण और लैंगिक रूप से परिभाषित स्थान का निर्माण

नारी नैतिक उत्कृष्टता को (पुनः) परिभाषित करना

अस्मा अफसरुद्दीन

8. सार्वजनिक क्षेत्र के रूप में परंपरागत रूप से वर्णित क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं की उपस्थिति—और वहां रहने का उनका अधिकार—इस्लामी सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास के अधिकांश भाग में एक अत्यंत जटिल मुद्दा रहा है। यह एक ऐसा प्रश्न है जिसने कई लोगों के मन में प्रश्नचिह्न लगाए हैं।
विभिन्न विचारधाराओं के न्यायविदों और धर्मशास्त्रियों ने स्वीकार्य स्त्री आचरण की स्थानिक सीमाओं को स्पष्ट रूप से निर्धारित करने और इसके कानूनी और नैतिक महत्व को निर्धारित करने का प्रयास किया। इस्लाम की दूसरी शताब्दी के बाद महिलाओं के लिए रचित जीवनी साहित्य और सलाह पुस्तिकाओं के आधार पर (
(ईसा के आठवीं शताब्दी में) यह स्पष्ट है कि घर के बाहर महिलाओं की दृश्यता और गतिविधियाँ न्यायिक और धार्मिक हलकों में अत्यधिक विवादास्पद मुद्दे बन गईं। धार्मिक ग्रंथों पर आधारित घरेलू जीवन की एक साहित्यिक संस्कृति विकसित हुई।
और इन मंडलों में पवित्र प्रथाओं का प्रचार-प्रसार होने लगा।
और घर में एकांतवास को नारीवादी नैतिक उत्कृष्टता की परिभाषित विशेषता के रूप में बढ़ावा दिया गया। इस विषय पर इन विद्वानों की कानूनी और धार्मिक व्याख्या काफी हद तक आदर्शवादी धारणाओं पर आधारित थी।
सहबियात (एकवचन, सहबिया), पैगंबर मुहम्मद की महिला साथियों द्वारा स्थापित व्यवहारिक मिसालें। पैगंबर की सबसे करीबी महिला सहयोगियों और रिश्तेदारों के रूप में-24 अस्मा अफसरुद्दीन

आधिकारिक जीवनियों में दर्ज पात्रों, उनके आचरण और कार्यों के बारे में। उन्हें मुहम्मद की स्वीकृति प्राप्त मानी गई थी, और इस प्रकार वे

मुसलमानों की पहली पीढ़ी, उनके जीवन के विवरणों पर विचार करते हुए— विशेष रूप से योद्धाओं, राहतकर्मियों के रूप में सार्वजनिक क्षेत्र में उनका प्रवेश,
और धार्मिक नेताओं को मुख्य रूप से दो प्रमुख जीवनी संबंधी लेखों में चित्रित किया गया है।
विभिन्न युगों की रचनाएँ। इस अध्ययन के लिए चुनी गई महिलाएं पैगंबर की महिला रिश्तेदारों और पत्नियों, सबसे प्रसिद्ध महिला सहाबियों में से नहीं हैं, बल्कि कम प्रसिद्ध हैं जिन्होंने विशिष्ट मानदंडों के आधार पर इन जीवनी संबंधी रचनाओं में शामिल होने का अधिकार अर्जित किया है। यह अध्याय
इस प्रकार जानबूझकर इसमें इस्लाम की पारंपरिक "प्रथम महिलाओं" पर प्रविष्टियों को शामिल नहीं किया गया है।
दूसरे शब्दों में कहें तो, मुहम्मद के साथ उनके रक्त और वैवाहिक संबंध ही उनके चयन का सर्वोपरि मानदंड रहे होंगे।
सहचरों के रूप में, उन्हें जीवनी संबंधी रचनाओं में स्वतः ही शामिल कर लिया जाता। इस अध्ययन के दो उद्देश्य हैं: यह निर्धारित करना कि
ऐसे रिश्तेदारी के अभाव में, किन विशिष्ट कारकों ने इन महिलाओं को मुसलमानों की पहली पीढ़ी के विशिष्ट सदस्यों के रूप में सम्मानित करने में योगदान दिया, और यह पता लगाना कि क्या लिंग ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
प्रारंभिक महिला आदर्श और लिंग-आधारित स्थान 25

उनकी नैतिक उत्कृष्टता का आकलन करने के लिए जिन मानदंडों का उपयोग किया जाता है। एक अन्य उद्देश्य यह है कि
अवधारणा में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को दर्शाइए।
महिलाओं की भूमिकाएं और सार्वजनिक क्षेत्र में उनकी पहुंच, जिसे तेजी से लगभग पूरी तरह से पुरुष प्रधान क्षेत्र के रूप में देखा जाने लगा।
इस अध्ययन में प्रयुक्त दो प्रसिद्ध जीवनी संबंधी कृतियाँ निम्नलिखित हैं:
मुहम्मद इब्न साद (मृत्यु 230/844-45) द्वारा लिखित किताब अल-तबाक़ात अल-कुबरा (महान पीढ़ियों की पुस्तक)2 और इब्न हजर अल-असकलानी (मृत्यु

852/1449) द्वारा लिखित अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-सहबा (सहबा के विशिष्ट दर्जे की सही समझ)3 एक तीसरी जीवनी संबंधी रचना जिसका उल्लेख यहाँ कभी-कभी किया जाता है, वह है कॉर्डोबा के विद्वान इब्न अब्द अल-बर्र (मृत्यु 463/1070) द्वारा लिखित अल-इस्तिअब फ़ी मरीफ़त अल-अशब (सहबा के ज्ञान को समझना)4
इब्न साद अब्बासिद युग के उत्कर्ष काल (133/750–) के दौरान रहते और कार्य करते थे।
इब्न अब्द अल-बर्र (648/1250) भी इसी काल के थे, हालाँकि शारीरिक और सांस्कृतिक रूप से इब्न अब्द अल-बर्र अंडालूसी परिवेश से संबंधित थे, जबकि इब्न हजर ममलुक युग (648/1250-992/1517) की उपज थे। ये तीनों जीवनी संबंधी शब्दकोश संभवतः सबसे अधिक संदर्भित ग्रंथ हैं जो इब्न हजर के जीवन से संबंधित हैं।
साथी होने के नाते, उन्होंने आकार देने में एक मूलभूत भूमिका निभाई है। इस्लाम की पहली शताब्दी में रहने वाले इन नैतिक आदर्शों के बारे में प्रचलित धारणाओं पर मैं ध्यान केंद्रित करूँगा। उनकी विशिष्ट सहाबियात की प्रस्तुतियों की तुलना करते हुए, मैं विशेष रूप से इन पर ध्यान दूंगा। इस बात पर कि समय के साथ इन चित्रणों के कुछ विवरणों को कैसे संशोधित या पुनर्परिभाषित किया गया (या नहीं), और इससे प्राप्त अंतर्दृष्टि हमें बदलते परिवेश के बारे में क्या बता सकती है।
मुस्लिम समाज में महिलाओं की नैतिक श्रेष्ठता और उनकी सार्वजनिक भूमिकाओं की अवधारणाओं
उत्तर मध्ययुगीन काल के दौरान के समाज।
जीवनी संबंधी रचनाओं के साथ-साथ, निर्देशात्मक नियमावली भी रचित की गई। सेल्जुक और ममलुक काल के उत्तरार्ध में महिलाओं को "उचित" व्यवहार के बारे में निर्देश देने वाली पुस्तकें शिक्षाप्रद हैं। इस प्रकार की पुस्तकें उस समय सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति के संबंध में सामाजिक दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण सूचकांक हैं।
ये ग्रंथ हमें इस्लाम के प्रारंभिक काल की तुलना में महिलाओं की भूमिकाओं की अवधारणा में हुए महत्वपूर्ण परिवर्तनों को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद करते हैं। उल्लेखनीय रूप से, ऐसे ग्रंथ, जो हरम को सदाचारी

स्त्री के सर्वोत्कृष्ट केंद्र के रूप में स्थापित करने पर केंद्रित थे, प्रारंभिक काल में नहीं मिलते हैं।
अवधि।

टी ई एल एल आई एनजी एल आईवी ई एस: डब्ल्यू ओ एम ई एन ई एम आई जी आरए एनटीएस एफ आरओ एम एम ई सी सी ए टी ओ एम ई डी आई ना

हम चुनिंदा महिलाओं के दर्ज जीवन की एक झलक से शुरुआत करते हैं।
मक्का से मदीना में पलायन करने वाले प्रवासी—जिन्हें अरबी में अल-मुहाजिरात के नाम से जाना जाता है—जिनमें से कई मूर्तिपूजक मक्कावासियों के उत्पीड़न से भाग रहे थे। 26 अस्मा अफसरुद्दीन

इस्लाम के प्रचार का विरोध करने वाली महिलाओं में निम्नलिखित महिलाएं शामिल हैं।
इब्न साद की तबकात में "कुरैश और उनके सहयोगियों में से निष्ठा की शपथ लेने वाली महिलाओं के नाम" शीर्षक वाले खंड में जिन लोगों का उल्लेख है, उनका उल्लेख किया गया है।
[हुलफ़ाइहिम], उनके ग्राहक [मवालीहिम], और अपेक्षाकृत अज्ञात महिलाएं सामान्य तौर पर अरबों में से [वा-घराइब निसा अल-अरब]।" मैं प्रत्येक जीवनी संबंधी प्रविष्टि पर समग्र रूप से चर्चा नहीं करूँगा, बल्कि कुछ बिंदुओं का चयन करूँगा।
जो मुझे इस अध्याय के केंद्रीय विषयों को स्पष्ट करने में सहायक प्रतीत होता है।
उम्म अयमान पैगंबर मुहम्मद की नर्स और एक आज़ाद दासी थीं; बाद में उन्होंने मुहम्मद के दत्तक पुत्र और आज़ाद दास ज़ैद बिन हारिथा से विवाह किया।
सहाबियों के बीच असाधारण रूप से उच्च स्थान का संकेत निम्नलिखित दो हदीसों में मिलता है।5 पहली हदीस में, बनू साद बिन बक्र के एक अनाम शेख बताते हैं: “अल्लाह के रसूल, आप पर शांति और आशीर्वाद हो, ने कहा कि...”
वह उम्म अयमान को 'मेरी माँ' कहकर पुकारता था। और जब वह
उसे देखो, वह कहता, 'यह महिला मेरे परिवार की बची हुई सदस्य है [बकियात]'

अहल बैती]।’”6 दूसरी हदीस सुफयान बिन उकबा द्वारा वर्णित है, जिन्होंने कहा: “अल्लाह के रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने कहा, ‘जो कोई भी
यदि कोई स्वर्गवासियों में से किसी स्त्री से विवाह करना चाहता है, तो उसे विवाह करने दो।
उम्म अयमान।”7
इब्न साद ने कई प्रमुख घटनाओं में उम्म अयमान की भागीदारी पर प्रकाश डाला है।
प्रारंभिक इस्लाम में हुए युद्धों में उनकी उपस्थिति थी। वह 625 ईस्वी में उहुद के युद्धक्षेत्र में मौजूद थीं, जहां उन्होंने प्यासों को भोजन कराया और घायलों की देखभाल की।
उन्होंने खैबर की लड़ाई (7/628) भी देखी थी। ऐसा भी कहा जाता है कि वह हुनैंन के युद्ध (8/630) में उपस्थित थीं, जहाँ उन्होंने विरोधी सेना पर ईश्वर के अभिशाप का आह्वान किया, जिसके लिए पैगंबर ने उन्हें विनम्रतापूर्वक फटकारा।8
प्रारंभिक इस्लाम में उम्म कुलथुम बिन्त उक़बा की श्रेष्ठता निम्नलिखित प्रकार से प्रकट होती है। कहा जाता है कि उन्होंने मक्का में इस्लाम स्वीकार किया और अपना योगदान दिया।
मक्का से मदीना हिजरत करने से पहले पैगंबर के प्रति उनकी निष्ठा (बायअ) का विशेष महत्व है। उन्हें पैगंबर के तुरंत बाद मक्का से मदीना हिजरत करने वाली पहली महिला बताया जाता है। इब्न साद के अनुसार, उम्म कुलथुम की विशिष्टता इस तथ्य में निहित है कि "उम्म कुलथुम बिन उकबा के अलावा हमें किसी अन्य कुरैशी महिला के बारे में जानकारी नहीं है जिसने मक्का छोड़ा हो।"
उसके माता-पिता एक मुस्लिम महिला के रूप में, ईश्वर और उसके पैगंबर की शरण में हिजरत कर रहे थे।9
उम्म कुलथुम के भागने की नाटकीय परिस्थितियाँ उनके असाधारण साहस को उजागर करती हैं, और कहा जाता है कि ये परिस्थितियाँ
इन घटनाओं के कारण कुरान की एक विशेष आयत का अवतरण हुआ। इब्न साद के अनुसार, उम्म कुलथुम अकेले मक्का से निकलीं और मदीना पहुंचीं। अल-हुदैबिया की संधि (6/627-28) के समय, इसके साथ ही

खुज़ा जनजाति के एक अज्ञात व्यक्ति द्वारा उसका अपहरण कर लिया गया था।
उसके दो भाई,
प्रारंभिक महिला आदर्श और लिंग-आधारित स्थान 27

अल-वालिद और उमारा, जो उसके हिजरत के खिलाफ थे, गर्म मौसम में रवाना हुए। उसका पीछा करते हुए वे उसके आने के अगले दिन सुबह मदीना पहुँच गए। उन्होंने पैगंबर से अल-हुदैबिया संधि की शर्तों के अनुसार उसे उन्हें लौटाने की विनती की। जैसा कि सर्वविदित है, उन शर्तों में यह निर्धारित था कि कोई भी
मक्कावासी जो मदीना में मुसलमानों से जुड़ना चाहते थे, उन्हें मक्का वापस भेज दिया जाता था, जबकि मदीना से जो भी मक्कावासियों के साथ मिल जाते थे, उन्हें वापस मक्का भेज दिया जाता था।
मुसलमानों को वापस नहीं करना पड़ेगा।10 अपने भाइयों की बात सुनकर
इस अनुरोध पर, उम्म कुलथुम ने जवाब देते हुए कहा, “हे ईश्वर के दूत, मैं एक महिला हूँ, और जैसा कि आप जानते हैं, एक महिला की स्थिति [समान] है
कमजोर। अगर तुम मुझे अविश्वासियों के पास लौटा दोगे, तो वे मेरे धर्म के कारण मुझे यातनाएँ दे सकते हैं और मैं इसे सहन नहीं कर पाऊँगा।
इसके बाद कुरान की आयतें अवतरित हुईं, जिससे एक विशेष अवसर प्राप्त हुआ। मक्का से आई महिला शरणार्थियों के लिए विशेष व्यवस्था की गई है, जिन्हें अपने नेक इरादे और दृढ़ धर्म परिवर्तन के बाद मदीना में रहने की अनुमति दी जाएगी।
इस्लाम में परिवर्तित होने की पुष्टि हो चुकी थी। सूरह अल-मुम्तहना (कुरान 60:10) की यह विशेष आयत कहती है: “हे विश्वासियों, जब भी विश्वासी स्त्रियाँ तुम्हारे पास शरणार्थी बनकर आएँ, तो उनकी जाँच करो, अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।”
उनकी आस्था, इसलिए यदि आप उन्हें विश्वासी स्त्रियों के रूप में पहचानते हैं, तो उन्हें अविश्वासियों के पास वापस न भेजें; ऐसी स्त्रियाँ उनके लिए वैध नहीं हैं और न ही
ऐसे पुरुषों के लिए यह वैध है।
इस रहस्योद्घाटन के बाद, महिलाओं को मक्का वापस नहीं भेजा गया बल्कि

उनसे उनके हिजरत करने के इरादों के बारे में पूछताछ की गई। इब्न साद बताते हैं कि
कहा जाता है कि पैगंबर ने इन कुछ असाधारण महिला प्रवासियों को संबोधित करते हुए कहा था: "ईश्वर, उसके पैगंबर और इस्लाम के प्रति प्रेम के सिवा कुछ भी नहीं है।"
तुम्हें तुम्हारे घरों से बाहर निकाला, और तुम [खोजने] के लिए बाहर नहीं आए।
एक पति या धन।" उम्म कुलथुम की स्थिति इस प्रकार सबब प्रदान करती है
इस विशेष आयत के लिए अल-नुज़ुल (रहस्योद्घाटन का अवसर)।11 जीवनी संबंधी विवरण जो इस रहस्योद्घाटन के अवसर की ओर इशारा करते हैं, बदले में उम्म कुलथुम की अनुकरणीय धर्मपरायणता और साहस को उजागर करते हैं।
उमय्या बिन्त क़ैस ने मदीना हिजरत के बाद इस्लाम स्वीकार किया और इब्न साद के शब्दों में, "उन्होंने खैबर को पैगंबर के साथ देखा।"
अल्लाह उन पर शांति और आशीर्वाद बरसाए। इब्न साद ने एक विवरण सुरक्षित रखा है।
उमय्या ने स्वयं बताया है कि उन्होंने अपने कबीले, बनू ग़िफ़ार की महिलाओं के एक समूह के साथ पैगंबर से "जाने" की अनुमति मांगी थी।
हम आपके साथ आपके गंतव्य स्थान खैबर चलेंगे, ताकि हम घायलों की देखभाल कर सकें और मुसलमानों की यथासंभव सहायता कर सकें।
पैगंबर ने उत्तर दिया, "ईश्वर के आशीर्वाद से," और इसलिए वह और
अन्य महिलाएं खैबर के लिए रवाना हुईं। उमय्या को उस समय 28 वर्षीय अस्मा अफसारुद्दीन के रूप में वर्णित किया गया है।

एक युवा लड़की जो अभी-अभी यौवनारंभ में पहुंची थी। उसकी भागीदारी के कारण युद्ध में, उसने लूट के माल में से एक हिस्सा जीता, जो एक हार था जिसे पैगंबर ने पहनाया था।
उसने खुद को उसकी गर्दन के चारों ओर लपेट लिया।12
उम्म सिनान अल-असलमिया ने इस्लाम स्वीकार किया और अपनी निष्ठा व्यक्त की। हिजरा के बाद पैगंबर मुहम्मद से मुलाकात हुई। जब उन्होंने अपनी निष्ठा व्यक्त की, तो उन्होंने बताया कि मुहम्मद ने उनके हाथ की ओर देखा और टिप्पणी की कि महिलाओं को ऐसा नहीं करना चाहिए।

उनके हाथों की बनावट में बदलाव करना—एक घटना जिसकी चर्चा मैं आगे विस्तार से करूँगा। बताया जाता है कि उसने कहा था कि शुक्रवार की सभा में केवल वे महिलाएं ही आती थीं जिनकी विवाह योग्य आयु बीत चुकी होती थी। उनके समय में जुमा की नमाज़ और ईद की दो नमाज़ें पढ़ी जाती थीं।13 यह टिप्पणी उल्लेखनीय है, क्योंकि यह इन कुछ चित्रणों में एक दिलचस्प विरोधाभास को उजागर करती है।
सहबियात की: जाहिर तौर पर वे महिलाएं जो उत्साहपूर्वक प्रस्थान कर गईं युद्धक्षेत्र में मुख्य रूप से पुरुष ही थे, और वे पैगंबर की मस्जिद में सामूहिक नमाज़ में शामिल नहीं हो सकते थे (या नहीं हो पाए थे), इस विषय पर हम आगे चर्चा करेंगे।
बाद में।
ऐसा भी कहा जाता है कि उम्म सिनान ने खैबर जाने की अनुमति मांगी थी। पैगंबर के साथ, मुख्य रूप से बीमारों और घायलों की देखभाल करने के लिए। पैगंबर
उमय्या से कहे गए लगभग उन्हीं शब्दों में उम्म सिनान को अनुमति दी गई, और उनसे कहा गया: "ईश्वर के आशीर्वाद के साथ जाओ।" जब उन्होंने अपनी राय व्यक्त की...
अपने कबीले के सदस्यों के बजाय पैगंबर के साथ रहना पसंद करना
(क़ौमिहा) में उन्होंने उससे कहा: “मेरी पत्नी उम्म सलमा के साथ रहो।” इस कथन से स्पष्ट होता है कि उम्म सलमा भी पैगंबर के साथ खैबर गई थीं।14 कुएबा बीटी. इसके बाद साद अल-असलमिया ने पैगंबर के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की
मदीना की यात्रा के दौरान, ऐसा कहा जाता है कि मदीना की मस्जिद में उनके लिए एक तम्बू लगाया गया था, जहाँ वह बीमारों और घायलों की देखभाल करती थीं। कहा जाता है कि साद बिन मुआज़ ने उनके हाथों से इलाज करवाया था।
खंदक में घायल होने के बाद उनकी मृत्यु हो गई। कुऐबा के बारे में यह भी कहा जाता है कि वह खैबर में मौजूद थीं।15 यह किसी महिला की उपस्थिति का एक अतिरिक्त उदाहरण है।
युद्धक्षेत्र यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि यह सहाबियात के लिए कोई असाधारण गतिविधि नहीं थी।
उपरोक्त विवरणों की तुलना में, निम्नलिखित मामले पर ध्यान देना रोचक है:

इब्न साद द्वारा उम्म कबशा का वर्णन केवल "कुदाआ जनजाति की एक महिला" के रूप में किया गया है। कहा जाता है कि उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया (हम कुछ देर से स्वीकार करने का अनुमान लगा सकते हैं, क्योंकि समय अवधि का विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया है और जल्दी धर्म परिवर्तन करना गर्व की बात थी) और पैगंबर से एक हदीस सुनाई।
उनकी प्रविष्टि विशेष रूप से हमारा ध्यान इसलिए खींचती है क्योंकि कहा जाता है कि उन्होंने पैगंबर से उनके साथ युद्ध में जाने की अनुमति मांगी थी (अन तग़ज़ू)।
प्रारंभिक महिला आदर्श और लिंग-आधारित स्थान 29

(माहू) और उन्होंने इनकार कर दिया। तब उसने विनती की: “हे अल्लाह के रसूल, मैं घायलों की देखभाल करूँगी और बीमारों की सेवा करूँगी।” लेकिन पैगंबर ने उससे कहा:
“पीछे रहो, ताकि लोग यह न कहें कि मुहम्मद महिलाओं के साथ लड़ता है।”16 इब्न साद यह नहीं बताते कि किस विशिष्ट युद्ध से यह जानकारी मिलती है
इस वृत्तांत की पृष्ठभूमि। हालाँकि, जब हम उम्म कब्शा पर इब्न हजर की प्रविष्टि को देखते हैं, तो हमें घटना के बारे में अधिक विवरण मिलते हैं जो उन्हें इसकी अनुमति देते हैं।
और हमें इस रिपोर्ट और इसके अंतर्निहित अर्थ के महत्व का मूल्यांकन करना होगा। हम करेंगे
इस महत्वपूर्ण विषय पर हम बाद में चर्चा करेंगे।
कभी-कभी व्यक्तिगत महिलाओं पर लिखे गए लेख बहुत संक्षिप्त होते हैं, लेकिन वे
जीवन के बारे में सबसे प्रासंगिक विवरण प्रस्तुत करें और इन रचनाओं में महिला की भागीदारी को उचित ठहराएं। उम्म हबीबा बिन्त नबाती अल-असदी को केवल एक ही पुरस्कार प्राप्त होता है।
इब्न साद का वह वाक्य, जिसमें उन्होंने कहा है कि उसने इस्लाम स्वीकार किया और प्रतिज्ञा ली।
पैगंबर के प्रति निष्ठा रखते हुए, वे परिवार के अन्य सदस्यों के साथ मदीना चले गए। यह प्रविष्टि संक्षिप्त और सारगर्भित होने के बावजूद, स्पष्ट रूप से यह स्थापित करती है।

इस्लाम में विषय का प्राथमिकता या वरीयता का दावा (अरबी में, सबीका), प्रारंभिक इस्लाम में एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसके बारे में बाद में और अधिक बताया जाएगा।

मेडिना की महिलाएं

मदीना में मक्का से आए प्रवासियों के "सहायक" या अंसार वे लोग थे जो मदीना और उसके आसपास रहते थे और जिन्होंने इस्लाम को या तो पहले या उसके तुरंत बाद स्वीकार कर लिया था।
622 ईस्वी में, जिस वर्ष मदीना की हिजरा शुरू हुई, उस वर्ष कई प्रसिद्ध महिलाएं भी हिजरा करने आईं। कई अन्य हिजराओं की तरह, इन महिला सहायकों ने भी अपने व्यक्तिगत योगदान के कारण जीवनी संग्रहों में अपना स्थान बनाया है।
धर्मपरायणता और पुण्य कर्म।
नुसैबा बिन्त काब को उम्म उमारा के नाम से जाना जाता था, जो एक विख्यात व्यक्तित्व थीं।
बनू नज्जर से। इब्न साद ने लगभग साढ़े तीन अध्याय समर्पित किए हैं।
उनके कारनामों के वर्णन के लिए मुद्रित पृष्ठों का उपयोग किया गया। उनके अनुसार, उम्म उमारा ने अक़बा की रात को पैगंबर के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की, 17 और
अंततः उन्होंने प्रारंभिक इस्लाम की कई महत्वपूर्ण घटनाओं को देखा: वह उहुद (4/625), अल-हुदैबिया (6/627-28), खैबर (7/628) की लड़ाइयों में उपस्थित थीं।
हुनैंन (8/630) और अल-यामामा (12/633-34)। उहुद में वह अपने साथ थी।
पति, ग़ाज़िया बिन 'अम्र, और उनके दो बेटे। इब्न साद हमें बताते हैं कि वीर उम्म 'उमारा ने प्यास बुझाने के इरादे से उहुद की ओर प्रस्थान किया था।
वह युद्ध में शामिल सैनिकों की प्यास बुझा रही थी, लेकिन जल्द ही खुद को दुश्मन से लड़ते हुए पाया। युद्ध के दौरान, कहा जाता है कि उसे बारह चोटें आईं।
उसके शरीर पर भाले या तलवार से किए गए घाव थे।

इब्न साद ने उम्म उमरा से प्राप्त विस्तृत विवरण को शामिल किया है, जिन्होंने 30 अस्मा अफसारुद्दीन को यह बात बताई थी।

जब दूसरी महिला, उम्म सईद ने पूछा तो उसने निम्नलिखित विवरण उसे बताए। उसे ठीक-ठीक वही बताया गया जो उस दिन हुआ था। उम्म उमारा के अनुसार,
वह दिन के शुरुआती हिस्से में प्यासे लोगों के लिए पानी की मशक लेकर युद्धक्षेत्र में गई थी और युद्धक्षेत्र में तब तक काम करती रही जब तक कि वह पैगंबर के पास पहुंची। जैसे ही युद्ध का रुख मुसलमानों के खिलाफ होने लगा, वह पैगंबर के साथ रही और लड़ने लगी।
वह तलवार और धनुष-बाण से उसकी रक्षा करती रही, जब तक कि वह बुरी तरह घायल नहीं हो गई।
घायल। उम्म सईद ने उम्म उमारा के कंधों पर देखे गए गहरे घाव पर टिप्पणी की और उनसे हमले के स्थान की पहचान करने को कहा।
उम्म उमारा ने उत्तर दिया कि यह इब्न कुमैआ था, जो मूर्तिपूजक मक्कावासियों की ओर से लड़ रहा था और चिल्ला रहा था: "मुझे मुहम्मद की ओर इशारा करो, क्योंकि मैं उसे नहीं देखूंगा।"
अगर वह बच निकला तो सफल हो जाएगा!” उम्म उमारा उन लोगों के समूह में शामिल थीं जो
पैगंबर की रक्षा के लिए वे लोग उन पर टूट पड़े, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें गंभीर चोटें आईं। हालांकि, वह स्पष्ट करती हैं कि वह सक्षम थीं।
उन्होंने इब्न कुमैआ पर कुछ अच्छे वार किए, लेकिन जैसा कि उन्होंने खेदपूर्वक टिप्पणी की, "ईश्वर के शत्रु ने कवच की दो पट्टियाँ पहन रखी थीं।"18 स्वयं पैगंबर ने उम्म उमारा के शौर्य पर टिप्पणी की: "वास्तव में नुसैबा की स्थिति
आज काब (बत्ती) का स्थान अमुक लोगों (फ़ुलान व फ़ुलान) से कहीं अधिक ऊंचा है। यह भी कहा जाता है कि मक्का के पतन के बाद, 9630 ईस्वी में बनू हनीफ़ा के झूठे नबी मुसयलिमा के विरुद्ध अल-यमामा में हुए युद्ध में उन्होंने अपना एक हाथ खो दिया था। उन्होंने नबी से हदीसें सुनीं और उन्हें आगे बढ़ाया। उम्म उमारा का कद आज भी उच्च बना हुआ है।
पैगंबर की मृत्यु के बाद के शुरुआती मुसलमानों में; ऐसा कहा जाता है कि खलीफा बनने के बाद अबू बक्र अक्सर उनके बारे में पूछताछ करते थे।19

यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि उम्म उमारा नाम की एक और महिला अंसारी सहाबी भी हैं, जो पहली सहाबी से भिन्न हैं।
उन्हें उम्म उमारा अल-अंसारी कहा जाता था। इब्न साद ने उनका उल्लेख नहीं किया है।
उनकी जीवनी संबंधी रचना में ऐसा नहीं है, लेकिन इब्न हजर ने अपनी रचना में ऐसा किया है। इब्न हजर के अनुसार, उम्म उमारा अल-अंसारी वह महिला सहाबी थीं जिन्होंने टिप्पणी की थी।
पैगंबर ने उस समय तक कुरान की आयतों के बारे में कहा: “मैं देखता हूँ कि सब कुछ पुरुषों से संबंधित है; मुझे महिलाओं का कोई ज़िक्र नहीं दिखता।” इसके बाद निम्नलिखित आयत अवतरित हुई: “निस्संदेह वे जो ईश्वर के प्रति समर्पित हैं
और सच्चे धर्म को स्वीकार करने वाले; जो धर्मनिष्ठ, ईमानदार, धैर्यवान, विनम्र, दानशील और पवित्र हैं; जो उपवास करते हैं और सदा ईश्वर का ध्यान रखते हैं—इन दोनों बातों पर,
“पुरुषों और महिलाओं, ईश्वर क्षमा और भरपूर पुरस्कार प्रदान करेगा” (कुरान 33:35)।20 इब्न साद के अनुसार, वास्तव में यह पैगंबर की उम्म सलमा थीं।
पत्नी ने टिप्पणी की थी कि महिलाओं का विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया था।
अब तक की आयतों में, इब्न साद ने उनकी टिप्पणी को इस आयत के अवतरण के अवसर के रूप में दर्ज किया है।21 हम जल्द ही उम्म उमारा पर लौटेंगे। प्रारंभिक महिला आदर्श और लिंग-आधारित स्थान 31

उम्म वराका बिन अब्दुल्ला बिन हारिथ के बारे में लिखी गई जानकारी उसी क्रम में है जिसकी अब हम उम्मीद करते हैं। इब्न साद ने इस जानकारी के पहले वाक्य में उल्लेख किया है कि उम्म वराका ने इस्लाम स्वीकार किया, मुहम्मद के प्रति निष्ठा दिखाई और उनसे संबंधित हदीसें सुनाईं। कहा जाता है कि उन्होंने कुरान को याद कर लिया था और पैगंबर ने उनसे अपने परिवार को नमाज़ पढ़ाने का अनुरोध किया था।
(ताउम्म अहल दरिहा).22 उसने नमाज़ के लिए एक (पुरुष) अज़ान देने वाले (मुअज़्ज़िन) को भी नियुक्त किया;

अरबी में, मुअज़्ज़िन)। पैगंबर मुहम्मद अक्सर उनसे मिलने जाते थे और उन्होंने उन्हें "शहीद महिला" (अल-शाहिदा) की उपाधि दी थी। बद्र की लड़ाई में, उम्म वराका ने मुहम्मद से विनती की कि उन्हें अपने साथ चलने दें। युद्धक्षेत्र में जाकर घायलों की देखभाल करना ताकि "शायद ईश्वर मुझे यह वरदान दे सके"
शहादत [शहादा]।" पैगंबर ने उन्हें आश्वासन दिया कि ईश्वर उन्हें शहादत प्रदान करेगा। इब्न साद आगे लिखते हैं कि उम्म वराका ने नेतृत्व करना जारी रखा।
उमर के खिलाफत के दौरान, उसके घर के सदस्य प्रार्थना में लीन थे, तभी उसकी सेवा में कार्यरत दो नौकरों, एक पुरुष और एक महिला, ने उसकी हत्या कर दी। और भाग गए। उमर उन्हें वापस लाए और सूली पर चढ़ा दिया, मदीना में इस तरह की सजा पाने वाले वे पहले लोग थे। तब उमर ने कथित तौर पर कहा था कि "
ईश्वर के दूत ने सत्य कहा था जब वे कहते थे, 'चलो चलें और दर्शन करें'। अल-शाहिदा।”23
अंसारी परिवार की महिलाओं पर लिखी गई अन्य अधिकांश प्रविष्टियाँ काफी संक्षिप्त हैं। जैसे
उनकी मुहाजिरी समकक्षों की तरह, अंसारी महिलाओं का परिचय उनके नामों के साथ कराया जाता है, जो आमतौर पर उनके परदादा के परदादा तक जाते हैं।
इसके बाद उनकी माता का नाम लिखा होता है। (कभी-कभी किसी महिला की पहचान उसके पिता के नाम के तुरंत बाद कर दी जाती है, जो उसके नाम का वह भाग होता है जिससे पता चलता है कि वह किसी की बेटी है, या बहन या अन्य रिश्तेदार है।) यह कहानी पाठक के लिए पहले से ही परिचित किसी व्यक्ति के बारे में है। इन महिलाओं के पतियों के नाम अक्सर दिए जाते हैं, लेकिन हमेशा नहीं; यही बात अन्य महिलाओं के लिए भी लागू होती है।
(उनके भाई-बहनों के नाम)। इस प्रकार के दस्तावेज़ों में हमेशा बुनियादी जानकारी शामिल होती है।
प्रवेश का मुख्य बिंदु यह है कि चर्चाधीन सहाबिया ने इस्लाम स्वीकार किया और अल्लाह के रसूल के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की, ये ऐसे कार्य हैं जो उनकी व्यक्तिगत पहचान स्थापित करते हैं।

नैतिक और राजनीतिक सक्रियता। जब उनका इस्लाम को अपनाना बहुत जल्दी हुआ हो या किसी अन्य तरीके से ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हो, तो यह तथ्य और भी स्पष्ट हो जाता है।
उदाहरण के लिए, इब्न साद ने लैला बिन्त अल-खातिम को पहली महिला के रूप में पहचाना है।
पैगंबर के मदीना पहुंचने के बाद, अपनी दो बेटियों और दो पोतियों के साथ, उन्होंने अपनी निष्ठा दी।24 मुहाजिरात में, अस्मा बिन्त।
उदाहरण के लिए, अबी बक्र को इस्लाम को जल्दी स्वीकार करने वाली (असोलामत क़दीमान) के रूप में वर्णित किया गया है, यह एक ऐसा विशिष्ट बिंदु है जिसने इस्लाम में उनकी श्रेष्ठता और उनकी नैतिक उत्कृष्टता को स्थापित किया।25 32 अस्मा अफसरुद्दीन

इब्न साद के वृत्तांतों से इब्न हा जर की प्रविष्टियों तक

अब हम इब्न हजर की जीवनी पर ध्यान देंगे, जो नौवीं/पंद्रहवीं शताब्दी में रचित हुई थी, और उसमें महिलाओं से संबंधित प्रविष्टियों का गहन अध्ययन करेंगे।
ऊपर बताए गए बिंदुओं से तुलना करने पर, हम पाते हैं कि कई
इब्न हजर की अल-इसाबा में दिए गए विवरण लगभग हूबहू इब्न साद से लिए गए हैं। इब्न साद की तीसरी/नौवीं शताब्दी की कृति का विशेष रूप से उल्लेख इब्न हजर ने किया है।
इब्न हजर ने अपने संकलन के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक के रूप में हाजर को चुना। इसलिए, इब्न हाजर, इब्न साद की तरह, इस्लाम स्वीकार करने में प्रत्येक महिला की प्राथमिकता और ऐसा सच्ची आस्था से करने, पैगंबर के प्रति उसकी व्यक्तिगत बैअत, मक्का से मदीना में उसके हिजरत करने और, जहां लागू हो, का दस्तावेजीकरण करते हैं।
मुहम्मद से प्राप्त हदीसों का उनका प्रसारण। ये जीवनी संबंधी विवरण प्रत्येक महिला की सबीक़ा—अर्थात, इस्लाम के प्रारंभिक काल में धर्मांतरण और सेवा में उसकी प्राथमिकता—स्पष्ट रूप से स्थापित की गई है। इस्लाम के प्रारंभिक काल के प्रख्यात व्यक्तियों के इन जीवनी संबंधी

विवरणों में इन महिला सहाबियों को शामिल करने को उचित ठहराने के लिए जिन मानदंडों का उपयोग किया गया है, वे मूलतः समान हैं।
ठीक वैसे ही जैसे उसी काल के पुरुष साथियों के मामले में लागू किए गए थे। महिलाओं को भी पुरुषों की तरह इन महत्वपूर्ण और सार्वजनिक आयोजनों में भाग लेते हुए दिखाया गया है। लिंग भेद से कोई खास फर्क नहीं पड़ता। साथियों की नैतिक उत्कृष्टता और श्रेष्ठता का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानदंडों के समूह में, पुरुष और महिला साथियों को समान रूप से नियुक्त किया जाता है।
सामान्य रूप से स्वीकृत प्राथमिकता मानदंडों के आधार पर नैतिक उत्कृष्टता
और इस्लाम की सेवा में प्रमुखता। सबीका एक शक्तिशाली, अत्यंत भावनात्मक शब्द था, जो कुरान की आयतों जैसे सूरत अल-तौबा, 9:100 पर आधारित था, जिसमें कहा गया है:
“अल्लाह मुहाजिरुन और अंसार में से जो पहले आए और जो उनके बाद आए, उन सभी से संतुष्ट है।
वे दान में हैं और उससे प्रसन्न हैं, और उसने उनके लिए तैयारी की है
ऐसे बाग जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं जहाँ वे सदा निवास करेंगे; यही महान विजय है।” सबीक़ा की इस धारणा पर बल देने वाले दो अन्य श्लोक हैं:
सूरह अल-वाकिआ, 56:10-12, जिसमें कहा गया है: "जो लोग आगे हैं, वे ही हैं।" जो लोग [अल-सबिकुन अल-सबिकुन] से पहले आते हैं, वे ही आनंद के बागों में [ईश्वर के] निकट लाए जाएँगे”; और सूरत अल-हदीद, 57:10, जो
कहता है: “तुममें से जिन्होंने विजय से पहले खर्च किया और लड़ाई लड़ी, वे [अन्य लोगों के] समान पद के नहीं हैं, बल्कि उन लोगों से उच्च पद के हैं जिन्होंने खर्च किया और
बाद में लड़ाई लड़ी।" इन आयतों का प्रयोग पैगंबर के साथियों को सामान्य रूप से सर्वोच्च नैतिक उत्कृष्टता और वरीयता प्रदान करने के लिए किया गया था।
सबीका की नींव इस्लाम में प्रारंभिक और सच्चे धर्मांतरण, और प्रवास पर आधारित थी।
मदीना जाना, और पैगंबर को अपनी प्रतिज्ञा देना, विशेष रूप से इस दौरान प्रारंभिक महिला आदर्श और लिंग-आधारित स्थान 33

अकाबा में बैठक (621 ई.) या हुदैबिया प्रकरण के दौरान। यह भी था
पैगंबर और इस्लाम के उद्देश्य के प्रति सराहनीय निष्ठा पर आधारित,
अक्सर युद्धक्षेत्र में सेवा के दौरान व्यक्त किया जाता है।
महिला साथियों के बारे में ये जीवनी संबंधी प्रविष्टियाँ स्पष्ट रूप से उनके द्वारा लिए गए निर्णयों में उनकी स्वतंत्र भूमिका और पहल को दर्शाती हैं। ये प्रविष्टियाँ स्पष्ट रूप से महिलाओं की व्यक्तिगत पसंद को स्वीकार करने का संकेत देती हैं।
इस्लाम के प्रति निष्ठा व्यक्त की और स्पष्ट रूप से कहा कि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से और मौखिक रूप से निष्ठा दी।
पैगंबर को। पुरुष सहाबियों के लिए इसी तरह की प्रविष्टियों की तरह, महिला सहाबियों के जीवनी संबंधी विवरणों में भी महिलाओं को प्रमुख स्थान दिया गया है।
मुख्य पात्र।
हालाँकि, जब हम कुछ विशिष्ट प्रविष्टियों के सूक्ष्म विवरणों की तुलना करते हैं
महिला सहाबा के संदर्भ में, हम पाते हैं कि इब्न हजर कभी-कभी इब्न से विचलित हो जाते हैं।
साद की प्रस्तुतियाँ। भले ही ये मामूली लगें, लेकिन इस तरह के अलंकारिक विचलन महिलाओं की स्वायत्तता और सामाजिक अवधारणाओं को किस प्रकार उजागर करते हैं, इसका स्पष्ट संकेत देते हैं।
मध्यकालीन मुस्लिम जगत के उत्तरार्ध में सार्वजनिक क्षेत्र में उचित आचरण को उत्तरोत्तर परिभाषित और प्रतिबंधित किया जाने लगा, और इन बाद की अवधारणाओं ने किस प्रकार भूमिका निभाई...
इसे प्रारंभिक मुस्लिम महिलाओं की जीवनियों में शामिल किया जाने लगा।
इस तरह की अनुकरणात्मक निरंतरता स्थापित करने से महिलाओं की स्वायत्तता पर लगाए गए प्रतिबंधों और उनके बढ़ते घरेलूकरण या अलगाव को वैधता मिली। पुरुष।
उदाहरण के लिए, इब्न साद और इब्न हजर की प्रविष्टियों की तुलना करने पर, वीर महिला योद्धा, उम्म उमारा या नुसैबा बीटी. काब, मुझे अलग लगीं

विभिन्न घटनाओं पर जोर दिया गया है। अपने साढ़े तीन पृष्ठों के लेख में, इब्न साद ने पैगंबर के प्रति उनकी प्रतिज्ञा और कई घटनाओं में उनकी भागीदारी का उल्लेख किया है।
प्रारंभिक इस्लाम की प्रमुख घटनाओं का वर्णन करते हुए, वह उहुद की लड़ाई के दौरान पैगंबर की उनकी वीरतापूर्ण रक्षा के चार भिन्न-भिन्न वृत्तांत प्रस्तुत करते हैं।
विभिन्न स्रोतों के अनुसार, इब्न साद भी इस हदीस के प्रसार के लिए जिम्मेदार थे, जिसके अनुसार पैगंबर ने कहा: "जब कोई व्यक्ति उपवास करने वाले व्यक्ति के सामने भोजन करता है, तो फ़रिश्ते उसके लिए प्रार्थना करते हैं—अर्थात, उपवास करने वाला व्यक्ति।"
व्यक्ति—या उसे आशीर्वाद दें।”26
इब्न हजर ने उम्म पर अपने लेख में ये बुनियादी विवरण भी दिए हैं।
‘उमारा’ का वर्णन करते हुए वे अलग-अलग विवरणों पर ज़ोर देते हैं। उनका वर्णन इब्न साद के वर्णन की तुलना में लगभग एक चौथाई ही लंबा है। हदीस और उसके संचारकों में इब्न हजर की विशेष रुचि को देखते हुए,27 यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वे रोज़ा रखने वाले व्यक्ति से पहले भोजन करने के संबंध में उम्म ‘उमारा द्वारा सुनाई गई हदीस को प्रमुखता देते हैं। इब्न साद की तरह, वे भी उम्म ‘उमारा के वर्णन को दस्तावेज़ित करते हैं।
इस्लाम की प्रारंभिक प्रमुख घटनाओं के साक्षी। जब इब्न हजर वहाँ पहुँचते हैं...
वह हिस्सा जहां वह पैगंबर के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करने की प्रतीक्षा कर रही है, वह निवास करता है 34 अस्मा अफसरुद्दीन

इस तथ्य पर कि पुरुषों ने सीधे तौर पर अपनी निष्ठा प्रदर्शित की
पैगंबर के हाथ को अपने हाथ में ले लिया। उम्म उमारा के पति, जिनका नाम है ‘अरबा बिन ‘अम्र’28 के रूप में वर्णित, फिर पैगंबर का ध्यान उम्म उमारा और एक अन्य महिला, उम्म मानिया की उपस्थिति की ओर आकर्षित किया जाता है, जो प्रतीक्षा कर रही थीं।
अपनी निष्ठा की घोषणा करें। अरबा ने सीधे पैगंबर से कहा: "ये दो महिलाएं हमारे साथ आपके प्रति अपनी वफादारी की घोषणा करने आई हैं।" पैगंबर ने

उत्तर दिया: "मैंने उनसे पहले ही अपनी प्रतिज्ञाओं के अनुसार प्रतिज्ञाएँ ले ली हैं।"
तुमसे; क्योंकि मैं वास्तव में महिलाओं से हाथ नहीं मिलाता।”29 यह घटना इब्न साद की उम्म उमारा/नुसैबा बिन्त काब की प्रविष्टि में नहीं मिलती। वह अपने महिला साथियों पर लिखे प्रस्तावना खंड में एक उम्म उमारा का उल्लेख करते हैं, जहाँ वह उनसे संबंधित किस्सा सुनाते हैं और
उम्म मानिया। लेकिन चूंकि वह इस रिपोर्ट को नुसैबा की रिपोर्ट में शामिल नहीं करता है।
नाम से यह स्पष्ट है कि वह उन्हें दो अलग-अलग व्यक्ति समझता था। इब्न अब्द अल-बर्र ने दो महिलाओं द्वारा साझा किए जाने की संभावना का भी संकेत दिया है।
कुन्या30 उम्म उमारा, जिससे उनकी सटीक पहचान के बारे में भ्रम पैदा होता है।31 हालांकि, इब्न हजर स्पष्ट रूप से इन दोनों महिलाओं को एक ही मानते हैं।
इस समस्या से अवगत होने के कारण, इसके दिलचस्प परिणाम सामने आए।
नुसैबा का चित्रण। इब्न हजर द्वारा उम्म उमारा की निष्ठा कैसे ली गई, इस विवरण को शामिल करना—और मैंने जानबूझकर निष्क्रिय स्वर का प्रयोग किया है।
यहां—यह इस कृत्य को अंजाम देने में उसकी पूर्ण स्वायत्तता को कम कर देता है, जो इब्न साद के कार्यों में कई विवरणों से हमें जो समझ में आता है उसके विपरीत है।
महिलाओं द्वारा अपनी निष्ठा व्यक्त करने के बारे में। उम 'उमारा की उपस्थिति, साथ में
उम्म मानिया के साथ, और उनकी मंशा एक पुरुष, उम्म उमारा के पति के माध्यम से पैगंबर को पता चलती है; दोनों महिलाएं
ऐसा प्रतीत होता है कि वे पूरी प्रक्रिया के दौरान चुप रहीं। उनकी स्त्रीत्व और इस प्रकार उनकी भिन्न स्थिति को यहाँ रेखांकित किया गया है, और हम
यह आभास होता है कि किसी वस्तु के मूल्य में स्वाभाविक कमी आ जाती है। महिला की व्यक्तिगत निष्ठा की प्रतिज्ञा।

महिलाओं द्वारा निष्ठा व्यक्त करने का तरीका वास्तव में कुछ लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।
हमारे जीवनीकारों के लिए यह एक विषयांतर की आवश्यकता है। शुरुआत में इब्न साद ने अपनी पुस्तक तबकात में महिलाओं पर लिखे खंड में, एक काफी लंबे विवेचन में, महिलाओं द्वारा दिखाई जाने वाली विशेष प्रकार की निष्ठाओं का उल्लेख किया है।
पैगंबर के साथी। इब्न साद के अनुसार, कुछ मामलों में मुहम्मद ने महिलाओं से बैअत (वचन) अपने हाथ से स्वीकार की थी।
किसी वस्त्र से ढका हुआ (संभवतः त्वचा से त्वचा के संपर्क से बचने के लिए) — कुछ विवरणों के अनुसार, विशेष रूप से एक पीला वस्त्र, या अन्य विवरणों में, एक
चोगा (बुर्दा)। जब महिलाओं ने निष्ठा की शपथ ली, तो उन्हें यह शपथ लेनी पड़ी कि वे ईश्वर के साथ किसी भी चीज़ को नहीं जोड़ेंगी, चोरी नहीं करेंगी, व्यभिचार नहीं करेंगी, अपने बच्चों को नहीं मारेंगी या झूठ नहीं बोलेंगी। 32 एक उदाहरण में, महिलाओं ने विशेष रूप से प्रारंभिक महिला उदाहरणों और लिंग-आधारित स्थान 35

उन्होंने पैगंबर से पूछा कि क्या वे उनसे हाथ मिलाएंगे। उन्होंने मना कर दिया और कहा कि वह
उन्होंने महिलाओं से हाथ नहीं मिलाया, और उनका एक अकेली महिला से बात करना भी उल्लेखनीय है।
ऐसा लग रहा था मानो वह सौ महिलाओं से बात कर रहे हों। एक अन्य वृत्तांत के अनुसार, जब पैगंबर मदीना पहुंचे, तो कई महिलाओं ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और
वे उनके प्रति अपनी निष्ठा प्रकट करना चाहती थीं। इब्न साद बताते हैं कि महिलाओं ने कहा: “हे अल्लाह के रसूल, हमारे पुरुषों ने आपके प्रति निष्ठा प्रकट की है और हम भी।”
मैं भी ऐसा ही करना चाहता हूँ।” तब पैगंबर ने पानी का एक घड़ा मंगवाया, जिसमें पानी डुबोया गया था।

उसने अपना हाथ उसमें डाला और घड़ा महिलाओं को दिया, जिनमें से प्रत्येक ने भी वैसा ही किया।33 इन और अन्य भिन्न-भिन्न विवरणों से यह स्पष्ट है कि महिलाएं
उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे पुरुषों से अलग पैगंबर के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करें और उनकी सार्वजनिक निष्ठा की प्रतिज्ञा मायने रखती थी, भले ही उनकी
इसे अर्पित करने का तरीका पुरुषों के तरीके से अलग प्रतीत होता है।
इस बात पर मतभेद था कि निष्ठा व्यक्तिगत रूप से दी जानी चाहिए या सामूहिक रूप से। रिपोर्टों के अनुसार, महिलाओं ने अपनी निष्ठा व्यक्त की। व्यक्तिगत रूप से निष्ठा रखने वालों की संख्या अधिक है; और यह पसंदीदा तरीका था, यह उन विवरणों से पता चलता है जो इस ओर ध्यान दिलाने का प्रयास करते हैं।
यह कैसे संभव हो सकता है कि पैगंबर के बीच शारीरिक संपर्क न हो।
और साथी।
दरअसल, अपनी सेवाएं देने वाली महिला साथियों के व्यक्तिगत वृत्तांतों से पता चलता है कि...
कभी-कभी निष्ठा इब्न साद की संपादकीय टिप्पणियों को झुठला देती है, जो उनके तीसरी/नौवीं शताब्दी के (संभवतः मुख्य रूप से पुरुष) पाठकों की भावनाओं का सम्मान करते हुए की गई थीं।
दर्शकों के बीच मुहम्मद और सहाबियात के बीच एक निश्चित भौतिक दूरी स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। इसका एक उदाहरण उपर्युक्त उम्म सिनान अल-असलमिया हैं, जिनका चित्रण तीनों जीवनी रचनाओं में स्पष्ट रूप से मिलता है।
उसने व्यक्तिगत रूप से पैगंबर के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की, जिसमें स्पष्ट रूप से उसके नंगे हाथ से कोई इशारा शामिल था, क्योंकि उसने उसके स्वरूप पर टिप्पणी की थी।34
इब्न हजर की बात पर लौटते हुए: उम्म उमारा पर लिखे लेख में उन्होंने जिस बैअत प्रकरण का वर्णन किया है, उसके बाद हम बड़ी कमज़ोरी से उनके बारे में केवल एक ही विवरण प्रस्तुत करते हैं।
युद्ध के मैदान में उनकी वीरता, पैगंबर की उनकी साहसी रक्षा और उन्हें लगी गंभीर चोटें, और पैगंबर की उनकी युद्ध क्षमता के प्रति जागरूकता।

पराक्रम। इब्न साद द्वारा वर्णित उम्म उमारा की भरपूर पैगंबरी प्रशंसा, जिसके अनुसार मुहम्मद ने उहुद के दिन उन्हें सभी मुसलमानों में सर्वोच्च स्थान दिया, सही नहीं है।
इब्न हजर द्वारा दोहराया गया। निष्ठा संबंधी उस प्रकरण के तुरंत बाद, जिसमें उम्म उमारा एक मूक दर्शक की भूमिका निभाती हैं, इब्न हजर के लेख में उनके शौर्य का यह एकमात्र वर्णन अपेक्षाकृत कमज़ोर पड़ जाता है।
इब्न साद द्वारा दर्ज किए गए उनके कारनामों के चार रोमांचक वृत्तांत। इब्न हजर की अन्य महिलाओं पर प्रविष्टियाँ भी इसी तरह के मामूली बदलाव दिखाती हैं-36 अस्मा अफसारुद्दीन

जोर देने के तरीकों या बारीकियों में ऐसे बदलाव या परिवर्तन जो स्त्री के शिष्टाचार और आचरण की सामाजिक अवधारणाओं में एक विशिष्ट विकास का पता लगाने के लिए महत्वपूर्ण हैं,
इसमें मुस्लिम समुदाय में उनकी सार्वजनिक और प्रत्यक्ष भूमिकाएँ भी शामिल हैं। एक उदाहरण जहाँ इब्न साद और इब्न हजर के व्यवहार में अंतर स्पष्ट होता है।
महिलाओं की जीवनी संबंधी सामग्री से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इसका संबंध प्रारंभिक इस्लाम के युद्धों में महिलाओं की भागीदारी से है, जो एक अत्यंत सार्वजनिक और परंपरागत रूप से पुरुष प्रधान क्षेत्र था। अंततः हमें इब्न हजर के जीवनी संबंधी कार्य में उम्म कबशा के मामले में एक समाधान मिलता है, जो स्पष्ट रूप से एक अत्यंत संवेदनशील मुद्दा बन गया है। संक्षेप में, इब्न साद उम्म कबशा का वर्णन केवल "कुदाआ जनजाति की एक महिला" के रूप में करते हैं, जिन्होंने एक अज्ञात युद्ध में भाग लेने के लिए पैगंबर से अनुमति मांगी थी।
अनुमति नहीं दी गई, और इब्न साद ने बात यहीं खत्म कर दी। हालाँकि, इब्न हजर ने...
इस घटना को एक चर्चित घटना बना दिया। इस रिपोर्ट के अपने संस्करण में, उम्म कब्शा फलां-फलां सेना के साथ बाहर जाने की अनुमति मांगता है [fi jaysh] kadha wa-kadha]; जैसा कि हम देख सकते हैं, यहाँ किसी विशिष्ट युद्ध का कोई उल्लेख नहीं है। पैगंबर ने स्पष्ट रूप से केवल इतना कहकर उत्तर दिया: "नहीं।" इस पर

इस बिंदु पर, उम्म कब्शा उससे विनती करती है और स्पष्ट रूप से कहती है कि वह ऐसा करती है।
वह लड़ना नहीं चाहती थी, बल्कि केवल घायलों की देखभाल करना और पानी पिलाना चाहती थी। (इब्न साद के वृत्तांत में, यह नहीं कहा गया है कि वह लड़ना नहीं चाहती थी।)
तब पैगंबर जवाब देते हैं: “अगर ऐसा न होता तो मैं तुम्हें अनुमति दे देता।” यह तथ्य कि यह एक स्थापित मिसाल [सुन्नत] बन जाएगा, और इस प्रकार यह
ऐसा कहा जाएगा कि फलां महिला [फुलाना] युद्ध में गई है। इसलिए तुम यहीं रहो।”35
इब्न हजर ने आगे बताया कि इस एक रिपोर्ट की विषयवस्तु परस्पर विरोधी है। पहले उल्लेखित एक अन्य रिपोर्ट के साथ, जिसमें बताया गया है कि उम्म सिनान अल-असलमिया को युद्धक्षेत्र में जाने की अनुमति दी गई थी। केवल
इन दोनों रिपोर्टों और उनके विरोधाभासी निहितार्थों में सामंजस्य स्थापित करने का तरीका
इब्न हजर के अनुसार, यह मानना है कि उम्म के बारे में हदीस
कबशा ने उम्म सिनान से संबंधित हदीस को निरस्त कर दिया है। इब्न हजर कहते हैं कि इस निरस्तीकरण का कारण उम्म कबशा की रिवायत का बाद में आना है, जो 9630 में मक्का की विजय के बाद घटी एक घटना का जिक्र करती है। चूंकि उम्म सिनान की रिवायत में खैबर को पृष्ठभूमि के रूप में लिया गया है और एक अन्य रिवायत में उहुद के युद्ध का जिक्र है, जो दोनों ही पहले घटित हुई थीं, इसलिए इब्न हजर के अनुसार, फतह के बाद की रिवायत को पिछली दोनों रिवायतों से श्रेष्ठ माना जाना चाहिए। इब्न हजर को उम्म कबशा की रिवायत के ऐतिहासिक संदर्भ का पता कैसे चला, इसका स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, इब्न साद इस रिवायत के लिए कोई सटीक कालक्रम नहीं बताते हैं।
प्रारंभिक महिला आदर्श और लिंग-आधारित स्थान 37

इस रिपोर्ट के ऐतिहासिक केंद्र के रूप में मक्का की विजय को लेने से यह संभव हो पाता है कि
इसका तात्पर्य यह है कि मक्का के पतन से पहले की लड़ाइयों में महिलाओं की भागीदारी थी।

रूप में इसकी स्थिति को भी प्रभावित करेगा। हालाँकि, इब्न हजर ने स्पष्ट रूप से यह बात कही है।
महिलाओं की उपस्थिति की आधुनिक समय में उपयुक्तता के संबंध में उनके विचार को स्पष्ट करना।
युद्धक्षेत्र में—और व्यापक रूप से, सामान्य रूप से सार्वजनिक क्षेत्र में—और इसलिए बचाव में प्रमाण के रूप में केवल उम्म कब्शा प्रकरण को ही प्रस्तुत करता है।
यह पद।
इब्न हजर की तिरछी नजर से देखने की प्रवृत्ति को देखते हुए,
अल-इसाबा फ़ी तमीज़ में स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली युद्धक्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति पर।
अल-सहबा, हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वह इस बात को कहना चुनते हैं। 38 अस्मा अफसरुद्दीन

फिर से उम्म वराका पर अपने सावधानीपूर्वक संपादित लेख में, उस सहाबिया के बारे में जिसने
उसे अपने नौकरों के हाथों एक दुखद अंत का सामना करना पड़ा। इस घटना की रिपोर्ट दर्ज की गई है।
और इब्न हजर द्वारा इसे और भी अलंकृत किया गया है; हालाँकि, जो बात हमारा ध्यान खींचती है, वह है निम्नलिखित महत्वपूर्ण विवरण का उनका लोप। जबकि इब्न साद ने दर्ज किया है
कि उम्म वराका ने अपने परिवार (जिसमें, जैसा कि हमें अन्यथा नहीं बताया गया है, पुरुष और महिला सदस्य अवश्य रहे होंगे) को नमाज में नेतृत्व किया था।
पैगंबर के स्पष्ट अनुरोध के बावजूद, इब्न हजर ने इसका कोई उल्लेख नहीं किया है।
मामला। इसके बजाय वह दर्ज करता है कि उसने पैगंबर से एक पुरुष मुअज्जिन को नियुक्त करने की अनुमति मांगी थी। इब्न हजर द्वारा पुराने संस्करण में और हेरफेर किया गया है।
इब्न साद द्वारा दर्ज की गई बातें तब स्पष्ट हो जाती हैं जब वे उम्म को दिए गए उपनाम "शहीद महिला" की व्याख्या करने लगते हैं।

पैगंबर द्वारा लिखा गया पत्र। इब्न हजर ने पैगंबर द्वारा पूछे गए प्रश्न के विवरण को प्रमुखता दी है।
मुहम्मद ने बद्र की लड़ाई में एक नर्स के रूप में भाग लेने की अनुमति दी थी; इस घटना के अपने वर्णन में, पैगंबर ने कुरान का हवाला देते हुए स्पष्ट रूप से उसे मना किया था।
शब्द-विन्यास: “अपने घर में ही रहो; क्योंकि ईश्वर तुम्हें शहादत (किसी और तरीके से) प्रदान करेगा।” यदि इस निर्देश का अर्थ स्पष्ट न हो तो
पहले संस्करण में पाठक पर, इब्न हजर एक भिन्न विवरण प्रस्तुत करते हैं। कहा जाता है कि मुहम्मद ने उसे और भी सीधे शब्दों में सलाह दी थी: "बैठ जाओ" आपका घर [uq‘udi fi baytiki], क्योंकि निःसंदेह ईश्वर आपको शहादत प्रदान करेगा।
आपके घर में” (ज़ोर दिया गया)।37 उम्म वा-राका के जीवन का दुखद अंत तब तार्किक रूप से अपनी जगह पर आ जाता है: एक महिला पर्यावरण को प्राप्त कर सकती है—
केवल अपने भीतर रहकर (और केवल अपने भीतर रहकर) शहीद का दर्जा प्राप्त करने में सक्षम हुए।
घर पर रहकर वह अपने नौकरों की देखरेख जैसे अपने सामान्य घरेलू कामों को करती रहती थी।38 पाँचवीं/ग्यारहवीं शताब्दी में पहले लिखते हुए, उन्होंने अपनी प्रविष्टि में लिखा है कि...
इब्न अब्द अल-बर्र के अनुसार, उम्म वराका ने बद्र में उनके साथ शामिल होने की उनकी विनती का जवाब देते हुए कहा, "अल्लाह तुम्हें यह अवसर अवश्य देगा।" शहादत, और अपने घर में क़र्री/क़िर्री रहो, क्योंकि तुम शहीद होगे”; यह इब्न हजर द्वारा दर्ज की गई बात के समान है, लेकिन बिल्कुल वैसी नहीं है। इब्न अब्द अल-बर्र ने इब्न हजर द्वारा दिए गए दूसरे पैगंबरी कथन को दर्ज नहीं किया है, जो उम्म वराका के अपने घर को उनकी भावी शहादत के स्थल के रूप में इंगित करता है।39 यह ध्यान देने योग्य है कि इब्न साद ने इसे दर्ज नहीं किया है।
उम्म वराका की विनती के जवाब में पैगंबर मुहम्मद ने उन्हें "अपने घर में ही रहो" का आदेश दिया था; वास्तव में, पैगंबर मुहम्मद द्वारा दिया गया एकमात्र जवाब यही है कि उन्हें यकीन है कि वह शहादत प्राप्त करेंगी। इब्न साद के अनुसार

यह मत इस संभावना को खारिज नहीं करता कि उम्म वराका पैगंबर के साथ युद्ध के मैदान में गई थीं; मुहम्मद का दूरदर्शी कथन बस इतना ही कहता है कि...
यह उसके दुखद अंत का पूर्वाभास देता है, लेकिन उसकी क्षमता के प्रति असहमति व्यक्त नहीं करता है।
बदर में उपस्थिति।
प्रारंभिक महिला आदर्श और लिंग-आधारित स्थान 39

यह देखते हुए कि अब हम इब्न पर एक निश्चित संपादकीय प्रवृत्ति का पता लगाने में सक्षम हैं
हजर की भूमिका को देखते हुए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उम्म वराका ने इमाम के रूप में कार्य किया।
इब्न साद और इब्न अब्द अल-बर्र द्वारा उल्लेखित उनके परिवार के बारे में भी उन्होंने कोई जानकारी नहीं दी है। परंपरागत रूप से, कुरान का श्रेष्ठ ज्ञान,
जो स्वयं में धार्मिक निष्ठा की एक पहचान है, नैतिक उत्कृष्टता प्रदान करती है और अक्सर, विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति को नेतृत्व का दर्जा भी देती है।
यह पुनः, ऊपर परिभाषित सबीका के सिद्धांत के अनुरूप है।
यह बात विशेष रूप से मुस्लिम शासन के नेता (खलीफा या इमाम) के लिए, विशेषकर सही राह पर चलने वाले खलीफाओं के लिए, सच रही है, जैसा कि यह हमेशा से सच रहा है।
सीमित परिस्थितियों में प्रार्थना नेताओं और अन्य नेताओं के बारे में।40 इब्न साद ने उम्म वराका के पूरे कुरान को याद करने का उल्लेख किया है और बताया है कि यही योग्यता उनकी प्रार्थना नेता के रूप में नियुक्ति का कारण थी।
अपने घर की मुखिया। इसका तात्पर्य स्पष्ट है: कुरान के अपने श्रेष्ठ ज्ञान ने उन्हें इस मामले में अपने परिवार के पुरुष सदस्यों से आगे रखा।
सम्मान के मामले में, कोई पुरुष रिश्तेदार केवल पुरुष होने के नाते उससे आगे नहीं निकल सकता था। इब्न हजर ने उसके स्मरण के संदर्भ को बरकरार रखा है।

कुरान का अध्ययन करना—किसी भी मुसलमान, पुरुष या महिला के लिए एक सराहनीय उपलब्धि है—
लेकिन इस उल्लेखनीय उपलब्धि से मिलने वाली किसी भी मान्यता से उसे वंचित रखा जाता है। धार्मिक ज्ञान से किसी महिला को वंचित नहीं किया जा सकता। बेशक, उसे इसके कारण "अहंकारी" धारणाएँ विकसित नहीं करनी चाहिए—उदाहरण के लिए, यह मानना कि वह अपने मिश्रित परिवार के लिए नमाज़ पढ़ाने में सक्षम है। इस असुविधाजनक तथ्य को नज़रअंदाज़ करने से इब्न हजर को इसका दस्तावेजीकरण करने की अनुमति मिलती है।
इस महिला साथी के जीवन को इस प्रकार व्यतीत करना कि वह ऐसी किसी भी गतिविधि के लिए मिसाल कायम न कर सके जो उस समय तक अवांछनीय स्त्री गतिविधि मानी जाती थी।
इब्न हजर द्वारा कुछ रिपोर्टों की व्याख्या इस प्रकार करना और उनकी सामग्री को कुछ सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप ढालना उचित नहीं है।
और संवेदनशीलता को उनके सांस्कृतिक परिवेश द्वारा समझाया जाता है। सेल्जुक और
ममलुक काल में, धर्मशास्त्रियों ने स्त्री आचरण के उचित मापदंडों को स्पष्ट करने वाली विस्तृत नियमावली तैयार करना शुरू किया। मूलतः ये नियमावली निर्देशात्मक थीं।
प्रकृति में, इस प्रकार की रचनाएँ समकालीन महिलाओं को विशिष्ट विषयों पर सलाह देती थीं, बिना अनिवार्य रूप से महिला सहपाठियों के जीवन का हवाला दिए।
अनुकरण के आदर्श। ऐसा ही एक उदाहरण हनबली धर्मशास्त्री इब्न अल-जौज़ी (मृत्यु 597/1201) द्वारा लिखित 'अहकाम अल-निसा' है, जो सेल्जुक काल का है। इस कृति के दो अध्याय विशेष रूप से महिलाओं के लिए अपने घरों में एकांतवास की वांछनीयता का उल्लेख करते हैं: अध्याय 26 का शीर्षक है "महिलाओं को सावधान करना"।
घर से बाहर जाना” (तहधीर अल-निसा मिन अल-खुरूज), और अध्याय 27 है
जिसे “महिलाओं के लिए घर पर रहने के महत्व का उल्लेख” (fi dhikr fadl) कहा जाता है।
अल-बैत ली-एल-मारा)।41 इब्न अल-जावज़ी ने अध्याय 26 की शुरुआत महिलाओं को 40 अस्मा अफ़सरुद्दीन को सलाह देकर की

एक अन्य अध्याय में, जो “महिलाओं के विश्वासघात” (ग़द्र अल-निसा’) को समर्पित है,
लेखक निम्नलिखित हदीस को बिना इस्नाद या इसकी विश्वसनीयता के किसी संकेत के दर्ज करता है: “महिलाओं से सलाह लो और उनकी सलाह के विपरीत करो; क्योंकि वास्तव में उनका विरोध करने में बरकत (अल-बरका) है।”46 यह उल्लेखनीय है कि इस तरह की स्त्री-विरोधी सलाह इब्न साद द्वारा दर्ज की गई रिपोर्ट से बिल्कुल अलग है, उदाहरण के लिए, मुहम्मद की मृत्यु के बाद सबसे प्रमुख सहाबियों ने आयशा से सलाह ली थी, विशेष रूप से विरासत के हिस्से (अल-फराईद) के बारे में।47 इस तरह की नियमावली को पढ़ने से हमें मुस्लिम महिलाओं द्वारा निभाई गई सक्रिय, सार्वजनिक, मानवीय भूमिकाओं के बीच मजबूत अंतर का पता चलता है।
उदाहरण के लिए, इब्न साद की अल-तबाकत अल-कुबरा में चित्रित पहली पीढ़ी और सेल्जुक के लिए परिकल्पित सार्वजनिक भूमिकाओं में काफी कमी।
और ममलुक महिलाएं। यह विसंगति इस तथ्य से और भी पुष्ट होती है कि प्रारंभिक महिला आदर्श और लिंग-आधारित स्थान 41

तीसरी/नौवीं शताब्दी में इब्न हनबल द्वारा रचित पूर्व की रचना अहकाम अल-निसा (कम से कम वर्तमान में उपलब्ध मुद्रित संस्करण के अनुसार)48 काफी संक्षिप्त है और इसमें महिलाओं के घर में एकांतवास पर उतना जोर नहीं दिया गया है। इसके अधिकांश अध्याय पवित्रता से संबंधित हैं।
महिलाओं के लिए रीति-रिवाज और व्यक्तिगत स्वच्छता, शालीन वस्त्र और अनुमति—
अहल अल-किताब के साथ वैवाहिक संबंधों की संभावना। एक अध्याय जो महिलाओं के घर से बाहर निकलने की उपयुक्तता से संबंधित है, वह इस बात से जुड़ा है कि... रमज़ान के महीने के बाद और तीर्थयात्रा पूरी होने के बाद आने वाले दो ईद के त्योहारों के दौरान सामूहिक नमाज़ अदा करना।
धू अल-हिज्जा के महीने के दौरान।49 यह महत्वपूर्ण है कि इस अध्याय में दो रिपोर्टें शामिल हैं, दोनों इब्न हनबल से संबंधित हैं, जो केवल रिकॉर्ड करती हैं
इस मामले पर उनकी निजी राय। इन दोनों रिपोर्टों में, इब्न हनबल (पर)

इस मुद्दे पर पूछे जाने पर, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि उनके समय में वे ऐसी प्रथा को स्वीकार नहीं कर सकते थे, क्योंकि महिलाएं ध्यान भटकाने का स्रोत थीं।
[li-annahunna fitna]. इब्न अल-जौज़ी द्वारा अपनी पुस्तिका में अपनाए गए लहजे के विपरीत, इब्न हनबल महिलाओं के बाहर जाने की उपयुक्तता पर अपनी राय दर्ज करते हैं।
‘ईद की प्रार्थनाओं’ को केवल इसी रूप में लें: उनकी व्यक्तिगत राय इस पर निर्भर करती है।
उनके समय की विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण। उनकी राय किसी पैगंबर या संबंधित हदीस द्वारा समर्थित नहीं है जो इसकी प्रामाणिकता स्थापित कर सके; इस प्रकार
इसे सामान्यतः महिलाओं के लिए बाध्यकारी आदेश के रूप में नहीं माना जा सकता। हम यह मान सकते हैं कि इब्न हनबल, एक प्रसिद्ध परंपरावादी और संकलक, ने इसे इस प्रकार संकलित किया है।
एक अत्यंत सम्मानित हदीस संग्रहकर्ता—या अहकाम के लेखक, जिन्होंने इन विचारों को उनसे जोड़ा है—यदि उन्हें किसी पैगंबर या सहाबी की रिवायत का पता होता, तो वे अपने मत का समर्थन करने में संकोच नहीं करते। उनका ऐसा न करना इस बात का पर्याप्त संकेत है कि उनके समय में ऐसी कोई रिवायत प्रचलन में नहीं थी, या कम से कम ऐसी कोई नहीं थी जिसे वे विश्वसनीय मानते और जो इस संदर्भ में उपयुक्त होती।50
इस बिंदु पर उम्म सिनान अल-असलमिया के पूर्व उल्लेखित कथन की याद दिलाई जा सकती है, जिसमें उन्होंने इब्न साद के अनुसार पुष्टि की थी कि अनिवार्य रूप से केवल बुजुर्ग महिलाएं ही शुक्रवार की नमाज में भाग लेती थीं। पैगंबर के समय में ईद की सामूहिक नमाज़। जैसा कि मैंने पहले टिप्पणी की थी, यह कथन इब्न साद के काम में कुछ अजीब है, क्योंकि
उनके द्वारा वर्णित कई महिला साथी बाहर स्पष्ट रूप से सक्रिय दिखाई देती हैं।
उनके घरों में। सार्वजनिक सामूहिक प्रार्थनाओं में भाग लेने पर यह स्पष्ट प्रतिबंध क्यों है, जबकि उम्म के मामले में ऐसा आसानी से किया जा सकता था?

क्या सिनान और अन्य लोग युद्धक्षेत्र के उस पुरुष प्रधान क्षेत्र में चले जाते हैं? इस कथन की विचित्रता इस तथ्य से और भी बढ़ जाती है कि महिलाओं की उपस्थिति
मदीना की मस्जिद का उल्लेख विभिन्न स्रोतों में मिलता है, और हमारे पास प्रामाणिक हदीस संग्रहों में दर्ज पैगंबर की रिपोर्टें हैं जो स्पष्ट रूप से 42 अस्मा अफसरुद्दीन

सभी (न केवल बुजुर्ग) महिलाओं को सामूहिक नमाज़ में शामिल होने की अनुमति दें। एक विशेष रूप से प्रमाणित हदीस में कहा गया है, "ईश्वर की महिला सेवकों को ईश्वर की मस्जिदों में जाने से न रोकें।"51 इस प्रकार के विरोधाभास इस बात की पुष्टि करते हैं कि मुस्लिम महिलाओं के जीवन को "संपादित" करने की प्रक्रिया पहली पीढ़ी से ही जारी है।
और इस प्रकार, बाद के काल के लैंगिक मुद्दों के मध्यस्थता में आदर्श के रूप में उनकी भूमिका इब्न साद के समय में ही शुरू हो चुकी थी।
सेल्जुक काल तक, यह स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि शिष्टाचार नियमावली महिलाओं के लिए रचित रचनाएँ, और महिलाओं के बारे में रचित साहित्यिक और जीवनी संबंधी रचनाएँ, वांछनीयता पर अत्यधिक ज़ोर देने लगीं।
इस विषय पर पहले लिखे गए ग्रंथों की तुलना में नारी एकांत का चित्रण अधिक स्पष्ट होता है। यह बात अहकाम अल-निसा साहित्य के संदर्भ में सबसे अधिक स्पष्ट होती है, जब हम इब्न हनबल द्वारा रचित पूर्व ग्रंथ की तुलना करते हैं।
तीसरी/नौवीं शताब्दी से लेकर मामलुक काल में इब्न क़य्यिम द्वारा रचित कृति तक। उपयुक्त रिपोर्टें, अधिकतर सहायक रिपोर्टें, कभी-कभी उपलब्ध होती हैं।
बाद के ग्रंथों में महिलाओं को दी गई सलाह के साथ इसे संलग्न किया गया था, जैसा कि हमने ऊपर देखा, ताकि इसकी निर्देशात्मक प्रकृति को स्थापित किया जा सके।
मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि प्रारंभिक शताब्दियों में महिलाओं की सार्वजनिक क्षेत्र में अधिक पहुँच से लेकर बाद के काल में अधिक सीमित पहुँच तक की यह "प्रगति" पूरी तरह से एक रेखीय प्रक्रिया है, या यह ठीक उसी तरह प्रतिबिंबित करती है।

[illegible] [illegible] (от [illegible] до [illegible] лет) [illegible] [illegible] от [illegible] до [illegible])и от [illegible] до [illegible] от [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] от от от [illegible] от [illegible] от от [illegible] [illegible] от [illegible] от [illegible] от [illegible] от [illegible] от [illegible] от
[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] от [illegible]-[illegible]
[illegible] [illegible] от [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] от [illegible] от, [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] от
[illegible] от [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible]
от [illegible], от от от [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] от [illegible] [illegible] от
[illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] от [illegible] от [illegible] от, от
[illegible] от [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] от [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] от [illegible]
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] от от [illegible] [illegible] от от [illegible] [illegible] от [illegible]
[illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] от, [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] от [illegible] от [illegible] [illegible]52 [illegible]
[illegible] [illegible], [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] от
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] от
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] от [illegible]-[illegible] [illegible] 43

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
от [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] от от [illegible] от [illegible] [illegible]
от [illegible] [illegible] от от
[illegible] от от [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible] [illegible] от от от от [illegible] [illegible]
от [illegible] [illegible] от [illegible] [illegible]

बेशक, अहकाम/अख़बार अल-निसा की रचनाएँ स्वयं यह साबित नहीं करतीं कि महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक भूमिकाएँ काफ़ी हद तक सीमित कर दी गई थीं। ममलुक काल; इसके विपरीत, हमारे पास ऐसे विद्वतापूर्ण अध्ययन हैं जो इस और पिछले सेल्जुक काल के दौरान कुछ आर्थिक, नागरिक और विद्वतापूर्ण गतिविधियों में महिलाओं की उल्लेखनीय भागीदारी को दर्शाते हैं।53 ये अपने तीखे विषयवस्तु से युक्त नियमावली से यह संकेत मिलता है कि कुछ प्रभावशाली हलकों में स्त्री एकांत को वांछनीय माना जाने लगा और इसे मान्यता प्राप्त हो गई।
कम से कम एक अनुकरणीय आदर्श के रूप में, संभवतः व्यापक प्रतिक्रिया के रूप में।
सार्वजनिक क्षेत्र में ममलुक महिलाओं की भागीदारी। इस प्रकार, ऐसी कृतियों का अस्तित्व इस काल में घर के बाहर महिलाओं की वास्तविक "अतिक्रमणकारी" उपस्थिति के प्रमाण के रूप में कार्य कर सकता है, जिसके विरुद्ध कुछ विद्वानों ने स्पष्ट रूप से धार्मिक प्रतिबंध लगाने का दायित्व महसूस किया।
इस पृष्ठभूमि में, इब्न हजर पुष्टि करने में भाग लेते हुए प्रतीत होते हैं और
अपने पूर्व जीवनी संबंधी सामग्री के पुनर्पाठ में, उन्होंने शालीन, सुसंस्कृत और एकांतप्रिय ममलुक महिला की एक आदर्श छवि का प्रसार किया। सहबियात के कुछ अंश।54

888

इस अध्ययन से स्पष्ट है कि मुस्लिम समाज की पहली पीढ़ी की कई महिलाओं ने अपने समाज में सशक्त और महत्वपूर्ण सार्वजनिक भूमिकाएँ निभाईं। मध्यकालीन जीवनी संग्रहों में इन भूमिकाओं की मान्यता के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं। हमारे सर्वेक्षण से यह बात पुख्ता साबित होती है कि मुख्यतः इन्हीं महिलाओं ने ये भूमिकाएँ निभाईं।
महिलाओं की अनुकरणीय धर्मपरायणता, पैगंबर के प्रति उनकी निष्ठा और पुरुषों के समान उनके सद्गुणी कार्यों ने उन्हें प्रारंभिक असाधारण

मुसलमानों के इन संग्रहों में शामिल करने को उचित ठहराया, और यह कि लिंग ने इसमें कोई भूमिका नहीं निभाई।
प्रारंभिक काल (लगभग पाँचवीं/ग्यारहवीं शताब्दी से पहले) में पुरुष और महिला साथियों की नैतिक उत्कृष्टता के मूल्यांकन के लिए मानदंडों के चयन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। नैतिक उत्कृष्टता के सामान्य मानक
सबीका शब्द में उदाहरण के तौर पर वर्णित, जिसने इस्लाम की सेवा में सहाबियों की श्रेष्ठता स्थापित की, पुरुषों के लिए भी समान रूप से लागू किया गया।
और प्रारंभिक काल में महिलाओं को भी महत्व दिया गया। कुछ सहाबियात की उच्च नैतिक उत्कृष्टता को मान्यता दी गई और इस प्रकार अन्य मुसलमानों पर उनकी श्रेष्ठता को स्वीकार किया गया।
उदाहरण के लिए, इसे उन रिपोर्टों में संहिताबद्ध किया गया है जो उन्हें स्वर्ग की गारंटी देती हैं।
हम जानते हैं कि एक बहुत प्रसिद्ध हदीस है जो दस लोगों को जन्नत का वादा करती है। 44 अस्मा अफसरुद्दीन

प्रमुख प्रारंभिक सहाबा, 'अशारा अल-मुबशशारा', सभी पुरुष थे।55 हालाँकि, जीवनी संबंधी शब्दकोशों में, हमें सहाबा में से कुछ महिलाओं के बारे में प्रविष्टियाँ मिलती हैं, जैसे उम्म अयमान, जिन्हें इस्लाम में उनकी असाधारण स्थिति के कारण स्वर्ग का वादा किया गया है।
जीवनी संबंधी प्रविष्टियों से यह स्पष्ट होता है कि पैगंबर ने कुछ धर्मपरायण महिलाओं को भी चुना था, जो उनके समान ही स्वर्गिक पुरस्कार की पात्र थीं।
दस विशिष्ट पुरुष साथियों के नाम भले ही ज्ञात न हों, फिर भी वे सभी प्रसिद्ध साथी हैं।
उन्हें उनकी बेहतर स्थिति को दर्शाने के लिए एक सुविधाजनक सूची में एक साथ समूहीकृत किया गया है, जैसा कि उनके पुरुष समकक्षों के मामले में होता है। हालाँकि, लिंगभेद स्पष्ट रूप से कुछ पूर्व जीवनी संबंधी वृत्तांतों के पुनर्पाठ और उनके कथात्मक पहलुओं के बाद के संकलकों द्वारा किए गए

विश्लेषण और पुनर्गठन के तरीके में अपनी छाप छोड़ता है, ताकि उन्हें कुछ निश्चित दृष्टिकोणों के अनुरूप बनाया जा सके।
मध्ययुग के उत्तरार्ध तक (पुरुष) मुस्लिम सामाजिक कल्पना में महिलाओं की उचित भूमिकाएँ स्थापित हो चुकी थीं—विशेष रूप से महिलाओं के संबंध में। सार्वजनिक क्षेत्र में गतिविधियाँ। पहली पीढ़ी के पुरुष और महिलाओं, जिन्हें सलफ कहा जाता है, को हर जगह मुसलमानों का धर्मनिष्ठ पूर्वज माना जाता था।
और उम्मा के नैतिक आदर्शों के रूप में, मुसलमानों ने अपने आचरण को अपने धर्मनिष्ठ पूर्वजों के आचरण के अनुरूप ढालने का प्रयास किया; उत्तर मध्ययुगीन मुस्लिम समाजों में व्याप्त कठोर यौन पृथक्करण को स्वयं सलफ द्वारा स्थापित सामाजिक रीति-रिवाजों पर आधारित माना जाता था, जो धार्मिक नियमों की उनकी सही व्याख्या के अनुरूप था।
अब्बासिद काल से आगे, वह महिला रिश्तेदारों की सीमित दुनिया में ही सिमटकर रह गई।
और साथियों और करीबी पुरुष रिश्तेदारों के साथ, वह स्वयं को पहली शताब्दी की अपनी धर्मनिष्ठ महिला पूर्ववर्तियों की दुनिया की नकल करने की कल्पना कर सकती थी।
कुछ जीवनी संकलकों की संपादकीय निडरता के कारण इस्लाम में काफी बदलाव आया है। असुविधाजनक विवरणों को हटाकर, जो कि कहानी से बिल्कुल मेल नहीं खाते थे, इस्लाम के इतिहास में एक नया आयाम जुड़ गया है।
इब्न हजर ने महिला सलफ की सावधानीपूर्वक गढ़ी गई छवि के माध्यम से जीवनी संबंधी जानकारी प्रस्तुत की है।
कुछ विशिष्ट महिलाओं के वृत्तांत, जो अन्यथा पूरी तरह से अनुकरणीय थीं, उन्हें उत्तर मध्ययुगीन काल की सदाचारी नारी पहचान की अवधारणाओं के अनुरूप ढाल दिया गया।
हालाँकि प्रारंभिक मुस्लिम समुदाय के निर्माण में महिलाओं की भागीदारी का उल्लेख कभी पूरी तरह से मिटाया नहीं गया और अक्सर उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ी।
इन महिलाओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बावजूद, बाद के वृत्तांत—उस काल के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास के साथ—इन महिलाओं की सार्वजनिक और महत्वपूर्ण भूमिकाओं तथा धार्मिक क्षेत्र सहित उनकी गतिविधियों की पूरी

श्रृंखला को काफी हद तक कम कर देते हैं। हालांकि, इन मूल्यवान ऐतिहासिक दस्तावेजों को ध्यानपूर्वक पढ़ने और उनकी तुलना करने से हमें उनकी वास्तविक भूमिका को पूरी तरह से समझने में मदद मिलती है।
इन प्रमुख महिलाओं को समर्पित करने और उनके महत्वपूर्ण प्रभाव का पुनर्निर्माण करने के लिए।
उनकी विविध गतिविधियाँ, जिन्हें उनके समकालीन परिवेश में महत्व दिया जाता है।
प्रारंभिक महिला आदर्श और लिंग-आधारित स्थान 45

नोट्स

यह अध्याय "महिलाओं के जीवन का पुनर्निर्माण" नामक एक पूर्व संस्करण से रूपांतरित किया गया है।
मध्यकालीन जीवनी संग्रहों में लिंग और कथा की काव्यशास्त्र, "म्यूज़- मुस्लिम वर्ल्ड 92, अंक 3-4 (2002): 461-80। मैं मुस्लिम वर्ल्ड के संपादकों को इस लेख को संशोधित रूप में प्रकाशित करने की अनुमति देने के लिए धन्यवाद देता हूं। सभी अनुवाद
ये मेरे हैं, जब तक कि अन्यथा इंगित न किया गया हो।
1. रूथ रोडेड व्यक्तिगत महिला आकृतियों के बदलते प्रतिनिधित्व पर विचार करती हैं।
इस्लामी जीवनी संग्रहों में महिलाओं पर अरबी जीवनी शब्दकोशों में। मैरिलिन बूथ ने अपनी पुस्तक "मे हर लाइक्स बी मल्टीप्लाइड" में आधुनिक लेखकों द्वारा पूर्व-आधुनिक जीवनी शब्दकोशों के उपयोग और बदलते प्रतिनिधित्वों पर चर्चा की है।
पूर्व-आधुनिक से लेकर आधुनिक जीवनी संकलनों तक की प्रसिद्ध महिलाओं के बारे में और
रेखाचित्र।
2 किसके लिए, देखें इस्लाम का विश्वकोश (जिसे आगे से EI2 कहा जाएगा), 3:922– 23।
3 जिनके लिए, देखें वही, 3:776–78.
4 जिनके लिए, देखें वही, 3:674.

5 हदीसें पैगंबर से परंपरागत रूप से जुड़ी बातों और कार्यों का विवरण हैं। यद्यपि उन्हें दैवीय रहस्योद्घाटन का दर्जा प्राप्त नहीं है, और इसलिए वे नहीं हैं
कुरान में ही शामिल होने के कारण, वे दूसरे प्रमुख पाठ्य स्रोत का निर्माण करते हैं।
इस्लामी मान्यताओं और मुस्लिम जीवन शैली के लिए।
6 इब्न साद, अल-तबक़त अल-कुबरा, 8:179।
7 वही।
8 वही, 8:180.
9 वही, 8:183.
10 इन शर्तों के लिए, इब्न हिशाम, अल-सिरा अल-नबविया (पैगंबर का जीवन), 2:784 देखें।
लेख "अल-हुदैबिया," EI2, 3:5 भी देखें
11 अल-तबरी ने अपनी कुरान की टीका जामी 'अ अल-बयान फ़ी ता'विल अल-कुरान (कुरान की व्याख्या से संबंधित वाक्पटुता का संकलन), 12:66-67 में, इस आयत की व्याख्या में उम्म कुलथुम का विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया है, बल्कि उद्धृत किया है...
अधिकारियों ने इसे सामान्यतः महिला प्रवासियों के संदर्भ में समझा। अल-वाहिदी नामक व्याख्याकार सुबैया बिन्त नामक एक अन्य महिला के मामले का उल्लेख करते हैं।
अल-हरिथ अल-असलमिया, इस कविता के रहस्योद्घाटन के अवसर के रूप में; उसका कारण देखें
अल-नुज़ुल (रहस्योद्घाटन के कारण), 357. हालाँकि, इब्न साद कुरान से संबंधित नहीं हैं।
60:10 सुबैया के बारे में उनकी प्रविष्टि में (अल-तबाक़ात अल-कुबरा, 8:224)।
12 इब्न साद, अल-तबक़त अल-कुबरा, 8:228।
13 वही, 8:227.
14 वही।
15 वही, 8:226–27.
16 वही, 8:237–38.

17 [illegible] [illegible] 621 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible]-[illegible] 1:299–300; “[illegible],” EI2 8:828; [illegible] “[illegible],” EI2 [illegible] [illegible]
1:314.
18 [illegible] [illegible], [illegible]-[illegible] [illegible]-[illegible], 8:303-4;
19 [illegible], 8:305.
46 [illegible] [illegible]

20 [illegible] [illegible], [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible], 8:262. 21 [illegible] [illegible], [illegible]-[illegible] [illegible]-[illegible], 8:334–35. 22 [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], 61 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

31 इब्न 'अब्द अल-बर्र, अल-इस्तियाब फ़ि म'रीफत अल-अशब, 4:503। 32 कुरान 60:12 देखें।
33 इब्न साद, अल-तबक़त अल-कुबरा, 8:8. 34 इब्न साद की प्रविष्टि के लिए, पिछला नोट देखें। अन्य दो के लिए, इब्न 'अब्द अल-बर्र, अल-इस्तियाब फ़ि म'रीफ़त अल-अशब, 4:495 देखें; और इब्न हजर, अल-इसाबा फाई तमीज़ अल-सहाबा, 8:244।
35 इब्न हजर, अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-सहबा, 8:270. 36 यहाँ इस शब्द का प्रयोग कुरान 33:33, “वा-क़र्ना फ़ी बुयुतिकुन्ना” की याद दिलाता है, जिसका सामान्य अनुवाद “अपने [स्त्रीलिंग बहुवचन] घरों में रहो” है। हालाँकि, आज्ञावाचक क्रिया क़र्ना समस्याग्रस्त बनी हुई है, क्योंकि यह अनियमित है और यहाँ अपने रूप में इसे स्पष्ट रूप से क़र्रा या वक़ारा क्रियाओं से नहीं जोड़ा जा सकता है, जिनका अर्थ क्रमशः “रहना” और “गरिमापूर्ण व्यवहार करना” होगा। इस पर संक्षिप्त चर्चा के लिए, स्टोवासेर, कुरान, परंपराओं और व्याख्या में महिलाएं, 172, नोट 79 देखें। इब्न हजर द्वारा व्युत्पत्तिगत रूप से संबंधित आज्ञावाचक क़र्री/क़िर्री का प्रयोग दर्शाता है कि उन्होंने इस आयत के विवादित अर्थों के संबंध में अपना मत बना लिया है।
37 इब्न हजर, अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-सहबा, 8:289. 38 यह स्थिति आम तौर पर तफ़सीर साहित्य में परिलक्षित होती है। उदाहरण के लिए, इब्न कथीर (मृत्यु 775/1373), तफ़सीर अल-कुरान अल-अज़ीम (महान कुरान पर टीका) 3:482 देखें, जहाँ वे कुरान 33:33 की व्याख्या पैगंबर की पत्नियों को "अपने घरों में रहने" की सलाह के रूप में करते हैं।
39 इब्न 'अब्द अल-बर्र, अल-इस्तियाब फ़ि म'रीफत अल-अशब, 4:519। 40 अफसरुद्दीन देखें, "कुरान की उत्कृष्टताएँ।"
प्रारंभिक महिला आदर्श और लिंग-आधारित स्थान 47

41 इब्न अल-जावज़ी, अहकाम अल-निसा' (महिलाओं से संबंधित नियम), 68-71। 42 वही, 70.
43 वही, 72.
44 बासिम मुसल्लम (इस्लाम में सेक्स और समाज, 61) बिना कोई कारण बताए इस कृति का श्रेय इब्न अल-जौज़ी को देते हैं। हिलेरी किलपैट्रिक (“कुछ उत्तर अब्बासिद और

महिलाओं के बारे में ममलुक पुस्तकें," 69-75) भी इब्न क़य्यिम को इसके श्रेय देने पर संदेह व्यक्त करती हैं।
लेकिन इससे किसी अन्य संभावित लेखक का सुझाव नहीं मिलता।
45 [इब्न क़य्यिम अल-जौज़िया?], अख़बार अल-निसा' (महिलाओं के बारे में जानकारी), 12. 46 उक्त, 103।
47 इब्न साद, अल-तबक़त अल-कुबरा, 8:52-53। 48 इब्न हनबल, अहकाम अल-निसा।' 49 वही, 46–47.
50 जी.एच.ए. जुयनबोल द्वारा “महिला” के रूप में वर्णित चीज़ के इस्नाद विश्लेषण के अभ्यास के लिए—
पैगंबर से जुड़ी "अपमानजनक कहावतों" के लिए, उनकी "कुछ इस्नाद-विश्लेषणात्मक विधियाँ जो हा से कई महिलाओं को अपमानित करने वाली कहावतों के आधार पर सचित्र हैं" देखें।
यह लेख विश्वसनीयता से जुड़ी संभावित समस्याओं को इंगित करता है।
ऐसी रिपोर्टों के बारे में, विशेष रूप से उनके स्रोत के बारे में।
51 यह हदीस अल-बुखारी, मुस्लिम, अबू दाउद, इब्न माजा, अल-दारिमी द्वारा दर्ज की गई है।
मलिक बी. अनस, और इब्न हनबल; वेन्सिंक, कॉनकॉर्डेंस और इंडेक्स डे ला ट्रेडिशन देखें
मुस्लिम 1:123.
52 लुत्फी देखें, “चौदहवीं शताब्दी की काहिरा की महिलाओं के रीति-रिवाज और परंपराएँ,” 101
और नोट 8, जहाँ वह ममलुक काल में ऐसी भावनाओं के प्रमाण के लिए अल-मक़रीज़ी, अल-खितत अल-मक़रीज़िया (मक़रीज़ी योजनाएँ) का उल्लेख करती है; और अहमद, महिलाएँ
और लिंग, 120. मर्निसी, द वेल एंड द मेल एलीट, 99-100 भी देखें। हालाँकि, यह घटना केवल मुस्लिम समाजों तक ही सीमित नहीं है। सामान्य तौर पर तीसरी दुनिया के राष्ट्रवादी आंदोलन और हाल के ईसाई कट्टरपंथी आंदोलन भी इससे प्रभावित हैं।
निजी, घरेलू क्षेत्र के नियमन और "शुद्धिकरण" पर केंद्रित।
यह धारणा कि इससे राष्ट्रीय या सामाजिक पुनरुत्थान होगा। देखें जयवर्धना, फेमिनिज्म एंड नेशनलिज्म इन द थर्ड वर्ल्ड; हंटर, इवेंजेलिज्म:

आगामी पीढ़ी; रोज़, “ईसाई कट्टरवाद।” 53 उदाहरण के लिए, लुत्फी, “चौदहवीं शताब्दी की काहिरा की महिलाओं के रीति-रिवाज और परंपराएँ” देखें, जहाँ वह अल-मदखल इला नामक कृति की विषयवस्तु पर विस्तार से चर्चा करती हैं। तनमियत अल-अ'मल बि-तहसिन अल-निय्यत (शुद्ध कर्मों के फलने-फूलने में प्रवेश)
इरादों पर आधारित यह पुस्तक ममलुक विद्वान इब्न अल-हज्ज (मृत्यु 737/1336-37) द्वारा रचित है। इस कृति में,
इब्न अल-हज्ज स्पष्ट रूप से इब्न अल-जौजी के महिलाओं पर पहले के निर्देशात्मक कार्यों से प्रभावित दिखाई देते हैं और इसी प्रकार महिलाओं की सार्वजनिक भूमिकाओं के खिलाफ आवाज उठाते हैं।
जिसे उन्होंने निडर होकर जारी रखा। महिलाओं के दस्तावेज़ीकरण के लिए ममलुक काल के दौरान आर्थिक और अन्य सामाजिक गतिविधियों के लिए, उदाहरण के तौर पर देखें:
‘अब्द अल-रज़ीक़, मिस्र में ममलुक काल की महिलाएं; लुत्फ़ी, “अल-सखावी की किताब अल-निसा’”; पेट्री, “वर्ग एकजुटता बनाम लैंगिक लाभ”; चापूटोट-रेमादी, “फेम्स डान्स ला विले ममलुक”; फे, “महिलाएं और वक्फ।” ममलुक महिलाओं के लिए धार्मिक विद्वत्ता में प्रमुख भूमिकाओं के लिए, अफसरुद्दीन की पुस्तक "ज्ञान, धर्मनिष्ठा और
धार्मिक नेतृत्व।"
54 यह चर्चा बाद के काल में भी जारी रही (और वास्तव में आज भी जारी है, 48 अस्मा अफसरुद्दीन)

इस्लामी पुनरुत्थान आंदोलनों के मद्देनजर): खौरी, "सीमाएँ खींचना और स्थान परिभाषित करना" देखें। यह भी ध्यान देने योग्य है कि सभी ममलुक विद्वानों ने महिलाओं की गैर-घरेलू गतिविधियों को पूर्वाग्रह की दृष्टि से नहीं देखा। प्रसिद्ध ममलुक विद्वान शम्स अल-दीन मुहम्मद बिन... इब्न हजर के शिष्य अब्द अल-रहमान अल-सखावी (मृत्यु 1497) ने किताब अल-निसा' (महिलाओं की किताब) लिखी, जो उनके व्यापक जीवनी संबंधी ग्रंथ अल-दाव' अल-लमी' लि-अहल अल-क़र्न अल-तसी'आ (नौवीं शताब्दी के लोगों का उज्ज्वल प्रकाश) के अंतिम खंड का लोकप्रिय नाम है। यह पुस्तक विशेष रूप से ममलुक काल में महिलाओं द्वारा निभाई गई अनेक सार्वजनिक भूमिकाओं, विशेषकर विद्वानों और

शिक्षकों के रूप में, को उजागर करने वाले सर्वोत्तम स्रोतों में से एक है।
अल-सखावी ने कई महिलाओं से शिक्षा प्राप्त की थी और उनकी उपलब्धियों को वे प्रशंसा और कृतज्ञता के साथ याद करते हैं: देखें अफसरुद्दीन, "ज्ञान, धर्मपरायणता और धार्मिक नेतृत्व"।
55 EI2, 3:674 में अल-‘अशारा अल-मुबशशारा पर प्रविष्टि देखें।

2 • सार्वजनिक और निजी इस्लामी संस्कृति की मानक धारणाएँ

Yaseen Noorani

8 प्रारंभिक इस्लामी काल में महिलाओं के अलगाव या एकांतवास की प्रथाओं को समझने के किसी भी प्रयास में इन प्रथाओं के पीछे के आदर्शवादी विचारों को ध्यान में रखना आवश्यक है। अरबी काव्य और साहित्यिक परंपरा इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण स्रोत है। शास्त्रीय अरबी
अदब साहित्य, अपनी अमूर्त, पारंपरिक और शैलीबद्ध चित्रण शैलियों के साथ, हमें वास्तविक सामाजिक परिवेश के बारे में बहुत कम जानकारी देता है। प्रथाओं के बारे में। हालाँकि, यह हमें उन मानक धारणाओं के बारे में बहुत कुछ बताता है जो कल्पना करने और चित्रित करने में सक्रिय थीं।
नैतिक और सामाजिक व्यवस्था, और राजनीतिक व्यवस्था को उनका वैध बनाना अधिकार। विशेष रूप से, यह दर्शाता है कि लैंगिक संबंधों और लैंगिक स्थान की एक विशिष्ट तरीके से कल्पना करना व्यवस्था और अधिकार के प्रतिनिधित्व के लिए केंद्रीय था। काव्य और व्याख्यात्मक प्रवचनों का विशाल संग्रह जो इसका उपयोग करता है
और प्रतिनिधित्व की इन संरचनाओं को पुनः स्थापित करना
लैंगिक स्थान का एक मानक मॉडल जो साक्षर संस्कृति में काफी हद तक मौजूद था। इस मॉडल का व्यापक पुनरुत्पादन यह दर्शाता है कि वास्तविक परिस्थितियों से संबंध के संदर्भ में इसका अर्थ और प्रासंगिकता बनी रही। सामाजिक प्रथाएँ। किसी भी मामले में, ऐसा मॉडल निश्चित रूप से प्रदान करता है।
यह इस बात का महत्वपूर्ण प्रमाण है कि साक्षर अभिजात वर्ग लैंगिक स्थान के बारे में कैसे सोचते और उसकी कल्पना करते थे।
50 Yaseen Noorani

मैं यह तर्क दूंगा कि लैंगिक स्थान की मानक धारणाएँ जो इसमें सक्रिय हैं जिन ग्रंथों पर मैं विचार करता हूँ, वे सार्वजनिक और निजी के बीच आधुनिक मानक विभाजन के अनुरूप नहीं हैं। जबकि आधुनिक विभाजन में एक निजी घरेलू क्षेत्र शामिल है जो एक पूर्व-निर्मित, भूमिका-परिभाषित स्थान है, वहीं

प्रारंभिक इस्लामी साहित्यिक ग्रंथों का लैंगिक स्थान एक ऐसा संबंधपरक स्थान है जो स्थिति द्वारा परिभाषित होता है। आधुनिक विभाजन एक निजी पारिवारिक क्षेत्र की परिकल्पना करता है जिसमें शामिल हैं:
भूमिकाओं और संबंधों का, जिसमें प्रेम भी शामिल है, जो स्वाभाविक रूप से उत्पन्न करते हैं
सार्वजनिक मूल्य। यह निजी क्षेत्र इस प्रकार सार्वजनिक व्यवस्था के भीतर ही निहित है। हालाँकि, मैं जिस लैंगिक स्थान के प्रतिनिधित्व की जाँच करूँगा, वह भावुकतापूर्ण है।
सामुदायिक व्यवस्था से परे की इच्छा, जो केवल इच्छा पर महारत और नियंत्रण के माध्यम से ही अस्तित्व में आती है। ठीक उसी प्रकार जैसे कुलीन पुरुष व्यक्ति प्राप्त करता है...
जिस प्रकार पुरुष अव्यवस्थित इच्छाओं से युक्त उग्र आंतरिकता पर नियंत्रण प्राप्त करके आत्म-एकीकरण और इस प्रकार सामाजिक सद्गुण का विकास करता है, उसी प्रकार पुरुषों द्वारा महिलाओं पर अपने अधिकार और प्रभुत्व के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था का गठन होता है।
इस अर्थ में, स्त्रीत्व के संदर्भ में, महिलाएं पुरुष व्यक्तित्व का विस्तार हैं, क्योंकि उन पर पुरुष का नियंत्रण उसकी सफलता का प्रतीक है। स्वयं पर नियंत्रण रखता है, और इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था स्थापित करता है। महिलाएं,
इसलिए, वे इस व्यवस्था को लागू करने के माध्यम से नहीं, बल्कि इसके प्रति आज्ञापालन के माध्यम से सांप्रदायिक व्यवस्था में आते हैं, जिसमें कारावास शामिल है।
उनकी नारीत्व की।
फिर भी, यह संबंध न तो स्त्री सामाजिक भूमिकाओं को परिभाषित करता है और न ही "निजी" के किसी विशिष्ट क्षेत्र का संकेत देता है। पश्चिमी संदर्भों में, यहाँ तक कि विद्वतापूर्ण संदर्भों में भी, "हरम" की अवधारणा को अक्सर निजी क्षेत्र के मुस्लिम रूप के रूप में समझा जाता है। इस दृष्टिकोण में समस्या यह है कि यह सामाजिक क्षेत्रों के विभाजन के संदर्भ में इस्लामी और आधुनिक पश्चिमी समाजों के बीच एक संरचनात्मक समानता मान लेता है। माना जाता है कि अंतर केवल

घरेलू जीवन और नारीत्व के उन आदर्शों में जो मुस्लिम निजी क्षेत्र में प्रचलित हैं। हालाँकि, मैं यह तर्क दूँगा कि इस्लामी इतिहास की पहली पाँच शताब्दियों के अरबी ग्रंथों में महिलाओं द्वारा अधिकृत स्थान या सामाजिक भूमिका से जुड़े हरम की कोई धारणा महत्वपूर्ण नहीं थी। इससे पता चलता है कि बहुत बाद के कालखंडों में भी, जब इस शब्द ने लैंगिक अर्थ ग्रहण किया, तब भी यह धारणा बनी रही।
और कुछ संदर्भों में स्थानिक जुड़ाव के मामले में, हमें इन्हें समान मानने से सावधान रहना चाहिए।
निजी दायरे से जुड़े ऐसे संबंध।
लैंगिक स्थान की अवधारणाओं के बीच अधिक पूर्ण विरोधाभास प्रस्तुत करने के लिए मैं यह प्रस्ताव कर रहा हूँ।
आधुनिक सार्वजनिक/निजी विभाजन के संदर्भ में, इस विभाजन के ऐसे विवरण पर विचार करना उपयोगी होगा जो निजी पारिवारिक जीवन की सार्वजनिक प्रकृति को दर्शाता है।
बुर्जुआ विचारधारा। सार्वजनिक क्षेत्र के संरचनात्मक परिवर्तन में, हैबरमास का तर्क है कि निजी क्षेत्र अठारहवीं शताब्दी में उभरा। प्रारंभिक इस्लामी संस्कृति में सार्वजनिक और निजी 51

बुर्जुआ वर्ग के उदय के संबंध में इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी।
उस दौर में वैवाहिक परिवार। बुर्जुआ वैवाहिक परिवार का वातावरण।
बाजार के क्षेत्र में परिवार के मुखिया की आर्थिक स्वायत्तता द्वारा संभव हुए पारिवारिक ढांचे ने मानवता के एक विशिष्ट आदर्श को बढ़ावा दिया।
नया सामाजिक स्वरूप। प्रेम के माध्यम से स्वेच्छा से निर्मित एक समुदाय के रूप में वैवाहिक परिवार का आत्म-प्रतिनिधित्व, जो आंतरिक विकास को पोषित करता है।
इसके सदस्यों ने मानवता की एक ऐसी अवधारणा को जन्म दिया जिसे "मुक्ति" कहा जाता है।
एक आंतरिक क्षेत्र का, जो अपने नियमों का पालन करता है, किसी भी प्रकार के बाहरी उद्देश्यों से मुक्त है।"1 यह नई मनोवैज्ञानिक आंतरिकता—जिसने अपनी अभिव्यक्ति पाई

अठारहवीं शताब्दी में अंतरंग पत्रों, पत्र-शैली के उपन्यासों, डायरियों और इसी तरह की रचनाओं की प्रचुरता निजता की अवधारणा का मूल तत्व है।
यह धारणा कि निजी क्षेत्र मानवता, स्वतंत्रता और प्रेम का क्षेत्र है, जीवन का वह क्षेत्र जिसमें मनुष्य को सुख की तलाश करनी चाहिए। हैबरमास आगे तर्क देते हैं कि सार्वजनिक क्षेत्र, जिसे वे "सार्वजनिक सत्ता से संबंधित तर्कसंगत-आलोचनात्मक बहस में निरंतर भागीदारी का क्षेत्र" के रूप में परिभाषित करते हैं, "घनिष्ठता के विस्तार और साथ ही पूर्णता" के रूप में उभरा।
वैवाहिक परिवार के दायरे में।"2 यह बाहरी अभिव्यक्ति थी, दूसरे शब्दों में
"निजीकृत व्यक्ति की व्यक्तिपरकता" के शब्दों में।3 जैसा कि अपेक्षित होगा, गोपनीयता की मानक धारणा जिसे हैबरमास ने व्यक्त किया है
इस विवरण में जिस घरेलू क्षेत्र की व्याख्या की गई है, जिसमें वैवाहिक परिवार अपने सदस्यों की सार्वजनिक रूप से उन्मुख मानवता का उत्पादन और पोषण करता है, वह प्रारंभिक इस्लामी सामाजिक गतिविधि के चित्रण से संबंधित नहीं है।
पारिवारिक जीवन का प्रारंभिक इस्लामी ग्रंथों में शायद ही कोई चित्रण मिलता है, और स्वतंत्रता और मानवता के क्षेत्र के रूप में तो और भी कम। इस बात के बहुत कम प्रमाण हैं कि वैवाहिक परिवार जैसी इकाई को कभी सामाजिक श्रेणी या लघु समाज के रूप में भी परिकल्पित किया गया था।4 यह दावा नहीं किया जा सकता कि ऐसी धारणा
यह पूरी तरह से अनुपस्थित था, क्योंकि इसमें कभी-कभार कहावतें, काव्य पंक्तियाँ और
अन्य कथन आत्मनिर्भर पारिवारिक संतुष्टि की सराहना दर्शाते हैं।5 और इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि कुछ गैर-कुलीन शहरी समूहों के बीच— उदाहरण के लिए, व्यापारी परिवारों के लिए—ऐसा आदर्श उनकी व्यक्तिगत आकांक्षाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा होगा। फिर भी, यह स्पष्ट रूप से कोई महत्वपूर्ण मानक आदर्श नहीं था।
और न ही यह किसी प्रमुख विमर्श में एक स्पष्ट रूप से विकसित अवधारणा है। प्रारंभिक चार या पाँच इस्लामी शताब्दियाँ।
सार्वजनिक और निजी की एक अन्य अवधारणा जो सीमित प्रतीत होती है

प्रारंभिक इस्लामी संदर्भ में इसकी प्रयोज्यता ग्रीक और रोमन प्राचीनता के समान है, जिसका उल्लेख हैबरमास और अन्य लोगों ने किया है। हैबरमास के अनुसार,
प्राचीन काल में, गृहस्थी (ओइकोस) का क्षेत्र आवश्यकता का क्षेत्र था, वह स्थान जहाँ आर्थिक और यौन सामाजिक पुनरुत्पादन होता था। 52 यासीन नूरानी

स्वामी का बेलगाम प्रभुत्व। मानवता और स्वतंत्रता का क्षेत्र सार्वजनिक अखाड़ा था, जिसमें पुरुष नागरिक सामान्य मामलों (पॉलिटेइया, रेस पब्लिका) पर विचार-विमर्श करते और निर्णय लेते थे तथा सद्गुणों के प्रदर्शन में प्रतिस्पर्धा करते थे: "जिस प्रकार जीवन की इच्छाएँ और उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति ओइकोस के भीतर शर्मनाक ढंग से छिपी रहती थी, उसी प्रकार पोलिस सम्मानजनक विशिष्टता के लिए एक खुला मैदान प्रदान करता था।"6 निजी को क्षेत्र के रूप में नामित करना
प्रकृति और आवश्यकता तथा सद्गुणों के सार्वजनिक प्रदर्शन को महत्व देना प्रारंभिक इस्लामी मानदंडों से मिलता जुलता है। फिर भी, ग्रीक और रोमन काल में इन दोनों क्षेत्रों द्वारा अपनाए गए रूप प्रारंभिक इस्लामी संदर्भ में मौजूद नहीं हैं।7
हालांकि यह तर्क दिया जा सकता है कि प्रारंभिक मुस्लिम शासन में कुछ प्रकार के सार्वजनिक राजनीतिक विचार-विमर्श होते थे—जैसा कि उदाहरण के लिए व्यापक रूप से देखा जा सकता है
प्रारंभिक गृहयुद्धों के दौरान राजनीतिक भाषण कला, या राजनीतिक-धार्मिक काल में
अब्बासिद काल के शुरुआती दौर के संघर्षों के विपरीत, ऐसा प्रतीत होता है कि दूसरी ओर, ओइकोस, यानी आत्मनिर्भरता के समकक्ष कोई इस्लामी अवधारणा मौजूद नहीं थी।
परिवार को आर्थिक उत्पादन के साथ-साथ सामाजिक पुनरुत्पादन के केंद्र के रूप में देखा जाता है।8 इसके अलावा, परिवार की एक न्यूनतम अवधारणा भी... जीवन गतिविधि का एकीकृत स्थल केवल सीमित रूप से ही प्रकट होता है; अक्सर, किसी व्यक्ति का घर (मंज़िल, बैत, दर) केवल एक इमारत के रूप में दिखाई देता है।9 इसका अर्थ यह नहीं है कि परिवार का अस्तित्व नहीं था, बल्कि यह दर्शाता है कि "परिवार"

इनकी हर कीमत पर रक्षा की जानी चाहिए। इन दोनों शब्दों का प्रयोग पूर्वकालीन शताब्दियों के ग्रंथों में कभी-कभी पत्नी या पत्नियों तथा अन्य महिलाओं के संदर्भ में किया जाता था।
किसी पुरुष का। हरीम शब्द का यह अर्थ मुख्य रूप से उन वाक्यांशों में प्रयुक्त होता था जो किसी व्यक्ति और उसके परिवार के पूर्ण अपमान को दर्शाते थे, जैसे कि उज्तिहा अल-हरीम वा सुबिया अल-अत्फल (महिलाओं का अपमान किया गया और बच्चों का)।
अपहरण)।12 अधिक बार, संबंधित शब्द हुरम और यहां तक कि इसका एकवचन रूप हुरमा (किसी व्यक्ति या वस्तु की पवित्रता और अलंघनीयता) का प्रयोग किया जाता था।
किसी की पत्नी या स्त्री को दर्शाने के लिए। हालाँकि हरम और हरीम शब्द पवित्र स्थलों के संदर्भ में स्थानिक अर्थ ग्रहण करते हैं, फिर भी प्रारंभिक काल में इनका प्रयोग घर के किसी सदस्य को दर्शाने के लिए लगभग कभी नहीं किया जाता था।13 मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि किसी स्त्री या स्त्रियों को दर्शाने के लिए इनका प्रयोग किसी स्थानिक विचार से नहीं, बल्कि हुर्मा, यानी पवित्रता और अलंघनीयता से प्रेरित है। महिलाओं का अपने ऊपर अधिकार रखने वाले पुरुष के साथ संबंध। वास्तव में, ये ऐसा प्रतीत होता है कि इन शब्दों का प्रयोग इस अर्थ में अक्सर उन संदर्भों में किया जाता है जो नामित महिलाओं के संबंध में किसी पुरुष की स्थिति से संबंधित होते हैं।14
इन बातों से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि प्रारंभिक इस्लामी मानदंडों को समझने में सार्वजनिक/निजी ढांचा लागू नहीं होता है।
या फिर बाद के कालखंडों के भी। पीयर्स का निष्कर्ष है कि "सार्वजनिक/"राष्ट्रमंडल/पुरुष और निजी/घरेलू/महिला का सिद्धांत प्रारंभिक आधुनिक ओटोमन समाज के लिए उपयुक्त नहीं है।" इसी प्रकार, एलिजाबेथ थॉम्पसन इस पर सवाल उठाती हैं।
मध्य पूर्वी इतिहास में अनुसंधान के लिए "सार्वजनिक और निजी के द्विभाजित मॉडल" का महत्व।15 दूसरे शब्दों में, ये शर्तें तब तक लागू नहीं होतीं जब तक कि
हम अपने विश्लेषण प्रयासों में उन शब्दों में निहित पूर्व-निर्धारित मानक सामग्री को प्रसारित करते हैं। हालाँकि, शब्दों द्वारा व्यक्त किए गए अलग-

अलग अर्थों को अलग रखते हुए, उनका अधिक सटीक रूप से उपयोग करना संभव होना चाहिए।
और उत्पादक तरीके से। इस संदर्भ में, विभिन्न अर्थों के बीच एक मूलभूत अंतर करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।
सार्वजनिक/निजी विरोध का।16 एक मूलभूत अर्थ में, ये शब्द
ये दृश्य, खुले या सभी के लिए सुलभ चीज़ों और छिपी हुई चीज़ों के बीच एक विरोधाभास को दर्शाते हैं। एक अन्य मूलभूत अर्थ में, वे एक
सामूहिक (राजनीतिक सहित) प्रकृति वाली चीज़ों और व्यक्तिगत या निजी प्रकृति वाली चीज़ों के बीच विरोध। सार्वजनिक/निजी भेद के कई संस्करणों में दोनों अर्थों के तत्व शामिल होते हैं। इन दोनों अर्थों को मिला देना जहां इसकी आवश्यकता नहीं होती, वहां यह भ्रम की स्थिति पैदा करता है, क्योंकि कुछ 54 यासीन नूरानी

यह प्रकृति में प्रतिबंधित और सामूहिक दोनों हो सकता है, या यह सभी के लिए सुलभ हो सकता है।
ये सभी फिर भी एक व्यक्ति से संबंधित हैं। और भी कई भेद हैं जिन्हें पहचाना जा सकता है।
इस संबंध में प्रयास किए जाने चाहिए, फिर भी यह प्रारंभिक प्रयास भी मूल्यवान है क्योंकि इससे अधिक स्पष्टता प्राप्त होती है।
सार्वजनिक और निजी की वैचारिक रूपरेखा इस मायने में मूल्यवान है कि यह हमें व्यक्तिपरक आंतरिकता और सामूहिक व्यवस्था के बीच संबंध से उत्पन्न होने वाले मानक संबंधों की जांच करने के लिए प्रेरित करती है। आगे मैं, अरबी कविता में नारीत्व की स्थिति और लैंगिक स्थान के संबंध में प्रस्तुत व्यक्तिपरक आंतरिकता की विशेषताओं की पहचान की जाएगी।
हमने नारी चित्रण के पारंपरिक विषयों को नारी प्रच्छन्नता के संदर्भ में गहनता से विकसित करने वाली दो कविताओं का विस्तृत विश्लेषण करने के लिए चुना है। ये कविताएँ उमर बिन अबी रबीआ द्वारा रचित हैं।
और दूसरी इब्न दरराज अल-क़स्तली द्वारा रचित, कम से कम तीन शताब्दियों के अंतराल पर और इस्लामी दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में रचित की गई थीं। इसके बावजूद, वे

यह स्तुतिगान कविता हमें दर्शाती है कि शासक में निहित सद्गुण इच्छा के प्रबंधन, नियंत्रण और रूपांतरण से प्राप्त होता है।
मूलतः इसका प्रभुत्व था। यह इच्छा निजी है क्योंकि यह कवि से संबंधित है, और इस अर्थ में कि इसे छुपाया जाना चाहिए और यह केवल इसलिए प्रकट होती है क्योंकि कवि इसे दबाने में असमर्थ है। प्रारंभिक इस्लामी काल के साहित्यिक/नैतिक अदब कार्यों में कामुक इच्छा के रूप में मानसिक आंतरिकता का मानक महत्व देखा जा सकता है। हम चौथे-/
दसवीं शताब्दी की कृति अल-मुवाश्शा, दरबारी आदर्श ज़र्फ़, यानी "परिष्कार" की व्याख्या है। यह आदर्श, यद्यपि इसमें लगभग सभी ज्ञात सकारात्मक गुण समाहित प्रतीत होते हैं, फिर भी इसे मुख्य रूप से वाक्पटुता, नैतिक श्रेष्ठता,
पवित्रता और उदारता।19 परिष्कार के लिए सद्गुण (मुरुअ) आवश्यक है,20 लेकिन
इच्छा भी ऐसी ही है। भावुक प्रेम (हवा) “तर्कसंगत व्यक्तियों के लिए सबसे पुख्ता मानदंडों में से एक है, और जो भी उनका चिंतन करता है, उसके चरित्र और आवेगों की उचित संरचना का सबसे ठोस प्रमाण है।”21 इसके अलावा, भावुक प्रेम “वह पहला द्वार है जिससे मन खुलता है और अंतर्मन की आत्मा का विस्तार होता है; इसका हृदय पर ऐसा प्रभाव होता है जिससे बुद्धि जागृत होती है।” ऋषियों के अनुसार, “भावुक प्रेम से मुक्त कोई भी व्यक्ति सुसंस्कृत (अदीब) नहीं है।” आत्म-संयम (विशेषकर ब्रह्मचर्य के रूप में) और भावुक इच्छा पर बारी-बारी से जोर देना एक विशिष्ट विशेषता है।
इस प्रकार की रचनाएँ। लेखक एक पृष्ठ पर वासना और तर्क (अक्ल) की बाध्यकारी शक्ति के बीच विरोधाभास का प्रतिपादन करते हैं, वहीं दूसरे पृष्ठ पर वासना की प्रशंसा करते हैं; और अपने पाठकों को पवित्रता का उपदेश देते हुए... कड़े शब्दों में, वे चेतावनी देते हैं कि जुनून वह आंतरिक आवेग है जो सामाजिक पतन और सबसे गंभीर, सबसे अक्षम्य अपराधों को अंजाम देने की ओर ले जाता है।
पाप। ये रचनाएँ हमें यह समझने में मदद करती हैं कि नैतिक आदर्शों के अस्तित्व के लिए इच्छा का उपस्थित और स्पष्ट होना आवश्यक है, फिर भी उसे नियंत्रित और छिपाया जाना चाहिए।22

सामाजिक महत्व और इसके संदर्भ में कामुक इच्छा की प्रमुख विशेषता यह है कि महिलाओं की स्थिति पर इसके प्रभाव का कारण, काव्य और अन्य प्रस्तुतियों में, सामाजिक व्यवस्था से बाहर इसकी संरचना है। प्रारंभिक उमय्यद कवि की एक कविता।
उमर बिन अबी रबीआ (644-711 ईस्वी), प्रेम कविता को एक स्वतंत्र शैली के रूप में स्थापित करने वाले संस्थापकों में से एक और संभवतः इसके सबसे प्रसिद्ध रचनाकार, इच्छा की सामाजिक बाह्यता का एक प्रभावशाली चित्रण प्रस्तुत करते हैं। उमर की कविता
यह कहानी कुलीन महिलाओं के साथ उनके अवैध संबंधों पर केंद्रित है, जिनका वह अक्सर मक्का में अपने निवास का फायदा उठाते हुए पवित्र मस्जिद की तीर्थयात्रा के दौरान पीछा करता है।
उनकी कविता अपनी कथात्मक समृद्धि और कवि की प्रेमिकाओं के साथ जीवंत संवादों के लिए जानी जाती है, जो उनके साथ अपने कामुक अनुभवों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। जिस कविता पर मैं चर्चा करूंगा, वह पूर्व-इस्लामिक विषय पर आधारित है।
प्रेमी के कबीले के शिविर में रात्रिकालीन, गुप्त घुसपैठ के बारे में 56 यासीन नूरानी

और निजी घेरा, जिसे एक अविश्वसनीय रूप से साहसी और खतरनाक रूप में चित्रित किया गया है।
उपक्रम.23 कविता कवि की अपने जुनून की शिकायत से शुरू होती है।
नु'म के लिए।

जब नुअम पास होती है, तब भी उसकी निकटता आपकी मदद नहीं कर सकती।
जब वह दूर होती है तो न तो आप उसे भूल सकते हैं, न ही उसे सहन कर सकते हैं।
और एक और महिला जो हमारे बीच आई, जिसकी दयालुता
अगर समझदार आदमी सोच-समझकर खुद को रोक ले तो यह बात उसे रोक सकती है। जब मैं नुअम से मिलने जाता हूँ तो उसका एक रिश्तेदार उसे लगातार टोकता रहता है।
जब तक मैं उसके साथ रहता हूँ, वह मुझे घूरती रहती है।

उसे यह असहनीय लगता है कि मैं उसके तम्बू में जाऊँ; वह मुझसे द्वेष रखता है और मेरा तिरस्कार करता है। (पंक्ति 4-7)

नुअम के साथ रिश्ते में स्थायी या दीर्घकालिक संतुष्टि की कोई संभावना नहीं दिखती। एक अन्य महिला की उपस्थिति के बावजूद, जिससे वह प्यार करता है...
कुछ सामाजिक दायित्वों के कारण और नुअम के पुरुष रिश्तेदारों की खतरनाक शत्रुता के चलते, कवि आत्म-संयम की अपनी तर्कसंगत क्षमता का उपयोग करने में असमर्थ है।
इसके बाद कविता में एक पिछली मुलाकात का वर्णन किया गया है, जो एक अवसर प्रदान करता है
दोनों प्रेमियों की जीवनशैली की तुलना करें।

उसने एक ऐसे आदमी को देखा जो सूरज की तेज गर्मी में,
इसके नीचे कुछ है, और रात में ठंड हो जाती है।
एक घुमंतू जो धरती पर भटकता है, बिखरा हुआ
एक रेगिस्तान से दूसरे रेगिस्तान तक, धूल से सना हुआ और अस्त-व्यस्त। उसके वाहन पर कोई छाया नहीं है।
लेकिन वह आवरण उसके ऊपर उसके पैटर्न वाले लबादे से ढका हुआ था।
उसे अपार्टमेंट की छांव और हरे-भरे बगीचों की हरियाली में अपना जीवन बिताना अच्छा लगता था।
और एक ऐसा अभिभावक जो उसकी हर इच्छा पूरी करता था, ताकि रात में उसे देर तक जगाए रखने वाली कोई बात न हो।
(पंक्तियाँ 14–18)

इन पंक्तियों से यह स्पष्ट होता है कि कवि समाज से बाहर की स्थिति से शुरुआत करता है। पूर्व-इस्लामी कविताओं के विपरीत, जो सांप्रदायिक मूल्यों में परिणत होती हैं, इस कविता में...
जिसमें कवि का अपनी प्रेमिका के साथ बगीचे में बिताया गया आनंदमय समय कविता का सबसे पूर्ववर्ती घटक है—इसका खोया हुआ स्वर्ग—यहाँ कवि बाहर है

अपने प्रेम प्रसंग से पहले और बाद में भी, वह समाज से अलग-थलग रहेगा। कुछ अचानक ही, कवि कविता के मुख्य प्रसंग का वर्णन करना शुरू कर देता है। एक रात कवि यात्रा पर निकल पड़ा: "मोह में डूबा प्रेमी अक्सर
वह भयावह कार्य करता है” (पंक्ति 19)। उसे एक असुविधाजनक छिपने की जगह मिली।
प्रारंभिक इस्लामी संस्कृति में सार्वजनिक और निजी 57

नुअम की जनजातीय बस्ती के पास जाकर वे तब तक वहीं इंतजार करते रहे जब तक कि पशुपालक नहीं आ गए।
वे लोग चले गए थे, बातचीत कर रहे लोग एकांतवास में चले गए थे, और अब वहाँ कोई नहीं था।
आवाजों या रोशनी को देखकर, वह सोच रहा था कि अंधेरे में वह उसका घर कैसे ढूंढेगा। चिंता की कोई बात नहीं: "मैं उसकी पहचानी हुई खुशबू से रास्ता ढूंढ रहा था और..."
स्वयं का जुनून, जो लगभग प्रकट हो चुका था” (पंक्ति 24)। यहाँ देखा जा सकता है कि प्रेमी एक चरम अवस्था में हैं, ऐसी अवस्था जिसमें आंतरिक
इच्छा अपने सामान्य बंधन और घेरे से मुक्त होकर बाहर आ गई है।
खुलापन। इच्छा का यह प्रकटीकरण कविता की प्रमुख विशेषता है। कवि बड़ी सावधानी से शिविर में रेंगता हुआ जाता है और नुअम को आश्चर्यचकित कर देता है।
अपने तम्बू में, उस घेरे में जहाँ एक कुलीन महिला होने के नाते वह प्रकृति, परिश्रम और अशिष्ट लोगों के ध्यान से सुरक्षित रहती है। "तुमने मुझे अपमानित किया है," उसने कहा।
वह अपनी उंगलियों को काटते हुए चीखती है, लेकिन फिर खुद को संभालते हुए कहती है:
“जब तक तुम यहाँ रहोगे, निःसंदेह तुम मेरे स्वामी हो” (पंक्तियाँ 29, 34)। अंततः, कवि को वह प्राप्त हो जाता है जिसके लिए उसने अपना जीवन जोखिम में डाला था, और दोनों प्रेमी
एक साथ आनंदमय रात बिताएं।
दुर्भाग्यवश, खुशहाल जोड़ा समय पर जागने में असफल रहता है।
सुबह। वे भोर के संकेत देखकर और सुनकर घबरा जाते हैं।

उनके आसपास सुबह की हलचल की आवाजें सुनाई दे रही थीं। वे खुद को एक गंभीर स्थिति में पाते हैं। कवि के पास बाहर जाकर स्थिति का सामना करने के अलावा कोई बेहतर प्रस्ताव नहीं सूझता।
कबीले के लोगों से या तो भागना होगा या मरना होगा। नुअम इस विकल्प को अस्वीकार करती है, क्योंकि इससे उसके बारे में फैली बुरी अफवाहों की पुष्टि हो जाएगी; वह एक ऐसा रास्ता चुनती है जो...
मामले को छुपाए रखने के लिए। अपनी दोनों बहनों से सलाह लेने का फैसला करते हुए, वह खड़ी हुई,
उदासी से उसका चेहरा पीला पड़ गया था, आँखों से आँसू बह रहे थे” (पंक्ति 50)। उसकी बहनें स्वाभाविक रूप से एक आदमी को देखकर चौंक जाती हैं।
नुअम के तंबू में, लेकिन वे जल्दी ही संभल जाते हैं और एक योजना बनाते हैं: उसे महिलाओं के कपड़े पहनाकर उसके चारों ओर तब तक घूमना जब तक वह अपना रास्ता न बना ले।
भाग जाना। "हमारा रहस्य बाहर नहीं आएगा, और वह दिखाई नहीं देगा" (पंक्ति 55)।
वह सहमत हो जाता है। “जिनसे मैं डरता था, उनसे मेरी सुरक्षा के लिए तीन शरीर थे: दो सुडौल युवतियाँ और एक लड़की” (पंक्ति 56)। सुरक्षित स्थान पर पहुँचने पर वे उससे कहते हैं:
“क्या इस तरह लापरवाही से व्यवहार करना तुम्हारी आदत है? क्या तुम्हें शर्म नहीं आती, क्या तुम खुद को रोकते नहीं, क्या तुम सोचते नहीं कि तुम क्या कर रहे हो?” (पंक्ति 58)। कोई उत्तर नहीं दिया गया है।
कविता का अंत एक हताश रेगिस्तानी यात्रा (राहिल) के साथ होता है जिसमें कवि वर्णन करता है कि कैसे उसका ऊंट रेगिस्तान में प्यास से लगभग मर जाता है, जबकि वह स्वयं अविचलित दिखाई देता है।
इस कविता की संरचना में कुछ विशिष्ट विशेषताएं हैं जो इच्छा की प्रकृति को दर्शाती हैं।24 ये विशेषताएं कवि का नारीवादी समाज में पूर्ण एकीकरण हैं, इस हद तक कि वह एक स्त्री बन जाता है, और
अंत में किसी प्रशंसात्मक खंड का अभाव, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि कविता अधूरी है। -58 यासीन नूरानी

पूर्ण। वास्तव में ये विशेषताएं कविता को एक अलग संरचना प्रदान करती हैं।

पूर्व-इस्लामी कविताएँ जिनमें समान विषय है। उमर की कविता में भी यही विषय है।
सुलुक या डाकू कविता से समानता, जिसमें कवि सामाजिक व्यवस्था से बाहर एक सीमांत स्थिति में निरंतर बना रहता है।25 एक संकेत
इसका एक उदाहरण मुख्य कथा से पहले और बाद में राहिल रूपांकनों की उपस्थिति है। यह प्रस्तुति आम तौर पर उमर की प्रेम कविताओं के अनुरूप है, जिनमें कवि हमेशा एक एकाकी होता है जिसके अवैध और गुप्त संबंध होते हैं।
महिलाओं के साथ संबंध रखता है और कभी भी पुरुष प्रधान समाज का सदस्य नहीं बनता। इस प्रकार, हमारे सामने एक ऐसा व्यक्ति है जो स्थायी रूप से सीमांत स्थिति में है, और जिसकी सीमांत स्थिति
यह स्थिति नारीवादी समाज में विपरीत एकीकरण पर केंद्रित है। एक अवास्तविक, प्राकृतिक स्थिति से संक्रमणकालीन चरण से गुजरने के बजाय। नैतिक शुद्धि जो स्वायत्तता की प्राप्ति और उत्थान की अनुमति देती है संस्कृति के क्षेत्र में, उमर का व्यक्तित्व रेगिस्तान में भटकने की सीमांत अवस्था से महिलाओं के प्रति-समाज में प्रवेश करता है और फिर वापस उसी अवस्था में लौट आता है।
सामान्यतः, साहसिक यात्रा के बाद रेगिस्तान की यात्रा वह साधन होती है जिसके द्वारा कवि सद्गुणपूर्ण आत्म-एकीकरण या पूर्ण पुरुषत्व की ओर बढ़ सकता है।
लेकिन यहां राहिल एक परिपूर्ण पुरुषत्व की ओर आंदोलन का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता।
बल्कि, यह कवि की समाज से बाहर की स्थिति को पुनः स्थापित करता है, जो रेगिस्तान में उसकी लगभग पशुवत सहनशीलता की स्थिति से चिह्नित है, जिसके साथ कविता
शुरू किया।
कुल मिलाकर, इसका प्रभाव यह होता है कि कवि की पहचान आंतरिक इच्छा से हो जाती है।
उस गुप्त क्षेत्र के साथ जिसका नियंत्रण और छिपाव व्यवस्था को जन्म देता है।
कविता से यह स्पष्ट होता है कि वह इच्छा और वासना (शॉक व हवा) से प्रेरित है, उसमें कोई तर्कसंगत संयम नहीं है, और उसे शर्म महसूस नहीं होती।

यह कविता सर्वप्रथम मक्का की पवित्र मस्जिद में पढ़ी गई थी। महान संत और पहली पीढ़ी के धार्मिक विद्वान इब्न अब्बास, खारिजियों के एक समूह को कानूनी सलाह दे रहे थे। खारिजी एक प्रारंभिक मुस्लिम राजनीतिक गुट था जिसे आम तौर पर धार्मिक कट्टरपंथी माना जाता था। उसी समय कवि उमर वहाँ से गुज़रे। इब्न अब्बास ने उनसे कुछ सुनाने को कहा; उमर मान गए और फिर अपना चले जाओ। खारिजी नाराज़ हो गए और उनमें से एक ने कहा: “हम तो पूरी तरह से यहाँ तक आए हैं।”
मैं यहाँ आपसे जायज़ और नाजायज़ के बारे में पूछने आया हूँ, और आप इस कुरैशी अय्याश की बात सुन रहे हैं।" फिर उसने एक आयत दोहराई।
कविता को तोड़-मरोड़कर कवि का अपमान करते हुए पढ़ा गया। इब्न अब्बास ने उसे सुधारा, और खारिजी ने कहा: "ऐसा लगता है जैसे तुमने पूरी कविता रट ली हो।"
इब्न अब्बास ने पूरी कविता का पाठ करना शुरू कर दिया, जिससे वहाँ मौजूद लोग उनकी मानसिक क्षमताओं पर आश्चर्य व्यक्त करें। यह स्पष्ट है कि इस कहानी को दोहराने का कारण कविता को सर्वोच्च धार्मिक अधिकारियों की स्वीकृति दिलाना है। जो लोग कविता से, या इस्लाम के सबसे पवित्र स्थल पर इसके पाठ से आहत हैं, वे स्वयं को कट्टरपंथियों के पक्ष में पाते हैं।
खारिजी। महान इब्न अब्बास को यह कविता पसंद आई; उन्होंने इसे याद कर लिया था और इसे अपने पास रख लिया था।
ईश्वर के पवित्र घर के परिसर में इसे दोहराने में कोई संकोच नहीं। इस प्रकार के वृत्तांत की उपस्थिति से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रस्तुतियाँ
इस कविता में वर्णित बातें मात्र शरारती और तुच्छ नहीं थीं, बल्कि कई लोगों द्वारा उन्हें सर्वोच्च धार्मिक महत्व के योग्य माना जाता था। अनुमोदन।
यदि पुरुष की आंतरिकता को एक स्त्री के रूप में छिपाया या नियंत्रित किया जा सकता है, तो वह प्रकट होने और किसी भी बंधन को चुनौती देने की अपनी आंतरिक आवश्यकता को पूरा कर सकता है।
अन्य रूप। दूसरे शब्दों में, मर्दाना आंतरिकता के प्रतीक के रूप में महिलाओं की स्थिति इच्छा को विभिन्न अभिव्यक्तियों में विभाजित करने की अनुमति देती है ताकि

यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप में हो सकता है। हम इस विचार की और अधिक जांच कर सकते हैं।
बहुत बाद के काल की एक ऐसी रचना को देखकर, जो नारी चित्रण के व्यापक भावार्थों को विशेष रूप से गहन ढंग से विस्तृत करके अपनी चित्रात्मक शक्ति प्राप्त करती है, हम इसे पूरी तरह समझ सकते हैं। प्रख्यात अंडालूसी कवि इब्न दरराज अल-क़स्तली (958-1030 ईस्वी) इस मायने में असामान्य हैं कि वे अक्सर नारी चित्रण को संबोधित करते हैं।
और अपनी स्तुति कविताओं में अपने परिवार के सदस्यों का उल्लेख करते हैं। इब्न दारराज 60 यासीन नूरानी द्वारा विकसित प्रारंभिक अब्बासिद कवि अबू नुवास की एक मिसाल

एक व्याकुल पत्नी (और कभी-कभी बच्चे) से विदा लेने का भाव
शासक तक लंबी और कठिन यात्रा करना। इस कालखंड का एक प्रमुख कार्य। अल-मंसूर इब्न अबी आमिर के लिए रचित एक स्तुतिगान,27, एक महिला को संबोधित करते हुए शुरू होता है, संभवतः इब्न दरराज की पत्नी, जिसे कवि सांत्वना देता है, और आग्रह करता है कि
कि उसे मिलने वाला पुरस्कार यात्रा के खतरों और कठिनाइयों से कहीं अधिक होगा, साथ ही इस कार्य को करने के पीछे नैतिक अनिवार्यता पर भी बल दिया गया है।
यह: “क्या तुम नहीं जानते कि एक ही जगह पर रहना मृत्यु है, और यह कि घरों का क्या मकबरे शक्तिहीन हैं?” (पंक्ति 3)। वह उससे अपने बिछड़ने का वर्णन इस प्रकार करता है:

जब उसे प्रस्थान का समय निकट आता महसूस हुआ
उसकी आहों और कराहों से मेरा धैर्य डगमगा गया। वह मुझसे विनती कर रही थी, हमारे प्यार और जुनून के पलों को याद दिला रही थी।
पालने में एक छोटा बच्चा हिरण के बच्चे जैसी आवाज निकाल रहा था। वह मौन था फिर भी उसकी आवाज सुनाई दे रही थी।
वह स्वयं की इच्छाओं का पता लगाने में माहिर था।
उन्होंने हृदयों में निषिद्ध स्थान ग्रहण किया और अलंकृत बाहों और सीनों में समाहित रहे;

अत्यंत सुंदर महिलाओं द्वारा पोषित,
अत्यंत सुंदर महिलाओं द्वारा देखभाल की जाती है।
मैंने उसमें स्वयं के हिमायती की अवज्ञा की।
और इसके बजाय रात्रि यात्राओं की कठिनाइयों की ओर मुड़ गया। अलगाव के पंख ने मुझे दूर उठा लिया, जबकि
पीड़ादायक बिछड़ने के पंख उसे अपने साथ ले गए।
हालांकि वह मुझसे ईर्ष्या करते हुए अलग हुई,
मैं उसके आँसुओं से अपने संकल्प की रक्षा बड़ी सावधानी से करता हूँ। (पंक्तियाँ 9-16)

इन पंक्तियों के बाद कवि की यात्राओं का वर्णन आता है।
रेगिस्तानी यात्रा के प्रतीकों का उपयोग करते हुए, निर्जन जंगल, जो आगे चलकर...
अल-मंसूर की प्रशंसा। अनुवादित भाग नासिब का कार्य करता है, अर्थात् बीते हुए प्रेम की याद दिलाता है। इसमें निहित भावार्थ इस प्रकार हैं:
नसीब में पाए जाने वाले वाक्यों में से, यद्यपि कवि अपने अधिकार के अधीन एक महिला को संबोधित कर रहा है, इसलिए इन पंक्तियों के कार्य करने का तरीका बदल जाता है।28
परंपरागत नसीब में अतीत के खोए हुए प्रेम का महत्व यह है कि यह कवि के नियंत्रण में नहीं था। यह भाग्य के कारण समाप्त हुआ, क्योंकि
सभी प्रेम का एक निश्चित अर्थ होता है। अन्यथा, कवि आज भी अपनी प्रेमिका की बाहों में होता। कवि प्रेम का त्याग कर स्थायी संतुष्टि की तलाश करता है क्योंकि उसे पता चल गया है कि प्रेम यह संतुष्टि प्रदान नहीं कर सकता। इब्न दरराज की कविता में,
स्थिति अलग है। कविता की शुरुआत में ही कवि ने पहले ही...
प्रारंभिक इस्लामी संस्कृति में सार्वजनिक और निजी 61

प्रेम का उत्थान हुआ। अनुवादित पंक्तियों का उद्देश्य यह दिखाना है कि यही वह प्रेम है।
इस मामले में, यह दर्शाने के लिए कि प्रेम मौजूद है लेकिन उसे सीमित कर दिया गया है, ताकि कवि

कवि पहले से ही शासक के सांप्रदायिक स्वरूप से स्वयं को जोड़ने की स्थिति में है। दूसरे शब्दों में, ये पंक्तियाँ दर्शाती हैं कि कवि ने अपनी विवश इच्छा को स्वयं से अलग चित्रित करके स्वयं को रूपांतरित किया है। कवि के पूर्व इच्छाशील स्वरूप को अतीत की स्मृति के रूप में नहीं, बल्कि वर्तमान के रूप में दर्शाया गया है।
यहीं और अभी, उस शिशु के रूप में जो उसे पुकारता है। पहचान
शिशु के अंतर्मन का वर्णन में ही स्पष्ट हो जाता है। वह बुद्धिवान व्यक्तियों की तरह वाक्पटु नहीं है, बल्कि अस्पष्ट है। फिर भी उसकी वाणी वह सीधे "स्वयं की इच्छाओं" में प्रवेश करता है। वह "दिलों के भीतर के वर्जित स्थान" पर कब्जा कर लेता है—अर्थात्, उस रहस्य के स्थान पर जिसे छिपा रहना चाहिए।
इस प्रकार वह स्वयं का हिमायती है, वह जो स्वयं के लिए बोलता है। वह इस पर आधारित है।
सुंदर स्त्रियों के शरीर, क्योंकि वासना से ग्रस्त आत्मा हमेशा स्वयं को वहीं पाती है। यह श्लोक बचपन से जुड़े भावों को प्रकट करता है।
भोले-भाले, निःसंतान कामुकता का समय। साधारण नसीब में बीते प्रेम की स्मृति, कुछ मायनों में, बचपन की स्मृति है, या यूँ कहें कि बचपन की स्मृति है।
वयस्कता से पहले का वह समय, जब कोई महिला समाज में भाग लेता था। यही वह समय है जब महिलाएँ महिलाओं के समाज में शामिल होती थीं।
उस स्थान के प्रति प्रेम से जुड़े भावों के समूह का आधार जहाँ व्यक्ति का पालन-पोषण हुआ हो
ऊपर (वतन)।
शिशु इस दृश्य में संयोगवश उपस्थित नहीं है; वह अपनी माँ के कारण वहाँ है। शिशु उस बात का प्रतीक है जो महिला कवि से चाहती है: उसका
पूर्व की लालसा से भरी हुई स्व। इसीलिए वह उनके "स्नेह और प्रेम के समय" की अपील करती है।
जुनून।" हालाँकि, वह यह नहीं समझ पाती—या शायद समझ ही नहीं सकती—कि कवि पालने में वापस नहीं जा सकता। ऐसा करना मृत्यु के समान होगा:

जो लोग एक ही जगह टिके रहते हैं, उनके घर कब्र बन जाते हैं। इसलिए कवि शिशु की आनंदमयी अवस्था को त्यागकर—अर्थात अपनी पत्नी की बाहों को छोड़कर— अपने अंतर्मन से अपना अलगाव स्थापित और प्रबल करता है।
रेगिस्तान की कठिन यात्राएँ जिनमें वह सूरज की चिलचिलाती गर्मी में झुलस जाता है, मौत के मुंह में चला जाता है, इत्यादि। रेगिस्तान की यात्रा के दौरान झेली गई कठिनाइयाँ, साहस
और उसमें प्रदर्शित दृढ़ संकल्प, यदि वह महिला उन्हें देख पाती, तो उसे यह प्रकट कर देता कि कवि "अन्याय होने पर अधीर हो जाता है, लेकिन कठिन समय में अडिग रहता है।"
कठिनाई का दर्द," कि "आशाएँ महिमा के लिए उसकी इच्छा के प्रति आज्ञाकारी हैं" (पंक्ति 21,
29)—संक्षेप में, वह शासक की कृपा का पात्र है। दूसरे शब्दों में, महिला के भावुक आलिंगन से स्वयं को बचाकर, बचपन के सुख में वापस न लौटकर, वह उस नैतिक स्थिति को प्रदर्शित करता है जो उसे सामाजिक सद्गुण के प्रतीक के प्रति लगाव के योग्य बनाती है।
अत: कवि के अधिकार के अधीन एक महिला के रूप में उस महिला की उपस्थिति,
यह कवि की आंतरिक भावनाओं को किसी ऐसी चीज़ के रूप में प्रस्तुत करने की अनुमति देता है जिसे 62 यासीन नूरानी ने चित्रित किया है।

वह अतीत में तो था, लेकिन एक ऐसी अवस्था के रूप में जिस पर वह निरंतर महारत हासिल करता है।
अपनी पत्नी को अपने वश में रखकर।
उमर बिन अबी रबीआ और इब्न दरराज की कविताएँ इसलिए विशिष्ट हैं क्योंकि इनमें पारंपरिक कविताओं की तुलना में लैंगिक संबंधों का अधिक समृद्ध चित्रण है, जो आंतरिक भावों को अधिक अमूर्त तरीके से दर्शाती हैं। वास्तव में, इन दोनों कविताओं को एक हद तक एक प्रारंभिक रचना के रूप में देखा जा सकता है।
एक ऐसे स्त्री-प्रधान क्षेत्र का चित्रण जिसमें इच्छा का बोलबाला है। एक प्रकार का
इन दोनों कविताओं में नारीत्व से जुड़े स्थान के संदर्भ में। उमर की कविता में,

यह स्थान खिदर, या उच्च सामाजिक वर्ग की महिला का निजी परिसर होता था। हालाँकि इस शब्द का प्रयोग कविता में नहीं किया गया है (इसके बजाय एक अन्य शब्द, 'खिबा', का उल्लेख किया गया है), फिर भी यह स्थिति को दर्शाता है। 'खिद्र' शब्द में वर्ग के साथ-साथ कामुकतापूर्ण अर्थ भी निहित हैं। यह एक प्रकार के स्त्री के स्थान को दर्शाता है। लेकिन यह एक अत्यंत अमूर्त शब्द है: इस स्थान का स्वरूप कैसा है, यह कितना बड़ा है, इसमें क्या समाहित है, यह रहने का स्थान है या केवल सोने का स्थान है, आदि का कोई बोध नहीं होता। आगे बढ़ना, हालांकि यह आरामदेह जीवन का संकेत देता है। वास्तव में, ऐसा प्रतीत होता है कि इस शब्द ने कभी किसी विशिष्ट स्थानिक रूप को नहीं दर्शाया, बल्कि केवल स्थिति को ही व्यक्त किया।
एक कुलीन महिला द्वारा अधिकृत स्थान को गुप्त और वर्जित माना जाता है।
इब्न दरराज इसका उपयोग करते हैं।
उनकी कुछ कविताओं में इस शब्द का प्रयोग उनकी पत्नी को (संभवतः) रब्बत खिदिर, यानी एक खिदिर की रखैल के रूप में संबोधित करते हुए किया गया है। इस तरह से संबोधित करके वे उनकी प्रतिष्ठा और आकर्षण को स्थापित करते हैं। ऊपर उल्लिखित कविता में, इब्न दरराज ने महिला और शिशु द्वारा घेरे गए स्थान के संदर्भ में इस शब्द या किसी अन्य शब्द का प्रयोग नहीं किया है। फिर भी यह विचार स्पष्ट है कि उनके साथ रहना
इच्छा के आगे झुक जाना। इसका अर्थ है कि वे एक ऐसे क्षेत्र में निवास करते हैं जहाँ इच्छा प्रबल होती है, जिससे कवि स्वयं को दूर कर लेता है और एक ऐसे क्षेत्र में चला जाता है जहाँ...
कौन सा सद्गुण प्रबल है: शासक का दरबार। हालाँकि, इच्छा क्षेत्र का कोई नाम नहीं है और न ही कोई स्थानिक या भौतिक चित्रण है। यह एक उत्सर्जन है
यह किसी विशिष्ट विशेषताओं वाले स्वतंत्र स्थान के बजाय महिला और बच्चे से संबंधित है। यह किसी विशिष्ट प्रकार की गतिविधि के प्रदर्शन के लिए जीवन के क्षेत्र के बजाय व्यक्तिगत स्थिति का प्रभाव है।
अन्य प्रकारों में भी सामाजिक स्थिति के संबंधों पर जोर और भूमिका- परिभाषित लैंगिक स्थान की किसी ठोस अवधारणा का अभाव स्पष्ट है। साहित्यिक, धार्मिक और कानूनी ग्रंथों का। ‘उयुन जैसे साहित्यिक संकलन। इब्न कुतैबा (मृत्यु 889 ईस्वी) द्वारा लिखित अल-अख़बार और इब्न अब्द रब्बिह (मृत्यु 940 ईस्वी) द्वारा लिखित अल-इक़द अल-फरीद में महिलाओं के

विषय पर लंबे खंड हैं, जिनमें पूर्व-इस्लामी और प्रारंभिक इस्लामी हस्तियों के किस्से, पैगंबरों और अन्य कथनों और काव्य उद्धरणों का समावेश है।29 इनमें से कई किस्से महिलाओं पर केंद्रित हैं।
उच्च दर्जे की अरब महिलाओं की महानता, जो उनकी आज्ञाकारिता में प्रकट होती है।
और वीर पुरुष सत्तावादी व्यक्तियों के प्रति लगाव। अन्य लोग महिलाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
प्रारंभिक इस्लामी संस्कृति में सार्वजनिक और निजी 63

इच्छा की वस्तुओं के रूप में। पवित्रता और नियंत्रण एवं कारावास के विषय। महिलाओं पर बहुत जोर दिया गया है। फिर भी महिलाओं पर ये खंड, अपनी
कई उपविभागों में घरेलू परिवेश या घरेलू श्रम का शायद ही कोई उल्लेख मिलता है। धार्मिक और कानूनी ग्रंथ भी इसी तरह के विषयों पर बल देते हैं। विवाह संबंध को अक्सर मुख्य रूप से एक यौन अनुबंध के रूप में देखा जाता है। उदाहरण के लिए, अल-शाफ़ीई कहते हैं कि पति "पत्नी का भरण-पोषण करता है" अपनी पत्नी के खर्चों के लिए, चाहे वह अमीर हो या गरीब, क्योंकि वह उसे अपने तक सीमित रखता है, उससे और अन्य चीजों से आनंद लेता है, और उसे दूसरों से दूर रखता है।30 पत्नियों को अपने पतियों की इच्छा के अनुसार यौन रूप से उपलब्ध रहना अनिवार्य है।31 अल-ग़ज़ाली प्रजनन के बाद विवाह का प्राथमिक उद्देश्य "वासना का विच्छेदन" बताते हैं।32 यह सच है कि वह
इसमें पत्नी से विवाह करने के लाभ के रूप में "घर के प्रबंधन" को भी शामिल किया गया है।
इस लिहाज से यह मुसलमान को धार्मिक कर्तव्यों के लिए खुद को मुक्त करने की अनुमति देता है, लेकिन इससे घरेलू आदर्श का निर्माण नहीं होता। इस संदर्भ में यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि
कानूनी ग्रंथों में पतियों को आमतौर पर न केवल अपनी पत्नियों के दैनिक खर्चों के लिए आर्थिक रूप से जिम्मेदार माना जाता है, जिसमें भोजन तैयार करना, कपड़े पहनना आदि शामिल हैं।
और घरेलू काम-काज के लिए, बल्कि बच्चों को दूध पिलाने के लिए भी।33 इस प्रकार, इन ग्रंथों में लैंगिक संबंध एक ऐसे स्थितिगत संबंध के रूप में

इसमें एक प्रकार की चित्रात्मक ठोसता थी। ऐसा प्रतीत होता है कि इन शब्दों में कोई अर्थ नहीं है।
विशिष्टता का भाव, वास्तविक भौतिक स्थलों को याद दिलाने का भाव। लेखक अक्सर एक ही इमारत (इमारतों) का उल्लेख करते समय एकवचन और बहुवचन का परस्पर उपयोग करते हैं। साथ ही, क़स्र, दर, बैत जैसे विभिन्न शब्दों का प्रयोग एक ही स्थान के लिए किया जा सकता है, जरूरी नहीं कि वह एक ही इमारत हो, बिना किसी विशेष अर्थ के।
इन शब्दों को विभिन्न प्रकार की इमारतों पर लागू माना जाता था। यहां तक कि शब्दकोश भी ऐसे शब्दों के बारे में बेहद अस्पष्ट और अनिश्चित हैं। इसके अलावा, अक्सर यह संदेह होता है कि क्या लेखक वास्तव में किसी विशिष्ट स्थान का उल्लेख कर रहा है या नहीं।
स्थान। उदाहरण के लिए, जब इब्न दरराज अपनी पत्नी को "रब्बत खिदर" कहते हैं, तो क्या इस पदनाम के अनुरूप कोई वास्तविक स्थान मौजूद है? यह ढीला और अमूर्त है।
ऐतिहासिक लेखन में भी स्थानिक शब्दों का प्रयोग स्पष्ट है।34 यह भाव, इसलिए, ये शब्द विशिष्ट भौतिक, स्थानिक और कार्यात्मक विशेषताओं वाले स्थलों को निर्दिष्ट नहीं करते हैं, बल्कि एक अमूर्त स्थानिक प्रकार को दर्शाते हैं या
एक संदर्भ-विशिष्ट स्थिति। इस प्रकार की संदर्भ संरचना के स्थानिक विचार कठोर स्थानिक भेदों की अनुपस्थिति को दर्शाते हैं, जिससे यह संभावना कम हो जाती है कि
स्पष्ट रूप से सीमांकित सामाजिक क्षेत्रों का स्थानिक रूपक उभरने लगा। इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि महिलाओं (या पुरुषों) ने विशिष्ट स्थानों से जुड़े जीवन के किसी परिभाषित क्षेत्र या क्षेत्रों में निवास नहीं किया। निश्चित रूप से, उनका
उनका जीवन कुछ विशेष प्रकार के स्थानों में व्यतीत हुआ होगा, जहाँ वे विशिष्ट गतिविधियों में संलग्न रहे होंगे। लेकिन ऐसा प्रतीत नहीं होता कि इनमें से किसी भी क्षेत्र में कोई
अभिजात वर्ग के विमर्शों और प्रस्तुतियों में मानक स्थिति।
इसलिए विशिष्ट सामाजिक स्थानों की प्रकृति, उनका अर्थ और मूल्य, स्वतंत्र रूप से गठित और पहले से विद्यमान होने के बजाय, उनमें उपस्थित लोगों की

स्थिति और संबंधों द्वारा निर्धारित के रूप में अधिक समझा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक सम्राट का दरबार—उसकी सभा—
सबसे बढ़कर, सम्राट और उसके समक्ष उपस्थित लोगों के बीच का संबंध। एक स्थान के रूप में, यह सम्राट से उत्पन्न होता है, न कि उसके आधिपत्य की प्रतीक्षा करता है। इसे सार्वजनिक कहा जा सकता है क्योंकि शासक सामुदायिक मूल्यों का प्रतीक है। लेकिन यह निजी भी है क्योंकि इसमें वह शामिल है जिसे छिपाया जाना चाहिए। शासक परम संरक्षक है और
सामाजिक व्यवस्था का निर्माता, जिसमें यह सुनिश्चित करना भी शामिल है कि "सार्वजनिक" नैतिकता
इसका उल्लंघन नहीं होता। फिर भी, साथ ही साथ, शासक के श्रोताओं के सामने उसकी अपनी आंतरिक भावनाओं का खुलासा भी हो सकता है। सभी शासकों से "वरदान" की अपेक्षा की जाती थी।
साथी," और कई लोगों के यौन कारनामों के बारे में कहानियां प्रचलित थीं। जब हम निम्न स्तरों पर पुरुषों की सामाजिक अंतःक्रिया पर विचार करते हैं,
यह स्पष्ट है कि न्यायालय कई प्रकार की सामाजिक सभाओं के लिए आदर्श है। उन विषयों से जिनमें सामाजिक सद्गुण प्रमुख विषय है, उन विषयों तक जिनमें प्रारंभिक इस्लामी संस्कृति में सार्वजनिक और निजी 65

व्यक्तिगत आंतरिक भावनाओं की मुक्ति को प्राथमिकता दी जाती है। फिर से, सद्गुण और आंतरिक भावनाएं, सामूहिक और गुप्त, अविभाज्य हैं। यह ध्यान देने योग्य है।
इन सभाओं में सामाजिकता का स्वरूप—चाहे वह सौहार्दपूर्ण हो, विद्वतापूर्ण हो, राजनीतिक हो या कुछ और—स्वतंत्र महिलाओं के बहिष्कार द्वारा परिभाषित होता है।
प्रारंभिक इस्लामी कला चित्रणों में शासक और स्वतंत्र महिला दो प्रमुख आकृतियाँ हैं। इनमें एक प्रकार की समरूपता पाई जाती है।
सामाजिक सामूहिकता से उनका संबंध। लैंगिक स्थान के मॉडल में मैं
हमने यहाँ जो विश्लेषण किया है, उसके अनुसार स्वतंत्र महिलाओं का छिपाव उस प्राथमिक संबंध की प्रकृति को परिभाषित करता है जो उनकी गतिविधियों को नियंत्रित करता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि

इसका अर्थ यह नहीं है कि महिलाओं को शारीरिक रूप से छिपाना आवश्यक था; इसका तात्पर्य महिलाओं के एकांतवास या अलगाव की किसी विशिष्ट व्यवस्था से है। बल्कि इसका अर्थ यह है कि
महिलाओं का अपने ऊपर नियंत्रण रखने वाले पुरुषों के साथ संबंध छिपा हुआ था।
पुरुष की आंतरिकता को इसके प्राथमिक प्रतीकात्मक कार्य के रूप में इस्तेमाल किया गया। अपनी महिलाओं पर नियंत्रण का अर्थ स्वयं पर नियंत्रण था, और इस प्रकार इसने एक ऐसे समाज को सक्षम बनाया जो...
तर्कसंगत और सदाचारी व्यक्तियों का अस्तित्व होना आवश्यक था। इसलिए, नियंत्रण का संबंध छिपाव और राजनीतिक सृजन दोनों का था।
इस अर्थ में, नियंत्रण का तात्पर्य मुख्य रूप से महिलाओं के शरीर पर नियंत्रण था।
एक औपचारिक संबंध जिसे विभिन्न तरीकों से स्थापित किया जा सकता है। इसके अलावा, यह बुर्जुआ वर्ग की तरह नारीत्व के आदर्श को निर्धारित नहीं करता है।
निजी क्षेत्र की धारणा। यह सफल नारीत्व के लिए आवश्यक किसी विशिष्ट जीवनशैली, भूमिका, गुण और उद्देश्य को निर्धारित नहीं करती है। संबंध शारीरिक नियंत्रण का, चाहे वह किसी विशिष्ट सामाजिक परिस्थिति में कोई भी रूप धारण कर ले,
यह संबंध निस्संदेह निर्णायक और संशोधक है, लेकिन इस संबंध से परे, नारी की गतिविधियों और व्यवहार के आदर्शों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना आवश्यक नहीं है।
यह संभव है कि इस प्रारंभिक काल की कुलीन महिलाएं, उदाहरण के लिए, पुरुषों के समान ही साहित्यिक और सौहार्दपूर्ण समारोहों सहित सामाजिक सभाओं में भाग लेती थीं।35 वे निश्चित रूप से "सार्वजनिक" गतिविधियों में संलग्न थीं।
जैसे कि निवेश, दान आदि, जैसा कि सर्वविदित है, और कभी-कभी वे सामूहिक मूल्यों के प्रतिनिधित्व में भी भाग लेते थे।
भाषण और स्तुतिगान कविता का पाठ।36 इसलिए, कठोरता से सीमांकित और विषयवस्तु से भरी स्थानिक धारणाओं को त्यागकर ध्यान केंद्रित करना।

व्यक्तियों की स्थिति और उनके बीच सामाजिक-प्रतीकात्मक संबंधों द्वारा निर्मित स्थानों पर अध्ययन करने से विभिन्न समाजों में सामुदायिक व्यवस्था और सामाजिक स्थान की प्रकृति की बेहतर समझ विकसित करना संभव हो सकता है।
उनमें महिलाओं द्वारा निभाई जा सकने वाली भूमिकाएँ।
66 Yaseen Noorani

नोट्स

जब तक अन्यथा उल्लेख न किया गया हो, सभी अनुवाद मेरे द्वारा किए गए हैं।
1 जुर्गेन हैबरमास, सार्वजनिक क्षेत्र का संरचनात्मक परिवर्तन, 47.
2 वही, 211, 50.
3 वही, 50.
4 प्रारंभिक इस्लामी ग्रंथों में पश्चिमी परिवार के समान कोई शब्द नहीं मिलता; अरबी में ऐसा शब्द उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक प्रकट नहीं हुआ था। उसरा (कुल) शब्द का प्रयोग बहुत कम होता था और यह किसी के उच्च रिश्तेदारी की प्रशंसा करने तक ही सीमित था। बैत (घर), आमतौर पर बहुवचन में बुयुतत, का भी ऐसा ही अर्थ हो सकता है। ऐला शब्द, जिसका अब अर्थ परिवार से है, पूर्व-आधुनिक ग्रंथों में आश्रितों को दर्शाता था और इसमें दास और नौकर भी शामिल थे। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इस शब्द के आधुनिक अर्थ में उद्भव के लिए असद की पुस्तक 'फॉर्मेशन्स ऑफ द सेक्युलर', पृष्ठ 231-32 देखें।
5 उदाहरण के लिए, अल-राघिब अल-इस्फ़हानी, मुहादरात अल-उदबा, 391, इनमें से कुछ के लिए देखें।
ज़ियाद बिन अबीही (खलीफ़ा अल-मामून) द्वारा कथित तौर पर दिया गया यह कथन दुर्लभ है, लेकिन उल्लेखनीय है, कि सबसे सुखी व्यक्ति वह मुस्लिम पुरुष है जिसकी पत्नी मुस्लिम है; उनके साधन उनकी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त हैं; वह उससे संतुष्ट है और वह उससे; वह हमें नहीं जानता और न ही हम उसे जानते हैं (इस संस्करण के लिए, इब्न हज़्म, तौक़ अल-हममा, 185 देखें)।
6 हैबरमास, सार्वजनिक क्षेत्र का संरचनात्मक परिवर्तन, 4.

7 हालाँकि, जेफ वेनट्रॉब जनता की दूसरी रोमन अवधारणा की ओर इशारा करते हैं।
साम्राज्यवादी संप्रभुता की धारणा। यह प्रारंभिक इस्लामी संदर्भ में अधिक लागू हो सकता है। वीनट्रॉब देखें, "सार्वजनिक/निजी भेद का सिद्धांत और राजनीति," 10-13।
8 इसका मुख्य कारण, निस्संदेह, प्रारंभिक इस्लामी काल की अत्यधिक शहरी पृष्ठभूमि है।
मानदंड और सामाजिक स्वरूप। परिवार की यूनानी अवधारणा को अपनाया गया और तदबीर अल-मंज़िल (घरेलू प्रबंधन) के विचार में इसकी थोड़ी-बहुत उपस्थिति रही, जिसका उल्लेख मुख्य रूप से दार्शनिक रचनाओं में मिलता है। यह ध्यान देने योग्य है कि इस संदर्भ में, यूनानी शब्द 'निजी' कभी-कभी 'खास' के रूप में दिखाई देता है—जो इस शब्द का आधुनिक अनुवाद भी है।
9. तदबीर अल-मंज़िल की अवधारणा के अंतर्गत गृहस्थी के संदर्भ में एक उल्लेखनीय संदर्भ अल-ग़ज़ाली का है, जो विवाह के लाभ के रूप में गृहस्थी प्रबंधन (बर्तन धोना आदि) से मुक्ति को शामिल करते हैं। देखें अल-ग़ज़ाली, इह्या उलूम अल-दीन, 2:39-40।
10 पियर्स, द इंपीरियल हरेम, 6.
11 नादिया मारिया एल शेख इस खंड में अपने अध्याय में अब्बासिद शाही महल परिसर में महिलाओं के लिए विशिष्ट क्वार्टरों के संदर्भ या विवरण की कमी पर चर्चा करती हैं। ह्यूग कैनेडी, द कोर्ट ऑफ द कैलिफ्स, 160 भी देखें। शॉन मार्मन स्वीकार करती हैं कि ममलुक काल के लिए, हरिम शब्द का, अपने स्थानिक अर्थ में, कोई लिंग-विशिष्टीकरण नहीं था, लेकिन ऐसा लगता है कि वह तर्क देती हैं कि यह शब्द वास्तव में एक यौन-उन्मुख "घरेलू स्थान" को दर्शाता था। मार्मन, हिजड़े और इस्लामी समाज में पवित्र सीमाएँ, 6-10 देखें। फिर भी, जबकि यह सच है कि लिसान अल-अरब अल-मुहित, इब्न पब्लिक एंड प्राइवेट इन अर्ली इस्लामिक कल्चर 67

मंज़ूर की तेरहवीं शताब्दी ईस्वी की डिक्शनरी में, इसके कई अर्थों में से एक अर्थ दिया गया है।

इस शब्द के अनुसार, घर का वह आंतरिक भाग जिसे बंद किया जा सकता है (फाइना' या आंगन के विपरीत), इस स्थान में पुरुष मेहमानों के स्वागत के लिए क्षेत्र शामिल होंगे। बाद में
सदियों से, इस शब्द ने स्पष्ट रूप से महिलाओं के आवास का अतिरिक्त अर्थ ग्रहण कर लिया है, क्योंकि
उदाहरण के लिए, उन्नीसवीं सदी के मिस्र के इतिहासकार अल-जबर्ती के लेखन में यह बात स्पष्ट है, जिन्होंने अपनी पूरी रचना 'अजैब' में हरीम का उल्लेख इसी अर्थ में किया है।
अल-अथर फ़ि अल-तराजिम वा अल-अख़बार।
12 इस शब्द का प्रयोग बगदाद में दो स्थानों के नामों में भी किया गया था।
अल-हरिम था
बगदाद के भीतर का एक क्षेत्र, जो शहर के लगभग एक तिहाई हिस्से को समाहित करता है, जिसमें खलीफा शासन करता था।
महल स्थित थे। ताहिरिद काल के स्थल का नाम अल-हरिम अल-ताहिरी था।
महल कहलाते थे क्योंकि "जो कोई भी वहाँ सुरक्षा की तलाश करता था, उसे सुरक्षा प्रदान की जाती थी।" देखें
याकूत अल-हमावी, मुअजम अल-बुलदान, 2:250-52।
13 ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी तक के ग्रंथों की जांच करने और डेटाबेस का संचालन करने के बाद
खोजबीन करने पर मुझे ऐसे बहुत कम उदाहरण मिले हैं जिनमें 'हराम' शब्द स्पष्ट रूप से घर के उस हिस्से को संदर्भित करता हो जहाँ महिलाएँ रहती हों, और ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिला जिसमें 'हरिम' शब्द का प्रयोग किया गया हो। ऐसा करता है।
14 कुछ उदाहरणों के लिए, अल-मसूदी, मुरुज अल-दहब वा मादीन अल-जौहर, 3:385 देखें; अल-जाहिज़, अल-बयान वा अल-तबयिन, 1:338; अल-इस्बाहानी, किताब अल-अघानी, 13:4800; इब्न 'अब्द रब्बीह, अल-इकद अल-फ़रीद, 5:321। हुरमा, हुरम और हरम शब्द, एक महिला या एक पुरुष से संबंधित महिला के अर्थ में, ये सब प्रतीत नहीं होते हैं
बार-बार।
15 पीयर्स, द इंपीरियल हरेम, 7; थॉम्पसन, "मध्य पूर्वी महिलाओं के इतिहास में सार्वजनिक और निजी," 53.

16 इस अंतर को वीनट्रॉब ने “थ्योरी एंड पॉलिटिक्स,” 5 ff में नोट किया और विकसित किया है।
17 हैबरमास, सार्वजनिक क्षेत्र का संरचनात्मक परिवर्तन, 7–8.
18 प्रारंभिक इस्लामी प्रशस्ति में राजनीतिक हस्तियों के प्रतिनिधित्व के बारे में अधिक जानकारी के लिए, देखें
स्टीफ़न स्पर्ल, अरबी कविता में शैलीवाद; सुज़ैन स्टेटकेविच, काव्यशास्त्र
इस्लामी वैधता।
19 अल-वाश्शा, अल-मुवाश्शा, 82-83। 20 उक्त., 65.
21 वही, 91.
22 इस प्रवचन की पैरोडी पर चर्चा के लिए, इसके आंतरिक विरोधाभास के पर्दाफाश और हेरफेर के माध्यम से, नूरानी की पुस्तक "हेटेरोटोपिया और वाइन कविता" देखें।
प्रारंभिक इस्लामी संस्कृति।"
23 यह कविता "ए मिन अली नु'मिन अंता घदीन फ़ा मुबकिरु" से शुरू होती है और शायद है
उमर की सबसे प्रसिद्ध रचना। उमर बिन अबी रबीआ की शरह दीवान उमर बिन अबी रबीआ, पृष्ठ 92-103 देखें। अबू अल-फराज में इसके बारे में और इसके स्वागत के बारे में कई किस्से मिलते हैं।
अल-इस्फ़हानी, किताब अल-अघानी, 1:71–74. 24 मैं उमर की कविता की संरचना की तुलना पूर्व-इस्लामी त्रिपक्षीय कविताओं से कर रहा हूँ। बाद वाली कविताओं के बारे में मेरी समझ सुज़ैन स्टेटकेविच, द पर आधारित है।
मूक अमर बोलते हैं।
25 सु'लुक कविता पर, स्टेतकेविच, द म्यूट इम्मोर्टल्स स्पीक, अध्याय देखें। 4. 26 अल-इस्फ़हानी, किताब अल-अघानी, 1:71-73।
68 Yaseen Noorani

27 इब्न दरराज अल-कस्तली, दीवान इब्न दरराज अल-कस्तली, 297-304। इन पंक्तियों को इब्न बासम अल-शांतारिनी, अल-दखिरा फाई महासीन अहल अल-जज़ीरा, 1:83 में भी उद्धृत और सराहा गया है।

28 [illegible] [illegible] [illegible]

156.

30 अल-शफ़ीई, किताब अल-उम्म, 5:300।
31 उदाहरण के लिए, इब्न हज़्म, अल-मुहल्ला, 11:237; अल-ग़ज़ाली, इह्या' 'उलूम अल-दीन, 2:73 देखें। 32 अल-ग़ज़ाली, इह्या' 'उलूम अल-दीन, 2:35–39। 33 उदाहरण के लिए, अल-शाफ़ई, किताब अल-उम्म, 5:298 देखें। 34 इस्लामी कला और वास्तुकला के इतिहासकार रॉबर्ट हिलनब्रांड, इस्लामी वास्तुकला, 26–30 में मध्यकालीन इस्लामी साहित्यिक स्रोतों में इमारतों के विवरण की अस्पष्टता पर चर्चा करते हैं।
35 उदाहरण के लिए, महान अंडालूसी लेखक इब्न हज़्म हमें बताते हैं कि जिन महिलाओं के पास
जिन महिलाओं के बीच उनका पालन-पोषण हुआ, उन्होंने उन्हें कुरान पढ़ाया, कविता का एक बड़ा संग्रह उन्हें दिया और सुलेख का प्रशिक्षण दिया। इससे यह तात्पर्य है कि इस वर्ग की महिलाओं ने अपने बीच एक ऐसा सामाजिक वातावरण बनाया जो उच्च स्तर की साक्षरता संस्कृति के विकास के लिए अनुकूल था। इब्न हज़्म, तौक़ अल-हममा, पृष्ठ 166 देखें।
36 मेरे मन में प्रारंभिक गृहयुद्धों के दौरान महिलाओं द्वारा दिए गए भाषण हैं (656–
691 ई.पू.) और, बहुत बाद में, रिपोर्ट आई कि दो महिला कवियों, 'आबिदा अल-जाहनिया और 'अतिका अल-मखज़ुमिया' ने औपचारिक रूप से 'अदुद अल-दावला (आर. 949-983 ई.पू.) की प्रशंसा में कविताओं की घोषणा की। अल-तनुखी, अख़बार अल-मुधकारा का निश्वर अल-मुहादरा, 5:267-70 देखें।

प्रत्येक सामाजिक समुदाय का पुनरुत्पादन कार्यप्रणाली द्वारा होता है संस्थाओं का अस्तित्व काल्पनिक है, यानी यह इस पर आधारित है
किसी व्यक्ति के अस्तित्व का ताने-बाने में प्रक्षेपण
सामूहिक कथा।
- एटिने बालीबार, "द नेशन फॉर्म"

3 • हरेम जेंडर रेड स्पेस और
लिंग का स्थानिक पुनरुत्पादन

इरविन सेमिल शिक

8 हरम शब्द किसी घर की महिला सदस्यों और उनके रहने के लिए निर्धारित स्थान, दोनों को दर्शाता है। लोगों को उनके रहने या काम करने के स्थान के आधार पर पहचानना कोई असामान्य बात नहीं है: हाइलैंडर्स, यूरोपीय, झुग्गी- झोपड़ी में रहने वाले, दफ्तर में काम करने वाले, रसोई में काम करने वाली नौकरानियां, अस्तबल में काम करने वाले लड़के आदि की बात होती है। लेकिन हरम के मामले में ऐसा नहीं है।
कि स्थानिक शब्द का प्रयोग केवल कुछ व्यक्तियों के लिए विशेषण के रूप में किया जाता है; इसके बजाय, एक ही शब्द दोनों को दर्शाता है।
स्थान और लोगों की एक श्रेणी—और यह काफी असामान्य है।
यह अनूठा तथ्य इस अध्याय में वर्णित हरम की अवधारणा को समझने के तरीके के बारे में एक महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है।
स्थान के सामाजिक निर्माण और लिंग से इसके संबंध पर हाल के सैद्धांतिक कार्यों के संदर्भ में, साथ ही हाल के
स्थानिकता पर समाजशास्त्रीय और नृवंशविज्ञान अनुसंधान
विभिन्न समाजों में महिलाओं के वास्तविक अनुभव।
जैसा कि सर्वविदित है, अरबी मूल h-r-m, जिससे हरम शब्द व्युत्पन्न हुआ है, एक वर्जित विषय की धारणा को व्यक्त करता है: यह सामान्यतः निषेध, गैरकानूनीपन, आदर, पवित्रता, अलंघनीयता को संदर्भित करता है।1 इस मूल से व्युत्पन्न एक शब्द हुरमत है, जो किसी पवित्र और पूजनीय वस्तु को संदर्भित करता है। 70 इरविन सेमिल शिक

जिनका सम्मान करना और उनकी रक्षा करना मनुष्य का कर्तव्य है, और विशेष रूप से पुरुष की पत्नियों की।
और परिवार।2 इसी मूल से व्युत्पन्न एक अन्य शब्द है हरीम, जो घर या संपत्ति के उन हिस्सों को संदर्भित करता है जिनका उपयोग वैध स्वामी के अलावा किसी और के लिए वर्जित है, जैसे कि कुआँ। कुछ शास्त्रीय अरबी शब्दकोश इसे विशेष रूप से "घर का वह हिस्सा जिसमें कोई प्रवेश करता है और जिस पर दरवाजा बंद होता है"3 के रूप में परिभाषित करते हैं, और घर के निजी कमरों के इसी अर्थ में महिलाओं के कमरों को के रूप में जाना जाने लगा। हरम।
इस मूल शब्द ने अरबी भाषी लोगों को उस आंतरिक-बाह्य विभाजन के लिए एक आधार प्रदान किया है जो लगभग सभी मानव समाजों में किसी न किसी रूप में मौजूद है। हरम को केंद्रीय आंगन (वसात अल-दार) के विपरीत माना गया था।
मग़रिब (मशरिक में हौश) जिसमें आगंतुकों को शामिल करने वाली सामाजिक गतिविधियाँ होती हैं
यह घटना घटी। तुर्की भाषा में, इन दो स्थानों को हरम (या हरेमलिक) और सलामलिक के नाम से जाना जाता था; फ़ारसी में, अंदरुन और बिरुन। लेकिन अंदर-बाहर का विभाजन और उस विभाजन पर लिंग का प्रभाव दो बहुत अलग बातें हैं। प्रचलित धारणा के विपरीत, मुस्लिम महिलाओं को विभाजित स्थान के भीतरी भाग में रखना कुरान द्वारा स्पष्ट रूप से अनिवार्य नहीं है; वास्तव में, यद्यपि h-r-m मूल के व्युत्पन्न शब्द वहाँ कम से कम 83 बार आते हैं4—जो आहार संबंधी नियमों, तीर्थयात्रा के दौरान निषेधों, पवित्र महीनों और मक्का के पवित्र क्षेत्रों, जहाँ हत्या करना निषिद्ध है, का उल्लेख करते हैं—एक बार भी कोई व्युत्पन्न शब्द महिलाओं या
महिलाओं के क्वार्टर। बल्कि, यह सिद्धांत तथाकथित घूंघट की आयत की एक विशेष व्याख्या पर आधारित है, जो आंशिक रूप से कहती है: "और जब तुम उनसे [स्त्री से] कुछ मांगो, तो हिजाब [घूंघट/पर्दा] के पीछे से मांगो;
जो तुम्हारे और उनके दिलों की पवित्रता को बढ़ाता है।”5 हालाँकि टीकाकार आमतौर पर इस बात से सहमत हैं कि इस श्लोक में “उनसे” विशेष रूप से संदर्भित करता है

पैगंबर की पत्नियों के बारे में अक्सर इसे सभी मुस्लिम महिलाओं पर लागू कर दिया जाता है।
और उन्होंने इस श्लोक को यह आदेश देने के लिए इस्तेमाल किया है कि पुरुषों और महिलाओं को भौगोलिक रूप से अलग रखा जाना चाहिए।6 संयोगवश, घूंघट का श्लोक ही इस शब्द का मूल है।
पर्दा—जिसका फारसी में शाब्दिक अर्थ पर्दा या घूंघट होता है—भारत में महिलाओं के एकांतवास को दर्शाता है।
इस्लाम में लैंगिक अलगाव किस हद तक मौलिक है, यह स्पष्ट नहीं है।
यह कुछ बहस का विषय है। उदाहरण के लिए, फातिमा मर्निसी ने तर्क दिया है कि मदीना में पैगंबर के घर ने "एक ऐसा स्थान बनाया जिसमें निजी जीवन और सार्वजनिक जीवन के बीच की दूरी समाप्त हो गई, ... जिसमें रहने का कमरा आसानी से मस्जिद में खुलता था, और इस प्रकार इसने एक निर्णायक भूमिका निभाई। महिलाओं का जीवन और राजनीति से उनका संबंध।"7 हालाँकि, कुछ
पैगंबरों की परंपराओं (हदीसों) से पता चलता है कि यह प्रथा लंबे समय तक नहीं चली।
लिंग-आधारित स्थान के रूप में हरम 71

उदाहरण के लिए, एक वर्णन में बताया गया है कि पैगंबर ने किस प्रकार एक पर्दा फैलाया।
सफ़िया और लोगों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि वह उनकी पत्नी थी; एक अन्य व्यक्ति का संबंध है
किस प्रकार आयशा ने पर्दे से संबंधित आयत के अवतरण के बाद अपने पालक चाचा के भाई को अपने कमरे में प्रवेश देने से इनकार कर दिया, जब तक कि पैगंबर ने रिश्तेदारी के आधार पर उसे छुट्टी दे दी गई।8 शुरुआत में स्थिति चाहे जो भी रही हो, यह ज्ञात है कि लैंगिक अलगाव को बढ़ाया गया था।
पैगंबर की मृत्यु के बाद, खलीफा के नेतृत्व में दोनों
उमर बिन अल-खत्ताब (शासनकाल 634-44 ईस्वी), जो महिलाओं के बारे में अपने कठोर विचारों के लिए जाने जाते थे, और उन लोगों के बढ़ते प्रभाव के परिणामस्वरूप जिनके साथ उनका संबंध था,
अरबों का संपर्क सैन्य विजय के माध्यम से हुआ।9

मैंने यहाँ केवल यौन पृथक्करण शब्द का प्रयोग किया है। मैंने इसे सुविधा के लिए संक्षिप्त रूप में प्रयोग किया है, लेकिन वास्तव में यह शब्द सटीक नहीं है। जैसा कि स्पष्ट है
आयशा और उनके पालक चाचा के भाई से संबंधित हदीस में, यह सिद्धांत केवल लिंग पर आधारित नहीं है। वयस्क पुरुषों और महिलाओं को एक साथ रहने की अनुमति है।
यदि रिश्तेदारी के आधार पर (रक्त संबंध, सह-स्तनपान,10 विवाह, या
कुरान में स्पष्ट रूप से यौन संबंध का उल्लेख है।11 हालांकि, पुरुषों के लिए अपने रिश्तेदारों के अलावा अन्य महिलाओं द्वारा कब्जा किए गए स्थान में प्रवेश करना वर्जित (हराम) है। इस प्रकार, यद्यपि "पुरुष बनाम महिला निवास के कठोर रूप से सीमांकित और परस्पर अभेद्य क्षेत्रों" के सार्वभौमिक भव्य प्रतिमान को हाल के कई अध्ययनों द्वारा ठोस रूप से चुनौती दी गई है,12
फिर भी यह बात सच है: चूंकि अधिकांश पुरुष और महिलाएं एक जैसे नहीं होते एक दूसरे के रिश्तेदार, बाद के टीकाकारों द्वारा व्याख्या किए जाने के तरीके में घूंघट के श्लोक का प्रभावी परिणाम अक्सर दो अपेक्षाकृत अलग-अलग
- यदि जरूरी नहीं कि पारस्परिक रूप से गुप्त - उप-स्थानों का निर्माण था, एक पर मुख्य रूप से पुरुषों का कब्जा था, दूसरे पर मुख्य रूप से महिलाओं का। दरअसल, पश्चिमी मानसिकता में हरम शब्द आमतौर पर बहुविवाह से जुड़ा होता है, और यह छवि अब्बासिद खलीफा हारून अल-रशीद (शासनकाल 786-809 ईस्वी) और मुगल सम्राट अकबर (शासनकाल 1556-1605 ईस्वी) जैसे शासकों के घरों में रहने वाली अनगिनत पत्नियों और रखेलों के विवरणों से और भी मजबूत होती है, लेकिन आम लोगों से संबंधित हमारे पास मौजूद सीमित मात्रात्मक आंकड़े इस दृष्टिकोण का समर्थन नहीं करते हैं।
उदाहरण के लिए, एलन डुबेन और सेम बेहार द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि ओटोमन साम्राज्य के अंतिम दौर के इस्तांबुल में, सभी विवाहित पुरुषों में से केवल 2.29 प्रतिशत ही थे।
बहुविवाही; इसके अलावा, उनमें पत्नियों की औसत संख्या केवल 2.08 थी।13 अन्य सर्वेक्षण भी संकेत देते हैं कि उत्तरी अफ्रीका और दक्षिण एशिया में बहुविवाही परिवारों का अनुपात 5 प्रतिशत से अधिक नहीं था।

इस प्रकार, हरम में एकविवाह होने की संभावना कहीं अधिक थी (यद्यपि पूर्व-72 इरविन सेमिल शिक)

परिवार के घरेलू आवासों की देखभाल करने वाले स्थान की तुलना में महिलाओं के आवास के लिए समर्पित स्थान की तुलना में यह अधिक प्रचलित है। दूसरी ओर, उप-सहारा अफ्रीका में, हालांकि एक
परिवारों का एक बहुत बड़ा अनुपात (चाहे मुस्लिम हों या नहीं) बहुविवाह प्रथा का पालन करता है—कभी-कभी 40 प्रतिशत से भी अधिक—हरम प्रथा आम नहीं है। वहाँ, सांप्रदायिक
भूमि का स्वामित्व और कृषि कार्यों में महिलाओं की प्रधानता बहुविवाह को व्यापक बनाती है, लेकिन एकांतवास को अव्यावहारिक बना देती है; इसके विपरीत, भूमि का व्यक्तिगत स्वामित्व और पुरुष प्रधान हल चलाने की प्रधानता बहुविवाह प्रथा को और अधिक प्रचलित बनाती है।
यूरेशिया और उत्तरी अफ्रीका में खेती एकांत को संभव बनाती है, लेकिन बहुविवाह अवांछनीय है।14 यह इस तथ्य को रेखांकित करता है कि हरम शब्द मुख्य रूप से स्थानिक संगठन के एक सिद्धांत, महिला एकांत की एक प्रणाली को दर्शाता है, न कि केवल बहुविवाह को दूसरे नाम से।
हालाँकि सीमाएँ पारगम्य हो सकती हैं, और वे गतिविधियाँ जिनमें
अपने-अपने उपक्षेत्रों में संलग्न पुरुष और महिलाएं जरूरी नहीं कि परस्पर अनन्य हों, ये उपक्षेत्र किसी भी अर्थ में सममित नहीं थे।
या इसी तरह से संरचित। एक उपयुक्त उपमा महासागर के बीच में स्थित द्वीपों का समूह हो सकती है, जहाँ द्वीप सामूहिक रूप से समर्पित उपस्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं।
महिलाओं के लिए, और समुद्र पुरुषों के लिए समर्पित उपक्षेत्र है। महिलाओं का उपक्षेत्र
इनमें हरम, सार्वजनिक स्नानघर, संतों की समाधियाँ और तीर्थस्थल, मनोरंजन क्षेत्र, कब्रिस्तान आदि शामिल थे; इनके बीच आवागमन को सावधानीपूर्वक नियंत्रित किया जाता था।
विशेष रूप से घूंघट की प्रथा द्वारा, जिसने महिलाओं को शारीरिक रूप से "बाहर" रहते हुए भी विधिक रूप से "अंदर" रहने की अनुमति दी। हालाँकि, जिस स्थान में

पुरुषों के बीच संचार भी घरों, मस्जिदों और दरवेशों द्वारा नियंत्रित किया जाता था।
लॉज, कार्यस्थल, बाजार, स्नानघर आदि—स्थानिक गतिशीलता के दृष्टिकोण से पुरुष स्पष्ट रूप से महिलाओं की तुलना में कहीं कम प्रतिबंधित थे। और, बेशक, एक जगह से दूसरी जगह जाते समय उन पर न तो निगरानी रखी जाती थी और न ही उन्हें खुद को ढकने की आवश्यकता होती थी। संक्षेप में, पुरुषों से संबंधित उप-क्षेत्र
और महिलाएं न केवल अलग थीं, बल्कि असमान भी थीं।15
स्वाभाविक रूप से एक प्रश्न उठता है: इस विभाजित और मौलिक रूप से असममित स्थानिक व्यवस्था ने उन पुरुषों और महिलाओं के जीवन को कैसे प्रभावित किया?
क्या वे इसमें निवास करते थे? अधिक विशेष रूप से, उनके संबंधित उप-स्थानों की असमानता ने पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों को कैसे प्रभावित किया? इसका उनके सामाजिक विभेदीकरण—अर्थात्, लिंग के निर्माण और पुनरुत्पादन — पर क्या प्रभाव पड़ा? नारीवादी भूगोलवेत्ताओं ने लंबे समय से स्थान और लिंग की पारस्परिक रूप से गठित प्रकृति पर जोर दिया है, यह तर्क देते हुए कि पुरुषों और महिलाओं द्वारा भूगोल का अनुभव करने के तरीकों में अंतर न केवल लिंग भेदों का परिणाम है, बल्कि उन्हें उत्पन्न भी करता है।16 स्पष्टतः, भूगोल की अवधारणा की व्याख्या करने के लिए हर प्रकार का औचित्य मौजूद है।
व्यापकतम अर्थ में, इसमें वे स्थानिक संरचनाएं भी शामिल हैं जो नहीं हैं लिंग-आधारित स्थान के रूप में हरम 73

न केवल प्राकृतिक बल्कि कृत्रिम भी, न केवल भौतिक बल्कि काल्पनिक भी।
इस संदर्भ में देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि हरम प्रणाली ने कई मुस्लिम समाजों में लैंगिक असमानता के लिए एक स्थानिक आधार प्रदान किया है; और चूंकि स्थानिक भिन्नता अक्सर सत्ता भिन्नता के साथ सह-अस्तित्व में होती है, इसलिए इसने
साथ ही, लैंगिक आधार पर सत्ता की विषमताओं के उत्पादन और उसे बनाए रखने में भी उनकी संलिप्तता पाई गई है।
अब मैं स्थानिक उत्पादन में हरम की भूमिका पर चर्चा करूंगा।

और लिंग का पुनरुत्पादन। मैं अपनी प्रेरणा का कुछ हिस्सा टेरेसा से प्राप्त करती हूँ।
डी लॉरेटिस ने फौकॉल्डियन शब्द 'लिंग की तकनीक' को गढ़ा था, जिसका उपयोग उन विवेचनात्मक साधनों और रणनीतियों का वर्णन करने के लिए किया जाता है जिनके माध्यम से लिंग का सामाजिक निर्माण और पुनर्निर्माण होता है।17 इस अर्थ में, मैं यह तर्क दूंगी कि हरम लिंग की एक तकनीक थी और है। दूसरे शब्दों में, इसे मुख्य रूप से एक सामाजिक रूप से निर्मित स्थान के रूप में अवधारणाबद्ध करके, जो अक्सर भौतिक से अधिक काल्पनिक होता है, मैं हरम का लिंग निर्माण के स्थल के रूप में विश्लेषण करने का प्रयास करूंगी। अधिक स्पष्ट रूप से, मैं यह प्रश्न पूछूंगी कि हरम नामक स्थानिक संरचना ने किस प्रकार कन्याओं को मुस्लिम महिला होने का तरीका सिखाया।
और लड़कों को मुसलमान पुरुष कैसे बनना चाहिए? मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दूंगा।
यहां, लेकिन मैं कम से कम समस्या की शर्तों को यथासंभव स्पष्ट रूप से बताने का प्रयास करूंगा।
इस कुछ हद तक अधिक अमूर्त, बल्कि सैद्धांतिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए, मैं कभी-कभी गैर-मुस्लिम समाजों में स्थान और लिंग के बीच संबंधों पर चर्चा करने का प्रयास करूंगा। यह स्पष्ट रूप से नहीं है
हरम प्रणाली की विशिष्टता और इस्लाम से इसके सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों को नकारना। हालाँकि, मेरा मानना है कि हरम पर किए गए कई पिछले अध्ययनों में
कुछ हद तक विशिष्टतावाद से ग्रस्त था, और इस समय कुछ हद तक वैचारिक आदान-प्रदान बुरा नहीं होगा।
हम सभी जानते हैं कि हाल ही के समय तक पश्चिमी विद्वानों
उन्होंने शेष विश्व को अत्यधिक यूरोकेंद्रित दृष्टिकोण से देखने पर जोर दिया। चाहे इसे ईसाई दृष्टिकोण से देखा जाए, जहाँ उन्हें मुक्ति की आवश्यकता वाले विधर्मी और नास्तिक माना जाता है; या औपनिवेशिक दृष्टिकोण से, जहाँ उन्हें प्रबंधन और सभ्यता की आवश्यकता वाली हीन नस्लें माना जाता है; या विकासवादी दृष्टिकोण से।
सामाजिक और तकनीकी आधुनिकीकरण की आवश्यकता वाले आदिम जंगली लोगों के रूप में देखे जाने के कारण, यूरोपीय मूल के न होने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व

और विश्लेषण अनिवार्य रूप से उनके अपने संदर्भों में नहीं बल्कि पश्चिमी विद्वानों के संदर्भों में किया गया।
पिछले तीन दशकों में, एक प्रतिवाद ने आकार लिया है जिसका उद्देश्य इन पूर्वकल्पित धारणाओं में से कई को पलटना और नए प्रतिमानों को अपनाना है।
अध्ययन के अंतर्गत वास्तविकताओं के अनुरूप। निःसंदेह, यह एक अत्यंत स्वागत योग्य कदम है।
विकास। हालाँकि, एक अनपेक्षित परिणाम सापेक्ष 74 इरविन सेमिल शिक रहा है।

हाल ही में उभरे रोमांचक सैद्धांतिक नवाचारों की उपेक्षा
सांस्कृतिक सिद्धांत। मैं एक छोटे से समायोजन की गुहार लगा रहा हूँ, पूरे बदलाव की नहीं।
इन नवाचारों को उनका उचित सम्मान देने के लिए, लम स्विंग का उपयोग किया गया है। सांस्कृतिक और मानवीय क्षेत्रों में बहुत सारे आकर्षक नारीवादी विश्लेषण किए गए हैं।
भूगोल; फिर भी, यद्यपि यह समस्या से काफी प्रासंगिक है, हरम की संस्था पर इसके अनुप्रयोग बहुत कम और छिटपुट ही हुए हैं।18
स्थानिक रचनावादी दृष्टिकोण के मूल में यह धारणा निहित है कि
स्थान सामाजिक प्रथाओं के लिए एक तटस्थ माध्यम या उनके निष्क्रिय परिणाम से कहीं अधिक है; बल्कि, इसे एक "सक्रिय, रचनात्मक" के रूप में विश्लेषित किया जाना चाहिए और किया जाना चाहिए।
समाज की संरचना में अपरिहार्य, आवश्यक घटक।"19 स्थान का निर्माण सामाजिक प्रथाओं के माध्यम से होता है और उस पर शक्ति की छाप होती है।
वे संबंध जो उनकी विशेषता बताते हैं; बदले में, स्थान सामाजिक प्रथाओं को प्रभावित करता है, समाज का पुनरुत्पादन करता है और इसे व्यवस्थित करने वाले शक्ति संबंधों की पुष्टि करता है। जैसा कि एडवर्ड सोजा ने खूबसूरती से कहा: "स्थानिकता की भौतिकवादी व्याख्या का मूल स्रोत यह मान्यता है कि स्थानिकता सामाजिक रूप से निर्मित होती है और, स्वयं समाज की तरह, ठोस रूपों (ठोस स्थानिकताओं) और व्यक्तियों और समूहों के बीच संबंधों के एक समूह के रूप में, सामाजिक जीवन के एक 'मूर्त रूप' और माध्यम के रूप में मौजूद होती है।"20
इसी प्रकार, अग्रणी नारीवादी भूगोलवेत्ता डोरेन मैसी का सुझाव है कि

स्थानिक को विशुद्ध रूप से भौतिक रूप में नहीं, बल्कि उसमें समाहित सामाजिक संबंधों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए: "स्थानों को क्षेत्रों के रूप में सोचने के बजाय...
इन सीमाओं के भीतर, इन्हें सामाजिक संबंधों और समझ के जाल में व्यक्त क्षणों के रूप में कल्पना की जा सकती है, लेकिन जहाँ उन संबंधों, अनुभवों और समझ का एक बड़ा हिस्सा दूरगामी आधार पर निर्मित होता है।
"उस समय हम जिस स्थान को परिभाषित करते हैं, उससे कहीं अधिक व्यापक पैमाने पर।"21 और "स्थानिक विभेदन, भौगोलिक विविधता, केवल एक परिणाम नहीं है: यह समाज और उसके प्रमुख सामाजिक स्वरूप के पुनरुत्पादन का अभिन्न अंग है।" संबंध।”22
यही वास्तव में मुख्य मुद्दा है। जिस प्रकार समाज समरूप नहीं होता, जिस प्रकार
समाज को वर्ग, लिंग, नस्ल, यौनिकता, पीढ़ी, जातीयता, धर्म और अन्य अनगिनत कारकों के आधार पर विभाजित और स्तरीकृत किया गया है, और इसी प्रकार स्थान। इसके अलावा, "असमान सामाजिक संबंध स्थानिक विभेदन के माध्यम से व्यक्त और गठित दोनों होते हैं।"23 मिशेल फौकॉल्ट ने ऐसे स्थानिक विविधताओं को "हेटेरोटोपिया" कहा, यह तर्क देते हुए कि वे विशेष द्वारा परिभाषित होते हैं।
खुलने और बंद होने की प्रक्रियाएँ, और समाज में होने वाले परिवर्तन, जो उसकी आकांक्षाओं और भय को दर्शाते हैं।24 हेटेरोटोपिया का विश्लेषण हमें आगे ले जाता है।
समाज में अंतर्निहित सत्ता संरचनाओं को समझने की दिशा में एक लंबा सफर तय करना।
क्योंकि शक्ति स्वाभाविक रूप से स्थानिक होती है, ठीक उसी प्रकार जैसे स्थानिकता शक्ति से ओतप्रोत होती है।25 स्थान और उल्लंघन के एक दिलचस्प अध्ययन में, पीटर स्टैलीब्रास और
लिंग-आधारित स्थान के रूप में हरम 75

एलन व्हाइट ने लिखा है कि "विमर्श स्थलों का एक साथ समूहीकरण,
किसी स्थान की स्वीकृति और अस्वीकृति, उसके नियमों, प्रोटोकॉल और भाषा के साथ, सामाजिक पहचान का एक कोडिंग है।26 इस प्रकार, स्वयं का निर्माण एक ही

समय में स्थानों के एक नेटवर्क का निर्माण है जो लिंग (जैसे, घरेलू और सार्वजनिक), नस्ल (जैसे, उपनगर और शहरी क्षेत्र), या वर्ग (जैसे, क्लब) जैसे सामाजिक विभाजनों द्वारा गठित होते हैं और साथ ही साथ उन्हें पुन: उत्पन्न करते हैं।
(और पब)। अधिक सामान्यतः, शर्ली आर्डेनर के अनुसार, "समाजों ने ज़मीनी स्तर पर सीमाएँ बनाने के लिए सांस्कृतिक रूप से निर्धारित अपने स्वयं के नियम बनाए हैं, और सामाजिक को क्षेत्रों, स्तरों और प्रदेशों में विभाजित किया है।
अदृश्य बाड़ और चबूतरे जिन्हें अमूर्त सीढ़ियों से पार करना है और अगोचर पुलों से पार करना है, उतनी ही घबराहट या उल्लास के साथ जितना कि किसी तख्ते पर चलना।
एक उग्र जलप्रपात के ऊपर।"27
स्थानिक विभेदन काफी सरल होता और शायद ही हमारे ध्यान देने योग्य होता, यदि इसमें निहित अत्यधिक कठिनाई न होती।
एक उप-स्थान से दूसरे उप-स्थान में जाते हुए, और यदि ऐसा न होता कि विषमस्थानिकताएँ लाक्षणिक मार्ग-मानचित्र प्रदान करती हैं जो एक समूह द्वारा दूसरे समूह के उत्पीड़न को बहुत सुगम बनाती हैं।28
डेविड सिबली के स्थानिकता और "बाहरी व्यक्ति" की अवधारणा के निर्माण के बीच घनिष्ठ संबंधों के गहन विश्लेषण का यही मुख्य विषय है।
समूहों।" चूंकि यह मेरे तर्क का एक आधारशिला है, इसलिए मैं सिबली के कथन को विस्तार से उद्धृत करने की स्वतंत्रता ले रहा हूं:

स्थान दो तरह से बाह्य लोगों के सांस्कृतिक निर्माण में भूमिका निभाता है। पहला, हाशिए पर स्थित, अवशिष्ट स्थान... बाह्य व्यक्ति की स्थिति की पुष्टि करते हैं।
अल्पसंख्यक। ये ऐसे स्थान हो सकते हैं जिनसे अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्य दूर रहते हैं।
प्रभुत्वशाली समाज में उनके प्रति भय उत्पन्न होता है क्योंकि वे खतरा प्रतीत होते हैं—दूसरे के प्रति भय।
स्थान का भय उत्पन्न हो जाता है... स्थानों को खतरनाक बताकर लेबल लगाना इसकी पुष्टि करता है।

जिन अल्पसंख्यकों के साथ ये स्थान जुड़े हुए हैं, उनकी भिन्नता।
और हाशिए पर धकेल दिए जाने से विचलन और भी बढ़ जाता है... बाहरी समूह के गठन में स्थान की दूसरी भूमिका इससे संबंधित है...
निर्मित वातावरण में स्थानों की व्यवस्था। स्थानिक संरचनाएं हो सकती हैं सामाजिक सीमाओं को मजबूत या कमजोर करना, जिससे सामाजिक विभाजन और भी गहरा हो जाता है या इसके विपरीत, बहिष्कृत समूह कम दिखाई देने लगता है।
इस प्रक्रिया में स्थान की भूमिका को समझने के लिए, इस बारे में सोचना आवश्यक है।
सत्ता के प्रयोग के संदर्भ में स्थान। स्थान सत्ता का प्रतिनिधित्व करता है।
स्थान पर नियंत्रण बहिष्कार की शक्ति प्रदान करता है... स्थान एक अभिन्न अंग है।
बाहरी समस्या का हिस्सा।29

हालाँकि सिबली का मुख्य ध्यान ब्रिटेन में नस्लीय और यौन भिन्नता की स्थानिक अभिव्यक्तियों पर है, लेकिन उनके विश्लेषण की प्रासंगिकता अंतरिक्ष के मामले में भी बनी रहती है। 76 इरविन सेमिल शिक

और लिंग के संदर्भ में, और विशेष रूप से हरम प्रणाली के संदर्भ में, यह होना चाहिए कि
स्पष्ट—भले ही उतना प्रभावशाली न हो। दरअसल, मुख्य आयोजनों में से एक के बाद से
अधिकांश समाजों में लिंग एक प्रमुख सिद्धांत है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि लिंग के आधार पर सामाजिक भेदभाव स्थान के विन्यास को प्रभावित करेगा।
और यह कि स्थानिक संरचनाएं बदले में लैंगिक अंतर को उत्पन्न और पुनरुत्पादित करती हैं, जैसा कि दो उदाहरणों से स्पष्ट होता है।
सबसे पहले पुनर्जागरण काल के वास्तुकार और सिद्धांतकार के मामले पर विचार करें।
लियोन बतिस्ता अल्बर्टी (1404-72), जिनकी दस पुस्तकों में निर्मित 'भवन निर्माण कला पर' पुस्तक ने यूरोपीय वास्तुकला सिद्धांत में अत्यधिक प्रभाव डाला है।

प्राचीन ग्रीस के बारे में लिखते हुए वे कहते हैं कि "यह प्रथा थी... कि घर के कुछ हिस्से, जहाँ महिलाएँ रहती थीं, केवल करीबी लोगों के लिए ही वर्जित थे।"
रिश्तेदार। और निश्चित रूप से, मेरे विचार से, महिलाओं के लिए आरक्षित कोई भी स्थान होना चाहिए।
उन्हें धर्म और पवित्रता के प्रति समर्पित मानकर व्यवहार किया जाए; साथ ही मैं चाहता हूँ कि युवतियों और कुंवारी लड़कियों को आरामदायक कमरे आवंटित किए जाएँ, ताकि उन्हें राहत मिल सके।
नाजुक दिमागों को कैद की नीरसता से बचाना चाहिए। मैट्रन को ऐसी जगह पर रखना चाहिए जहाँ से वह हर किसी की गतिविधियों पर नज़र रख सके।
घर की स्थिति ठीक थी। लेकिन हर मामले में हमें जो भी नियम हों, उनका पालन करना चाहिए।
पूर्वजों की परंपरा।"30
ध्यान दें कि यद्यपि अल्बर्टी ने अपनी प्रेरणा और वैधता इससे प्राप्त की थी
प्राचीन काल में, जहाँ स्त्रीगृह सामान्य बात थी, वह पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान लिख रहे थे। "मैट्रन" को "हिजड़ा" से बदल दें, और यह शायद उतना ही समान हो जाएगा।
यह एक हरम का प्राच्यवादी विवरण हो सकता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि अल्बर्टी द्वारा परिकल्पित निवास का उद्देश्य न केवल महिलाओं को आवास प्रदान करना है, बल्कि उन्हें परिभाषित करना भी है—अर्थात, यौन भेद को लिंग भेद में परिवर्तित करना है। जैसा कि मार्क विगली ने परिवार और लिंग पर अल्बर्टी के लेखन के अपने प्रेरक विश्लेषण में उल्लेख किया है, उपरोक्त अंश "उच्च प्रवचन द्वारा 'महिला' नामक कलाकृति के निर्माण में भाग लेता है।"31
दूसरे उदाहरण के तौर पर, उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान ब्रिटेन में उपनगरीय क्षेत्रों के उदय और विकास पर विचार करें। एक इच्छा से प्रेरित होकर रॉबर्ट फिशमैन की बुर्जुआ यूटोपिया के अनुसार, स्थानिक रूप से अलग काम और घर की यह प्रक्रिया लिंग की बदलती अवधारणाओं से गहराई से जुड़ी हुई थी और इसके परिणामस्वरूप महिलाओं का स्थानिक अलगाव और घरेलू दायरे में उनका

सीमित होना, साथ ही प्रजनन श्रम का घरेलूकरण और इससे निपटने के लिए सामुदायिक रणनीतियों का लोप होना हुआ।32
इसके अलावा, फिशमैन यह प्रदर्शित करते हैं कि यह प्रक्रिया इंजीलवादी आंदोलन द्वारा संचालित थी, जिसने "वास्तविक ईसाई परिवार" के आदर्श को स्थापित किया।
एक इकाई जो अंतर्मुखी है और मजबूत भावनात्मक बंधनों से बंधी हुई है। महिलाओं द्वारा प्रबंधित, रोजमर्रा की कठोर जिंदगी से एक सुरक्षित आश्रय स्थल
लिंग-आधारित स्थान के रूप में हरम 77

पुरुष कमाने वाला। पूर्व-आधुनिक लंदन और "के बीच विरोधाभास।
परिवार के बारे में सुसमाचारवादी आदर्श ने नागरिक के घर को शहर से अभूतपूर्व रूप से अलग करने के लिए अंतिम प्रेरणा प्रदान की, जो उपनगरीय आदर्श का सार है।"33 इस प्रक्रिया की समीक्षा करते हुए, डॉन मिशेल ने निष्कर्ष निकाला कि
“एक बार आदर्श स्थापित हो जाने के बाद, और एक बार परिवार को परिदृश्य के अनुरूप ढालने के बाद, ठीक उसी तरह जैसे परिदृश्य को नए परिवार के अनुरूप ढाला गया था,
उपनगरीय क्षेत्रों का तेजी से विस्तार हुआ, और वे एक तरह से सम्मानजनक मध्यमवर्गीय जीवन जीने का एकमात्र विकल्प बन गए। और यह सम्मानजनकता... महिलाओं को घरेलू दायरे में सीमित करने पर आधारित थी। नारीत्व—और पुरुषत्व—की परिभाषाएँ एक ऐसे स्थानिक स्वरूप को खोजने पर आधारित थीं जो सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच विभाजन को नियंत्रित करता था।”34 मैंने अभी जिन दो उदाहरणों पर चर्चा की है, वे दर्शाते हैं कि महिला अलगाव कैसे होता है
इसका सिद्धांत और व्यवहार मुस्लिम जगत में नहीं, बल्कि ईसाई यूरोप में हुआ था। मैं एक बार फिर इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि मैं एक पल के लिए भी अपनी बात से पीछे नहीं हट रहा हूँ।
इस्लामी संदर्भ की विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए। जिस मुद्दे को सुलझाने में मैं संघर्ष कर रहा हूँ, वह बस इतना है: हम जानते हैं कि हरम की संस्था प्रदर्शित करती है

इतिहास और भूगोल दोनों में बहुत अधिक भिन्नता पाई जाती है। क्या इसमें कुछ खास बात है?
क्या हमने स्थान की अन्य लैंगिक संरचनाओं के विश्लेषण से सीखा है जो हमें इस भिन्नता को समझाने में मदद कर सकता है?
उदाहरण के लिए, मिशेल "सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच विभाजन" का उल्लेख करते हैं, और यह उन ढाँचों में से एक है जिनके भीतर हरम की अवधारणा मौजूद है।
इस पर अध्ययन किया गया है। वास्तव में, हरम और सेलामलिक (या अंदरुन और बिरुन) की द्विभाजित स्थानिक व्यवस्था को निजी/सार्वजनिक विभाजन के प्रतिनिधि के रूप में मानने का अच्छा कारण है: आखिरकार, हरम या अंदरुन
यह घर के पुरुष और महिला दोनों सदस्यों के लिए एक आंतरिक अभयारण्य था, जबकि सेलामलिक या बिरुन दोनों लिंगों के मेहमानों का स्वागत और मनोरंजन करने के लिए एक सार्वजनिक मंच था। साथ ही, जैसा कि कई उदाहरणों में दिखाया गया है
अध्ययनों में, महिलाएं नियमित रूप से सामाजिक, आर्थिक और यहां तक कि राजनीतिक गतिविधियों में संलग्न रहती हैं।
हरम की दीवारों के पीछे की गतिविधियों से पता चलता है कि आज पश्चिमी संदर्भ में आमतौर पर दिए जाने वाले अर्थ में 'निजी' शब्द वहां महिलाओं द्वारा अनुभव की जाने वाली पूरी श्रृंखला को पकड़ने में विफल रहता है।35 लेकिन शायद निजी और सार्वजनिक के पश्चिमी विचारों में ही संशोधन की आवश्यकता है।
जैसा कि कई विद्वानों ने पहले ही तर्क दिया है। उदाहरण के लिए, नैन्सी डंकन बताती हैं कि यद्यपि इन दोनों क्षेत्रों के बीच का अंतर गहरा है। संस्कृति में निहित और कानून में स्थापित होने के बावजूद, "यह अस्थिर है और अक्सर घरेलू या पारिवारिक स्वायत्तता और सार्वजनिक क्षेत्रों जैसे संबंधित भेदों के साथ समस्याग्रस्त रूप से भ्रमित हो जाता है।"36 इसी तरह, लिन
स्टेहेली का कहना है कि "ऐसा कोई आवश्यक कारण नहीं है कि जो कार्य इन-78 इरविन सेमिल शिक द्वारा किए जाते हैं"

व्यापक आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक संबंधों को प्रभावित करने वाले कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।
सार्वजनिक स्थानों में," और यह दर्शाता है कि वैकल्पिक स्थानिक विन्यासों में
सार्वजनिक और निजी के बीच की पारंपरिक सीमाओं को धुंधला करते हुए उभरा: "सार्वजनिक और निजी की बदलती संरचनाएं कुछ ऐसी बन जाती हैं जिन्हें अनुभव किया जाना चाहिए।"
इसे खारिज करने के बजाय समझाया जाना चाहिए।”37 हम इसके बारे में चाहे जो भी महसूस करें, यह प्रचलित धारणा कि सार्वजनिक क्षेत्र मर्दाना, सांसारिक और महत्वपूर्ण है, और निजी क्षेत्र स्त्री, स्थानीय और तुच्छ है, बस कायम नहीं रह सकती—
सभी अनुभवजन्य साक्ष्यों का विश्लेषण करने पर यह संभव है। निजी/सार्वजनिक विभाजन ऐतिहासिक रूप से अपरिवर्तनीय नहीं है, और
इसके विकास में स्थानिक प्रथाओं और अभ्यावेदन की भूमिका की सावधानीपूर्वक जांच की जानी चाहिए। विगली लिखते हैं कि अल्बर्टी के बाद की शताब्दियों में...
लैंगिक स्थान का सैद्धांतिकीकरण, एक

निजता की एक नई भावना धीरे-धीरे उत्पन्न हुई... घर के स्थानों को स्तरित स्थानों और उपविभाजनों की एक जटिल व्यवस्था में पुनर्परिभाषित करके। ऐसे स्थान जो शाब्दिक रूप से शिष्टाचार के पदानुक्रमों के बीच रेखाएँ खींचकर एक सामाजिक व्यवस्था का मानचित्रण करते हैं... एक नए प्रकार का स्थान उभरा जिसमें दूरी
अब यह अंतरिक्ष में दो दृश्यमान वस्तुओं के बीच का संबंध नहीं रह गया है, बल्कि एक ऐसे मुखौटे का उत्पाद है जिसकी सतह की बारीकी से जांच करके यह पता लगाया जाता है कि उसके परे क्या छिपा है।
लेकिन इसे सीधे तौर पर देखा नहीं जा सकता... वास्तुकला का उपयोग इसे दर्शाने के लिए किया गया था।
यह एक नए प्रकार की शालीनता का सूत्रधार बना और ऐसा करके इसने निजी विषय के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाई। इसने शरीर को एक तरह से ढक दिया।

जिसने इसे पुनर्परिभाषित किया, एक ही समय में शरीर को खतरनाक के रूप में स्थापित किया और खतरे को नियंत्रित किया।38

यूरोप में स्थानिक विभेदन के पहलुओं और संकेंद्रित स्थानिक विन्यास (जो कई देशों में प्रचलित है) के बीच कुछ उल्लेखनीय समानताएं मौजूद हैं। मुस्लिम समाजों में हरम को केंद्र के रूप में स्थापित किया जाता है—कभी- कभी
स्त्रीत्वपूर्ण, और कभी-कभी पवित्र।39 इस खंड में जतीन लाड द्वारा वर्णित टोपकापी महल में अंतर्निहित आंगनों की प्रणाली इस प्रकार के संकेंद्रित स्थानिक विन्यास का एक अच्छा उदाहरण है। यहाँ भी, स्थानिक विभेदन निर्दोष नहीं है। जैसा कि डंकन बताते हैं
निष्कर्ष: “सार्वजनिक/निजी विभाजन (राजनीतिक और स्थानिक दोनों आयामों में) का प्रयोग अक्सर लिंग और यौन भिन्नता को निर्मित करने, नियंत्रित करने, अनुशासित करने, सीमित करने, बहिष्कृत करने और दबाने के लिए किया जाता है, जिससे पारंपरिक धारणाओं को संरक्षित किया जा सके।”
पितृसत्तात्मक और विषमलैंगिक शक्ति संरचनाएँ।"40 जैसा कि ऊपर स्पष्ट है, अवधारणा में शरीर की भूमिका
निजी और सार्वजनिक का अंतर इस तर्क का मुख्य बिंदु है। वास्तव में, डॉन मिशेल
इसे बहुत ही स्पष्ट रूप से समझाया गया है: “सामाजिक स्थान का अनुभव शारीरिक रूप से होता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि...”
लिंग-आधारित स्थान के रूप में हरम 79

तो, अंतरिक्ष का उत्पादन... साथ ही साथ उत्पादन करने का कार्य करता है। कुछ खास तरह के शरीर। ऐसा अमूर्त विचार तभी समझ में आता है, जब...
यदि हम 'शरीर' को विशिष्ट लोगों के भौतिक स्वरूप और सांस्कृतिक रूप से निर्मित विचारों और आदर्शों के समूह दोनों के रूप में समझते हैं, तो
यह पुरुषों और महिलाओं के लिए शारीरिक रूप से उचित है। कहने का तात्पर्य यह है कि स्थान के सामाजिक निर्माण (और नियंत्रण) के बीच एक घनिष्ठ संबंध है,

लिंग का सांस्कृतिक निर्माण (और नियंत्रण), और हमारे व्यवहार करने के तरीके
हम स्वयं, हमारे अनुभव और, कम से कम कुछ हद तक, हमारे भौतिक शरीर की संरचना भी।"41
और इसका प्रभाव दोनों तरफ पड़ता है। जॉन एलन लिखते हैं कि "यह स्थानिक प्रथाओं की विशाल श्रृंखला है, जिसमें नियमित सैर और लय शामिल हैं जो हमें एक ऐसी जगह जहाँ सांकेतिक हाव-भाव, शैलियों और तौर-तरीकों का विशेष महत्व है।
इसके लिए एक निश्चित उपयोग निर्धारित करें, जो हमें और सत्ता दोनों को सही स्थान पर रखता है।"42 इसलिए, जब हम स्थान को सामाजिक रूप से निर्मित मानते हैं, तो हमें केवल यह नहीं सोचना चाहिए
विचारों, संकेतों और प्रतीकों का; स्थान का निर्माण शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से भी होता है, और, कहने की आवश्यकता नहीं है, स्थान बदले में शारीरिक क्रियाओं को प्रभावित करता है। कम से कम
समकालीन समाजों के लिए और शायद ऐतिहासिक समाजों के लिए भी, यह लिंग के उत्पादन और पुनरुत्पादन के स्थल के रूप में हरम का विश्लेषण करने के लिए एक आशाजनक दृष्टिकोण का सुझाव देता है।
हालांकि हिंदू संदर्भ में, मुस्लिम संदर्भ के बजाय, इस दृष्टिकोण का एक अच्छा उदाहरण सीमंथिनी निरंजना का नृवंशविज्ञान संबंधी कार्य है, जो
यह “रोजमर्रा की प्रथाओं के साथ-साथ सामाजिक या समूह पुनरुत्पादन को रेखांकित करने वाले स्थानिक अक्ष” और “उन ‘कार्यों’ पर ध्यान केंद्रित करता है जिनके भीतर महिलाएं अपने जीवन को परिभाषित करती हैं और उन क्षेत्रों, घटनाओं या गुणों पर जो शरीर को स्त्री के रूप में चिह्नित करते हैं।”43
निरंजना का निष्कर्ष है कि: “महिला शरीरों और महिला नैतिकता से संबंधित धारणाएँ और निर्देश... बातचीत के केंद्र में हैं।”
स्थान, यह निर्दिष्ट करता है कि पहचानें किस प्रकार समेकित होती हैं और जीवन के दौरान कैसे जी जाती हैं।
आवागमन की सीमाओं और महिलाओं के सम्मान की 'सीमाओं' को चिह्नित करते हुए... एक बहुत ही सशक्त स्थानिक कथा ने लोगों के जीवन को नियंत्रित किया... बहुत कुछ

नारीत्व, यौनिकरण और स्त्री शरीर के साथ-साथ महिलाओं की गतिविधियों के बारे में जो कुछ भी कहा गया था, वह सब इस मुहावरे में समाहित था... शरीर,
और जिस तरीके से यह अंतरिक्ष में निवास करता है, वह स्वयं एक के रूप में तैनात हो जाता है।
वह माध्यम जिसके द्वारा ‘स्त्री’ का निर्माण होता है।”44 अपने आस-पास देखें तो, पियरे बॉर्डियू का कबाइल हाउस का क्लासिक अध्ययन।
इसे परिचय की आवश्यकता नहीं है।45 हालाँकि इसका उपयोग और दुरुपयोग अनगिनत तरीकों से किया गया है, और इसे सीमाओं से परे सामान्यीकृत किया गया है। तर्क और सामान्य ज्ञान के आधार पर आलोचना की गई, और वैध और अवैध दोनों कारणों से आलोचना की गई।46
यह निबंध प्रणालियों के तरीकों पर ध्यान केंद्रित करने के मामले में अभूतपूर्व था। 80 इरविन सेमिल शिक

शारीरिक क्रियाओं और "अंतर्निहित प्रवृत्तियों" के बारे में - जिसे बॉर्डियू ने परिभाषित किया होगा।
बाद में हैबिटस 47 कहा गया—जो आवास से संबंधित थे। उन्होंने कबीले के घर के कुछ तत्वों के यौनिकरण और लिंगीकरण पर विशेष ध्यान दिया, और यह भी देखा कि वे वहां रहने वाले पुरुषों और महिलाओं की प्रथाओं से किस प्रकार संबंधित थे।
हाल ही में, ट्रैकी ज़न्नाद बुचरारा ने नृवंशविज्ञान संबंधी क्षेत्र अध्ययन किया।
ट्यूनीशियाई नगर की महिलाओं (बेल्डिया) के बीच किए गए कार्य में, उन्होंने पारंपरिक घर के भीतर उनकी शारीरिक गतिविधियों को सार्वजनिक क्षेत्र में पुरुषों की शारीरिक गतिविधियों की तुलना में सावधानीपूर्वक निर्देशित किया। यह देखते हुए कि "मानव शरीर और शहरी स्थान के बीच एक द्वंद्वात्मकता मौजूद है, जो सांकेतिक रूपों से परे, प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष से परे, एक ऐसे आयाम को भी दर्शाती है जिसमें संकेतित और प्रतीकात्मक गुण होते हैं,"48 वह वर्णन करती हैं।
निजी और निजी के बीच एक निश्चित पूरकता और विषम-समरूपता—जिसे वह अपकेंद्रीय और अभिकेंद्रीय बलों द्वारा संचालित बताती है—
सार्वजनिक स्थान।

दूसरी ओर, अब्देसमाद डायल्मी ने स्थानिक और यौन प्रथाओं का अध्ययन किया। मोरक्को में। यह देखते हुए कि "निर्मित स्थान एक संकेतक की भूमिका निभाता है"
"गैर-स्थानिक प्रकृति की वास्तविकता" को दर्शाते हुए, उन्होंने स्थान और कामुकता के बीच संबंधों के चार तरीके बताए—प्रतीकात्मक, शाब्दिक, क्षेत्रीय और कार्यात्मक—
और उन्होंने अंतिम दो बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक क्षेत्रीय सर्वेक्षण किया। जैसा कि वे बताते हैं: "महिला की निम्न स्थिति प्रकृति द्वारा लिखित और इंगित की गई है और
उसके लिए आरक्षित स्थान का निर्धारण। यही बात पुरुषों पर भी लागू होती है। वर्चस्व, जिसे पुरुष प्रधान स्थानों की श्रेष्ठता द्वारा भी व्यक्त किया जाता है।"49
महिलाओं ने ऐतिहासिक रूप से और आज भी स्थान का अनुभव किस प्रकार किया है, इस विषय पर समृद्ध और बढ़ता हुआ साहित्य मौजूद है।50 यह साहित्य हरम के अध्ययन के लिए प्रेरणा और व्यावहारिक सुझाव दोनों प्रदान करता है।
लिंग निर्माण और पुनरुत्पादन का एक स्थल। अंत में, और विषय के बीच संबंध जितना ही असंभव है,
इस पुस्तक और आज की विश्व की राजनीतिक स्थिति को देखते हुए, हम एकांतवास और घूंघट से संबंधित चल रही बहसों का सहारा ले सकते हैं।
इस्लामी राजनीतिक आंदोलन—मुस्लिम देशों और इस्लामी दुनिया दोनों में पश्चिम में प्रवासी समुदायों के संदर्भ में—यह सुझाव देना कि बहस के इस केंद्र बिंदु को स्थानिक राजनीति के एक पहलू के रूप में, पुनर्गठन पर एक संघर्ष के रूप में देखा जा सकता है और देखा जाना चाहिए—
अल्जीरिया में फिस (फ्रंट इस्लामिक डु सैल्यूट, या इस्लामिक साल्वेशन फ्रंट) जैसे कट्टरपंथी इस्लामी आंदोलनों पर चर्चा करते हुए, डायल्मी का तर्क है:

स्थानिक संगठन के एक कारक के रूप में इस्लाम का पुनरुत्थान, पहचान की खोज में क्षेत्रीय पद्धति को एक युद्धक हथियार के रूप में फिर से सामने लाता है।
लिंग-विभाजित स्थान के रूप में हरम 81

इस्लामी आंदोलन अब चुप या उदासीन नहीं रह सकता।
स्थान की समस्या, और विशेष रूप से महिलाओं द्वारा उपभोग की समस्या सार्वजनिक स्थान। लेकिन क्या आधुनिकता की प्रगति के बावजूद, यह यौन अधिकारों को पुनः प्राप्त कर सकता है?
सामाजिक संगठन के लिए एक मूलभूत सिद्धांत के रूप में पृथक्करण
स्थान? . . . लिंगों का मिश्रण, जिसे अब सीमित नहीं किया जा सकता—
जो बातें सामने आई हैं, उन्हें अब पर्दे और संगठित तंत्र द्वारा कमजोर कर दिया जाएगा।
विश्वविद्यालय में, समुद्र तटों पर, बसों में पुरुषों और महिलाओं का अलग-अलग बैठना।51

वास्तव में, जैसा कि मैसी लिखते हैं: "अंतरिक्ष और के बारे में सोचने के विशेष तरीके
स्थान. . . लैंगिक संबंधों की विशेष सामाजिक संरचनाओं से जुड़े हुए हैं। ...स्थान और जगह की वर्तमान अवधारणाओं में से कुछ को चुनौती देना, वास्तव में, वर्तमान को चुनौती देने के लिए आवश्यक भी है।
लिंग परिभाषाओं और लिंग संबंधों का प्रमुख रूप।"52 संक्षेप में, किसी भी सामाजिक संस्था की तरह, हरम मूल रूप से एक प्रतिनिधित्व है; और किसी भी सामाजिक संस्था के इतिहास की तरह, इसका इतिहास काफी हद तक यही है।
इसके चित्रण के संदर्भ में। लेकिन हरम के चित्रण अनेक और अक्सर विरोधाभासी रहे हैं, इसका चित्रण एक ओर पूर्वी निरंकुशता के सूक्ष्म रूप और पुरुष प्रधान उत्पीड़न के केंद्र के रूप में, तो दूसरी ओर महिला स्वायत्तता के एक ऐसे स्थान के रूप में किया गया है जिसमें मुस्लिम महिलाएं भाग लेने में सक्षम हैं।
दूसरी ओर, सामाजिक, आर्थिक और यहां तक कि राजनीतिक गतिविधियां पुरुष वर्चस्व से अप्रभावित रहती हैं। धार्मिक ग्रंथों या ऐतिहासिक प्रथाओं में हरम के वास्तविक सार की खोज करने के बजाय, यह अधिक उपयोगी हो सकता है कि

इसे मुख्य रूप से एक सामाजिक रूप से निर्मित स्थान के रूप में परिकल्पित करना, जो अक्सर भौतिक से अधिक काल्पनिक होता है, और इस बात पर ध्यान केंद्रित करना कि इसने उत्पादन और विकास में कैसे कार्य किया है।
लिंग का पुनरुत्पादन। नारीवादी भूगोलवेत्ताओं ने लंबे समय से पारस्परिक रूप से इस बात पर जोर दिया है।
स्थान और लिंग की मूलभूत प्रकृति पर जोर देते हुए, यह तर्क दिया गया है कि पुरुषों और महिलाओं द्वारा भूगोल का अनुभव करने के तरीकों में अंतर केवल इसका परिणाम नहीं है।
लैंगिक अंतर न केवल उन्हें उत्पन्न करते हैं, बल्कि उन्हें और भी बढ़ावा देते हैं। अलगाव स्वयं को पुनरुत्पादित करता है, क्योंकि भिन्नता के स्थान न केवल दूसरों के भंडार बन जाते हैं, बल्कि
भिन्नता के उत्पादक भी। साथ ही, इसका अनिवार्य अर्थ यह है कि
हरम प्रतिरोध का भी एक स्थल है; वास्तव में, घूंघट और एकांतवास को लेकर चल रहे राजनीतिक संघर्ष को स्थानिक राजनीति के एक पहलू के रूप में देखा जा सकता है।
अंतरिक्ष के पुनर्गठन को लेकर विवाद।

नोट्स

जब तक अन्यथा उल्लेख न किया गया हो, सभी अनुवाद मेरे द्वारा किए गए हैं।
1 इब्न मंज़ूर, लिसान अल-अरब अल-मुहित, 615-19। 2 [अल-जवाहरी], मुख्तार अल-सिहा, 486; अल-फ़यरुज़ाबादी अल-शिराज़ी, क्यूमस अल-मुहित, 4:110।
82 इरविन सेमिल शिक

3 अल-ज़बीदी, ताज अल-अरुस मिन जवाहिर अल-क़मुस, 8:240; अल-अज़हरी, तहदीब अल-लुघाट, 5:47.
4 'अब्द अल-बक़ी, अल-मुअज़म अल-मुफ़हरस ली-अल्फ़ाज़ अल-कुरान अल-करीम, 197-99।
5 कुरान, अल-अहज़ाब 33:53.
6 अल-कुरतुबी, अल-जामी' लि-अहकाम अल-कुरआन, 14:227। हालाँकि पैगंबर की महिला साथियों के जीवन को मुसलमानों द्वारा आदर्श माना जाता है, लेकिन

ऐतिहासिक रूप से उन्हें महत्वपूर्ण तरीकों से पुनर्व्याख्या का सामना करना पड़ा है, जैसा कि इस खंड में अस्मा अफसारुद्दीन के अध्याय द्वारा दिखाया गया है।
7 मर्निसी, द वेल एंड द मेल एलीट, 113.
8 अल-बुखारी, साहिह, निकाह 62:22, 89; 40, 166.
9 अहमद, इस्लाम में महिलाएं और लिंग, 41–78.
10. सह-स्तनपान दूध पर आधारित रिश्तेदारी का एक रूप है—अर्थात, स्तनपान कराने की क्रिया।
अरब बेदुइनों में—और फिर इस क्षेत्र के कई समाजों में—एक "दूध का भाई/बहन" होना आम बात थी, यानी एक ऐसा बच्चा जिसे एक ही महिला द्वारा दूध पिलाया जाता था।
11 कुरान 4:23.
12 अफसरुद्दीन, “परिचय,” 3. उस लेख में अन्य विभिन्न योगदान भी देखें। अफसरुद्दीन द्वारा संपादित एक रोचक पुस्तक।
13 ड्यूबेन और बेहार, इस्तांबुल हाउसहोल्ड्स, 148–49. 14 बोसेरुप, आर्थिक विकास में महिला की भूमिका, 37–52; गुडी, “बहुविवाह, अर्थव्यवस्था और महिलाओं की भूमिका।”
15 इस संदर्भ में, आधी सदी बाद भी, सर्वसम्मत मत को पढ़ना शिक्षाप्रद है। 1954 के ब्राउन बनाम बोर्ड ऑफ एजुकेशन मामले में अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय की राय: “क्या सार्वजनिक विद्यालयों में बच्चों का केवल नस्ल के आधार पर पृथक्करण, भले ही भौतिक सुविधाएं और अन्य ‘स्पष्ट’ कारक समान हों, अल्पसंख्यक समूह के बच्चों को समान शैक्षिक अवसरों से वंचित करता है? हमारा मानना है कि ऐसा होता है... हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में ‘अलग लेकिन समान’ का सिद्धांत लागू नहीं होता। अलग-अलग शैक्षिक सुविधाएं स्वाभाविक रूप से असमान होती हैं। इसलिए, हम मानते हैं कि जिन वादियों और अन्य समान परिस्थितियों वाले लोगों के लिए मुकदमे दायर किए गए हैं, वे शिकायत किए गए पृथक्करण के कारण चौदहवें संशोधन द्वारा गारंटीकृत कानूनों के समान संरक्षण से वंचित हैं।”
16 उदाहरण के लिए देखें, डोमोश और सीगर, पुटिंग विमेन इन प्लेस; मैसी, स्पेस, प्लेस, और

लिंग; मैकडॉवेल, लिंग, पहचान और स्थान; मैकडॉवेल और शार्प, स्थान, लिंग, ज्ञान; जी. रोज़, नारीवाद और भूगोल।
17 डी लॉरेटिस, “लिंग की तकनीक,” 3. 18 एक उल्लेखनीय अपवाद हेनरी लेफेब्रे के सिद्धांतों से प्रेरित ओरिएंटलिस्ट हरम चित्रों का जोन डेलप्लाटो का अध्ययन है, “अंतरविषयक प्रतिमान के रूप में स्थान की लेफेब्रे की आलोचना।” हालाँकि मैंने द इरोटिक मार्जिन में “स्थान के सामाजिक निर्माण” ढांचे का व्यापक रूप से उपयोग किया, लेकिन वहाँ मेरी प्राथमिक चिंता “पूर्व” को भिन्नता के स्थान के रूप में निर्मित करने में हरम की छवियों के उपयोग से संबंधित थी, न कि स्वयं हरम के स्थानिक गठन से।
19 कीथ और पाइल, “परिचय, भाग 2: राजनीति का स्थान,” 36. 20 सोजा, उत्तर आधुनिक भूगोल, 120. 21 मैसी, स्थान, जगह और लिंग, 154.
लिंग-विभाजित स्थान के रूप में हरम 83

22 मैसी, श्रम का स्थानिक विभाजन, 299-300। 23 जी. रोज़, नारीवाद और भूगोल,
113। 24 फौकॉल्ट, "अन्य स्थानों के बारे में।"
25 जे. एलन, लॉस्ट जियोग्राफीज़ ऑफ़ पावर, 159. 26 स्टैलीब्रास और व्हाइट, द पॉलिटिक्स एंड पोएटिक्स ऑफ़ ट्रांसग्रेशन, 194. 27 आर्डेनर, परिचय, 2. 28 “मेटोनिमिक रोड मैप्स” से मेरा तात्पर्य समाज के स्थानिक निरूपणों से है।
जिनमें स्थान उनसे जुड़ी विशेषताओं के समूहों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे कि
उपनगर और शहरी क्षेत्र के बीच का अंतर नस्लीय अंतर का प्रतीक है।
इस प्रकार के निरूपण अक्सर सामाजिक प्रथाओं के साथ-साथ सार्वजनिक प्रथाओं के लिए भी दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं।
नीतियाँ। उदाहरण के लिए, इस संदर्भ में क्षेत्रवाद के विश्लेषण के लिए एंट्रिकिन, द बिटवीननेस ऑफ प्लेस, 43-59 देखें।
29 सिबली, “समाज और स्थान में बाहरी लोग,” 112–113, 116. उनकी पूर्व-भूगोल भी देखें-
निष्कर्ष।
30 अल्बर्टी, दस पुस्तकों में भवन निर्माण की कला पर, 5:149.

31 [illegible], “[illegible],” 333. [illegible] [illegible] [illegible]

इस खंड में अध्याय।

36 डंकन, “सार्वजनिक और निजी स्थानों में लिंग और कामुकता पर पुनर्विचार,”
127. 37 स्टेहेली, “प्रचार, गोपनीयता और महिलाओं की राजनीतिक कार्रवाई,” 609, 605. 38 विगली, “शीर्षकहीन,” 345.
39 यह याद रखना उपयोगी हो सकता है कि मक्का और मदीना के पवित्र स्थल
अरबी में इन्हें दो हरम कहा जाता है।
40 डंकन, “सार्वजनिक और निजी स्थानों में लिंग और कामुकता पर पुनर्विचार,” 128.
41 डी. मिशेल, सांस्कृतिक भूगोल, 217. 42 जे. एलन, लॉस्ट जियोग्राफीज ऑफ पावर, 162. 43 निरंजना, जेंडर एंड स्पेस, 13.
44 वही, 31, 15–16.
45 “द कबाइल हाउस ऑर द वर्ल्ड रिवर्सड” के कई संस्करण मौजूद हैं, जिनमें से कुछ
अन्य की तुलना में अधिक पूर्ण। क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस (1970) के सम्मान में मेलेंजेस में प्रकाशित फ्रेंच मूल के काफी करीब एक अंग्रेजी अनुवाद, बॉर्डियू, द लॉजिक ऑफ प्रैक्टिस, 271-83, 316-19 में एक परिशिष्ट के रूप में शामिल है। 46 इस दुरुपयोग के लिए एक उचित प्रतिवाद के लिए, लिपस्टैड देखें, "'इस दस्तावेज़ में बर्बर घर का [लगभग] कोई उल्लेख नहीं है।'" 47 बॉर्डियू ने बाद में हैबिटस को "स्थायी, स्थानांतरणीय स्वभाव की प्रणालियों" के रूप में परिभाषित किया।
संरचनाएँ, संरचित संरचनाएँ जो संरचनात्मक संरचनाओं के रूप में कार्य करने के लिए पूर्वनिर्धारित होती हैं, जो
यह प्रथाओं और अभ्यावेदन के निर्माण और संरचना के सिद्धांतों के रूप में है।
जिसे वस्तुनिष्ठ रूप से 'विनियमित' और 'नियमित' किया जा सकता है, बिना किसी भी तरह से
नियमों के पालन का परिणाम, बिना किसी पूर्वधारणा के वस्तुनिष्ठ रूप से उनके लक्ष्यों के अनुकूल—84 इरविन सेमिल शिक

लक्ष्यों की ओर सचेत रूप से लक्षित करना या उन्हें प्राप्त करने के लिए आवश्यक कार्यों में स्पष्ट महारत हासिल करना और, यह सब होने के नाते, एक कंडक्टर की ऑर्केस्ट्रेटिंग क्रिया का उत्पाद होने के बिना सामूहिक रूप से व्यवस्थित किया गया है” (अभ्यास के सिद्धांत की रूपरेखा, 72)।
48 ज़न्नाद [बुशरारा], शारीरिक प्रतीकवाद और मुस्लिम स्थान, 13. 49 डायल्मी, आवास, कामुकता और इस्लाम, 13, 16. 50 कुछ उल्लेखनीय उदाहरण हैं: आर्डेनर, महिलाएँ और स्थान; ड्यूश, महिलाएँ और
शहर; हैनसन और प्रैट, लिंग, कार्य और स्थान; लो और लॉरेंस-ज़ुनिगा, स्थान और जगह का मानवविज्ञान; मॉमसेन और टाउनसेंड, तीसरी दुनिया में लिंग का भूगोल; स्पेन, लिंग-आधारित स्थान; वीसमैन, डिज़ाइन द्वारा भेदभाव।
51 डायल्मी, लोगेमेंट, सेक्सुअलिटी एट इस्लाम, 24, 78-79। "क्षेत्रीय मोड" से डायल्मी का तात्पर्य "पुरुष, महिला और मिश्रित क्षेत्रों में स्थान का उपविभाजन" है।
52 मैसी, स्पेस, प्लेस, और जेंडर, 2.

भाग II • कमरे और दहलीज 8 हरम स्थान, सामाजिकता और कानून के रूप में
यदि "बाहरी" बनाम "आंतरिक" स्थान के प्रारंभिक निरूपणों में हरम का नाम नहीं लिया गया है, जैसे कि भाग I में विश्लेषण किए गए निरूपणों में, तो निरूपणों का संचय—उदाहरण के लिए, अदब संग्रहों में उपाख्यान जिन पर नादिया मारिया एल शेख अध्याय 4 में निरूपणों के लिए आधारित हैं—कैसे इसका उल्लेख कर सकता है?
चौथी/दसवीं शताब्दी के दौरान बगदाद में स्थित हरम—
क्या विभिन्न स्थानों के विशिष्ट नामकरण में इनका योगदान रहा है? और इन कुछ उपाख्यानों में वर्णित स्थानों के बीच लैंगिक विभाजनों का उल्लंघन किस प्रकार इन विभाजनों को सामान्य बनाने का काम कर सकता है? इसके अलावा, स्थान का यह विभाजन किस प्रकार के आंतरिक पदानुक्रमों को जन्म देता है? क्या यह संभव बनाता है? यह कुछ महिलाओं को किस प्रकार से प्रभावित करता है?
अन्य महिलाएं? जब मोंटेस्क्यू ने द पर्शियन लेटर्स (1721) में और अन्य यूरोपीय लेखकों ने हरम को सत्ता के केंद्र के रूप में कल्पना की, तो उन्होंने यह मान लिया कि सत्ता का संतुलन लिंग विभाजन के अनुसार होता है— भले ही, जैसा कि इस मामले में है
मोंटेस्क्यू के अनुसार, वे 86 कमरों और दहलीज की आलोचना करने के लिए एक पृथक दृष्टिकोण का उपयोग कर रहे थे।

उनके अपने यूरोपीय समाज में, और जब मर्दाना शारीरिक अनुपस्थिति
उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि सत्ता व्यवस्था के विखंडन की परिकल्पना कर रही है।
क्या हरम स्थलों के स्वदेशी चित्रण शक्ति और लिंग के बीच संबंधों के बारे में धारणाओं को चुनौती देते हैं? एल शेख शक्ति को स्पष्ट करते हैं।
यह लेख समकालीन राजनीति में खलीफा की मां सहित कुछ हरम महिलाओं की भूमिका को दर्शाता है और खलीफा के हरम को उसकी प्रजा के घरेलू हरम से अलग करता है।
नूरानी की तरह, अल शेख भी इस समानता का खंडन करते हैं।
हरम जिसमें "निजी" स्थान होता था; और शिख की तरह, वह भी यह नोट करती हैं कि हरम और उससे जुड़े शब्द अक्सर विशिष्ट स्थानों के बजाय लोगों को संदर्भित करते थे।

अध्याय 5 में, लेस्ली पियर्स पश्चिम की ओर इस्तांबुल, ओटोमन साम्राज्य की राजधानी, और बाद के एक समय की ओर बढ़ती हैं, जब वह संहिताकरण की जांच करती हैं।
विभिन्न अवधियों के अंतर्गत उचित सामाजिक और यौन व्यवहार को निर्धारित करने वाले कानून
सुल्तानों के समय में, स्थान और परिवेश आंतरिक रूप से महत्वपूर्ण नहीं थे: सम्मानजनक होना बंधन से अधिक आचरण से संबंधित था, लेकिन "सार्वजनिक रूप से सीमित उपस्थिति" एक महिला की सत्यनिष्ठा (और उसके परिवार की आर्थिक और सामाजिक स्थिति) का संकेत था। व्यवहार का ओटोमन नियमन—पुरुषों का महिलाओं और उनके हरम की व्यवस्थाएँ उत्तरोत्तर अधिक जटिल होती गईं, जो स्थानीय प्रथागत कानून और बदलते सामाजिक स्वरूपों के साथ परस्पर क्रिया करती थीं। "हरम संस्कृति" ओटोमन जीवन की कोई शाश्वत विशेषता नहीं थी, बल्कि समाज पर पड़ने वाले इन बदलते और जटिल दबावों का परिणाम थी। उन्नीसवीं शताब्दी के ट्यूनिस में भी हरम की परिवर्तनशीलता उतनी ही स्पष्ट है, जो औपचारिक हरम स्थापना से ठीक पहले साम्राज्य की परिधि पर स्थित था।
जूलिया क्लैंसी-स्मिथ अध्याय 7 में यूरोपीय उपनिवेशीकरण के बारे में बताती हैं।
वहाँ ट्यूनीशियाई और यूरोपीय कुलीन परिवार एक साथ आए, क्योंकि यूरोपीय लोगों ने स्थानीय सामाजिकता की संस्कृति में खुद को समाहित करने का प्रयास किया। हरम—
जैसा कि अल शेख द्वारा वर्णित पूर्ववर्ती दरबारी संस्कृति में था—यह एक ऐसा स्थान था जहाँ राजनीतिक और सामाजिक शक्ति की तलाश की जाती थी और उसका प्रयोग किया जाता था।
अध्याय 6 में, जतीन लाड इस राजनीतिक क्षेत्र का एक अलग दृष्टिकोण से विश्लेषण करते हैं।
इस्तांबुल के शाही दरबार में हिजड़ों के दृष्टिकोण से, एक बार फिर उस विशिष्ट रूप से विस्तृत हरम द्वारा उत्पन्न आंतरिक पदानुक्रमों की पड़ताल की जाती है।
अध्याय 8 में, उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के शहरी बुद्धिजीवी परिवार की आधुनिक कल्पनाओं के आधार पर, हेघनार वाटनपॉघ दर्शाते हैं कि

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [

4 • कैलिफाल हरेम,
घरेलू हरम

इस्लामी युग की चौथी शताब्दी में बगदाद

नादिया मारिया एल शेख

8 हरम को उसकी ऐतिहासिक विशिष्टता से अलग करके नहीं समझा जा सकता। हालाँकि पश्चिमी पर्यवेक्षकों ने हरम को उसके संदर्भ से अलग करके और उसे एक वस्तु के रूप में प्रस्तुत करके, अपने स्वार्थ के लिए उसकी गलत धारणाओं का उपयोग किया है,1 फिर भी
इस संदर्भ में केवल प्राच्यवादी परंपरा ही दोषी नहीं है। अरब आलोचकों ने यह भी तर्क दिया है कि अरब सांस्कृतिक विरासत को पूरी तरह से कुछ और ही रूप में प्रस्तुत किया गया है।
अनुकरणीय, कालातीत और इतिहास से परे। अब्दुल्ला लारौई ने प्राप्त अतिरंजित मध्ययुगीनकरण की ओर इशारा किया है।
चरम सीमा के साथ अर्ध-जादुई पहचान के माध्यम से
शास्त्रीय अरबी संस्कृति। उनके अनुसार, वास्तविक अलगाव भाषा, संस्कृति आदि की निरपेक्षताओं में स्वयं की इस हानि में निहित है।
और अतीत की गाथा, मध्ययुगीन दुनिया के परम सत्य: जैसा कि वह वर्णन करता है, अल-जाहिज़ की भाषा,
अल-अशरी का विद्वत्तावाद, अल-ग़ज़ाली का रहस्यवाद।2
मोहम्मद अरकून भी इसी प्रकार दावा करते हैं कि "इस्लामी संदर्भों में उभरने वाले सभी समकालीन विमर्श अनिवार्य रूप से
यह इस्लाम के उदय काल और उसकी सभ्यता के 'स्वर्ण युग' को संदर्भित करता है, जिसका उपयोग पौराणिक संदर्भों के रूप में प्रतिक्रियाओं को दर्शाने के लिए किया जाता है।
“मूल्यों”—नैतिक और कानूनी प्रतिमानों को परिभाषित करना।”3 इस प्रकार की पहचान से वह ज्ञान उत्पन्न होता है जो सर्वमान्य हो जाता है। इस 88 नादिया मारिया एल शेख

इस संदर्भ में, अरकून ने तर्क दिया है कि अरब विद्वानों की यह जिम्मेदारी है कि वे "कार्यप्रणालीगत और ज्ञानमीमांसीय विकल्प तैयार करें"
नए क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करना न केवल अर्थ के नए क्षेत्रों का अन्वेषण करना है, बल्कि मुख्य रूप से कई विरासत में मिले मुद्दों की समझ के नए स्तरों को स्थापित करना है।
जो अनसुलझे ही रह गए हैं।”4 इस अध्याय में, मैं चौथी/दसवीं शताब्दी के दौरान बगदाद में अब्बासिद हरमों का अध्ययन करके ऐसे ही एक “विरासत में मिले” मुद्दे की जाँच करता हूँ।
विभिन्न प्रसिद्ध ऐतिहासिक और साहित्यिक ग्रंथों का उपयोग करते हुए शताब्दी का सर्वेक्षण।
हरमों से संबंधित प्रासंगिक संदर्भों के लिए स्रोतों का अध्ययन करते हुए, मैंने इन्हें अरब "मध्ययुगवाद" और पश्चिमी प्राच्यवाद दोनों द्वारा प्रचारित कालभ्रमित कल्पना के विपरीत स्थापित किया है, जो हमारी ऐतिहासिक समझ को धुंधला करती रहती है। इस प्रकार यह अध्याय हरम की प्रचलित छवियों की स्थिर, कालातीत प्रकृति और प्राच्यवादी साहित्य में संदर्भित करने की प्रवृत्ति दोनों को चुनौती देता है।
“हरम” शब्द का प्रयोग एकवचन में करना—जैसे कि हरम केवल एक ही प्रकार का होता हो। इसके विपरीत, मेरा तर्क है कि महिलाओं के लिए विभिन्न प्रकार की रहने की व्यवस्थाएँ थीं।
अब्बासिद काल में इस्लामी घरों में हरमों की स्थिति का विस्तृत अध्ययन करने के लिए, मैं रूढ़ियों और घिसी-पिटी बातों से हटकर, एक विशेष सम्मेलन में हरमों की विस्तृत जाँच करता हूँ।
विशेष ऐतिहासिक क्षण. मैं खलीफा अल-मुक्तदिर के हरम की चर्चा करता हूं (295–320/908–32), इसकी संरचना के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का विश्लेषण करते हुए, जिसका प्रयोग कई हरम महिलाएं करने में सक्षम थीं।
खलीफा के शासनकाल से संबंधित वृत्तांत इस प्रकार की जांच के लिए विशेष रूप से उपयोगी हैं क्योंकि विभिन्न गुटों के बीच सत्ता संघर्ष जारी था। दरबार में खलीफा की मां को, साथ ही कई हरम की महिलाओं को, अनुमति दी गई थी। महिलाओं को राजनीतिक शक्ति और प्रभाव का प्रयोग करने के लिए। जबकि जटिल, बहुविवाहित हरम का मॉडल, जिसमें शामिल हैं

एक से अधिक पत्नियों, रखैलियों और हिजड़ों का प्रचलन खलीफा के हरम तक ही सीमित था, जो कि आम लोगों के वास्तविक जीवन के अनुभवों से बहुत दूर था। इस प्रकार, दूसरा
इस अध्याय के एक भाग में घरेलू हरमों पर चर्चा की गई है। अल-तनुखी (940-94) के दो अदब संकलन, किताब अल-फराज बा'दा अल-शिद्दा और निशवार अल-मुहदारा वा अख़बार अल-मुधकारा, विशेष रूप से मूल्यवान हैं क्योंकि इनमें इस काल के सामाजिक इतिहास से संबंधित सामग्री शामिल है। यद्यपि उद्देश्य और विषयवस्तु में भिन्न हैं, फिर भी दोनों अदब के भीतर एक साहित्यिक शैली से संबंधित हैं जो तीसरी/नौवीं और चौथी/दसवीं शताब्दियों में काफी लोकप्रिय थी - अर्थात्, शिक्षाप्रद और मनोरंजक किस्सों का संकलन। अदब को उस रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें कही गई सर्वोत्तम बातों को शामिल किया गया है।
हर संभव विषय पर कविता, गद्य, सूक्ति और उपाख्यान, जो
एक शिक्षित व्यक्ति, एक अदीब, को यह ज्ञान होना चाहिए। अदीब भाषा, साहित्य और नैतिक एवं व्यावहारिक व्यवहार से संबंधित कई समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है।5 इस प्रकार की उपाख्यानात्मक पुस्तकों में न केवल ऐतिहासिक जानकारी होती है, बल्कि सामाजिक मूल्य और सामाजिक आचरण की कला भी निहित होती है।6
खलीफा हरम, घरेलू हरम 89

हरम: कुछ परिभाषाएँ

प्राच्यवाद के आलोचक हरम को एक काल्पनिक अवधारणा मानते हैं, और वे हरम में "वास्तविकता" के बारे में किसी भी प्रकार की सच्चाई स्थापित करने में असमर्थता की ओर इशारा करते हैं।
ऐसे आलोचक "वास्तविक" हरम और यूरोपीय साहित्य के हरम के बीच अंतर करते हैं, जो "केवल कल्पना है, एक विशुद्ध काल्पनिक रचना है जिस पर यूरोप के अपने यौन दमन, कामुक कल्पनाएँ और
वर्चस्व की इच्छा को प्रक्षेपित किया गया था।”7 फातिमा मर्निसी ने भी इसी प्रकार अपने हरम की ऐतिहासिक वास्तविकता और उस हरम के बीच अंतर किया है जिसमें

वह बड़ी हुई—और पश्चिमी हरम, जिसे पश्चिमी चित्रों, ओपेरा और बैले द्वारा निर्मित छवियों से जीवंतता मिलती है, ये सभी दर्शाते हैं कि
हरम को एक यौन स्वर्ग के रूप में चित्रित किया गया है, जहाँ नग्न, असहाय प्राणी रहते हैं, जो अपनी कैद में पूरी तरह से खुश हैं।8
इस्लाम के विश्वकोश में हरम को “घर के उन हिस्सों के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द बताया गया है जहाँ प्रवेश वर्जित है, और इसलिए विशेष रूप से महिलाओं के कमरे।”9 निक्की केड्डी गुलामों और नौकरों वाले बहुविवाही कुलीन परिवारों और गैर-कुलीन परिवारों के बीच अंतर करती हैं, जो संभवतः एकविवाही थे और जिनमें कोई गुलाम या रखैल नहीं थी। पहले प्रकार के परिवारों में, हरम की गतिविधियाँ अधिक जटिल थीं, लेकिन यह “सबसे
पश्चिमी चित्रकारों द्वारा उनकी कल्पनाओं से चित्रित आलस्य और भोग-विलास का अड्डा।"10 लीला अहमद ने हरम को "एक प्रणाली" के रूप में परिभाषित किया है।
जो पुरुषों को एक से अधिक महिलाओं के साथ यौन संबंध बनाने की अनुमति देता है" और "एक प्रणाली" के रूप में
जिसके तहत किसी पुरुष की महिला रिश्तेदारें—पत्नियां, बहनें, माताएं, चाचियां और बेटियां—अपना अधिकांश समय और रहने की जगह साझा करती हैं, और इसके अलावा,
जिससे महिलाओं को अपने समुदाय की अन्य महिलाओं तक बार-बार और आसानी से पहुँच प्राप्त हो सके।”11 हुदा शारावी के संस्मरणों की प्रस्तावना में, बीसवीं शताब्दी के आरंभिक काल की एक प्रमुख मिस्र की नारीवादी, मार्गोट बद्रान
इसमें कहा गया है कि हरम घर का वह हिस्सा था जहाँ महिलाएं और बच्चे अपना दैनिक जीवन व्यतीत करते थे। उच्च और मध्यम वर्ग की महिलाएं हरम में रहती थीं।
वे अपने घरेलू कमरों के निजी घेरे में रहती थीं और बाहर जाते समय अपने चेहरे को ढक लेती थीं, इस प्रकार वे अपनी एकांतता को अपने साथ ले जाती थीं। 12 इस प्रकार की परिभाषाएँ यह सुझाव देती हैं कि
सामाजिक परिवेश और समय में विविधता, लेकिन साथ ही अर्थ का एक साझा मूल तत्व भी।

घरेलू स्थान को सार्वजनिक कक्षों और हरम के निजी पारिवारिक स्थान में विभाजित करने का कोई स्पष्ट यौन अर्थ नहीं है।
मुस्लिम समुदाय के संदर्भों में घरेलू स्थान पर हाल के शोध ने आम तौर पर कड़ाई से सीमांकित क्षेत्रों की धारणा को चुनौती दी है, यह दर्शाते हुए कि निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में कई तरह के संपर्क बिंदु साझा किए गए थे। ऐतिहासिक परिस्थितियाँ।13 लेस्ली पियर्स के अनुसार, जबकि हरम की संस्था यौन मर्यादा की धारणाओं से उत्पन्न हुई थी, "यौनता 90 नादिया मारिया एल शेख

घर के भीतर प्रमुख व्यवस्था सिद्धांत नहीं।"14 रीना लुईस
उन्होंने "ऑटोमन महिलाओं के पृथक क्षेत्रों को स्थानों के रूप में वर्णित किया है"
राजनीतिक सक्रियता और सांस्कृतिक उत्पादन के।¹⁵ सफ़वी काल पर अपने अध्ययन में, कैथरीन बाबायान ने भी इसी तरह निष्कर्ष निकाला है कि हरम को
विभिन्न संदर्भों में अर्थ की विभिन्न परतें, जिन्होंने महिलाओं को राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक भूमिकाएँ निभाने के लिए कार्य और चैनल प्रदान किए।16 बल्कि
महिलाओं को बाहरी दुनिया से अलग-थलग करने के बजाय, हरम ने एक केंद्रीय सूचना के प्रसार में उनकी भूमिका।17 एमिली एप्टर ने हरम को एक ऐसी जगह के रूप में परिभाषित किया है जहाँ महिलाएं इकट्ठा होती हैं और एक दूसरे से बात करती हैं।
उन्होंने हरमों की उस अस्पष्टता को उजागर किया है जो महिलाओं की रक्षा और पोषण करने के साथ-साथ उन्हें कैद भी कर सकती है।18
ह्यू कैनेडी ने बताया है कि अब्बासिद ग्रंथों में 'हरिम' शब्द का प्रयोग बहुत कम होता है। इन ग्रंथों में खलीफा के हुरम—उसकी महिलाओं और उसके नियंत्रण में रहने वाले अन्य लोगों—का उल्लेख है। (हुरम शब्द की उत्पत्ति 'हरिम' से हुई है।) इसलिए, यहाँ किसी विशेष भवन जैसे भौतिक स्थान के बजाय लोगों के समूह का उल्लेख है।19 उदाहरण के लिए, अल-मसूदी (मृत्यु 345/956) बात करते हैं
दार अल-हुरम के बारे में है और स्थानिक रूप से संदर्भित करने के लिए हरीम शब्द का प्रयोग नहीं करता है।

महिलाओं के कमरे।20 अल-तनुखी की निशवार अल-मुहदारा में इब्न अल-जस्सास से जुड़े एक किस्से में महिलाओं के कमरों का उल्लेख है। उन्हें खलीफा के महल में कैद कर लिया गया था। एक हिजड़ा महल के विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए उनके साथ गया और उन्हें खलीफा की माता के कमरों (दार) तक ले गया। अल-सय्यिदा), ताकि वही उसे रिहा कर सके, क्योंकि वही थी
जिसने उसकी ओर से हस्तक्षेप किया।21 इसके अलावा, जब अल-मुक्तादिर ने वज़ीर इब्न अल-फ़ुरत को कैद करने का फैसला किया, तो वज़ीर के महल को लूट लिया गया।
सूत्रों में इब्न अल-फुरत के महल के निजी क्षेत्रों का उल्लेख करते हुए निम्नलिखित का प्रयोग किया गया है:
शब्द दुर् (दार का बहुवचन): अल-सबी (मृत्यु 448/1056) आवासों के बारे में बात करते हैं।
उसके बच्चों और पत्नियों (दुर अवलादिही वा अहलिही) का; आरिब (मृत्यु लगभग 370/980) भी दुर का उल्लेख करते हैं; और मिस्कावेह कहते हैं कि उसके हुरम अपमानित हुए थे और
उसके आवासों (दुरहु) को लूटा गया।22 निशवार में मिलने वाले अन्य संदर्भ इसी प्रकार महिलाओं के क्वार्टर को दुर अल-हुरम कहा जाता है।23 इस प्रकार, समकालीन और निकट-समकालीन स्रोतों में, हरिम शब्द का प्रयोग आम तौर पर घर के भीतर महिलाओं के स्थानिक स्थान को विशेष रूप से व्यक्त करने के लिए नहीं किया जाता है, बल्कि लोगों के एक विशिष्ट समूह को संदर्भित करने के लिए किया जाता है।

the har e m o f a l-m U q ta dI r

295/908 में अब्बासिद खलीफा अल-मुक्ताफी की मृत्यु से एक संकट उत्पन्न हो गया, क्योंकि
उन्होंने उत्तराधिकार के लिए कोई व्यवस्था नहीं की थी। अल-मुक्ताफी के तेरह वर्षीय भाई जाफर [अल-मुक्तादिर] को आपत्तियों के बावजूद खलीफा घोषित कर दिया गया।
खलीफा हरम, घरेलू हरम 91

उनकी उम्र के कारण उठाई गई आपत्तियाँ। उनका खिलाफत, अस्थिरता का दौर था। सरकार की शुरुआत एक प्रकार की रीजेंसी परिषद की नियुक्ति से हुई, जिसमें शघाब, उनकी मां; ग़रीब, उनके मामा; मुनीस, कोषाध्यक्ष; और बगदाद सेना के नेता जनरल मुनीस अल-मुज़फ़्फ़र शामिल थे।
प्रमुख हिजड़ा साफी और दरबारी सौसान। इस स्थिति के कारण प्रशासन के सदस्य, महल के सेवक, वज़ीर और महिलाएं भी इसमें शामिल हो सकते थे।
खलीफा के हरम में राजनीतिक सत्ता की वास्तविकताओं पर बातचीत करने के लिए स्वयं। हालाँकि अल-मुक्तादिर का खिलाफत कुछ अन्य खिलाफतों से इस मायने में भिन्न था कि इसमें यह रीजेंसी परिषद थी और इस प्रकार इसने शायद अधिक हद तक स्वतंत्रता प्रदान की हो।
हालांकि अन्य खलीफा परिवारों की तुलना में उनके परिवार की संरचना संभवतः अन्य खलीफाओं के परिवारों के समान ही थी।
चौथी/दसवीं शताब्दी के आरंभ में, खलीफा का निवास, जिसे दार अल-खिलाफा भी कहा जाता था, कई महलों से मिलकर बना एक विशाल परिसर था। इन महलों की संरचना और आंतरिक व्यवस्था अज्ञात है। न केवल पुरातात्विक जानकारी अपर्याप्त है, बल्कि प्रसिद्ध कला इतिहासकार ओलेग ग्रैबर के अनुसार, लिखित जानकारी भी अपर्याप्त है, क्योंकि "कहीं भी"
क्या हम ऐसा विवरण पढ़ते हैं जिसे वास्तुशिल्पीय रूपों में रूपांतरित किया जा सके?24
हम जानते हैं कि दार अल-खिलाफा एक साथ खलीफा सत्ता के प्रदर्शन के लिए एक मंच के रूप में, और प्रशासनिक केंद्र के रूप में कार्य करता था।
एक विशाल साम्राज्य के रूप में, और खलीफा परिवार के निवास स्थान के रूप में। इस परिसर में प्रमुख महिलाओं के अपने-अपने अपार्टमेंट थे, और संभवतः इसी स्थान पर यह स्थित है।
वह समय जब महल के भीतर एक अलग महिला क्वार्टर पहली बार अस्तित्व में आया। 25
चौथी/दसवीं शताब्दी के आरंभिक अब्बासिद हरम में परिवार के सदस्य और प्रशासनिक या सेवा पदानुक्रम शामिल थे। पूर्व में शामिल थे:
खलीफा की माता, पत्नियाँ, रखैलें और बच्चे, तथा उसकी अविवाहित, विधवा या तलाकशुदा बहनें और चाचियाँ। प्रशासनिक पदानुक्रम में निम्नलिखित शामिल थे:

हरम के उच्च पदस्थ प्रशासनिक अधिकारी: हिजड़े; परिचारिकाएँ, जिनकी भूमिका पर नीचे चर्चा की गई है; महिला नौकरानियाँ, जो हरम के घरेलू कामकाज करती थीं; और महिला दासियाँ। (हिलाल अल-सबी' देखें)
“आम तौर पर यह माना जाता है कि अल-मुक्तादिर बि-अल्लाह के दिनों में... निवास में 11,000 हिजड़े [खादिम] रहते थे—7,000 काले और 4,000 श्वेत स्लाव... 4,000 स्वतंत्र और दासी लड़कियाँ और हजारों कक्ष सेवक।”26
खलीफा के हरम में विभिन्न आयु वर्ग के विविध समुदाय शामिल थे जो एक दूसरे के साथ अलग-अलग तरीकों से और अलग-अलग स्तरों पर बातचीत करते थे।
हरम का स्थान स्त्री संबंधों के एक जाल का स्थल था, जो अपनी आंतरिक पदानुक्रमों द्वारा संरचित था। बेशक, चौथे/
दसवीं शताब्दी में बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी। खलीफा की न केवल चार कानूनी पत्नियां थीं, बल्कि और भी बहुत कुछ था।
लेकिन साथ ही साथ कई रखैलें भी थीं जो खलीफा के हरम में रहती थीं।
एक बार जब रखैल बच्चे को जन्म दे देती थी, तो वह उम्म अल-वलाद बन जाती थी और 92 नादिया मारिया अल शेख

कानूनी और सामाजिक रूप से उन्नत स्थिति का आनंद लिया।27 प्राप्त करने की आशा
रानी माँ का दर्जा—जैसा कि अल-मुक्तादिर की माँ के साथ हुआ—जरूर होना चाहिए
हरम में रखी गई हर रखैल ने उनका मनोरंजन किया था। जन्म से बीजान्टिन, उम्म अल-मुक्तादिर, जिसे तब नईम कहा जाता था, को खरीदा गया था।
खलीफा अल-मुअतदीद (शासनकाल 279/892–289/902)। 282/895 में, नईम ने एक बेटे, जाफ़र को जन्म दिया। उस समय, खलीफा ने उसका नाम बदलकर शग़ब रख दिया। उसके पुत्र को जन्म देना दूसरे के लिए परेशानी (शग़ब) माना गया।
खलीफा की पत्नियों में से एक होने के कारण ही उनका यह नाम पड़ा। अल-मुतादिद की मृत्यु के बाद उन्हें उम्म अल-वलाद के रूप में रिहा कर दिया गया और वे दरबार की सबसे प्रभावशाली व्यक्ति बन गईं।
हरम के भीतर रहकर, शग़ाब और उसके साथी निजी और सार्वजनिक जीवन को अलग करने वाली सीमा को पार नहीं कर पाए।

इस प्रतिबंध का बहुत कम प्रभाव पड़ा, क्योंकि वास्तव में प्रमुख राजनीतिक गतिविधियां जारी रहीं।
खलीफा महल के निजी कमरों से।
उस दौरान खलीफा की मां तक पहुंच विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी। अल-मुक्तादिर के शासनकाल में, उन्होंने अपने राजनीतिक हस्तक्षेप, सरकार को दिए गए वित्तीय योगदान और व्यापक परोपकारी कार्यों के माध्यम से इस काल के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। स्रोतों से खलीफा और उनकी माता के बीच घनिष्ठ संबंध का पता चलता है, जिसमें कहा गया है कि खलीफा अपना काफी समय हरम में स्थित अपनी माता के कमरों में बिताते थे।
एक सूत्र के अनुसार, वज़ीर के रूप में अपनी नई नियुक्ति के बारे में सुनकर, अल-खसीबी ने "यह महसूस करते हुए कि उन्हें वज़ीर का पदभार ग्रहण नहीं करना चाहिए था"
अल-खसीबी के लिए उम्म अल-मुक्तादिर के सचिव (कातिब) बनना खलीफा के वज़ीर बनने से बेहतर था। अल-खसीबी की वज़ीर के रूप में नियुक्ति उम्म अल-मुक्तादिर से उनकी घनिष्ठता के कारण हुई थी। उम्म अल-मुक्तादिर ने ही अपनी बहन खतीफ के साथ मिलकर 313/925 में उन्हें वज़ीर नियुक्त करने का सुझाव दिया था। इससे पहले वे थुमल की दासी के कातिब थे।28 इस प्रकार, उनका राजनीतिक करियर उम्म अल-मुक्तादिर के कारण ही संभव हो पाया।
हरम की महिलाओं के लिए बहुत कुछ।
उम्म अल-मुक्तादिर ने दरबार में गुटों के भीतर और उनके बीच सत्ता संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विभिन्न अवसरों पर, उन्होंने—
उन्होंने अपने बेटे के लिए राजनीतिक स्थिति का आकलन किया। ऐसी ही एक घटना 311/923 में घटी, जब वज़ीर इब्न अल-फ़ुरत, मुख्य दरबारी नस्र को गिरफ्तार करने की उम्मीद में, अल-मुक्तादिर की सहमति लगभग हासिल कर ही चुके थे— लेकिन उम्म अल-मुक्तादिर के हस्तक्षेप से ऐसा नहीं हो सका। उन्होंने न केवल नस्र को बचाया, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने खलीफा के दरबारियों के बीच सत्ता का संतुलन भी बहाल किया।
अल-मुक्तादिर ने अपने बेटे को याद दिलाया कि इब्न अल-फुरत ने जनरल मुनीस को पहले ही अपने दल से हटा दिया था। उसने बताया कि अब उसकी इच्छा नस्र को बर्बाद करने की है।
बेटे, उसका मकसद था "तुम्हें अपने वश में करना।" फिर उसने उससे पूछा: "क्या

मैं यह जानना चाहूंगा कि यदि वह शरारत करने का इरादा रखता है तो आप किससे सहायता मांगेंगे?
खलीफा हरम, घरेलू हरम 93

क्या कोई आपकी गद्दी से बेदखल करने की साजिश रच रहा है?”29 उम्म अल-मुक्तादिर ने सफलतापूर्वक मना लिया
खलीफा ने कहा कि उनकी सुरक्षा में नस्र का योगदान उनके अपने योगदान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था।
खलीफा नासर की गिरफ्तारी के बाद उससे धन जब्त कर लेगा। उम्म अल-मुक्तादिर के साथ नासर के संबंध उसके अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण थे।
अपने बेटे को सटीक राजनीतिक सलाह देने के अलावा, उन्होंने अपने वित्तीय योगदान और परोपकारी कार्यों के माध्यम से भी शासन का समर्थन किया। गतिविधियाँ। जब 927 ईस्वी में कारमाथियनों ने बगदाद को धमकी दी, उम्म अल-मुक्तादिर ने अपनी निजी धनराशि में से पांच लाख दीनार सरकारी खजाने में सैनिकों पर खर्च करने के लिए दे दिए। उनका यह कार्य ऐतिहासिक था, क्योंकि उनके शब्दों में,
वज़ीर अली बिन ईसा के अनुसार, “धन्य पैगंबर के निधन के बाद से मुसलमानों पर इससे बड़ी कोई विपत्ति नहीं आई है।”30 उम्म अल-मुक्तादिर की
उदारता का विशेष ध्यान तीर्थयात्रियों पर भी था। इब्न अल-जौज़ी कहते हैं: "कहा जाता है कि शग़ाब ने..."
वह अपनी निजी संपत्तियों से हर साल दस लाख दीनार तीर्थयात्रा के लिए देती थीं। वह तीर्थयात्रियों के कल्याण के लिए समर्पित थीं, पानी के टैंक और अन्य सामान भेजती थीं।
डॉक्टरों को बुलाकर जलाशयों की मरम्मत का आदेश दिया गया।31 उम्म अल-मुक्तादिर की आर्थिक शक्ति उनकी कृषि संपदाओं पर आधारित थी, जो उन्हें भूमि अनुदान के रूप में प्राप्त हुई थीं। उनका धन ही उनकी शक्ति का स्रोत बन गया, और इसी कारण
इस अवसर ने उन्हें अधीनस्थ संरक्षण नेटवर्क की एक श्रृंखला विकसित करने की अनुमति दी। उनके पास सचिवों और अन्य अधिकारियों का अपना एक दल था। साहित्यिक स्रोतों में महल परिसर के हरम भाग का बहुत कम उल्लेख मिलता है।
अल-मुक्तादिर के हरम का एक दुर्लभ वर्णन मिलता है।

हरम तक पहुँचने के लिए जिस मार्ग को पार करना पड़ता था, उसका महल के सार्वजनिक क्षेत्रों और हरम के बीच आवागमन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
इससे संचार की आवृत्ति प्रभावित हो सकती थी और यह खलीफा और उसके करीबी लोगों तक त्वरित पहुंच के लिए एक सीमित कारक बन सकता था।
उतना ही महत्वपूर्ण यह है कि यह विवरण एक बहुस्तरीय रहस्यमय स्थान को प्रकट करता है—
एप्टर के शब्द का प्रयोग करते हुए—जहां पहुंच में आने वाली बाधाओं को संकेंद्रित रूप से गिना जाता है, जो "अंतर्संयम की स्थानिक अनुभूति" की खोज का गठन करता है।34
फिर भी, यह किस्सा मुख्य रूप से उन बाधाओं के उल्लंघन पर ही केंद्रित है। हिजड़े संदेशवाहक के रूप में काम करते थे क्योंकि वे किसी भी लिंग के लोगों के बीच प्रवेश कर सकते थे।
अन्य पुरुषों के लिए वर्जित स्थान। वास्तव में, हिजड़े सेवकों को खलीफा परिसर के सभी हिस्सों में स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति थी। उनके कर्तव्यों में शामिल थे...
पूरे परिसर में, क्योंकि वे अपने स्वामी और उनकी पत्नियों, रखेलों और महिला रिश्तेदारों के बीच मध्यस्थ के रूप में काम करती थीं। उनके संबंध हरम की महिलाओं ने हिजड़ों को उच्च पदों पर बैठे पुरुषों को प्रभावित करने के अवसर प्रदान किए।
पदों के बारे में एक घटना, जिसमें काले हिजड़े मुफ़लिह का ज़िक्र है, यह दर्शाती है कि इस घनिष्ठ पहुँच ने हिजड़ों को काफ़ी प्रभाव प्रदान किया। वज़ीर पद से बर्खास्त होने के बाद, हामिद ने खलीफ़ा से मिलने की कोशिश में 311/923 में महल में आकर मुख्य दरबारी नस्र से मुलाकात की। लेकिन नस्र की मुफ़लिह पर निर्भर रहना अपरिहार्य था, क्योंकि मुफ़लिह ही वह अधिकारी था जो अल-मुक्तादिर के निजी कक्षों में होने पर उनसे मिलने की अनुमति मांगता था। मुख्य हिजड़ा होने के नाते, मुफ़लिह खलीफ़ा तक पहुँच को नियंत्रित करता था।
बाद वाला हरम में था। चूंकि नस्र हरम में प्रवेश नहीं कर सकता था, इसलिए उसे मुफ़लिह से मिलना पड़ा। मुफ़लिह की स्थिति, यानी कि वह एक हिजड़ा था— दूसरे शब्दों में,

एक पुरुष के रूप में उनकी अस्पष्ट लैंगिक पहचान ने मुफ़लिह को बहुमूल्य पहुँच प्रदान की। हिजड़ों की शक्ति सीधे इसी एक कारक से उत्पन्न होती थी: उन्हें खलीफ़ा के निजी कक्ष, हरम में, उनके पास स्थानिक पहुँच प्राप्त थी। जब किसी अन्य पुरुष ने ऐसा नहीं किया।35
शायद हरम की महिलाओं का एकमात्र वर्ग जिसके सदस्य ऐसा नहीं करते थे स्थानिक प्रतिबंधों का पालन करना पड़ता था, यह हरम की परिचारिका थी। क़हरमाना, जिन्होंने कई कार्यकारी और प्रबंधकीय कार्य किए-
खलीफा हरम, घरेलू हरम 95

घर के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएं।
उस विशाल परिवार में भोजन और वस्त्र की व्यवस्था करनी पड़ती थी, साथ ही उनकी अन्य दैनिक जरूरतों का भी ध्यान रखना पड़ता था।
आवश्यकताओं की पूर्ति करनी आवश्यक थी। इन कर्तव्यों को पूरा करने के लिए, क़हरमानाओं को (महिलाओं के लिए) महल में आने-जाने का अनूठा विशेषाधिकार प्राप्त था:
हरम की अन्य महिलाओं, यहाँ तक कि रखैलें भी, महल से बाहर नहीं जा सकती थीं। क़हरमनाओं की गतिशीलता ने उन्हें कई अवसर प्रदान किए।
प्रभाव का प्रयोग करना। एक क़हरमाना, उम्म मूसा, एक आंदोलन का केंद्र बन गईं।
प्रमुख संरक्षण नेटवर्क। इस प्रकार, सहायक न्यायालयों की एक श्रृंखला थी जो राजनीति और संरक्षण के प्रतिद्वंद्वी केंद्रों के रूप में कार्य कर सकती थी। महिला सदस्य
घर के सदस्यों ने न केवल स्वयं को आगे बढ़ाया बल्कि दूसरों को भी आगे बढ़ाया—या उन्हें पीछे रखा।
खलीफा और उनकी माता के निकट रहना संबंध मजबूत करने का एक निश्चित तरीका था।
दरबार में एक शक्ति केंद्र। और चूंकि खलीफा तक पहुंचने वाली हर चीज को उसके दल से होकर गुजरना पड़ता था, इसलिए कहरामना खलीफा और उसकी मां के साथ अपने संपर्कों के माध्यम से शक्तिशाली और प्रभावशाली लोगों के साथ गठबंधन बनाने में सक्षम थे। उम्म मूसा
खलीफा की माता और उनके बीच प्रमुख मध्यस्थ के रूप में कार्य किया।

खलीफा के साथ-साथ दरबार के अन्य अधिकारियों के बीच भी। हम पढ़ते हैं कि अल-मुक्तादिर के खिलाफत के दौरान, "विभिन्न धूर्तों ने पत्र लिखकर उम्म मूसा के माध्यम से अल-मुक्तादिर को पद मांगने और धन का वादा करने में कामयाबी हासिल की।"36 क़हरमानों का प्रभाव उनके द्वारा प्रकट किया गया था। वज़ीरों और अन्य उच्च अधिकारियों के विरुद्ध सफल साजिशों में भूमिका। प्रयास करना
298-99/911-12 में इब्न अल-फुरत को बर्खास्त करने के लिए, मुहम्मद बिन खाकान ने उम्म मूसा से खलीफा को संदेश पहुंचाने के लिए कहा और
उनकी मां ने इब्न अल-फुरत को खलीफा के खिलाफ अलीद साजिश में फंसाया। उन्होंने तुरंत इब्न अल-फुरत को कैद कर लिया और उनकी संपत्ति जब्त कर ली। और मुहम्मद को नियुक्त किया। वज़ीर के रूप में खाक़ान।37
एक अन्य क़हरमाना, ज़ायदान की गतिविधियाँ क़हरमानाओं की राजनीतिक भूमिका का एक उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। उच्च पदस्थ राजकीय कैदियों को खलीफ़ा परिसर में हल्की कैद के लिए ज़ायदान की हिरासत में सौंप दिया जाता था। जेलर के रूप में ज़ायदान की भूमिका ने उन्हें प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क में आने का अवसर दिया, ऐसे व्यक्ति जो अस्थायी रूप से सत्ता से बाहर हो गए थे, लेकिन जिनके पास
सत्ता और प्रभाव में फिर से उभरने की क्षमता। इन महत्वपूर्ण हस्तियों तक उनकी विशेष पहुंच, और उनके बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करने की उनकी क्षमता।
उसके कैदियों और खलीफा ने उसे महत्वपूर्ण लाभ प्रदान किया और उसे अतीत के उपकारों पर आधारित प्रभाव का जाल विकसित करने की अनुमति दी।38
राजमहल की राजनीति—या शायद अधिक सटीक रूप से, हरम की राजनीति—की आवश्यकता थी
दरबार और हरम के दायरे में अस्थायी गठबंधनों का गठन 96 नादिया मारिया अल शेख

धन, शक्ति और नियुक्तियों जैसे कुछ लाभ प्राप्त करने के लिए
उच्च पद। उपरोक्त उदाहरणों के अतिरिक्त, हमने पढ़ा कि नासर, मुख्य के रूप में

चैंबरलेन ने हरम के भीतर नए संबंध बनाने के उद्देश्य से क़हरमाना थुमल के साथ गठबंधन की मांग की।39
जनरल मु'निस द्वारा खलीफा को लिखे गए एक पत्र में हरम की महिलाओं और हिजड़ों की शक्ति, प्रभाव और धन तक पहुंच की पुष्टि की गई है।
मुनीस ने कहा कि सेना पैसों को लेकर जमकर शिकायत कर रही थी और
दरबार के हिजड़ों और महिलाओं को दी गई भूमि और प्रशासन में उनकी भागीदारी के बारे में। उन्होंने मांग की कि कुछ हिजड़ों और महिलाओं को
महिलाओं को महल से बर्खास्त कर दिया जाए और उनकी संपत्ति जब्त कर ली जाए। 40 मुनीस को दिए अपने उत्तर में, अल-मुक्तादिर ने हिजड़ों और महिलाओं का बचाव किया:

अब हमारे मित्र हिजड़ों और महिलाओं के मामले में क्या प्रस्ताव रखते हैं? जिन्हें वे महल से निकाल कर बहुत दूर भेज देंगे...
कि उन्हें तब तक अलग-थलग रखा जाए, उनकी संपत्ति से वंचित किया जाए और उनसे दूर रखा जाए जब तक कि वे धन और संपत्ति सौंप न दें।
जो उनके पास हैं, उन्हें उनके सही मालिकों को लौटा देना— यह एक ऐसा प्रस्ताव है, जिस पर यदि वे ठीक से विचार और जांच करें,
वे जानते होंगे कि यह एक अन्यायपूर्ण प्रस्ताव है, और एक ऐसा प्रस्ताव जिसका अधर्म
यह बात मुझे स्पष्ट है। फिर भी, मैं उनसे सहमत होने के लिए इतना उत्सुक हूँ... कि मैं उनकी कुछ जागीरों को जब्त करने और उन्हें समाप्त करने के आदेश दे रहा हूँ।
उनके विशेषाधिकार... और महल से उन सभी को निकालने की अनुमति है जिन्हें निष्कासित करना संभव है, जबकि जो लोग शेष रहेंगे उन्हें अनुमति नहीं दी जाएगी।
मेरे प्रशासन या परामर्शों में हस्तक्षेप करना।41

इस उत्तर में शक्तिशाली महिलाओं और हिजड़ों को जागीरदारों के रूप में स्वीकार किया गया है।
और उनके विशेषाधिकारों की ओर इशारा करता है। उनके विशेषाधिकारों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है।

प्रशासन में हस्तक्षेप। खलीफा ने उनके राजनीतिक प्रभाव को कम करने का वादा किया, लेकिन केवल मुनीस को खुश करने के लिए। इस प्रकार, हरम
स्पष्ट रूप से सीमांकित होने के बावजूद, इसकी सीमाएं पारगम्य थीं। हरम में महिलाओं की कैद का मतलब यह नहीं था कि उनकी शक्ति सीमित हो गई थी।

घरेलू हरम

खलीफा का विशाल हरम, जिसमें कई महिलाएं और हिजड़े थे, आम लोगों के घरों से बहुत अलग था। दरबार के बाहर, सख्त एकांतवास रहता था।
महिलाओं की यह प्रथा केवल संपन्न शहरी वर्ग के एक छोटे से हिस्से द्वारा ही प्रचलित थी।
ऐसे परिवार जिनमें महिलाओं ने सक्रिय आर्थिक भूमिका नहीं निभाई। इसके अलावा,
खलीफा हरम, घरेलू हरम 97

बहुविवाह एक खर्चीली शहरी प्रथा थी जो मुख्य रूप से कुछ खास वर्गों तक ही सीमित थी।
कुलीन वर्ग। अल-तनुखी की 'निश्वर' में हमें घरेलू हरमों की झलक मिलती है। अल-मुहदरा वा अख़बार अल-मुधकारा और किताब अल-फ़राज़ ब'दा अल-शिद्दा। दोनों कार्यों में, अल-तनुखी विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से समृद्ध उपाख्यान प्रस्तुत करते हैं
अब्बासिद समाज के कई पहलुओं, जिनमें महिलाओं का जीवन भी शामिल है, का उन्होंने सजीव चित्रण किया है।
प्रथाएं और दृष्टिकोण। निशवार और अन्य ग्रंथों में बड़ी संख्या में किस्से हैं।
अल-फराज की कहानियों में एक परिचित साहित्यिक शैली की कहानियां शामिल हैं, जो यथार्थता के लिए तथ्यात्मक विवरणों का उपयोग करती हैं। जूलिया ब्रे बताती हैं कि यद्यपि कुछ कहानियां तथ्यों पर आधारित हैं, वे एक गरीबी से अमीरी तक की प्रेम कहानी का भी हिस्सा हैं।42
इन किस्सों की संरचना ऐतिहासिक रिपोर्टों के औपचारिक स्वरूप का अनुसरण करती है।

निशवार की प्रस्तावना में, अल-तनुखी ने उन स्रोतों की सूची दी है जिनसे उनकी जानकारी प्राप्त हुई है, जिससे पता चलता है कि ये रिपोर्टें एक समृद्ध स्रोत प्रस्तुत करती हैं।
इराकी मुस्लिम जीवन से संबंधित सामाजिक व्यवहार के विभिन्न उदाहरण और उनके समय के समाज में। अल-फराज एक अधिक कठिन संकलन है, जिसमें विपत्ति के बाद राहत की थीम पर केंद्रित विभिन्न युगों के किस्से शामिल हैं। इस संकलन की खास बात यह है कि इसमें शामिल जानकारी कार्यों पर नहीं बल्कि परिस्थितियों पर केंद्रित है, जो इसके विस्तृत विवरण पर ध्यान देने का कारण है। फ्रांसेस्को गैब्रिएली इस बात पर जोर देते हैं कि
अल-फराज जैसे साहित्यिक संकलनों का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक महत्व है, जो अन्य विषयों के अलावा, निजी और आर्थिक जीवन, संस्थाओं और वेशभूषा के पुनर्निर्माण के लिए एक स्रोत का काम करता है।43
अल-तनुखी के संकलनों का यह संक्षिप्त परिचय आवश्यक है।
इतिहासकारों द्वारा इस प्रकार के संकलनों का उपयोग समस्याग्रस्त और इसलिए दुर्लभ होने के कारण। हालाँकि ये संकलन सामान्य मानदंडों के अनुरूप नहीं हैं।
इतिहास क्या है, इसकी परिभाषा देते हुए,44 डोमिनिक सोर्डेल ने अब्बासिद वज़ीरशाही के इतिहास को लिखने में अल-तनुखी की रचनाओं का उपयोग किया, जिसमें कहा गया है कि
यदि कोई अदब ग्रंथों का अध्ययन करे, तो “ऐतिहासिक ज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत” है।
अल-तनुखी की रचनाओं में उपाख्यान मिलते हैं।” सोर्डेल ने बताया कि निशवार में समकालीन रिपोर्टों पर आधारित वृत्तांतों का प्रामाणिक साक्ष्य के रूप में महत्व है, और भले ही कोई इन उपाख्यानों को अक्षरशः स्वीकार न करे, फिर भी इनके ऐतिहासिक महत्व को समझना कठिन नहीं है।45 अपनी पुनरावृत्ति, सार्वभौमिक मूल्यों के संचरण और आदर्शवादी चरित्र के बावजूद, अदब समाज, उसकी मानसिकता और उसकी संवेदनशीलता में होने वाले बदलावों और परिवर्तनों को दर्ज करते हुए, अपनी छवियों और रूपकों को पुनर्व्यवस्थित और साकार करता है।
जैसा कि जीन क्लाउड वाडेट कहते हैं, अदब अपने चारों ओर सर्वसम्मति का निर्माण करता है।

सामाजिक निकाय.46 अदब प्रतिनिधिक है क्योंकि इसमें कभी भी ऐसी सामग्री शामिल नहीं की जाएगी जो संकलक और उसके विश्व मूल्यों के अनुरूप न हो। दर्शक। एक विद्वान ने यह भी टिप्पणी की है कि यह समझना मुश्किल है कि 98 नादिया मारिया अल शेख क्यों

यह माना जा सकता है कि ललित साहित्य में कुछ विषय "केवल साहित्यिक" थे। ऐसे अभ्यास जो मानसिक और भावनात्मक दुनिया के बारे में कुछ भी प्रकट नहीं करते हैं।
कवि, कथाकार और उनके श्रोता।47 निम्नलिखित उपाख्यानात्मक संदर्भों को किसी भी कठोर ऐतिहासिक अर्थ में लेना आवश्यक नहीं है। विशेष
घटना घटी हो या न घटी हो। बल्कि, इस बात पर अधिक ध्यान देना चाहिए कि परिस्थितियाँ कैसी थीं, लैंगिक भूमिकाएँ कैसी थीं और उनमें किस प्रकार की अपेक्षाएँ निहित थीं।
देखने में एक सामान्य सामाजिक प्रथा।
अल-फ़राज में एक किस्सा है जिसमें एक कुलीन हरम का वर्णन है। इसमें अबू जाफ़र का ज़िक्र है, जो खलीफ़ा के चचेरे भाई का सचिव था और बाद में
अबू जाफ़र तुर्की सेनापति बजकाम (खलीफा अल-रादी के अधीन एक सैन्य कमांडर, जिसने 934-940 ईस्वी तक शासन किया) के अधीन मंत्री बन गया।
बजकाम से आया एक व्यक्ति महिलाओं के कपड़े पहनकर भेस बदलकर कई लोगों के साथ उनके साथ शामिल हो गया।
बुजुर्ग महिलाओं में से एक, अल-मुक्तादिर की चाची खतीफ के दरगाह में गई। वह दरवाजे और घर के बीच के गलियारे में दाखिल हुई और...
बुजुर्ग महिलाओं में से एक प्रभारी हिजड़े से बात कर रही थी। खतीफ प्रवेश कक्ष में प्रकट हुआ, हिजड़े को बर्खास्त कर दिया, अपने मेहमान की पहचान का पता लगाया और...
फिर उन्होंने दल को कमरों, गलियारों और भूमिगत तहखानों से होते हुए आगे बढ़ाया जब तक कि
वे सीढ़ियों के अंत में एक गुप्त कमरे में पहुँचे।48 जबकि यह कुलीन परिवार बहुत छोटे पैमाने पर इसकी प्रतिकृति बनाता प्रतीत होता है। अल-तनुखी के संकलन विस्तृत खलीफा हरम के स्थानिक विभाजन के साथ-साथ अधिक साधारण परिवारों के बारे में भी जानकारी प्रदान करते हैं।

एक किस्से में, एक आदमी अपनी प्रेमिका से हुई शादी का जिक्र करता है। वे साथ रहते थे।
काफी समय तक खुशी-खुशी: “फिर हमारे साथ भी वही हुआ जो कई जोड़ों के साथ होता है। वह मुझ पर गुस्सा हो गई और अपने कमरे का दरवाजा बंद कर लिया, मुझे अंदर आने से मना कर दिया।”
मुझे उसमें प्रवेश करने के लिए कहा गया। उसने मुझसे कहा कि मुझे उसे तलाक दे देना चाहिए। मैंने उसे मनाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मैंने उसकी महिला रिश्तेदारों से मेरी ओर से मध्यस्थता करने के लिए कहा, लेकिन
यह कारगर नहीं हुआ।” शोक और पीड़ा से व्याकुल पति ने डेरा डाल लिया।
वह महिला के दरवाजे पर रोती-बिलखती रही, जब तक कि अंततः उसे शांत नहीं किया गया।49 पुरुष का व्यवहार अन्य पत्नियों की उपस्थिति को अत्यधिक असंभावित बनाता है, और
इस वर्णन में सौतन या रखैल का कोई ज़िक्र नहीं है। इस किस्से में जिन अन्य महिलाओं का उल्लेख किया गया है, वे केवल पत्नी की महिला रिश्तेदारें हैं। अल-तनुखी अन्य घरेलू दृश्यों का वर्णन करते हैं। वज़ीर बनने से पहले, इब्न अल-फ़ुरत ने एक बार किसी के दरवाजे पर दस्तक दी। घर के मुखिया ने...
एक दर्जी ने उसे अंदर बुलाया। पाठ में आगे कुछ ऐसी बात का जिक्र है जिसका उन दोनों के बीच हुई मुलाकात के सार से व्यावहारिक रूप से कोई लेना-देना नहीं है।
दो पुरुष: मेज़बान ने अतिथि से बातचीत करते हुए उसके कपड़े अपनी पत्नी [ज़ौजातुहू] को धोने के लिए दे दिए। यह कहानी एक पत्नी की बात करती है, किसी पुरुष की नहीं।
खलीफा हरम, घरेलू हरम 99

मेज़बान की पत्नियों में से एक या उसकी रखेलों में से एक। बाद में, उसी किस्से में,
दर्जी ने इब्न अल-फुरत से मुलाकात की, जो अब वज़ीर थे। उन्होंने उन्हें अपनी पिछली मुलाकात की याद दिलाई।

और इब्न अल-फुरत ने “उसके, उसकी पत्नी (एकवचन में) और उसके बच्चों” के बारे में पूछताछ की।50 ऐसे अन्य किस्से भी हैं जो अपेक्षाकृत कम उम्र के पुरुषों से संबंधित हैं।
साधारण आय वाले, जिनकी केवल एक ही पत्नी प्रतीत होती है।51 इन सीमित संदर्भों के आधार पर यह निश्चित रूप से कहना असंभव है कि पात्र एकविवाह में थे या बहुविवाह में। हालांकि, बहुविवाह की आवृत्ति का पता लगाने के लिए सभी प्रकार के साक्ष्यों की जांच करना आवश्यक है, और हमें संभावना पर विचार करना चाहिए।
कि एकपत्नी विवाहों का सिलसिला आम था।
इसके अलावा, निशवार और अल-फराज दोनों ही ऐसे प्रमाण प्रस्तुत करते हैं जो हरम को अभेद्य और दुर्गम स्थानों के रूप में दर्शाने वाली छवि का खंडन करते हैं। हमें बताया गया है
एक युवक, बिश्र बिन अब्दुल्ला की कहानी, जिसे एक ऐसी महिला से प्रेम हो गया था जिसकी उसके पति द्वारा अत्यधिक सुरक्षा की जाती थी। बिश्र के साथ एक रात बिताने की अनुमति देने के लिए,
उसने अपने एक पुरुष मित्र को उस महिला के घर से निकलने के बाद उसके कपड़े पहनकर वापस घर लौटने के लिए कहा।52
हरम की सीमाओं का एक और उल्लंघन बेटियों से संबंधित है।
बगदाद के कुछ महत्वपूर्ण प्रतिष्ठित व्यक्ति अनैतिक कृत्यों में लिप्त पाए गए। अल-तनुखी ने पुलिस रिपोर्टों का उल्लेख किया है, "प्रत्येक रिपोर्ट में उस दिन की घटनाओं का वर्णन है। सभी
रिपोर्टों में उन महिलाओं के खिलाफ की गई छापेमारी का जिक्र था जो व्यभिचार करते हुए पाई गई थीं। वे वज़ीरों, सैन्य कमांडरों और अन्य लोगों की बेटियाँ थीं।
वे प्रतिष्ठित व्यक्ति जिनकी मृत्यु हो गई थी या जिन्होंने अपने पद खो दिए थे।”53
निशवार में इब्न अबी औफ की बेटी का भी जिक्र है, जो एक धनी और बहुत प्रभावशाली व्यक्ति थे: "यह उल्लेख किया गया है कि यह खबर बगदाद में फैल गई।"
इब्न अबी अवफ अपने घर में दाखिल हुए तो उन्होंने अपनी बेटी को एक ऐसे आदमी के साथ पाया जो

वह उसका महरम नहीं था," यानी, वह आदमी रक्त संबंध के उस दायरे में नहीं था जो विवाह को रोकता हो।54 ये अंश हमें उन छापों के बारे में जानकारी देते हैं जो किए गए थे।
पुलिस और समाज के एक विशिष्ट वर्ग की स्वतंत्र महिलाओं द्वारा अपने समाज द्वारा अनैतिक माने जाने वाले कार्यों में लिप्त होने की कहानियों का वास्तविकता से क्या संबंध है? क्या वे यह संकेत देती हैं कि उच्च वर्ग की महिलाओं में व्यभिचार आम बात थी? विशेष रूप से, ये किस्से क्या दर्शाते हैं?
महिलाओं को उनके हरमों में एकांतवास में रखने के बारे में हमें बताएं? हम इसका पूरी तरह से जवाब नहीं दे सकते।
इन सवालों के जवाब तो मिलते ही हैं, लेकिन ये किस्से इस बात का संकेत देते हैं कि उच्च वर्ग के हरमों की दीवारें अभेद्य नहीं थीं। इसके अलावा, ये किस्से एक निश्चित
उच्च वर्गों के बीच नैतिक स्वतंत्रता, जिसका कानूनी और धार्मिक ग्रंथों में कोई उल्लेख नहीं है, और जो हरम के बारे में प्रचलित धारणाओं के विपरीत है।
मानक ग्रंथ और साहित्यिक ग्रंथ इस बारे में बहुत कुछ बताते हैं कि क्या अपेक्षा की जाती थी।
महिलाएं और पुरुष। अगर अदब ग्रंथ हमें इस बारे में जानकारी नहीं देते कि पुरुष 100 नादिया मारिया अल शेख

और अगर महिलाएं वास्तव में सही व्यवहार करती हैं, तो वे हमें इस बात की जानकारी देती हैं कि लोग कैसे व्यवहार कर सकते हैं।
उन्होंने कैसा व्यवहार किया होगा और उन्हें किन सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ा होगा।
वास्तविकता को सटीक रूप से पकड़ना कठिन है, अल-तनुखी के संकलनों जैसी रचनाएँ हमें उस सामाजिक संदर्भ को समझने में मदद कर सकती हैं जिसमें पाठ्य संरचना का निर्माण हुआ था।
ये लेख लंबे समय से चले आ रहे आधिकारिक प्रवचनों को प्रतिबिंबित करते हैं, जिससे हमें पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए अपेक्षाओं की सांस्कृतिक संरचना को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है।

अब्बासिद काल के दौरान अदब में।

निष्कर्ष

इस अध्याय में चौथी शताब्दी के दौरान बगदाद में अब्बासिद हरमों का अध्ययन किया गया है।
दसवीं शताब्दी में, विभिन्न प्रसिद्ध ऐतिहासिक और साहित्यिक ग्रंथों का उपयोग करते हुए।
इसका उद्देश्य हरमों से संबंधित प्रासंगिक संदर्भों के स्रोतों का सर्वेक्षण करना था, ताकि उन्हें उस कालभ्रमित कल्पना के विपरीत स्थापित किया जा सके जो लगातार कमजोर होती जा रही है।
हमारी समझ के अनुसार, अल-मुक्तादिर के हरम के संदर्भ किसी निष्क्रिय प्राच्यवादी हरम को नहीं, बल्कि एक ऐसे हरम को दर्शाते हैं जो सर्वप्रथम और सर्वोपरि है।
एक राजनीतिक क्षेत्र, जिसमें उच्च पदों पर आसीन महिलाओं के साथ-साथ प्रमुख हिजड़ों ने भी खलीफा की प्रमुख राजनीति में भाग लिया। यह स्पष्ट रूप से पारंपरिक कथा के पुरुष-प्रधान हरम से भिन्न है। ऐसा दृष्टिकोण भी विरोधाभासी है।
पश्चिमी देशों में हरम को वेश्यालय जैसी यौन जेल के रूप में देखने की धारणा के साथ। इसके अलावा, जानकारी इस दावे का समर्थन करती है कि
परिवार, समुदाय और राजनीति तथा सत्ता के सार्वजनिक क्षेत्र के बीच की रेखाएँ धुंधली हो गईं।
पूर्व-आधुनिक समाजों में।55 हालाँकि महिलाओं के पास वास्तविक राजनीतिक पद नहीं थे, फिर भी वे सार्वजनिक मामलों को प्रभावित करने की अच्छी स्थिति में थीं, भले ही अप्रत्यक्ष रूप से। हरम के भीतर रहकर, उम्म अल-मुक्तादिर और उनकी क़हरमानाएँ कभी-कभी निजी जीवन और निजी जीवन के बीच की सीमा को पार करने में सक्षम थीं।
सार्वजनिक क्षेत्र से। मौजूदा प्रतिबंधों ने महिलाओं को बाहर नहीं रखा। खलीफा परिसर के महिला क्वार्टरों में राजनीति करने से। इसके अलावा, अल-मुक्तादिर के शासनकाल के साक्ष्य निजी जीवन को उलट देते हैं।

सार्वजनिक द्विआधारी संरचना जो हरम की लोकप्रिय धारणाओं को आधार प्रदान करती है। जैसा कि पीयर्स ने स्पष्ट किया है, हरम पर यूरोपीय धारणा को लागू करने के लिए...
सार्वजनिक और निजी का अर्थ है इस तथ्य को अनदेखा करना कि स्थानिक संबंधों के भीतर
एकांतवास के बजाय, खलीफा के घर के भीतरी भाग से निकटता ही सत्ता और प्रतिष्ठा की ओर ले जाती थी।56 रूबी लाल ने भी "अंतर्निहितता" की ओर इशारा किया है।
मुगल दरबारों और राजाओं के रोजमर्रा के जीवन में घरेलू जगत का समावेश, या फिर दरबारों और राजाओं का घरेलू जीवन में अंतर्निहित जुड़ाव।
विश्व।"57 इन निष्कर्षों के अनुरूप, अल-मुक्तादिर का हरम
राजनीतिक सत्ता की प्रकृति और राजनीतिक गतिविधियों के स्थान पर सवाल उठते हैं।
खलीफा हरम, घरेलू हरम 101

पाठ्य प्रमाण निष्क्रिय, आलसी की रूढ़िवादिता को अमान्य कर देते हैं।
यह पुस्तक हरम की महिलाओं का चित्रण करती है और दरबार में सक्रिय रूप से शामिल महिलाओं की छवि प्रस्तुत करती है।
राजनीति और उच्च स्तर का प्रभाव डालने के कारण। विभिन्न किस्सों और घटनाओं के आलोक में, हरम की एकांतवास स्थल के रूप में छवि ध्वस्त हो जाती है।
यहां ऐतिहासिक जानकारी दी गई है। हरम की दीवारें छिद्रयुक्त थीं, जिससे क़हरमनाओं और हिजड़ों के माध्यम से बाहरी दुनिया से संपर्क संभव हो पाता था। इसके अलावा, ऐतिहासिक और अर्ध-ऐतिहासिक कहानियों में ऐसे पात्रों का वर्णन मिलता है जो खलीफा के हरम और कुलीन परिवारों की सीमाओं को पार करने में सफल होते हैं।
इसके अलावा, अल-तनुखी के संकलनों में वर्णित किस्से सर्वव्यापी बहुविवाह वाले हरम के मिथक का समर्थन नहीं करते हैं। इससे हमें अब्बासिद समाजों में विवाह के स्वरूपों की अपनी जांच का विस्तार करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। जबकि

खलीफाओं का हरम बहुविवाह प्रथा पर आधारित था और उसमें कई रखैलें होती थीं, जबकि अधिक साधारण परिवारों के संदर्भ एकविवाह प्रथा का संकेत देते हैं। ऐसा भी प्रतीत होता है कि
कुछ वर्गों की महिलाएं कुछ प्रतीत होने वाले सख्त नियमों और सीमाओं का उल्लंघन करने में सक्षम थीं। परिभाषा में वर्गों के बीच अंतर
एक महिला के लिए उचित और नैतिक व्यवहार क्या है, इसके लिए अध्ययन में वृद्धि की आवश्यकता है।
मुस्लिम समाजों में वर्ग और लिंग संरचनाओं को आकार देने में हरम की भूमिका का विश्लेषण करने में सूक्ष्मता आवश्यक है। विभिन्न वर्गों की स्वतंत्र महिलाओं और दासी लड़कियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करना महत्वपूर्ण है। इस प्रकार का ज्ञान विभिन्न स्थानिक स्थितियों को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।
उन्हें विभिन्न ऐतिहासिक क्षणों में, और सामाजिक और नैतिक विविधता को महिलाओं की विभिन्न श्रेणियों के लिए उपलब्ध संभावनाएं। केवल इसी जानकारी से हम महिलाओं पर सैद्धांतिक और वास्तविक प्रतिबंधों के बीच के अंतर को पाट सकते हैं और अब्बासिद "हरमों" की बेहतर समझ प्रदान कर सकते हैं।

नोट्स

इस अध्याय का एक पूर्व संस्करण "अब्बासिद हरमों का पुनरावलोकन" के रूप में प्रकाशित हुआ था।
जर्नल ऑफ मिडिल ईस्ट वूमेन्स स्टडीज 1, नं. 3 (पतझड़ 2005): 1–19. सभी अनुवाद
जब तक अन्यथा इंगित न किया जाए, यह मेरा है।
1 डेलप्लेटो, एकाधिक पत्नियाँ, एकाधिक सुख, प्रस्तावना। 2 लारौई, अरब बुद्धिजीवी का संकट, 156–58। 3 अरकून, समकालीन इस्लामी विचार में अविचार, 10।
4 वही, 15.
5 बोनेबाकर ने कहा है कि अदब की वर्तमान परिभाषाएँ "इतनी व्यापक हैं कि वे प्रदान नहीं कर सकतीं"

एक व्यावहारिक विश्लेषणात्मक ढांचा," एक अधिक सीमित परिभाषा के उपयोग का सुझाव देता है।
इसके बजाय (“अदब और ललित साहित्य की अवधारणा,” 5)। 6 लेडर और किलपैट्रिक, “शास्त्रीय अरबी गद्य साहित्य।” आगे की चर्चा के लिए देखें, एल शेख, “महिलाओं का इतिहास।”
102 नादिया मारिया अल शेख

7 बेहदाद, “द इरोटिसाइज्ड ओरिएंट,” 110.
8 मेर्निस्सी, हरेम और पश्चिम, 18–21.
9 “हरिम,” EI2 3:209.
10 केडी, “परिचय,” 11.
11 अहमद, “पश्चिमी जातीयतावाद और हरम की धारणाएँ,” 524. 12 बद्रान, परिचय,
7. अल-सैय्यद-मार्सोट ने “मिस्र में क्रांतिकारी महिला” में बताया है कि लेखक हरम जीवन का वर्णन चरम सीमाओं के संदर्भ में करते हैं: एक कामुक स्थान के रूप में या आलस्य के स्थान के रूप में।
13 अफसरुद्दीन, “परिचय।”
14 पीयर्स, द इंपीरियल हरेम, 5.
15 लुईस, प्राच्यवाद पर पुनर्विचार, 4.
16 बाबयान, "'अक़ाईद अल-निसा'।"
17 लुईस, जेंडरिंग ओरिएंटलिज्म, 154. 18 एप्टर, "औपनिवेशिक हरम में महिला समस्या।" 19 एच. कैनेडी, द कोर्ट ऑफ़ द ख़लीफ़ाज़, 160। इस खंड में स्किक का अध्याय भी देखें। 20 अल-मसूदी, मुरुज अल-दहाब वा मादीन अल-जवाहर, 4:248, 5:215। 21 अल-तनुखी, निश्वर अल-मुहदारा वा अख़बार अल-मुधकारा, 7:233। 22 अल-सबी', किताब तुहफत अल-उमारा' फाई तारीख अल-वुजारा,' 37; 'अरिब, सिलाट तारिख अल-तबारी, 29; मिस्कावेह, तज़ारिब अल-उमाम, 1:20।
23 Al-Tanukhi, Nishwar al-muhadara wa akhbar al-mudhakara, 1:287, 3:101. 24 Grabar, The Formation of Islamic Art, 158. 25 H. Kennedy, The Court of the Caliphs, 164. 26 Al-Sabi,’ Rusum dar al-khilafa, 8.
27 जिस रखैल ने अपने स्वामी को संतान दी, उसे उम्म अल-वलाद का दर्जा प्राप्त हुआ।

(बच्चे की माँ) को अब बेचा, गिरवी रखा या दान में नहीं दिया जा सकता था।
अधिकांश न्यायविदों का मानना था कि मालिक की मृत्यु पर उम्म अल-वलाद स्वतः ही स्वतंत्र हो जाती थी।
28 'अरिब, सिलात तारिख अल-तबरी, 128।
29 मिस्कवेह, तज़ारिब अल-उमाम, 1:117; अल-सबी, 'किताब तुहफत अल-उमरा' फाई तारीख भी देखें
अल-वुज़ारा,’ 47.
30 मिस्कावेह, तजारिब अल-उमाम, 1:180. 31 इब्न अल-जौज़ी, अल-मुंतज़म फ़ी तारिख अल-उमाम वा अल-मुलुक, 13:321. 32 अल-तनुखी, किताब अल-फ़राज बा'दा अल-शिद्दा, 4:362–68. 33 देखें डे ला पुएंते, “सिन लिनाजे, सिन अलकुर्निया, सिन होगर।” 34 एप्टर, “औपनिवेशिक हरम में महिलाओं की परेशानी।” यह ध्यान देने योग्य है कि प्राच्यवादी रूढ़ियों ने हरम की दुर्गमता को नाटकीय रूप दिया। हरम के केंद्र में आवागमन में कोई सुगमता नहीं है, बल्कि आंगनों और कमरों का एक घेरा है, जिनमें से प्रत्येक लगभग पूरी तरह से बंद है। ग्रोसरिचर्ड, द सुल्तान्स कोर्ट, 126 देखें। ओटोमन हरम की वास्तुकला में अलगाव और विभाजन के बारे में सावधानीपूर्वक चिंताओं पर, इस खंड में लाड का अध्याय देखें।
35 मिस्कावेह, तज़ारिब अल-उमाम, 1:87; और अब्बासिद ख़लीफ़ा का ग्रहण, 1:96। 36 मिस्कवेह, तज़ारिब अल-उमाम, 1:27. 37 अल-सबी, 'किताब तुहफत अल-उमरा' फाई तारीख अल-वुजारा,' 272-73। 38 उदाहरण के लिए देखें, पूर्वोक्त, 91।
खलीफा हरम, घरेलू हरम 103

39 अल-सुली, मा लाम युनशार मिन अव्रक अल-सुली, 149. 40 मिस्कावेह, तज़ारिब अल-उमाम, 1:189; और अब्बासिद ख़लीफ़ा का ग्रहण, 1:213।
41 मिस्कावेह, तजारिब अल-उमाम, 1:189–90; और अब्बासिद खिलाफत का ग्रहण, 1:213–14.
42 ब्रे, “एक खलीफा और उनके जनसंपर्क।” 43 गैब्रिएली, “तनुही की फरग बा’दा स-सिद्दा का साहित्यिक और ऐतिहासिक मूल्य।” 44 खालिदी, शास्त्रीय काल में अरबी ऐतिहासिक विचार, 113। 45 सोर्डेल, 749 से 936 तक अब्बासिद विजीरात, 1:35–36। 46 वडेट, “अल-ज़माख़्शरी के रबी’ अल-अबरार में अदब के महान विषय।”

47 अल-रौएहेब, अरब-इस्लामी दुनिया में समलैंगिकता से पहले, 1500–1800,
79। 48 अल-तनुखी, किताब अल-फराज बा’दा अल-शिद्दा, 4:37–38। 49 वही, 4:426। 50 अल-तनुखी, निश्वर अल-मुहदारा वा अख़बार अल-मुधकारा, 4:66-67।
51 वही, 7:237. इस खंड में शिक के अध्याय को देखें, जहाँ वे कहते हैं कि डेटा पर
ओटोमन इस्तांबुल के आम लोग इस विचार का समर्थन नहीं करते कि अधिकांश पुरुष बहुविवाही।
52 अल-तनुखी, किताब अल-फराज ब'दा अल-शिद्दा, 4:354-56। 53 वही, 4:5-6.
54 अल-तनुखी, निश्वर अल-मुहदारा वा अख़बार अल-मुधकारा, 2:117। 55 मेरिविदर और टकर, संस्करण, परिचय, महिलाओं और लिंग का सामाजिक इतिहास
आधुनिक मध्य पूर्व, 6.
56 पियर्स, द इंपीरियल हरेम, 9.
57 लाल, “हरम का ऐतिहासिककरण,” 603.

5 • घरेलू यौन संबंध

ओटोमन साम्राज्य के कानून में हरम की संस्कृति

लेस्ली पियर्स

8 जब मोरक्को के विश्व यात्री इब्न बतूता ने 1330 के दशक में पश्चिमी अनातोलिया की तुर्की रियासतों का दौरा किया, तो वे सार्वजनिक स्थानों पर इतनी अधिक महिलाओं को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। और जब उन्होंने नवोदित ओटोमन साम्राज्य, जो उनकी राय में इन सभी रियासतों में सबसे समृद्ध था, में यात्री का स्वागत ओरहान (दूसरे ओटोमन शासक) की पत्नी ने किया। उन्हें "एक धर्मनिष्ठ महिला" के रूप में वर्णित करते हुए, यात्री ने कहा कि...
इब्न बतूता ने उल्लेख किया कि वह एक उत्कृष्ट महिला थीं और उन्होंने "मेरे साथ सम्मानजनक व्यवहार किया और मुझे आतिथ्य सत्कार दिया।"1 लेकिन सोलहवीं शताब्दी के मध्य तक, जब जर्मन यात्री हंस डर्नश्वम ने इस्तांबुल का दौरा किया, तो उन्होंने टिप्पणी की कि सड़कों पर कितनी कम महिलाएं दिखाई देती थीं।2 जहाँ तक शाही परिवार की बात है, हमेशा से ही
अभिजात वर्ग के लिए चलन स्थापित करने वाली इस राजवंश की महिलाओं ने अब विदेशी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करना बंद कर दिया था। उनकी विदेश यात्राएँ भी बहुत कम होती थीं।
शाही महल को सावधानीपूर्वक सजाया गया था और धीरे-धीरे इसे केवल बुजुर्ग महिलाओं तक ही सीमित कर दिया गया था।
क्या साम्राज्य की महिला प्रजा को अनुकरण करने की आकांक्षा रखनी चाहिए? व्यवहार के इन बदलते स्वरूपों में, और यदि हां, तो किन महिलाओं का? लोग सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़े मामलों को सुलझाना चाहते थे और उन्हें इसकी आवश्यकता भी थी।
और ऐसा करने का एक तरीका यह था कि उन्होंने महिलाओं के आचरण का अध्ययन किया।
सामाजिक पद के सूचक के रूप में। डेर्नश्वम की यात्रा के समय के आसपास, ओटोमन साम्राज्य के मुख्य मुफ्ती, एबू
यौनिकता को घरेलू बनाना 105

सूद, फतवे जारी करने में व्यस्त थे, जिनमें यह स्पष्ट किया जा रहा था कि किन महिलाओं को सम्मानित किया जा सकता है।
मुहद्दरे उपाधि के साथ—एक ऐसा शब्द जिसका सबसे अच्छा अनुवाद शायद "सम्मानजनक" है, जो सोलहवीं शताब्दी की सोच में, पवित्र व्यवहार और उसके परिणामस्वरूप, पर्दा और एकांत के नियमों के पालन की प्रतिष्ठा को दर्शाता था। मुफ्ती ने घोषणा की कि एक मुहद्दरे महिला घर तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि जब वह बाहर जाती थी—उदाहरण के लिए, स्नानघर जाने के लिए, किसी शादी में या किसी दूसरे मोहल्ले में घूमने के लिए—तो उसके साथ "नौकर और परिचारिकाएँ" होनी चाहिए।3
इस विषय पर एबू सूद के फतवों की संख्या ही यह दर्शाती है कि उनका याचिकाकर्ता यह जानने के लिए उत्सुक थे कि सम्मानजनक आचरण क्या है और क्या नहीं। किसानों के साथ-साथ शहरी निवासियों ने भी इस बात की पड़ताल की। मुहद्दरे दर्जे की सीमाएं: इस प्रश्न के उत्तर में, "क्या कोई महिला मुहद्दरे हो सकती है यदि..."
क्या वह गांव के लोगों के साथ अपने मामले खुद संभालती है और कुएं से पानी लाती है?” एबू सूद ने संक्षेप में उत्तर दिया, “नहीं।” अपने सबसे विस्तृत उत्तर में
महिलाओं की गरिमा के इस मापदंड पर दिए गए उत्तर में, मुफ्ती ने स्पष्ट किया कि वे इसे स्वाभाविक रूप से इस्लामी नहीं मानते: “मुहद्दरे होने का आवश्यक तत्व पवित्र शरिया के निर्देशों का पालन करना नहीं है,” उन्होंने लिखा, “यही कारण है कि गैर-मुस्लिम महिलाएं भी मुहद्दरे हो सकती हैं। एक महिला मुहद्दरे तब होती है जब वह खुद को दूसरों के सामने प्रकट नहीं होने देती। वह अपने घर के सदस्यों की तुलना में अधिक सामाजिक जिम्मेदारी निभाती है और अपने मामलों की देखभाल स्वयं नहीं करती है।4 मुहद्दरे महिला एक सामाजिक परंपरा का पालन कर रही थी, न कि किसी व्यक्तिगत जिम्मेदारी का।
धार्मिक आदेश, मुफ्ती मानो यही कह रही थीं। अगर उन्होंने जो रेखाएँ खींचीं ये सांप्रदायिक नहीं थे, बल्कि ये सामाजिक वर्ग स्थापित करने वाली रेखाएँ थीं, क्योंकि केवल कुछ साधन संपन्न परिवार ही दासों को खरीदने या नौकरों को काम पर रखने का सामर्थ्य रखते थे।

महिला घरेलू कामगारों के कर्तव्यों को निभाने के लिए। न तो एबू सूद और न ही याचिकाकर्ताओं ने, जिन्होंने उनसे प्रश्न पूछे थे, इस बात को स्वीकार किया।
महिलाओं के सामाजिक आचरण के बारे में चर्चा में, घर में महिलाओं के एकांतवास को संदर्भित करने के लिए हरम शब्द का प्रयोग किया जाता था। सोलहवीं शताब्दी में, हरम शब्द का प्रयोग ओटोमन साम्राज्य द्वारा घरेलू आंतरिक भाग से अधिक उच्च कोटि के स्थानों को संदर्भित करने के लिए किया जाता था। यह संदर्भित करता है...
ऐसे स्थानों की पवित्रता—जैसे किसी मस्जिद का आंतरिक भाग, या शाही महल के भीतरी कमरे (जहां सुल्तान और उनके विशेषाधिकार प्राप्त लोग रहते थे)— नौकरों के लिए होना घरेलू कैद से कहीं अधिक था।
यह व्यक्तिगत आचरण और प्रतिष्ठा के बारे में था। फिर भी, जैसा कि हम देखते हैं, प्रतिष्ठा सार्वजनिक रूप से सावधानीपूर्वक सीमित उपस्थिति पर निर्भर थी, जिससे घरेलू स्थान महिलाओं के लिए मानक स्थान बन गया - कम से कम उन महिलाओं के लिए जो इसे वहन कर सकती थीं। तकनीकी रूप से कालभ्रमित होते हुए भी, यह अध्याय इसका उपयोग करेगा।
सामाजिक जटिलताओं को संदर्भित करने के लिए "हरम संस्कृति" की धारणा का संक्षिप्त रूप में प्रयोग किया जाता है।
वे प्रथाएँ जिन्होंने मुहद्दरे महिला की स्थिति स्थापित की। क्या अबू सूद अपने फतवों में केवल उन सामाजिक मानकों का समर्थन कर रहे थे जो 106 लेस्ली पियर्स

क्या यह नीति ओटोमन साम्राज्य की प्रजा द्वारा उत्पन्न की गई थी, या क्या वह सामाजिक नीति बना रहा था? इसका उत्तर शायद दोनों है: परिभाषाओं को स्पष्ट करके, मुख्य
मुफ्ती, अपने विशाल कद के कारण, अनिवार्य रूप से आदर्शवादी मानदंड प्रतिपादित कर रहे थे। हालाँकि, अबू सूद एकमात्र ओटोमन अधिकारी नहीं थे। साम्राज्य की प्रजा के व्यवहार और उनके सामाजिक और यौन आचरण से संबंधित। ओटोमन विचारधारा और प्रथा ने सुल्तानों को सीधे तौर पर एक बड़ी विधायी भूमिका प्रदान की। उन्होंने फरमान और कानून जारी किए जिन्हें के नाम से जाना जाता है।

कानून थे, और इन कानूनों को समय-समय पर कानूननामे (कानूनों की पुस्तकें) नामक विधि संग्रहों में संकलित किया जाता था। शाही ओटोमन कानून की पुस्तक, कानूननामे-ए-ओस्मानी, ऐसे संकलनों में सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक थी। इसी दस्तावेज़ में सुल्तानों ने सामाजिक-यौन आचरण के नियमों के साथ-साथ उनके उल्लंघन के लिए दंड भी प्रकाशित किए थे।
इस अध्याय में पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर कानूननामा-ए-ओस्मानी (जिसे आगे से कानूननामा कहा जाएगा) के विकास का विश्लेषण किया गया है।
सोलहवीं शताब्दी के मध्य में। इसका उद्देश्य कानूनी संस्कृति में परिलक्षित सामाजिक परिवर्तन के प्रश्नों का अन्वेषण करना है। यह प्रश्न पूछता है कि हरम की सामाजिक संस्कृति कब और कैसे विकसित हुई।
इसे शाही कानून में शामिल किया गया और इस प्रकार यह एक मानक तत्व बन गया। ओटोमन कानूनी संस्कृति। चूंकि कानूननामे में लगातार संशोधन होते रहे, इसलिए इसका विकसित होता पाठ सामाजिक मानकों में बदलाव के साथ-साथ ओटोमन शासन की बदलती परिस्थितियों को भी दर्शाता है।
शासन द्वारा यौन व्यवहार को विनियमित करने में बढ़ती रुचि। उदाहरण के लिए, कानूननामा (लगभग 1480) के सबसे पुराने संस्करण में यौन आचरण संबंधी कानून।
ये प्रावधान मुख्यतः स्वैच्छिक विवाहेतर यौन संबंध के दंड तक ही सीमित थे।
एक सदी से भी कम समय में, इसके प्रावधानों का विस्तार हुआ और इसमें सामाजिक और विशेष रूप से यौन आचरण की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल हो गई, जिसमें जबरन और स्वैच्छिक दोनों प्रकार के आचरण शामिल थे।
सार्वजनिक स्थानों और घर की चारदीवारी के भीतर। यह समझना कि कैसे और क्यों एक साधारण कानूनी मचान को एक जटिल वास्तुकला में बदल दिया गया।
इस निबंध का मुख्य विषय निर्देशात्मक और निषेधात्मक व्यवहार है।
दो परस्पर जुड़े विषय इस अध्याय की संरचना करते हैं। पहला विषय घरेलू स्थान, यौन संबंध और लिंग की दुनिया का अन्वेषण करता है जैसा कि ओटोमन साम्राज्य के केंद्र से इसकी कल्पना की गई थी; यह कानूननामा के क्रमिक संस्करणों में हरम संस्कृति के उद्भव का पता लगाकर ऐसा करता है। यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि हम इन विषयों को छोड़ दें।

हरम की सम्मानित पश्चिमी रूढ़िबद्ध छवि, जिसके प्राणियों को माना जाता है स्त्री होने के नाते, वे अपने पवित्र व्यवहार या आर्थिक उद्यम के लिए शायद ही उल्लेखनीय होती हैं। जैसा कि अबू सूद के फतवों से पता चलता है, एकांतप्रिय महिला एक
प्रेम-प्रसंगिनी। इसके अलावा, हालांकि वयस्क महिलाओं और पुरुषों के बीच अवैध संपर्क इसकी मुख्य चिंता थी, कनुननामे धीरे-धीरे आगे बढ़ी। संरक्षित निवास की वह धारणा जिसमें पुत्र और दास भी शामिल थे
पत्नियों और बेटियों के रूप में।
यौनिकता को घरेलू बनाना 107

दूसरा विषय इस बात पर विचार करता है कि कानूनामे का उद्देश्य व्यावहारिक और वैचारिक दोनों दृष्टियों से क्या था, और इसके निरंतर संपादन की प्रवृत्ति के पीछे क्या कारण थे। कानूनामे की सुव्यवस्थित सामाजिक-यौन ब्रह्मांड की विकसित होती दृष्टि को एक विस्तारित और गतिशील परिवेश के संदर्भ में समझना महत्वपूर्ण है।
तेजी से जटिल होते साम्राज्यवादी क्षेत्र में न केवल आर्थिक और राजनीतिक जीवन बल्कि सार्वजनिक सामाजिक जीवन का भी नियमन आवश्यक हो गया। फतवों की तरह।
मुख्य मुफ्ती के संबंध में, कानूननामे ने अनिवार्य रूप से एक मानक स्थिति प्रदान की।
विभिन्न प्रकार की प्रथाओं और निषेधों को शामिल किया गया क्योंकि इसमें व्यक्तिगत फरमानों को एक सामूहिक दस्तावेज में अंकित किया गया था जिसका उद्देश्य पूरे साम्राज्य में लागू होना था। एक प्रश्न
इस निबंध में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि सुल्तान और उनके कानूनी सलाहकार जमीनी स्तर के रुझानों और संघर्षों पर किस हद तक प्रतिक्रिया दे रहे थे, जब वे संपादन कर रहे थे।
और कानूननाम में संशोधन किया।

ओटोमन कान उन्नामे

चारों सुल्तानों की विधायी गतिविधियों ने ही इसे मूल स्वरूप दिया।

हम जिस ओटोमन साम्राज्य की बात कर रहे हैं, उसमें मेहमेद द्वितीय का शासनकाल शामिल है।
बायज़िद द्वितीय, सेलिम प्रथम और सुलेमान प्रथम ने 1451 (मेहमेद के लंबे शासनकाल की शुरुआत) से लेकर 1566 तक फैले साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण के लंबे युग को समेटा।
(सुलेमान की मृत्यु)। मेहमेद द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल पर की गई ऐतिहासिक विजय के बाद के राजनीतिक परिदृश्य में कनुननामा एक महत्वपूर्ण रचना थी। 1453 में, इस विजय ने बीजान्टिन साम्राज्य के हज़ार साल पुराने शासन का अंत कर दिया और शहरों की पूजनीय रानी में पहली बार एक मुस्लिम शासक की स्थापना की। यह विजय नए साम्राज्य की शुरुआत का संकेत देने वाले प्रमुख कार्यों में से एक थी।
ओटोमन सल्तनत की प्रमुख विशेषता कानूनों का प्रचार करना था। मेहमेद द्वितीय व्यापक कानूननामा जारी करने वाले पहले ओटोमन शासक थे, जो उन्होंने अपने शासनकाल के अंत के निकट किया था।5
क्योंकि कानूननामे कानूनों का एक निश्चित संकलन नहीं था, इसलिए मैंने मेहमेद द्वारा इसे तैयार करने और प्रचारित करने की प्रक्रिया का वर्णन करने में संकोच किया है।
कानूननामा का प्रारंभिक संस्करण शाही कानून को संहिताबद्ध करने के रूप में था। कानूननामा एक जीवंत, विकसित होने वाला दस्तावेज था, और एक से अधिक शाही कानूननामाओं की बात आसानी से की जा सकती थी। मेहमेद के तीनों उत्तराधिकारियों ने इसे विस्तृत किया।
उन्होंने पूर्व सुल्तान (अपने पिता) के कार्यों को आगे बढ़ाते हुए समय-समय पर कानूननामा के संशोधित संस्करण जारी किए, कुछ कानूनों को हटा दिया या उनमें संशोधन किया।
और नए संस्करण जोड़ना। यहां तक कि एक ही सुल्तान के शासनकाल के दौरान भी, अलग-अलग तिथियों और अलग-अलग अवधियों के कई संस्करण एक साथ प्रचलन में हो सकते हैं।6
कानूननामा उस समय की व्यवस्था को संभालने के लिए एक शाही खाका था। साम्राज्य के विस्तार के साथ-साथ जनसंख्या में विविधता और जटिलता बढ़ती गई। 108 लेस्ली पियर्स

विस्तार। क्रमिक सुल्तानों द्वारा किए गए संशोधन की निरंतर प्रक्रिया के माध्यम से,
यह साम्राज्य की बदलती परिस्थितियों और संरचना के अनुरूप ढल गया।
विषय जनसंख्याएँ।
पूर्वी भूमध्यसागर और प्राचीन निकट पूर्व में शासकों और कानून निर्माण का एक लंबा इतिहास रहा है। इस्लामी कानून (नियम; अरबी)
क़ानुन (बहुवचन क़वानीन) की उत्पत्ति कराधान को विनियमित करने वाले शाही फरमानों के रूप में हुई थी।7 यह जोर कायम रहा, और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि ओटोमन साम्राज्य का अधिकांश भाग
कनुननामे कर निर्धारण और कर अधिकारियों तथा करदाताओं के बीच संबंधों को विनियमित करने के लिए समर्पित था। लेकिन ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी तक, शाही
कानून का दायरा व्यापक रूप से सार्वजनिक कानून तक फैल गया था, जो इस्लामी कानून (शरिया) का पूरक था, जो आपराधिक अभियोजन और सामान्य रूप से कानूनी कार्यान्वयन के क्षेत्र में कुख्यात रूप से कमजोर था। कम से कम उन क्षेत्रों में जो बाद में ओटोमन साम्राज्य का हिस्सा बने, यह स्वीकार किया जाने लगा कि "अपराधों के विरुद्ध" मुकदमा चलाना संप्रभु का कर्तव्य और विशेषाधिकार था।
ईश्वर।" ये ऐसे आपराधिक कृत्य थे जिन्हें सार्वजनिक व्यवस्था को भंग करने वाला माना जाता था, जिनके दंड मूलतः कुरान में निर्धारित किए गए थे: व्यभिचार और नाजायज यौन संबंध।
यौन निंदा, चोरी, नशीले पदार्थों का सेवन और राजमार्ग पर डकैती (
बाद वाली श्रेणी को ओटोमन कानून में हमला, डकैती और हत्या जैसे अलग-अलग अपराधों में विभाजित किया गया था। इन अपराधों और उनके विभिन्न रूपों से संबंधित आपराधिक कानूनों के साथ अपने कानून की शुरुआत करके, मेहमेद द्वितीय ने कई सिद्धांतों पर जोर दिया: उनका साम्राज्य था
कानून के शासन के आधार पर, संप्रभु ही इसका सही मायने में मुख्य निर्माता था।
ओटोमन न्याय व्यवस्था में, ईश्वर के कानून की रक्षा करना संप्रभु का एक मौलिक कर्तव्य था।

कानूननामे के उन अनुभागों में, जो आपराधिक कृत्यों और उनके दंडों की परिभाषा से संबंधित हैं, ओटोमन प्रजा के सामाजिक-यौन जगत का विवरण मिलता है।
जैसा कि उनके शासकों द्वारा परिकल्पित किया गया था, वह सामने आता है। ये खंड अनुमति देते हैं
घरेलू जीवन का जमीनी स्तर से अध्ययन, ऊपर से नीचे की ओर देखने के दृष्टिकोण से किया गया है। आइए एक क्षण के लिए कनुननामे की संरचना पर नज़र डालें, जो सबसे अधिक प्रचलित है।
ओटोमन शासक के कानूनी अधिकार और उत्तरदायित्व का विस्तृत वर्णन। आपराधिक कृत्य और उनके दंड विषय हैं।
कानूननामा के सभी संस्करणों के शुरुआती अध्यायों में। (शेष अध्याय— कानूननामा का अधिकांश भाग—मुख्य रूप से करों, करदाताओं की स्थिति और कर संग्रहकर्ताओं के साथ उनके संबंधों से संबंधित हैं; कर का तर्क
ईश्वर के कानून को कराधान के साथ संयोजित करने का आंशिक संबंध ओटोमन आपराधिक प्रबंधन में धन जुर्माने की प्रमुखता से था, जिससे बाद वाले को एक विशिष्ट राजकोषीय स्वरूप प्राप्त हुआ। इस "दंडात्मक" वाक्य के साथ कनुननामे की शुरुआत का महत्व...
"कोड," जैसा कि इसे कहा गया है, यह सुझाव देने के लिए था कि ओटोमन शासक का यौनिकता को घरेलू बनाना 109

पहली कानूनी जिम्मेदारी अपराधों पर मुकदमा चलाकर सार्वजनिक व्यवस्था को बनाए रखना थी।
ईश्वर के विरुद्ध। दंड संहिता के भीतर ही, पहला विषय, हमेशा, यौन उत्पीड़न होता है।
अपराध, जिसे "ज़िना [अवैध यौन संबंध] और संबंधित कृत्यों" की सामान्य श्रेणी के अंतर्गत माना जाता है।8 दूसरे शब्दों में, सबसे महत्वपूर्ण कानूनी दस्तावेज
प्रारंभिक आधुनिक ओटोमन सरकार—साम्राज्य की मूलभूत कानूनी रूपरेखा— सामान्य सामाजिक और यौन संबंधों का मानचित्रण करके शुरू होती है। शास्त्रीय इस्लामी न्यायशास्त्र के अनुरूप, कानूननामे में ज़िना को मुख्य रूप से व्यभिचार और नाजायज़ यौन संबंध के रूप में परिभाषित किया गया

है—अर्थात्, पति-पत्नी या स्वामी-दास के अनुमत संबंधों के बाहर सहमति से किया गया विषमलिंगी यौन संबंध। अलग-अलग अपराध से संबंधित कानून मौजूद हैं।
यौन निंदा (कज़्फ़)—किसी पर ज़िना का गलत या दुर्भावनापूर्ण आरोप लगाना— भी आमतौर पर ज़िना अनुभाग में शामिल किया जाता था। समय के साथ, कानूननामे के क्रमिक संस्करणों में यौन संबंध के अन्य रूपों को भी शामिल किया गया, जिनमें बिना सहमति के यौन संबंध और पुरुषों के बीच यौन संबंध, साथ ही संबंधित अन्य विषय भी शामिल थे।
अपहरण, शारीरिक और मौखिक उत्पीड़न, सार्वजनिक स्थानों पर छेड़छाड़ और यहां तक कि परिवार के भीतर यौन संबंध जैसे मामले। जबकि मेहमेद द्वितीय के कानूननामे में ज़िना खंड में बारह कानून थे, सबसे लंबे संस्करणों में सुलेमान के कानूननामे में लगभग तीन दर्जन या उससे अधिक थे। इस प्रकार, मुख्य रूप से, हालांकि पूरी तरह से नहीं, कानूननामे का ज़िना खंड ही है जो यह हरम संस्कृति के कानूनी प्रदर्शन का मंच है। स्थान, वाणी और शरीर के यौनिकरण और नियंत्रण में, कनुननामे ने तेजी से निम्नलिखित भावनाओं को जगाया।
हरम का आदर्श (हालाँकि इस शब्द का कभी प्रयोग नहीं किया गया)—एक घरेलू व्यवस्था
जिसमें अजनबियों और घर के पुरुष मुखिया के आश्रितों के बीच दृश्य, मौखिक और शारीरिक संपर्क पर रोक लगाई गई थी, और जिसमें जिम्मेदारी डाली गई थी परिवार की सामूहिक प्रतिष्ठा का भार उनके कंधों और हाथों में है। कानूननामे एक सुव्यवस्थित घरेलू जगत की विशुद्ध शाही दृष्टि से कहीं अधिक प्रकट करता है। कानून एक कानूनी विधा और एक कानूनी प्रथा के रूप में। इसमें प्रथागत कानून का भारी हिस्सा शामिल था—अर्थात्, स्थानीय प्रथा जो समय के साथ बदलती रहती थी
समय ने कानून का बल प्राप्त कर लिया।9 वास्तव में, कानून शब्द के कई अर्थ थे, जिनमें पारंपरिक रीति-रिवाज या प्रक्रिया का नियम (जैसे कि
संप्रभु शक्ति द्वारा जारी किसी अध्यादेश या नियामक संहिता के लिए मानक वाक्यांश kanun-ı kadim üzere—“परंपरागत प्रथा के अनुसार”) का प्रयोग किया जाता था।

प्रथागत मानदंडों का क्रमिक समावेशन—या स्पष्ट अस्वीकृति—ही उस अवधि में कानूननामे की बढ़ती लंबाई का एक बड़ा कारण है।
मैंने यहाँ पढ़ाई की।
ये मानक प्रथागत प्रथाएं, जिनमें से कुछ की उत्पत्ति प्राचीन काल में हुई थी,
कानूनी दृष्टि से निकट पूर्व के लोग इस्लामी सिद्धांतों के साथ टकराव में हो सकते हैं।
कानून। वास्तव में, कानून, परंपरा के अनुसार, समझौता का एक सेतु था और रहा है। -110 लेस्ली पियर्स

इस्लामी शरिया और प्रथागत व्यवहार के बीच का अंतर। अक्सर यह आरोप लगाया जाता है कि
कानून धर्मनिरपेक्ष है जबकि शरिया धार्मिक है, लेकिन कुरान में वर्णित अपराधों पर कानून का विशेष ध्यान धार्मिक और प्रथागत कानून स्रोतों के बीच मध्यस्थ के रूप में इसकी भूमिका को रेखांकित करता है। कानून एक कला थी।
संभव है। उदाहरण के तौर पर, व्यभिचार की समस्या पर विचार करें। सख्त इस्लामी कानून के तहत मुकदमा चलाना लगभग असंभव था क्योंकि दोषसिद्धि प्रवेश के कृत्य के चार गवाहों की आवश्यकता होती है या अपराध स्वीकारोक्ति की आवश्यकता होती है।
व्यभिचारी को चार अलग-अलग मौकों पर न्यायाधीश के समक्ष पेश किया गया। दूसरी ओर, प्रथागत कानून उन मामलों में कठोर दंड प्रदान कर सकता था जो अब आम हो चुके हैं।
इसे ऑनर किलिंग कहा जा सकता है, या किसी पति का अपनी व्यभिचारी पत्नी और उसके प्रेमी को मार डालने का अधिकार (और कभी-कभी किसी पिता का अपनी बेटी को मार डालने का अधिकार)।
यह देखा जाएगा कि कनुननामे ने अपर्याप्तता के बीच मध्यस्थता करने का प्रयास किया।
शरिया और प्रथागत प्रथाओं की मनमानी के बीच संतुलन बनाना एक जटिल कार्य था। इस्लामी और प्रथागत कानून के बीच संतुलन बनाए रखना तनावपूर्ण परिस्थितियों से भरा था।

इस तथ्य के बावजूद कि मुस्लिम शासक सदियों से इस कार्य को आगे बढ़ा रहे थे। इस निबंध का एक मुख्य विषय सुल्तानों द्वारा अपनी वैधता और शक्ति के कानूनी आधारों के प्रति बदलते रुख को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, सेलिम प्रथम के शासनकाल को लें।
उदाहरण के लिए, कानूननामा: अपने पिता और दादा के संस्करणों की तुलना में, इसमें संप्रभुता के इस्लामी आधारों के प्रति बहुत कम स्पष्ट रियायतें दी गई थीं।
अधिकार। बल्कि, इसने शाही कानूनी नीति को raison d’état—ओटोमन भाषा में siyaset—के रूप में उचित ठहराया, जो कि पूर्ण विधायी और कार्यकारी अधिकार था।
सुल्तान को बिना मुकदमे के सजा देने का अधिकार प्राप्त था।
न्यायाधीश सेलिम की कठोरता का अपना एक संदर्भ था: 1514 और 1517 के बीच उनकी तीव्र विजयों ने साम्राज्य का आकार दोगुना कर दिया और ऐसी आबादी को आकर्षित किया, जिनमें से कुछ लोग ओटोमन आधिपत्य को स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि जिस शताब्दी के दौरान कनुननामे का विकास हुआ, वह भी एक महत्वपूर्ण युग था।
यह निरंतर क्षेत्रीय विस्तार और परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई चुनौतियों में से एक थी।
नई जनता को शांत करना और उन्हें ओटोमन नागरिक अधीनता में एकीकृत करना। इसके परिणामस्वरूप एक चुनौती यह थी कि कानूननामे को एक व्यावहारिक रूपरेखा बनाया जाए।
संपूर्ण प्रजाजन आबादी का प्रशासन करना—ईसाई और यहूदी के साथ-साथ मुसलमान, गुलाम के साथ-साथ स्वतंत्र, किसान और खानाबदोश के साथ-साथ शहरी निवासी भी।
शासन के सामने एक और चुनौती स्थानीय सत्ता दलालों को अपने अधीन करना था।
साथ ही अपने स्वयं के अधिकारियों को भी सुल्तानी सत्ता के अधीन कर दिया। दस्तावेजी और साहित्यिक स्रोत स्थानीय सामंती सरदारों और ओटोमन शासकों द्वारा किए गए दुर्व्यवहार की कहानियों से भरे पड़े हैं।
अधिकारियों के बीच, बार-बार ओटोमन न्याय की बयानबाजी में सुल्तान द्वारा आम आदमी, विशेष रूप से किसान करदाता को शोषण से बचाने की प्रशंसा की गई।10 अब हम चारों लेखकों के कानूननामों की समीक्षा करेंगे।

यौनिकता को घरेलू बनाना 111

प्रारंभिक आधुनिक ओटोमन राज्य-प्रशासन और शासन के इस प्रमुख दस्तावेज़ के शासक: मेहमेद द्वितीय (शासनकाल 1451-81), बायज़िद द्वितीय (शासनकाल 1481-1512), सेलिम प्रथम (शासनकाल 1512-
20), और सुलेमान प्रथम (शासनकाल 1520-66)। हमारी समीक्षा कालानुक्रमिक रूप से आगे बढ़ती है क्योंकि हमारा लक्ष्य यह देखना है कि हरम संस्कृति कब, कैसे और शायद क्यों अस्तित्व में आई।
धीरे-धीरे यह ओटोमन शासन की दृष्टि में एक आदर्श सामाजिक-यौन परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करने लगा।

द कान उन्नामे ओफ मेहमेडी II

बाद के कानूननामे संस्करणों की तुलना में, मेहमेद द्वितीय के संस्करण में घरेलू हरम की बहुत कम कल्पना दिखाई देती है। इसका खंड "ज़िना और [ज़िना करने के] इरादों पर"11 संक्षिप्त है, जिसमें केवल बारह विधान हैं।
या संभवतः दो अपवादों को छोड़कर, ये कानून सहमति पर आधारित वयस्क विषमलिंगी कृत्यों तक ही सीमित हैं। ज़िना खंड का लगभग आधा हिस्सा इसी से संबंधित है।
व्यभिचार और नाजायज यौन संबंध के लिए जुर्माने का प्रावधान, जो बाद के सभी संस्करणों में मानक है। जुर्माने की संरचना में कई कानून शामिल हैं क्योंकि यह दो कारकों का उपयोग करके दंड की गणना करता है: पहला, वैवाहिक स्थिति—
विवाहित स्वतंत्र व्यक्ति, अविवाहित स्वतंत्र व्यक्ति, और विवाहित और अविवाहित दास, सभी को मुस्लिम माना जाता है; और दूसरा, धन का स्तर—अमीर, मध्यम वर्ग।
गरीब और बेसहारा व्यक्ति। उदाहरण के लिए, धनी मुस्लिम व्यभिचारी।
पुरुष और महिला, दोनों को सबसे अधिक जुर्माना देना पड़ता है—300 अकचेस (मानक ओटोमन चांदी का सिक्का), जबकि उनके गुलाम समकक्षों को इसकी आधी राशि देनी पड़ती है; एक निर्धन

मुस्लिम पुरुष या महिला व्यभिचारी पर 40 अकचेस का जुर्माना लगाया जाता है, और निर्धन दास पर इसकी आधी राशि का जुर्माना लगाया जाता है। अविवाहित व्यक्तियों (व्यभिचारियों) के लिए समान दरें इस प्रकार हैं।
100 से 30 अकचेस तक। (ध्यान दें कि गुलामों पर भी, स्वतंत्र व्यक्तियों की तरह, उनकी व्यक्तिगत संपत्ति के अनुसार जुर्माना लगाया जाता था।)
मेहमेद के कानूननामे में, संभावित यौन विकार की स्थानिक गतिशीलता प्रारंभिक अवस्था में है। यौन अपराध के भूगोल में, घरेलू स्थान को एक ही कानून द्वारा विनियमित किया जाता है: किसी व्यक्ति द्वारा घर में जबरदस्ती घुसना
ज़िना के अपराध में ज़िना की सज़ा मिलती है, चाहे अपराधी अपने इरादे को पूरा करे या न करे। सार्वजनिक स्थान पर किसी वयस्क महिला को पकड़ना, उसे चूमना या
अन्यथा उसे गले लगाने पर भी पिटाई (बेस्तिनाडो) की सजा मिलती है। जुर्माने के तौर पर। बेंत से दी जाने वाली कोड़ों की संख्या न्यायाधीश (ताज़ीर) के विवेक पर निर्भर करती है, और प्रत्येक दो कोड़ों के लिए एक अकचे का जुर्माना लगता है। इस प्रारंभिक विधि-ग्रंथ में हरम की कोई अवधारणा भी नहीं है—अर्थात्, नियंत्रण का कोई ऐसा पदानुक्रम नहीं है जिसमें परिवार के पुरुष मुखिया पर आश्रित सदस्यों के आचरण की ज़िम्मेदारी हो। विवाहित और अविवाहित महिलाएं सजा के मामले में अपने पुरुष समकक्षों के समान हैं: वे ज़िना के लिए समान जुर्माना अदा करती हैं।
112 लेस्ली पियर्स

उन्हें यौन मानहानिकारक आरोपों से भी उसी प्रकार की छूट प्राप्त है। (“यदि कोई पुरुष किसी महिला से कहता है, ‘मैंने तुम्हारे साथ यौन संबंध बनाए,’ और महिला इससे इनकार करती है,
महिला को [निर्दोषता की] शपथ लेनी होगी, और न्यायाधीश पुरुष को दंडित करेगा”; इसी प्रकार, “यदि कोई महिला या लड़की किसी पुरुष से कहती है, ‘तुमने मेरे साथ यौन संबंध बनाए,’
और वह आदमी इससे इनकार करता है...)। निराधार मानहानिकारक आरोपों के लिए महिलाओं और पुरुषों को भी समान दंड दिया जाता है (मारपीट के साथ-साथ...)। अच्छा)।

मेहमेद के सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाएं प्रमुख यौन अभिकर्ताओं के रूप में दिखाई देती हैं।
कानूननामे, जानबूझकर अपराध करना। महिला दलालों (पेज़ेवेंक) को ताज़ीर की सज़ा दी जाती है, जिसमें पिटाई की सज़ा शामिल है, जिसकी गंभीरता हमेशा की तरह न्यायाधीश द्वारा तय की जाती है, साथ ही प्रति कोड़े एक अकचे का जुर्माना भी लगाया जाता है। केवल एक ही कानून घर के पुरुष मुखिया के अधिकार का सम्मान करता है, और यह कानून...
यह एकमात्र ऐसा कानून भी है जो एक प्रथा को कानून में दर्ज करता है: जो पुरुष व्यभिचारी पत्नी को तलाक देने में विफल रहता है, उसे जुर्माना (100 अकचेस) देना होगा।
एक अमीर आदमी पर बेवफाई (कोफ्तेहोर्लुक) का आरोप लगाया जाता है। यहाँ अंततः, हरम की रूढ़िवादी गतिशीलता का संकेत मिलता है: एक आदमी अपमानित, यहाँ तक कि दोषी भी माना जाता है, यदि वह अपनी पत्नी को नियंत्रित करने में विफल रहता है और उसके द्वारा लाए गए अपमान को सहने के लिए तैयार रहता है। उस पर। हालाँकि, इस बेवफाई कर की एक शर्त है: पति
वह इसका भुगतान तभी करता है जब उसकी पत्नी आत्मनिर्भर हो (avret’in malı olsa), संभवतः इसलिए ताकि आत्मनिर्भर न हो सकने वाली महिला को घर से बाहर न निकाल दिया जाए, कहीं ऐसा न हो कि वह वेश्यावृत्ति के रूप में और अधिक ज़िना करने लगे।
संक्षेप में कहें तो, मेहमेद के ज़िना फरमान उस समय के फरमानों की तुलना में बहुत ही संक्षिप्त हैं।
आने वाले हैं। वे संप्रभु की जिम्मेदारी का एक न्यूनतम बयान हैं कि वह अवैध यौन संबंध और यौन निंदा के लिए कुरान में वर्णित दंडों को लागू करे। आपराधिक सामाजिक ढांचे में गैर-मुसलमानों की अनुपस्थिति उल्लेखनीय है, क्योंकि वे कानूननामा के प्रत्येक बाद के संस्करण में दिखाई देंगे, जहां उन्हें अपने मुस्लिम समकक्षों की तुलना में आधे जुर्माने का सामना करना पड़ता है। मेहमेद के समय में अधिकांश प्रजा ईसाई थी और निश्चित रूप से उनके अपने व्यभिचारी भी थे; इसलिए, यह अनुपस्थिति इस बात की पुष्टि करती है कि सुल्तान का उद्देश्य था
यह समाज के वास्तविक नियमन से कहीं अधिक इस बात की घोषणा थी कि ओटोमन सम्राट ने अब शाही कानून बनाने की क्षमता प्राप्त कर ली है।

इसके अलावा, ईश्वर के कानून के उल्लंघन के लिए सटीक दंड निर्धारित करने के अपने अधिकार को स्थापित करने के लिए।
इस्लामी कानून को लागू करने के शासक के कर्तव्य के कथन के रूप में, मेहमेद के कानूननामा का ज़िना खंड उस चीज़ को दर्शाता है जिसे हम ज़िना में लैंगिक समरूपता का शरिया सिद्धांत कह सकते हैं: पुरुष और महिलाएं अपराध में भागीदार हैं।
सजा में समान रूप से पीड़ित। यह समरूपता केवल इसके द्वारा असंतुलित होती है।
यौन रूप से अभिशप्त पत्नी को तलाक देने का पुरुष का अधिकार—एक विशेषाधिकार, डेटिंग
यौनिकता को घरेलू बनाना 113

बाइबल के समय से ही, विश्वासघात की शिकार महिला को इससे वंचित रखा जाता रहा है। व्यभिचार से परे
और व्यभिचार के मामले में, मेहमेद का कानूननामा अपेक्षाकृत उदार है। नैतिकता की निगरानी के संबंध में। जबकि यह आपराधिक इरादे के साथ-साथ ज़िना के वास्तविक कृत्यों को भी दंडित करता है, इरादे से किए गए दंडनीय कृत्य केवल तीन हैं: दलाली,
यौन शोषण के इरादे से घरों में घुसपैठ करना और सार्वजनिक स्थानों पर वयस्क महिलाओं का यौन उत्पीड़न करना। मेहमेद के फरमान मुख्य रूप से विषमलैंगिक अपराधियों को लक्षित करते हैं। इसके परिणामस्वरूप केवल सड़कों पर उत्पीड़न का शिकार होने वाली महिलाएं ही अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती हैं।
अंततः, यौन अपराध के इस अपेक्षाकृत सरलीकृत विश्लेषण में प्रथागत कानून की भूमिका नगण्य है। मेहमेद की 'कानूननामा' वास्तविक सामाजिक प्रथाओं और दुर्व्यवहारों पर कोई खास प्रकाश नहीं डालती, सिवाय इसके कि यह स्वीकार करती है कि...
कि वहां व्यभिचारी, दलाल और यौन उत्पीड़न करने वाले लोग थे।

द कान उन्नामे ओ ऑफ बाये ज़िद II

प्रत्येक सुल्तान ने अपने शासनकाल के दौरान जारी किए गए कानूननामे के संशोधित संस्करणों पर अपनी और अपने कानूनी सलाहकारों की छाप छोड़ी। प्रत्येक अद्यतन के साथ-साथ
एक निरंतर विस्तारशील साम्राज्य के प्रभावों—वैचारिक परिवर्तनों—के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की।
और आंतरिक एकीकरण के परिणाम। इसके अलावा, कानूननामे के प्रत्येक अवतार पर एक पीढ़ीगत छाप थी, क्योंकि सुल्तानों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। उनके पिताओं के शासनकाल की घटनाओं और विशेषताओं के बारे में। बायज़िद द्वितीय, जिन्हें "संत" (वेली) के रूप में जाना जाता है, अपने पिता मेहमेद द्वितीय की तुलना में अधिक धार्मिक थे, जो अपने पिता के रूप में जाने जाते हैं।
आज भी उन्हें "विजेता" (फातिह) के रूप में जाना जाता है। हालाँकि उन्होंने एक ओटोमन साम्राज्य का निर्माण किया।
नौसेना पर ध्यान केंद्रित करने और क्षेत्रीय विस्तार को आगे बढ़ाने के बावजूद, बायज़िद ने अपने पिता की तुलना में काफी कम समय घुड़सवारी में बिताया।12 बल्कि, बायज़िद ने अपना अधिकांश समय नौसेना पर ध्यान केंद्रित करने और क्षेत्रीय विस्तार को आगे बढ़ाने में बिताया।
अपने पूर्वजों की विजयों के प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने लंबा शासनकाल बिताया।
बायज़िद के प्रशासनिक कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण उनके कानूननामे में मिलता है—जिसमें लगभग 250 विधान हैं, जो मेहमेद के कानूननामे से तीन गुना अधिक लंबे हैं।13 यह
इसे अधिक विस्तृत ढंग से संरचित किया गया है, जिसमें तीन अध्याय (बाब) हैं, जिनमें से प्रत्येक में चार से सात खंड (फसील) हैं। अध्याय 1, जिसमें अपराध से संबंधित चार खंड शामिल हैं, ज़िना खंड से शुरू होता है; आगे जारी रहता है...
शारीरिक चोट और हत्या; इसके बाद मादक पदार्थों का सेवन, चोरी आदि अपराध शामिल हैं।
और निंदा; और अंत में सियासत के मामलों के साथ समाप्त होता है। पहले तीन खंड, लेकिन चौथा खंड नहीं, मेहमेद के कानूननामे में मौजूद थे, हालांकि संक्षिप्त रूप में।

रूप।
बायज़िद के कानूननामे द्वारा किए गए वैचारिक विकासों में से एक यह है कि जिसे हम "कानूनी राष्ट्र" कह सकते हैं, उसका विस्तार—अर्थात, जटिलता जनसंख्या शाही कानून के अधीन थी। ईसाइयों और 114 लेस्ली पियर्स का समावेश।

यहूदियों को अपराधी के रूप में चित्रित करने से यह संकेत मिला कि अब कानून को उसके मूल स्वरूप में देखा जा रहा था।
इसे केवल लागू किए जाने वाले कानून के बजाय "देश का कानून"14 के रूप में तैयार किया गया है।
मुसलमानों के लिए; दूसरे शब्दों में, धर्म की परवाह किए बिना, सभी प्रजाजनों के अपराध सामाजिक व्यवस्था को भंग कर सकते थे और इसलिए शाही निगरानी के अधीन थे। बायज़िद द्वारा जारी किए गए बड़ी संख्या में प्रांतीय कानून इस बात की पुष्टि करते हैं कि जमीनी स्तर पर कानूनी नियंत्रण किस प्रकार फैल रहा था।
ओटोमन शासन। इसके अलावा, प्रथागत कानून का अधिक समावेश।
कानूनों ने संकेत दिया कि अपनी सभी अनियंत्रित सांस्कृतिक विविधताओं सहित "समाज" शाही अधिकारियों की जांच के दायरे में आ रहा था, जो अब और इच्छुक नहीं थे।
अपराध की परिभाषा स्थानीय अधिकारियों के हाथों में छोड़ दें। बायज़िद के कानूननामा का ज़िना खंड काफी हद तक उससे मिलता-जुलता है।
मेहमेद ने अपने विधानों की शब्दावली में भी यही बात दोहराई है। इसका प्रमुख नवाचार यह है कि...
वह कानून जो व्यभिचार और नाजायज यौन संबंध के लिए गैर-मुसलमानों पर भी दंड लागू करता है, जिसके तहत उन पर अमीर और गरीब, विवाहित और अविवाहित सभी के मुकाबले आधी दर से जुर्माना लगाया जाता है।
मुस्लिम समकक्षों के समान। अन्यथा, बायज़िद के कानूननामे में केवल इतना अंतर है कि इसमें विधवाओं को भी दोषियों की श्रेणी में शामिल किया गया है (वे अविवाहितों के लिए निर्धारित जुर्माना अदा करती हैं)।
व्यक्तियों) और युवा, अविवाहित महिलाओं (बेटियों) को छोड़ दिया गया है।
बल्कि, यह है

अध्याय 1 के नए चौथे खंड (जिसका शीर्षक है "जो विशेष रूप से सियासेट की घोषणा करता है") में यह उल्लेख है कि बायज़िद और उनके सलाहकारों ने स्त्री- पुरुषों के बीच अवैध संबंध पर कानूनों की संख्या बढ़ा दी।15
ये नए कानून बेहद कठोर हैं। पहला कानून पुरुष के लिए बधियाकरण का प्रावधान करता है।
जो किसी लड़की या लड़के का अपहरण करता है, "विध्वंसक इरादे" से किसी घर में प्रवेश करता है (हिया-
जाल बिछाकर (नेट के ज़रिए), या किसी महिला या लड़की का अपहरण करने के लिए [छापेमारी पर] आता है। अपहरण के बाद की स्थिति से संबंधित दूसरा कानून, उस व्यक्ति को बाध्य करता है जो किसी महिला या लड़की से शादी करता है।
अपहृत महिला को उसके अपहरणकर्ता को सौंपकर विवाह भंग करने की प्रथा; साथ ही विवाह कराने वाले को उसकी दाढ़ी काटकर दंडित किया जाता है (जो नपुंसकता का एक हल्का रूप है)।
अंतिम कानून ऑनर किलिंग जैसे जघन्य अपराध को रोकने का प्रयास करता प्रतीत होता है। इसमें राज्य अधिकारियों द्वारा किसी भी ऐसे पुरुष को मृत्युदंड देने का प्रावधान है जो अपनी पत्नी के अलावा किसी अन्य विवाहित महिला के साथ यौन संबंध बनाते हुए पकड़ा जाए। यह संक्षिप्त लेकिन शक्तिशाली नियम यह विधेयक, कम से कम पुरुष प्रेमी के मामले में और अपहरण के संदर्भ में, फांसी देने का अधिकार महिला के पति के हाथों से राज्य के हाथों में स्थानांतरित करता है।
अधिकारियों के समक्ष। ऐसा प्रतीत होता है कि महिला को दंडित करने का विकल्प उसके पुरुष रिश्तेदारों का विशेषाधिकार बना हुआ है।
इन नए नियमों का उद्देश्य प्रवेश करने पर ज़िना कानून को और अधिक प्रभावी बनाना है।
वे यौन इरादे से बने आवासों का अध्ययन करते हैं। वे ऐसा उस इरादे के वास्तविक प्रदर्शन से जूझकर करते हैं, जिसे मेहमेद की 'कानूननामे' में अपेक्षाकृत अनदेखा किया गया है।
अपहरण संबंधी कानून एक जटिल प्रथा का समाधान करता है, विशेष रूप से जनजातीय समाजों में आम, जो आधुनिक समय तक कायम है (विभिन्न
यौनिकता को घरेलू बनाना 115

ओटोमन साम्राज्य के कुछ हिस्सों पर जनजातीय संस्कृतियों का प्रभाव था, इसके बावजूद
शासन द्वारा आदिवासी समूहों पर स्थायी रूप से बसने के लिए दबाव डालना)। अपहरण एक सामाजिक
यह प्रथा महिला की मिलीभगत से भी हो सकती है, क्योंकि यह विवाह में आने वाली बाधाओं को दूर करने का एक तरीका हो सकता है—उदाहरण के लिए, माता-पिता का विरोध या
बड़े भाई-बहनों की उपस्थिति, जिनकी शादी पहले होनी ज़रूरी थी। यह उल्लेखनीय है कि न तो मेहमेद द्वितीय और न ही बायज़िद द्वितीय के कानूननामों में अपहरण में महिलाओं की सहमति की संभावना को स्वीकार किया गया था। यह चुप्पी आज भी कायम है।
इसके विपरीत, ज़िना अनुभाग में महिलाओं द्वारा ग्रहण की गई आपराधिक सक्रियता और दायित्व के विपरीत। यह पहेली—सामाजिक रूप से उदासीन व्यवहार के बावजूद महिलाओं के साथ ऐसा व्यवहार क्यों होता है?
ज़िना अनुभाग में यौन अपराधों को शामिल करना, लेकिन सियासेत अनुभाग में सामाजिक रूप से सक्रिय व्यवहार को शामिल न करना, क्या आपराधिक सामाजिक निकाय में महिलाओं को शामिल करता है?—यह एक मुद्दा है।
जिस पर हम बाद में लौटेंगे। यह शरिया सिद्धांत के बीच के अंतर को दर्शाता है।
यौन अपराधों में लैंगिक समरूपता और प्रथागत कानून की लैंगिक विषमता। बायज़िद के कानूननामा में सियासेत के स्थान को बेहतर ढंग से समझने के लिए, आइए हम इसमें निर्धारित दंडों के प्रकारों पर एक नज़र डालें।16 ताज़ीर, न्यायाधीश का विवेक—
मारपीट और कभी-कभी कारावास जैसी सजाएं आम थीं।
शरिया दंड। दूसरी ओर, मौद्रिक जुर्माना (कुरम) शास्त्रीय शरिया दंड नहीं था, बल्कि यह प्राचीन काल से चली आ रही एक प्रथा थी।
क्षेत्र। जैसा कि हमने देखा है, ये दो प्रकार की सजाएँ—ताज़ीर और चुर्म, पिटाई और जुर्माना—कानून में नियमित थीं और अक्सर संयुक्त रूप से दी जाती थीं, मानो
धार्मिक और प्रथागत सत्ता के अंतर्संबंध का प्रतीक बनने के लिए

रोजमर्रा के अपराधों पर मुकदमा चलाया जाता था। दूसरी ओर, सियासेट की सजाएँ अधिक कठोर थीं और राजनीतिक शासन के पूर्ण और जानबूझकर किए गए प्रभाव को दर्शाती थीं।
दंडात्मक न्याय। वे आम तौर पर भव्य होते थे, फ़ूको के अर्थ में सार्वजनिक उपभोग के लिए एक भौतिक प्रदर्शन के रूप में: बायज़िद के दंड।
सियासेट अनुभाग में आगजनी करने वालों, गुलामों की चोरी करने वालों और आदतन अपराधियों के लिए फांसी की सजा शामिल थी।
चोरों के लिए; यौन अपराधियों के लिए बधियाकरण; पुरुष दलालों के लिए माथे पर दाग लगाना; राजमार्ग लुटेरों के लिए अंगों को काटना; और हाथ काट देना।
एक आदतन जेबकतरा था, जबकि पहली बार अपराध करने वाले को उसकी बांह में चाकू लेकर घुमाया गया।
अब, आइए संक्षेप में इस बात पर टिप्पणी करें कि बायज़िद के कानूननामे से क्या संकेत मिलता है।
शाही कानूनी विचारधारा और व्यवहार के विकास के बारे में। बायज़िद ने इन कठोर नए कानूनों को सियासेट को समर्पित एक खंड में अलग कर दिया—यहाँ यानी शासक की अपराध को परिभाषित करने और दंडित करने की शक्ति—यह दर्शाता है कि वह विधायी अधिकार के धार्मिक और राजनीतिक स्रोतों के बीच स्पष्ट अंतर कर रहा था। यह सोचना गलत होगा कि यह
धार्मिक प्रवृत्ति वाले सुल्तान को बधियाकरण और अन्य कठोर प्रथाओं से घृणा होती थी। 116 लेस्ली पियर्स

प्रथागत कानून प्रथाओं को अलग कर दिया और इस प्रकार उन्हें "शुद्ध" शरिया से अलग कर दिया।
व्युत्पन्न, ज़िना कानून। बल्कि, बायज़िद न्याय के अभियोजन में शाही सत्ता की भूमिका को दोहरा रहे थे। लगभग बीस कानूनों (जिनमें से अधिकांश यौन अपराध से संबंधित नहीं थे) में सियासेट का उनका स्पष्टीकरण इसकी पुष्टि करता है।
मेहमेद के आपराधिक फरमानों के बारे में मुख्य बात यह है कि उन्होंने ओटोमन सुल्तान की कानूनी परिपक्वता की घोषणा की, जिसने अब कानून लागू करने के कर्तव्य को स्वीकार कर लिया था।

ईश्वर का नियम। बायज़िद का योगदान यह था कि उन्होंने स्पष्ट रूप से इस बात को स्वीकार किया कि
बाद वाला कारक अकेले ही शासन व्यवस्था में सामाजिक-यौन व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

the K a n U n name o f s e l I m I

बायज़िद द्वितीय के ऊर्जावान और जुझारू पुत्र सेलिम प्रथम द्वारा रचित कनुननामे संस्करणों में, यौन अपराध का दायरा अधिक खतरनाक और अधिक सख्ती से अभियोजित है। यौन अनुशासनहीन लोगों के लिए यह एक कठिन दुनिया है। व्यभिचार के जुर्माने बढ़ गए हैं, कम से कम धनी मुस्लिम पुरुषों के लिए, जिन पर अब 300 के बजाय 400 अकचेस का जुर्माना लगाया जाता है। इसके अलावा, हरम में भी बदलाव आया है।
यहां की आबादी में विविधता आ गई है। पुरुषों को न केवल पत्नियों की रक्षा करनी होती है, बल्कि और भी बहुत कुछ।
बल्कि बेटे, बेटियाँ और महिला गुलाम भी। सड़क पर उत्पीड़न की शिकार अब केवल "किसी व्यक्ति की पत्नी" ही नहीं, बल्कि "किसी व्यक्ति की बेटी," "किसी व्यक्ति की..." भी हैं।
पुत्र," या "किसी व्यक्ति का दास।"
महिलाएं—कम से कम विवाहित महिलाएं—सार्वजनिक जीवन से दूर होती जा रही हैं।
क्षेत्र: वे अनियंत्रित या स्वायत्त यौन अभिकर्ताओं के रूप में प्रकट नहीं होते हैं।
हालांकि वे स्पष्ट रूप से कुछ अपराधों में भागीदार हैं, लेकिन पीड़ितों के रूप में उनकी भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है। सेलिम के कानूनों में, न तो विधवा और न ही महिला दलाल यौन अपराधियों में शामिल हैं।
अपराध। इसके अलावा, विवाहित महिलाओं के कुकर्मों की जिम्मेदारी उनके पतियों पर आ गई है: जब पत्नी व्यभिचार करती है, तो पति ही इसके लिए जिम्मेदार होता है।
दोषी कौन है? अब ज़िना के जुर्माने का भुगतान वही करेगा। चूंकि उस पर आरोप लगाया गया है।

यदि कोई पति अपनी पत्नी को अपने पास रखता है (अर्थात, उसे तलाक नहीं देता), तो उस पर जुर्माना लगाया जाता है, लेकिन कानून में यह संकेत मिलता है कि उस पर दोहरा जुर्माना लगाया जा सकता है। संक्षेप में,
पति को पत्नी की देखभाल का जिम्मा सौंपा गया है।
इसी व्यक्ति पर अपने नाबालिग बेटों को यौन शोषण से दूर रखने का भी आरोप है। ऐसे संबंध जिनमें वे “दास लड़की की भूमिका निभाते हैं” (केनिज़लिक—यहाँ, समलैंगिक संबंध में गैर-प्रमुख भूमिका)। ऐसे संबंध होने पर पिता को मार पड़ती है (लेकिन जुर्माना नहीं भरना पड़ता) क्योंकि “पिता को अपने बेटे की रक्षा करनी होती है।” हालाँकि, ध्यान दें कि कानूनी रूप से बालिग हो चुके किशोर बेटे को इस मामले में अपनी सजा भुगतनी पड़ती है (एक गंभीर दंड)। ताज़ीर पिटाई और प्रति कोड़े एक अकचे का जुर्माना। वह सार्वजनिक रूप से उत्तरदायी है।
अपनी पथभ्रष्ट माँ के विपरीत, उसके आचरण के लिए। अविवाहित बेटियाँ, यौनिकता को घरेलू बनाना 117

बायज़िद के कानूननामे में अनुपस्थित, अब संभावित व्यभिचारियों के रूप में पुनः प्रकट होते हैं जो अपने अपराधों के लिए उत्तरदायी हैं।
सेलिम के कानूननामे के कुछ संस्करण तो घर के भीतर यौन गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए घर की सीमा में भी घुस जाते हैं। अब एक आदमी
अपनी पत्नी या अपनी माँ की दासी, या अपनी पूर्व पत्नी, जिससे उसका तलाक हो चुका है, के साथ यौन संबंध बनाने के लिए उसे दंडित किया गया है। हालाँकि, घर के भीतर उसका यौन वर्चस्व पूरी तरह से सीमित नहीं है, क्योंकि वह
उसे अपने बेटे के गुलाम या अपनी खुद की महिला गुलाम के साथ उसी अपराध के लिए दंडित नहीं किया जाएगा, जिसे भविष्य में स्वतंत्रता के अनुबंध का विशेषाधिकार प्राप्त है।
यौन अपराध के कुछ क्षेत्रों में, सेलिम के संशोधन अधिक मामूली प्रकृति के हैं। अपहरण के मुद्दे को पहले ही मजबूती से उठाया जा चुका है।
उसके पिता, सेलिम ने दाढ़ी काटने की सजा में केवल कड़ी पिटाई को ही जोड़ दिया।

अपहृत महिला का विवाह उसके अपहरणकर्ता से कराने वाले व्यक्ति पर यह अत्याचार किया जाता है। सड़क पर शारीरिक और मौखिक उत्पीड़न के संबंध में, सेलिम का मुख्य विषय है।
नवाचार ऊपर उल्लिखित पीड़ितों के अतिरिक्त वर्गों से संबंधित है; इसके अतिरिक्त, उनके कानून के अनुसार न्यायाधीश उत्पीड़क को उस स्थान पर कैद कर सकता है जहाँ वह
इसे समुदाय के सर्वोत्तम हित में माना जाता है। अंततः, सेलिम के कानून में किसी अन्य व्यक्ति के स्वामित्व वाले जानवर के साथ यौन संबंध बनाना अपराध घोषित किया गया है; इसके लिए न्यायाधीश द्वारा निर्धारित कोड़े और प्रति कोड़े एक अकचे का जुर्माना है।
सेलिम की 'कनुननामे' में तीन प्रमुख रुझान स्पष्ट हैं। पहला, यह अपराधियों के साथ-साथ पीड़ितों पर भी लगभग समान ध्यान केंद्रित करके, अधिक संख्या में विवरण देकर और नए प्रावधान पेश करके शासन की अभियोजन पहुंच का विस्तार करता है।
अपराध के शिकार लोगों के वर्ग (दास, बच्चे)। पीड़ित के इस मुद्दे से जुड़ा हुआ है यौन अपराध में महिलाओं की जवाबदेही। यौन जगत
सेलिम की कानून की किताब पुरुषों की दुनिया है। पुरुष दोनों लिंगों के साथ यौन संबंध बनाते हैं, और पुरुष गिरोह बनाकर अपहरण करते हैं। बाकी सभी - महिलाएं, लड़कियां, लड़के,
गुलाम महिलाएं पुरुष हमलावर का संभावित शिकार होती हैं और इसलिए
घर के पुरुष मुखिया द्वारा संरक्षित किया जाना। इस प्रकार विवाहित महिलाओं की आपराधिक स्वायत्तता समाप्त हो जाती है, कम से कम वैचारिक रूप से (ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपराध कर रही हैं)।
यौन अपराध (अंधेरे में छिपकर किया जाता है)।
दूसरे, कनुननामे समलैंगिक यौन संबंध को एक आपराधिक कृत्य के रूप में प्रस्तुत करता है।
सेलिम की विधि पुस्तक का यह एक प्रमुख नवाचार है जो पहले से ज्ञात नहीं है

—

उसके पिता या दादा के कानूननाम में छाया हुआ। हालाँकि, समलैंगिक यौन संबंध अप्रत्यक्ष रूप से, कृत्यों के भंडार में एक भिन्नता के रूप में प्रवेश करता है।

यौन अपराधियों की प्राथमिकताएँ। दूसरे शब्दों में, इसे अभी तक कानूननामे में एक अपराध के रूप में नहीं माना गया है, जैसा कि सुलेमान के कानूननामे में माना जाएगा। यह दस्तावेजित तो है, लेकिन इसे कोई नाम नहीं दिया गया है। सेलिम के कानूननाम का तीसरा नवाचार परिभाषा और नियमन है-118 लेस्ली पियर्स

परिवार की संरचना। अब तक कनुननामे मुख्य रूप से व्यक्तिगत कर्ताओं से संबंधित रहा है; अब संरचित परिवार एक इकाई के रूप में उभरता है।
कानूनी असुरक्षा के साथ-साथ जवाबदेही भी। परिवार का पुरुष मुखिया अब अपने आश्रितों पर अधिक अधिकार प्राप्त कर चुका है। दूसरी ओर, इसके परिणामस्वरूप
अपने पितृसत्तात्मक अधिकार के कारण, वह अधिक दंडात्मक कार्रवाइयों के अधीन है: वह अपनी पत्नी और अपने किशोर पुत्र की गलतियों के लिए जुर्माना अदा करता है, जिससे उसे एक
सम्मान की रक्षा का बोझ बढ़ गया। इसके अलावा, उसका स्वयं का यौन दुराचार भी शामिल है।
उसकी अधिक सावधानीपूर्वक जांच की जाती है: उसे अपने व्यभिचार के लिए अधिक जुर्माना देना पड़ता है, और घर के सदस्यों के साथ उसके यौन संबंध कानूनी दायरे में आ जाते हैं।
शासन की निगाहों के बीच। संक्षेप में, साम्राज्य में सामाजिक व्यवस्था के लिए सेलिम की योजना की सफलता पुरुष गृहस्वामी की परिवार को बनाए रखने की क्षमता पर निर्भर करती प्रतीत होती है।
घरेलू व्यवस्था, जिसमें अपनी कामेच्छा का प्रबंधन भी शामिल है।
इस बिंदु पर विद्वानों द्वारा सेलिम से संबंधित मानी जाने वाली विभिन्न कानूनामे संस्करणों की विषयवस्तु पर एक टिप्पणी करना आवश्यक है: इनमें काफी भिन्नता पाई जाती है।
उनमें से.17 यह निस्संदेह सरकार के केंद्र में बढ़ती कानूनी गतिविधि का एक माप है, क्योंकि कानून नियमों का उत्पादन और मांग कई गुना बढ़ गई और शायद अनधिकृत प्रतियों के लिए द्वार खुल गया। फिर भी

साथ ही, कुछ स्थायी विशेषताएं भी मौजूद हैं—सेलिम के "हस्ताक्षर विधान"— जो उन कानूना पांडुलिपियों की पहचान करने में मदद करती हैं जो संबंधित हैं।
इस सुल्तान के लिए: व्यभिचार के लिए 400 अकचे का जुर्माना, पति द्वारा अपनी व्यभिचारिणी पत्नी का जुर्माना अदा करने की अनिवार्यता, और घर के सभी आश्रितों को शामिल करना।
सड़क पर उत्पीड़न संबंधी कानून में, और समलैंगिक यौन संबंध को अपराध घोषित करने वाले कानून में
एक लड़के या युवक द्वारा किए गए कृत्य। इस परिप्रेक्ष्य से, सेलिम पितृसत्तात्मक परिवार के निर्माता के रूप में और भी स्पष्ट रूप से उभरता है।
सेलिम के कानून्नामे में प्रयुक्त शब्दावली और प्रारूप राजनीतिक कानूनी सत्ता—सियासेत—को धार्मिक सत्ता से अधिक शक्तिशाली बनाते हैं।
कम से कम वैचारिक रूप से, कानूनी अधिकार। उनके कानूनामे की यह विशेषता है। यह सेलिम द्वारा शासक वर्ग के सदस्यों पर भी त्वरित दंड लगाने की कठोरता के बारे में कई किस्सों के अनुरूप है—उदाहरण के लिए,
150 राजकोषीय अधिकारियों को फांसी देने का उनका आदेश, जिससे मुख्य मुफ्ती ने बड़ी मुश्किल से उन्हें रोका।18 कई कानूनों में, कानूननामे कहता है कठोर ताज़ीर के लिए, ऐसा प्रतीत होता है कि न्यायाधीशों को अधिकतम स्तर की सजा देने का निर्देश दिया गया है।
मारपीट के संबंध में। सेलिम अपहरण संबंधी कानूनों को अन्य सभी ज़िना कानूनों के साथ शामिल कर देता है, जिससे बायज़िद द्वितीय द्वारा किए गए भेद का अंत हो जाता है।
शाही कानूनी सत्ता के राजनीतिक और धार्मिक आधार। ऐसा लगता है मानो सेलिम अपने पूर्वजों द्वारा इस नाजुक संतुलन पर दिए गए ध्यान से असंतुष्ट था। सेलिम प्रथम को भावी पीढ़ियों द्वारा यवुज़ (कठोर, यहाँ तक कि क्रूर) के रूप में जाना जाता है।
लेकिन उन्हें एक कम ज्ञात उपाधि भी दी गई: आदिल (न्यायी)।19 और
यौनिकता को घरेलू बनाना 119

उनके पुत्र सुलेमान को कानूनी ("कानून निर्माता") उपाधि दी गई, जो एक श्रद्धांजलि के रूप में अभिप्रेत थी। इस प्रकार, शाही कानून का विकास एक यह एक सत्तावादी शासन की सरल कहानी है जो सामाजिक इंजीनियरिंग और राजनीतिक उद्देश्यों के लिए अधीन आबादी पर अधिकाधिक कानून थोपता है। नियंत्रण। सेलिम के कुछ नए कानूनों में एक कानूनी सिद्धांत के सूक्ष्म बिंदुओं के बारे में क्षेत्र से प्राप्त पूछताछ का जवाब देने के लिए जारी किए गए स्पष्टीकरण का आभास होता है।
जिस प्रकार एबू सूद के मुहद्दरे महिला पर जारी किए गए कई फतवों ने प्रतिक्रिया दी, उसी प्रकार
महिलाओं को एकांतवास में रखने की प्रथा को लेकर आम भ्रम है। हम आसानी से एक ऐसे परिदृश्य की कल्पना कर सकते हैं जिसमें न्यायाधीश कानून को लागू करने का प्रयास कर रहे हों।
जब उन्हें इसके पाठ में चुप्पी या अस्पष्टता का सामना करना पड़ा, तो उन्होंने अपने महानगरीय या प्रांतीय पदों से शाही कानूनी कार्यालयों से उत्तर की अपील की। तदनुसार, कानूननामा के रचनाकार जमीनी स्तर के लोगों की राय सुनने के लिए खुले प्रतीत होते हैं।
उत्तेजना। वास्तव में, सेलिम लगभग साम्राज्य के न्यायाधीशों से बातचीत करते हुए प्रतीत होते हैं (उनके कानूननामे में प्रतीत होने वाले तुच्छ विवरणों के उदाहरण हैं...)
घरेलू दासियों और तलाकशुदा पत्नियों के साथ पुरुषों के यौन संबंधों में अपराध की गंभीरता को स्पष्ट करने वाले कानून, साथ ही साथ यह स्पष्ट करने वाला कानून कि क्या
यौन मानहानि का दंड उस व्यक्ति पर लागू होता था जिसने किसी दूसरे व्यक्ति पर अपने घर की किसी महिला के साथ ज़िना (व्यभिचार) का झूठा आरोप लगाया हो। यहाँ यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि साम्राज्य की कानूनी संरचना में काफी विकास हो चुका था।
मेहमेद द्वितीय और सेलिम प्रथम के शासनकाल के बीच: न्यायाधीशों, न्यायविदों के नए समूह,
और विधि विद्वानों का उत्पादन मेहमेद, बायज़िद और उनके प्रमुख राजनेताओं द्वारा स्थापित शाही मदरसों द्वारा किया गया था, जबकि नव-विजित
शहरों और कस्बों को नए न्यायालयों और न्यायाधीशों की आवश्यकता थी।

एन ईडब्ल्यू टी ई आर आर आई टी ओ आर आई ई एस, एन ई डब्ल्यू एल ई जी ए एल आर ई जी आई एम ई एस

मेहमेद के कानूननामा की दंड संहिता में प्रथागत कानून के तहत लगभग कोई दंड प्रावधान नहीं हैं; यह मूल और "साफ-सुथरी" है, जिसमें नियमित रूप से ताज़ीर के तहत पिटाई और जुर्माना लगाया जाता है, और न्यायाधीश और सुल्तान द्वारा व्यवस्थित एक कानूनी दुनिया की कल्पना की गई है।
बायज़िद की कनुननामे, अपने सियासेट खंड के साथ, पहली नज़र में कम आधुनिक लगती है, क्योंकि इसमें एक जेबकतरा अपनी बांह में चाकू लिए हुए है, और एक दलाल है जिसके पास...
माथे पर निशान, और नपुंसक बनाया गया यौन अपराधी। लेकिन यह कोई विरोधी अभियान नहीं था—
बायज़िद को ऐसे क़ानून जोड़ने के लिए प्रेरित करने वाला क्वारियन झुकाव, उनके साम्राज्य में प्रचलित विविध सामाजिक और कानूनी रीति-रिवाजों के प्रति एक राजनीतिज्ञ का सम्मान था।20 दूसरे शब्दों में, उनके कानूनामे ने एक कानूनी कार्यक्रम को कार्यकारी बल दिया, जिसके कई विवरण साम्राज्य की प्रजा के लिए परिचित रहे होंगे।
सामाजिक व्यवहार के प्रति इस बढ़ती प्रतिक्रियाशीलता को ध्यान में रखते हुए—
उदाहरण के लिए, बायज़िद का अपहरण की समस्या पर और सेलिम का यौन उत्पीड़न पर 120 लेस्ली पियर्स

घर की राजनीति—यह एक सीधा-सादा काम लग सकता है। अंत तक
सेलिम के शासनकाल के दौरान, साम्राज्य में अधिक जटिल प्रजाजन आबादी समाहित हो गई, विशेष रूप से 1514 में पूर्वी अनातोलिया और 1516-17 में ग्रेटर अमेरिका में ममलुक सल्तनत के क्षेत्रों पर इस सुल्तान की महत्वपूर्ण विजयों के बाद।
सीरिया, मिस्र और हिजाज़, जहाँ मुसलमानों के पवित्र शहर मक्का और मदीना स्थित हैं, में प्रथागत कानूनों का प्रभाव और दबाव व्यापक रूप से फैल गया।

इन नई विजयों के साथ-साथ, कई नए समूह और संस्कृतियाँ शाही प्रशासनिक प्रणालियों में एकीकृत होने की प्रक्रिया से गुज़रीं। पुराने इस्लामी क्षेत्रों का विलय, जिन्हें मूल ओटोमन क्षेत्रों की तुलना में इस्लामी कानून का अधिक अनुभव था, अक्सर ओटोमन समाज में सामाजिक और धार्मिक रूढ़िवादिता के आगमन का कारण माना जाता है।
हालाँकि, ओटोमन साम्राज्य के सामाजिक दृष्टिकोण पर सेलिम की विजयों का प्रभाव स्पष्ट नहीं है।
कानूनी संस्कृति एक विवादास्पद विषय है। एक बात तो यह है कि यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अरब देशों की आदतें अनातोलिया या बाल्कन की तुलना में अधिक रूढ़िवादी थीं।21 और जैसा कि हमने देखा है, ऐसे स्वदेशी कारक भी थे जो विश्व में सामाजिक परिवर्तन के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।
घरेलू स्थान, यौन संबंध और लिंग, और हरम संस्कृति का बढ़ता महत्व। बायज़िद के कानूननामा ने पहले ही एक व्यवस्थित समाज की महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में गृह प्रबंधन के महत्व को उजागर कर दिया था। इसके अलावा, बायज़िद को स्वयं पितृसत्तात्मक परिवार का आदर्श स्थापित करने का श्रेय दिया जा सकता है: उनकी अनेक रखैलें, पुत्र, पुत्रियाँ और दामादों ने उनके विशाल राजपरिवार के प्रबंधन को एक जटिल राजनीतिक कार्य बना दिया था।22 अंत में, लेकिन शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सेलिम के शासनकाल तक, ओटोमन शासन ने धार्मिक विद्वानों और प्रशासकों का अपना एक दुर्जेय समूह तैयार कर लिया था।
बाद के ममलुक दशकों में प्रशासनिक नियंत्रण में गिरावट के कारण उत्पन्न कानूनी शून्य को भरने के लिए तैयार।
ओटोमन कानूनी संस्कृति कई विरासतों और प्रभावों से प्रभावित थी, जिनमें शाही (इस्लामी, बीजान्टिन और तुर्क-मंगोल) के साथ-साथ स्थानीय और क्षेत्रीय प्रभाव भी शामिल थे। अब मैं एक ऐसे क्षेत्रीय प्रभाव का पता लगाना चाहूंगा जो ओटोमन साम्राज्य से पहले का है।
सेलिम की विजयें, जो संभवतः बायज़िद और विशेष रूप से सेलिम के कानून्नमों — पंद्रहवीं शताब्दी के अनातोलिया के तुर्कमेन राज्यों की सामाजिक-कानूनी दुनिया—के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थीं। मैं यह सुझाव देना चाहता हूँ कि सामाजिक-कानूनी

इन राज्यों की संस्कृति ने ओटोमन प्रशासन पर काफी दबाव डाला—यह दबाव कम से कम आंशिक रूप से कानूनी विस्तार का कारण बनता है।
इन दोनों सुल्तानों के कानूननामों में हरम की वास्तुकला स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। ओटोमन कानून के विद्वान उमर लुत्फी बरकान ने बार-बार दो प्रमुख तुर्कमेनिस्तानी राज्यों - पश्चिम में स्थित अक्कोयुनलू सल्तनत - की कानूनी विरासत के ओटोमन साम्राज्य पर प्रभाव की ओर ध्यान दिलाया है। यौनिकता को घरेलू बनाना 121

पूर्वी ईरान पर उसका नियंत्रण था, लेकिन वह पूर्वी अनातोलिया और दुलकादिर रियासत को नियंत्रित करता था।
जिसका क्षेत्र मध्य अनातोलिया से लेकर दक्षिणपूर्वी अनातोलिया तक फैला हुआ था।
उत्तरी सीरिया.23 इन दोनों राज्यों ने मेहमेद द्वितीय और बायज़िद द्वितीय को चुनौती दी, और सेलिम प्रथम के शासनकाल तक ग्रेटर अनातोलिया में उनके क्षेत्र नहीं बढ़े थे।
अंततः उन पर विजय प्राप्त कर ली गई। चौदहवीं शताब्दी में स्थापित, दोनों शासन व्यवस्थाओं का मध्य और पूर्वी अनातोलिया, उत्तरी क्षेत्रों में जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।
सीरिया और इराक।
तुर्कमेनिस्तान के शासक विधिवत रूप से धर्मनिष्ठ मुसलमान थे, हालाँकि ईश्वर के कानून और उसके ऐतिहासिक प्रशासन के प्रति उनका सम्मान एक मजबूत पूर्वाग्रह से प्रेरित था।
जनजातीय रीति-रिवाजों और सरदारों के अधिकारों की भावना। प्रसिद्ध अक्कोयुनलू सुल्तान उज़ुन हसन द्वारा जारी किए गए कई स्थानीय कानूननाम, जिन्होंने शासन किया था।
1453 से 1478 तक, ये मुख्य रूप से कृषि कर से संबंधित थे। इन्हें ओटोमन प्रशासन द्वारा लगभग 1518 तक बनाए रखा गया था,24 जब इस क्षेत्र में ओटोमन प्रांतीय कानून लागू किए गए थे, हालांकि
बाद में विभिन्न अक्कोयुनलू कानूनों का हवाला दिया गया। आपराधिक धाराओं के कारण दुलकादिर कानूनी व्यवस्था हमारे लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

दुलकादिर कानूननामे में मौजूद। यह कानूननामे, जो अपने ओटोमन समकक्ष की तरह विभिन्न संस्करणों में मौजूद था, ओटोमन शासन के तहत लगभग 1560 तक लागू रहा, जब अंततः इसे प्रतिस्थापित कर दिया गया।
ओटोमन प्रांतीय कानून.25 क्या अपराध की परिभाषा और विनियमन में इसने कानून-i के साथ जमीनी स्तर पर अधिकार के लिए प्रतिस्पर्धा की?
उस्मानी एक अनछुआ प्रश्न है—और शायद ऐसा प्रश्न है जिसका अध्ययन संभव नहीं है, क्योंकि स्थानीय कानूनी जीवन पर प्रकाश डालने वाले न्यायालयी अभिलेखों या अन्य स्थानीय स्रोतों की कमी है। हालाँकि, यह तथ्य कि ओटोमन साम्राज्य को पूर्व दुलकादिर साम्राज्य के अधिक घनी आबादी वाले जनजातीय क्षेत्रों में दुलकादिर कानूननामे को विस्थापित करने में इतना लंबा समय लगा, निश्चित रूप से ज़मीनी स्तर पर इसकी दृढ़ता का प्रमाण है।26 अक्कोयुनलू और दुलकादिर के अनातोलियन क्षेत्र कठिन थे।
ये वे क्षेत्र थे जिन पर ओटोमन साम्राज्य का राजनीतिक और सामाजिक दोनों तरह से नियंत्रण था। सेलिम प्रथम इन क्षेत्रों पर विशेष रूप से सतर्क रहते थे और इनके प्रति उनकी नीतियां बेहद कठोर थीं।
साम्राज्य की पूर्वी सीमा और वे अड़ियल आबादी जो ओटोमन नियंत्रण के लिए खतरा बन सकती थी। सामान्य तौर पर, जनजातीय नियंत्रण की चुनौती
बेदुइन अरब, तुर्कमेन और कुर्द जैसे समूह साम्राज्य के अंतर्गत आते थे। कभी पूरी तरह से नहीं मिले। बायज़िद, सेलिम और सुलेमान के शासनकाल के दौरान, अनातोलिया, उत्तरी सीरिया और अन्य क्षेत्रों की उद्दंड और ओटोमन विरोधी तुर्कमेन जनजातियाँ
उत्तरी इराक ने ओटोमन शासन के लिए विशेष रूप से गंभीर राजनीतिक संकट खड़ा कर दिया था क्योंकि वे तेजी से उग्रवादी और विस्तारवादी ताकतों का समर्थन कर रहे थे।
सियोनिस्ट सफाविद आध्यात्मिक व्यवस्था, जिसने सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में ईरान में एक नए साम्राज्य को जन्म दिया। वास्तव में, ये तुर्कमेन ही थे, नाममात्र 122 लेस्ली पियर्स

ओटोमन सुल्तान की प्रजा, जिन्होंने अधिकांश सैन्य शक्ति प्रदान की। आश्चर्यजनक रूप से सफल नए राज्य के लिए। सेलिम ने कथित तौर पर अपने पद से हटा दिया।

1512 में सफ़वी शासन के बढ़ते खतरे से निपटने में उनकी विफलता के कारण उनके पिता को सत्ता से बेदखल कर दिया गया, और 1514 में ईरान के नए शाह पर सेलिम की विजय ने तुर्कमेनिस्तान के क्षेत्र को, भले ही तुर्कमेनों के दिलों को नहीं, वापस ओटोमन साम्राज्य में ला दिया। अब हम दुलकादिर कानूननामे की ओर रुख करते हैं और इसके स्वरूप और ओटोमन कानूननामे से इसके संभावित संबंध का पता लगाते हैं।

डीयू एल के ए डी आई आर कन यू एन ए एम ई

पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पूर्व की यात्रा करने वाले बर्ट्रैंडन डे ला ब्रोक्वियर,
उन्होंने अपने संस्मरण में दुलकादिर की महिला सैनिकों का वर्णन किया है। 27 यहां तक कि हैंस डर्नश्वम, जो इस्तांबुल की महिलाओं को कम महत्व देते थे, ने भी उल्लेख किया कि दुलकादिर की महिलाएं घोड़ों को अच्छी तरह संभालती थीं और पुरुषों की तरह उन पर सवार होती थीं।
इसलिए यह विरोधाभासी प्रतीत होता है कि दुलकादिर कानूननामे लैंगिक संबंधों के प्रति उग्र था।28 यह दृढ़ता से निवास की रक्षा करता है, साझा करते हुए
यौन इरादों से घरों में घुसपैठ करने के संबंध में ओटोमन कानूननामे के नियम अपहरण का इरादा, अपहरण और अपहृत महिला का उसके अपहरणकर्ता से विवाह रोकना। सेलिम के कानूनामे की तरह, यह एक स्पष्ट रूप से मर्दाना दृष्टिकोण को दर्शाता है।
एक ऐसी दुनिया में, जहाँ पुरुषों को यौन अपराधों का सूत्रधार माना जाता है, वहीं महिलाओं और लड़कों के यौन दुराचार को पुरुषों द्वारा किए गए हमले का परिणाम बताया जाता है। फिर भी
साथ ही, दुलकादिर कानूननामे व्यापक रूप से इस बात से अवगत है कि
अपराध में इन कनिष्ठ सहयोगियों की संभावित संलिप्तता: यदि उसका साथी स्वेच्छा से सहयोगी था, तो यह उकसाने वाले की सजा की गंभीरता को कम कर देता है।

हालाँकि, ओटोमन कानून के विपरीत, व्यभिचारिणी महिला के भाग्य के बारे में इसमें कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है; उसका दंड स्पष्ट रूप से उसके न्यायाधीश के हाथों में है।
पुरुष रिश्तेदार।
इसके नियमों का विस्तार से अध्ययन करने से पहले, हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि, ओटोमन कानून की तरह, दुलकादिर कानून भी विभिन्न रूपों में मौजूद था। या यूँ कहें कि,
1520 के दशक से शुरू होने वाले ओटोमन सर्वेक्षण रजिस्टरों में उनके समावेश के माध्यम से दो मुख्य प्रकार बचे हैं।29 इनमें से एक बोज़ोक का कनूननाम है,
मध्य अनातोलिया का एक मुख्य रूप से जनजातीय क्षेत्र जो दुलकादिर साम्राज्य का हिस्सा था (और जो ओटोमन राजनीतिक नियंत्रण का कुख्यात रूप से विरोध करता था); दूसरा दुलकादिर के शासक अला एड-देवले का कानूनी नाम है। 1481 से 1515 तक की रियासत। बाद वाले में पहले वाले की तुलना में कुछ अधिक अरबी—अर्थात इस्लामी—शब्दावली है, जो शायद शहरी परिवेश का प्रतिबिंब है।
दुलकादिर राजकुमारों का निवास स्थान और इस्लामी संस्थानों को उनका संरक्षण।
यह मान लेना तर्कसंगत है कि दोनों प्रकार के कानून सोलहवीं शताब्दी के आरंभिक काल की दुलकादिर कानून प्रथा को प्रतिबिंबित करते थे।
यौनिकता को घरेलू बनाना 123

दुलकादिर कानूननामे की एक उत्कृष्ट विशेषता यह है कि इसमें पुरुष शामिल हैं।
महिलाओं द्वारा किए गए अपराधों के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाता है। कानून में
ज़िना संबंधी खंड ("ज़िना और संबंधित मामलों पर नियम [अहकाम]") में केवल पुरुषों को ही स्पष्ट रूप से दंडित किया गया है। विवाहित व्यभिचारी पर पंद्रह सोने का जुर्माना लगाया जाता है।
व्यभिचार के दोषी एक पुरुष को बारह या तेरह टुकड़े (मुक्के) दिए जाते थे। (ये जुर्माने उसी अपराध के लिए ओटोमन काल के जुर्माने से काफी अधिक थे।)

दरअसल, छापेमारी करने वाले दलों द्वारा अपहरण को एक ऐसे कानून में संबोधित किया गया है जो दल के प्रत्येक सदस्य पर आठ सोने के सिक्के (बोज़ोक) या पंद्रह (अला एड-देवले) का जुर्माना लगाता है।
(जिसमें घर में जबरदस्ती घुसना शामिल है)। इसके अलावा, यदि हमलावरों से लड़ते समय कोई घायल हो जाता है, तो अपहरणकर्ता इसके लिए उत्तरदायी होंगे। मुआवजा (दियत)। विवाह के बहाने अपहरण की समस्या पर, दुलकादिर कानूननामे, ओटोमन कानूननामे की तुलना में अधिक विस्तृत और इसलिए कम मनमाना है। यह इस संभावना को स्वीकार करता है कि महिला का पुरुष अभिभावक युगल के भाग जाने की स्थिति में सहमति दे सकता है। हालाँकि, अभिभावक अपील द्वारा विवाह रद्द करने पर जोर दे सकता है।
इस्लामी कानूनी सिद्धांत कुफुव (सामाजिक-आर्थिक अनुकूलता) का हवाला देते हुए—अर्थात्, यह दावा करके कि उसकी महिला रिश्तेदार सामाजिक रूप से अपने अपहरणकर्ता से श्रेष्ठ है।
ये विवरण रणनीतियों की दीर्घकालिक निरंतरता का संकेत देते हैं, जिसका अन्वेषण 124 लेस्ली पियर्स में किया गया है।

मानवविज्ञानी डैनियल के कार्यों में उनके आधुनिक प्रकटीकरण
पूर्व दुलकादिर क्षेत्र में खानाबदोशों के साथ बेट्स, जिसके द्वारा युवा प्रेमी
विवाह में बाधाओं को दूर करने के लिए अपहरण का उपयोग करना।30 शायद षड्यंत्रकारी योजना की संभावना उस कानून के पीछे निहित थी जो दंडित करता था
यह महज़ एक मंगनीशुदा जोड़े के बीच की बातचीत है। व्यभिचारिणी के बारे में, दुलकादिर कानूननामे में ऐसा कुछ भी प्रदर्शित नहीं होता है।
कानूनी जवाबदेही के संबंध में अस्पष्टता है, जैसा कि इसके ओटोमन समकक्ष में है—अर्थात्, क्या उसे या उसके व्यभिचारी पति को ज़िना की सज़ा भुगतनी चाहिए। बल्कि, व्यभिचारिणी का कोई ज़िक्र ही नहीं है, जिसका कारण स्पष्ट रूप से यह है कि उसकी सज़ा उसके पति के हाथों में है। कानूननामे इस बात पर अडिग है कि पति को अपनी दोनों पत्नियों को मारने का अधिकार है।
यदि पति अपनी पत्नी और उसके प्रेमी को प्रेम प्रसंग में रंगे हाथों पकड़ लेता है तो।

“शरिया कानून के तहत वह हत्या का दोषी है, लेकिन प्रथागत कानून [ओर्फेन] के अनुसार वह दोषी नहीं है,” बोज़ोक कानूननामे ने दावा किया। अला एड-देवले का कानूननामे है
और भी दृढ़ होकर, यह स्वीकार करते हुए कि कुछ लोगों द्वारा ऑनर किलिंग को प्रथागत कानून द्वारा भी निषिद्ध माना जाता है: "वह हत्या का दोषी नहीं है, कुछ भी नहीं।"
उससे [जुर्माने या मुआवजे के रूप में] यह कहकर लिया जा सकता है कि वह प्रथागत कानून के तहत दोषी।" यह जानना मुश्किल है कि ऑनर किलिंग वास्तव में कितनी आम थी, लेकिन स्पष्ट रूप से यह इतनी आम या महत्वपूर्ण थी कि इसकी वैधता पर बहस छिड़ गई।
दुलकादिर द्वारा ऑनर किलिंग के बचाव में दिए गए इस बयान के आलोक में, हम याद कर सकते हैं कि
बायज़िद द्वितीय द्वारा विवाहित व्यक्ति को फांसी देने के मामले में अपनाई गई विपरीत रणनीति।
महिला के प्रेमी को राज्य अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया ("विवाहित महिला के साथ पकड़े गए पुरुष को सियासेट (कानून प्रवर्तन) द्वारा दंडित किया जाता है")। इस प्रकार, इसने पति के अधिकार का हनन किया। कम से कम अपहरण के संदर्भ में, मृत्युदंड के मामले में, ओटोमन कानून ने पत्नी के विश्वासघात के मुद्दे को नजरअंदाज कर दिया, शायद इस उम्मीद में कि एक व्यभिचारी पति
पुरुष अपनी पत्नी को तलाक देकर अपना सम्मान वापस पाने से संतुष्ट होगा। (व्यभिचारी पत्नी को तलाक न देने वाले व्यक्ति से वसूले जाने वाले जुर्माने को याद करें, यह नियम दुलकादिर कानूननामे में मौजूद नहीं है)। हालाँकि, सुलेमान प्रथम के शासनकाल में,
ओटोमन कानूननामे सम्मान के नाम पर हत्या को मंजूरी देता था, जाहिर तौर पर जनता के दबाव के आगे झुकते हुए, हालांकि कुछ प्रतिबंधात्मक शर्तों के साथ। ऑनर किलिंग के अलावा, ज़िना से संबंधित अपराधों में सबसे गंभीर दंडनीय अपराध हैं।
दुलकादिर कानूननामे में अपराधों में लड़कों का अपहरण (ओग्लान) शामिल था।
इस अपराध के लिए दी जाने वाली कड़ी सजा अपहरण करने वाले दल के सभी सदस्यों पर लागू होती प्रतीत होती है।

या तो बधियाकरण या चौबीस सोने के सिक्कों का जुर्माना। हालाँकि, यदि अपहृत व्यक्ति समलैंगिक है, जो संभवतः अपने अपहरण में शामिल है, तो स्थिति बदल जाती है:
इस मामले में, दोनों पक्षों को शरिया कानून के तहत दी जाने वाली सजा के तहत दंडित किया जाता है।
पिटाई या अविवाहित पुरुष व्यभिचारियों पर लगाए गए जुर्माने के भुगतान द्वारा सजा दी जा सकती है।
यौनिकता को घरेलू बनाना 125

(बारह सोने के सिक्के)। ओटोमन नीति के विपरीत, पिताओं से अपेक्षा नहीं की जाती है।
यदि यह जुर्माना उनके नाबालिग बेटों द्वारा लगाया जाता है तो हमें इसका भुगतान करना होगा। हमें क्या करना चाहिए?
इस आखिरी फैसले के बारे में? बेटी के अपहरण के विपरीत, एक
लड़के की हत्या एक जघन्य अपराध है, जिससे पिताओं का कोई लेना-देना नहीं है — या उन्हें कोई लेना-देना नहीं होना चाहिए। दुलकादिर कानूननामे शायद उसी भयावह प्रतिशोध—एक संभावित रक्तपात—को रोकने का प्रयास कर रहा था, जिसे बायज़िद ने पति को अपने बच्चे को जन्म देने के अधिकार से वंचित करके टालने की कोशिश की थी।
उसने अपनी व्यभिचारी पत्नी को मृत्युदंड दिया।
दुलकादिर कानूननामे की सामाजिक दुनिया एक महानगरीय दुनिया नहीं है। इसके विधानों में कोई न्यायाधीश, कोई गुलाम और कोई गैर-मुस्लिम मौजूद नहीं हैं। एक ऐसे कबीले के माहौल के अनुरूप जिसमें लूटपाट जीवन का एक तरीका था, पहले
इसमें वर्णित अपराधों में राजमार्ग पर लूटपाट और चोरी शामिल हैं। हालाँकि, कानून केवल खानाबदोशों तक ही सीमित नहीं है, क्योंकि इसमें कृषि और वाणिज्यिक अपराधों को नियंत्रित करने वाले कानून भी शामिल हैं। न ही कानून ईश्वर के कानून के प्रति शासक की जागरूकता के संबंध में शरिया की अपेक्षाओं की अनदेखी करता है। "ईश्वर के अपराध" सभी इसमें मौजूद हैं, और इसके व्यवहार में...
यौन निंदा (कज़फ़) की तुलना में, कानून शरिया की भावना के अधिक निकट है।

ओटोमन कानूनों के समानांतर।31 वास्तव में, दुलकादिर कानूनामे, शरिया के निर्धारित दंडों पर ध्यान देता है—या कम से कम दिखावटी तौर पर उनका समर्थन करता है।
व्यभिचारियों को पत्थर मारकर मृत्युदंड देना और चोरों के हाथ काट देना, हालांकि व्यावहारिक रूप से इन दंडों को त्याग दिया गया था।
जुर्माना। उदाहरण के लिए, व्यभिचार संबंधी कानून कहता है: "जो कोई भी ज़िना करता है
और यह शरिया [या] प्रथागत कानून के अनुसार सिद्ध हो जाता है, यदि वह नहीं है यदि कोई व्यक्ति विवाहित है और उसे विधिवत दंड नहीं दिया जाता है, तो उस पर बारह महीने का जुर्माना लगाया जाता है।
यदि वह विवाहित है और उसे पत्थर मारकर मौत की सजा नहीं दी जाती है, तो उस पर पंद्रह सोने के सिक्कों का जुर्माना लगाया जाता है। सुलेमान के शासनकाल तक ओटोमन साम्राज्य में यह प्रथा नहीं चली।
कानून में शरिया दंडों के संबंध में ऐसे अनुष्ठानिक संकेत मिलते हैं। आइए अब दुलकादिर कानूननामे और ओटोमन कानूननामे के विकास के बीच के संबंध पर विचार करें। हम इससे संतुष्ट नहीं हो सकते।
यह सरल धारणा है कि ओटोमन शासक—जिन्होंने धीरे-धीरे दुलकादिर कानूननामे में मौजूद प्रथागत कानून को अपनाया, जिसकी शुरुआत बायज़िद के अपहरण संबंधी कानूनों से हुई—सीधे तौर पर इससे प्रभावित थे।
दुलकादिर कालून प्रथा। प्रथम, दुलकादिर कालून नाम स्वयं ओटोमन कालून में हुए विकास से प्रभावित हो सकता है, यह देखते हुए कि
दुलकादिर शासक पहले तो ओटोमन सुल्तानों के पड़ोसी थे—ज्यादातर मामलों में उनके मित्रवत थे—फिर उनके जागीरदार बने, और अंत में एक युद्ध में उनका सफाया कर दिया गया।
1522 में क्रूर अंत। चूंकि हम निश्चित नहीं हो सकते कि यह कितना प्रतिनिधि है।
दुलकादिर कानूननामे के बचे हुए ग्रंथ 126 लेस्ली पियर्स की कानूनी व्यवस्था के हैं।

अपने चरम उत्कर्ष पर रियासत के समय, यह कहना मुश्किल है कि किन कारकों ने इन दोनों को प्रभावित किया।

कनुननाम परंपराओं का आदान-प्रदान कब और कैसे हुआ। दूसरा, यह बहुत संभव है दुलकादिर शासकों द्वारा अपराध घोषित और दंडित की जाने वाली प्रथाएँ व्यापक थीं और इसी तरह उन पर ओटोमन साम्राज्य में भी मुकदमा चलाया जाता था, इससे पहले कि उन्हें अपराध घोषित किया जाए।
ओटोमन कानून में इसे मान्यता दी गई है। आखिरकार, ओटोमन राजवंश और उसके मूल अनुयायियों की उत्पत्ति तुर्कमेन और तुर्कमेन दोनों से हुई थी। अनातोलियन। और तीसरा, दोनों कानूनों में शामिल कुछ कानूनी प्रतिबंध— उदाहरण के लिए, ऑनर किलिंग और आपराधिक दंड के रूप में जुर्माने की प्रधानता—को भूमि में ही अंतर्निहित कहा जा सकता है; उनका एक
इस क्षेत्र में इसका लंबा इतिहास रहा है, उदाहरण के लिए, ईसा पूर्व दूसरी सहस्राब्दी के अनातोलियन हित्ती शासकों की कानूनी संहिताओं में इसकी उपस्थिति देखी जा सकती है।32 इन सब बातों के बावजूद,
सेलिम और दुलकादिर के कानूननामों द्वारा साझा किए गए जोर—कठोर
ज़िना के लिए जुर्माना, महिलाओं के अपराधों के लिए पुरुष रिश्तेदारों की ज़िम्मेदारी, पुरुषों द्वारा बेटों को यौन वस्तु के रूप में इस्तेमाल किए जाने से घृणा—ये सभी बातें संकेत करती हैं कि
सेलिम दुलकादिर कानून पर विशेष ध्यान देता था, जिसका एक मुख्य कारण यह था कि वही उस रियासत को साम्राज्य में लाया था। लेकिन अंत में,
प्रभाव के कारक चाहे जो भी हों, समानताएं और निर्विवाद प्रभाव चाहे जो भी हों।
दोनों राज्यों में कानून के विकास से उत्पन्न परिणामों के परिणामस्वरूप हरम की कानूनी संरचना को विस्तृत करने में राज्य की भूमिका का विस्तार हुआ।
संस्कृति।

the KanUn name of Suleyman I

सोलहवीं शताब्दी के शासक सुल्तान सुलेमान प्रथम का कानूननामा
वह व्यक्ति जो शताब्दी में पैदा हुआ था और जिसके शासनकाल को बाद में ओटोमन साम्राज्य का चरम माना गया।

साम्राज्य, एक सारगर्भ है—शाही कानून का एक व्यापक विवेचन जो उनके पूर्वजों के कार्यों को समाहित करता है और साथ ही नए प्रावधानों को भी जोड़ता है।
विवरण स्पष्ट करते हुए।33 सुलेमान और उनके सलाहकारों ने अपने पिता द्वारा जीते गए राज्यों - अक्कोयुनलू, ममलुक और दुलकादिर - की कानूनी विरासतों को आत्मसात करने का काम भी पूरा कर लिया। पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के शासकों जैसे ममलुक क़ायतबे और अक्कोयुनलू हसन के प्रति पूर्ववर्ती ओटोमन प्रांतीय कानून में दिखाई गई श्रद्धा को त्यागते हुए—
अला एड-देवले, जो इन सुल्तानों के समकक्ष नहीं थे, को कानून के लेखक के रूप में उद्धृत नहीं किया गया—सुलेमान के फरमानों और प्रांतीय कानून संहिताओं की भाषा ने स्पष्ट रूप से ओटोमन कानून की पूर्ण परिपक्वता की घोषणा की। इस प्रकार, संभवतः 1540 के आसपास पूर्ण हुआ, कानूननामा-ए उस्मानी सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक अनिवार्य रूप से अपरिवर्तित रहा (और
तब संशोधन का मुख्य केंद्र कराधान संबंधी धाराएँ थीं।
यौनिकता को घरेलू बनाना 127

बायज़िद की तरह, सुलेमान की 'कानूननामा' भी यौन अपराध को दोनों दृष्टिकोणों से देखती है।
इसमें ज़िना खंड और सियासेट खंड शामिल हैं। यह उनके दादा के समय के कानूनों को बहाल करता है।
उन कानूनी नामों को शामिल किया गया है जिन्हें उनके पिता के संपादनों में अनदेखा या निरस्त कर दिया गया था, जबकि यह बाद वाले में देखी जाने वाली विस्तृत व्याख्या की प्रथा को जारी रखता है।
मौजूदा कानूनों के बारीक बिंदु। ज़िना कानूनों की संख्या, इसके कई रूपों में, काफी भिन्न होती है, सबसे बड़ी संख्या चालीस से अधिक है।34 कभी-कभी ऐसा होता है
किसी विशिष्ट अपराध पर अनेक और विरोधाभासी निर्णय होते हैं—उदाहरण के लिए,
दलाली पर तीन नियम (एक ज़िना के अंतर्गत और दो सियासेत के अंतर्गत)। वास्तव में, सुलेमान का कानूननामा इससे कहीं अधिक निर्भीक है।

इसके पूर्ववर्ती नियमों में परस्पर विरोधी नियम शामिल थे, जो हमें दृढ़ता से याद दिलाते हैं कि ओटोमन कानूननामा एक निश्चित संहिता नहीं बल्कि नियमों का संग्रह था।
उन कानूनों के बारे में जिनमें उनके प्रयोग में छूट दी गई थी।
सुलेमान के कानूननामे में दो नए कानूनों के माध्यम से प्रथागत कानून के साथ ओटोमन साम्राज्य के टकराव को आगे बढ़ाया गया है, जिससे दुलकादिर कानूननामे के साथ समानताएं स्थापित होती हैं। अपहरण में महिलाओं की संभावित संलिप्तता को अंततः स्वीकार किया गया है। दोषी महिला को सीधे दंडित किया जाता है: उसके जननांगों पर दाग लगाया जाता है,
अपहरणकर्ता के बधियाकरण का पूरक प्रतीत होता है। अब उसे भी दंडित किया जा रहा है।
अपहरण में सहभागी होने पर: दो दंडात्मक विकल्प हैं बधियाकरण या ताज़ीर पिटाई के साथ-साथ 100 अकचेस से अधिक का जुर्माना नहीं (ये दंड बराबर या (व्यभिचार के लिए उच्चतम ज़िना जुर्माने से अधिक)। एक अन्य नया कानून ऑनर किलिंग की लगातार बनी रहने वाली आदत के प्रति रियायत देता है। अब कानून का उद्देश्य इसे रोकना नहीं बल्कि इसे सीमित करना है:
पति द्वारा अपनी पत्नी और उसके प्रेमी की हत्या (कुछ संस्करणों में, पिता द्वारा अपनी बेटी की हत्या भी) तब तक जायज़ है जब तक वह व्यभिचारियों को देखने के लिए तुरंत "समुदाय" (सेमात) को बुलाता है। यदि वह ऐसा करता है, तो मारे गए व्यक्तियों के वारिस मुआवज़े का दावा नहीं कर सकते।
(अर्थात, उसका कृत्य हत्या नहीं है)। एक प्रकार के परिणाम स्वरूप, एक व्यक्ति जो किसी को घायल करता है
अगर वह अपने घर में किसी अजनबी को पकड़ता है तो उस पर मुकदमा नहीं चलाया जाएगा, बशर्ते वह तुरंत गवाहों को बुला ले।
सुलेमान के शासनकाल के साथ, हम शायद ओटोमन और दुलकादिर कानून परंपराओं के बीच एक घनिष्ठ संबंध स्थापित करने का अनुमान लगा सकते हैं। चैपल का कार्यालय—
ओटोमन कानूननामे के नए संस्करण तैयार करने के लिए जिम्मेदार लेरी (निशांसी) ने संभवतः सुलेमान के शासनकाल के दौरान प्रसारित भूमि सर्वेक्षण रजिस्टरों में बोज़ोक और अला एड-देवले कानूननामे के पुनर्लेखन

में प्रत्यक्ष भूमिका निभाई थी। दूसरे शब्दों में, शाही कानूनी विशेषज्ञ अब दोनों कानूननामे संग्रहों के साथ सक्रिय रूप से काम कर रहे थे।
सुलेमान के कानूननामे का एक अंतिम नवाचार इसमें अपराधीकरण है। अप्राकृतिक यौन संबंध अपने आप में एक कृत्य है, न कि केवल अपहरण का एक उप-उत्पाद।
128 लेस्ली पियर्स

सेलिम ने पहले ही यौन उत्पीड़न का शिकार हुए लोगों को कनुननामे में लिख दिया था।
बालिग (बलिघ) हो चुके बेटे को "दास लड़की की भूमिका निभाने" के लिए दंडित किया जाता था, और यदि लड़का अभी भी अपरिपक्व होता तो पिता को दंडित किया जाता था। अब समलैंगिक यौन संबंध बनाने वाले को—यह मानते हुए कि वह बालिग हो चुका है और मंदबुद्धि नहीं है—ज़िना के जुर्माने (धनी विवाहित पुरुष के लिए 300 अकचे, धनी अविवाहित पुरुष के लिए 100, इत्यादि) से दंडित किया जाता था। इस प्रकार समलैंगिक यौन संबंध को ज़िना के अपराध में समाहित करने की प्रक्रिया पूरी हो गई। सुलेमान के कानूननामे में समलैंगिकता को अरबी भाषा, लिवता में परिभाषित किया गया है; वास्तव में, सुलेमान के कानूननामे के कुछ संस्करणों के ज़िना खंड का शीर्षक "ज़िना पर और" है।
लिवता।"35 इस आधार के तार्किक विस्तार में कि समलैंगिक संबंध बनाने वाला ही दोषी है, सुलेमान के कानूननामे के कुछ संस्करण उस व्यक्ति को दंडित करते हैं जिसने
अपनी पत्नी के साथ गुदा मैथुन करने के लिए, कड़ी पिटाई और जुर्माने की सजा का प्रावधान किया गया।
प्रत्येक स्ट्रोक पर एक अकचे। लेकिन कानूननामे उस वयस्क पुरुष के बारे में मौन है जो स्वस्थ दिमाग का है (अब "किसी व्यक्ति का बेटा" नहीं) और जो निष्क्रिय भूमिका चुनता है।
सुलेमान की कानूननामा उनके पूर्वजों के कार्यों में कुछ भिन्न प्रवृत्तियों का सामंजस्य भी स्थापित करती है। यह सेलिम द्वारा निर्धारित ज़िना जुर्माने को कम करती है, जिससे वापसी होती है।
उन्हें मेहमेद और बायज़िद द्वारा निर्धारित स्तरों तक लाना। महिलाओं की जवाबदेही

उनके आपराधिक कृत्यों को बहाल कर दिया गया है: विवाहित और विधवा महिलाओं को व्यभिचार, नाजायज यौन संबंध और दलाली के लिए जुर्माना देना होगा। सेलिम द्वारा जोर देकर कहा गया प्रावधान—
कि पति अपनी व्यभिचारी पत्नी का जुर्माना अदा करे—यह बात सुलेमान से संबंधित अधिकांश पांडुलिपियों में अनुपस्थित है।36 इसके बजाय, व्यभिचार के लिए दंड का उल्लेख मिलता है।
व्यभिचार के जुर्माने के स्तर तक बढ़कर इसका स्थान ले लिया है: कानूनामे में एक अमीर आदमी के लिए मानक 100 अकचेस के जुर्माने में एक संशोधन जोड़ा गया है - "लेकिन 300 अकचेस लेने का चलन हो गया है।" वास्तव में, अभिलेखों में यह बात दर्ज है।
स्थानीय अदालतों के निष्कर्षों से पता चलता है कि "व्यभिचारी तलाक" एक आम प्रथा थी,37 और इस प्रावधान की शब्दावली लोकप्रिय प्रथा के दबाव को दर्शाती है।
Kanunname.
इस लंबी कानूनी सदी की शाही कानून की आखिरी किताब में हरम का क्या हाल है? सेलिम और
सुलेमान की विधि पुस्तक 'दुलकादिर कानूननाम' से यह आभास होता है कि महिलाएं लगातार निषिद्ध यौन संबंधों में लिप्त रहती हैं। इसका परिणाम यह है कि
हरम संस्कृति की कठोरता उन विभिन्न प्रकार के नियमों से कम हो जाती है जो महिलाओं को दुराचारी के रूप में चित्रित किया जाता है। लेकिन हमें धोखे में नहीं आना चाहिए: हरम की गतिविधियाँ आज भी उतनी ही प्रचलित हैं, और पुरुषों और महिलाओं के सार्वजनिक मेलजोल पर नए प्रतिबंधों ने इन्हें और भी मजबूत कर दिया है। घर की इज्जत बचाने का बोझ आज भी पुरुष पर ही है, जिसकी पत्नी समझौता कर सकती है।
उसे अनेक प्रकार के कार्यों में शामिल करना। अपने स्वयं के
यौन उत्पीड़न से पीड़ित बेटे के लिए सबसे बड़ी समस्या यह है कि अप्राकृतिक यौन संबंध को अपराध घोषित किए जाने से उसके यौन विकल्प और भी सीमित हो गए हैं। बेशक, महिलाएं
यौनिकता को घरेलू बनाना 129

उन्हें आपराधिक एजेंटों के रूप में बहाल कर दिया गया है, लेकिन इसका शायद इससे कम संबंध है
उनकी व्यक्तिगत जवाबदेही—उनके अपने सम्मान—की पुनः प्राप्ति की तुलना में
ज़िना में लिंग-समरूपता के शरिया सिद्धांत के साथ कानूननामे के पुनर्संरेखण के साथ। यह पुनर्संरेखण सेलिम के संशोधनों के सुधार के रूप में प्रतीत होता है।
सियासेट पर अत्यधिक जोर।
सुलेमान के कानूननामे में महिलाओं के खुलेआम घूमने की छवि उन कानूनों की भारी संख्या के कारण बनती है जो उन पर प्रतिबंध लगाते हैं।
सार्वजनिक उपस्थिति। उदाहरण के लिए, महिलाएं अब सार्वजनिक रूप से झगड़ालू के रूप में दिखाई देती हैं, लेकिन केवल दंडित होने के लिए: उन्हें गंभीर ताज़ीर और प्रति व्यक्ति एक अकचे का जुर्माना देना पड़ता है।
जब तक कि वे "सम्माननीय" महिलाएं (मुहद्दरे) न हों, उस स्थिति में पति को फटकार लगाई जाती है और बीस अकचेस का जुर्माना लगाया जाता है (पति का अपमान)।
(माननीय व्यक्ति को कई कोड़े और घूंसे सहने के योग्य माना जाता है)। नए कानूनों में पुरुष-महिला संबंधों पर कड़ी पाबंदियां लगाई गई हैं। एक महिला के लिए
किसी एकांत स्थान (हलवेत) में किसी पुरुष के साथ देखे जाने मात्र से ही दोनों पक्षों पर ताज़ीर या ज़िना का जुर्माना लग सकता है। विवाहित प्रेमियों के छल-कपट को रोकने के लिए एक कानून बनाया गया है जो अधिकारियों को नैतिक रूप से भ्रष्ट मानी जाने वाली महिला का किसी पुरुष से विवाह करने से रोकता है।
अफवाहों ने उसे इससे जोड़ दिया है। नैतिकता को बनाए रखने के प्रयास में, इस कानून में स्थानीय समुदाय द्वारा निगरानी को अधिक नियमित रूप से अनिवार्य किया गया है।38 गपशप गवाही है, और कई कानूनों में "यदि किसी महिला के बारे में बात की जाती है," "यदि लोग किसी जोड़े को देखते हैं," और "यदि वे पक्षों के अपराध की पुष्टि कर सकते हैं" जैसे वाक्यांशों का उपयोग किया गया है। किसी पुरुष रिश्तेदार द्वारा मारी गई या घायल हुई।" यह सड़क लगभग एक ऐसा क्षेत्र बन गई है जहाँ एक महिला अपनी व्यक्तिगत गरिमा और सम्मान बनाए रख

सकती है—जब तक कि, जैसा कि एबू सूद ने सुझाव दिया, उसके पास परिचारकों का एक सुरक्षात्मक घेरा न हो।
जो उसे एक तरह का चलता-फिरता हरम प्रदान करता है।

निष्कर्ष

इस अध्याय में अध्ययन किए गए कानूननाम का विकास कुछ बुनियादी शब्दों से हुआ है।
स्वैच्छिक व्यभिचार और नाजायज यौन संबंध के लिए दंड निर्धारित करने वाले नियम परस्पर संबंधित प्रतिबंधों के एक जटिल समूह को लागू करते हैं जो उच्च स्तर की सजा प्रदान करते हैं।
ओटोमन साम्राज्य के विषयों पर सामाजिक-यौन अनुशासन। आदर्श
सुलेमान की 'कानूनमा' में चित्रित सुव्यवस्थित समाज अत्यधिक प्रतिबंधात्मक और तेजी से नियंत्रित होता जा रहा है, जिसमें स्वयं प्रजा भी शामिल है।
इसके विपरीत, कनुननामे उस संस्कृति में व्याप्त तनावों को दर्शाती है जहाँ युवा जोड़ों के साथ-साथ विवाहित पुरुष और महिलाएं भी विवाह के लिए बाध्य होते हैं।
एक तरह से कहें तो, प्यार के लिए आज़ादी पाने का एक तरीका। यह एक ऐसे समाज को भी दर्शाता है जो संघर्ष कर रहा है।
मर्दानगी की उन धारणाओं का मुकाबला करना जो यौन साहसी व्यक्ति की प्रशंसा करती हैं। कनुननामे के क्रमिक संस्करणों के आलोक में, पितृसत्तात्मक 130 लेस्ली पियर्स

परिवार एक स्वयंसिद्ध प्राच्य सामाजिक संरचना की तुलना में एक
यह एक विकासशील घटना थी, जिसे कानूनी कार्रवाई द्वारा कुछ हद तक सुदृढ़ किया गया था।
विशेषकर दुलकादिर और सेलिम प्रथम के कानूनों में, परिवार के पुरुष मुखिया को सार्वजनिक अनुशासन और व्यवस्था की कुंजी के रूप में दर्शाया गया है। लेकिन उनका

यह उस समय के लिए असामान्य था। स्पष्ट रूप से, सोलहवीं शताब्दी तक हरम संस्कृति का बढ़ता महत्व बदलते सामाजिक रीति-रिवाजों का परिणाम था—आंशिक रूप से,
इसमें कोई संदेह नहीं है कि ओटोमन सीमांत मूल्यों का विस्थापन अधिक शांत मूल्यों द्वारा हुआ।
शहरी संस्कृति की आदतें। इस परिवर्तन का प्रतीक शाही परिवार का धीरे-धीरे सैन्य संस्था से राजमहल संस्था में परिवर्तित होना था।
लेकिन यह प्रक्रिया सीधी और सुचारू नहीं थी। हालांकि बायज़िद द्वितीय का परिवार पहले से ही भव्य दरबारी था, लेकिन उनके पोते सुलेमान की युद्ध कौशल क्षमता ने
उनके शासनकाल के काफी समय बीत जाने के बाद भी, उनकी सफलता का आकलन इस आधार पर किया जा रहा था कि वे सफल होंगे या नहीं।
अपने शत्रु, ईरानी शाह की पत्नी या पुत्र का अपहरण करना।39 इसी प्रकार, सामाजिक
यौनिकता को घरेलू बनाना 131

जमीनी स्तर पर होने वाले बदलाव का अर्थ या दिशा हमेशा स्पष्ट नहीं होती थी, जैसा कि अबू सूद के मुहद्दरे फतवों से संकेत मिलता है।
लेकिन क्या कानूननामा के क्रमिक संशोधन सामाजिक परिवर्तन की वास्तविक गति को सटीक रूप से दर्शाते हैं? क्या कानूननामा वास्तव में एक अच्छा स्रोत है?
ओटोमन समाज में हरम संस्कृति की प्रगति को कैसे मापा जाए? जब मेहमेद द्वितीय के शासनकाल के अंत में उनके कानूननामे की शुरुआत हुई, तब... स्पष्टतः, ओटोमन साम्राज्य में पहले से ही किसी न किसी प्रकार की कानूनी व्यवस्था मौजूद थी।
दुलकादिर कानूननामे, जिसके दो क्षेत्रीय संस्करण सोलहवीं शताब्दी के मध्य तक बचे रहे, हमें यह संकेत देते हैं कि संभवतः एक विविधता रही होगी। प्रारंभिक ओटोमन शासन द्वारा स्थापित क्षेत्रीय कानूनी कार्यक्रमों और स्थानीय अधिकारियों की ढीली निगरानी की वजह से स्थिति और बिगड़ गई।
पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बायज़िद प्रथम (मृत्यु 1402) और उनके अनियंत्रित, भ्रष्ट न्यायाधीशों की कहानियाँ इस परिदृश्य को बल देती हैं।

कानूनी प्रशासनिक प्रक्रियाओं को मानकीकृत करने के अपने प्रयास में, मेहमेद का अपने शासनकाल के बाद के समय तक प्रतीक्षा करने का उद्देश्य शायद वफादार अधिकारियों की संख्या बढ़ाना था।
न्यायविदों, मुफ्ती और न्यायाधीशों के ऐसे दल उपलब्ध थे जो कानूननामे का मसौदा तैयार करने के साथ-साथ उसका प्रसार और उसे लागू करने में सक्षम थे। अपने पिता द्वारा तैयार किए गए प्रारंभिक सूत्र पर आगे बढ़ते हुए, बायज़िद द्वितीय ने कानूननामे के विस्तार की प्रक्रिया को गंभीरता से शुरू किया। कवरेज। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि साम्राज्य के क्षेत्रों में हरम संस्कृति संभवतः मेहमेद द्वारा ज़िना के संक्षिप्त चित्रण की तुलना में कहीं अधिक व्यापक थी।
जैसा कि सुझाव दिया गया है, और कनुननामे के ग्रंथों में वर्णित हरम संस्कृति की समयरेखा जमीनी स्तर पर सामाजिक परिवर्तन की गति से ठीक मेल नहीं खा सकती है। यानी,
सुल्तान नेतृत्व करने के साथ-साथ अनुसरण भी कर रहे होंगे।
मेहमेद और सुलेमान के कानूननामों के बीच ज़िना से संबंधित कानूनों की संख्या में वृद्धि, एक पारस्परिक प्रक्रिया को दर्शाती है—यानी, परस्पर क्रिया।
जमीनी स्तर पर सामाजिक स्वरूपों और साम्राज्यवादी एकीकरण की गतिशीलता के बीच संबंध। इस निबंध में तीन परस्पर जुड़ी कानूनी प्रक्रियाओं पर प्रकाश डाला गया है जो इस प्रक्रिया में सक्रिय हैं।
कानूननामे। पहला है कानूनी राष्ट्र का विकास जिसकी परिकल्पना की गई है। कानूननामे के रचनाकारों को शाही कानून के अधीन माना गया। दूसरा, प्रथागत कानून—अर्थात स्थानीय कानूनी प्रथाओं—के साथ गहन टकराव हुआ।
और स्थानीय कानूनी व्यवस्थाएँ। तीसरा, लेकिन कम महत्वपूर्ण नहीं, ज़िना की व्यापक परिभाषा है जो शरिया के उस दृष्टिकोण से आगे बढ़ती है जिसमें अवैध यौन क्रिया को सहमति से, विषमलिंगी संबंध के रूप में देखा जाता था, और अब इसमें इरादे और परिणाम के साथ जुड़ाव शामिल है।
और विभिन्न प्रकार के यौन व्यवहारों और प्राथमिकताओं के साथ। उन्होंने चाहे जो भी ऐतिहासिक मिसालें अपनाई हों, ओटोमन साम्राज्य
उन्होंने हरम संस्कृति की कानूनी संरचना को अपना बना लिया। प्रारंभिक आधुनिक साम्राज्य के प्रमुख प्रशासनिक दस्तावेज में एक सामाजिक-कानूनी

कार्यक्रम तैयार करने के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। कम से कम अपनी दंड संहिता में, कनुननामे ने एक मानकीकृत मध्य मार्ग तैयार किया।
132 लेस्ली पियर्स

साम्राज्य भर में कानूनी प्रशासकों के लिए संदर्भ। यह इसका एक उत्पाद है। व्यापक होने का प्रयास यह था कि यौन अपराध का भूगोल हमेशा से ही ऐसा रहा है।
अधिक बारीकी से मानचित्रण किया गया है, जिसमें आपराधिक के रूप में चिह्नित व्यवहारों की संख्या बढ़ रही है। कानूनामे की दंड संहिता का सामाजिक स्वरूप को आकार देने पर क्या प्रभाव पड़ा है?
जमीनी स्तर पर आचरण के संबंध में, हमारे पास अभी तक इसका मूल्यांकन करने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं। हालांकि, यह स्पष्ट है कि कानूननामे की व्याख्या में लचीलापन मौजूद है।
इसका दुरुपयोग स्थानीय गवर्नरों और न्यायाधीशों के साथ-साथ उन स्थानीय समुदायों द्वारा भी किया गया, जिन्हें इसके कुछ नियम अनुपयुक्त लगे— उदाहरण के लिए, साधारण आर्थिक स्थिति वाले पुरुषों और महिलाओं ने इसका विरोध करने के लिए अपनी स्थानीय अदालत का इस्तेमाल किया।
मुहद्दरे नैतिक निर्णय के मानक।40 लेकिन यह कठोर वास्तविकता कि कनुननामे ने करों के साथ-साथ आपराधिक जुर्माने भी निर्धारित किए, ने साम्राज्य के शहरों, कस्बों और गांवों में इसके कानूनों को तत्काल वास्तविकता प्रदान की।

नोट्स

मैं कानून पर ओमर लुत्फी बार्कन और हैलिल इनालसीक के विद्वतापूर्ण कार्य का ऋणी हूं।
यूरियल हेयड, अहमत अकगुंडुज़ और कॉलिन इम्बेर द्वारा लिखित और रोनाल्ड जेनिंग्स और हैम गेर्बर (अन्य लोगों के साथ) द्वारा ओटोमन दरबारों के संदर्भ में कानून पर लिखित कार्यों पर भी चर्चा की गई है।
इस निबंध का एक पूर्व संस्करण केर्मेली और ओज़ेल की पुस्तक "द ओटोमन एम्पायर" में प्रकाशित हुआ था।

जब तक अन्यथा इंगित न किया गया हो, सभी अनुवाद मेरे द्वारा किए गए हैं। 1 इब्न बतूता, इब्न बतूता की यात्राएँ, 2:454। 2 डर्नश्वम की टिप्पणियों के लिए, देखें सेंग, "न्याय के द्वार पर खड़े होना," 187–

89.

3 दुज़दाग, शेखुलइस्लाम एबुसुद एफेंडी के फतवों के प्रकाश में 16 वीं सदी का तुर्की जीवन, 56. 4 वही।
5 ओटोमन कानुन्नामे पर, बरकन, "कानुन्नामे" देखें; İnalcık, "कनुन्नामे," में
EI2. यह तथ्य कि मेहमेद का कानूननामा पांडुलिपि रूप में आज भी मौजूद है बायज़िद द्वितीय के शासनकाल के शुरुआती वर्षों में ऐसे दावे किए गए थे— जिन्हें अब काफी हद तक खारिज कर दिया गया है—कि
इसे कम से कम आंशिक रूप से बायज़िद के काम के रूप में देखा जाना चाहिए। 6 सुलेमान के कानूननामा (पुराने काल के अध्ययन) के यूरियल हेयड के लंबे संस्करण की तुलना करें
ओटोमन आपराधिक कानून, 30-31 और 36-37) को प्रकाशित दो छोटे संस्करणों में शामिल किया गया है।
अहमत अकगुंडुज़ द्वारा (उस्मानली कनुन्नामेलेरी वे हुकुकी ताह्लिलेरी, खंड 4)। हेयड ने सुलेमान के कानूननाम की अड़तीस पांडुलिपियों को चार परिवारों में समूहित किया है - लंबी, छोटी, अतिरिक्त खंडों के साथ छोटी और अधूरी; पांडुलिपियाँ
अकगंडुज़ द्वारा प्रकाशित दोनों ही "छोटे" परिवार से संबंधित हैं। 7 कानून पर, वाई. लिनैंट डी बेलेफॉन्ड्स द्वारा लिखित EI2 भाग i, "कानून" और विशेष रूप से एच. इनालसिक द्वारा लिखित भाग iii, "वित्तीय और सार्वजनिक प्रशासन" में "कानून" देखें। 8 यौन अपराध के बाद, आपराधिक-कानून अनुभाग आम तौर पर अपराध की निम्नलिखित श्रेणियों को लेता है: (1) मारपीट/हमला, (गैर-यौन) मानहानि, और हत्या; और (2)
नशीले पदार्थों का सेवन, चोरी और डकैती।
9 इस्लामी न्यायशास्त्र में प्रथागत कानून की भूमिका पर, उदोविच की पुस्तक "इस्लामी कानून" देखें।
और मध्यकालीन मध्य पूर्व में विनिमय का सामाजिक संदर्भ,” 445.
यौनिकता को घरेलू बनाना 133

10 इस विषय पर, पीयर्स की पुस्तक 'मोरैलिटी टेल्स' का अध्याय 8 देखें।

11. मेहमद द्वितीय के कानूननमे के लिए, अकगुंडुज, फिल-जिना वे देवैहीउस्मानली कानून देखें-
पत्र और कानूनी विश्लेषण, खंड 1।
12 बायज़िद द्वारा सैन्य अभियान से बचने का मुख्य कारण यह था कि यूरोपीय सम्राटों ने सुल्तान के विद्रोही शासन के साथ एक नए ओटोमन-विरोधी धर्मयुद्ध की धमकी दी थी।
भाई, सेम, इसके मुखिया होंगे।
13 मेहमद आरिफ़, "क़ानुन्नमे-ए-अल-ए उस्मान," पूरक (ध्यान दें कि यह क़ानूननाम ग़लती से आरिफ़ द्वारा सुलेमान को दिया गया था); अक्गुंडुज़, उस्मानली कानून-
पत्र और कानूनी विश्लेषण, खंड 2।
14 इस बिंदु पर, अल-क़त्तान, "मुस्लिम कोर्ट में धिम्मिस," 433 देखें।
15 अकगुंडुज़, ओटोमन विधि संहिताएँ और कानूनी विश्लेषण, 2:42–43.
16 दंड, इस्लामी कानून और ओटोमन साम्राज्य के विषय पर, शाच्ट की पुस्तक 'एन इंट्रो-' देखें।
इस्लामी कानून का परिचय, 89-92, 175 आगे। शाच्ट का काम विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि
इसका अधिकांश भाग इब्राहिम द्वारा लिखित सोलहवीं शताब्दी के मध्य की हनफ़ी विधिक कृति पर आधारित है।
अल-हलाबी, जिसका निर्माण सेलिम प्रथम के आदेश पर करवाया गया था।
सेलिम के कानूननामा की 17 अलग-अलग पांडुलिपियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें से अधिकतर अप्रकाशित हैं। मैंने पुलाहा और युसेल द्वारा प्रकाशित दो संस्करणों का अध्ययन किया है। 1. सेलिम
कनुन्नामेलेरी, जिनमें से पहला दो पांडुलिपियों का एक संयोजन है जो स्थित हैं
तिराना, अल्बानिया, और दूसरा संस्करण 1520 का है, जिसका स्रोत यूसेल है। खुलासा नहीं करता; अकगुंडुज़ (ओटोमन विधि संहिता और) द्वारा प्रकाशित संस्करण
हुकुकी तहलीलेरी, वॉल्यूम। 3); और टवेरिटिनोवा द्वारा प्रकाशित "लेनिनग्राद" पांडुलिपि

(सुल्तान प्रथम. सेलिमिन कानून-नामेसी), जिसकी एक प्रतिकृति उनकी अपनी पुस्तक (रूसी में) और पुलाहा और युसेल की पुस्तक में भी मिलती है। आंतरिक संगति के आधार पर
(उदाहरण के लिए, ज़िना के उच्च जुर्माने), ऐसा प्रतीत होता है कि अकगुंडुज़ का आरोप गलत हो सकता है।
पुलाहा और युसेल के कार्यों में पहले संस्करण का श्रेय सुलेमान को दिया जाना चाहिए;
हालाँकि, युसेल द्वारा 1520 में प्रकाशित संस्करण सुलेमान के कानूननामा से मिलता जुलता है।
यह प्रारंभिक सेलिम की तुलना में अधिक है (अधिक टिप्पणी के लिए नीचे नोट 34 देखें)।
18 यह कहानी रेप्प, इस्तांबुल के मुफ्ती, 211 में बताई गई है।
19 अकगुन्दुज़, ओटोमन विधि संहिताएँ और कानूनी विश्लेषण, 2:85. 20 उनके कानूननामे के समग्र शीर्षक, किताब-ए-कवानिन-ए-ओर्फिय्ये-ए-ओस्मानी पर ध्यान दें, जो बहुवचन नियमों पर जोर देता है। क्योंकि इसके अनेक, हालांकि परस्पर संबंधित, अर्थ हैं।
ओर्फ़ (जिसका अर्थ प्रथागत अभ्यास है, लेकिन यह शासक के शरिया से इतर विधायी अधिकार के अर्थ में कनून का पर्यायवाची भी है) के संदर्भ में, इस उपाधि का अनुवाद करना कठिन है।
अंग्रेज़ी; “द ओटोमन बुक ऑफ कस्टमरी/इंपीरियल रेगुलेशंस” एक अनुमानित अनुवाद है। अध्याय 1, जिसका शीर्षक “व्हिच आइटमाइज़ेज़ एंड” है, में भी इसी प्रकार की कठिनाई है।
यह अपराधों के अनुरूप जुर्माने और दंडों को स्पष्ट करता है।
21 काहिरा की महिलाओं की आदतों पर, लुत्फी की पुस्तक "चौदहवीं शताब्दी की काहिरा की महिलाओं के शिष्टाचार और रीति-रिवाज" देखें।
22 उलूचाय, “बायज़िद द्वितीय का परिवार” और सुल्तानों की पत्नियाँ और बेटियाँ। पीयर्स, द इंपीरियल हरेम, अध्याय 3 और आगे भी देखें। 23 बरकान की “उज़ुन हसन बे, ओटोमन काल के अक्कोयुनलू शासक से संबंधित कानून” और 15 वीं और 16 वीं शताब्दी में ओटोमन साम्राज्य में उनकी कृषि संबंधी अर्थशास्त्र देखें।
वित्त मंत्रालय की कानूनी और वित्तीय नींव: कानून, 119-20, 130.

134 लेस्ली पियर्स

24 बरकान, 15 वीं और 16 वीं शताब्दी में ओटोमन साम्राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था
कानूनी और वित्तीय सिद्धांत: कानून, 145.
25 वही, 128, नोट 1; पीयर्स, नैतिकता कथाएँ, 321. 26 इस बिंदु पर दुलकादिर कानूननामे पर अक्कोयुनलू प्रभाव का प्रश्न अनछुआ है।
27 डी ला ब्रोक्वियर, ले वोयाज डी आउट्रेमर। 28 दुलकादिर कानूननामे के लिए, बरकान, कानूनलर, 119-29 देखें, जिसमें बोज़ोक और अला एड-देवले दोनों प्रकार दिए गए हैं; और हेयड, ओल्ड ओटोमन क्रिमिनल लॉ, 132-47, जो मुख्य रूप से बोज़ोक कानूननामे पर आधारित है, लेकिन इसमें इसके और अला एड-देवले कानूननामे के बीच के अंतर भी शामिल हैं।
29 दोनों प्रकार दक्षिणपूर्वी अनातोलिया, उत्तरी इराक और ग्रेटर सीरिया के विशाल सर्वेक्षण में पाए जा सकते हैं जो 1526 का है (सर्वेक्षण रजिस्टर, "तपु तहरीर डेफटेरी" 998, इस्तांबुल में ओटोमन प्रधान मंत्रालय अभिलेखागार में रखे गए कैडस्ट्रल सर्वेक्षण संग्रह का हिस्सा है)।
30 बेट्स, खानाबदोश और किसान, 72–79. 31 दुलकादिर कानूननामे में मानहानि (बुहतन) के संबंध में आरोपी व्यक्तियों के बीच अंतर किया गया है जिनकी नैतिक प्रतिष्ठा अच्छी है और जिनकी खराब है, और इस प्रकार मुहसन/मुहसाना की कानूनी अवधारणा को शामिल किया गया है, जो कि ओटोमन कानूननामे में नहीं है (हालांकि ओटोमन फतवा साहित्य और स्थानीय अदालती प्रथा में यह मौजूद था)।
32 हॉफनर, “हित्ती अनातोलिया की कानूनी और सामाजिक संस्थाएँ।” हॉफनर नोट्स कॉम—
हित्ती, बेबीलोन और इज़राइली कानूनों में मौजूद मठवाद।
33 सुलेमान के कानूनी कार्यों पर, इनालसिक की पुस्तक "सुलेमान द लॉ गिवर एंड ओटोमन" देखें।
कानून।"
34. हेयड, ओल्ड ओटोमन क्रिमिनल लॉ, 29-30 देखें, सुलेमान के कानूननामा के विभिन्न "परिवारों" पर; हेयड द्वारा प्रकाशित संस्करण व्यापक है, जबकि अकगुंडुज़ (ओस्मानली कानूननामा वे हुकुकी तहलील-लेरी, खंड 4) द्वारा

प्रकाशित संस्करण संक्षिप्त संस्करणों में से एक है। सुलेमान के कानूननामा और यासर युसेल द्वारा सेलिम के कानूननामा (1520) के एक उत्तरवर्ती संस्करण के रूप में दावा किए गए संस्करण के बीच स्पष्ट समानताएं हैं, जिसे उन्होंने (इसके स्रोत या अभिलेखीय स्थान का उल्लेख किए बिना) 1. सेलिम कानूननामा में प्रकाशित किया है। इसलिए यह संभव है कि सुलेमान द्वारा किए गए कुछ परिवर्तन वास्तव में उनके पिता द्वारा किए गए थे; हालांकि, "सेलिम के बाद के" इस संस्करण में सेलिम के कुछ "प्रमुख नियम" मौजूद नहीं हैं, इसलिए इसे सुलेमान के बजाय सेलिम से जोड़ना संदिग्ध लगता है।
35 उदाहरण के लिए, अकगुंडुज़ द्वारा प्रकाशित संस्करण, जिसका उल्लेख पिछली टिप्पणी में किया गया है। 36 हेयड, पुराना ओटोमन आपराधिक कानून, 96, टिप्पणी 6। यह ध्यान देने योग्य है कि सेलिम के कानूननामा की लेनिनग्राद पांडुलिपि (ऊपर टिप्पणी 17 देखें) में मेहमेद/बायज़िद का वह नियम भी शामिल है कि व्यभिचारिणी को अपना ज़िना जुर्माना स्वयं अदा करना होगा और सेलिम का वह नियम भी जिसमें उसके पति को जुर्माना अदा करना होगा (स्पष्टतः व्यभिचार के दंड के साथ)।
37 यह बात 1540-41 में ऐनताब पर मेरे अपने काम में भी पुष्ट होती है, जहाँ तेरह महीनों में अदालत में पांच बेवफाई के तलाक दर्ज किए गए, जिनमें से चार मुस्लिम पुरुषों द्वारा और एक अर्मेनियाई ईसाई पुरुष द्वारा दर्ज किए गए थे (पीयर्स, नैतिकता की कहानियां, पासिम)।
38 शरिया के सिद्धांतों को लागू करने में समुदाय की भूमिका के बारे में, कुक की पुस्तक "कमांड" देखें।
इस्लामी चिंतन में सही का पालन करना और गलत को रोकना।
यौनिकता को घरेलू बनाना 135

39 सुलेमान की पत्नी हुर्रेम का सुल्तान को लिखा गया पत्र, जो उस समय सैन्य अभियान पर थे।
उन्हें सूचित किया गया कि इस्तांबुल की जनता बेसब्री से किसी सकारात्मक खबर का इंतजार कर रही है।
मोर्चे से: “न तो विधर्मी का बेटा और न ही उसकी पत्नी पकड़ी गई है।”

"□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□" (□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□,
□□□□□□□□□□)

5038).

40 □□□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□, □□□□□□ □□□□□□□

6 • पा एन ओ पी टी आई सी बी ओ डी आई ई एस

काले हिजड़े, टोपकापी हरम के संरक्षक के रूप में

जतीन लेट

8 यह धारणा कि हरम की कड़ी सुरक्षा वाली दहलीज काले हिजड़े के स्थान और शरीर का पर्याय है, शायद जीन-लियोन गेरोम की पेंटिंग 'ले' में सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है।
गार्डे डू सेराइल (1859) (चित्र 1)। सीधे टकराव की मुद्रा में, हिजड़ा दर्शक की ओर घूर रहा है, उसके चमकदार सुनहरे वस्त्र हमारा ध्यान उसकी ओर खींचते हैं और उस चीज़ से हटा देते हैं जिसकी वह रक्षा कर रहा है। उसकी आस्तीन की ढीली तहें और लाल कमरबंद जानबूझकर हथियारों के एक समूह को दर्शाते हैं जो तैयार हैं।
किसी भी संभावित अपराधी को कड़ी सजा देना।
हिजड़े की हल्की सी परछाई एक मजबूत लकड़ी के गेट पर पड़ रही है।
एक साधारण मुकर्नास मेहराब और ज्यामितीय नक्काशी से सुशोभित। दरवाजे की सतह को सजाने वाली विरल लेकिन आकर्षक रेखाएं इसकी एकमात्र अन्य विशेषता - एक भारी लकड़ी के ढांचे - के साथ विपरीत प्रभाव पैदा करती हैं।
ऐसा ताला जिसे खोलने या बंद करने का अधिकार केवल हिजड़े को ही है।1
गेरोम द्वारा काले हिजड़े का चित्रण उस संदूषित दृष्टिकोण का प्रतीक है जिसके माध्यम से यूरोपीय कलाकारों और लेखकों ने ऐतिहासिक रूप से प्राच्य हरम की कल्पना और चित्रण किया है। काले हिजड़े की गुमनाम आकृति कामुकता और निरंकुशता काल्पनिक हरम को भड़का रही है;2 उसका शरीर-
पैनोप्टिक बॉडीज़ 137

1 जीन-लियोन गेरोम,
सेराग्लियो का रक्षक,
1859, पैनल पर तेल चित्र,
© और सौजन्य से
की अनुमति
ट्रस्टी
वालेस संग्रह,
लंदन।

पूर्ण रूप से प्रदान करने के लिए जानबूझकर "काटा" या "पूरी तरह से काटा"3

शासक—जिसे ऑरलैंडो पैटरसन ने बहुत अच्छे से नाम दिया है—“परम दास।”4 यूरोपीय हरम साहित्य और चित्रों के विशाल संग्रह में, तीक्ष्ण—
आँखों वाले हिजड़े एक अनिवार्य विषय बन गए, हाशिये पर उनकी उपस्थिति
उस परिदृश्य की विकृति को उजागर करते हुए जिसे गढ़ने में उन्होंने मदद की: एक परिपूर्ण, गोरी त्वचा वाली और सुंदर प्राणी को अपूर्ण व्यक्ति के हवाले कर दिया गया।
अंधकारमय और विकृत।5 लेकिन काले हिजड़े की हरम के साथ, विशेष रूप से उसकी सबसे बाहरी दहलीज के साथ, ऐसी परस्पर निर्भरता है कि गेरोम
केवल उस आकृति का चित्रण करके बाद वाले की उपस्थिति को प्रकट करने में सक्षम, जिसकी
इसका अस्तित्व इसी से पहचाना जाता था। कोई भी अतिरिक्त जानकारी 138 जतीन लड़ होगी।

अनावश्यक समझा गया। उसके पीछे बंद गेट के बिना, वह आकृति
बस एक पहरेदार बनो; उस भयंकर हिजड़े की अनुपस्थिति में, लकड़ी
द्वार खोला जा सकता था, और उसके पार का स्थान अब निषिद्ध नहीं रहता—या वास्तव में उसे हरम नहीं माना जाता।
यह निबंध इस्तांबुल के टोपकापी महल में स्थित काले हिजड़े और उसके द्वारा हरम की देखरेख पर विचार करता है—जो यकीनन हरम का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।6 हालाँकि, ओटोमन प्रजा के लिए, यह शब्द
हरम शब्द का तात्पर्य केवल लिंग या यौनिकता द्वारा परिभाषित स्थान से नहीं था। बल्कि, इसके अर्थों की व्यापकता कहीं अधिक सूक्ष्म और गहन है। नैतिक, कानूनी और स्थानिक निहितार्थों के साथ। हरम शब्द (अरबी में harīm के रूप में लिप्यंतरित) अरबी मूल h-r-m से उत्पन्न हुआ है, जो अपने सभी व्युत्पन्नों के माध्यम से दो परस्पर संबंधित अर्थों में से एक या दोनों को व्यक्त करता है: निषिद्ध या गैरकानूनी होना, और अलंघनीय या पवित्र घोषित करना। उदाहरण के लिए, मुहता-राम वह है जिसका सम्मान और आदर किया जाता है; इहतिराम या हुरमा वह पहलू है जो आदर और सम्मान को प्रेरित करता है। साथ ही, सबसे जघन्य अपराधों और निषिद्ध कृत्यों को हराम (अशुद्ध भोजन की तरह) कहा जाता है।
हलाल, यानी जो जायज़ हो। चोर, जिसने एक कोड़ा है

ईश्वर के नियमों का उल्लंघन करने वाले स्थान को हरामी कहा जाता है। इस प्रकार, स्थानिक दृष्टि से देखा जाए तो, हरम एक ऐसा विशिष्ट पवित्र स्थान है जहाँ आम लोगों का प्रवेश वर्जित है, और इसके भीतर
जिनमें कुछ व्यक्तियों और व्यवहार के तरीकों को गैरकानूनी माना जाता है। ओटोमन साम्राज्य में दो सबसे पूजनीय और महत्वपूर्ण स्थल पवित्र थे। मक्का और मदीना के परिसर, जिन्हें तुर्की भाषा में एक साथ उल-हरेमेयन कहा जाता था, और प्रत्येक हरम में गैर-मुसलमानों का प्रवेश सख्त वर्जित था। यरूशलेम में स्थित मुस्लिम धार्मिक क्षेत्र, इस्लाम का तीसरा सबसे बड़ा धार्मिक स्थल है।
पवित्र शहर को हरेम-ए-शेरिफ (महान अभयारण्य) कहा जाता था। आवासीय और राजमहलीय संदर्भ में, हरेम से तात्पर्य उन कमरों से था जहाँ वैध स्वामी के अलावा किसी और का प्रवेश वर्जित था, जिसमें घर की महिलाओं के अत्यंत निजी कक्ष भी शामिल थे। वास्तव में, कुछ शास्त्रीय अरबी शब्दकोशों के अनुसार, "घर का हरम वह है जो उसके दरवाजे बंद होने के बाद उसके भीतर समाहित होता है"—यहाँ न तो महिलाओं का और न ही किसी पवित्र गुणों का कोई विशिष्ट संदर्भ है।7
अर्थों की इस व्यापक श्रृंखला को देखते हुए, यह निबंध अर्थों के उपयोग को सीमित रखेगा।
हरम शब्द का प्रयोग एक ऐसे स्थान के लिए किया जाता है जिसे निषिद्ध, संरक्षित और अलंघनीय माना जाता है—इस अर्थ में, इसमें शाही परिवार के अत्यंत निजी और विशिष्ट कक्ष भी शामिल हैं, लेकिन यह उसके महिलाओं के संदर्भ में नहीं है (जो
(उन्हें उनके पारिवारिक उपाधियों से संबोधित किया जाता था)। हालाँकि, ओटोमन शब्दावली में, हरम शब्द परिवार की महिलाओं को भी संदर्भित करता था, लेकिन यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि टोपकपी के भीतर विस्तृत शाही परिवार कई कारणों से इसे रोकता है, जिनमें से प्रत्येक का आगे वर्णन किया जाएगा।
पैनोप्टिक बॉडीज़ 139

निबंध के दौरान समझाया गया। सबसे पहले, टोपकापी हरम नहीं था

केवल महिलाओं द्वारा बसा हुआ; हरम के बड़े हिस्से महिलाओं के लिए निर्धारित थे।
पुरुष—युवा लड़के और सेवक, राजकुमार, हिजड़े और सबसे महत्वपूर्ण, स्वयं सुल्तान। दूसरा, महल के इस सबसे भीतरी परिसर को कहा जाता था हरम-ए-हुमायूं (शाही हरम) को महिलाओं की उपस्थिति के कारण नहीं, बल्कि सुल्तान की उपस्थिति के कारण अभेद्यता का आभास प्राप्त हुआ। तीसरा,
शाही परिवार की महिलाएं, और परिणामस्वरूप उनका स्थान, सीमित हो सकता था। एक अखंड इकाई के रूप में माना जाता था। किसी भी धनी परिवार की तरह, महिलाओं को एक पदानुक्रमित और पीढ़ीगत संरचना में संगठित किया गया था जो इस पर आधारित थी:
परिवार के मुखिया से रक्त संबंध, रखैल और विवाह के संबंध, और यौन परिपक्वता का स्तर—चाहे महिला एक युवा कुंवारी हो या यौन रूप से परिपक्व वयस्क, माँ हो या बच्चे पैदा करने की उम्र पार कर चुकी हो—
इंग.8 इस प्रकार की पारिवारिक संरचनाओं के लक्षण स्वरूप, स्थान का वितरण पूरी तरह से असममित था। इसे देखते हुए, एक ही हरम का स्थान प्रदान कर सकता था।
अनेक और अक्सर परस्पर विरोधी व्याख्याएँ और अर्थ। उदाहरण के लिए,
वलीदे सुल्तान (सुल्तान की माता) का अत्यधिक सुरक्षित और एकांत स्थान परिवार में उनकी शक्ति और प्रतिष्ठित स्थिति का प्रतीक था।
कुलमाता, जिसका अधिकार उसके पुत्र के सिंहासन पर आसीन होने का परिणाम था। दीवारों और सीमाओं की वही व्यवस्था,
इसके विपरीत, यह कई सौ निचले तबके के लोगों के लिए कारावास का संकेत देगा। हरम में महिला दासियों (कारिये) को उच्च श्रेणी में रखा जाता था, जिन्हें वलीदे सुल्तान की पत्नियों, रखेलों और निजी सेविकाओं के रूप में प्रशिक्षित किया जाता था। यह देखते हुए कि हरम एक स्थल है
कई दृष्टिकोणों से देखने पर, इस निबंध का व्यापक उद्देश्य कुछ प्रमुख वास्तुशिल्पीय विशेषताओं का अध्ययन करके हरम के स्थान को भीतर से समझने का प्रयास करना है।
ये स्थान निवासियों के एक ऐसे समूह के थे जिन्हें इसके सभी हिस्सों तक पहुंच प्राप्त थी: काले हिजड़े।
आश्चर्यजनक रूप से, कई लोगों के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदान को देखते हुए

वरिष्ठ हरम हिजड़ों और टोपकापी महल के भीतर व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उनके द्वारा धारित प्रभावशाली पदों के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है।
उन पर किए गए शोध के संदर्भ में, ओटोमन इतिहास लेखन में दो संकलनों के रूप में चुनिंदा प्रमुख हरम हिजड़ों की जीवनियाँ उपलब्ध हैं।9
और हाल ही में हुए अध्ययनों में संभवतः सबसे शक्तिशाली कारकों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
उस कार्यालय के अधिकारी, अल-हज्ज बशीर आगा (1717-46), जिनकी बौद्धिक और धार्मिक गतिविधियों ने हनफ़ी इस्लाम के ओटोमन ब्रांड में योगदान दिया
और सामान्य तौर पर सुन्नी रूढ़िवादिता।10 लेकिन हरम के भीतर से आने वाली आवाजें अब तक इतिहासकारों की पकड़ से बच निकली हैं, और काले हिजड़ों का समूह बना हुआ है।
अधिकांशतः गुमनाम; इस बारे में और अधिक जानकारी जुटाने के लिए काफी शोध करने की आवश्यकता है।
शाही हरम में उनकी भूमिकाओं को उजागर करने के लिए।
हालाँकि, एक प्रमुख स्रोत ऐसा है जिसका अभी तक पूरी तरह से उपयोग नहीं किया गया है, 140 जतीन लड़

काले हिजड़ों पर प्रचुर मात्रा में सामग्री प्रस्तुत करते हुए: दीवारों पर
टोपकापी महल का हरम। हालाँकि महल का अध्ययन वास्तुशास्त्र के इतिहासकारों द्वारा किया गया है, लेकिन इसके हरम के स्थान का वर्णन व्याख्या से अधिक किया गया है और इसे अभी तक अन्य महलों के समान स्तर का विश्लेषण प्राप्त नहीं हुआ है।
बाहरी, औपचारिक आंगन और कक्ष।11 यह निबंध अत्यधिक सुव्यवस्थित स्थानों को सामने लाकर इस असंतुलन को दूर करने का प्रयास करता है।
साम्राज्यवादी साम्राज्य का सबसे हाशिए पर स्थित और फिर भी सबसे अधिक आबादी वाला वर्ग
महल। और इसी राज्य की संरचना के भीतर ही काले हिजड़ों के दल ने अपनी उपस्थिति और पहचान को सबसे स्पष्ट रूप से अंकित किया।

इस अध्याय में हरम की सुस्थापित वास्तुकला को मुख्य दस्तावेज के रूप में उपयोग करते हुए, अश्वेतों द्वारा हरम की देखरेख का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में हिजड़ों के सबसे महत्वपूर्ण स्थानों का अध्ययन किया गया है। काले हिजड़ों द्वारा निभाई जाने वाली अनेक औपचारिक, राजनीतिक और घरेलू भूमिकाओं में से, सुल्तान और उनके विशाल परिवार के विश्वसनीय संरक्षक के रूप में उनकी स्थिति विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।
सबसे परिचित है। लेकिन वास्तुकला में इस महत्वपूर्ण भूमिका को कैसे रूपांतरित किया गया? उनके निर्धारित स्थान शाही संरचना की रक्षा और संरक्षण कैसे करते थे?
परिवार और हरम के निषिद्ध और अटूट गुणों को संरक्षित करना—
क्या यह स्थिति न केवल महल की अखंडता के लिए, बल्कि व्यापक रूप से पूरे साम्राज्य के लिए भी महत्वपूर्ण मानी जाती थी? मुख्य द्वारों, आंगनों और रास्तों की व्याख्या प्रस्तुत करके, जहाँ काले हिजड़े काम करते थे, इसका उद्देश्य उनके जीवन का सामाजिक इतिहास प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि उनके जीवन को बेहतर ढंग से समझने में मदद करना है।
हरम की स्थानिक विशेषताओं और उसके संरक्षक के रूप में हिजड़ों की भूमिका को समझें।
अभिभावक।
पहले खंड में हरम के सबसे प्रमुख द्वारों की भूमिका पर चर्चा की गई है।
सार्वजनिक क्षेत्र में, यह तर्क देते हुए कि उनकी विपरीत अभिव्यक्तियाँ एक ऐसी वास्तुकला की स्थापना में सहभागी थीं जो अदृश्य रहने के लिए बनाई गई थी। गेरोम के विपरीत
चित्र में, काले हिजड़ों को केवल हाशिये पर ही तैनात नहीं किया गया था। हरम तो नहीं, लेकिन जैसा कि दूसरे खंड में विस्तार से बताया गया है, यह स्थानों के एक व्यापक नेटवर्क के रूप में कार्य करता था—जिनमें से सभी को सीमाओं के भीतर खोजना संभव नहीं है।
एक ही अध्याय के। इस अध्ययन के प्रयोजन के लिए, विचाराधीन स्थान कई अन्य स्थानों की तरह अत्यधिक अलंकृत कक्ष नहीं हैं।
हरम के कुछ हिस्से, लेकिन अधिक अस्पष्ट और सीमांत स्थान, जैसे कि महत्वपूर्ण प्रवेश द्वारों, आंगनों और रास्तों का वह जाल जो हरम के बाहरी किनारों से लेकर उसके भीतरी भाग तक फैला हुआ है।

हरम की सीमाओं के भीतर पाठक को ले जाते हुए, यह खंड दिखाएगा कि कैसे काले हिजड़ों द्वारा कब्जा किए गए स्थान हरम की कार्यप्रणाली या आंतरिक कामकाज का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इसे एक निषिद्ध, पवित्र और संरक्षित अभयारण्य के रूप में बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तीसरा खंड संबंधित है...
पैनोप्टिक बॉडीज़ 141

हरम के भीतर गहरे नियंत्रण के प्रमुख तंत्र। जबकि हरम था
अपनी सीमाओं के बाहर से किसी भी प्रकार के अतिक्रमण से कड़ी सुरक्षा के कारण,
इसके आंतरिक स्थानों की सटीकता से पता चलता है कि काले हिजड़े शाही परिवार के भीतर अलगाव बनाए रखकर और आवागमन को नियंत्रित करके सत्ता के स्थापित पदानुक्रम को संरक्षित करने में अधिक संलग्न थे। साथ ही, सबसे गहरा एकांत और सबसे सख्त सीमाएँ इनके चारों ओर नहीं खींची गई थीं।
महिलाओं के बजाय पुरुषों—विशेषकर सुल्तान और राजकुमारों—के इर्द-गिर्द ही सीमित। पूरे परिदृश्य में, दहलीज और खिड़कियों की रणनीतिक स्थिति और रास्तों का विन्यास काले हिजड़ों द्वारा पुरुषों पर किए गए नियंत्रण को दर्शाता है।
शाही परिवार के विभिन्न भागों का वर्णन। हरम के मुखिया हिजड़े की केंद्रीय स्थिति को आधार बनाकर, यह खंड विभिन्न पहलुओं को रेखांकित करना शुरू करता है।
इस सबसे विषम संरचना को बनाने वाली अंतर्निहित जटिलताओं में से कई को उजागर करना।
स्थानों के: इसकी कई और अलग-अलग परतें, सत्ता की कड़ी सुरक्षा वाली पदानुक्रम, और वह निगरानी जिसके तहत पूरा शाही परिवार दिखाई देता है।
अधीन किया गया है। अंतिम खंड में उल्लेख किया गया है कि यद्यपि भीतरी महल पर हरम के मुख्य हिजड़े का अधिकार था, फिर भी धन और
हिजड़ों की शक्ति उनके आवासीय कक्षों के अंदर छिपी हुई प्रदर्शित की गई। असुरक्षा और अलगाव की गहरी अनुभूति।

वोगेट्स की एक कहानी

सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, अभूतपूर्व घटनाओं की एक श्रृंखला घटित हुई।
टोपकापी महल के भीतर हुए विकास ने हरम-ए-हुमायूं (शाही हरम) को एक सुसंगत और सुव्यवस्थित शाही निवास में बदल दिया। कई क्रमिक शासनकालों के दौरान, ओटोमन सुल्तान तेजी से गतिहीन शासक बन गए थे, जो अपना अधिकांश समय अपने महलों में बिताते थे।
अपने साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण के साथ, उन्होंने संप्रभुता की एक निरंकुश छवि विकसित की, जिससे शासक अपने प्रजाजनों से और भी दूर हो गया। नए शाही प्रोटोकॉल के अनुसार सुल्तान को महलों के भीतर एकांत में रहना आवश्यक था। वह अपने महल में ही रहेगा; वह अब सार्वजनिक रूप से प्रकट नहीं होगा (दो वार्षिक धार्मिक छुट्टियों को छोड़कर), और वह केवल कुछ चुनिंदा लोगों को ही निजी मुलाकात की अनुमति देगा।
उसी समय, सुलेमान प्रथम (शासनकाल 1520-66) के प्रसिद्ध शासनकाल के दौरान, शाही परिवार के सभी सदस्यों को टोपकापी में एक ही घर में एकत्रित और समेकित किया गया था। जिन राजकुमारों को कर्तव्य के लिए अलग-अलग स्थानों पर भेजा गया था, उन्हें भी यहाँ लाया गया था।
प्रांतों भर में सभी को वापस बुला लिया गया, और सुलेमान की प्रभावशाली पत्नी हुर्रेम के कहने पर, शाही माताओं के विशाल महिला परिवार को भी वापस बुला लिया गया।
पत्नियों, राजकुमारियों, रखेलों और उनके नौकरों को तोपकपी में स्थानांतरित कर दिया गया था।
सरय-ए-अतिक (पुराने महल) से हरम।12
142 जतीन लड़

हरम का यह परिवर्तन जनता से छिपा रहा, क्योंकि यह कई परतों और पहरेदार दहलीज के पीछे छुपा हुआ था।
टोपकापी महल। हालाँकि, यह महल अब शाही निवास और सत्ता का केंद्र दोनों था, और इसलिए इसे दरबारी शान-शौकत के बीच संतुलन बनाए रखना पड़ता था। गोपनीयता की कड़ी निगरानी और सुनियोजित समापन के साथ आतिथ्य सत्कार।
परिणामस्वरूप, इसकी रूपरेखा को न केवल दुर्लभ और

सुल्तान की अत्यधिक संहिताबद्ध उपस्थिति,13 बल्कि संरक्षण के एक तरीके के रूप में भी।
हरम का एकांत। इस संदर्भ में, सत्ता के आडंबर और भव्यता के बावजूद, टोपकापी को एक पारंपरिक आवास के समान माना जा सकता है—जिसका बाहरी भाग मेहमानों के स्वागत के लिए बनाया गया था, जबकि भीतरी भाग में परिवार का हरम रहता था। विशाल, बाहरी आंगन एक विशाल बगीचे के रूप में बनाया गया था, जहाँ सभी का प्रवेश था। वास्तव में,
सबसे बाहरी द्वार, बाब-ए-हुमायूं पर कुरान में खुदा हुआ शिलालेख हार्दिक स्वागत करता है: "तो शांति और सुरक्षा के साथ प्रवेश करो!"14
दूसरा प्रांगण सरकार का अर्ध-सार्वजनिक क्षेत्र था, जहाँ आम प्रजा सुल्तान की परिषद (दीवान) और आने वाले गणमान्य व्यक्तियों से अपनी याचिकाएँ प्रस्तुत करती थी।
स्वागत किया गया। लेकिन अब तक स्वागत किए जाने के बाद, उस अजनबी ने पाया कि महल के केंद्र की ओर की यात्रा अचानक समाप्त हो गई। यहाँ से आगे, वास्तुशिल्पीय अनिवार्यता यह सुनिश्चित करना था कि हरम रहस्यमय बना रहे, एक
एक निषिद्ध और दुर्गम क्षेत्र, जो दूर से केवल एक परछाईं प्रकट करता है। साम्राज्य के हृदय के रूप में, शाही हरम उस सीमा से परे विद्यमान था। अनुमत स्थान की सीमाएँ, एक विद्रोही अंधा स्थान जो खिड़कीविहीन दीवारों से छिपा हुआ था। यह आवश्यक था कि हरम एक ऐसी वास्तुकला का प्रतीक हो जो अदृश्य रहने के लिए बनाई गई हो।
इन घटनाक्रमों और महल के केंद्र में रहने वाले निवासियों की बढ़ती संख्या से प्रेरित होकर, महल के हिजड़ों की संख्या में भी वृद्धि हुई है।
श्वेत और अश्वेत दोनों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई। दरबारी अभिलेखों से पता चलता है कि 1517 में सेलिम प्रथम (शासनकाल 1512-20) के अधीन सेवा करने वाले मात्र चालीस हिजड़ों की संख्या सुलेमान प्रथम के शासनकाल के दौरान अचानक बढ़कर 600 से 800 के बीच हो गई।15
यह संख्या मुराद तृतीय (शासनकाल 1574-95) के शासनकाल में चरम पर पहुंच गई, जिनके समय में तोपकपी महल की आबादी अपने उच्चतम स्तर पर थी, जिसमें शामिल हैं

1,000 से अधिक हिजड़े। फिर भी, इन विस्तारित समूहों के भीतर, एक महत्वपूर्ण लेकिन अभी भी
सत्ता के संतुलन में एक ऐसा बदलाव आया जिसे कम ही समझा जा सका, और इस बदलाव की पुष्टि टोपकापी हरम के भीतर एक अभूतपूर्व नियुक्ति से हुई।
दरबारी अभिलेखों में दर्ज है कि 1574 में, मुराद तृतीय ने इथियोपियाई मूल के एक हिजड़े, मेहमेद आगा को पहले अश्वेत मुख्य हरम हिजड़े के रूप में नियुक्त किया था।16 आधिकारिक उपाधि किज़लर आगासी (लड़कियों का अधिकारी) से जाना जाने वाला मुख्य हरम हिजड़ा—एक ऐसा पद था जिसे एक लंबे महल के शिखर के रूप में माना जाता था।
पैनोप्टिक बॉडीज़ 143

उसका करियर न केवल हिजड़ों में सबसे शक्तिशाली बनना था, बल्कि
इसके अलावा, सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक, सुल्तान के बाद दूसरे स्थान पर, साम्राज्य के प्रमुख हिजड़े के रूप में, वह न केवल शाही निवास के संगठन और प्रशासन के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार था, बल्कि इसके अलावा भी कई अन्य जिम्मेदारियों के लिए भी जिम्मेदार था।
हरम की महिलाओं का चयन, शिक्षा और प्रशिक्षण।17 साम्राज्य के प्रारंभिक विस्तार के दौरान, यह और अन्य वरिष्ठ पद थे।
यह अधिकार केवल श्वेत हिजड़ों के पास था, जो सुलेमान प्रथम के शासनकाल तक इस अधिकार का प्रयोग करते रहे।
उनकी संख्या कहीं अधिक थी।18 मुख्य रूप से बाल्कन और बाद में काकेशस के रूढ़िवादी ईसाई गढ़ों से प्राप्त, कई श्वेत हिजड़े
(या साक़लिबा, जैसा कि उन्हें आमतौर पर ओटोमन लोगों के बीच जाना जाता था) राज्य के उच्च पदों और सैन्य अधिकारियों के रूप में आकर्षक और सम्मानित करियर रखते थे।
उदाहरण के लिए, हंगरी मूल के एक हिजड़े सुलेमान पाशा, ओटोमन बेड़े के एक प्रसिद्ध एडमिरल थे; उन्होंने 1538 में यमन पर विजय प्राप्त की और 1541 में ग्रैंड वज़ीर बने। हालाँकि, मुराद तृतीय के शासनकाल में, मुख्य नियंत्रण

नए, विशाल शाही हरम में श्वेत हिजड़ों की जगह काले हिजड़ों की विशाल सेना का अधिकार हो गया। 1592 तक, अफ्रीकी मूल के वरिष्ठ हिजड़ों ने हरम के मुख्य हिजड़े के पद पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया था, और
महत्वपूर्ण पदों के स्थानांतरण और सृजन से हरम के भीतर कर्तव्यों और आवासों का नस्लीय विभाजन उजागर हुआ: श्वेत हिजड़े पुरुषों की सेवा करते थे।
सेवकों के रूप में काम करते थे, जबकि काले अफ्रीकी हिजड़े उस प्रतिष्ठित विंग में सेवा करते थे जिसमें सुल्तान और महिलाओं का हरम रहता था। हालाँकि वर्तमान में उनकी रैंकों का सटीक संगठन बहुत कम ज्ञात है, यह स्पष्ट है कि अधिकांश
कई हिजड़े शाही निवास में पदाधिकारी के रूप में कार्यरत थे। किज़लर आगासी के मार्गदर्शन में, युवा हिजड़े—जैसे कि नव-पुनर्प्रशिक्षित—
भर्ती किए गए en asağı (सबसे निचले स्तर के) और acemi ağa (अप्रशिक्षित) लोगों को पद सौंपे जाने से पहले प्रशिक्षण के अपने-अपने निर्धारित चक्र से गुजरना पड़ता था।
nevbet kalfa (निगरानी में प्रतिस्थापन) और फिर अधिक वरिष्ठ पदों की रक्षा करना
हरम में, जैसे कि येनी सराय बास कापी गुलामी (मुख्य द्वारपाल)। पूर्णतः प्रशिक्षित हिजड़ों की श्रेणी के वरिष्ठ सदस्य, जिन्हें हसीली (अरबी शब्द जिसका अर्थ उत्पाद है) के नाम से जाना जाता था, सुल्तान और वरिष्ठ शाही महिलाओं के जटिल वित्तीय मामलों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार थे।19 “अफ्रीकी हिजड़ों की ही आवश्यकता क्यों?” इस प्रश्न का कोई ठोस उत्तर अभी तक नहीं मिला है।
यह अस्पष्ट है और आधुनिक नस्लीय दृष्टिकोणों के संदर्भ में पूरी तरह से समझ में नहीं आ सकता है। किसी भी मामले में, श्वेत से अश्वेत हिजड़ों को सत्ता का हस्तांतरण
हरम के भीतर उनकी संबंधित स्थानिक व्यवस्था दो बातें दर्शाती हैं। पहली, नस्ल के आधार पर एक भेद स्पष्ट रूप से उत्पन्न हुआ या तेजी से स्पष्ट होता गया। दूसरी, काले और गोरे हिजड़ों के बारे में बदलती धारणा ने उनकी स्थिति को बदल दिया।
बाद वाले की कीमत पर पहले वाले का मूल्य बढ़ गया, जो कि ap-144 जतीन लड़

ऐतिहासिक वृत्तांतों में समय के साथ-साथ इनकी उपस्थिति कम होती जाती है।
सोलहवीं शताब्दी में, काले अफ्रीकी हिजड़ों का वर्चस्व स्थापित हो गया था।
संभवतः इसलिए क्योंकि दासता की प्रबल धारणाएँ सांस्कृतिक रूप से निर्मित होकर उनके शरीरों पर, विशेष रूप से उनके अश्वेत शरीरों पर थोपी गई थीं। ऐसे समय में जब काकेशस क्षेत्र से श्वेत हिजड़ों की उपलब्धता में भारी कमी आई हो और सूडानी हिजड़ों तक पहुंच सीमित हो गई हो,
अबीसीनियाई दास बाज़ारों में भारी वृद्धि हुई।20 कारण चाहे जो भी हों, टोपकापी के भीतर बदलती जनसांख्यिकी से पता चलता है कि सोलहवीं शताब्दी के अंत तक, काले हिजड़े पसंदीदा संरक्षक बन गए थे।
शाही परिवार और शाही हरम के बीच कर्तव्यों का यह नस्लीय विभाजन हरम के सबसे बाहरी किनारों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। यहाँ, हिजड़ों के प्रत्येक दल को एक अत्यंत संवेदनशील दहलीज की सुरक्षा सौंपी गई थी, जिसमें स्थापत्य कला की दृष्टि से बहुत भिन्नताएँ थीं—एक औपचारिक और भव्य
एक अलंकृत है, जबकि दूसरा अपेक्षाकृत सादा और घरेलू पैमाने का है। काले और सफेद हिजड़ों के बीच किसी भी कथित ध्रुवीकरण के बावजूद,
दोनों कोर और द्वारों ने मिलकर हरम को अवैध निगाहों से बचाने के लिए धोखे की एक सुनियोजित योजना बनाई। इनमें से पहला और सबसे प्रमुख बाब'उससाद (जिसे आमतौर पर आनंद का द्वार कहा जाता है) था (चित्र 2 ए)।
एक विशाल, चंदवादार और अत्यंत अलंकृत प्रवेश द्वार, जो आधिकारिक तौर पर श्वेत प्रमुख दहलीज हिजड़े की आधिकारिक सुरक्षा में रहता था, जिसे आधिकारिक रूप से जाना जाता था
कपि आगा। बाब'उस-सादी एक प्रसिद्ध द्वार था, जिसकी असीम संभावनाओं के वादे ने सदियों से बाहरी लोगों को मोहित किया था। फिर भी, इसकी भव्यता धोखे का काम करती थी। हरम के आंगन की झलक दिखाने के बजाय, इसके दुर्लभ मंचित द्वार एक नाटकीय क्षण में सुल्तान की सिंहासन पर विराजमान आकृति को प्रकट करने का काम करते थे।
एक निजी सभा कक्ष में अकेले, जिसे जानबूझकर इस प्रकार स्थित किया गया था कि

हरम के किसी भी सार्थक दृश्य को बाधित करना। इस प्रकार, दहलीज पर वास्तुकला और अनुष्ठान का अंतर्संबंध हरम को एक संरक्षित स्थान के रूप में बनाए रखने में सहायक रहा।
सार्वजनिक दृष्टि से छिपा हुआ, निषिद्ध और अभेद्य आंतरिक पवित्र स्थान। बाब'उस-साद का मोहक आकर्षण कई शताब्दियों तक कायम रहा, क्योंकि इसने एक हरम का मूर्त और उपयुक्त रूप से भव्य प्रतीक प्रदान किया।
जिसके सटीक ठिकाने का पता नहीं चल पाया। निस्संदेह, इस दहलीज ने महल को एक औपचारिक केंद्र प्रदान किया, लेकिन हरम के संदर्भ में, यह
इसे महज एक मोहरे के रूप में ही माना जा सकता है, जो एलेन ग्रोसरिचार्ड द्वारा वर्णित "दृष्टि के एकाधिकार" को हरम के वास्तविक प्रवेश द्वार से धारण करता है।
जो किसी का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाए।21 दूसरे आंगन के एक छायादार कोने में, दो साधारण लोहे के द्वार शायद किसी का ध्यान न खींचें (चित्र 2 बी)। वे-
पैनोप्टिक बॉडीज़ 145

2 ए और 2 बी

रणनीतिक सीमाएँ:
पौराणिक द्वार
फेलिसिटी (ऊपर) का ध्यान भटक गया से निगाह
सही प्रवेश द्वार
हरम, गाड़ी
गेट (नीचे)।
एक दरवाजा प्रतीत होता है
बाद वाले के समान
यह पास में ही स्थित है।
तस्वीरों द्वारा
लेखक, 2006.

नाशपाती के आकार में कुछ छोटे-मोटे अंतरों को छोड़कर बाकी सब कुछ एक जैसा होता है; हालाँकि, एक को अलग माना जा सकता है।
छलावा.22 दूसरा, जिसे अब अरबलार कपिसी (या रथ द्वार) के नाम से जाना जाता है, वास्तव में मेहमेद आगा के संरक्षण में बनाया गया था।
1587-88 में स्थापित इस स्थान ने सुनहरे शिलालेखों के माध्यम से खुद को हरम के वास्तविक प्रवेश द्वार के रूप में, या अधिक सटीक रूप से प्रतीकात्मक हरिम-ए-सेनेट-ए के रूप में घोषित किया।

‘अलीदे बाब-ए सुल्तानी (स्वर्ग के हरम में सुल्तानी द्वार)।23 हरम की दहलीज के इस सतर्क व्यवहार ने महल में आने वाले कई यूरोपीय आगंतुकों को सफलतापूर्वक धोखा दिया। उदाहरण के लिए, लैम्बर्ट वाइट्स के प्रभावशाली सचित्र एल्बम और इग्नेस मौराडगे डी'ओहसन के टैब्लू जेनरल डे ल'एम्पायर ओथोमन, अरबलार कपिसी से अनभिज्ञ रहते हैं क्योंकि वे बाब-ए-साद को लाक्षणिक सर्वोच्च दहलीज के रूप में प्रशंसा करने की लंबी परंपरा को जारी रखते हैं।24
146 जतीन लड़

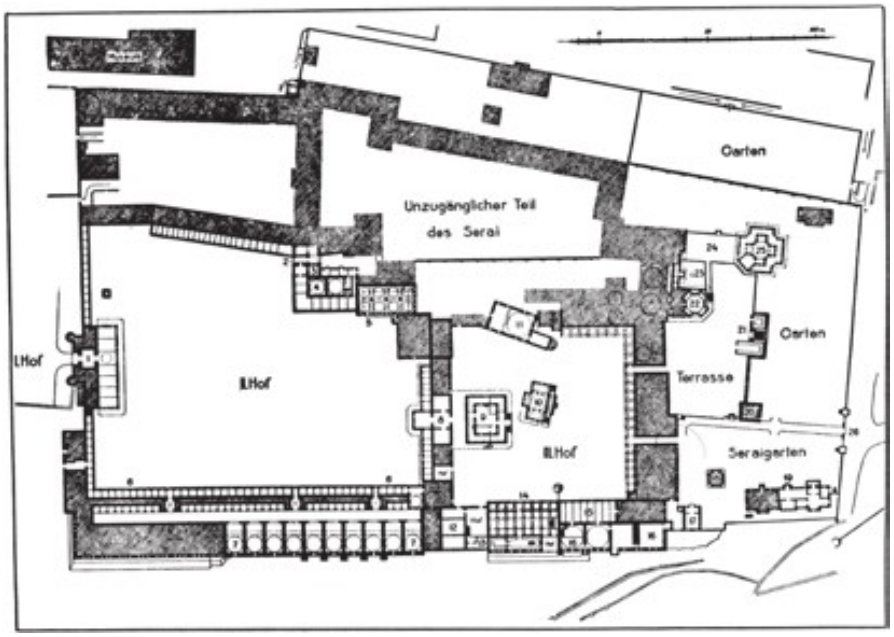

3. कॉर्नेलियस गुरलिट द्वारा बनाया गया टोपकापी महल का नक्शा, जिसमें खाली, अनचार्टेड भाग दिखाया गया है।
हरम का। दोनों आंगनों के बीच आनंद द्वार की स्थिति पर ध्यान दें। (गुरलिट, कॉन्स्टेंटिनोपल की वास्तुकला, प्लेट 12 ई)।

सदियों बाद, महल के खाली हो जाने के बहुत समय बाद, इन पात्रों का खेल जारी रहा।
दो द्वारों ने हरम की गोपनीयता को बनाए रखा और जिज्ञासु बाहरी लोगों को अंदर आने से रोका।25 1910 में, शाही परिवार के लगभग साठ साल बाद

जब महल को स्थानांतरित कर दिया गया था, तब जर्मन वास्तु इतिहासकार कॉर्नेलियस गुरलिट को महल की योजना बनाने के लिए अभूतपूर्व अनुमति दी गई थी।
उनकी विशाल कृति 'डाई बाउकुंस्ट कॉन्स्टेंटिनोपेल्स' (चित्र 3) का एक भाग। हालांकि उन्होंने दो सबसे बाहरी आंगनों का सावधानीपूर्वक नक्शा बनाया था, फिर भी उन्हें हरम में प्रवेश करने से मना कर दिया गया, भले ही वह लंबे समय से वीरान पड़ा था। उनके चित्रों के विवरण से पता चलता है कि बाब'उस-सादी को खोला गया था, लेकिन उन्हें अंदर जाने की अनुमति नहीं थी, और उन्हें दोनों ओर से सीमित, तिरछे दृश्यों से ही संतोष करना पड़ा।
दर्शक कक्ष। हालाँकि, उनसे पहले वालों के विपरीत, गुरलिट ने अवलोकन किया और
उन्होंने अरबलार कपिसी (जिसे उन्होंने "टोरे इंस फ्राउएनहॉस" (महिलाओं के घर का द्वार) नाम दिया है) का रिकॉर्ड बनाया और संभवतः उन्हें उसकी एक झलक देखने का अवसर मिला।
इसके लोहे के दरवाजों के पार। परिणामस्वरूप, प्रकाशित चित्रों में हरम का बड़ा हिस्सा खाली रह गया, योजना की अपूर्णता के कारण।
इसे एक लेबल द्वारा समझाया गया था जिस पर केवल "Unzugänglicher Teil des Serai" (महल का दुर्गम भाग) लिखा था।26 इस प्रकार, साम्राज्य के अंतिम दशक तक, यह
पैनोप्टिक बॉडीज़ 147

ऐसा प्रतीत होता था कि शाही सत्ता का एक अनिवार्य घटक हरम के लिए ऐसी वास्तुकला का प्रदर्शन करना था जो अदृश्य रहे, जिससे किसी भी प्रकार की ताक-झांक भी संभव न हो।
एक निर्जन स्थान की झलक।
प्रमुख सीमाओं का यह विवेकपूर्ण और विचारशील विश्लेषण हरम और उसकी बाहरी सीमाओं से जुड़ी संवेदनशीलता का परिचय प्रदान करता है। ओटोमन प्रजा के लिए, इसने एक नैतिक संदेश अंकित किया,
कानूनी और स्थानिक सीमाएँ सम्मान, पारिवारिक प्रतिष्ठा और सामाजिक मूल्यों से ओतप्रोत हैं।

जैसा कि पहले चर्चा की गई है, हरम परिवार का एक पवित्र स्थान था, एक ऐसा स्थान जिसका सम्मान किया जाना चाहिए और जिसे अछूत रखा जाना चाहिए। उसका सम्मान करना और उसकी रक्षा करना कर्तव्य था।
हरम, ठीक उसी तरह जैसे बाहरी लोगों का उसमें प्रवेश करना या उसे देखना भी गैरकानूनी था। गहरे निषेध और शर्म की भावना से ओतप्रोत अर्थों की यह श्रृंखला,
यह बात ओटोमन साम्राज्य की सांस्कृतिक शब्दावली में मौजूद रही होगी, जो हरम के अंदर झाँकने की बजाय सावधानीपूर्वक अपनी निगाहें उससे फेर लेते थे। ऐसी संवेदनशीलताएँ उनके द्वारा निर्मित वास्तुशिल्पीय लघुचित्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।
जैसे कि लोकमान बिन सैय्यद हुसैन द्वारा "हुनेरनाम" में बनाए गए चित्र, जो अरबलार कपिसी और उसके दोनों को स्वीकार करते हैं, ओटोमन दरबार में पाए जाते हैं।
नकली द्वार बनाए गए लेकिन यह सुनिश्चित किया गया कि दोनों ग्राफिक रूप से गुमनाम रहें।
औपचारिक दरबार की सीमाएँ।27 इसके परे स्थित हरम को सम्मानपूर्वक एक खाली स्थान के रूप में छोड़ दिया गया था, जो कलाकार के लिए अज्ञात था और इतना पवित्र था कि उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, अकेले तो दूर की बात है। चित्रित किया गया। अभिव्यक्ति के अन्य समकालीन क्षेत्रों, जैसे साहित्य में भी इसी प्रकार का विवेक देखा गया। उदाहरण के लिए, मुस्तफा अली की प्रसिद्ध कृति
जीवनशैली और रुचि पर आधारित जानकारी ने ओटोमन पुरुषों के प्रत्येक वर्ग के लिए विस्तृत विवरण प्रदान किया।
उनकी सामाजिक स्थिति के लिए आवश्यक माने जाने वाले सामानों की सूची। उचित आकार का घर बहुत महत्वपूर्ण था, और बड़े अधिकारियों से विशाल हवेली में रहने की अपेक्षा की जाती थी। लेखक पाठक को प्रत्येक आदर्श घर के माध्यम से ले जाता है, आतिथ्य सत्कार, सेवा आदि के क्रमिक स्थानों का अनुसरण करते हुए।
और श्रोताओं को, जब तक कि "अंत में, स्वर्ग जैसे कक्ष को सबसे भीतरी शरणस्थल, पवित्रता का निवास स्थान कहा जाता है, जो कर्तव्यपूर्वक छिपा हुआ है।"28 इस प्रकार, घर के शेष भाग को प्रकट करने के बाद, लेखक रुक जाता है।

हरम की दहलीज। किसी दूसरे सज्जन के हरम में झाँकना, यहाँ तक कि एक आदर्श साहित्यिक परिवेश में भी, एक वर्जित कार्य था। एक साधारण संकेत।
इसके निकट होने पर ही रुकने के लिए पर्याप्त सूचना मिल जाती थी।
इस प्रकार, बाब’उससाद और अरबलार कपिसी दोनों की रणनीतिक स्थिति ने पूरे भीतरी महल को एक निषिद्ध क्षेत्र, एक संरक्षित क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत किया।
और सुल्तान और शाही परिवार के लिए एक संरक्षित अभयारण्य। किसी भी संपन्न परिवार की तरह, दहलीज के पार आना-जाना प्रतिबंधित था।
हरम को हिजड़े पहरेदारों की दृश्यमान श्रेणियों द्वारा कड़ाई से नियंत्रित किया जाता था। हालाँकि, दोनों द्वारों की बाहरी अभिव्यक्तियाँ, शायद जानबूझकर, 148 जतीन लड़ को प्रभावित करने में विफल रहीं।

अपने-अपने हिजड़ा दल के महत्व के अनुरूप
हरम—एक की भूमिका को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना, जबकि दूसरे की भूमिका को कम करके आंकना
अन्य। उनकी घटती संख्या और महत्व के कारण, श्वेत हिजड़ों का दल अब केवल समारोहों के उद्घाटन और समापन तक ही सीमित रह गया था।
बाब’उससाद। इसके विपरीत, बाहरी रूप से सरल दिखने वाला अरबलार कपिसी वास्तव में जटिल स्थानों की एक श्रृंखला की सबसे बाहरी सीमा थी जो आगे फैली हुई थी।
हरम के भीतर गहरे में काले हिजड़ों की उपस्थिति। अंदर घुसकर
अरबलार कपिसी से आगे बढ़ते हुए मार्ग का पता लगाते हुए, यह दिखाया जाएगा कि हरम की बाहरी सीमाओं की रक्षा करने के अलावा, अन्य स्थान भी सुरक्षा प्रदान करते हैं।
काले हिजड़ों द्वारा कब्जा किए गए क्षेत्र शाही परिवार के भीतर सीमाओं की निगरानी और विनियमन में गहराई से लगे हुए थे।

यूएनयूसी की सीमा

टोपकापी हरम की योजना पर एक क्षणिक नज़र भी उस भूलभुलैया की याद दिलाती है जिसका उल्लेख यूरोपीय कल्पनाओं में इतनी बाध्यता के साथ किया गया है।

हरम (चित्र 4 और 5)। दो बहुत अलग-अलग भाग दिखाई दे रहे हैं। पहला, बिछाया गया
बाब’उससाद के ठीक पीछे अक्षीय रूप से एक विशाल आंगन था, जो पहली नज़र में बाहरी सार्वजनिक आंगनों के अनुरूप प्रतीत होता है। इसके एक तरफ और
काले हिजड़ों के अरबलार कपिसी के पीछे हरम का दूसरा, अधिक विशिष्ट भाग स्थित था। इसके विपरीत, यह एक उलझे हुए, घुटन भरे क्षेत्र के रूप में विकसित हुआ।
कंजूस आंगनों के ऊपर स्थित 300 से अधिक कक्षों से युक्त एक गांठ और
संकरी घुमावदार गलियों का एक जाल, जो मूल रूप से महल के उस कोने में सिमटा हुआ था जिसे इसके लिए आवंटित किया गया था।29 इसकी रहस्यमय योजना आगे कुछ नहीं दर्शाती।
समय के एक क्षण से कहीं अधिक—अर्थात्, परित्यक्त होने और अंततः अजनबियों की निगाहों के सामने खुलने पर इसकी अंतिम विश्राम अवस्था। यह एक निरंतर परिवर्तनशील स्थल था, क्योंकि
एक के बाद एक आने वाले सुल्तानों और उनके परिवारों की ज़रूरतें पूरी होती रहीं। सदियों तक
क्रमिक परिवर्तनों, पुनर्निर्माणों, विस्तारों और नई सजावटी परतों (या तो कार्यात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप या केवल स्वाद की सनक के अनुसार) ने सुनिश्चित किया
एक ही आधार पर परत दर परत बिछाई गई एक परत। फिर भी यह भीड़भाड़ वाला क्षेत्र-

चित्र 4. टोपकापी हरम के भूतल का नक्शा, जिसमें प्रमुख स्थानों की व्यवस्था दर्शाई गई है।
और हिजड़ों की सीमा सहित दहलीज: (1) द्वितीय या दीवान कोर्ट;
(2) आनंद का द्वार; (3) वाहन द्वार; (4) कोर्ट
पुरुष सेवकों का; (5) वलीदे तास्लिगी (सुल्तान की माता का आंगन); (6) पसंदीदा
आंगन; (7) लड़कियों का आंगन (कारियेलर ताश्लिगी); (8) काले लोगों का आंगन हिजड़े (Kaarağalar Taşlığı); (9) मुख्य द्वार (क्यूमले कपिसी); (10) के क्वार्टर

[illegible]; (11) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (
[illegible]
[illegible], [illegible])[illegible]

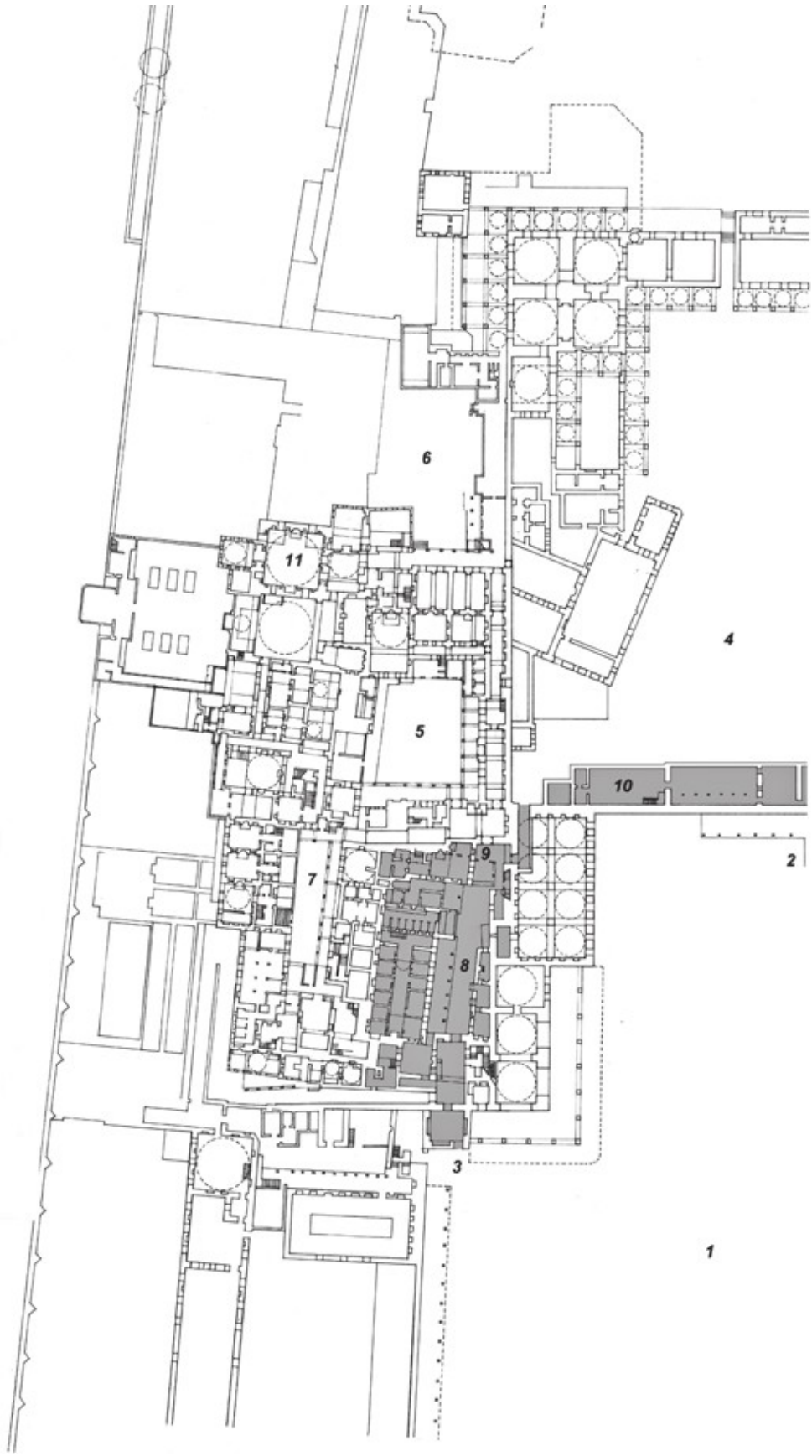
6
11
4
5
10
2
9
7
8
3
1

कमरों और गलियारों की व्यवस्था मनमानी नहीं थी। बल्कि, यह शाही परिवार का एक सटीक रूप से संरचित नक्शा था, जो सब एक साथ जुड़ा हुआ था।
काले हिजड़ों द्वारा संरक्षित स्थानों का एक जाल। करीब से देखने पर पता चलता है कि हरम पाँच भागों से मिलकर बना है।
अलग-अलग आकार के घनी तरह से व्यवस्थित आंगन। कुछ औपचारिक आंगनों के अलावा प्रत्येक आंगन को घेरने वाले कमरे मुख्य रूप से आवासीय और घरेलू उपयोग के लिए थे, जिनमें कुल मिलाकर कई सौ लोग रहते थे। उदाहरण के लिए, प्रिवी पर्स रजिस्टर के अभिलेखागार से पता चलता है कि सोलहवीं शताब्दी के अंत में हरम की आबादी 275 थी - यह संख्या चार से ऊपर हो गई थी।
अगली शताब्दी के दौरान सौ।30 बाब'उस-साद के पीछे स्थित इन आंगनों में सबसे विशाल आंगन में पुरुष सेवकों का बड़ा दल रहता था। वलीदे तास्लिगी, या वलीदे सुल्तान का आंगन, सबसे बड़ा था।
यह केंद्रीय रूप से स्थित था, जो हरम के पदानुक्रम में उसकी शीर्ष स्थिति को दर्शाता था। इसके ठीक उत्तर में स्थित आंशिक रूप से घिरा हुआ चबूतरा इसके लिए आरक्षित था।

सुल्तान और उनकी इक़बालें, चुनी हुई युवतियाँ जिन्हें रखैल बनने के लिए तैयार किया जा रहा था। वलीदे सुल्तान के दरबार और अरबलार का-पीसी के बीच दो सबसे छोटे और तंग आंगन थे, जिनमें से प्रत्येक हरम के सबसे घनी आबादी वाले हिस्सों को आकाश का एक संकरा सा हिस्सा ही प्रदान करता था।
ये आंगन, जिन्हें कैरियेलर तास्लिगी या लड़कियों का आंगन कहा जाता था, में हसेकी, यानी शाही पत्नियां और घर की बाकी महिलाएं रहती थीं—जिनमें एक बड़ी महिला भी शामिल थी।
दासी लड़कियों की संख्या, जिन्हें सामूहिक रूप से कारिये के नाम से जाना जाता था, जो अधिक प्रदर्शन करती थीं

नियमित घरेलू कार्यों में व्यस्त रहती थी और परिवार की वरिष्ठ महिलाओं की देखभाल करती थी।31 अर्ध-क्षेत्र के किनारों पर रणनीतिक रूप से स्थित, यह घर

सार्वजनिक दीवान दरबार काराआगलर तास्लिगी या काले हिजड़ों का आंगन था, जो एक चतुराई से बनाया गया स्थान था और पूरे हरम को एक निषिद्ध, अक्षुण्ण अभयारण्य के रूप में संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

अपने छोटे आकार के बावजूद, काराआगलर तास्लिगी निस्संदेह महल के भीतरी आंगनों में सबसे महत्वपूर्ण था। यह बाहरी किनारों पर स्थित था।
दूसरे दरबार ने हरम की सीमा निर्धारित की, और भीतरी महल के शेष भाग को एक निषिद्ध और पवित्र अभयारण्य के रूप में संरक्षित रखा।
पांच मीटर से अधिक चौड़ी यह जगह एक पारंपरिक आंगन से कहीं अधिक एक
एक चौड़ा, पत्थरों से बना गलियारा, जो दीवान कक्षों को घेरने वाली विशाल खाली दीवार के सामने स्थित है। एक छोर पर, आंगन अरबलार कपिसी तक फैला हुआ है। अंदर से देखने पर, यह द्वार प्रकाश और अंधेरे से गुजरते हुए जटिल स्थानों की श्रृंखला की सबसे बाहरी सीमा मात्र प्रतीत होता है।
आंगन, प्रतीकात्मक दहलीजें, घुमावदार रास्ते और अलग-अलग दिशाओं में बने द्वार
हरम में प्रवेश करने या बाहर निकलने के लिए जिन शर्तों पर बातचीत करनी पड़ती थी (चित्र 6)। चुनिंदा आगंतुकों, डॉक्टरों, फेरीवालों और प्रसव सहायकों को ही अनुमति दी जाती थी।
अंदर कदम रखते ही, अरबलार कपिसी डोलाप्ली कुब्बे में खुलती थी, जो एक अंधेरा और उदास प्रतीक्षालय था, प्रतीक्षा करने, तैयारी करने और सुनने का स्थान था।

5 न्याय के टावर से हरम पर नीचे की ओर देखते हुए। लेखक द्वारा खींची गई तस्वीर, 2006। 152 जतीन लड़

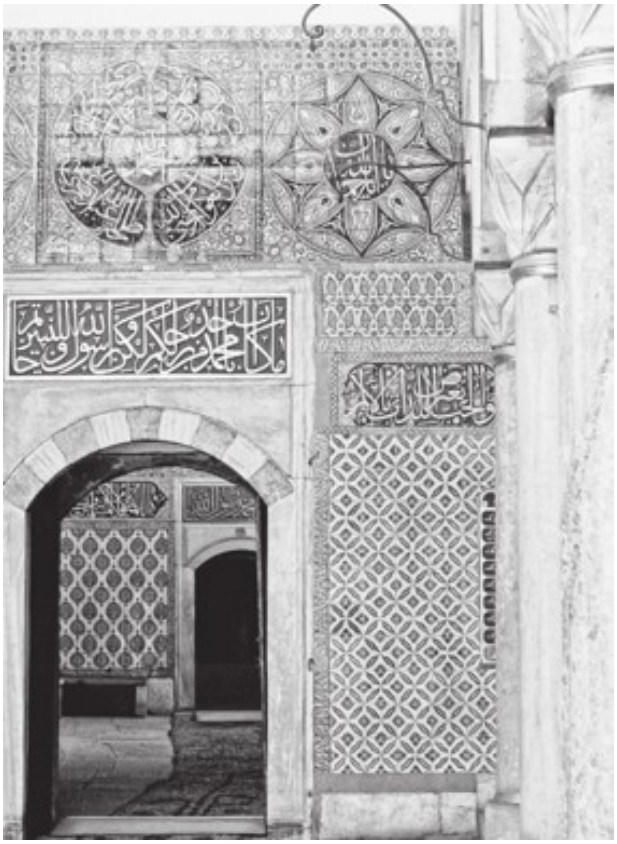

6. □□□□□□ □□□□□□□

□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□
□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□, □□
□□□□□□□ □□ □□□□□□□,
□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□,
□□□□□ □□□□
□□□□ □□□□□□□
□□□□□□ □□□□□□
□□□□, 2006.

□□□□□□□.32 □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□, Şadırvanlı Taşlığı (□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□); □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□

एक तरफ।
काले हिजड़ों के प्रांगण में दिन के उजाले में प्रवेश करना महल के भीतरी भाग का एक चकाचौंध भरा परिचय प्रस्तुत करता है। इसके विपरीत, कठोर वातावरण के विपरीत,
दीवान प्रांगण की पत्थर की सतहों, इस संकरे प्रांगण की ऊंची दीवारों को सरू और जलकुंभी के फूलों से सजी सजावटी टाइलों से भरपूर रूप से सुशोभित किया गया था।
और ट्यूलिप। जटिल अरबी डिज़ाइनों से सजे आकर्षक पदक रत्नजड़ित दरवाजों के ऊपर बने थे, और कुरान की आयतों से सजी पट्टियाँ जालीदार खिड़कियों की एक पंक्ति को सुशोभित कर रही थीं। संगमरमर के एकमात्र बरामदे की भव्यता— प्रांगण की खाई जैसी विशाल जगह के कारण उत्पन्न भव्यता को ऊपर लटकते सुंदर कांस्य लालटेनों ने और भी बढ़ा दिया था। इस दिखावटी माहौल के बीच,
आंगन के विपरीत छोर पर एक सजावटी प्रवेश द्वार था,
क्यूमले कपिसी (चित्र 7), या मुख्य द्वार, जो विकास में सबसे महत्वपूर्ण था पैनोप्टिक बॉडीज़ 153

7 ऊपर दिया गया शिलालेख
अलंकृत क्यूमले
द्वार, या मुख्य
गेट, इसे इस प्रकार पहचानता है मुख्य प्रवेश द्वार
हरम में।
अपार्टमेंट के
लड़कियों की मुखिया
नपुंसक, एक के लिए हैं
बगल से। तस्वीर द्वारा
लेखक, 2006।

हरम को एक वास्तविक स्थान के रूप में वास्तुकला की दृष्टि से समझना। एक प्रतिध्वनि में
अराबलार कपिसी के एक फ्रेम में सुनहरे अक्षरों में खुदा हुआ शिलालेख इस दहलीज को विशेष रूप से "शाही हरम का असली प्रवेश द्वार" बताता है, जिसके बाद उपयुक्त वर्णन आता है।
कुरान की आयत: “पैगंबर के घर में तब तक प्रवेश न करें जब तक कि आप
अनुमति है।”33
Cümle Kapısı की स्थिति और उस पर लिखे शिलालेख से यह संकेत मिलता है कि काले हिजड़ों का आंगन हरम के बाहर स्थित माना जाता था, जो सुल्तान और शाही परिवार के बीच मध्यस्थता का स्थान था।
बाहरी दीवान प्रांगण और उसके नियुक्त अधिकारी। भीतरी महल के आरंभ में स्थित एक संक्रमणकालीन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए, यहीं से हरम में प्रवेश करने या बाहर निकलने की अनुमति दी या अस्वीकार की जा सकती थी। इस संबंध में,
टोपकापी महल एक पारंपरिक ओटोमन निवास से और भी समानताएं दिखाता है, जिसका सादा बाहरी भाग एक अलंकृत और सजावटी प्रवेश कक्ष में बदल जाता है।
इसके अतिरिक्त, आंगन घर की स्थिति को दर्शाता है।34 इसके अतिरिक्त, आंगन

श्वेत हिजड़ों के पदों के साथ काले हिजड़ों के 154 जतीन लड़कों के पदों को मिलाकर

बाब’उससाद के दोनों ओर स्थित हिजड़ों ने एक स्पष्ट वास्तुशिल्पीय रूपरेखा प्रस्तुत की।
शाही हरम की सटीक सीमाओं को परिभाषित करने वाली सीमा (चित्र 4)। और
यहां टोपकापी हरम एक महत्वपूर्ण बिंदु प्रस्तुत करता है: हरम को केवल शाही महिलाओं के स्थान से ही परिभाषित नहीं किया जाता था; हिजड़ों का बहुस्तरीय स्थान यह दर्शाता है कि संपूर्ण आंतरिक महल, चाहे उसमें रहने वाले किसी भी लिंग के हों, अपने अर्थ में एक हरम के गुणों को प्रदर्शित करता था।
एक निषिद्ध और संरक्षित अभयारण्य के रूप में।
हरम को लिंगभेद रहित दृष्टि से समझने के लिए बाब'उससाद के केंद्र में स्थित विशाल आंतरिक आंगन और सफेद रंग के पहरेदारों द्वारा संरक्षित क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण थे।
हिजड़ों को रखा गया था। भीतर बड़ी संख्या में पुरुष सेवक और युवा लड़के रहते थे।
ईसाई मूल के लोग जिन्हें देवशिरमे प्रणाली के तहत नियमित रूप से एकत्र किया जाता था।35 शाही परिवार के संदर्भ में, उन सभी को माना जा सकता है सुल्तान के प्रतीकात्मक पुत्र, जिन्हें प्रांतों में शाही सेवा के लिए पाला-पोसा गया था। उनके साधारण, बैरक जैसे छात्रावास और कक्षाएँ,
जहां उन्हें हिजड़ों द्वारा निर्देश दिए जाते थे, वहां दरबार के अलग-अलग हिस्से पंक्तिबद्ध थे। हालांकि, कई अलंकृत मंडप और गुंबददार कक्षों के समूह भी मौजूद थे।
इससे भव्यता और वैभव का आभास होता था।36 अंततः, इस दरबार में
सुलेमान प्रथम द्वारा हरम के अधिक एकांत हिस्से में स्थानांतरित किए जाने तक ये सुल्तान के निजी कक्ष थे। सामने स्थित प्रभावशाली, हवादार बरामदों की एक झलक दिखाई देती है।
विशाल बगीचे के प्रांगण में प्रवेश करते ही सोलहवीं शताब्दी के इतिहासकार किवामी ने आश्चर्य व्यक्त किया: "जो भी इसके अंदर कदम रखेगा, वह तुरंत सोचेगा..."
वह स्वर्ग में प्रवेश कर रहा था।”37

हालाँकि, इसकी पूरी तरह से पुरुष आबादी, विशाल आकार और बाब'उससाद के पीछे स्थित होने के कारण, इस आंगन को अक्सर संदर्भित किया जाता है
सेलामलिक के रूप में—यह शब्द तुर्की घरों में पुरुषों के पारंपरिक स्वागत स्थल को दर्शाता है। इस तरह की व्याख्या काफी हद तक हरम को केवल महिलाओं के स्थान के रूप में देखने का परिणाम है। लेकिन, जैसा कि यह निबंध तर्क देता है,
हरम की परिभाषा लिंग के आधार पर नहीं, बल्कि सुल्तान और उसके परिवार के इर्द-गिर्द निर्मित निषेध और पवित्रता की धारणाओं के आधार पर तय की गई थी। वास्तव में, सोलहवीं शताब्दी में महिला परिवार के महल में शामिल होने से पहले भी, इस प्रांगण को हरम-ए-हुमायूं कहा जाता था।
वहां सुल्तान की उपस्थिति के बारे में। कुछ ही लोगों को यह सौभाग्य प्राप्त था।
बाब’उस सादे। महल में प्रवेश करने वाले सभी पुरुष अतिथियों—चाहे वे राजदूत हों या याचिकाकर्ता प्रजा—का स्वागत बाहरी दीवान प्रांगण में किया जाता था, और केवल
सुल्तान द्वारा नियुक्त प्रतिनिधियों द्वारा। साथ ही, अंदर रहने वाले पुरुष सेवकों को, उनके घर की महिला सदस्यों की तरह, रोका गया था।
हरम को छोड़कर, कम से कम तब तक जब तक उन्हें उनके प्रांतीय क्षेत्रों में नहीं भेज दिया जाता।
स्नातक होने पर पद। इस प्रकार, टोपकापी के सभी आंतरिक क्षेत्र का गठन-पैनोप्टिक बॉडीज़ 155

उन्होंने एक हरम बनाया, जो व्यक्तियों और संपत्ति की रक्षा करने वाला एक विशेष अभयारण्य था।
दूसरों के लिए निषिद्ध। इसी कारण से शाही इमारतों को
राजकोष, पैगंबर के पवित्र अवशेष और सुल्तान के निजी पुस्तकालय के समृद्ध संग्रह सहित अन्य बहुमूल्य संपत्तियां भी वहीं रखी गई थीं।
हरम के भीतर।
लेकिन काले हिजड़ों का आंगन, कारों का द्वार और सजा
कपिसी—अपनी चेतावनी भरी बातों के साथ—एक बिल्कुल अलग उद्देश्य की पूर्ति करता था।

जब शाही परिवार के दृष्टिकोण को ध्यान में रखा जाता है तो उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है। हरम को केवल घुसपैठिए की दृष्टि से ही परिभाषित नहीं किया जाता था।
एक निषिद्ध और पवित्र स्थान होने के नाते, इसकी सुरक्षा इस बात पर भी निर्भर थी कि अंदर रहने वाले लोग भी सुरक्षित रहें। शाही परिवार का कोई भी सदस्य, जिसमें औपचारिक बाब'उस-साद के पीछे छिपे पुरुष सेवक भी शामिल थे, हरम से बाहर निकलना चाहता था, तो उसे कई पहरेदार दहलीजों से होकर गुजरना पड़ता था और उसी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था।
बाहरी दुनिया में प्रवेश करने से पहले सत्यापन और तैयारी, आमतौर पर हिजड़ों के प्रतीकात्मक पर्दे के नीचे, जिसे उपयुक्त रूप से अरबलार नाम दिया गया है।
दरवाजा।
इसमें कोई शक नहीं कि शाही परिवार के सदस्यों को कभी-कभी इस तरह की संगठित यात्राओं की अनुमति दी जाती थी। फिर भी, अधिकतर ये यात्राएँ परिवार के सदस्यों के बीच ही सीमित रहती थीं।
हरम की चारदीवारी। चारों ओर से दीवारों से घिरी, हरम के किसी भी आंगन का बाहरी दुनिया से जरा सा भी दृश्य संबंध नहीं था।
क्षेत्र। अंतर्मुखता और सीमितता की भावना सबसे तीव्र थी।
संकरी कैरियेलर तास्लिगी, जहाँ ऊपर आसमान का मोहक टुकड़ा किसी निवासी के दुनिया से अलगाव की भावना को और बढ़ा सकता है। केवल वे ही
महल की बाहरी दीवारों के ऊपर बने कक्षों से गोल्डन हॉर्न और बोस्पोरस सागर का मनोरम दृश्य दिखाई देता था। कुछ जालीदार खिड़कियों से एक दूरस्थ और दुर्गम दुनिया की अद्भुत झलक मिलती थी।
अपनी अपार सत्ता और प्रतिष्ठा के बावजूद, वलीदे सुल्तान को अपने एकांत का विशेष महत्व याद रहता था। उनके निजी कक्षों की कई दीवारों पर न केवल नकली खिड़कियाँ बनी थीं, बल्कि बगीचों और दूर-दराज के द्वीपों के कई मनमोहक दृश्य भी चित्रित थे। उदाहरण के लिए, उनके शयनकक्ष की ऊपरी दीवारों पर एक यूरोपीय शैली के महल को उसके सुशोभित भूदृश्य में दर्शाया गया था।
बहते फव्वारों, एक पुल और क्षितिज पर जगमगाती झील से सुसज्जित यह दृश्य, एक ऐसा नज़ारा है जिसे वास्तविकता में शायद ही कभी देखने का उसे सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। हालांकि इस तरह की सजावट का आकर्षण स्पष्ट रूप से बारोक

और रोकोको शैलियों का प्रभाव है, फिर भी ये दृश्य हरम की चारदीवारी से परे एक अल्पकालिक भ्रमण की याद दिला सकते हैं।
साथ ही, ऐतिहासिक घटनाक्रम बताते हैं कि 156 जतीन लड़ के अवसर

हरम में प्रवेश करना भी उतना ही दुर्लभ था। सामान्य परिस्थितियों में, हरम में केवल करीबी पुरुष रिश्तेदार ही प्रवेश कर सकते थे, जिन्हें इसकी अनुमति थी।
माताओं, पत्नियों, बहनों, चाचियों और बेटियों से मिलने की अनुमति होगी। इस संबंध में, वयस्क पुरुषों और महिलाओं को एक ही नैतिक और शारीरिक स्थान साझा करने की अनुमति होगी।
यदि वे महरम कहलाते—अर्थात रक्त संबंध के कारण आपस में विवाह करने के लिए निषिद्ध थे।38 लेकिन ओटोमन शाही परिवार के अनूठे मामले में, ऐसी मुलाकातें बहुत कम बार होती थीं।
घर के सभी सदस्यों—पुरुष और महिला दोनों—को एक ही हरम में समेकित कर दिए जाने के कारण। यह विसंगति एक प्रासंगिक प्रश्न को सामने लाती है:
हरम में इतने कम लोग प्रवेश करते हैं, और उससे भी कम लोग बाहर निकलते हैं, तो काले हिजड़ों द्वारा कब्जा किए गए स्थानों का वास्तव में उद्देश्य क्या है?

हरम के अंदर: नियंत्रण के तंत्र

हरम के हाशिये पर स्थित अपनी मान्यता प्राप्त स्थिति से, यह पहली नजर में स्पष्ट नहीं होता कि काले हिजड़ों ने अपना प्रभाव हरम के भीतर गहराई तक फैला रखा था।
Cümle Kapısı के माध्यम से, उनका संकरा, बहुस्तरीय आंगन शाखाओं में बँट गया।
महल के भीतरी हिस्से को काटते हुए कई रास्तों में, धमनियां महल के बिल्कुल केंद्र तक फैली हुई थीं (चित्र 8)। लेकिन ये केवल बेजान नहीं थे।
आवागमन और पहुंच के गलियारे। वास्तुकला की दृष्टि से, ये मार्ग, प्रवेश द्वार और स्टेशन एक निश्चित ढांचा प्रदान करते थे जिसके चारों ओर व्यक्ति

हरम के भीतर के कक्ष और कमरे लगातार विकसित होते रहे। फिर भी, प्रत्येक मार्ग का सटीक स्वरूप, साथ ही उनके पहरेदार दरवाजों का खुलना और बंद होना, अलगाव, गोपनीयता और गोपनीयता के प्रति चिंताओं को दर्शाता है।
निगरानी केवल हरम की बाहरी सीमाओं तक ही सीमित नहीं थी। वास्तव में, ऐसी संवेदनशीलताएँ इसकी संरक्षित बाहरी सीमाओं में भी व्याप्त थीं और उन्हें नियंत्रित करती थीं।
प्रत्येक आंतरिक दीवार की घुमाव, मोड़ और मोटाई। विशिष्ट अनुभागों का पता लगाना।
इन अंतर्देशीय स्थानों से यह बात सामने आती है कि किस प्रकार काले हिजड़ों ने हरम के भीतर सत्ता के प्रमुख स्रोतों तक पहुँच को नियंत्रित किया होगा — अर्थात्

चित्र 8 में जालीदार खिड़की के सामने सभी मार्गों के मिलन बिंदु को दर्शाने वाला हरम का नक्शा दिखाया गया है।
किज़लर अगासी का: (1) काले किन्नरों का प्रांगण (कारागलर तस्लीग); (2) द स्वर्ण मार्ग; (3) शाही परिषद कक्ष और सुल्तान की गुप्त खिड़की;
(4) पैगंबर के पवित्र अवशेषों का तीर्थस्थल (हिरका-ए सादत दाइरेसी); (5) सुल्तान का
कक्ष; (6) पसंदीदा लोगों का आंगन; (7) कैद राजकुमारों के क्वार्टर (काफ);
(8) वलीदे तास्लिगी (सुल्तान की माता का आंगन); (9) लड़कियों का आंगन (रखैलों का आंगन); (10) किज़लर अगासी का अपार्टमेंट; (11) कुशने कपिसी (एवियरी गेट)
द्वार); (12) दर्पणयुक्त प्रवेश कक्ष; (13) काले हिजड़ों की आवासीय बैरक। सर्वेक्षण
लेखक द्वारा चित्रण (एल्डेम और अकोज़न के बाद, टोपकापी सराय)।

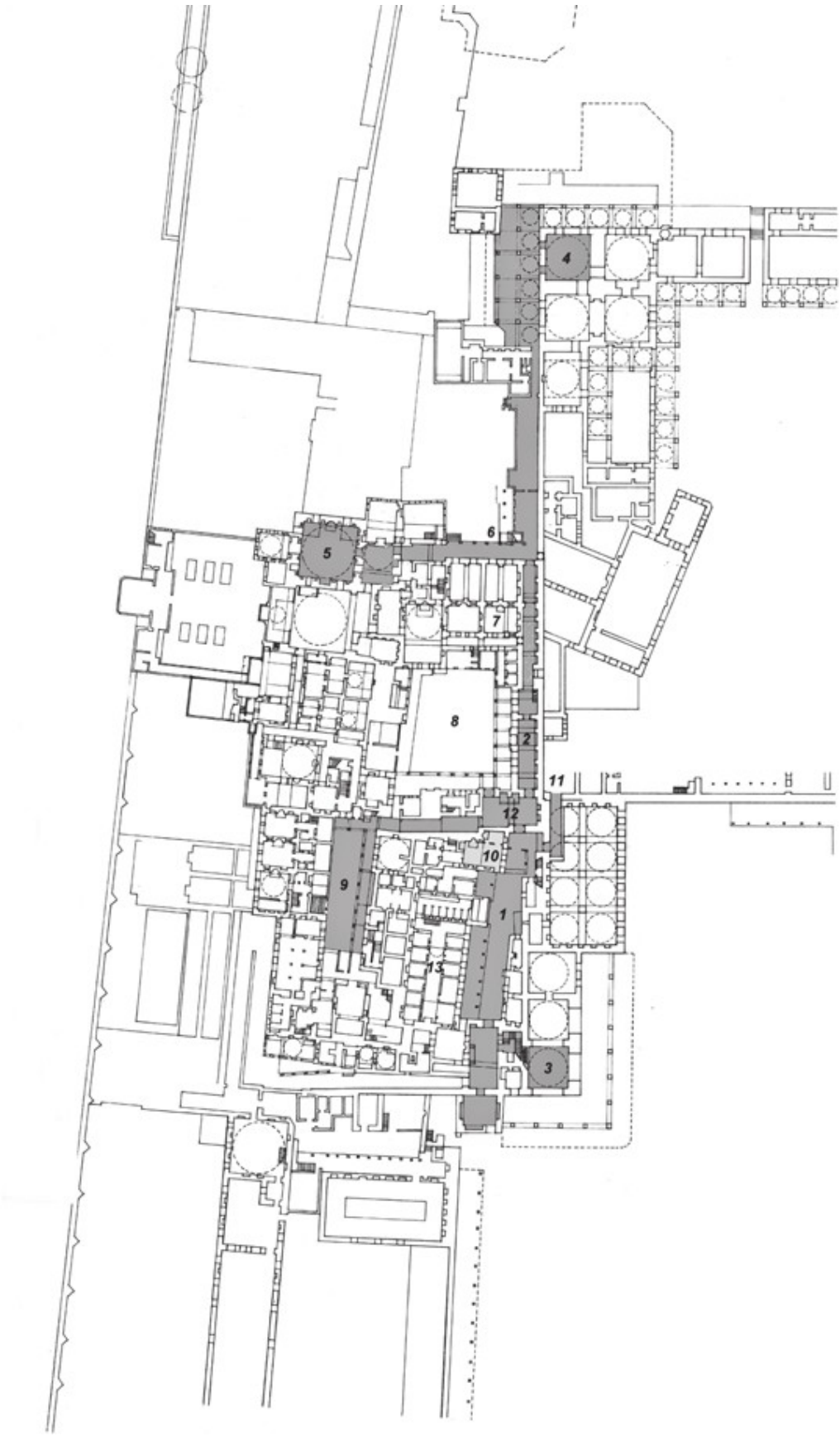
4
5
6
7
8
2
11
12
10
9
1
13
3

158 जतीन लड़

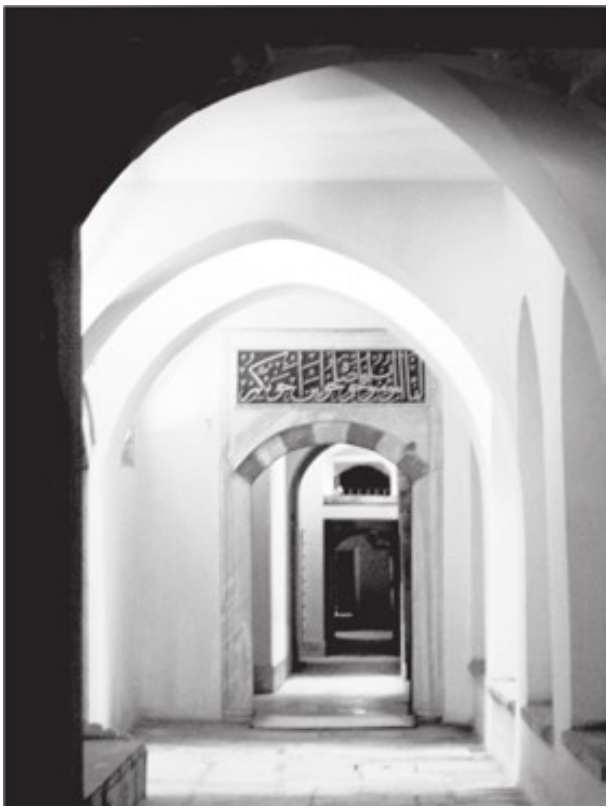

9. सुनहरा मार्ग
(स्वर्ण पथ), इसके साथ
दहलीज का क्रम
कुरान के नेतृत्व में
प्रार्थनाएँ। तस्वीर
लेखक द्वारा, 2006।

सुल्तान, राजकुमारों और कुछ अमूल्य संपत्तियों की रक्षा करने के साथ-साथ, शाही परिवार के भीतर सत्ता के पदानुक्रम को बनाए रखने के लिए इसके विभिन्न समूहों को अलग किया गया और यह सुनिश्चित किया गया कि हरम में किसी भी तरह की आवाजाही, चाहे वह अंदर हो, बाहर हो या, सबसे महत्वपूर्ण बात, हरम के आर-पार हो, किसी का ध्यान न जाए।
काले हिजड़ों द्वारा नियंत्रित मार्गों में सबसे प्रमुख मार्ग

यह अल्टिन योल था, जिसे पौराणिक स्वर्ण मार्ग के नाम से भी जाना जाता है (चित्र 8 और 9)। इसका सीधा मार्ग हिजड़ों के आंगन से होकर गुजरता है।
हरम की पूरी गहराई, महल के सबसे एकांत उद्यानों के किनारे एक अलंकृत बरामदे में खुलने से पहले। अल्टिन योल के साथ कई विभाजक द्वार, सजावटी शैलियाँ और अंधेरे और प्रकाशित स्थान मिलते हैं।
इसे काले हिजड़ों के आंगन का विस्तार माना जा सकता है। क्योंकि इस रास्ते पर उनका नियंत्रण था और इसकी ऊंची, खाली पत्थर की दीवार थी।
पुरुष सेवकों के आंगन के सामने स्थित, अल्टिन योल को लंबे समय से आंतरिक महल को लिंग के आधार पर विभाजित करने वाली केंद्रीय रेखा माना जाता रहा है।
कुछ हद तक, यह सही है। दीवार वास्तव में हरम की भीड़ को सुरक्षा प्रदान करती है।
पुरुष लेखकों की निगाहों से महिलाओं को बचाना। किसी भी प्रकार के खुले स्थान का अभाव और इसकी अन्यथा खाली लंबाई के साथ बंद खिड़कियाँ इस बात को और पुष्ट करती हैं।
पैनोप्टिक बॉडीज़ 159

लिंग के आधार पर व्याख्या। हालाँकि, इसकी विभाजनकारी क्षमता उतनी नहीं है।
हालांकि यह देखने में सरल लग सकता है।
शाही परिवार के भीतर प्रमुख स्थानों और हस्तियों पर काले हिजड़ों के संरक्षण और उनकी भूमिका के संदर्भ में, अल्टिन का मार्ग
योल लिंग की धारणाओं से परे अर्थ की एक और परत प्रस्तुत करता है। गहन अध्ययन करने पर, अल्टिन योल, अपने आरंभ और समापन के साथ, एक अलग आयाम प्रदान करता है।
इसकी लंबाई के साथ चुनिंदा द्वारों का यह मार्ग, शाही परिषद कक्ष के पीछे से लेकर हिरका-ई के नाम से जाने जाने वाले गुंबददार कक्षों के परिसर तक फैला हुआ है, जिससे यह स्पष्ट रूप से काले हिजड़ों के आंगन का विस्तार बन जाता है।
सादत दाइरेसी, या पैगंबर के पवित्र अवशेषों का तीर्थस्थल (चित्र 8)। अल्टिन योल के मध्य में, एक अत्यंत अलंकृत मार्ग अलग हो जाता है और

यह सुल्तान के निजी कक्षों की ओर जाता है (चित्र 8)। शक्ति के स्रोत के रूप में,
जैसा कि इस निबंध की शुरुआत में उल्लेख किया गया है, सुल्तान को ओटोमन नियमों के अनुसार हरम में एकांतवास में रहना अनिवार्य था।
संप्रभुता। उनके दुर्लभ, अत्यधिक नाटकीय सार्वजनिक प्रदर्शन उनके निजी स्थान को हरम के रूप में प्रस्तुत करते थे—अभेद्य, निषिद्ध और एक रहस्यमय आभा से परिपूर्ण।
पवित्रता की छवि—वास्तुकला से पता चलता है कि यह छवि भीतर भी सच थी। टोपकापी का अभयारण्य। उनके निजी कक्ष महल के भीतरी हिस्से के सबसे दुर्गम कोने में स्थित थे, जिससे जनता से उनकी दूरी स्पष्ट होती है।
उसके क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए, हरम के भीतर से उसके स्थान तक पहुँचने के लिए सबसे अधिक संख्या में पहरेदार चौराहों को पार करना आवश्यक था। नियंत्रण करके
अल्टिन योल में, हिजड़े सुल्तान तक पहुँचने के रास्ते की रखवाली करते थे, और उन्हें अन्य लोगों से अलग रखते थे।
अपने घर के अन्य सदस्यों को भी अपने साथ शामिल करके, इस प्रक्रिया में, उन्हें अपने एकमात्र मध्यस्थ के रूप में स्थापित करके उनकी शक्ति को मजबूत किया। वास्तव में, वरिष्ठ अश्वेत हिजड़ों का एक दल,
सामूहिक रूप से मुसाहिब (अरबी शब्द से लिया गया जिसका अर्थ है साथी) कहलाने वाले ये लोग महल के अंदर और बाहर दोनों जगह उनकी सुरक्षा करते थे। पुस्तक में
उदाहरण के लिए, अहमद तृतीय के शासनकाल में निर्मित 'त्योहारों का संग्रह' (1720) में, प्रसिद्ध दरबारी चित्रकार लेवनी ने अपने बीस से अधिक चित्रों में सिंहासन पर बैठे सुल्तान के दोनों ओर मुसाहिबों को चित्रित किया है। 39 हरम के अंदर, मुसाहिब शाही शयनकक्ष में सुल्तान की निकट उपस्थिति बनाए रखकर उन्हें उनके परिवार के अन्य सदस्यों से अलग रखते थे।
अलंकृत अग्रकक्ष में पहरा देते हुए, एक ऐसी तात्कालिकता जो अक्सर अनुमति देती है
उन्हें शासक पर सीधा प्रभाव डालने का अधिकार दिया गया था। वास्तव में, अठारहवीं शताब्दी तक, मुसाहिबों ने शासकों और शासकों के बीच संचार के एक माध्यम के रूप में कार्य किया।

सुल्तान और परिवार के अन्य सदस्य।40 इस अत्यधिक एकांतवास ने
सुल्तान का स्थान, हरम के भीतर एक और हरम के रूप में, साम्राज्य का सबसे पवित्र और निषिद्ध स्थल था, यह विशेषता स्पष्ट रूप से घनी झाड़ियों द्वारा और भी पुष्ट होती थी।
उनकी अलंकृत, गुंबददार शयनकक्ष को घेरने वाली दीवारें।41 सुल्तान के अपने अत्यधिक सुरक्षित निजी कक्ष में एकांतवास की कहानियाँ-160 जतीन लाद

ये बातें भले ही अतिशयोक्तिपूर्ण लगें, लेकिन इन्होंने निश्चित रूप से उनके व्यक्तित्व को निखारने में योगदान दिया।
दुर्लभ औपचारिक उपस्थिति के दौरान। अपने करीबी लोगों के समूह से घिरे हुए।
मुसाहिबों के लिए, सुल्तान ने अल्टिन योल के माध्यम से तीन कक्षों तक विशेष और सुरक्षित पहुंच सुनिश्चित की थी, जो कि अलंघनीय, निषिद्ध,
और अपनी प्रजा के लिए अपनी उपस्थिति के पवित्र गुणों का परिचय। प्रथम, शाही समारोहों के अवसरों पर, वह अपने लिए पुरुष सेवकों के प्रांगण का उपयोग कर सकता था।
याचिका कक्ष में उनका दुर्लभ आगमन होता था। दूसरा, प्रत्येक शुक्रवार और त्योहारों के दिन, वे हिरका-ए-सादत दाइरेसी जाते थे और वहाँ संरक्षित पवित्र अवशेषों से आशीर्वाद प्राप्त करते थे। आखिरकार, पैगंबर के लबादे और पवित्र ध्वज पर ओटोमन साम्राज्य का अधिकार था।
ओटोमन सुल्तानों को हदीम उल-हरमेन की गौरवशाली उपाधि प्रदान की गई। उल-शेरिफेन (दो कुलीन पवित्रस्थलों का सेवक) और तोपकपी महल को खिलाफत की राजधानी के रूप में ग्रहण करने की वैधता।42 तीसरा, सुल्तान अपने सबसे करीबी हिजड़ों के अलावा किसी की भी नज़र में आए बिना, अपनी शाही खिड़की से शाही परिषद कक्ष में अपने वज़ीर और मंत्रियों की कार्यवाही पर गुप्त रूप से नज़र रख सकता था। इस संदर्भ में, अल्टिन योल को एक संरक्षित स्थान के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है।
और विशेष मार्ग जो हिजड़ों को सुल्तान से अलग रहने की अनुमति देता था, और शाही परिवार के बाकी सदस्यों से अलग, वे स्थान जो उनकी शक्ति और वैधता के सबसे अधिक प्रतीक थे।

सुल्तान की सत्ता के संरक्षण और सुदृढ़ीकरण के प्रति ऐसी चिंताओं ने शाही परिवार के भीतर स्थानिक विभाजन को भी लागू किया, जिससे परिवार के सदस्यों के बीच दूरगामी संबंध स्थापित हुए।
लिंग भेद की सीमाओं से परे। सबसे पहले, इकबाल, वे चुनिंदा युवतियाँ जो... सुल्तान के पुत्रों (और इस प्रकार राजवंश के भावी उत्तराधिकारियों) को जन्म देने के लिए तैयार की गई महिलाओं को घर की बाकी महिलाओं से अलग रखा जाता था।
उन्हें सबसे उत्तरी आंगन में छह दिखने में एक जैसे सुइट्स की एक पंक्ति दी गई (चित्र 8)। हालाँकि, उनके सुरुचिपूर्ण दो कमरों वाले अपार्टमेंट आसानी से
यह किला जानबूझकर अल्टिन योल के बरामदे के ऊपर बनाया गया था और केवल एक गुप्त सीढ़ी से ही पहुँचा जा सकता था, जिस पर काले हिजड़ों का पहरा रहता था, इसलिए यह बात नज़रअंदाज़ कर दी गई। जैसे-जैसे राजकुमार बड़े होते गए, उन्होंने राजवंश की निरंतरता सुनिश्चित की।
हालांकि, वे हरम के साथ सबसे गहन स्तर के एकांतवास के भी शिकार थे। सोलहवीं शताब्दी के अंत तक, उत्तराधिकार को लेकर ओटोमन संघर्षों का स्वरूप विशेष रूप से रक्तमय था, जिसमें विजयी राजकुमार अपने सभी प्रतिद्वंद्वी सौतेले भाइयों को एक साथ फांसी देने का आदेश देता था। उनकी उम्र चाहे जो भी हो, जिस दिन वह सिंहासन पर बैठा। मेहमेद तृतीय (शासनकाल 1595-1603) के शासनकाल में, जिन्होंने संयोगवश बिना किसी विरोध के सिंहासन प्राप्त किया, शाही भाई-भतीजावाद की प्रथा को त्याग दिया गया, और राजकुमारों को
हरम के भीतर गहरे में कारावास के जीवन की निंदा की गई,
पैनोप्टिक बॉडीज़ 161

काले हिजड़ों का निरंतर रक्षक।43 घर की महिलाओं के विपरीत, जो
संगठित और कड़ी निगरानी में कभी-कभार हरम से बाहर जाने की अनुमति मिलने के बावजूद, राजकुमारों को कभी भी बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी और वे काफी हद तक अज्ञात ही रहे। उनकी निम्न पारिवारिक स्थिति ने उन्हें स्थानिक और यौन दोनों रूप से वर्जित कर दिया था, उन्हें दाढ़ी बढ़ाने या बच्चे पैदा करने

समतल दीवारें, पहरेदार और द्वार, अभेद्य दीवारें और सावधानीपूर्वक लगाई गई खिड़कियाँ घर के भीतर सीमाएँ बनाती थीं, जो किसी भी ऐसे स्पर्श या दृष्टि से सुरक्षा प्रदान करती थीं जिसे गैरकानूनी माना जा सकता था। प्रत्येक दीवार एक निषेध के रूप में खड़ी थी,
उस स्थान की संरचना उसमें रहने वालों की स्थिति के अनुरूप होती है। विडंबना यह है कि ताक-झांक की कुंठा (जैसा कि ग्रोसरिचार्ड कहते हैं: "हर बार जब एक दहलीज पार की जाती है, तो एक नए और अनिश्चित भाग्य की शुरुआत होती है जो हमेशा आगे ले जाता है)
एक जेल से दूसरी जेल तक”)45 गलत जगह पर है, जबकि यह कहीं अधिक उपयुक्त है 162 जतीन लड़

हरम के भीतर की हलचल उसकी चारदीवारी के बाहर की हलचल से कहीं अधिक भयावह थी। वास्तव में, कुरान के पाठों ने हर गतिविधि के प्रति व्याप्त भय को कुछ हद तक सहनीय बना दिया था।
कई आंतरिक द्वारों पर यह प्रार्थना अंकित है: “हे सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो द्वार खोलते हैं! हमारे लिए सौभाग्य का द्वार खोल दीजिए!”
हालाँकि शाही परिवार के युवा पुरुष और महिला सदस्यों को सख्ती से अलग रखा गया था, फिर भी काले हिजड़ों के लिए निर्धारित सटीक स्थानों का उपयोग किया जाता था।
लिंग भेद को पार करने वाली अधिक जटिल पारिवारिक सीमाओं को उजागर करना। उदाहरण के लिए, परिवार के मुखिया के रूप में सुल्तान को उसके कैद सौतेले भाइयों और युवा पुरुष सेवकों से अलग रखा जाता था, जबकि वलीदे सुल्तान
इसे इकबाल, हासेकी और कारिये रैंकों से हटा दिया गया था (चित्र 8), जिससे पता चलता है कि यौन परिपक्वता और शाही रक्त की शुद्धता की धारणाएँ समान रूप से विभाजनकारी थीं। एक को अनेक से अलग करना भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है—
हरम के बाहरी किनारों पर गुमनाम पुरुष और महिला दासों की तंग बहुलता, वलीदे सुल्तान की शक्ति और विशिष्टता को बढ़ाती है।
और उसका बेटा, सुल्तान, केंद्र में था। इस प्रकार, यदि हम हरम को सत्ता के आरेख के रूप में देखें, तो हिजड़े इसके प्रमुख रक्षक थे, जो यह सुनिश्चित करते थे कि

सत्ता और पदक्रम को लेकर ओटोमन साम्राज्य का जुनून उसके मूल में ही निहित था।
सत्ता के केंद्र को अंततः एक आदर्श मॉडल प्रस्तुत करना ही था। काले हिजड़ों के लिए निर्धारित स्थानों में व्याप्त अलगाव और आवागमन पर कड़े नियंत्रण के कारण, हरम की संरचना सुधारात्मक संस्थानों से मिलती-जुलती प्रतीत होती है।
प्रशिक्षण और अनुशासन की जांच मिशेल फूको ने अपनी पुस्तक 'डिसिप्लिन एंड माइनिंग' में की है।
दंड देना। यह तर्कसंगत प्रतीत होता है। वंशानुक्रम के पुनरुत्पादन से संबंधित राजनीतिक चिंताओं के अलावा, हरम का अनिवार्य उद्देश्य महिलाओं को सावधानीपूर्वक प्रशिक्षित करना था।
प्रांतों में सत्ता संतुलन बनाए रखने के लिए शाही सेवा हेतु युवा पुरुष और महिला दासों को नियुक्त किया जाता था। एक परिवार जो स्थानिक और पदानुक्रमिक रूप से विभाजित होता है, वह उनके बीच अंतर करने, प्रशिक्षण देने और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का कार्य करता है।
परिवार के सदस्य नैतिक और स्थानिक सीमाओं के प्रति निष्ठा रखते हुए काले हिजड़ों को अनुशासनात्मक शक्ति के साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। भोर होते ही ढोल की थाप के साथ हरम की गतिविधियाँ शुरू हो गईं: द्वार खोले गए, आदेश दिए गए, निर्देश प्राप्त किए गए, आगंतुकों की निगरानी की गई, सामान पहुँचाया गया और द्वार बंद होने से पहले भोजन वितरित किया गया।
फिर से। यदि हम हरम को "प्रशिक्षण के लिए एक तंत्र" के रूप में देखें, तो फ़ूको के शब्दों में, शिक्षाशास्त्र और निगरानी के कार्य एक हो जाते हैं। 46
अत: हरम के भीतर, हिजड़े एक ही समय में संरक्षक और शिक्षक, मध्यस्थ और पर्यवेक्षक की भूमिका निभाते थे।
हरम की दृश्यता को बाहरी लोगों और निवासियों दोनों से छिपाकर रखना,
स्थल की जटिल ज्यामिति, पदानुक्रम और स्थान की असमानताएँ-
पैनोप्टिक बॉडीज़ 163

10 □□□□□□□□ □□□□□□□
□□□□□□□□ □□□□□ □□□
□□□□□□□ □□□□□□□
□□□□□, 2006.

□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□
□□□ □□□□, □□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□, □□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□

क्यूमले कपिसी को रणनीतिक रूप से इस तरह तैनात किया गया था कि उन्हें वह दृष्टि प्राप्त हो सके जो दूसरों को प्राप्त नहीं थी। उनकी जालीदार खिड़की के नीचे, अंदर या बाहर किसी भी प्रकार की आवाजाही संभव नहीं थी। हरम के आर-पार की आवाजाही किसी का ध्यान आकर्षित किए बिना होनी चाहिए थी (चित्र 8 और 10)। शाही परिवार के विभिन्न सदस्यों और वर्गों के बीच किसी भी बातचीत के लिए इस केंद्रीय बिंदु से गुजरना आवश्यक था। इसी कारण से, हरम में खुलने वाले उन द्वारों को इस केंद्रीय बिंदु से होकर गुजरना पड़ता था। हरम के भीतरी आंगन और कक्ष उसकी पैनी निगाहों के नीचे स्थित थे। उदाहरण के लिए, ठीक सामने एक छोटा, तिरछा मार्ग था।
कुशाने कपिसी,47 को संरक्षित किया गया, जिसने घर के पुरुष और मुख्य रूप से महिला वर्गों के बीच एकमात्र संबंध प्रदान किया (चित्र 8)।
164 जतीन लड़

11 दर्पणयुक्त प्रवेश कक्ष, एक प्रहरी चौकी जहाँ लोहे के द्वार विभिन्न खंडों में खुलते थे
हरम का दृश्य। बड़े-बड़े, सुनहरे फ्रेम वाले दर्पण रणनीतिक रूप से इन चौखटों के पार निगरानी में सहायता के लिए लगाए गए थे। लेखक द्वारा खींची गई तस्वीर, 2006।

औपचारिक रूप से महत्वपूर्ण बाब'उससाद के विपरीत, यह संकरा दरवाजा
यह आंगन में आने-जाने के लिए दैनिक प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता था।
पुरुष पृष्ठ।
इसके अलावा, किज़लर आगासी की जालीदार खिड़की से एक छोटे से दृश्य का नजारा दिखता था।
प्रवेश कक्ष, जो कि दीवारों पर लगे बड़े-बड़े दर्पणों को छोड़कर लगभग खाली था (चित्र 8 और 11)। यह एक केंद्रीय प्रहरी चौकी थी, और यहाँ की सभी गतिविधियाँ और
हरम में संचार तीन दिखने में एक जैसे लोहे के फाटकों के माध्यम से होता था, जो उपपत्नियों और वलीदे सुल्तान के साथ-साथ अल्टिन योल के आंगनों की रक्षा करते थे। वास्तव में, यह साधारण और आम तौर पर
अनदेखी की गई जगह हरम की कार्यप्रणाली का केंद्र थी। इसके द्वारों को खोलने और बंद करने से हरम के भीतर से दृश्यता नियंत्रित होती थी।
छिपाना और प्रकट करना, आंतरिक विस्तार को बढ़ाना और घटाना
यह महल नैतिक और भौगोलिक दोनों दृष्टि से, वहां से गुजरने वाले व्यक्ति के लिए सुलभ माना जाता था। एक पल खुले द्वार, आंगन और गलियारे अगले ही पल बंद हो जाते थे, जिन्हें हरम समझा जाता था, जहां प्रवेश वर्जित था और जिन्हें लोगों की नजरों से छिपाकर रखा जाता था। द्वार बंद होने पर, हरम अनिश्चित रास्तों के एक भूलभुलैया में सिमट जाता था जो कहीं नहीं जाते थे, और उसके आंगन और निवासी अलग-थलग पड़ जाते थे।
एक दूसरे से। एक बार द्वार खुल जाने के बाद, सावधानीपूर्वक और विनियमित तरीके से आगे बढ़ना शुरू हो गया।
पैनोप्टिक बॉडीज़ 165

एक आंगन से दूसरे आंगन तक और एक परिवार समूह के बीच आवागमन
और एक अन्य व्यक्ति को अनुमति दी गई थी, जिसके साथ हमेशा की तरह, सतर्क संरक्षक के रूप में हिजड़े मौजूद थे।
इस प्रकार, भले ही काले हिजड़ों की स्थिति हाशिये पर थी, वास्तुकला से पता चलता है कि वे हरम के भीतर सभी संचार के केंद्र में थे। शाही परिवार के भीतर सभी गतिविधियाँ और बातचीत उनके कमरों से ही होती थी, जिससे वे दूसरों के कमरों तक पहुँच सकते थे और आवश्यकता पड़ने पर महत्वपूर्ण मध्यस्थ और

दुर्जेय अवरोधक के रूप में कार्य कर सकते थे।48 चाहे पुरुष सेवकों के एक समूह को किसी समारोह की ओर ले जाया जा रहा हो।
हुंकार सोफासी में, जो हरम का एकमात्र कमरा था जहाँ बड़ी सभाएँ होती थीं, या वलीदे सुल्तान और हरम की महिलाओं का एक दल किसी और की ओर जा रहा था।
अरबलार कपिसी एक दुर्लभ सैर के लिए जा रहे थे, या स्वयं सुल्तान पार कर रहे थे।
महल के एक छोर से दूसरे छोर तक, हर गतिविधि पर हिजड़ों की नज़र रहती थी।
उनके हाथों में प्रत्येक आंतरिक द्वार की चाबियाँ थीं, और हर गतिविधि पर उनका नियंत्रण था।
ताला खोलने और बंद करने की प्रक्रिया से हर हरकत के साथ हरम का दायरा बदलता रहता था। इसका एकमात्र अपवाद, बेशक, वलीदे सुल्तान थी।
जिसे—अपनी राजनीतिक और पारिवारिक सत्ता के प्रतीक के रूप में—अनुमति दी गई थी
अपने निजी कमरों से सीधे अपने बेटे, सुल्तान के निजी कक्षों तक पहुँच। अपनी पीढ़ीगत वरिष्ठता को देखते हुए, परिवार के सदस्यों का निरंतर आना- जाना लगा रहता था।
सदस्य प्रतिदिन किज़्लर आगासी के स्टेशन से होकर गुजरते थे, जब वे उनसे सलाह लेने जाते थे। साथ ही, यह कल्पना करना मुश्किल नहीं है—विशेष रूप से देखते हुए
सोलहवीं शताब्दी के दौरान सुल्तानों की माताओं का राजनीतिक प्रभाव सत्रहवीं शताब्दी में—अधिकारियों के रूप में द्वार खोलने, बंद करने और उनकी रखवाली करने वाले हिजड़ों की सतर्कता, साथ ही अन्य कुलीन वर्ग की महिलाओं की सतर्कता भी महत्वपूर्ण थी।
कभी-कभी परिवारों को उससे मिलने के लिए हरम के अंदर जाने की अनुमति दी जाती थी।
इस प्रकार की यांत्रिकी ने टोपकापी महल के भीतर काले हिजड़ों के लिए स्थान निर्धारित किए और शाही हरम के बहुस्तरीय स्थान को आकार दिया। इसके बाहरी किनारों पर वास्तुकला के विपरीत, हरम के अंदर अलगाव और निगरानी को कठोर, खिड़की रहित दीवारों के बजाय "खुले स्थानों, भरे और खाली स्थानों, रास्तों की गणना" के माध्यम से लागू किया गया था।

और पारदर्शिताएँ... बेहतर अवलोकन की अनुमति देने के लिए।"49 नियंत्रण विकिरणित
किज़लर आगासी की केंद्रीय स्थिति से, निगरानी उपकरण और गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखने वाले उपकरण को केंद्र में ले जाना संभव हो जाता है।
घर के मुखिया। वास्तव में, उनकी सर्वव्यापी जालीदार खिड़की सुल्तान की प्रसिद्ध खिड़की के समानांतर है - जो भव्य शासन व्यवस्था पर नज़र रखती है। दीवान कक्ष में वज़ीर और शाही परिषद - शक्ति का प्रतीक
और नियंत्रण जो—जैसा कि फौकॉल्ट ने बहुत ही उपयुक्त रूप से कहा है — “हमेशा दृश्यमान था और 166 जतीन लड़

अपुष्ट।”50 इस प्रकार, हरम के भीतर स्थापत्य संबंधी अनिवार्यता यह थी कि शाही परिवार के सभी सदस्यों पर कड़ी निगरानी रखें, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि
कि सत्ता का पदानुक्रम बरकरार रखा गया और किसी ने भी अपनी निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया।
इस प्रकार, काले हिजड़े, और विशेष रूप से किज़लर आगासी, अधिकार और पहुंच के रणनीतिक पदों पर आसीन थे। आंतरिक अलगाव और स्थान विभाजन द्वारा परिभाषित एक स्थल पर, वे काफी हद तक स्वतंत्र होने के कारण अनुकूल स्थिति में थे। उन सीमाओं के बारे में जो उन्होंने दूसरों पर थोपी थीं। जहाँ स्थापत्य कला का मूलमंत्र छिपाना और अलग करना था, वहाँ सच्ची शक्ति उन्हीं के पास थी। जिन्हें देखने और चलने-फिरने दोनों की स्वतंत्रता प्राप्त थी—एक ऐसी शक्ति, भले ही कभी-कभी कितनी ही कमजोर क्यों न हो, जो राज्य के मामलों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती थी।
अनेक अवसरों पर, वरिष्ठ अश्वेत हिजड़े, या तो अकेले या समूह में कार्य करते हुए,
वरिष्ठ हरम महिलाओं के साथ गठबंधन करके, उन्होंने शाही मामलों पर स्पष्ट प्रभाव डाला। उदाहरण के लिए, सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ में, मुस्तफा आगा, जो उस समय
प्रमुख हिजड़े ने अपने भाई अहमद प्रथम (शासनकाल 1603-17) की मृत्यु के बाद मुस्तफा प्रथम को सिंहासन पर बिठाने में सफलता प्राप्त की, जिससे पारंपरिक परंपरा टूट गई।

पिता से पुत्र को उत्तराधिकार का। तीस साल बाद, बालक सुल्तान मेहमेद चतुर्थ (शासनकाल 1648-87) की सत्ता के लिए प्रतिद्वंद्वी महिलाओं के बीच भयंकर संघर्ष का अंत दुर्जेय वलीदे सुल्तान कोसेम की हत्या में हुआ। सुलेमान आगा के नेतृत्व में काले हिजड़ों का एक दल, जो अपनी महत्वाकांक्षी बहू तुरहान के प्रति वफादार रहा।

निष्कर्ष: शक्ति और नाजुकता की अभिव्यक्तियाँ

भीतरी महल की सुरक्षा में काले हिजड़ों के दायित्व को देखते हुए, टोपकापी हरम की स्थापत्य संरचना को उनकी शक्ति का प्रतीक माना जा सकता है। लेकिन वास्तव में उस हरम का स्वरूप क्या था?
उनका अधिकार? यह निबंध अब उस स्थान पर लौटता है जहाँ से सबसे पहले आंतरिक महल में प्रवेश किया गया था, ताकि शक्ति और नाजुकता की विरोधाभासी अभिव्यक्तियों को पढ़ा जा सके।
वह केंद्रीय बिंदु जिससे होकर सभी रास्ते गुजरते थे, काराआगलर तास्लिगी, या काले हिजड़ों का आंगन, किज़लर आगासी और उसके अनुयायियों के अधिकार और धन को अन्य हरम के सामने प्रदर्शित करने का प्रयास करता था।
निवासियों के लिए। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, भीतरी महल में प्रवेश करने की अनुमति प्राप्त लोगों के लिए, इस आंगन को एक उपयुक्त सजावटी प्रवेश द्वार माना जा सकता है।
दीवान दरबार और शाही परिवार के निजी अपार्टमेंटों के बीच मध्यस्थता करते हुए। हालाँकि, हरम के आंतरिक संदर्भ से एक और व्याख्या संभव है। कि हिजड़ों का आंगन बाहरी रूप से सजाया गया है।
यह अन्यत्र दिखाई देने वाले अधिक साधारण मुखौटे के बिल्कुल विपरीत है। पैनोप्टिक बॉडीज़ 167

हरम में। हालाँकि कई कक्ष और कमरे आंतरिक रूप से विशिष्ट टाइलों से सजाए गए थे, लेकिन उनकी अधिक दिखाई देने वाली बाहरी सतहें याद दिलाती हैं,
इसके बजाय, ओटोमन क्षेत्रों की स्थानीय अभिव्यक्तियाँ: उदाहरण के लिए, पसंदीदा लोगों के आंगन की एक झलक लकड़ी के ढांचे वाले घरों की याद दिलाती है।

सैफरानबोलू। कैरियेलर तास्लिगी, या लड़कियों के आंगन का घरेलू पैमाना और सपाट भौतिक गुण, एक स्थान के रूप में इसके भविष्य के संकेत थे।
किसी भी बाहरी दर्शक को अनुमति नहीं दी गई। इसके विपरीत, जो कोई भी अंदर झांकता है,
काले हिजड़ों के आंगन में मौजूद सुंदर संगमरमर का बरामदा और उसकी ऊंची दीवारों पर सजी सजावटी टाइलें और नक्काशीदार सतहें सबकी नजरों से नहीं बच पाईं।
दीवारें। यह वास्तुकला प्रदर्शन के उद्देश्य से बनाई गई थी। शाही परिवार के सदस्यों और मेहमानों को काले हिजड़ों की दौलत और अधिकार दिखाने के अलावा, सजावट का उद्देश्य स्वयं हिजड़ों को भी आकर्षित करना था। आख़िरकार, यही तो उनका निवास स्थान था। फूलों की टाइलों के बीच आसानी से नज़रअंदाज़ हो जाने वाली, पवित्र वास्तुकला के चित्रों को फ़्रेमों में लगाया गया था। मक्का और मदीना की मस्जिदें, जिनकी विस्तृतता और सटीकता सार्वभौमिक मुस्लिम श्रद्धा से परे एक परिचितता का सुझाव देती है (चित्र 12)।
ममलुक दरबारों के हिजड़ों के साथ यह एक स्थापित प्रथा थी।
उनसे पहले, ओटोमन शासकों ने शाही सेवा से सेवानिवृत्त होने वाले कई अश्वेत हिजड़ों को महल के अनुष्ठानिक संरक्षक के रूप में नियुक्तियाँ प्रदान की थीं।
मक्का में काबा और मदीना में पैगंबर का मकबरा।51 इस प्रकार, पवित्र, राजसी और घरेलू संदर्भ में, हिजड़े का शरीर
महत्वपूर्ण सीमाओं और सरहदों को परिभाषित करने, उनकी रक्षा करने और उनके बीच मध्यस्थता करने का काम शुरू हुआ। परिणामस्वरूप, जन प्रेम, प्रचुर मात्रा में दान और शाही भत्तों ने हिजड़ों के खजाने को समृद्ध किया। अनिवार्य रूप से,
कुछ व्यक्तियों ने अपनी संपत्ति को बेहिसाब लुटा दिया—वरिष्ठ हिजड़े अपनी प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करने के लिए जाने जाते थे, वे बड़े-बड़े घर और आलीशान भवन बनाए रखते थे।
अनुचर तो थे, लेकिन हिजड़ों ने दान-पुण्य में काफी बड़ी रकम खर्च की। उनकी अधिकांश आय धार्मिक वक्फों को दान की जाती थी, जो कम सुविधा प्राप्त हिजड़ों के लाभ के लिए स्थायी रूप से स्थापित संस्थाएँ थीं, और परोपकार के प्रत्येक कार्य को दर्ज किया जाता था।

बंद नौकरशाही फाइलों में तो ये बातें दर्ज हैं, लेकिन उनकी बैरकों की बाहरी दीवारों पर सुनहरे अक्षरों में खुदी हुई हैं (चित्र 13)। उदाहरण के लिए, एक वक्फ शिलालेख में इस तथ्य का उल्लेख है।
1819-20 में किज़लर आगासी हाफ़िज़ ईसा ने हरम के बीमार हिजड़ों के लिए मोमबत्तियाँ, तेल और दवाइयाँ उपलब्ध कराने के लिए एक बड़ी राशि दान की थी। अन्य शिलालेखों में यह भी उल्लेख है कि हरम के अन्य सदस्यों द्वारा स्थापित वक्फों का राजस्व किस प्रकार था।
राजमहल की संपत्ति—चाहे वो शाही महिलाएं हों या जनिसरी—को हर साल विभिन्न श्रेणियों के हिजड़ों में वितरित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, अठारहवीं रेजिमेंट के जनिसरियों द्वारा स्थापित दान-संग्रहों की आय...
महमूद द्वितीय (शासनकाल 1808-39) के शासनकाल में वर्णन करें कि किज़लर आगासी को पुनः कैसे स्थापित किया जाना था - 168 जतीन लाद

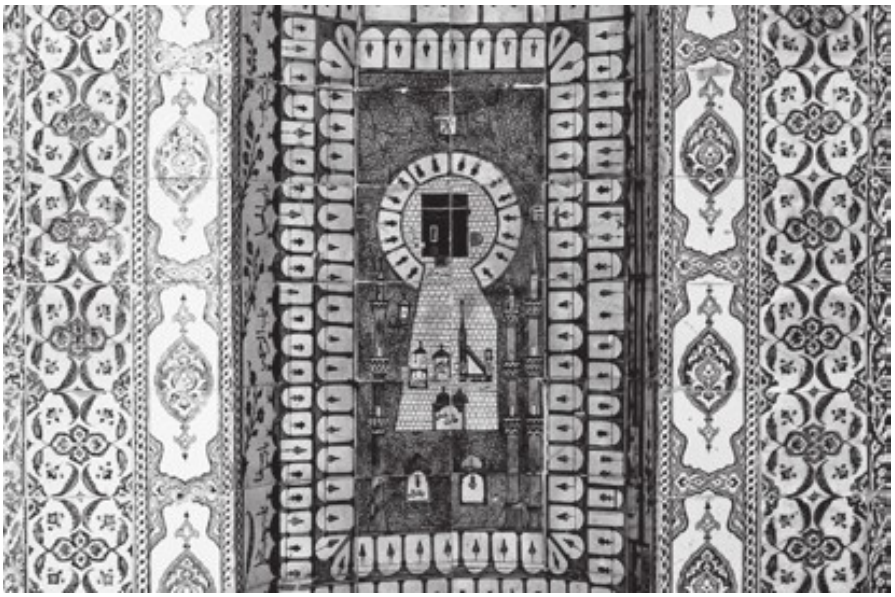

12. काले रंग के भीतर मक्का की पवित्र मस्जिद का सत्रहवीं शताब्दी का टाइलयुक्त पैनल।
हिजड़ों की छोटी मस्जिद। लेखक द्वारा खींची गई तस्वीर, 2006।

2,000 कुरु, 52 कोषाध्यक्ष को 1,000, पुराने महल के हरम गार्ड को 750 और तोपकपी के मुख्य द्वारपाल को 600 प्राप्त हुए। 53 वास्तव में, अंत तक सत्रहवीं शताब्दी में, किज़लर आगासी ने स्वयं शाही व्यवस्था की देखरेख की।
मक्का और मदीना के पवित्र शहरों के लाभ के लिए स्थापित वक्फों का विवरण दीवारों पर अंकित था।54 ये शिलालेख चमकते थे।
दूर से देखने पर, यह आंगन में सजी भौतिक संपत्ति के प्रदर्शन को और भी स्पष्ट करता था, लेकिन पास से देखने पर केवल हिजड़ों को ही यह समझ में आता था, न केवल एक
यह न केवल महल की सीमाओं से परे अस्तित्व को दर्शाता है, बल्कि उनकी सामूहिक पहचान और भाईचारे के बंधनों का भी जश्न मनाता है, जो सभी हिजड़ों को समाहित करने का प्रयास करते हैं।55 हालाँकि, वास्तुकला से पता चलता है कि समृद्ध अलंकरण द्वारा प्रदर्शित धन और अधिकार केवल सतही ही हो सकते हैं। इसके अलावा, हिजड़ों द्वारा कायम रखी गई स्थान की पदानुक्रम और असमानताएँ भी...
शाही परिवार पर संरक्षण की निगरानी उनके अपने ही घर के अंदर स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
आवासीय क्वार्टर। अत्यधिक अलंकृत मुखौटे के पीछे एक नज़र डालने पर एक दयनीय आंतरिक भाग दिखाई देता है, जो नियुक्त व्यक्तियों के निवास के लिए शायद ही उपयुक्त है।
सुल्तान के प्रतिनिधियों के रूप में। जबकि किज़लर आगासी भूतल पर कमरों के एक विशाल सुइट में रहते थे, उनके सैकड़ों अधीनस्थ भी वहीं रहते थे। उन्हें ऊपरी तीन मंजिलों पर स्थित छोटी, सादी, बिना खिड़की वाली कोठरियों में ठूंस दिया गया था।
पद के अनुसार तल (चित्र 8 और 14)। गंभीर बाधाओं को देखते हुए
पैनोप्टिक बॉडीज़ 169

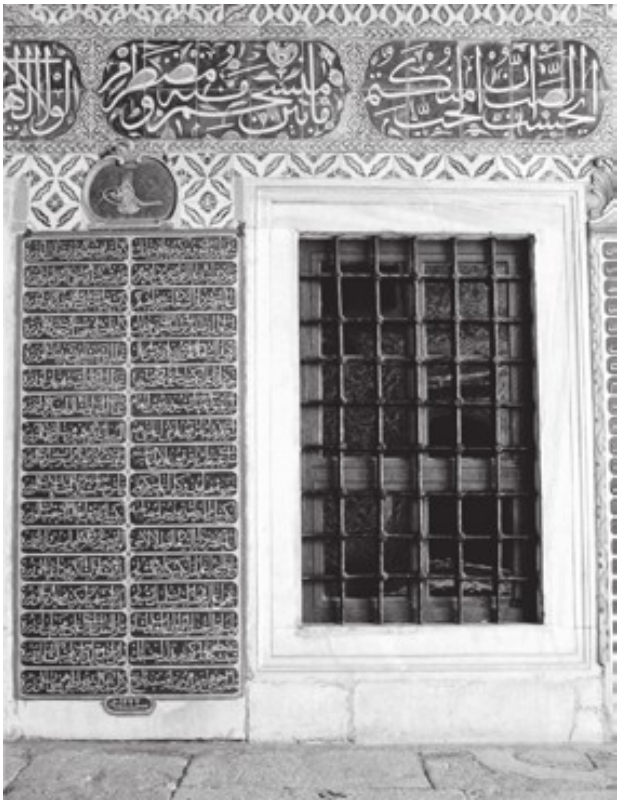

13 □□ □□□□, □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□
□□ □□□□□□□□ □□□
□□□□□, □□ □□□□□□□□□
□□□□□□□ □□□□,
□□□□□□□ □□□□□□ □□
□□ □□ □□ □□□□□ □□
□□□□ □□ □□□
□□□□, □□□□□□□
□□□□□□□□□ □□ □□□
□□□□ □□
□□□□ □□□□□□□
□□□□□□ □□□□□□
□□□□, 2006.

हरम के अन्य हिस्सों की तरह, भूतल के बरामदे का अधिकांश भाग बाद में आवासीय क्वार्टरों से भर दिया गया था ताकि
सभी को घर में रखा गया (चित्र 10)। लेकिन हालात में थोड़ा ही सुधार हुआ; बैरकें भीड़भाड़ वाली और ठंडी रहीं, जिन्हें केवल एक ही चूल्हे से गर्म किया जाता था, जबकि पंक्ति
शौचालय रहने के कमरों के बहुत करीब थे और उनसे अपर्याप्त रूप से अलग थे। ऐसी रहने की स्थितियाँ मठवासी या यहाँ तक कि दयनीय प्रतीत होती हैं और आम हिजड़ों द्वारा प्राप्त की जाने वाली अत्यंत सीमित शक्ति का संकेत देती हैं।
और इन्हीं परिस्थितियों में टोपकापी महल के अंदर सेवा करने वाले सैकड़ों अश्वेत हिजड़ों में से अधिकांश ने अपना जीवन व्यतीत किया।
दृष्टिबाधित क्षेत्र के भीतर देखने और घूमने का विशेषाधिकार प्राप्त है। वह हरम था, काले हिजड़े सुल्तान की प्रतिनिधि आंखें बन गए थे - फिर भी, भाग्य के एक क्रूर मोड़ में, वे अपनी ही शक्ति के शिकार हो गए।
गुलामों के एक परिवार पर नियंत्रण रखते हुए, उन्होंने दूसरों को अनुशासित, शिक्षित और प्रशिक्षित किया, उन्हें महल छोड़ने के लिए तैयार किया जबकि वे स्वयं हमेशा के लिए सुल्तान के दीन-हीन गुलाम बनकर महल में रह गए। सत्ता का अधिग्रहण
इससे लाक्षणिक रूप से उनके घावों को भरने में मदद मिली होगी, लेकिन 170 जतीन लड़ की हालत अभी भी वैसी ही है।

14 काले रंग का आंतरिक भाग हिजड़ों की बैरकें।
एट्रियम सेवा प्रदान करता है
एकमात्र स्रोत के रूप में
चार मंजिलों के लिए प्रकाश
कोठरियाँ और छात्रावास।
तस्वीर द्वारा
लेखक, 2006.

उनके शरीर अपरिवर्तनीय थे, और उनकी देह पर अंकित अनुपस्थिति ने उन्हें अमिट रूप से पहचान दी। उनके शरीरों की भौतिक अस्पष्टता ने उन स्थानों को परिभाषित किया जिन पर वे अधिकार रखते थे और जिन्हें वे नियंत्रित करते थे: एक ही समय में एक दुर्जेय बाधा और फिर भी पारगम्य, अलग करने वाला फिर भी मध्यस्थता करने वाला, अद्भुत फिर भी घिनौना।

नोट्स

इस अध्याय का एक पूर्व संस्करण "हरम" विषय पर आयोजित सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया था।
"इतिहास और कल्पना" विषय पर, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में आगा खान इस्लामिक आर्किटेक्चर कार्यक्रम द्वारा प्रायोजित, 7-8 मई, 2004। सभी अनुवाद मेरे द्वारा किए गए हैं, जब तक कि अन्यथा इंगित न किया गया हो। 1 उन्नीसवीं सदी के लोकप्रिय नृवंशविज्ञान संबंधी वृत्तांतों और कलात्मक प्रस्तुतियों में
पश्चिम में प्रकाशित मुस्लिम घर की तस्वीर में, सामने के दरवाजे पर लकड़ी का ताला लगा हुआ है।
यह एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया जिसके माध्यम से तकनीकी दक्षता और तर्कसंगतता का आकलन किया जा सकता था।
उपनिवेशीकरण पर सवाल उठाया गया। उदाहरण के लिए, लेन रूप और रूप का चित्रण और वर्णन करता है।
ताले की कार्यप्रणाली का विश्लेषण करते हुए उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि "इस प्रकार के ताले को खोलना मुश्किल नहीं है"।
(आधुनिक मिस्रियों के रीति-रिवाजों और परंपराओं का विवरण, 21)। यही टिप्पणी बाद में लेन-पूल, द स्टोरी ऑफ काहिरा, 15 में दोहराई गई।
पैनोप्टिक बॉडीज़ 171

2. हरम के प्राच्यवादी चित्रणों के संदर्भ में, सेराग्लियो शब्द का प्रयोग किया जाता है।
सेराइल और सराय शब्द तुर्की भाषा के महल शब्द से व्युत्पन्न हुए हैं। हालांकि, यह व्यापक रूप से माना जाता था कि दोनों शब्दों की व्युत्पत्ति इतालवी क्रिया सेरारे से हुई है, जिसका अर्थ है ताला लगाना या बंद करना।
3. बधियाकरण की विधियाँ और कथित तौर पर उपलब्ध हिजड़ों की किस्में अक्सर यूरोपीय हरम साहित्य के विशाल संग्रह में यह एक लंबा और कुछ हद तक विकृत विषयांतर है। शल्य चिकित्सा और शारीरिक पहलू अनुमानतः अपेक्षित ही सिद्ध होते हैं।

पुनरावृत्तिपूर्ण होने के बावजूद ये हिंसा, अतार्किकता और सांस्कृतिक हीनता की छवि को और पुष्ट करते हैं।
पूर्व का। सबसे सुलभ, हालांकि पूरी तरह से ज्ञानवर्धक नहीं, विवरण— सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के ग्रंथों से प्राप्त जानकारी पेनज़र में दी गई है।
हरम, 125–51.
इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस अवधि के यूरोपीय लेखों में इसका बहुत कम उपयोग था।
इस्लामी न्यायविदों के लेखन जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से विभिन्न प्रकार के मतों की रचना की थी और
हिजड़े के शरीर पर ग्रंथ। जबकि विभिन्न शल्य चिकित्सा श्रेणियां हिजड़ों पर भी चर्चा हुई, इस प्रकार की कानूनी और धार्मिक आधार पर विचार-विमर्श हुए।
यौन नैतिकता और सामाजिक नीतिशास्त्र से संबंधित व्यापक चर्चाओं के संदर्भ में रखा गया है—
यह दर्शाता है कि सदियों से इस्लामी समाजों में हिजड़े की एक अभिन्न उपस्थिति रही है।
और उस परिधीय विसंगति के रूप में नहीं जिसने यूरोपीय लोगों में इतनी गहरी बेचैनी पैदा की।
लेखकों। इनमें से बहुत कम इस्लामी विचारों का अध्ययन किया गया है, लेकिन परिप्रेक्ष्य
चौदहवीं शताब्दी के एक ममलुक न्यायविद, 'अब्द अल-वहाब अल-सुबकी का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।
शॉन मार्मन की उत्कृष्ट कृति 'इस्लामी समाज में हिजड़े और पवित्र सीमाएँ', पृष्ठ 61-63। 4 पैटरसन का मानना है कि हिजड़े, कई प्रकार के दासों की तरह, अपने जन्म समूह से अलग-थलग थे, लेकिन रिश्तेदारी के संबंध बनाने में उनकी असमर्थता ने ही यह सुनिश्चित किया कि "कोई
अपने नए समाजों में अस्तित्व का आधार उनके स्वामियों के अलावा और कुछ नहीं था [और वे] संभवतः
उसके प्रति पूरी तरह से वफादार रहना” (दासता और सामाजिक मृत्यु, 311)। जबकि हिजड़ों के इन विशिष्ट गुणों को अच्छी तरह से समझा जाता है, जांच का

इस खंड का भाग।
6. टोपकापी महल का हरम वह स्थान था जो शायद अन्य किसी भी स्थान से अधिक महत्वपूर्ण था।
इसने हरम को भव्य सेराग्लियो के रूप में देखने की यूरोपीय कल्पनाओं को बढ़ावा दिया और कायम रखा। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी की यूरोपीय कल्पना में सेराग्लियो में काले हिजड़े की कल्पना के लैकेनियन विश्लेषण के लिए, ग्रोसरिचर्ड की पुस्तक 'द सुल्तान्स कोर्ट', पृष्ठ 147-65 देखें (लिज़ हेरॉन द्वारा मौलिक कृति 'स्ट्रक्चर डू सेराइल: ला फिक्शन डू डेस्पोटिज्म एशियाटिक डान्स ल'ऑक्सीडेंट क्लासिक' का अनुवाद)।
7 इब्न मंज़ूर, लिसान अल-अरब, खंड 1, 615। प्रारंभ में ही यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि विभिन्न क्षेत्रों और न्यायशास्त्र के विभिन्न संप्रदायों में हरम (या हरीम) शब्द की असंख्य व्याख्याएँ और विविधताएँ प्रचलित हैं। प्रत्येक व्याख्या में अपने सूक्ष्म अंतर हो सकते हैं, और प्रत्येक अभिव्यक्ति अपने विशिष्ट इतिहास और संदर्भ से प्रभावित हो सकती है। इब्न मंज़ूर जैसे ममलुक अरबी शब्दकोशकार, हरम मूल के अनेक व्युत्पत्तियों पर कई पृष्ठों तक विस्तृत चर्चा करते हैं। इसी प्रकार, कुरान में भी हरम मूल के अनेक व्युत्पत्ति हैं, लेकिन किसी का भी प्रयोग महिलाओं या उनके घरेलू स्थान के प्रत्यक्ष संदर्भ में नहीं किया गया है। इसके बजाय, ये व्युत्पत्तियाँ आहार संबंधी नियमों, तीर्थयात्रा के दौरान निषेधों, पवित्र महीनों और मक्का के पवित्र क्षेत्रों को संदर्भित करती हैं, जहाँ हत्या करना निषिद्ध है।
8 ओटोमन शाही परिवार के भीतर पदानुक्रमित संरचना में अंतर्निहित जटिलताओं पर पीयर्स की पुस्तक 'द इंपीरियल हरेम' में विस्तार से चर्चा की गई है।
9 तोपकपी के हरम के प्रमुख हिजड़ों (किज़लर आगासी) की जीवनी संबंधी सूची को ओटोमन इतिहासकार अहमद रेस्मी एफेंडी (लगभग 1694-1783) ने अपनी पुस्तक 'हमीलेत उल-कुबेरा' (महान लोगों के शुतुरमुर्ग के पंख) में संकलित किया है। एक ओटोमन इतिहास की तरह पढ़ी जाने वाली यह पुस्तक, 1574 से 1590 के बीच प्रमुख हिजड़े के रूप में सेवा करने वाले मेहमेद आगा से शुरू होकर मोराली बशीर आगा (1746-52) पर समाप्त होने वाले अड़तीस हिजड़ों की उत्पत्ति और पेशेवर जीवन का वर्णन करती है। मोराली बशीर आगा का पतन और उनकी मृत्यु

विशेष रूप से रुचिकर है। मेहमेद सुरैया बे (1845-1909) की पुस्तक 'सिसिल-ए-ओसमानी' में चुनिंदा हरम हिजड़ों की संक्षिप्त जीवनियाँ भी शामिल हैं। हालांकि, बाद के ओटोमन इतिहासलेखन में, उन्नीसवीं सदी के इतिहासकार तैय्यारज़ादे अहमद अता द्वारा संकलित तारीह-ए अता जैसे संकलनों में संस्था की संरचना और पदानुक्रम के बारे में कुछ जानकारी मिलती है।
10 हैथवे, बशीर आगा.
11 टोपकपी पैलेस के एक अखाड़े के रूप में विस्तृत स्थापत्य इतिहास और विश्लेषण के लिए
शाही सत्ता के औपचारिक प्रदर्शन के लिए निर्मित, देखें नेसिपोग्लू, वास्तुकला, समारोह और सत्ता। रोजर्स की पुस्तक, द टोपकापी सराय संग्रहालय में प्रमुख हरम भवनों का भ्रमण और साथ में तस्वीरें उपलब्ध हैं।
12 सीमांत योद्धा से लेकर स्थिर सुल्तान तक ओटोमन संप्रभुता की बदलती छवियों और महिला घराने के स्थानांतरण के पीछे की राजनीति के संक्षिप्त अध्ययन के लिए, पीयर्स, द इंपीरियल हरेम, 119-218 देखें।
13 नेसिपोग्लू, “ओटोमन, सफ़वी और मुग़ल महलों में दृष्टि को फ्रेम करना।” 14 महल भवनों में शिलालेखों के संग्रह के लिए, देखें शेरेफ़, “टोपकापु सराय-ए हुमायुनी,” सं. 5 (1910), 274.
पैनोप्टिक बॉडीज़ 173

15 कोसेओग्लू अभिलेखीय रिकॉर्ड से हरम के हिजड़ों के बारे में संख्याएँ प्रदान करता है।
(“टोपकापी सराय के हरम अपार्टमेंट का एक दौरा,” 29)।
16 आगा उपाधि के सटीक अर्थ को लेकर काफी बहस हुई है और
अभी भी कुछ हद तक अस्पष्ट है। ओटोमन साम्राज्य में, इसे एक लचीला माना जाता था।
यह उपाधि उच्च पदस्थ अधिकारियों को प्रदान की जाती थी और यह केवल वरिष्ठ अधिकारियों को ही नहीं दी जाती थी।
हिजड़े।
17 किज़लर अगासी के प्रमुख कर्तव्यों के संक्षिप्त सारांश के लिए, उज़ुनकार्सिलि, उस्मान डेवलेटिनिन सराय टेस्किलाटी, 173 एफएफ देखें।

18 आज तक, इतिहास ने श्वेत हिजड़ों पर अश्वेत हिजड़ों की तुलना में और भी कम ध्यान दिया है।
यह आम तौर पर माना जाता है कि ओटोमन दरबार में श्वेत हिजड़ों का चयन किया जाता था।
स्लाविक, हंगेरियन, कोकेशियाई और अर्मेनियाई दास। बाटूर ने संक्षेप में कुछ दासों का उल्लेख किया है।
राज्य के उच्च पदों पर नियुक्त किए गए वरिष्ठ श्वेत हिजड़े, जिनमें भव्य पद भी शामिल थे
पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के दौरान वज़ीर ("हरम एक संस्था के रूप में")
ओटोमन लाइफ में,” 24)। दुर्भाग्य से, अभिलेखीय संदर्भों का उल्लेख नहीं किया गया है।
19 सदियों से टोपकापी हरम में हुए परिवर्तनों की श्रृंखला को देखते हुए, यह कहा जा सकता है कि
यह माना जाता है कि काले हिजड़ों की संस्था में भी बदलाव आया, प्रत्येक पद के साथ
इसका अपना इतिहास रहा है क्योंकि पदों को पेश किया गया और निरस्त किया गया, उनकी प्राथमिकता समाप्त हो गई, या
इन्हें समाप्त कर दिया गया था। उस अवधि के दौरान काले हिजड़ों का सटीक संगठन...
मुराद तृतीय के शासनकाल में हुए परिवर्तन के बारे में वर्तमान में बहुत कम जानकारी है। बाद के ओटोमन इतिहास लेखन में,
हालाँकि, यह संरचना और पदानुक्रम के बारे में कुछ जानकारी प्रदान करता है। उन्नीसवीं सदी के इतिहासकार तैय्यारज़ादे अहमद अता द्वारा संकलित तारीह-ए-अता जैसे संकलनों में संस्था का उल्लेख मिलता है, जिसका संक्षिप्त सारांश बतुर की पुस्तक "द हरम एज़ एन इंस्टीट्यूशन इन ओटोमन लाइफ" (पृष्ठ 23-24) में दिया गया है। 20 काले हिजड़ों के प्रति लंबे समय से चली आ रही और गहरी जड़ें जमा चुकी प्राथमिकता, श्वेत हिजड़ों के साथ उनकी प्रतिद्वंद्विता और श्वेत हिजड़ों के पतन और अंततः विलुप्त होने के कारणों से संबंधित मूलभूत प्रश्नों को किसी न किसी बिंदु पर हल करना आवश्यक है।

ऐतिहासिक शोध के माध्यम से। इसके उत्तर परस्पर संबंधित कारकों के संयोजन में निहित हो सकते हैं, जिनमें विभिन्न नस्लों के प्रति ओटोमन की बदलती धारणाएँ भी शामिल हैं।
बाजार की ताकतें, विशेषकर आपूर्ति, भी उतनी ही प्रासंगिक हो सकती हैं: आखिरकार, हिजड़े तो थे ही।
एक समृद्ध अंतरराष्ट्रीय दास व्यापार के उत्पाद। ओटोमन साम्राज्य की विजय।
सेलिम प्रथम के शासनकाल के दौरान ममलुक सल्तनत ने निश्चित रूप से समृद्ध दास प्रथा को बढ़ावा दिया।
सूडान और अबीसीनिया से होकर जाने वाला मार्ग अधिक सुलभ है। सभी गुलामों में से खुलेआम
व्यापार के दौरान, काले हिजड़ों को सबसे मूल्यवान और संभवतः एकमात्र माना जाने लगा।
नए ओटोमन प्रांत में धनी गवर्नरों और अधिकारियों के परिवार
वे उन्हें वहन कर सकते थे। उन घरों में अपनी प्रारंभिक सेवा के दौरान, काले हिजड़ों ने
माना जाता है कि उपहार के रूप में प्रस्तुत किए जाने से पहले उन्होंने दरबारी रीति-रिवाजों की बुनियादी बातें सीख ली थीं।
सुल्तान को।
21 ग्रोसरीचार्ड इस वाक्यांश का प्रयोग निरंकुश शासक के नियंत्रण या नियंत्रण के विशेषाधिकार को परिभाषित करने में करते हैं।
दूसरों की दृष्टि से वंचित करना (सुल्तान का दरबार, 56-63)। यह अध्याय तर्क देता है कि ऐसे समारोहों के लिए स्थापत्य मंच नियंत्रण के इस कार्य में निहित है। 22 यह निकटवर्ती द्वार प्रसिद्ध शाही रक्षकों, जिन्हें हाल्बर्डियर के नाम से जाना जाता है, की बैरकों की ओर जाता है। एक उत्कीर्ण पैनल निर्माण की तिथि 1586-87 दर्ज करता है।
इससे पता चलता है कि भीतरी महल के इस क्षेत्र का विस्तार लगभग उसी समय हुआ था जब
कार्स गेट।
174 जतीन लड़

23 पीयर्स देखें, द इंपीरियल हरेम, 119–218. 24 वाइट्स, “वॉयजेस डे लैम्बर्ट वाइट्स इन टर्की, 1574,” कोडेक्स विन्डोब, पांडुलिपि 3325. नेशनलबिब्लियोथेक, वियना; मौराडगेआ डी'ओहसन, जनरल टेबल ऑफ द ओटोमन एम्पायर.
25 उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में तंज़ीमात सुधारों के बाद, सुधारवादी महमूद द्वितीय (शासनकाल 1808-39) और अब्दुल-मेजिद प्रथम (शासनकाल 1839-
61) जैसे सुल्तानों ने तोपकपी महल द्वारा व्यक्त संप्रभुता की अप्रचलित छवि को पहचाना। प्रचलित यूरोपीय मॉडलों के अनुसार साम्राज्य के व्यापक पुनर्गठन के साथ, तोपकपी महल को 1853 में छोड़ दिया गया और उसकी जगह भव्य डोलमाबाहचे महल का निर्माण किया गया, जो यूरोपीय स्मारकीय मॉडलों पर आधारित तटवर्ती महलों की श्रृंखला में पहला था। तोपकपी के विपरीत, नया हरम ऐसे प्रदर्शन-उन्मुख महलों के सममित पंखों और नवबारोक अलंकरण के बीच पहचानहीन बना रहा। इस बीच, परित्यक्त तोपकपी महल को ओटोमन राजवंश के एक स्मारक के रूप में संरक्षित किया गया, जो 1923 में साम्राज्य के अंतिम पतन तक शाही राज्याभिषेक और धार्मिक अनुष्ठानों का स्थल बना रहा।
26 गुरलिट द्वारा निर्मित टोपकापी महल की योजनाएँ और फोटोग्राफिक प्लेटें
यह उनके 1912 के भव्य पोर्टफोलियो, 'डाई बाउकुंस्ट कॉन्स्टेंटिनोपेल्स' के उनतीस खंडों में से एक था। कई रिक्त स्थानों के बावजूद, गुरलिट की योजना को उस समय टोपकापी का सबसे सटीक वास्तुशिल्पीय चित्रण माना जाता था, जिसने संक्षिप्त झलक, सुनी-सुनाई बातों और कोरी कल्पना पर आधारित पीढ़ियों की योजनाओं को पीछे छोड़ दिया। महल के प्रति आकर्षण इतना प्रबल था कि नई योजना के सरलीकृत संस्करण समकालीन पर्यटक मार्गदर्शिकाओं में भी दिखाई दिए, जिनमें बेडेकर की मार्गदर्शिका भी शामिल है (बेडकर्स कॉन्स्टेंटिनोपेल, पृष्ठ 156)।
गुरलिट के लगभग सात दशक बाद, एक व्यापक और अत्यंत विस्तृत
हरम के कमरों सहित पूरे महल का सर्वेक्षण वास्तुकारों सेदाद एल्डम और फरीदुन अकोज़ान द्वारा किया गया था। योजनाओं, तस्वीरों और काल्पनिक पुनर्निर्माणों की सूची एल्डम और अकोज़ान, टोपकापी सरयी के रूप में प्रकाशित हुई थी।

27 लोकमान बिन सैय्यद हुसेन, हुनरनाम, 2 खंड। (1584-88)। इस्तांबुल: टोपकापी पैलेस। राजकोष, 1523-24, फोल। 18 बी, 19 ए.
28 टिट्ज़े द्वारा उद्धृत, "मुस्तफा अली का ओटोमन साम्राज्य में विलासिता और प्रतिष्ठा प्रतीकों पर विचार"
सज्जनों,” 586.
29 सभी घनी आबादी वाले इलाकों की तरह, टोपकापी हरम की शुरुआत भी साधारण थी।
महल के अभिलेखागार में मौजूद कुछ स्रोतों के आधार पर प्रचलित आम सहमति के अनुसार, मूल रूप से तोपकपी महल में केवल कुछ चुनिंदा रखैलें एक छोटे से संलग्न कक्ष में रहती थीं, जो संभवतः वर्तमान हरम के स्थान पर स्थित था। सुल्तान की माता, चाचियाँ, पत्नियाँ, बच्चे, बहनें और दासियाँ सहित पूरा शाही परिवार पुराने महल (सरय-ए-अतिक) में रहता था, जो कभी वर्तमान इस्तांबुल विश्वविद्यालय के स्थान पर स्थित था। सुलेमान प्रथम के शासनकाल के दौरान पूरे शाही परिवार को तोपकपी हरम में स्थानांतरित किए जाने के बाद, ऐसा माना जाता है कि पुराने महल का दुखद अंत हुआ और इसका उपयोग दिवंगत सुल्तानों के हरमों के लिए किया जाने लगा।
30. 1552 से 1652 तक के प्रिवी पर्स रजिस्टरों का सारणीबद्ध सारांश इसमें दिया गया है।
पीयर्स, द इंपीरियल हरेम, 122.
पैनोप्टिक बॉडीज़ 175

31 तोपकपी हरम में एक विचित्र विसंगति यह थी कि वहाँ महिलाओं की स्थिति कम अनुकूल थी।
सुल्तान की आधिकारिक पत्नियाँ, जिन्हें वंशवादी नीतियों के कारण, मना किया गया था
बच्चे पैदा करना।
32 यहाँ हरम की महिलाओं को काले हिजड़ों की सुरक्षा में, पूरी तरह से घूंघट ओढ़कर, प्रतीक्षारत गाड़ियों में ले जाने से पहले इकट्ठा होते हुए देखा गया है।
बाहर (इसीलिए, इसके बाहरी द्वार को कैरिज गेट नाम दिया गया है)। 33 कुरान 33:53.

34 ममलुक साहित्यिक संदर्भ में, मार्मन, हिजड़े और पवित्र सीमाएँ नामक रचना में हिजड़ों और आवास के प्रवेश द्वार के बीच स्थानिक संबंध पर चर्चा की गई है।
इस्लामी समाज में, 3–9.
35 यह व्यवस्था गैर-मुसलमानों पर लगाए जाने वाले मानव कर का एक रूप थी जिसने सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद की।
केवल सुल्तान के प्रति वफादार सेवकों की आपूर्ति। इस प्रणाली के संदर्भ आसानी से मिल सकते हैं।
यह बात ओटोमन साम्राज्य के सामाजिक और राजनीतिक इतिहास पर लिखी गई कई रचनाओं में पाई जाती है।
36 पुरुष सेवकों के दरबार में शाही संरचनाओं के विस्तृत विवरण के लिए— या, जैसा कि अब इसे आमतौर पर जाना जाता है, तीसरा न्यायालय—देखें नेसिपोग्लू, आर्किटेक्चर,
औपचारिक, और शक्ति, 111–58.
37 उक्त में उद्धृत, 91.
38 कुरान 4:23 में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि नैतिक और भौतिक स्थान कौन साझा कर सकता है। 39 अहमद तृतीय के दरबारी इतिहासकार वेहबी द्वारा निर्मित और लेवनी द्वारा सचित्रित त्योहारों की पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित हो चुका है (लेवनी और सूर्नाम)।
अठारहवीं सदी के एक ओटोमन उत्सव की कहानी (एसीन अतील द्वारा संपादित)। 40 सुल्तान के साथी मूल रूप से महल के विभिन्न अधिकारियों में से चुने जाते थे। हालाँकि, अठारहवीं सदी तक, यह विशेषाधिकार प्राप्त पद केवल काले हिजड़ों के लिए ही आरक्षित हो गया था।
41 सुल्तान के गुंबददार शयनकक्ष का निर्माण मुराद तृतीय के शासनकाल में हुआ था। विवरण
इस स्थान के बारे में जानकारी नेसिपोग्लू की पुस्तक "आर्किटेक्चर, सेरेमोनियल एंड पावर" (पृष्ठ 165-72) और कोसेओग्लू की पुस्तक "ए टूर ऑफ द हरम अपार्टमेंट्स ऑफ द टोपकापी सराय" (पृष्ठ 32-33) में दी गई है। 42 ये पवित्र अवशेष 1517 में ममलुक सल्तनत की विजय के बाद इस्तांबुल लाए गए और टोपकापी हरम में स्थापित किए गए। इसके बाद, ओटोमन साम्राज्य ने इन अवशेषों को इस्तांबुल में स्थापित किया।

उन्होंने स्वयं को हदीम उल-हरेमेयन उल-शेरिफेन की उपाधि प्रदान की। 43 शाही भाई-भतीजावाद के अंत पर पीयर्स, द इंपीरियल हरेम, 101-3 में चर्चा की गई है। 44 तोपकपी महल के कई विवरणों में, राजकुमारों के क्षेत्र को सुल्तान के शयनकक्ष के निकट स्थित अत्यधिक अलंकृत जुड़वां मंडपों के साथ पहचाना गया था। लेकिन विचार करने पर, यह असंभव लगता है। संख्या के मुद्दे के अलावा, सीमितता
राजकुमारों द्वारा पसंदीदा राजकुमारों के आंगन की निगरानी करने से हरम की सुरक्षा खतरे में पड़ जाती।
उन युवतियों में से जिन्हें विशेष रूप से सुल्तान के लिए तैयार किया जा रहा था। 45 ग्रोसरिचर्ड, द सुल्तान्स कोर्ट, 126. 46 फौकॉल्ट, डिसिप्लिन एंड पनिश, 172. 47 इस द्वार के नाम का सटीक अर्थ अभी भी बहस का विषय है। कुशाने कपिसी का अर्थ एवियरी गेट हो सकता है, और संभवतः इसके पास ही एक छोटा एवियरी स्थित रहा होगा।
लेकिन रेडहाउस के तुर्की अनुवाद के अनुसार, कुश्हाने का एक अन्य अर्थ "सॉसपैन" है।
और अंग्रेजी शब्दकोश, जिसके कारण यह सुझाव दिया गया है कि द्वार का नाम इसके नाम पर रखा गया था
एक छोटी रसोई। दरअसल, ऐसा माना जाता है कि विशाल शाही रसोई में तैयार किया गया भोजन 176 जतीन लाद

(दीवान प्रांगण के पास स्थित) इसे हरम में वितरण के लिए यहीं से ले जाया जाता था।
48 इस बिंदु पर यह उल्लेख करना आवश्यक है कि एक अन्य प्रकार का निवासी भी स्थानांतरित हो सकता है।
हरम के भीतर स्वतंत्र रूप से। हिजड़े की तरह, यौवन से पहले के बच्चे को भी उसकी कामुकता में "अपूर्ण" माना जाता था और इसलिए वह घर की नैतिक सद्भाव को भंग किए बिना विभिन्न स्थानों तक पहुंच सकता था और पुरुषों और महिलाओं को अलग करने वाली महत्वपूर्ण सीमाओं को पार कर सकता था।
49 फौकॉल्ट, अनुशासन और दंड, 172. 50 वही, 201. सुल्तान की "अपुष्ट" उपस्थिति, जो शाही परिषद कक्ष पर नज़र रखती है, को मौराडगेआ डी'ओहसन की कृति 'टेबलू जेनरल डे ल'एम्पायर ओटोमन' में शामिल एक उत्कीर्णन में

[illegible] [illegible] [illegible] [

51 ममलुक सुल्तानों के अधीन प्रचलित प्रथा के अध्ययन के लिए, देखें मार्मन, हिजड़े और
इस्लामी समाज में पवित्र सीमाएँ।
52 कुरु, ओटोमन साम्राज्य में मुद्रा की मानक इकाई थी। 53 कुछ वक्फ शिलालेखों के संक्षिप्त अनुवाद, जिनमें हिजड़ों के विशेष वर्गों को देय राजस्व शामिल हैं, कोसेओग्लू, "टोपकापी सराय के हरम अपार्टमेंट का एक दौरा," 28-29 में दिए गए हैं।
54 हालाँकि शाही वक्फों का बहुत कम अध्ययन किया गया है, फिर भी कई लेख इस विषय पर चर्चा करते हैं।
काहिरा में निर्वासित विभिन्न ओटोमन हरम हिजड़ों के धार्मिक दान और आर्थिक गतिविधियों का विवरण दिया गया है। उदाहरण के लिए, 'अब्द अल-'अज़ीज़ और क्रेसेलियस ने काहिरा में बशीर आगा के सबील-कुत्ताब के प्रतिलेख का अध्ययन किया, जो एक सामान्य रूप से दान से निर्मित धर्मार्थ भवन था जिसमें पीने के पानी का फव्वारा और ऊपर एक कक्षा थी ("काहिरा में अल-हज्ज बशीर आगा का अवकाफ")। हैथवे ने 1667-71 में मुख्य हिजड़े अब्बास आगा की संपत्ति का वर्णन किया है ("मिस्र में एक निर्वासित ओटोमन हिजड़े की संपत्ति और प्रभाव")।
55 मार्मन ने हिजड़ों के बीच व्याप्त मजबूत एकजुटता की भावना का विस्तार से वर्णन किया है।
ममलुक काल के दौरान, उन्होंने अपनी सामूहिक पवित्र और शाही पहचान का निर्माण किया (इस्लामी समाज में हिजड़े और पवित्र सीमाएँ)। काले हिजड़ों के आंगन की वास्तुकला और शिलालेख ओटोमन हिजड़ों के बीच भाईचारे की इसी भावना की ओर इशारा करते हैं। हालाँकि, हरम के प्रत्येक वरिष्ठ सदस्य के पास हिजड़ों का अपना दल होता था, इसलिए यह समझना कि किस हद तक, यदि कोई हो, गुटों और प्रतिस्पर्धी निष्ठाओं ने काले हिजड़ों के भाईचारे और एकजुटता को प्रभावित किया, इसके लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है।

वेल्स के राजकुमार के लिए एक हरम होना कितना आनंददायक होगा।
— राजकुमारी कैरोलिन, 18161

7 • जहाँ अभिजात वर्ग मिलते हैं

हरम का दौरा, समुद्र में स्नान और सामाजिक मेलजोल
पूर्व-औपनिवेशिक ट्यूनीशिया, सी. 1800-1881

जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

ट्यूनिस से बारह मील दूर ला मारसा नामक एक समुदाय में कॉर्निश के किनारे टहलते हुए, किसी का ध्यान तुरंत पानी में आधा डूबी हुई एक विचित्र संरचना पर जाता है। सफेदी से पुते गुंबद से ढकी, भूमध्य सागर की ओर बालकनियों और बरामदों वाली यह संरचना
यह एक छोटे से पैदल मार्ग से समुद्र तट से जुड़ा हुआ है। दाईं ओर, एक और समान, हालांकि छोटा, भवन परित्यक्त और आधा जर्जर अवस्था में पड़ा है। खंडहरों में तब्दील हो चुकी यह इमारत मछुआरे अपने जाल रखने के लिए इस्तेमाल करते हैं। हालांकि, इससे बड़ी इमारत एक आलीशान तीन सितारा रेस्तरां है जिसका नाम कुब्बत है।
अल-हवा, जो सुबह के शुरुआती घंटों तक शराब परोसता है
यह सुबह के समय प्रसिद्ध है और मुख्य रूप से यूरोपीय पर्यटकों को आकर्षित करता है। उन्नीसवीं शताब्दी में, ला मारसा से हम्माम के गर्म झरनों तक तट पर बैत अल-बहर (समुद्री घर) के नाम से जानी जाने वाली ऐसी ही भव्य नव-मूरिश इमारतें थीं।
ये मंडप कुलीन परिवारों के लिए स्नानघर के रूप में कार्य करते थे। ट्यूनिस की राजकुमारियाँ, विशेषकर हुसैनिद राजवंश (1705-1957) की राजकुमारियाँ। उच्च पदवी ने उन्हें विभिन्न प्रकार के लाभ पहुँचाए।
अपने वयस्क जीवन के अधिकांश समय तक एकांत में रहने वाली, जिन महिलाओं के लिए ये मंडप बनाए गए थे, वे समुद्र का आनंद लेती थीं।
स्नान करना इसके सामाजिक और स्वास्थ्यवर्धक लाभों के लिए है। ज़्यादा दूर नहीं।
समुद्रतट से कुछ दूरी पर भव्य महल स्थित थे जिनमें राजधानी स्थित थी-178 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

ताल के महान परिवार—साथ ही उनके विस्तारित रिश्तेदार, ग्राहक और नौकर—

साल के सबसे गर्म महीनों के दौरान। ये आकर्षक, हालांकि जर्जर,
ये संरचनाएं समुद्रतटीय सामाजिकता की स्थापत्य कला के अवशेष हैं, जिसमें राजनीति और अवकाश, हरम भ्रमण और कूटनीति, व्यापार आदि का संगम था।
और जल चिकित्सा। इस संस्कृति में, अक्सर आश्चर्यजनक रूप से अंतरंग तरीकों से, यूरोपीय प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शामिल थे जो समान सामाजिक रूपों में भाग लेते थे।
और मौसमी लय, जैसे उनके मुस्लिम समकक्षों की, जिसने उन्हें इसमें शामिल किया।
ट्यूनीशियाई पारिवारिक जीवन का केंद्र - घर या दार, जिसमें हरम भी शामिल है। यह अध्याय द्वंद्वों की एक श्रृंखला के नीचे दबे एक सामाजिक ब्रह्मांड को पुनर्जीवित करता है:
मुस्लिम बनाम ईसाई, पूर्व-आधुनिक बनाम आधुनिक, परिवार बनाम राज्य, और औपनिवेशिक बनाम पूर्व-औपनिवेशिक। इसके अलावा, राजवंश के पतन के बाद विजयी राष्ट्रवाद ने भौतिक साक्ष्यों के बड़े हिस्से को नष्ट कर दिया।
और इस तटीय संस्कृति के अभिलेखागार। फिर भी, इस लगभग लुप्त हो चुकी सामाजिकता के रूपों, स्थानों और अर्थों का एक नृवंशविज्ञानिक पुनर्निर्माण आवश्यक है।
यह मुख्य रूप से परिवार-आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से संभव है। जैसा कि बहलूल और अन्य लोगों ने तर्क दिया है, ट्यूनीशिया जैसे घर-केंद्रित समाजों में, "
घर और घरेलू समूह सामाजिक इकाइयाँ हैं जो सामुदायिक संगठन, सामाजिक आदान-प्रदान के स्वरूप, विरासत प्रणाली और ज्ञान के हस्तांतरण को परिभाषित करती हैं।2
परिवार केवल आर्थिक और प्रजनन इकाइयाँ ही नहीं थे: वे अवकाश, स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों और सामाजिक संचार का प्रबंधन भी करते थे।
ऐसे तरीके जिनसे उनके सदस्य रिश्तेदारी से परिभाषित नेटवर्क से परे गठबंधनों में शामिल होते थे। महिलाओं के कमरे भौतिकता और प्रदर्शन के महत्वपूर्ण स्थान भी थे, जहाँ विदेशी राजनयिकों या सम्राटों द्वारा दिए गए उपहार प्रदर्शित किए जा सकते थे।
और परिवार मौसम के अनुसार इधर-उधर जाते थे—ट्यूनीस से

मदीना (ऐतिहासिक शहर) से लेकर ला मारसा, कार्थेज या हम्माम लिफ़ तक, परिवार न तो गतिहीन थे और न ही उनके सदस्य "पिंजरे में बंद" थे, जैसा कि उस काल के यूरोपीय लेखों में हमेशा चित्रित किया जाता था। इस परिप्रेक्ष्य से देखने पर, परिवार इस विशेष सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ में सामाजिकता के एक महत्वपूर्ण स्थल के रूप में उभरता है, हालांकि पारंपरिक धारणा इसके विपरीत रही है।
फ्रांसीसी विद्वान मौरिस अगुलहोन ने सबसे पहले इस धारणा को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया था।
1960 के दशक में सामाजिकता के संदर्भ में, इतिहासकारों ने मेसोनिक लॉज और क्लबों से लेकर कैफे और सम्मेलनों तक, विविध प्रकार के संगठनात्मक स्वरूपों के महत्व की पड़ताल की है।
त्रिमूर्तियाँ—जो कथित तौर पर पारिवारिक संरचनाओं से बाहर स्थित थीं और इस प्रकार आधुनिकता की जन्मदात्री के रूप में कार्य करती थीं।3 इनके विपरीत, अक्सर अप्रत्यक्ष रूप से,
परिवार से इतर आधुनिकताओं की अभिव्यक्तियों में दक्षिणी सामाजिकता भी शामिल थी।
यह साहित्य रिश्तेदारी पर आधारित भूमध्यसागरीय साहित्य की एक विशिष्ट विशेषता माना जाता है।
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 179

ईरानी समाजों में, जहां कबीले की प्रधानता ने सामाजिक जुड़ाव को बाधित किया
जीवन—आधुनिकता की एक परिभाषित विशेषता। एक दूसरी संबंधित धारणा मुस्लिम समाजों में प्रचलित एक विशेष मान्यता के अनुसार, हरम (महिलाओं के लिए अलग कमरे) वाले परिवार बाहरी दुनिया से कटे हुए थे और इस प्रकार समाज से बहिष्कृत थे।
व्यापक सामाजिक, और विशेष रूप से राजनीतिक, नेटवर्क से परे
रिश्तेदारी की सीमाएँ।4 प्राच्यवादी विमर्श में, हरम शब्द ने कुलीन परिवारों और उनके सदस्यों को घेरने वाली एक काल्पनिक सीमा को दर्शाया। सामाजिक गतिविधियों को गंभीर रूप से सीमित या बाधित किया।5 यह अध्याय तर्क देगा कि ट्यूनीशियाई और सहयोगी यूरोपीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों से

जुड़े विशिष्ट प्रकार के सामाजिक संबंध हुसैनीद राजनीतिक संस्कृति की विशेषता थे, और कुलीन परिवारों की महिलाएं, अपने रिश्तेदारों के साथ, दोस्तों और ग्राहकों की भूमिका प्रणाली के सुचारू संचालन के लिए महत्वपूर्ण थी।6 नहीं
केवल हरमों पर ध्यान केंद्रित करने से चर्चा आगे बढ़ती है—विदेशी, मुख्य रूप से यूरोपीय, मुस्लिम चित्रणों पर वर्तमान में केंद्रित दृष्टिकोण से हटकर।
महिलाओं की ओर—और उन असंख्य तरीकों की सराहना की ओर जिनसे कुलीन परिवारों ने विभिन्न प्रकार के आदान-प्रदान और संबंधों को आकार दिया, और उनसे प्रभावित हुए।
यह दृष्टिकोण हमें उन सामाजिक प्रथाओं की श्रृंखला को देखने के लिए आमंत्रित करता है जो इसमें शामिल हैं।
महल-हरम परिसर में और इस प्रकार राजधानी शहर के कुलीन समाज में यूरोपीय लोग रहते थे। इस प्रकार, हरम की यात्राएँ—अत्यधिक अनुष्ठानिक सामाजिक मुलाकातें थीं जिनमें अन्य यूरोपीय लोगों को बाहर रखा जाता था।
लैंगिक अलगाव के मानदंडों के कारण अधिकांश, लेकिन सभी नहीं, पुरुषों को कूटनीति, उपहार देने और मित्रता के लिए महत्वपूर्ण माना जा सकता है।
इन अनुष्ठानों के फलस्वरूप अच्छे बोनस प्राप्त हुए—विशेष रूप से, दीर्घकालिक दृष्टि से।
चुनिंदा यूरोपीय परिवारों को शाही समुद्रतटीय विलाओं के ऋण दिए गए। परिवारों के बीच मुलाकातें, चाहे ट्यूनिस में हों या समुद्र तट पर, सामाजिक व्यवहारों के व्यापक जाल का एक हिस्सा थीं, जिन्होंने औपनिवेशिक काल से पहले की व्यवस्था को संरचित किया था।7 इसके अलावा, भूमध्यसागरीय विला, जिसे पहले खारिज कर दिया गया था
महज़ एक तुच्छ मनोरंजन स्थल के रूप में इतिहासकारों की धारणा, एक ऐसे स्थल के रूप में उभरती है जो...
सामाजिक-राजनीतिक वार्ता। हमारे उद्देश्य के लिए, सामाजिकता को व्यापक रूप से समरूप और विषम दोनों प्रकार के नेटवर्क के रूप में परिभाषित किया गया है, जो उत्पन्न होते हैं।

बड़े परिवारों द्वारा, जब उनके सदस्य ग्राहकों का मनोरंजन करते थे, विवाह संबंधी बातचीत करते थे, संरक्षक के रूप में कार्य करते थे, व्यापार करते थे, त्योहार मनाते थे, और
हाइड्रोथेरेपी जैसी चिकित्सीय गतिविधियों में संलग्न।8 मुख्य मुद्दा क्या घरेलू सामाजिकताएँ आधुनिकता के उभरते रूपों के आकर्षक दायरे में आती हैं, इस प्रश्न पर अंतिम खंड में चर्चा की गई है।
अध्याय।
प्रमुख प्रश्न ये हैं: सत्ता के प्रयोग से जुड़े परिवारों द्वारा सामाजिक मुलाकातों, अवकाश और स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों को किस प्रकार मध्यस्थता प्रदान की गई?
क्या हरम और परिवार राजनीतिक और सामाजिक संबंधों का प्रबंधन करते थे? - 180 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

महिला कूटनीति सहित? जमींदारों की राजनीति, संरक्षणवाद और समुद्रतटीय कूटनीति ने दीर्घकालिक निवासी विदेशियों, मुख्य रूप से यूरोपीय लोगों को किस प्रकार प्रभावित किया?
राजधानी शहर के हरम-महल परिसर में? और गैर-ट्यूनीशियाई, मुख्य रूप से यूरोपीय निवासी, स्थानीय सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों में किस प्रकार भाग लेते थे?
समुद्र से जुड़ी सामाजिक संरचनाएं?

समुद्र से उत्पन्न एक संस्कृति

ट्यूनीशियाई लोक कला में प्रयुक्त कुछ सबसे व्यापक प्रतीक निम्नलिखित हैं:
समुद्र से जुड़ाव। टैक्सी चालक बुरी नज़र से बचने और कार दुर्घटनाओं को रोकने के लिए अपनी गाड़ियों के विंडशील्ड पर मछली के आकार के मेडल लटकाते हैं। रात में मछली की तलाश में समुद्र में चलने वाली छोटी लकड़ी की नावें चमकीले रंगों से सजी होती हैं।
रंगीन बुरी नज़र और मछली के रूपांकन। मदीना के दुकानदार मछली के आकार के भूमध्यसागरीय ताबीज़ बेचकर अच्छा खासा मुनाफा कमाते थे।

घरेलू उपयोग के लिए। ट्यूनीशियाई अरबी में समुद्र के कई संदर्भ मिलते हैं; देश के सबसे उल्लेखनीय परिवारों में से एक बहरी कबीला है, जिसका नाम समुद्र का अर्थ है।
"समुद्र का।" अंततः, यह सबसे बड़ा पाक सम्मान है जो किसी को दिया जा सकता है।
रात के खाने पर आने वाले मेहमानों को सबसे बेहतरीन व्यंजन परोसा जाता है: एक भव्य समुद्री भोजन से बना कूसकूस। वैश्वीकरण के प्रकोप के कारण यह व्यंजन तेजी से लुप्त हो रहा है।
सांस्कृतिक और आर्थिक समस्याओं के चलते, यह संस्कृति आज के ट्यूनीशिया में जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रही है। यह बात वार्षिक रूप से होने वाले नाटकीय बदलाव में सबसे स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।
ठंडी, नम सर्दियों के सामाजिक जीवन से लेकर जून के अंत की गति तक, जब परिवार समुद्र तट पर इकट्ठा होते हैं और ला मारसा जैसे तटीय गांवों के निवासी पड़ोसियों से पूछते हैं कि क्या उन्होंने इस मौसम में अपना पहला समुद्री स्नान किया है।
उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में, शासक राजवंश ने ट्यूनिस के बाहर स्थित प्रमुख महल परिसर, बार्डो पर कब्जा कर लिया था। छोटे महल
वे मुख्य रूप से भूमध्यसागरीय तट के किनारे बिखरे हुए थे। बार्डो
यह एक छोटे शहर जैसा दिखता था क्योंकि प्रत्येक राजकुमार—और उनकी संख्या बहुत अधिक थी—के पास अपना महल और सैकड़ों लोगों से भरा हुआ अपना घर था। मूलतः
उन्नीसवीं शताब्दी में हुसैनिद हरम, ओटोमन हरम की तर्ज पर बने थे, लेकिन उनका पैमाना उतना भव्य नहीं था। फिर भी उनकी सुरक्षा काले और सफेद रंग के सैनिकों द्वारा की जाती थी।
हिजड़े। निजी चिकित्सक, परिचारक, नर्स, रसोइया, नौकर, इत्यादि।
चौथी महिलाएं असंख्य थीं और एक जटिल पदानुक्रम के अधीन थीं।9 महल का महिला भाग विशाल था, जिसमें सैकड़ों महिलाएं थीं।
ऐसे लोग जो आश्चर्यजनक रूप से विविध थे; इसके सदस्य न केवल अलग-अलग नस्लीय या जातीय पृष्ठभूमि के थे बल्कि अलग-अलग सामाजिक स्तर के भी थे।

विभिन्न धर्मों के लोग अलग-अलग समय पर आते-जाते थे। लोग स्वतंत्र रूप से आते-जाते थे। इस प्रकार, परिवारों की सीमाएँ निश्चित नहीं थीं, बल्कि इस मायने में लचीली थीं कि कौन सदस्य था और कौन नहीं।
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 181

जो नहीं थे। अपने व्यक्तिगत स्वभाव के आधार पर, कुछ शासक
मुहम्मद जैसे अन्य लोगों ने अपेक्षाकृत कम पत्नियां और रखैलें रखीं, जबकि अन्य लोगों ने ऐसा किया।
बे (शासनकाल 1855-59) के समय के लोग बहुविवाह के प्रति उत्साही थे। और उन्होंने अपने विकल्पों में विविधता दिखाई: इतालवी कैथोलिक मूल की पत्नियाँ उनकी पत्नी के रूप में काफी संख्या में थीं।
अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में।10 इसके विपरीत, ट्यूनिस के मलिकी शहरी प्रतिष्ठित व्यक्ति या अयान आम तौर पर एकपत्नी विवाह करते थे, और अक्सर अपनी बेटियों का विवाह शासक परिवार में करने से इनकार कर देते थे, हालाँकि वे उनके साथ घनिष्ठ सामाजिक संबंध बनाए रखते थे।
और हुसैनीदों के साथ राजनीतिक संबंध। उनके घर, जो प्रकृति में कम आलीशान और आकार में छोटे थे, मदीना की कुछ गलियों में स्थित थे।
भीषण गर्मी के महीनों के दौरान, राजमहल और उच्च वर्ग ने सुनियोजित अनुष्ठान किए, जिनमें पूरे घरों का सामान समेटकर समुद्र तट पर स्थित आवासों में स्थानांतरित होना शामिल था—सैकड़ों लोगों को स्थानांतरित किया गया, भले ही उनकी संख्या न हो।
सैकड़ों लोग। फसल कटाई के बाद ही परिवार राजधानी लौटते थे, जब वे सर्दियों की तैयारी में खाद्य पदार्थों की विस्तृत तैयारियाँ करते थे। ग्रीष्मकालीन विलाओं में काम करने के लिए, धनी परिवार रिश्तेदारों, सेवकों, आश्रितों और नौकरों (साथ ही साथ) के विशाल समूहों को लाते थे।
दास प्रथा के उन्मूलन से पहले के काल में, उन्हें गुलामों के रूप में रखा गया था। लेकिन यह केवल शासक वर्ग ही नहीं था।
परिवार या दरबार के कुलीन वर्ग के लोग जो गर्मियों के दौरान समुद्र तट पर भाग जाते थे। शक्तिशाली

मलिकी और हनफ़ी दोनों ही उलेमा परिवार सर्दियों का मौसम मदीना के विशिष्ट मोहल्लों या हौमत में स्थित महलों में बिताते थे; ये इलाके नहज अल-बाशा (पाशा की गली) या नहज अल-हुक्कम (गली) के आसपास होते थे।
न्यायाधीशों के शासनकाल में धार्मिक हस्तियों की उच्च सांद्रता पाई जाती थी।
लेकिन गर्मियों में यह सब बदल गया। जब ट्यूनिस पर पहली झुलसा देने वाली हवाएँ चलने लगीं, तो बायराम या बेन अचौर (या इब्न अशूर) जैसे परिवार
वे समुद्र तट पर या उसके पास स्थित विलाओं में भाग गए। (आज इनमें से कई आवास, जो पहले केवल गर्मियों के महीनों में आबाद होते थे, पूरे साल परिवार द्वारा उपयोग किए जाते हैं।)
आवास, जैसा कि ला में बेन 'अचौर कबीले के सुंदर परिसर के मामले में है। मारसा।)11 तट पर स्थानांतरण ने इन परिवारों को वैवाहिक संबंधों सहित महत्वपूर्ण संबंधों को मजबूत करने या संरक्षित करने की अनुमति दी। राजधानी में प्रचलित सामाजिकता से भिन्न तरीकों से अन्य परिवारों के साथ मेलजोल। इस गर्मी में कुलीन पहचान के लिए बेहद महत्वपूर्ण शाही प्रगति परिलक्षित हुई।
स्थानीय इस्लामी विवाह अनुबंधों और विवाह-पूर्व समझौतों में निर्दिष्ट जहां दुल्हन साल के कुछ खास मौसमों में निवास करती थी। ट्यूनिस की एक दुल्हन का विवाह क़ायरावानी (शहर के एक व्यक्ति) से हुआ।
अल-क़ैरावन (अंदरूनी इलाके में) में यह शर्त रखी गई थी कि पति हर छह महीने में अपनी पत्नी को ट्यूनिस लाने और उसके लिए एक छुट्टी का घर किराए पर लेने के लिए सहमत हो।
राजधानी के समुद्रतटीय उपनगरों में से।"12
संक्षेप में, "समुद्र तट पर जाना" सबसे स्पष्ट संकेतों में से एक था। 182 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

उच्च सामाजिक पदवी की परंपरा औपनिवेशिक काल तक कायम रही।
ऑस्ट्रियाई यात्री बैरन अर्न्स्ट वॉन हेसे-वार्टेग, जिन्होंने ट्यूनिस में काफी समय बिताया था, ने लगभग 1880 में लिखा: “वसंत ऋतु में, जब गर्म दिन शुरू होते हैं, तो मैंने अक्सर पूरी तरह से बंद गाड़ियों की लंबी कतारें देखी हैं, जिनके डिब्बों पर सशस्त्र हिजड़े और घोड़ों पर सवार पहरेदार

होते हैं, जो शहर (ट्यूनिस) से निकलकर आस-पास के जल-स्थलों या ग्रामीण इलाकों की ओर जाते हैं—ये अमीरों के हरम थे, जहाँ वे कुछ समय के लिए निवास करते थे।”
महीने।"13 अदालत की मौसमी गतिशीलता को एक व्यापक प्रदर्शन से लिए गए अधिकार के एक प्रतीकात्मक प्रदर्शन के रूप में समझा जा सकता है। दो ट्यूनीशिया में सत्ता की गतिशीलता के प्रमुख उदाहरण मौजूद थे। पहला उदाहरण था...
महल्ला, जिसने पहाड़ों, मैदानों और नखलिस्तानों के लोगों को न्याय, कराधान और भूमि अधिग्रहण के माध्यम से राजवंश और राजधानी से बांध रखा था।
दूसरा विस्थापन हुसैनीद परिवार का था; सरकार, जिसमें लेखक और मंत्री शामिल थे; और शहरी गणमान्य व्यक्ति समुद्रतटीय क्षेत्रों में चले गए।
वे महल जहाँ वे जून से लेकर सितंबर के अंत तक रहते थे। फ्रांसीसी संरक्षण से काफी पहले, गर्मियों में होने वाले इस स्थानांतरण के कारण लोगों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई।
कई यूरोपीय और अन्य विदेशी निवासी भी शामिल होते थे। जहाँ तक हमें पता है, महिलाएं कभी भी महल्ला के साथ नहीं जाती थीं, लेकिन वे ग्रीष्म अवकाश के शाही जुलूस में गहराई से शामिल होती थीं।
उच्च वर्ग की मुस्लिम महिलाओं ने भूमध्य सागर के मौसम का बेसब्री से स्वागत किया क्योंकि इससे उन्हें आवागमन की अधिक स्वतंत्रता मिली।14 इन महीनों में
परिवार के जीवन चक्र में आने वाली खुशी की घटनाओं के उत्सवों से चिह्नित थे।
जन्म, खतना, सगाई और विवाह जैसे समारोह अक्सर अंडालूसी संगीत की प्रस्तुतियों के साथ होते थे। खला'आ शब्द, जो शास्त्रीय अरबी में स्वच्छंदता से जुड़ा एक शब्द है, ट्यूनीशियाई अरबी में प्रयुक्त होता है और जिसका अर्थ समुद्र के किनारे गर्मियों के उत्सव या मनोरंजन होता था, जिसमें अक्सर संगीत की गूंज सुनाई देती थी।15 पारिवारिक समारोहों के अलावा, अक्सर
रात भर चलने वाली गतिविधियों और संतों के तीर्थ स्थलों की यात्रा के साथ-साथ, समुद्र स्नान महिलाओं का पसंदीदा शगल था। हालाँकि यह निश्चित नहीं है कि यह वास्तुशिल्पीय परंपरा कब शुरू हुई।

जब बैत अल-बहर शैली पहली बार विकसित हुई, तो इसने लैंगिक अवकाश और उपचार प्रथाओं को ठोस रूप दिया। साधारण आश्रय—या, के मामले में
कुलीन या राजसी परिवार, शानदार संगमरमर और पत्थर की संरचनाएं—
समुद्र के ऊपर, बीच में गुप्त दरवाजों के साथ पानी में बने एक तालाब ने कुलीन महिलाओं को बिना किसी की नज़र में आए स्नान करने की अनुमति दी। मुस्तफा आगा का परिवार, जिनकी गर्मियों की छुट्टियां यहीं बीतती थीं।
यह घर लगभग 1829 में कार्थेज के अल-क्राम नामक इलाके में बनाया गया था, जिसमें दो लकड़ी के समुद्री घर थे और उनसे जुड़े पैदल मार्ग थे।
तट; बड़े संयुक्त परिवार की महिलाएं, पुरुष और बच्चे पीछे हट गए
इन स्नान मंडपों में दिन भर साथ में पानी में स्नान करने के लिए।16
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 183

फ्रांसीसी कलाकार चार्ल्स लैलेमंड ने 1890 में एक सुंदर, रंगीन चित्र बनाया था।
ला मारसा में स्थित स्नानघर, जिसे अब एक पर्यटक रेस्तरां में परिवर्तित कर दिया गया है।
लैलेमंड हमें बताते हैं: “ला मारसा और सिदी बू सईद की महिलाएं यहाँ लोगों की निगाहों से दूर समुद्र में स्नान करती हैं। वे छायादार गाड़ियों में आती हैं।
इसे गिरा दिया गया। इमारत के बीच में एक स्विमिंग पूल है जिससे होकर समुद्र का पानी स्वतंत्र रूप से प्रवेश करता है। बे परिवार की राजकुमारियों के पास एक
इसी तरह का एक स्नानघर इससे कुछ ही दूरी पर है।”17
आम ट्यूनीशियाई लोग, चाहे वे मुस्लिम हों या यहूदी, समुद्र में स्नान और जल चिकित्सा का अभ्यास करते थे या रेगिस्तानी नखलिस्तानों में विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए गर्म झरनों पर जाते थे।
बांझपन सहित कई स्थितियों के लिए। कई मामलों में, वे उन्हीं गर्म झरनों का उपयोग करते थे जिनका उपयोग रोमन लोग करते थे। हल्क अल-वाद बंदरगाह पर, जो महिलाएं
समुद्र किनारे बने मंडपों का खर्च वहन न कर पाने के कारण वे रात में रेतीले समुद्र तट पर चले जाते थे और

हल्के गर्मियों के कपड़ों में पूरी तरह से नहाया। ट्यूनीशियाई राज्य ने फरमान जारी किया।
कुछ स्पा शहर, जैसे कि केलिबिया, कर-मुक्त क्षेत्र थे जहाँ महसुलत, वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान पर भारी कर, लागू नहीं होते थे - जिसने सभी जगह से विक्रेताओं और खरीदारों को आकर्षित किया।18 इसलिए स्थानीय और क्षेत्रीय व्यापार उस बड़े व्यवसाय से जुड़ा हुआ था जिसका प्रतिनिधित्व हाइड्रोथेरेपी करती थी।
ट्यूनिस क्षेत्र के तीन सबसे लोकप्रिय गर्म पानी के झरने थे: राजधानी से दस मील दूर स्थित हम्माम लिफ (या हम्माम अल-निफ); तीस मील दूर स्थित कोरबूस

—

घुमावदार पगडंडियों से तीन मील दूर; और कैप बॉन के पूर्वी किनारे पर स्थित नाब्यूल। हालाँकि, सड़कों या मील में मापी गई दूरी अपेक्षाकृत अलग थी।
यह बात इसलिए महत्वहीन है क्योंकि इलाज चाहने वाले अधिकांश लोग क्राम, कार्थेज या ला गौलेट में स्थित अपने ग्रीष्मकालीन आवासों से ट्यूनिस की खाड़ी के पार जल चिकित्सा केंद्रों तक नावों या चप्पू से यात्रा करते थे।
हमाम लाइफ ट्यूनिस की खाड़ी के तल पर स्थित है।
यह पर्वत बू क़र्नायन या दो सींगों वाले पर्वत के नाम से जाना जाता है। प्यूनिक काल से ही यहाँ लोग आते-जाते रहे हैं। कार्थेजियन लोग इसे नारो नामक छोटे से गाँव कहते थे।
रोमनों ने इसका नाम बदलकर एक्वा पर्सियाना रख दिया था। अठारहवीं शताब्दी में, ट्यूनिस के तत्कालीन शासक अली पाशा ने हम्माम लिफ में एक स्नान मंडप का निर्माण करवाया, जिसमें बाद में एक स्नान कुंड और एक सराय भी बनाई गई। मगरेब में यात्रा करने वाले व्यापारी और कारवां; एक बार फिर, व्यापार को जल चिकित्सा के साथ जोड़ा गया। 1756 में, बायराम परिवार के एक सदस्य, मुहम्मद इब्न हसन ने ट्यूनीशिया की विभिन्न प्रजातियों का वैज्ञानिक अध्ययन किया।
गर्म झरनों को, उनके उपचार में प्रभावकारिता के अनुसार वर्गीकृत किया गया।19 1826 से शुरू होकर, हुसैन बे ने हमाम लिफ महल का विस्तार किया और दरबार की उपस्थिति में लंबे समय तक इलाज कराने की सुविधा उपलब्ध कराई गई। कई वर्षों बाद बनकर तैयार हुए नए महल में दो मंजिला भवनों का एक समूह शामिल था।

इमारतें, एक भव्य प्रवेश द्वार और एक कियोस्क के साथ बगीचे।20 हुसैन बे उन्हें अपने तापीय उपचार के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ी: 1244/1829 की शुरुआत में, जब वह 184 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ में थे

हम्माम लिफ और ट्यूनिस में उनके कुछ दरबारियों ने राज्य के खजाने को लूट लिया।
और उसी वर्ष बाद में, एक गुट ने शासक को उखाड़ फेंकने का प्रयास किया।21 उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में, हम्माम लिफ़ में बेयों का महल, कई बाहरी इमारतें और "रोमन स्नानागारों के पास स्थित एक भव्य स्नानागार" मौजूद था। 22 राजधानी शहर से ट्यूनीशियाई और यूरोपीय दोनों ही इलाज चाहने वाले लोग अपने साथ नौकर और राशन लेकर आते थे और छोटे-छोटे घर किराए पर लेते थे।
या फिर आस-पड़ोस में स्थानीय लोगों से कमरे किराए पर लेते हैं, अक्सर लंबी अवधि के लिए।
समय का।23 अपने पहले स्ट्रोक के बाद, अहमद बे ने अपना अधिकांश समय या तो दरबारी पसंदीदा मुस्तफा के हम्माम लिफ महल में रहने में बिताया।
साहिब अल-ताबी', या ला गौलेट में अपने महल में, संभवतः अपने स्वास्थ्य में सुधार के लिए पानी का सेवन कर रहे थे।24
कैप बॉन, कोरबोस या एक्वा कैली के पश्चिमी किनारे पर स्थित—
कार्पिटाने द्वीप समूह, कार्थेज के धनी रोमनों का पसंदीदा स्पा हुआ करता था क्योंकि इसके गर्म गंधक के झरनों को अत्यधिक लाभकारी माना जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में, कोरबूस का कोई विशेष महत्व नहीं था क्योंकि वहाँ ज़मीन के रास्ते पहुँचना बहुत मुश्किल था। स्थानीय लोग
वे गर्म झरनों की ओर जाने वाले रास्तों पर मार्गदर्शक के रूप में काम करते थे और इसी से अपनी आजीविका कमाते थे।
वे अपने घरों में आगंतुकों को कमरे किराए पर देकर गाँव के विकास में योगदान देते थे। फिर अहमद बे ने एक महलनुमा स्नान परिसर का निर्माण करवाया, जिससे गाँव की समृद्धि में कुछ सुधार हुआ, क्योंकि शासक की उपस्थिति से सड़कों में सुधार हुआ और झरनों तक पहुँच आसान हो गई।
ट्यूनीशियाई और वहाँ रहने वाले यूरोपीय लोग भी इन झरनों का उपयोग करते थे। कोरबूस के जल का उपयोग गठिया, जोड़ों के दर्द, त्वचा की सूजन और पाचन संबंधी समस्याओं के इलाज के लिए किया जाता है।

अन्य बीमारियों के साथ-साथ समस्याएं भी। औपनिवेशिक काल से पहले कोरबूस में इलाज चाहने वालों के बारे में दस्तावेज़ीकरण दुर्लभ है, लेकिन ट्यूनिस के एक प्रसिद्ध कवि,
अल-बाजी अल-मसूदी (1810-80) ने वहां इलाज की तलाश की और जाहिर तौर पर लंबे समय तक वहीं रहे। इस अनुभव ने उन्हें भावुक गीतों की रचना करने के लिए प्रेरित किया।
राजधानी शहर की प्रशंसा में लिखे गए छंद, जिसकी कमी उन्हें अपने दौरान बहुत खलती रही होगी।
वह कुछ मील दूर निर्वासन में था।25
लेकिन पवित्रता कभी भी स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार से दूर नहीं रही और सामाजिक व्यवहार। उत्तरी अफ्रीका के अधिकांश झरनों की तरह, कोरबूस के जल को भी एक प्रसिद्ध संत, सिदी अबू 'अम्मारा का संरक्षण प्राप्त था।
जिनकी समाधि (या मकबरा) श्रद्धा और तीर्थयात्रा का केंद्र थी; विशेष रूप से महिलाएं बांझपन के इलाज के लिए संत का आशीर्वाद लेने आती थीं। हालांकि संत की समाधि कोरबूस में आज भी मौजूद है, लेकिन आज यह गांव स्थानीय इलाज चाहने वालों के एक बहुत ही सीमित समूह को ही सेवाएं प्रदान करता है, और बे का महल दयनीय स्थिति में है। यह स्थान शहर के ऊपर एक पहाड़ी पर स्थित है, जहां से खाड़ी का शानदार दृश्य दिखाई देता है।
ट्यूनिस के ज़ाविया की वर्तमान जर्जर हालत एक गंभीर प्रेम-प्रसंग की ओर इशारा करती है।
आध्यात्मिक प्रतिष्ठा में वृद्धि।
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 185

तीसरा मुख्य जल चिकित्सा केंद्र नाबुल है, जो सबसे दूर स्थित है। राजधानी। हालाँकि औपनिवेशिक काल से पहले की स्नान प्रथाओं पर दस्तावेज़ीकरण उपलब्ध नहीं है।
प्रारंभिक संरक्षित शासन से प्राप्त प्रचुर साक्ष्य सामाजिकता, अवकाश और स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार के पुराने स्वरूपों की निरंतरता को प्रदर्शित करते हैं।

1892 में नाबुल में तैनात औपनिवेशिक अधिकारी लुई क्रेपुट ने फ्रांस के रेजिडेंट-जनरल (1886 से 1892 तक) जस्टिन मैसिकाल्ट को अपनी रिपोर्ट में लिखा: “जलवायु
नाब्यूल का मौसम इतना समशीतोष्ण और सौम्य है कि यह शहर गर्मियों में घूमने के लिए एक बेहतरीन जगह है।
यह रिसॉर्ट अन्य जगहों से आने वाले यहूदी और मुस्लिम परिवारों के लिए एक रिसॉर्ट है, जो यहाँ स्नान करने आते हैं। शहर और समुद्र के बीच की यात्रा टैक्सी सेवा द्वारा की जाती है।
जिसमें प्रति व्यक्ति 15 सेंटिम की छूट मिलती है। कई खुले सार्वजनिक प्रतिष्ठान—यहूदी और मुस्लिम दोनों—पेय पदार्थ परोसते हैं और विचार-विमर्श करते हैं।
समुद्र तट पर एक जीवंत वातावरण होता है जो अक्सर रात तक बना रहता है।26 इसके विपरीत, औपनिवेशिक अधिकारियों और पुनर्विकासकर्ताओं ने बाद में कोरबूस या नाब्यूल जैसे थर्मल स्पा पर जो सामाजिक-स्थानिक संगठन थोपा,
उस समय की सांस्कृतिक शब्दावली में हम्माम और शती (समुद्र तट) कई परस्पर संबंधित चीजों को दर्शाते थे। हम्माम शब्द का अर्थ भाप स्नान, स्नान कुंड, गर्म पानी का स्पा या मात्र एक जल स्थल हो सकता था। सार्वजनिक स्नानागारों में साप्ताहिक यात्राएं धार्मिक कर्तव्य थीं जो इस्लामी और यहूदी शुद्धता और अपवित्रता संबंधी वर्जनाओं से जुड़ी थीं, जिनका शारीरिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक कल्याण और नैतिकता से गहरा संबंध था। लेकिन शहरी स्नानागारों में जाना भी एक सामाजिक अनुष्ठान था, जैसे कि समुद्र में स्नान करना और गर्म पानी का सेवन करना। इस प्रकार धार्मिक और सामाजिक—और शुद्धिकरण और राजनीति—जटिल तरीकों से आपस में जुड़े हुए थे।
इसके अतिरिक्त, यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि यूरोपीय और अन्य लोग हम्माम लिफ और कोरबूस जैसे ताप-जल स्थलों के स्थानीय निवासियों से कमरे या झोपड़ियाँ किराए पर लेते थे।
इससे पता चलता है कि ट्यूनीशिया में उपनिवेशवाद से बहुत पहले ही स्वास्थ्य पर्यटन का एक रूप मौजूद था। झरनों या समुद्र के पास साधारण आवासों का किराया उस समय प्रचलित था।
अभिजात वर्ग के बीच आलीशान महलों की संपत्तियों का आदान-प्रदान, यह दर्शाता है कि

गर्म पानी के झरने ऐसे स्थान थे जहाँ धर्म और सामाजिक वर्ग के अंतर मौसमी मेलजोल को नहीं रोकते थे, जैसा कि क्रेपुट की 1892 की रिपोर्ट में दर्शाया गया है।
नाबुल.

एलीट टीम के उपयोग, कूटनीति के समुद्र और हरम के दौरे

हुसैनीद परिवार और दरबार तथा विदेशी प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बीच संबंधों में ऋतु और स्थान की भूमिका को समझने के लिए, हमें पीछे मुड़कर देखना होगा।
राजधानी क्षेत्र के तीन सबसे महत्वपूर्ण स्थानिक निर्देशांकों के लिए: पहला, ट्यूनिस शहर; दूसरा, पास के भूमध्यसागरीय गाँव; और तीसरा, 186 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

बार्डो, एक छोटा शहर जिसमें एक महल परिसर है।27 बार्डो में, यूरोपीय कौंसल शासकों के दरबार कक्षों में औपचारिक दौरे करते थे, लेकिन वहाँ महाकमा (न्याय कक्ष) की उपस्थिति देश भर से प्रजाजनों की भीड़ को सत्ता में बैठे लोगों से विनती करने के लिए आकर्षित करती थी—जिसका अर्थ यह था कि
बेय का ध्यान लंबे समय तक अपनी ओर खींच पाना मुश्किल था।28 इसके अलावा, बार्डो ट्यूनिस के पास नहीं था, जहाँ अधिकांश यूरोपीय लोग रहते थे। इस प्रकार, एक स्थलाकृतिक—
एक ऐसा तत्व जिसने गर्मियों में होने वाले सामाजिक मेलजोल के राजनीतिक महत्व को बढ़ा दिया।
उपनगरों के आरामदायक वातावरण में शासकों या महल के सेवकों तक पहुंच बनाना और उनसे कृपा प्राप्त करना आसान था, यही कारण था।
गर्मी के महीनों में सर्दियों के कोर्ट सीजन की तुलना में अधिक भीड़ होती है। इस मानचित्रण अभ्यास से आवासीय रणनीतियों का पता चलता है।
यूरोपियों द्वारा इसका अनुसरण किया गया, जिन्होंने दरबार के ग्रीष्मकालीन अनुष्ठानों की नकल की और

महल के स्वामित्व वाले विलाओं के निकट और अक्सर उन्हीं विलाओं में समूह बनाकर रहने से। 1831 में, ब्रिटिश महावाणिज्यदूत सर थॉमस रीड ने लिखा: “जिस घर में मैं इस समय रह रहा हूँ, वह ग्रामीण इलाके में है, उन घरों के बीच में है जिनमें गर्मी के महीनों में और कुछ मामलों में सर्दियों में भी अन्य कौंसल रहते हैं, और यह बेय के घर से केवल डेढ़ घंटे की दूरी पर है।” महल, और ट्यूनिस की लंगरगाह से दूरी के आधे से भी कम, जो निश्चित रूप से एक बड़ा लाभ है।"29 अन्य यूरोपीय कौंसलों ने भी यही बात कही।
हुसैनिद शासकों के निकट आवास की वांछनीयता के बारे में समान भावनाएँ थीं, क्योंकि इसका अर्थ अन्य बातों के अलावा यह था कि वे रणनीतिक रूप से
शासक या उसके मंत्रियों से रियायतें प्राप्त करने के उद्देश्य से रखी गई वस्तुएँ।
हुसैनीद परिवार के पास समुद्र तट की अधिकांश संपत्ति थी, जो भव्य महलों, विलाओं और फव्वारों से सुशोभित मंडपों से सुसज्जित थी।
आंगन और बोगनविलिया, चमेली और ताड़ के पेड़ों से भरे हरे-भरे बगीचे।
उपलब्ध महलों की विविधता आंशिक रूप से व्यापक रूप से प्रचलित धारणा का परिणाम थी।
स्थानीय मान्यता थी कि यदि किसी शासक की मृत्यु किसी विशेष निवास स्थान में होती है, तो इससे लाभ होगा।
उनके उत्तराधिकारी के लिए उसी स्थान पर निवास करना दुर्भाग्य की बात थी, जो मशूमा (अपमानित) हो चुका था।30 महलों का निर्माण लगातार जारी रहने के कारण, बहुत सारे महल खाली थे, इसलिए राजकुमारों ने इन महलों में से सबसे सुंदर महलों को सबसे शक्तिशाली यूरोपीय लोगों को पट्टे पर या अक्सर लंबी अवधि के लिए उधार दे दिया। यह प्रथा जाहिरा तौर पर अठारहवीं शताब्दी में शुरू हुई थी।
17 वीं शताब्दी में, शासकों ने युद्ध कला में निपुण फ्रांसीसी राजनयिकों और सैन्य अधिकारियों को देश में रहने के लिए राजी करने का प्रयास किया, उन्हें आवास जैसे प्रलोभन दिए। 1793 में, हम्मुदा पाशा (शासनकाल 1782-1814) ने तत्कालीन फ्रांसीसी कौंसुल देवियोज़ को प्रस्ताव दिया, जिनके पास

लगभग बीस वर्षों तक ट्यूनिस में निवास किया, ताकि उसे "मेरी विशेष सुरक्षा [गार्डे] में ले सकूँ और आपको या तो मेरे महल में या मेरे समुद्रतटीय विला [मैसन्स डे प्लेसांस] में से किसी एक में निवास प्रदान कर सकूँ।"31
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 187

यह एक चतुर चाल थी, क्योंकि इससे ऋण और सामाजिक संबंधों का निर्माण हुआ। आवास के उपहार के माध्यम से दायित्व; बे, वास्तव में, यूरोपीय लोगों के मकान मालिक थे। वास्तव में, आज भी, सबसे शानदार राजदूत आवास फ्रांसीसी निवास है, जिसे ला कैमिला कहा जाता है - एक पूर्व
ला मारसा में बे का महल, जहाँ से समुद्र का शानदार नज़ारा दिखता था, 1881 से पहले फ्रांस को "उधार" दिया गया था। ब्रिटिश वाणिज्य दूतावास के अधिकारी और उनके परिवार भी बे द्वारा उपलब्ध कराए गए विलाओं में ठहरते थे। 1845 में, जेम्स रिचर्डसन, ब्रिटिश और
ट्यूनीशिया में काफी समय बिताने वाली विदेशी दासता-विरोधी संस्था ने टिप्पणी की कि जब "हुसैन बे की 1835 में मृत्यु हुई, तो वे अंग्रेजों से प्रेम करते थे और उन्हें ढेर सारे विशेषाधिकार प्रदान करते थे।"
उन पर। कार्थेज के पड़ोस में ला मारसा में स्थित अब्देलिया का शाही महल, सर थॉमस रीड को एक ग्रामीण निवास के रूप में मामूली किराए पर सौंप दिया गया था... एक बार बे ने रीड को अब्देलिया में भोजन कराकर सम्मानित किया, ऐसा सम्मान न तो पहले कभी किसी यूरोपीय कौंसुल को दिया गया था और न ही उसके बाद कभी दिया गया।32
आलीशान आवासों के अल्पकालिक ऋणों ने कूटनीति की प्रक्रिया को सुगम बनाया और कम से कम एक मामले में, सैन्य शत्रुता को टालने में मदद की हो सकती है। 1816 में, वेल्स की राजकुमारी कैरोलिन और उनके इतालवी शिक्षक (और
(कथित प्रेमी) जब शास्त्रीय स्थलों के अपने दौरे के दौरान ट्यूनीशिया पहुंचे, तो ला गौलेट में एक खतरनाक नौसैनिक अभियान प्रकट हुआ, जिसका नेतृत्व था...
लॉर्ड एक्समाउथ। जिसे केवल अग्निपरीक्षा के रूप में वर्णित किया जा सकता है, मुहम्मद बे ने राजकुमारी का उनके पद के अनुसार भव्य स्वागत किया... उन्होंने अपने बेटे को देश भर की यात्राओं पर उनके साथ जाने के लिए नियुक्त किया।33

शासक ने राजकुमारी और उनके दल को ट्यूनिस के मध्य में स्थित दार अल-बे में ठहराया, जहाँ एक सुंदर महल विशेष रूप से विशिष्ट आगंतुकों के लिए आरक्षित था।
शाही मेहमानों के लिए इसे भव्य रूप से सजाया गया था। ब्रिटिश एडमिरल द्वारा बे पर थोपी गई रियायतों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अभियान के शांतिपूर्ण समापन और हुसैनिद शासकों द्वारा राजकुमारी कैरोलिन को दिए गए भव्य स्वागत ने एक्समाउथ के शहर पर बमबारी करने के उत्साह को कम कर दिया। ड्यूक डी मोंटपेंसियर, प्रिंस डी जॉइन जैसे गणमान्य व्यक्ति— विले और ड्यूक डी'औमाले, इन सभी ने 1845 और 1846 के बीच ट्यूनिस का दौरा किया था और वे सभी वेल्स की राजकुमारी के साथ एक ही महल में ठहरे थे।34 1881 में,
जब संरक्षण लागू किया जा रहा था, तब एक विश्वसनीय सूत्र हेस्से-वार्टेग ने बताया: “उपरोक्त महलों के अलावा, ट्यूनिस और उसके आसपास के इलाकों में कई अन्य विशाल और बेहद खूबसूरत महल हैं। लेकिन पूछताछ करने पर पता चला कि... वे पूर्व बेयों के महल निकले, जिन्हें उनके उत्तराधिकारियों ने विदेशी कौंसलों या ट्यूनीशियाई पसंदीदा लोगों को दे दिया था।"35 वास्तव में, यह प्रथा
जमींदार कूटनीति और उच्च श्रेणी के आवासों का आवंटन, एक स्थापित
हुसैनिद राजवंश की बड़ी और अधिक आक्रामक विदेशी रियासतों और राजनेताओं को नियंत्रित करने की रणनीति 1881 के बाद भी जारी रही।
188 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

हुसैनिदों ने 1840 के दशक से कैथोलिक मिशनरियों के साथ एक जैसी रणनीति अपनाई, उन्हें पहले से मौजूद इमारतें उपलब्ध कराईं, जैसे कि
अब उपयोग में न आने वाली बैरकों को स्कूलों और क्लीनिकों में परिवर्तित किया जाएगा। और, जैसा कि राजनयिकों और कूटनीति के लिए सच था, भूमध्यसागरीय क्षेत्र में गर्मियों के महीने।
गांवों ने धार्मिक बहसों या अंतरधार्मिक संवादों को आगे बढ़ाने के अवसर प्रदान किए। 1840 और 1850 के दशक के दौरान ट्यूनिस में अपने कई वर्षों के दौरान,

एबे फ्रांकोइस बौर्गेड ने “के साथ निरंतर और सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखा।”
ला मारसा और सिदी बू सईद के गांवों में बेय के दरबार के उलेमा और उच्च पदस्थ अधिकारियों से उन्होंने मुलाकात की, जहां उन्होंने उन धार्मिक चर्चाओं में भाग लिया जो शिक्षित मुसलमानों को बहुत पसंद हैं।36 हालांकि, आतिथ्य सत्कार एकतरफा नहीं था। अहमद बेय के समय से ही, शासकों और सदस्यों ने
उनके साथ आए लोग कभी-कभी भोज समारोहों और अन्य भव्य आयोजनों में भाग लेते थे।
उनके यूरोपीय सहयोगियों द्वारा आयोजित। जब ट्यूनिस शहर के द्वार के बाहर बाब अल-बहर के पास स्थित नया फ्रांसीसी वाणिज्य दूतावास (भवन)
अब एवेन्यू बोर्गुइबा पर स्थित पूर्व फ्रांसीसी दूतावास), का उद्घाटन दिसंबर 1861 में बड़े धूमधाम से हुआ था, मुहम्मद अल-सादिक बे और उनके उत्तराधिकारी।
फ्रांसीसी वाणिज्य दूतावास के लियोन द्वारा आयोजित समारोहों में स्पष्ट रूप से भाग लिया गया।
चट्टानें.37
राजधानी को तटीय क्षेत्रों से जोड़ने वाली सड़कों में सुधार के बाद उपनगरों में, अधिक से अधिक यूरोपीय लोगों ने समुद्र तट के किनारे आवास खरीद लिए। ट्यूनिस की गर्मी और शोरगुल से दूर, कांसुलर परिवार, दरबार के सदस्य,
और सरकारी अधिकारी नियमित रूप से एक-दूसरे से मिलते थे। कूटनीति का संयोजन विची जैसे फैशनेबल यूरोपीय स्पा की याद दिलाने वाले तरीके से सामाजिक मेलजोल के साथ, ये सभाएँ अनौपचारिक सैलून के रूप में कार्य करती थीं।38 अपने पत्रों में,
ब्रिटिश कौंसल रिचर्ड वुड की पत्नी क्रिस्टीना वुड, 1860 के दशक की गर्मियों के मौसम को गहन सामाजिक मेलजोल के समय के रूप में चित्रित करती हैं।
ट्यूनीशियाई अदालत और वाणिज्य दूतावास के सदस्यों के कारण, जिसके परिणामस्वरूप यह हुआ...

महत्वपूर्ण सूचनाओं का प्रसार। जुलाई 1861 में, उन्होंने "रविवार को मारसा में राफो परिवार के साथ भोजन किया," और काउंटेस से गोपनीय जानकारी प्राप्त की।
रैफो, जिनके पति सरकार में उच्च अधिकारियों में से एक थे। यूरोप और भूमध्य सागर से नवीनतम राजनीतिक गपशप, राजनयिक
ट्यूनिस के अभिजात वर्ग के लोगों की नियुक्तियों और उनके निजी कारनामों की जानकारी रात के खाने के दौरान दी जाती थी।
ला मारसा में।39 बॉल, कॉस्ट्यूम पार्टियां और संगीत संध्याएं दैनिक जीवन की नीरसता के लिए एक प्रतिकार के रूप में काम करती थीं।40
जैसा कि एक अर्ध-बंद सामाजिक परिवेश में अपेक्षित होता है, व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता, छोटी-मोटी कहा-सुनी और निंदनीय व्यवहार—या ऐसे आरोपों — का होना स्वाभाविक है।
इन संबंधों ने गहरी छाप छोड़ी और कूटनीति को भी प्रभावित किया। खतरनाक संबंधों की श्रेणी में सबसे अच्छी तरह से प्रलेखित मामला सैलून में हुआ था।
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 189

1860 और 1870 के दशक के दौरान लुइगिया ट्रैवर्सो मुसल्ली द्वारा देखरेख की गई -
एलियास मुसल्ली की पत्नी और दो फ्रांसीसी कौंसलों की कथित प्रेमिका, लियोन
रोचेस (जिन्होंने 1855-63 तक पद संभाला) और थियोडोर रौस्तान (1874-82)। एलियास मुसल्ली ने 1847 से अहमद बे के एक मूल्यवान दुभाषिए के रूप में कार्य किया;
इस पद ने उन्हें विदेश मंत्रालय में पदोन्नत कर दिया, जहाँ उन्होंने 1871-72 में अपनी बर्खास्तगी तक सरकारी धन का गबन किया। बाद में उनका पद बहाल कर दिया गया।
1879 में लुइगिया द्वारा अपने पति की ओर से हस्तक्षेप करने के बाद, उसे यह संपत्ति प्राप्त हुई।

अपने प्रेमी रौस्तान के साथ, जिसने बदले में मुहम्मद अल-सादिक बे के मुख्य चिकित्सक फ्रांसिस्को मस्कारो से विनती की, जो शासक का करीबी था—और इस प्रकार
संरक्षण और पैरवी के रास्ते आगे बढ़े।41
चालीस वर्ष की आयु में भी एक महान सुंदरी मानी जाने वाली लुइगिया ने अपनी सुंदरता का उपयोग किया।
ट्यूनीशिया में दो प्रमुख गुटों में से एक के लिए एक घरेलू राजनीतिक क्लब के रूप में कार्य करना,
फ्रांसीसी दल में फ्रांस के प्रति वफादार कई इतालवी निवासी शामिल थे। वह बैठकों, चर्चाओं और समारोहों की अध्यक्षता करती थीं और उपस्थित होती थीं। आधिकारिक राजनयिक समारोहों में रौस्तान के साथ सार्वजनिक रूप से, जाहिर तौर पर अपने पति की सहमति से, या कम से कम उनकी उदासीनता से।42 दुर्भाग्य से, लुइगिया कभी नहीं
उसने इस मामले में अपना पक्ष लिखा, लेकिन जुलाई 1861 में क्रिस्टीना वुड ने एक पत्र भेजा।
अपने पति को, जो उस समय सीरिया में थे, मुसल्लियों के बारे में गर्मियों की ताज़ा गपशप बताते हुए उन्होंने लिखा: “मैडम एलियास गोलेट्टा पहुँच गई हैं, आधिकारिक तौर पर घोषणा की गई है कि उनकी हालत दिलचस्प है, हमारे लिए एक बहुत ही दिलचस्प तथ्य, साथ ही मैडम मस्कारो भी (हँसो मत)।”43 ट्यूनीशिया पर फ्रांस की योजनाएँ
लुइगिया के सैलून में इटली-विरोधी रणनीतियों पर काम किया गया, साथ ही साथ एक और रणनीति पर भी चर्चा हुई।
कार्डिनल लाविगेरी के दिल के बेहद करीब कई कैथोलिक मिशनरी परियोजनाएं थीं, जिनका उद्देश्य इतालवी मिशनरियों को बाहर रखना भी था, जिन्हें देखा जाता था।
फ्रांसीसी मिशनों के लिए एक खतरे के रूप में।
गपशप से भरी रात्रिभोजों के अलावा, ट्यूनीशिया में अन्य आकर्षण भी थे, हालांकि
अवकाश की खोज लिंगभेद के साथ-साथ वर्गभेद पर भी गहराई से निर्भर थी। पुरुष

वाणिज्य दूतावास या व्यापारी परिवारों के लोग अपने समान पद के लोगों के साथ तट के पास दलदली इलाकों में शिकार करने जाते थे, जो पक्षियों से भरपूर थे।
अन्य शिकार। जॉन गिब्सन, ब्रिटिश कौंसल, जो ऐसे ही एक शिकार अभियान के दौरान मलेरिया से पीड़ित हो गए और 1833 में उनकी मृत्यु हो गई, इसका एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।
उच्च वर्ग के पुरुष अपना खाली समय कैसे बिताते थे: "कोई भी व्यक्ति इससे अधिक समय नहीं बिताता था।"
वह इस देश में उपलब्ध सभी सुख-सुविधाओं में पूरी तरह से मग्न हो गया, जितना कि वह यहाँ रहने के सात वर्षों के दौरान नहीं था; उसने एक बड़ा पशुशाला बना रखा था।
घोड़े, तीन गाड़ियाँ, अनगिनत कुत्ते, और सभी मैदानी खेलों को विशेष उत्साह के साथ देखा जाता था।"44 कभी-कभी, यूरोपीय महिलाएं घुड़सवारी करती थीं ट्यूनिस के आसपास का ग्रामीण इलाका; राजकुमारी कैरोलिन, जिन्हें संभवतः माना जा सकता है
उत्तरी अफ्रीका की पहली आधुनिक महिला पर्यटक, जूलिया क्लैंसी-स्मिथ ने जाहिर तौर पर ऐसा 190 वर्षों के दौरान किया था।

1816 की यात्रा। कैफे और सराय में जाना एक और लिंग-आधारित शगल था।
यह स्थान मुख्य रूप से मध्यम सामाजिक स्तर के पुरुषों के लिए था, जब तक कि बाद के दशकों में पेरिस शैली के होटल और भोजनालय जैसे अधिक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान नहीं उभर आए और धनी लोगों के लिए मिलन स्थल नहीं बन गए।

लिंग और आगंतुक

लिंग ने ट्यूनीशियाई या यूरोपीय महिलाओं के लिए सामाजिक स्थलों और मनोरंजन को कैसे आकार दिया? उच्च सामाजिक स्थिति वाली यूरोपीय महिलाओं ने आह्वान किया...
बार्डो या ग्रीष्मकालीन महलों में बेयों की पत्नियाँ और महिला रिश्तेदारें उनसे मिलने जाती थीं। इन यात्राओं के वृत्तांत एक सीमित झलक प्रदान करते हैं।

एक ऐसा ब्रह्मांड जिसका, दुर्भाग्यवश, पर्याप्त दस्तावेजीकरण नहीं हुआ है। हालाँकि, यह मनोरंजक है।
हुसैनीद महिलाओं के अनेक सामाजिक दायित्वों में से एक दायित्व यूरोपीय आगंतुकों और मित्रों का भी था। इनमें से सबसे आवश्यक सार्वजनिक दायित्वों में से एक था।
और धार्मिक समारोह दान और संरक्षण थे।45 जब हुसैन बे की पसंदीदा पत्नी, लल्ला फातिमा, 1827 में प्रसव के बाद दुखद रूप से मर गईं, तो वह
बेय की प्रजा के साथ-साथ वहां रहने वाले यूरोपीय लोगों और विशेष रूप से ट्यूनिस के गरीबों ने भी शोक व्यक्त किया, जिन पर उन्होंने बहुत दया दिखाई थी। अहमद इब्न अबी दियाफ द्वारा लिखित उनके लिए एक दूसरी श्रद्धांजलि से पता चलता है कि महिलाएं
उच्च परिवारों से आने वाली महिलाओं ने राजकीय समारोहों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण प्रोटोकॉल की कला में महारत हासिल की थी। परोपकारी कार्यों में स्वयं को समर्पित करने के अलावा, लल्ला
फातिमा शहर के प्रतिष्ठित लोगों की जटिल पदक्रम प्रणाली से परिचित थीं और उन्होंने स्वयं को वलीमा (दावतों) के सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण मामले में प्रत्यक्ष रूप से शामिल किया।46 धनी महिलाओं ने व्यक्तिगत या पारिवारिक संपत्ति को भूमि, अचल संपत्ति या अन्य निवेशों में लगाया। शहरी कॉफी हाउस जैसे वाणिज्यिक उद्यमों में उद्यमशीलता संबंधी गतिविधियां उनका समय व्यतीत करती थीं।
मिस्र या तुर्की में हरम यात्राओं पर उपलब्ध प्रचुर साहित्य के विपरीत, उन्नीसवीं शताब्दी में बेयों के महल में आने वाली महिलाओं द्वारा लिखे गए वृत्तांत आश्चर्यजनक रूप से दुर्लभ हैं; न ही ट्यूनिस के बड़े परिवारों में यूरोपीय शिक्षिकाओं द्वारा सेवा किए जाने के कोई प्रमाण हैं, जैसा कि इस्तांबुल और काहिरा में था, जहाँ यूरोप से शिक्षित महिलाओं को आसानी से रोजगार मिल जाता था।47
हालांकि ओटोमन साम्राज्य के अन्य हिस्सों में भी यही सच था, हुसैनिद हरम अत्यधिक
विविधतापूर्ण इसलिए क्योंकि इनमें विभिन्न जातीय या नस्लीय समूहों, सामाजिक वर्गों और धार्मिक संबद्धताओं की महिलाएं और पुरुष रहते थे। निवासी

यूरोपीय या राजनयिक समुदाय महल परिसरों में या उसके आसपास निवास करते थे, जैसे कि बार्डो, जहाँ राफो परिवार एक महल में रहता था—इसके अलावा
ला मारसा में उनके समुद्रतटीय महल तक। संक्षेप में, भीतरी हिस्से के बारे में बहुत कम जानकारी है।
बेयों के महलों की कार्यप्रणाली, विशेष रूप से उनके जीवन या यहां तक कि नामों के बारे में।
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 191

हरम की महिलाओं के बारे में। हुसैनिद महिलाओं पर सामयिक स्तुतिपरक टिप्पणी।
इब्न अबी दियाफ के वृत्तांत में जगह-जगह बिखरा हुआ है; अहमद बे की बहन है संक्षेप में उन्हें "पवित्र, पूजनीय लेडी फातुमा" के रूप में वर्णित किया गया है, लेकिन उनके बारे में इससे अधिक कुछ नहीं है।48
उपलब्ध साक्ष्यों की प्रकृति को देखते हुए, डेनिश कौंसल की विधवा मैडम बर्नेर द्वारा लगभग 1835 में लिखा गया वृत्तांत विशेष रूप से मूल्यवान है — और भी अधिक
चूंकि वह अपने पति की दुर्घटना से पहले कई वर्षों तक ट्यूनिस में रह चुकी थी।
डूबने से मृत्यु हो गई और वह देश को अच्छी तरह से जानता था।49 1835 में बर्नर और उसकी कुछ महिला मित्रों ने बार्डो महल में राजकुमारियों से मुलाकात की; वे
उनका स्वागत बे के एक प्रमुख मंत्री ने किया, जो महिलाओं को हरम के दूसरे आंतरिक दरबार तक ले गया, जहाँ उसने उनसे विदा ली।
बर्नर के शब्दों में: “बे की पत्नी, जो महंगे लेकिन भद्दे वस्त्र पहने हुए थी, बैठी थी।”
वह हमारे सामने ओटोमन शैली में बैठी थी, लेकिन हमारे प्रवेश करते ही उठ खड़ी हुई और हमसे अपने पास बैठने का अनुरोध करते हुए बोली, 'आपका प्रवेश मंगलमय हो और'
आप जब तक चाहें तब तक रहें।50 उस समय बे की दूसरी बेटी का विवाह एक उच्च पदस्थ दरबारी अधिकारी से मनाया जा रहा था।

और यूरोपीय महिलाओं को सप्ताह भर चलने वाले कुछ उत्सवों में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। मैडम बर्नर के अनुसार:

मनोरंजन का एकमात्र साधन फिर से मिठाइयाँ और अन्य व्यंजन ही थे।
कॉफी, चॉकलेट, नींबू पानी सब कुछ आजमाया, लेकिन इस बार बेय कहीं ज्यादा बातूनी थीं और उन्होंने बेहद सौहार्दपूर्ण ढंग से मेजबान की भूमिका निभाई — अक्सर कुछ न कुछ कहती रहीं।
कि हम अपने ही घर में थे, और जो चाहें कर सकते थे।
उन्होंने खुद रोशनी लेकर हमें दुल्हन का पलंग दिखाया, जो सफेद रंग का था। साटन, जिस पर सोने की कढ़ाई खूबसूरती से की गई है।51

इस विवरण में ध्यान देने योग्य बात यह है कि बर्नर ने संक्षेप में जिस बात का उल्लेख किया है वह यह है कि...
शासक—कि वह "इस बार कहीं अधिक बातूनी था," जिससे पता चलता है कि वह उन्होंने पिछली यात्रा के दौरान भी उसी स्थान पर उनसे बातचीत की थी। लेडी मैरी टेंपल—सर ग्रेनविले टेंपल की पत्नी, जो उस समय ट्यूनिस में एक राजनयिक मिशन पर थे—ने भी 1833 में बार्डो का दौरा किया, जहाँ उन्हें एक आंगन में "महामहिम लिल्लाह कबीरा [शासक की पहली पत्नी]" से मिलवाया गया। "पारंपरिक प्राच्य शैली में फव्वारों से सजा हुआ।" लेडी टेंपल ने बताया:

हालांकि लिल्लाह स्वयं, यूरोप में हमारे विचार से कहीं अधिक विशाल थी, फिर भी वह समूह में सबसे छोटी मूर्तियों में से एक थी। वह नहीं थी
सुंदर तो थी ही, लेकिन उसके चेहरे के भाव अत्यंत मनमोहक और सौम्य थे। मुझे हंसी आ रही थी, और थोड़ी देर बाद जब मैंने यह सुना तो मुझे उसके लिए बहुत दुख हुआ।
कि बे ने उसे दरकिनार कर एक युवा लड़की के लिए रास्ता बना दिया था।
तेरह। लिल्लाह ने पूछा कि क्या मेरे कोई बच्चे नहीं हैं, जब उन्हें पता चला कि मेरे 192 बच्चे हैं। जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

एक छोटे लड़के ने मुझसे पूछा कि मैं उसे क्यों नहीं लाया और वह सचमुच दुखी लग रहा था।

जब हमने अपना स्वादिष्ट भोजन समाप्त कर लिया, तो उसने बाकी बचे हुए सभी व्यंजनों का ऑर्डर दे दिया।
केक टोकरी में रखे जाने थे और उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उन्हें अपने बच्चे के लिए ले जाऊं। उनकी गोद में उनका लगभग दो साल का छोटा लड़का था।52

इन दो मुलाकातों के बाद, सन् 1844 में सर थॉमस रीड के परिवार की महिलाओं और बच्चों ने एक और सामाजिक मुलाकात की, जिसमें एक मिस भी शामिल थीं।
स्मिथ, जो संभवतः रीड परिवार की गवर्नेंस थीं और जिन्होंने एक अलग विवरण दिया। यह एक सामान्य सामाजिक आयोजन से कहीं अधिक था, क्योंकि जैसा कि मिस स्मिथ ने उल्लेख किया,
हमने उन्हें [अंग्रेजी वाणिज्य दूतावास के अधिकारियों को] एक विश्वसनीय रिपोर्ट देने का वादा किया था।
जो कुछ हमने देखा और सुना।" इस बार यूरोपीय महिलाएं ला मारसा में स्थित एक ग्रीष्मकालीन महल में गईं, जो भावी उत्तराधिकारी सिदी मुहम्मद का था:

राजकुमारियाँ आमतौर पर बार्डो में रहती हैं, सिवाय गर्मियों के दो या तीन महीनों के जब सिदी मोहम्मद अपने परिवार को अपने साथ ले जाते हैं।
मारसा में समुद्र के किनारे स्थित एक कंट्री हाउस, जहाँ से समुद्र, तट, केप बॉन, ज़ेम्ब्रा द्वीप आदि के सुंदर दृश्य दिखाई देते हैं।
हालाँकि महिलाओं की खिड़कियाँ या जालूसी इस प्रकार निर्मित होती हैं कि बाहर के लोगों के लिए उन्हें देखना असंभव है, फिर भी वे स्वयं भीतर से गुजरने वाली हर चीज को काफी हद तक देख सकते हैं... इसी समय
हमने जिस समुद्री विला में लिल्लाह को देखा... हम एक बड़े मेहराबदार दरवाजे से अंदर गए... एक चौकोर आंगन में, जिसे देखकर हम प्रसन्न हुए।
मोर, टर्की, बरबरी कबूतर और अन्य पक्षी... हम एक संगमरमर के मैदान में प्रवेश कर गए।
आंगन... जिसमें दो-तीन संगमरमर के फव्वारे ताज़गी भरे अंदाज़ में बज रहे थे, गिरते पानी की आवाज़ कानों को मधुरता से मंत्रमुग्ध कर रही थी, और बिखरी हुई

फुहार से पूरे स्थान में सुखद ठंडक फैल जाती है। जब गर्मी बहुत अधिक होती है, तो इस स्थान को रेशम और अन्य सामग्री से बने शामियाने से ढक दिया जाता है।
इस खिड़की के ठीक सामने वाले अपार्टमेंट से, जिसके दरवाजे पर एक लटका हुआ था...
पर्दा उतरते ही लिल्लाह ने हमारा स्वागत किया और हमारे दोनों गालों पर चुंबन करके हमें कमरे में ले गईं, जहाँ हमने कई महिलाओं, रिश्तेदारों और आगंतुकों को बैठे हुए पाया।
पूर्वी शैली में, कमरे में रखे सोफे या दीवान पर, और कमरे का एकमात्र फर्नीचर... सभी लिल्लाहों ने काफी शालीनता से व्यवहार किया।
सिदी मोहम्मद की बहन विशेष रूप से, हालांकि बेशक वे थे
बहुत जिज्ञासु, हमारे कपड़ों की जांच करते हुए और हमसे हजारों सवाल पूछते हुए—खासकर शादी के अनुच्छेद पर।53

इस अवसर पर, यूरोपीय और ट्यूनीशियाई महिलाएं महल के बाहर एक साथ निकलीं, जहाँ समुद्र तट के पास तंबू लगाए गए थे ताकि
महिलाएं अपने आगंतुकों के साथ सैर कर सकती थीं, जब वे ताजी हवा का आनंद लेते हुए, "जैतून के बागों और अंगूर के बागों से होते हुए समुद्र तट की ओर जा रही थीं।"54
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 193

यह दृश्य काजर और ओटोमन काल की लघु चित्रों की याद दिलाता है जिनमें समूहों को दर्शाया गया है।
इस्तांबुल या अन्य शाही शहरों के बगीचों में सामाजिक मेलजोल करती महिलाएं, हालांकि इस प्रकार की कलात्मक शैली उत्तरी अफ्रीका में मौजूद नहीं थी।55 इसके अलावा, पिंजरे में बंद या कैद हरम की महिलाओं का विषय भी मौजूद है।
रिचर्डसन द्वारा संकलित विवरणों में, जो उस काल के यूरोपीय यात्रा और हरम साहित्य में बार-बार आने वाले एक रूपक का प्रतिनिधित्व करता है,
चाहे उत्तरी अफ्रीका के बारे में हो या ओटोमन राजधानी के बारे में। एक और प्रमुख विषय है

ट्यूनीशियाई उच्च वर्ग की महिलाओं का मोटापा, एक सांस्कृतिक टिप्पणी जो 1798 के कब्जे के दौरान मिस्र की महिलाओं के फ्रांसीसी विवरणों में भी पाई जाती है।
और अन्य कई प्राच्यवादी साहित्य में भी यही बात देखने को मिलती है। शहर के बड़े परिवारों में रहने वाली यूरोपीय महिलाओं द्वारा कई और सामाजिक समारोहों में भाग लिया गया होगा, लेकिन
उन यात्राओं के रिकॉर्ड अभी तक सामने नहीं आए हैं।56
हरम में होने वाले सामाजिक मेलजोल की रिपोर्टें उच्च वर्ग के आवासीय परिसरों के भीतर दैनिक जीवन की शारीरिकता के बारे में समृद्ध, नृवंशवैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। विवरण
कपड़े, पोशाक, भोजन, फर्नीचर और साज-सामान—महिलाओं के शरीर के द्रव्यमान के अलावा—बदले में स्वाद, सौंदर्यशास्त्र और आलोचनात्मक दृष्टिकोण के बारे में सुराग प्रदान करते हैं।
उपहारों का मामला जिसने सामाजिकता की राजनीति को बहुत प्रभावित किया। यहाँ है
मिस स्मिथ द्वारा मुख्य पत्नी के निजी अपार्टमेंट का वर्णन:

फिर लिल्लाह उठीं और हमें ऊपर अपनी गैलरी में चलने के लिए आमंत्रित किया, जो
हमें संगमरमर से बना एक बहुत लंबा और संकरा कमरा मिला, जो शानदार ढंग से सुसज्जित था। एक तरफ जालीदार खिड़कियों की एक श्रृंखला थी, जिसके नीचे एक दीवान या ओटोमन पूरे कमरे में फैला हुआ था; दूसरी तरफ एक आले थे; दीवारें आंशिक रूप से ढकी हुई थीं।
कुछ तस्वीरें, दर्पण और कई घड़ियाँ, क्योंकि मूरों को ये सब बहुत पसंद हैं। बहुत सारी घड़ियाँ और कलाई घड़ियाँ एक साथ लटकी हुई हैं;
वहाँ संगमरमर की मेजें भी थीं, जिन पर बहुमूल्य आभूषण बिखरे हुए थे।
और अन्य शानदार सजावटी सामान; इसके अलावा यूरोपीय सोफे भी थे और कुर्सियाँ, झूमर और दीपक, अधिकांश सम्मानित मूरिश लोगों के लिए
बार्डो के साथ-साथ घरों में भी, यूरोपीय फर्नीचर अब फैशन में है, और निस्संदेह यह सिलसिला जारी रहेगा।57

इस प्रकार, उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक, शासक परिवार और राज्य के अभिजात वर्ग ने अपने महलों के कुछ हिस्सों को लुई सोलहवीं शैली में सजाया - जिससे पहली बार आने वाले आगंतुकों को काफी निराशा हुई, जो स्वाभाविक रूप से इसे देखने के लिए उत्सुक थे।
अनोखे या विचित्र दृश्य। यूरोपीय सम्राटों द्वारा दिए गए भव्य उपहार— सोने के दर्पण, तेल चित्रकलाएँ, सोने की घड़ियाँ, रत्नजड़ित घड़ियाँ और कीमती वस्त्र—
महिलाओं के क्वार्टर सहित आंतरिक अपार्टमेंटों को सुशोभित किया गया था। 58 ये महंगे
ये वस्तुएँ महज सजावट के लिए नहीं थीं, बल्कि इनके प्रदर्शन से हुसैनिदों और विभिन्न यूरोपीय शक्तियों के बीच राजनयिक संबंधों की मजबूती का पता चलता था।
194 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

1825 में एक फ्रांसीसी फ्रिगेट उपहार लेकर मार्सिले से ट्यूनिस पहुंचा। पेरिस से सिदी महमूद काहिया के प्रतिनिधिमंडल के साथ फ्रांस वापस भेजा गया।
चार्ल्स X के सिंहासनारोहण के अवसर पर: "फ्रांसीसी राजा ने बे को उपहार भेजे, जिनमें रेशम, ब्रोकेड और ब्रॉड फैब्रिक से बने फ्रांसीसी उत्पाद शामिल थे।"
कपड़े, कश्मीरी ऊन, कैम्ब्रिक, चीनी मिट्टी के बर्तन, चांदी से जड़े कुछ फूलदान और थालियाँ और हरम की महिलाओं के लिए आठ शानदार लेस वाली पोशाकें।"59
रिचर्डसन ने अहमद बे के निजी अपार्टमेंट के बारे में टिप्पणी की:

बार्डो में जोड़े गए नए कमरों के सुइट्स में, विशेष रूप से महामहिम के कमरों में, बे ने यथासंभव यूरोपीय शैली का अनुसरण किया है और यूरोपीय सम्राटों के शाही अपार्टमेंट की नकल की है। एक विशाल हॉल, जिसे आमतौर पर सैलून कहा जाता है, विशेष रूप से सराहनीय है।
ध्यान आकर्षित करने वाला यह कक्ष सोफे, कुर्सियों, मेजों, पर्दों, दर्पणों और चित्रों, तेल चित्रों और मुद्रित चित्रों की प्रचुर मात्रा से शानदार

ढंग से सजाया गया है... इनमें से कई कमरों में विदेशी राजकुमारों के चित्र भी लगे हुए हैं।
राजकीय कक्ष। ब्रिटिश उप-वाणिज्यदूत श्री फेरिएरे द्वारा बनाया गया स्वयं बे का एक बहुत ही अच्छा चित्र भी है। बे का शयनकक्ष—जिसमें
यह एक सामान्य यूरोपीय पलंग और पलंग स्टैंड है—इस पर विभिन्न चित्र भी लगे हुए हैं, और उनमें से एक चित्र सर थॉमस रीड का है।
बेय के प्रमुख समर्थकों और किसी भी कठिनाई में उनके सलाहकारों में से एक। विदेशी सरकारों के साथ जो बेगम में उत्पन्न होते हैं।60

लेकिन दुर्लभ और कीमती उपहारों का आदान-प्रदान भूमध्य सागर के दोनों ओर होता था। जब सिदी महमूद काहिया 1825 में पेरिस पहुंचे, तो वे हुसैन बे की ओर से उपहार के रूप में निम्नलिखित चीजें, साथ ही कई अन्य भेंट भी लाए थे: घोड़े, शेर, शुतुरमुर्ग, हिरण, रेसिंग ऊंट, इत्र, बाघ और शेर की खाल, रेशमी वस्त्र और सोने से सजी एक सुंदर काठी।
भौतिक वस्तुओं के इन राजनयिक आदान-प्रदान में महिलाओं के परिधान शामिल थे, जिनमें से कुछ हुसैनीद राजकुमारियों के लिए थे—ऊपर उल्लिखित लेस वाली पोशाकें—और कुछ फ्रांस की रानी के लिए। 1825 में भेजे गए उपहारों में से एक था "एक
रेशम और सोने से बनी "मूरिश पोशाक", जिसे केवल ट्यूनीशिया की कुलीन महिलाएं ही पहनती थीं। पेरिस में प्राप्तकर्ता इससे मुग्ध तो हुए, लेकिन उन्होंने यह भी देखा कि
फ्रांस की महान मैरी-थेरेस-शार्लोट की कल्पना करना कठिन है...
रेशम और सोने से सजी पैंट पहने हुए।"61 यहाँ जिस पैंट (कुलॉट्स) का जिक्र किया गया है, वह ट्यूनिक के नीचे पहनी जाने वाली सिरवाल थी। लेकिन यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि उपहार देना लैंगिक भेदभाव से जुड़ा था और राष्ट्राध्यक्षों के बीच मित्रता के संबंधों को मजबूत करता था। बे ने बढ़ते राजनयिक संकट को कम करने के लिए उपहार देने की लैंगिक राजनीति का सहारा लिया।
1828 में चार पहियों वाली गाड़ियों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया। परंपरागत रूप से, केवल शासक ही इसका उपयोग कर सकता था।
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 195

चार पहियों वाली गाड़ी में यात्रा करने का अधिकार प्राप्त था, जो एक सर्वोच्च संप्रभुता का सार्वजनिक प्रतीक। जब सर थॉमस रीड ने आयात किया इस तरह की गाड़ी का इस्तेमाल पुराने राजनयिक प्रोटोकॉल को जानबूझकर चुनौती देते हुए किया गया था, जिससे शासक के विशेषाधिकार के दावे को लेकर टकराव की स्थिति बन गई थी। हालांकि, हुसैन बे ने अपनी प्रतिष्ठा बचाई और लेडी रीड को उदारतापूर्वक अपनी गाड़ी देकर टकराव को टाल दिया। क्योंकि उनके प्रतिद्वंद्वी
जब फ्रांसीसी कौंसल मैथ्यू डी लेसेप्स को विशेष अधिकार प्राप्त हो गया, तो उन्होंने तुरंत इस प्रकार के परिवहन के लिए भी उसी अधिकार की मांग की। हुसैन बे ने उन्हें शांत भाव से सूचित किया कि जैसे ही लेडी डी लेसेप्स ट्यूनीशिया पहुंचेंगी,
वह उसे चार पहियों वाली गाड़ी भी देगा।62 जबकि समुद्र तट पर सामाजिक मेलजोल गर्मियों की सामान्य दिनचर्या का हिस्सा था।
ट्यूनीशियाई महिलाएं और उनके दीर्घकालिक यूरोपीय मित्र, हुसैनिद दरबार इसके अलावा, महत्वपूर्ण विदेशी आगंतुकों के लिए हरम भ्रमण का एक सुव्यवस्थित और सुनियोजित प्रदर्शन भी प्रस्तुत किया जाता था। 1840 के दशक में, बार्डो महल के दरबार ने महिला आगंतुकों के लिए एक इतालवी महिला को मार्गदर्शक और दुभाषिया के रूप में नियुक्त किया था। लेडी मैरी एलिजाबेथ हर्बर्ट, बैरोनेस हर्बर्ट ऑफ ली ने 1871 में एक भ्रमण किया था।
यह एक प्रकार का महल-या हरम-यात्रा थी, क्योंकि वह हुसैनीद परिवार की राजकुमारियों और बिन अय्याद जैसे अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के आवासों पर उनसे मिलने जाती थी—बार्डो से लेकर पांच या छह महल और घर।
ला मारसा। प्रत्येक पड़ाव पर हर्बर्ट और ब्रिटिश कौंसल की पत्नी क्रिस्टीना वुड, जिन्होंने दौरे का संचालन किया, का भरपूर आतिथ्य सत्कार किया गया।
वह बेय की महिला रिश्तेदारों की करीबी दोस्त थी और ट्यूनीशियाई अरबी बोलती थी।
कौंसलों की पत्नियों और राजकुमारियों के बीच आदान-प्रदान किए गए पत्र सच्चे स्नेह को दर्शाते हैं। 1860 में कैमिला रोशेस द्वारा एक को भेजा गया पत्र इसका एक उदाहरण है।

हुसैनीद राजकुमारियों (जिनका नाम नहीं बताया गया है, लेकिन जिन्हें मरअत अल-वज़ीर के रूप में संदर्भित किया गया है; संभवतः मुस्तफा खज़नादर की पत्नी) के बारे में जानकारी से पता चलता है कि दोनों महिलाओं के बीच बहुत मजबूत भावनात्मक संबंध थे।63
पुरुष होने के कारण जिज्ञासु आगंतुक को हरम के पवित्र स्थान से वंचित नहीं किया जा सकता था। जब हेस्से-वार्टेग का बार्डो में स्वागत किया गया
1881 की गर्मियों में, उन्हें भी महिलाओं के निजी कमरों में सुंदर ढंग से सजाए गए कक्षों की प्रशंसा करने के लिए ले जाया गया - उस समय सभी महिलाएं अनुपस्थित थीं।
संभवतः भूमध्यसागरीय महलों में से किसी एक में निवास कर रहे होंगे। विदेशियों को अनुमति देना
महिलाओं के कमरों में गणमान्य व्यक्तियों का प्रवेश विशेष अनुग्रह प्रदान करने का एक तरीका हो सकता था।64 आखिरकार, फ्रांस में ट्यूनीशियाई प्रतिनिधिमंडल, जिसका नेतृत्व
1846 में अहमद बे ने वर्साय महल की भव्यता को देखकर आश्चर्यचकित रह गए थे और उन्हें राजा के पारिवारिक आवासों में प्रवेश की अनुमति मिल गई थी—तो भला कोई और क्यों न जाता?
हुसैनीद भी इसका जवाब देते हुए अपने निजी विलासितापूर्ण सामानों का प्रदर्शन करते हैं।
आवास, बेशक, लिंग पृथक्करण के निर्देशों का पालन करते हुए?65
196 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

फिर भी, इस अनुष्ठानिक प्रणाली में एक स्पष्ट रूप से राजनीतिक आयाम भी था। जैसा कि सी. ए. बेली ने अपनी पुस्तक 'एम्पायर एंड इन्फॉर्मेशन' में दिखाया है, हरम—अपने असंख्य रिश्तेदारों, नौकरों और सेवकों के साथ, जो सभी व्यापक सामाजिक नेटवर्क से जुड़े थे—अंदरूनी सूचनाओं और राजनीतिक गपशप के महत्वपूर्ण स्रोत थे, जैसा कि यूरोपीय दरबारों में होता था। 1835 में ब्रिटिश कौंसल ने आरोप लगाया कि "बे के हरम में" कई ममलुकों को फ्रांसीसी सरकार द्वारा गुप्त रूप से महल के भीतर घटित होने वाली गोपनीय जानकारी देने के लिए भुगतान किया जा रहा था।66 इसके अलावा, चूंकि शासक बे की मां हुसैनीद परिवार में सबसे शक्तिशाली महिला थीं, इसलिए उनसे मित्रता

स्थापित करने से सामाजिक, या यहां तक कि राजनीतिक लाभ भी मिल सकता था। उदाहरण के लिए, अहमद बे ने अपनी मां से सलाह ली।
1846 में फ्रांस की राजकीय यात्रा पर जाने से पहले उनकी माँ से। जैसा कि उल्लेख किया गया है
ऊपर, यूरोपीय महिलाओं द्वारा की जाने वाली सामाजिक मुलाकातों ने गुप्त रूप से खुफिया जानकारी जुटाने की भी अनुमति दी - जैसा कि मिस स्मिथ ने अपने लेख के अंतिम वाक्य में स्वीकार किया है।
वर्णन: “मुझे खेद है कि सिदी मोहम्मद के हरम का मेरा वर्णन इतना नीरस है, लेकिन मैंने कुछ घटनाओं का यथासंभव सर्वोत्तम वर्णन करने का प्रयास किया है।”67
हेसे-वार्टेग ने स्वीकार किया कि उसने बेयों के बारे में जानकारी एकत्र की थी।
वहाँ रहने वाली यूरोपीय महिलाओं से पूछताछ करके हरमों के बारे में: "हालाँकि मैं यह दावा नहीं कर सकता कि ट्यूनिस में अपने प्रवास के दौरान मैंने किसी हरम में प्रवेश किया था, जबकि वह
वहाँ के निवासी रहते थे, और मुझे सौभाग्य से उन यूरोपीय महिलाओं से सब कुछ जानने को मिला जो ट्यूनिस में लंबे समय से रह रही थीं।
साथ ही स्थापित नारीवादी व्यवस्था के साथ उनके घनिष्ठ संबंधों के माध्यम से भी।
दुनिया के लोग, किसी और से बेहतर हकदार थे मुझे आवश्यक जानकारी देने के लिए।”68 लेकिन जानकारी जुटाना, उपहार देने की तरह, दोनों दिशाओं में होता था। अगर बेय अपने हरम आगंतुकों के लिए खोलते थे, जो बाद में ट्यूनिस में दूसरों को अपनी देखी और सुनी हुई बातें बताते थे, तो यह तथ्य कि
बेय परिवारों ने यूरोपियों को समुद्र तट के किनारे बने आलीशान आवासों में ठहराया, जिसके लिए उन्हें पुरस्कार मिला।
ट्यूनीशियाई शासक वर्ग को अपने किरायेदारों की गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलती थी। आखिरकार, कई यूरोपीय लोगों के पास ट्यूनीशियाई नागरिक या माल्टीज़ प्रवासी घरेलू नौकर के रूप में होते थे, और वे गपशप के दलाल के रूप में अपनी इस स्थिति का भरपूर आनंद लेते होंगे।
फ्रांसीसी अल्जीरिया में पर्यटन में भारी वृद्धि के साथ, औपनिवेशिक काल से पहले का ट्यूनीशिया भी प्रभावित हुआ।

यूरोपीय यात्रियों के लिए आकर्षणों की सूची में इसे जोड़ा गया। लेडी हर्बर्ट, जो 1871 में अल्जीरिया के दौरे के बाद ट्यूनिस पहुंची थीं, गठिया से राहत के लिए: "इस देश के बारे में स्वयं निर्णय लेने और विशेष रूप से कुछ गर्म झरनों की प्रभावकारिता का परीक्षण करने के लिए उत्सुक होने के कारण, जो
मुझे पेरिस के एक डॉक्टर ने गठिया के इलाज के लिए इसकी जोरदार सिफारिश की थी।
मैंने पिछले जनवरी [1871] में अपनी सबसे बड़ी बेटी के साथ [उत्तरी अफ्रीका के लिए] प्रस्थान किया था।”69
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 197

लेडी हर्बर्ट का एक फ्रांसीसी चिकित्सक की सलाह पर विदेश जाकर स्वास्थ्य लाभ लेना इस बात का संकेत देता है कि स्वास्थ्य पर्यटन का चलन बढ़ रहा था। इस अवधि में छुट्टी पर। इसके अलावा, उन्होंने लंदन में रहने वाले विकलांगों के लिए अल्जीयर्स और ट्यूनिस में किराये के आवास बाजार का सर्वेक्षण किया, जो विचार कर रहे थे।
वह "सर्दियों के लिए वहाँ घर किराए पर लेती थी," क्योंकि उसे घरेलू आवासों के निजी कमरों तक असाधारण पहुँच प्राप्त थी। खूब यात्रा कर चुकी और धनी होने के कारण,
लेडी हर्बर्ट एक बेहतरीन पर्यटन स्थल को देखते ही पहचान जाती थीं:

इस स्थान [कार्थेज] और गोलेटा के बीच कई विला थे और
बे परिवार के देहाती घर, या यूं कहें कि समुद्र किनारे स्थित जलपान स्थल उनके मंत्री; और गर्मियों में इस समुद्र तट से अधिक आनंददायक स्थान की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता, जहाँ बड़ी-बड़ी छायादार चट्टानें, सुंदर रेत और मनमोहक दृश्य हैं।
शंख और शानदार नीला आकाश... श्रीमती वुड ने मुझे बताया कि यह उनका था
अपने देश से एक दिन के लिए यहाँ आना बच्चों के लिए सबसे बड़ी खुशी की बात होती है।
मारसा में मेरा घर है जो कुछ ही मील दूर है, और मुझे इस बात पर आश्चर्य नहीं हुआ।

उनका स्वाद.70

संक्षेप में, बे, उनकी पत्नियाँ और महिला रिश्तेदार समुद्र किनारे के विला में किराए पर रहती थीं।
यूरोपीय गणमान्य व्यक्तियों के साथ गठबंधन और राजनीतिक संबंध बनाए रखने के लिए कूटनीति एक चतुर रणनीति है - यह राज्यों के बीच संबंधों के प्रबंधन का एक नाजुक अभ्यास है।

जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं: समुद्र और बाथ

समुद्रतटीय छुट्टियों का चलन, जो काफी हद तक एक अंग्रेजी सामाजिक और सांस्कृतिक आविष्कार है,
ऐसा प्रतीत होता है कि यह यूरोपीय लोगों—विशेष रूप से जर्मन लोगों—के बीच नमक या स्पा खनिज जल के स्वास्थ्य लाभों के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ जुड़ गया है।
अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वैज्ञानिक जगत।71 जैसे-जैसे समुद्र तट रिसॉर्ट और
उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान यूरोपीय मध्यम वर्ग में स्नान करने का चलन बढ़ा, और व्यवहार संबंधी नियम भूमध्य सागर क्षेत्र में फैल गए।
विश्व और यूरोप। उदाहरण के लिए, ब्रिटिश-नियंत्रित ग्रीक आयोनियन द्वीपों ने 1836 में सार्वजनिक स्नान के समय और स्थानों को विनियमित करने वाले कानून बनाए। कुछ प्रावधान सुरक्षा संबंधी चिंताओं से प्रेरित थे, लेकिन अंतिम खंड
इसका उद्देश्य सार्वजनिक नैतिकता को बढ़ावा देना था—"महिलाओं की उपस्थिति में पुरुषों का स्नान करना वर्जित है"—हालांकि ग्रेट ब्रिटेन में स्नान करना हमेशा वर्जित नहीं था।
लिंग के आधार पर अलग-अलग।72 फ्रांस में, 1860 के दशक तक समुद्र में स्नान करना एक चलन बन गया था, जिसका मुख्य कारण पेरिस से दूर गर्मियों की छुट्टियां बिताने की सामाजिक अनिवार्यता थी।
जिसने नॉर्मंडी तट पर स्थित शांत गांवों को बदल दिया, जैसे कि डौविल और ट्रूविले, सुरुचिपूर्ण जलपान स्थलों में तब्दील हो गया है।

198 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

ट्यूनीशिया में, समुद्र में स्नान करना निवासियों के बीच एक सुस्थापित प्रथा थी।
सदी के शुरुआती दौर में ही यूरोपीय लोग। 1834 में, अंग्रेज़ उप-वाणिज्यदूत,
विलियम कार्लटन ने बताया कि वह अक्सर ला मारसा के समुद्र तट पर नहाने जाते थे और कई वर्षों से ऐसा करते आ रहे थे।73 1830 के दशक के बाद आप्रवासी बस्तियों के विस्तार ने छोटे, शांत भूमध्यसागरीय उपनगरों को हलचल भरे शहरों में बदल दिया। जब सिस्टर्स ऑफ सेंट-जोसेफ की संस्थापक, एमिली डी वियलर, 1843 में ट्यूनीशिया लौटीं, तो वह ला मारसा गईं।
मठ के एक घर में जाने पर, ननों ने पाया कि समुद्र के मौसम के दौरान, शहर के कई निवासी समुद्र में स्नान करते थे, जिससे कुछ ननों को आपत्ति हुई। हालांकि, अन्य ननें स्वयं खारे पानी के लाभों का अनुभव करना चाहती थीं, जिससे शालीनता का नाजुक मुद्दा उठ खड़ा हुआ। वियालर ने इसका समाधान निकाला।
इस घोषणा से समस्या उत्पन्न हो गई कि स्नान केवल "एक पूरी तरह से बंद तंबू में ही हो सकता है जो एक मंडप के रूप में पानी के किनारे तक फैला हो और जिसका उपयोग [बहनें] केवल तभी करें जब ला मारसा के स्नान करने वाले लोग मौजूद हों।"
अनुपस्थित।"74 यह समाधान राजकुमारियों के स्नानघरों जैसा दिखता है जो सीधे पानी में बने थे, हालाँकि वे कहीं अधिक भव्य पैमाने पर थे।
जुलाई 1858 में, चार्ल्स क्यूबिसोल, जिनका उप-वाणिज्य दूतावास कार्यालय ला गौलेट में था, ने "Établissement des bains de mer sur la plage" नामक एक रिपोर्ट में समुद्र तट पर उचित व्यवहार को लेकर मतभेदों की जांच की। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि
बंदरगाह, जिसकी आबादी में हजारों "यूरोपीय, मूर, माल्टीज़ या यहूदी शामिल थे, जिनमें से कई मछुआरे या नाविक थे," तेजी से विकसित हो रहा था।
यह इलाका भूमध्यसागरीय क्षेत्र के गरीब द्वीपवासियों द्वारा बसाया गया था।75 आप्रवासन ने आवासीय मोहल्लों को धार्मिक संबद्धता या कानूनी

अधिकार क्षेत्र के साथ संरेखित करने की पुरानी व्यवस्था को आंशिक रूप से बदल दिया था। और अवकाश के नए स्थान भी विकसित हुए।
सामाजिकता और व्यवहार सबसे अधिक विवादित विषय थे, क्योंकि आचार संहिता अभी तक तय नहीं की गई थी। मध्य शताब्दी के बाद, उचित व्यवहार के बारे में असहमति बढ़ने लगी।
इन स्थानों के उपयोग से लगातार संघर्ष उत्पन्न होने लगे—एक मामले में तो यह संघर्ष विभिन्न मुद्दों पर था।
समुद्र में नहाते समय समुद्र तट पर कैसा व्यवहार करना चाहिए। इस मामले को ला गौलेट कांड कहा जाता है, जिसमें कुछ नहाने वालों ने कुछ चीजें रखी थीं। टेंट—जो बाद में नहाने की मशीन बन गए—रेत पर इस तरह लगाए जाते थे कि दूसरों को पानी तक सीधी पहुँच न मिल सके, जिससे निजता को लेकर चिंता पैदा हो गई।
नग्न अवस्था में। चूंकि मुहम्मद बे ने यह वसीयत की थी
ला गौलेट के ज्यादातर विदेशी निवासियों की समुद्र तट संपत्ति होने के कारण, बंदरगाह के गवर्नर खैर अल-दीन को स्नान करने वाले लोगों के बीच चल रहे विवाद में मध्यस्थता करने के लिए बुलाया गया था।
गुटों के बीच। झगड़ रहे यूरोपीय लोगों को लिखे अपने पत्र में, खैर अल-दीन ने यह शर्त रखी कि व्यक्ति किसी ऐसे स्थान पर अतिक्रमण नहीं कर सकते जिसे "सार्वजनिक" के रूप में नामित किया गया हो।
“सामुदायिक पहुंच के अधिकार” के मान्यता प्राप्त सिद्धांत के अनुसार। इस আপাত रूप से तुच्छ मामले के बारे में जो बात दिलचस्प है, वह यह है कि, जबकि ट्यूनी-
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 199

एशियाई लोग भी वहां स्नान करते थे, ऐसा प्रतीत होता है कि उनमें से कोई भी इस घटना में शामिल नहीं था।
विशेष विवाद। वास्तव में, हुसैनीद राज्य, खैर अल-दीन के माध्यम से
इस निर्णय में यूरोपियों के लिए समुद्र तट के उपयोग संबंधी नियमों को स्पष्ट किया गया था, जिनके शालीनता के साथ-साथ सार्वजनिक और सार्वजनिक स्थानों के बारे में भी अलग-अलग विचार थे।
निजी स्थान.76

जैसा कि उस समय यूरोप में भी सच था, सामाजिक पिरामिड के शीर्ष पर बैठे लोगों का वर्चस्व था।
ला गौलेट की तुलना में अधिक विशिष्ट परिस्थितियों में जल चिकित्सा की तलाश की गई।
सार्वजनिक समुद्र तट—पानी के किनारे बने विलाओं की निजता से। क्रिस्टीना वुड के 1861 में अपने पति रिचर्ड को लिखे पत्र, जब वह मिशन पर थे।
सीरिया का उदाहरण यह दर्शाता है कि ट्यूनीशियाई और एक ही वर्ग के यूरोपीय लोग किस हद तक एक साथ सामाजिक मेलजोल रखते थे, जिससे स्वाभाविक रूप से लैंगिक अलगाव बना रहता था।
गर्मियों में श्रीमती वुड ने लिखा: “हम सब यथासंभव स्वस्थ रहे हैं।” ...स्नानघरों से लाभ उठा रहे हैं।" थोड़ी देर बाद वह कहती हैं: "यहाँ बसने के बाद से हम सभी काफी खुशहाल हैं। बच्चों में काफी सुधार हुआ है और
खुली हवा में रहना... बच्ची बिल्कुल ठीक है और फिर से चुलबुली हो गई है, वह खारे पानी से नहाती है... मैं हर सुबह [समुद्र तट पर] जाती हूँ लेकिन अभी कुछ ही बार गई हूँ।
स्नान।”77 वुड ने रात्रिभोज पार्टियों और आने-जाने के बारे में विवरण प्रदान किया।
कांसुलर वर्ग और उनके ट्यूनीशियाई पड़ोसियों के बीच, जिसमें हुसैनीद राजकुमारियों से केवल महिलाओं की मुलाकातें शामिल थीं। समुद्र तट पर स्थित वह निवास स्थान जो
गर्मी के महीनों में जिस जंगल में लोग रहते थे, वह शासक परिवार की संपत्ति थी, लेकिन उसे उन्हें किराए पर दिया गया था।
क्रिस्टीना वुड ने अपने अनुपस्थित पति से कुछ इस तरह की चीजों पर टिप्पणी की।
गर्मी के महीनों में घनिष्ठ सामाजिक आदान-प्रदान संभव है: “हमारे पड़ोसी, कायद परिवार, बहुत दयालु, नेक और अच्छे स्वभाव के लोग हैं... आज सी हुसैन मुझसे मिलने आए थे और आपके लिए एक पत्र छोड़ गए। वह वास्तव में आपके बहुत अच्छे दोस्त हैं और एक बेहतरीन व्यक्ति हैं, जो अपने नए कार्यालय में दिन-रात काम करते हैं। उनकी शिकायत है कि उनके पास एक पल भी खाली नहीं है।

व्यायाम के लिए।"78 वुड ने बताया कि उन्होंने "[क़ायद के परिवार की] महिलाओं के साथ बहुत अच्छी दोस्ती कर ली है और अरबी में बहुत प्रगति कर रही हैं," जो
"महिलाएं" उसे पढ़ा रही थीं। यह उन्नीसवीं सदी की उन पारंपरिक धारणाओं का एक अच्छा उलटफेर है जिनमें ओटोमन घरों में विदेशी शिक्षिकाओं द्वारा महिलाओं या बच्चों को यूरोपीय भाषाएं सिखाने की बात कही जाती थी।
अपनी सापेक्ष दूरी और दुर्गम पहुँच के बावजूद, कोरबोस भी हाइड्रोथेरेपी के लिए तेजी से आकर्षक बन गया। कम से कम 1820 के दशक से, सदस्य
विदेशी राजनयिक और निवासी समुदाय के लोग चिकित्सा उद्देश्यों के लिए इसके गर्म खनिज जल का उपयोग करते थे; ट्यूनीशियाई लोग हमेशा से इस स्थल को स्वास्थ्य और स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण मानते रहे हैं।
शारीरिक और आध्यात्मिक उपचार। फ्रांसीसी उप-वाणिज्यदूत के रूप में क्यूबिसोल के पूर्ववर्ती।
ला गौलेट में, लुई गैस्परी ने अप्रैल 1824 में लिखा: "मेरी सास जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

वह मई की शुरुआत में कोरबोस जाने की योजना बना रही है और वह
अगर मैडम गाइज़ [फ्रांसीसी कौंसल की पत्नी] उन्हें सम्मानित करें तो मुझे बहुत खुशी होगी।
उसके साथ वहाँ जाकर।" उन्हें छोटी नाव से यात्रा करनी थी क्योंकि यह ज़मीन के रास्ते जाने की तुलना में काफी तेज़ और सुरक्षित था, लेकिन खराब मौसम के कारण उन्हें यात्रा नहीं करनी पड़ी।
अप्रैल और मई में यात्रा में देरी हुई। हालांकि, 26 मई को उन्होंने बताया: "मैं अभी-अभी कोरबोस से लौटा हूं, जहां मैंने श्रीमती गाइज़ को बहुत अच्छी सेहत में छोड़ा है।"
हमारी यात्रा छोटी और सुखद रही; वह अपनी बेटी के साथ है; वे वहाँ से गुज़रे।
एक छोटी नाव।"79 दो महीने बाद, जून 1824 में, महिलाएं अभी भी कोरबोस में थीं, जिसके पानी ने श्रीमती गाइज़ के स्वास्थ्य में काफी सुधार किया था।

महिलाओं की देखभाल गैस्परी के भाई द्वारा की जाती थी, जो ला गौलेट से संदेश, भोजन और अन्य आवश्यक सामग्री ले जाने के लिए छोटी नाव से नियमित रूप से आते-जाते थे।
यह प्रारंभिक, अपेक्षाकृत दुर्लभ विवरण कई प्रश्न खड़े करता है। आश्चर्य होता है कि श्रीमती गस्परी और श्रीमती गाइज़ कहाँ रहती थीं, क्योंकि वे दो महीने तक घर से अनुपस्थित रहीं और उनकी यात्रा अहमद बे के कोरबूस में निर्माण कार्यक्रम से पहले हुई थी। यद्यपि स्रोत स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं कहते हैं, लेकिन महिलाओं ने ट्यूनीशियाई घरों में ही निवास किया होगा, क्योंकि उस समय वहाँ
न तो होटल और न ही अन्य सुविधाएं; इलाज चाहने वालों को घरेलू स्थान किराए पर देना
यह उस छोटे से गाँव के निवासियों की आजीविका का एक प्रमुख स्रोत था, जैसा कि आज भी है। यह अनिश्चित है कि क्या फ्रांसीसी लोग ट्यूनीशियाई महिलाओं के साथ स्नान करते थे, हालांकि इसकी संभावना बहुत अधिक है; किसी भी स्थिति में, उनका इलाज स्थानीय महिला चिकित्सकों द्वारा ही किया गया होगा।
1787 से बेयों द्वारा जारी किए गए फरमानों में समय-समय पर कोरबूस में स्नानागारों, झरनों और स्नान कुंड पर सिदी अम्मारा के संत वंशजों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले अधिकारों की पुष्टि की गई; इन फरमानों में विशेष रूप से वंश की महिला सदस्यों का उल्लेख किया गया है। 1835 में, मुस्तफा बे के फरमान में शेख की बहन, मसूदा, को उस परिवार के हिस्से के रूप में सूचीबद्ध किया गया है जो "हम्माम कोरबूस में ज़ाविया के प्रशासन और निगरानी के साथ-साथ इमारतों और
स्नानघर।" एक अन्य महिला, खदीजा, का उल्लेख 1840 में कबीले के हिस्से के रूप में किया गया है। वंश की महिलाओं ने प्रबंधन में वास्तव में क्या भूमिका निभाई?
जल उपचारों में झरनों या जल उपचारों का उपयोग—जो आध्यात्मिक उपचार और पवित्रता से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं—अस्पष्ट बना हुआ है, लेकिन दस्तावेजों में उनकी उपस्थिति स्पष्ट है।
संकेतात्मक। 1875 के एक फरमान में पहली बार उस स्थान पर एक कैफे का उल्लेख किया गया है।80

जैसे-जैसे अधिक से अधिक यूरोपीय लोग अपने चिकित्सीय लाभों के लिए ट्यूनीशियाई या अल्जीरियाई गर्म झरनों की तलाश करने लगे, स्वास्थ्य की तलाश में एक और धारा प्रवाहित होने लगी।
पर्यटक समुद्र के उस पार विपरीत दिशा में चले गए। ट्यूनीशिया के उच्च पदस्थ अधिकारी और यहां तक कि धार्मिक हस्तियां भी यूरोपीय स्पा में नियमित रूप से जाने लगे।
धार्मिक विद्वान मुहम्मद बायराम पंचम, जो एक गंभीर बीमारी से पीड़ित थे “तंत्रिका संबंधी विकार” के लिए उन्होंने पेरिस के चिकित्सकों से परामर्श लिया और वहीं इलाज की तलाश की।
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 201

यूरोपीय केंद्र।81 हालाँकि, राजनीतिक और चिकित्सीय
कभी दूर नहीं। 1876 में खैर अल-दीन के पतन के बाद, उन्हें प्राप्त हुआ शासक ने 1877 और 1878 में फ्रांस जाने की अनुमति दी थी—भले ही सैद्धांतिक रूप से वह ट्यूनिस में महल में नजरबंद थे—विची और सेंट में इलाज के लिए।
नेक्टेयर.82 इस प्रकार, स्वास्थ्य की तलाश ने देश छोड़ने के लिए एक सुविधाजनक तर्क प्रदान किया - फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा 1881 में ट्यूनीशिया पर आक्रमण करने से कुछ ही साल पहले।
और औपनिवेशिक अधिकारियों ने 1883 के ला मारसा समझौते में समुद्र तट पर स्थित महल में मुहम्मद अल-सादिक बे को अपना राज्य सौंपने के लिए मजबूर किया।

औपनिवेशिक डाक लिपियाँ

1905 में, संरक्षित राज्य ने ट्यूनीशियाई राज्य को उन जलप्रपातों को सौंपने के लिए मजबूर किया।
कोरबोस को एक फ्रांसीसी कंपनी, कॉम्पैग्नी डेस ईओक्स थर्मल्स को बेच दिया गया, जिसने अंततः स्नान कुंडों के साथ-साथ विशाल भूभाग का पूर्ण स्वामित्व प्राप्त कर लिया।

ग्रामीणों के घरों, जमीन और पानी में हिस्सेदारी। लेकिन सिदी के परिवार द्वारा छेड़े गए एक कड़वे और लंबे संघर्ष के कारण अधिग्रहण में कुछ समय के लिए देरी हुई।
‘अम्मारा और अन्य संपत्ति धारक। महत्वपूर्ण बात यह है कि जैसे-जैसे बे और इदारत अल-अहबास (मुस्लिम धार्मिक संस्थाओं) पर कंपनी को भूमि स्वामित्व सौंपने का दबाव बढ़ता गया, निदेशालय के अधिकारियों ने
डी सैंटे का मानना था कि "कोरबूस में रहने वाले गरीब मुसलमानों को मुफ्त इलाज मिलना चाहिए क्योंकि कोरबूस देश के सभी मुसलमानों के लिए महत्वपूर्ण है"—
एक बयान जिसमें इस बात का संकेत दिया गया था कि कंपनी गर्म तेल के बाजार पर नियंत्रण के लिए संघर्ष कर रही है।
स्प्रिंग्स में जीत हासिल करना आसान नहीं होगा।83
एक दशक से भी पहले, डेन कैनेडी ने यह प्रदर्शित किया था कि 1857 के बाद भारत में विद्रोह के बाद, पहाड़ी क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य की प्रथाओं के लिए तेजी से महत्वपूर्ण होते चले गए और इस प्रकार उनमें गहन सांस्कृतिक परिवर्तन हुए।
मूल रूप से ये पर्वत मुसलमानों और हिंदुओं दोनों के लिए पवित्र माने जाते थे, फिर आगे बढ़ते हैं—
ब्रिटिश पर्यटकों के लिए पर्यटन स्थलों के रूप में उपयोग किए जाने वाले ये अनोखे, ऊंचे पहाड़ी इलाके अंततः ब्रिटिश शासन के प्रशासनिक और राजनीतिक केंद्र में परिवर्तित हो गए।
साम्राज्य: वहाँ के अधिकारी, सैनिक और उनके परिवार नीचे के "मूल निवासियों" से स्वच्छतापूर्ण अलगाव और सांस्कृतिक पृथक्करण का आनंद लेते थे।84 ब्रिटिश साम्राज्य के बाद
एरिक जेनिंग्स जैसे विद्वान अब उन प्रक्रियाओं का पता लगा रहे हैं जिनके द्वारा
फ्रांसीसी साम्राज्य भर में प्रचलित स्वदेशी उपचार पद्धतियों का उपयोग स्वास्थ्य पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए किया गया, जिससे सामाजिक-स्थानिक सीमाएँ निर्धारित हुईं।

विज्ञान और अंधविश्वास, उपनिवेशवादी और उपनिवेशित के बीच नस्लीय स्वच्छता पर आधारित। फिर भी औपनिवेशिक स्थिति पूरी तरह से समझी जा सकती है।
यह तभी संभव है जब पूर्व की सामाजिक व्यवस्थाओं को पुनः प्राप्त और पुनर्निर्मित किया जाए, हालांकि प्रलेखन संबंधी समस्याओं के कारण यह कितना भी कठिन क्यों न हो।85
202 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

नस्ल के आधार पर स्थानिक रूप से पृथक औपनिवेशिक जलचिकित्सा की उत्पत्ति— आमतौर पर धर्म से जोड़कर देखी जाने वाली—और औपनिवेशिक स्पा प्रमोटरों द्वारा परिकल्पित वर्ग की धारणा 1881 या 1883 में नहीं, बल्कि 1900 के बाद के इस थोड़े बाद के औपनिवेशिक काल में निहित है। जबकि कोरबूस में कॉम्पैग्नी डेस ईओक्स थर्मल्स ने स्थानीय स्पा उपयोगकर्ताओं से मध्यम-वर्गीय यूरोपीय रोगियों को अलग करने के लिए यह अफवाह फैलाकर डराने की कोशिश की कि स्थानीय लोगों को सिफलिस है, प्रमोटर मुसलमानों या यहूदियों — या यहाँ तक कि गरीब यूरोपीय लोगों—को स्पा की छोटी सीमाओं से पूरी तरह से बाहर निकालने में असमर्थ रहे। इसका एक कारण यह था कि ट्यूनीशियाई और विदेशी दोनों ही स्थानीय समुद्र तटों और गर्म पानी के कुंडों में अक्सर आते-जाते थे।
जेनिंग्स ने जिसे बीमार फ्रांसीसी लोगों के लिए "पुनःसंपीड़न कक्ष" कहा है, उसके निर्माण से लगभग एक सदी पहले तक स्प्रिंग्स कमोबेश एक साथ जुड़े हुए थे।
साम्राज्य के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से घर लौट रहे नागरिक।86 इसके अलावा,
औपनिवेशिक काल में, उच्च और मध्यम वर्ग के ट्यूनीशियाई लोग कोरबूस में इलाज की तलाश जारी रखते थे, भले ही वे "यूरोपियों से दूरी बनाए रखते थे।"87 और
1905 तक, जब ट्यूनीशिया में कैथोलिक चर्च और राज्य को अलग करने वाले फ्रांसीसी कानून लागू हुए, तब तक मिशनरियों को स्पा में मुफ्त प्रवेश की अनुमति थी।

शुल्क। हालाँकि, औपनिवेशिक स्पा ने प्रभावी रूप से पवित्र आयामों को अलग कर दिया था।
यह उपचारात्मक चिकित्सा से लेकर तापीय उपचारों के विशुद्ध अर्थों तक को आंशिक रूप से मिटा देता है, साथ ही साथ पानी से जुड़ी सदियों पुरानी ट्यूनीशियाई चिकित्सा कलाओं के योगदान को भी कम कर देता है।
मैरी लिन स्टीवर्ट और अन्य इतिहासकारों ने यह सिद्ध किया है कि स्वच्छता के उद्देश्य से नियमित स्नान करना फ्रांस में 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही प्रचलित हुआ।
उन्नीसवीं शताब्दी और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में, हालांकि हाइड्रोथेरेपी प्रचलित थी
तंत्रिका संबंधी विकारों के लिए सौ वर्षों से अधिक समय से इसका उपयोग किया जाता रहा है।88 हालांकि इस बात को शायद ही कभी स्वीकार किया गया हो, औपनिवेशिक स्पा ने पुराने स्पा से प्रेरणा ली थी।
उत्तरी अफ्रीका की प्रथाएं और मान्यताएं समुद्र और उसके स्वास्थ्यवर्धक लाभों से जुड़ी हैं, जो शरीर, आत्मा और समाज को लाभ पहुंचाते हैं। कोई सोचता है कि क्या यूरोपीय लोग भी इन प्रथाओं और मान्यताओं का अनुसरण करते थे?
मैं ट्यूनीशिया अक्सर जाता था—जहाँ साप्ताहिक हमाम दर्शन की प्राचीन संस्कृति थी, समुद्र
स्नान और तापीय उपचारों ने यूरोप लौटने पर स्वच्छता की अधिक आधुनिक अवधारणाओं को पेश किया, या कम से कम नई अवधारणाओं की स्वीकृति को आसान बनाया।
पानी और शरीर से संबंधित विचार।89
यूरोपीय महिला पर्यटकों और यात्रियों की बढ़ती संख्या
उत्तरी अफ्रीका के लोग, जो अक्सर स्थानीय कुलीन परिवारों के साथ संबंध बनाने की कोशिश करते थे।
और घरेलू जीवन में आए बदलावों ने यात्रा और यात्रा मार्गदर्शिकाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए; इस प्रक्रिया के हिस्से के रूप में, शैलियों का मिश्रण हुआ क्योंकि यात्रा वृत्तांतों को नियंत्रित करने वाली पुरानी साहित्यिक परंपराएँ पर्यटक मार्गदर्शिकाओं के लिए रास्ता देने लगीं।

लेडी हर्बर्ट की अल्जीरिया और ट्यूनीशिया में रोमांच और उपचारों की कहानी, जबकि
यात्रा लेखन की प्रारंभिक शैली का प्रतीक होने के साथ-साथ, यह आधुनिक, लोकप्रिय गाइडबुक का पूर्वाभास भी था क्योंकि इसमें यात्रा के लिए व्यावहारिक सुझाव शामिल थे।
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 203

विशेष रूप से, स्थानीय परिवारों से मौसम के लिए उपयुक्त घर किराए पर लेने का तरीका। और जैसा कि केनेथ पर्किन्स का काम उन्नीसवीं सदी के लिए दर्शाता है।
अल्जीयर्स में, पर्यटन पर आई ब्रिटिश महिलाओं को ऐसे दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करने का अवसर मिला जो पुरुषों के लिए उपलब्ध नहीं थे: अंतरंग वातावरण में "स्थानीय" महिलाओं और मुस्लिम परिवारों से मिलना।
घर के। क्या लिंग-आधारित यात्रा पैकेजों का विकास हरम यात्रा का एक रूपांतर था?90
लेडी हर्बर्ट जैसी महिला यात्रियों ने क्या प्रभाव डाला?
स्थानीय लैंगिक विचारधाराएँ और व्यवहार? उनकी यात्रा के कुछ ही समय बाद, हरम की महिलाएँ यूरोप की यात्रा करने लगीं। ले पेटिट ट्यूनीशियन इंडेपेन-1886 में यह सूचना मिली कि ट्यूनीशियाई दरबार के एक उच्च पदस्थ प्रतिष्ठित व्यक्ति मुस्तफा इब्न इस्माइल का हरम पेरिस में लंबे समय तक रहने के बाद लौट आया था।
यात्रा करने वाले परिवार में कई राजकुमारियाँ और "छह मौरेस्क" शामिल थे। जो पेरिस के हरम का भी हिस्सा थीं। ये महिलाएं "फ्रांसीसी कपड़े" पहनती थीं—कम से कम मार्सिले में ला गौलेट के लिए जहाज पर चढ़ते समय तो ज़रूर। और एक हिजड़े की कड़ी निगरानी में थे।91 यह निर्विवाद है कि स्नान और जल चिकित्सा को नियंत्रित करने वाली औपनिवेशिक काल से पहले की प्रथाओं का निरंतर बने रहना
इसने औपनिवेशिक काल के स्पा परियोजनाओं को काफी हद तक आकार दिया और कमजोर भी किया।
एक विशेष रूप से बुर्जुआ यूरोपीय ग्राहक वर्ग।

होटल ज़ेफिर, ला मारसा

समुद्रतटीय गांवों की शोभा बढ़ाने वाले स्नान मंडप और ग्रीष्मकालीन महल, कुलीन सामाजिक संबंधों में समुद्र के महत्व की गवाही देते हैं। हुसैनिद राजवंश ने समुद्र तट कूटनीति, हरम भ्रमण और अन्य प्रथाओं का उपयोग किया। आतिथ्य सत्कार की अभिव्यक्तियाँ, कम से कम आंशिक रूप से, निवासी यूरोपीय लोगों और आगंतुकों को प्रचलित संस्कृति में आत्मसात करने के लिए - एक ऐसी संस्कृति जो अंततः इसमें निहित है
पवित्रता और अपवित्रता से संबंधित इस्लामी नियम। इस दृष्टिकोण का क्या प्रभाव पड़ा है?
क्या महल-हरम परिसर और घरों को सामाजिकता और संचार के परस्पर जुड़े जाल के रूप में देखने से औपनिवेशिक काल से पहले के युग की समझ में बदलाव आया? ट्यूनीशियाई शासक वर्ग पर लिखे गए पुराने साहित्य में इसे निष्क्रिय और इस प्रकार तेजी से आक्रामक होते जा रहे शासक वर्ग का सामना करने में अप्रभावी बताया गया है।
1881 से पहले यूरोपीय राज्यों और राजनेताओं द्वारा की गई मांगें।92
फिर भी, विशेषाधिकारों और सूचनाओं के प्रसारक के रूप में, कुलीन परिवार विदेशी और घरेलू राजनीति के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। महल ने कुशलतापूर्वक
समुद्रतटीय कूटनीति के माध्यम से स्थानीय यूरोपीय लोगों के साथ बातचीत को संभाला, जिसमें भूमध्यसागरीय विलाओं का ऋण और अच्छी तरह से प्रदर्शित नाटकीय प्रदर्शन शामिल थे।
पूर्वाभ्यास किए गए हरम दौरे। इसके अलावा, तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य से हरम दौरों की समीक्षा करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐतिहासिककरण की कमी 204 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ को अस्पष्ट करती है।

इस प्रथा की स्थानीय सामाजिक अभिव्यक्तियों और अर्थों में काफी अंतर थे। रीड परिवार के बड़े सदस्य लगभग ट्यूनिस में रहते थे।
1825 से 1849 तक पच्चीस वर्ष। इस प्रकार, उस परिवार की महिलाओं द्वारा हुसैनीद राजकुमारियों को दी जाने वाली आवधिक सामाजिक मुलाकातों का उतना महत्व नहीं था जितना मैरी रॉबर्ट्स और अन्य विद्वानों द्वारा अध्ययन किए

गए हरम के अनुभवों का, जो अल्पकालिक यात्राओं की श्रेणी में आते हैं। इसके अलावा, रीड्स के
ग्रीष्मकालीन आवास बे परिवार की ओर से उपहार स्वरूप दिया गया था, और इस प्रकार अंग्रेज परिवार उसमें निवास करता था।
उन स्थानों में जो ट्यूनीशियाई अभिजात वर्ग के घरों से मिलते-जुलते थे। हालाँकि, यह अनुमान लगाना आवश्यक है कि 1850 के दशक के मध्य से ट्यूनिस और बार्डो से अलग, समुद्र तटीय गांवों में दरबार के लंबे समय तक रहने का क्या महत्व था। क्या यह तथ्य कि बेय चारों ओर से घिरे हुए थे—वास्तव में, संकटग्रस्त थे—
उस विशेष क्षेत्र में यूरोपीय लोगों का तात्पर्य भूमध्यसागरीय महलों से है।
क्या वह एक प्रकार का सोने का पिंजरा बन गया था?
हमारा दृष्टिकोण इतिहास लेखन की पुरानी पद्धतियों पर भी सवाल उठाता है। मुस्लिम परिवार, जिनके पास पर्याप्त सबूत नहीं थे, यह मानते थे कि हरम का अस्तित्व बाहरी दुनिया के साथ व्यापक सामाजिक संपर्कों में बाधा डालता है, और
इस प्रकार आधुनिकता में भाग लिया। यहाँ संबोधित किए गए प्रमुख मुद्दों में से एक यह है।
यह आवधिकता और औपनिवेशिक काल से पहले और औपनिवेशिक काल के बीच कथित विच्छेद रहा है। विद्वान "औपनिवेशिक काल से पहले" की स्थायित्व के लिए तर्क दे रहे हैं।
एशिया या अफ्रीका में पूर्ण पैमाने पर साम्राज्यवादी शासन के आगमन के बाद — या उसके बहुत बाद भी—राजनीतिक संस्थाओं या आर्थिक व्यवस्थाओं को साक्ष्य के रूप में उपयोग करना
उनकी स्थिति को मजबूत करते हैं। सामाजिकता के रूप जैसे कि भ्रमण, अवकाश और स्वास्थ्य इन मुद्दों पर पुनर्विचार करने के लिए एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है। किसी भी मामले में, यह धारणा कि औपनिवेशिक काल से पूर्व और आधुनिक काल से पूर्व लगभग समतुल्य थे—या यह कि सामाजिकता की रिश्तेदारी-आधारित प्रणालियाँ आधुनिकता के लिए शत्रुतापूर्ण थीं—उन्नीसवीं सदी के ट्यूनीशिया के लिए अस्वीकार्य प्रतीत होती है।93

लगभग विलुप्त हो चुके क्षेत्र के हमारे पुनर्निर्माण से एक अप्रत्याशित निष्कर्ष सामने आया है।
सामाजिक जगत में सामाजिकता की मौसमी प्रकृति का महत्व रहा है, जिसका अर्थ है कि राजनयिकों और राज्य अधिकारियों दोनों का जीवन इसी प्रकार चलता रहा है।
सर्दी और गर्मी में अलग-अलग लय, जिनमें से प्रत्येक लिंग-आधारित स्थानों और अंतःक्रिया और आदान-प्रदान की विभिन्न तीव्रताओं से जुड़ी थी—और बेशक, झगड़े और पीठ पीछे बुराई करना।
औपनिवेशिक काल से पहले और प्रारंभिक औपनिवेशिक काल के ट्यूनीशिया में राजनीति को आकार देने वाले घरेलू नियमों द्वारा नियंत्रित सामाजिकरण के दीर्घकालिक निहितार्थ क्या थे? हम पहले ही देख चुके हैं कि कोरबूस गर्म झरनों की योजनाएँ परंपरा के बल के कारण विफल हो गईं, जिसमें यह तथ्य भी शामिल है कि
सामान्य स्थिति और अनिश्चित राष्ट्रीयता वाले यूरोपीय लोगों के पास लंबे समय से यह अधिकार था।
वहाँ इलाज की तलाश की गई। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि फ्रांसीसी ट्यूनीशिया में रहने वाला बड़ा और राजनीतिक रूप से स्वायत्त इतालवी समुदाय—जिनमें से कुछ के पूर्वज, यहूदी समुदाय की तरह—वहाँ बसे थे। जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 205

फिन्ज़ी परिवार, जो मूल रूप से लेघोर्न का रहने वाला था, उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में यहाँ आया था।
सदी में—शास्त्रीय औपनिवेशिक उत्पीड़न के अधिक क्रूर रूपों पर व्यावहारिक सीमाएँ लगाई गईं। 1900 के बाद भी, ट्यूनीशियाई अभिजात वर्ग और यूरोपीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बीच समुद्र तट पर होने वाला सामाजिक मेलजोल कभी शानदार रहे होटल में जारी रहा।
ला मारसा में ज़ेफिर, समुद्र तट से कुछ ही दूरी पर स्थित है और इस प्रकार बना है कि समुद्र से आने वाली हल्की हवाएँ वहाँ तक पहुँचती हैं। मेरी पड़ोसी और दोस्त, नाइला रोस्टेम—
पुराने ट्यूनीशियाई-तुर्की अभिजात वर्ग का एक सदस्य, जिसकी पारिवारिक स्मृति

बीसवीं शताब्दी के आरंभ से चली आ रही परंपरा के अनुसार, गर्मियों की शामों में कुलीन वर्ग नियमित रूप से होटल में इकट्ठा होता था।
उसके अनुसार, "ज़ेफिर में होने वाले बॉल्स और सोइरीज़ के दौरान शैम्पेन की खूब बहार आती थी।" स्थानीय जल से पकड़ी गई ताज़ी मछलियाँ, जिन्हें आधी रात के भोजन के लिए तैयार किया जाता था, "विशाल" होती थीं—अब की तुलना में कहीं अधिक बड़ी—शायद सामाजिक स्मृति के अनुसार ऐसा ही था।
ऐसा लगता है कि यह पुरानी यादों से ओतप्रोत है।
इस राजसी तटीय संस्कृति और समाज का अंतिम अंत 1958 में हुआ।
जब हबीब बोरगुइबा ने स्वयं ला मारसा के कई महलों और महिलाओं के स्नान मंडपों के विनाश की निगरानी की। नवगठित राष्ट्रपति
स्वतंत्र राज्य ने बुलडोजर और डायनामाइट से लैस दल तैनात कर दिए।
अलंकृत नव-मूरिश संरचनाओं और उनके हरे-भरे उद्यानों पर। हुसैनिद राजवंश की सेवा करने वाले अंतिम मुख्य माली के पुत्र, बोरगुइबा के अनुसार।
“एक खुश बच्चे की तरह इधर-उधर भागा और बोला, ‘यहाँ! नष्ट करो! इसे उड़ा दो।’”94 यह महत्वपूर्ण है कि बोरगुइबा ने ट्यूनिस रेलवे स्टेशन या केंद्रीय डाकघर जैसे स्पष्ट रूप से औपनिवेशिक स्मारकों को ध्वस्त करने का आदेश नहीं दिया।
वास्तव में, ये महल ढाई शताब्दियों तक कायम रहे हुसैनिद राजवंश और ट्यूनिस के महान परिवारों के प्रत्यक्ष प्रमाण थे।
इसमें नाइला रोस्टेम का वंश भी शामिल है। राष्ट्रवादी भावना के साथ-साथ व्यक्तिगत प्रतिशोध ने मिलकर एक शाही, समुद्रतटीय संस्कृति को उसके ही खंडहरों के नीचे दफनाने की साजिश रची।
2001 में, ट्यूनीशिया के शासक परिवार ने होटल ज़ेफिर पर कब्ज़ा कर लिया और उसे ध्वस्त करवा दिया।
और उसके स्थान पर अमेरिकी शैली का एक शॉपिंग मॉल बनाया गया।

नोट्स

जब वह चाहती थीं तब मुझे कोरबोस ले जाने के लिए डेलेंडा लार्गुएचे का विशेष धन्यवाद।

इसके बजाय बिज़र्टे जाने के लिए, और मेरे ला मारसा परिवार, रोस्टेम्स को, जिन्होंने पहल की।
मुझे गर्मियों की सामाजिक प्रथाओं से परिचित कराने में एरिक टी. जेनिंग्स ने उदारतापूर्वक अपना अनुभव साझा किया।
मेरे द्वारा किए जा रहे शोध को अब 'उपनिवेशवादियों का उपचार' के रूप में प्रकाशित किया गया है। सभी अनुवाद मेरे द्वारा किए गए हैं, जब तक कि अन्यथा उल्लेख न किया गया हो।
1 डे, एट होम इन कार्थेज, 14 में उद्धृत। 2 इस लेख का विस्तृत संस्करण जूलिया क्लैंसी-स्मिथ, मेडिटेरेनियन्स; बहलूल, द आर्किटेक्चर ऑफ मेमोरी, 51 में पाया जा सकता है। ड्यूबेन और बेहार, इस्तांबुल हाउसहोल्ड्स भी देखें। 3 कार्लियर, “ले कैफे मौरे”; बूटियर, “अन ऑट्रे मिडी।”
206 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

4 उत्तरी अफ़्रीकी, और विशेष रूप से प्राच्यवादी चित्रणों पर साहित्य तुर्की या मिस्र की महिलाओं के उदाहरण इतने अधिक हैं कि यहाँ उनका उल्लेख करना संभव नहीं है; इस पर चर्चा के लिए
उस साहित्य में कुछ समस्याओं के लिए, बर्टन के 1999 के समीक्षित कार्य देखें: Gen-
रीना लुईस और कोलो द्वारा लिखित "डेरिंग ओरिएंटलिज़्म: रेस, फेमिनिनिटी, एंड रिप्रेजेंटेशन"
मेयदा येगेनोउलू द्वारा लिखित 'प्राच्यवाद की नारीवादी व्याख्या की ओर': नायल फैंटेसीज़। दोनों
रॉबर्ट्स ने अपनी पुस्तक "इंटिमेट आउटसाइडर्स" में और एल शेख ने "रिविजिटिंग द अब्बासिद हरिम्स" में यह बात कही है।
विद्वानों के चिंतन के विकास का संक्षिप्त विवरण प्रदान करें। मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि...
पश्चिमी देशों में महिलाओं और लिंग के चित्रण महत्वहीन हैं; बल्कि, मैं यह जानना चाहता हूँ कि
विद्वानों पर वाक्पटुता, प्रस्तुतिकरण और व्यवहार के बीच अधिक स्पष्ट संबंध स्थापित करने के लिए दबाव डालना।

ज़मीनी स्तर पर। क्लैंसी-स्मिथ देखें, "ले रिगार्ड कॉलोनियल," "द इंटिमेट, द फैमिलियल,"
और लिंग के अंतरराष्ट्रीय इतिहास में स्थानीयता," और "विदेशीपन, विलोपन, और अनुपस्थिति: अल्जीयर्स का जनसमूह, 1830-1900,” 19-61. 5 सबसे खराब स्थिति में, हरम या मुस्लिम परिवार अपनी प्रकृति के कारण ही सामाजिक संस्थाओं और प्रगति के विकास में बाधक तथा कला, साहित्य और विज्ञान में बाधा डालने वाले माने जाते थे; अल्जीरियाई मुस्लिम समाज के चित्रण में, घर, परिवार,
विवादात्मक उद्देश्यों के लिए हरम और हरम को एक ही अर्थ में मिला दिया गया था; क्लैंसी-स्मिथ, "ले रिगार्ड" देखें।
औपनिवेशिक,” 27–30. आधुनिकता और परिवार पर उन्नीसवीं सदी का विमर्श
यह, आश्चर्यजनक रूप से, विरोधाभासी था। एक ओर, मध्यमवर्गीय परिवार
आधुनिक दुनिया के तनावों और दबावों से बचने के लिए एक शरणस्थल के रूप में निर्मित।
दूसरी ओर, तीसरे गणतंत्र के फ्रांसीसी उदारवादियों द्वारा इस परिवार को उस स्थल के रूप में देखा जाता था
सामाजिक अभियांत्रिकी के लिए सर्वोत्कृष्ट उदाहरण और इस प्रकार आधुनिकता की संभावित कसौटी—या इसके लिए प्रमुख बाधा—यदि विचाराधीन रिश्तेदारी संरचना गैर-पारंपरिक थी—
यूरोपीय या गैर-बुर्जुआ। मुस्लिम परिवार को लगभग सर्वत्र चित्रित किया गया था।
महिलाओं पर होने वाले अप्रत्यक्ष उत्पीड़न के स्थल के रूप में।
6 मैं हरम और घरेलू शब्दों का प्रयोग लगभग एक दूसरे के स्थान पर करता हूँ, हालाँकि सख्ती से कहें तो हरम एक बड़े घरेलू परिसर का एक हिस्सा था। 7 ट्यूनिस के अभिजात वर्ग और यूरोपीय निवासियों या यात्रियों ने जो भी थोड़े-बहुत दस्तावेज़ मौजूद हैं, उन्हें तैयार किया। कई अन्य प्रश्नों की तरह, सामाजिक संबंधों का रिकॉर्ड भी विरल और खंडित है; साक्ष्यों की कमी के कारण महत्वपूर्ण विषयों का केवल सतही विश्लेषण ही संभव है। इसके अलावा, उत्तर-औपनिवेशिक राज्य के विजयी राष्ट्रवाद के परिणामस्वरूप
इस तटीय संस्कृति के भौतिक साक्ष्यों का अधिकांश भाग नष्ट कर दिया गया।

इसका कारण यह है कि हुसैनीद परिवार का इतिहास हाल तक वर्जित था। अफसोस की बात है कि
इस काल में ट्यूनीशियाई महिलाओं ने न तो अपने बारे में लिखा और न ही मिस्र की नारीवादी हुदा शारवी के संस्मरण 'हरम इयर्स' जैसी कोई रचना की। 8 उन्नीसवीं सदी के ट्यूनीशियाई समाज के लिए अवकाश की अवधारणा का अभी तक विश्लेषण नहीं किया गया है, इस विषय पर लार्गुएचे का लेख देखें, “Loisirs, sociabilité et mutations culturelles dans la régence de Tunis à
ओटोमन युग।"
9. इस संदर्भ में बे का अर्थ मोटे तौर पर राजकुमार या शासक होता है क्योंकि हुसैनिद राजवंश
उन्होंने राजनीतिक रूप से ओटोमन सुल्तानों के अधीन होने के आंशिक भ्रम को बनाए रखा।
10 मोअल्ला, द रीजेंसी ऑफ ट्यूनिस और ओटोमन पोर्टे, 79-80; बेन अचौर, श्रेणियाँ
19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ट्यूनीशियाई समाज का, 226-27.
11 ग्रीन, ट्यूनीशियाई उलेमा, 1873-1915, 50. हुसैनिद परिवार पर, जिसका इतिहास अपने इतिहासकार की प्रतीक्षा कर रहा है, देखें एफ. बे, ला डेर्निएर ओडालिस्क; ई. बे, लेस बेज़ डी ट्यूनिस (1705-1957); बेन अचौर, ला कौर डू बे डे ट्यूनिस।
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 207

12 बिलीली, पारिवारिक इतिहास, 86–87.
13 हेस्से-वार्टेग, ट्यूनिस, 85-86। हेस्से-वार्टेग (1854-1918) उन्नीसवीं सदी के अग्रणी यात्रियों और यात्रा लेखकों में से एक थे; उन्होंने अमेरिका से अमेज़न, उत्तरी अफ्रीका और पूर्वी एशिया तक की अपनी यात्राओं पर बीस से अधिक रचनाएँ प्रकाशित कीं।
अपनी प्रतिष्ठा के कारण ट्यूनिस में शासक परिवार द्वारा उनका सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया।
14 मिस्र में, खेदीव तौफीक (शासनकाल 1879-92) के अधीन, हेलवान का उपनगर बन गया

महल और शहरी अभिजात वर्ग के लिए एक शीतकालीन विश्राम स्थल। एक थिएटर, कैसीनो और बगीचे इसकी शोभा बढ़ाते थे।
शहर; लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि राजधानी से बाहर इसकी स्थिति ने उच्च वर्ग को
शारवी की पुस्तक 'हरम इयर्स' के अनुसार, महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता मिली। ओटोमन परिवार गर्मियों में भी अपना निवास स्थान बदलता था और बोस्पोरस के किनारे बसा रहता था।
ओटोमन-मिस्र के अभिजात वर्ग के लोग अक्सर बोस्पोरस पर भी महल रखते थे; देखें
रॉबर्ट्स, इंटिमेट आउटसाइडर्स, 7.
15 अब्देस्सेलेम, लेस हिस्टोरियन्स ट्यूनीशियन्स, 93।
16. मैडम हसीबा आगा के साथ साक्षात्कार, कार्थेज, ट्यूनीशिया, नवंबर 2007। 17 लैलेमंड, ट्यूनिस 19 वीं शताब्दी में, 149.
18 बछरोच, ट्यूनीशिया में संत और राजकुमार, 387.
19 बर्गाउई, टूरिज्म एट वॉयजेस एन ट्यूनीसी, 76. मलिनास का दावा है कि मुहम्मद इब्न हसन बायराम की पांडुलिपि वास्तव में एक अनुवाद थी जो उन्होंने 1171/1756 में किया था।
ईसाई चिकित्सक यूसुफ अल-गुइर द्वारा लिखित एक अध्ययन का लैटिन से अरबी में अनुवाद।
ट्यूनिस में रहने वाले इस्लाम धर्म में परिवर्तित व्यक्ति (कोर- जल-खनिज समूह पर टिप्पणी)
बौस, 3).
20 रेमंड, ट्यूनिस के राजाओं का इतिहास, 2:92.
21 इब्न अबी अल-दियाफ़, इथाफ़ अहल अल-ज़मान बी अख़बार मुलुक ट्यूनिस वा 'अहद अल-अमन, 4:207। 22 रेमंड, क्रॉनिक डेस रोइस डे ट्यूनिस, 2:57। 23 ड्यूनेंट, नोटिस सुर ला रेजेंस डी ट्यूनिस, 122-23। 24 सबाई, मुस्तफा साहब एत्ताबा, 23; इब्न अबी अल-दियाफ़, इथाफ़ अहल अल-ज़मान बी अख़बार
मुलुक ट्यूनिस वा 'अहद अल-अमान, 4:156–59. 25 बेन अचौर, 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ट्यूनीशियाई समाज की श्रेणियाँ
सदी, 31, 37; बिन हमीदा, अल-बाजी अल-मसूदी। 26 लुई क्रेपुट, "नोटिस सुर ले कॉन्ट्रोले सिविले डे नेबुल," संग्रह 5, रील 5, इंस्टिट्यूट डी रेकेर्चे

सुर ले माघरेब कंटेम्पोरैन, ट्यूनिस। 27 कॉर्बिन, द ल्यूर ऑफ़ द सी, विशेष रूप से 187-281। 28 बेन अचौर, ला कौर डु बे डे ट्यूनिस, 21. 29 विदेश सचिव के लिए सर थॉमस रीडे, हेनरी टेम्पल, विस्काउंट पामर्स्टन, 23 दिसंबर, 1831, विदेश कार्यालय श्रृंखला, ट्यूनीशिया (इसके बाद) 77/22, राष्ट्रीय यूनाइटेड किंगडम अभिलेखागार, लंदन (इसके बाद नौक)। 30 कई निवासी यूरोपीय लोगों ने इस पर टिप्पणी की, जिनमें ट्यूनिस में सार्डिनियाई कौंसल काउंट फिलिप्पी भी शामिल हैं, जिनका उल्लेख मोनचिकोर्ट, रिलेशंस इनएडिट्स डे निसेन में किया गया है।
फिलिप्पी और कैलिगारिस, 86.
31 डेब्बाश, ला नेशन फ्रांसेज़ एन ट्यूनीसी, उद्धरण 243। मदीना में यूरोपीय लोगों के आवासीय परिसरों तक सीमित रहने से उच्च श्रेणी के प्रस्तावों की व्याख्या होती है।
आवास की कमी के कारण लोगों को आवास की आवश्यकता थी।
32 जेम्स रिचर्डसन, "ट्यूनिस की वर्तमान स्थिति का विवरण," संलग्न के साथ "ट्यूनीशियाई हरम पर परिशिष्ट", 1845, पृ. 20, एफओ 102/29, नौक। 33 इब्न अबी दियाफ़, इथाफ़ 3:147.
208 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

34 ब्रिटिश वाणिज्य दूतावास लॉगबुक, जुलाई 1828, एफओ 77/21, नौक; मोनचिकोर्ट, संबंध, 86, नोट 4.
35 हेस्से-वार्टेग, ट्यूनिस, 46.
36 पोंस, ला नोवेल्ले एग्लीज़ डी'अफ़्रीक, 228. 37 हेनरी ह्यूगन, "उने एंबेसेड ट्यूनिसिएन ए पेरिस एन 1825 (मिशन डे सी मह-मौद काहिया)", 111। 38 ब्लैकबर्न, “‘टेकिंग द वाटर्स’” 39 क्रिस्टीना वुड से रिचर्ड वुड, 5 जुलाई, 1861, बॉक्स 1, व्यक्तिगत पत्राचार, 1855-99, सर रिचर्ड वुड के कागजात, सेंट एंटनी कॉलेज, ऑक्सफोर्ड (इसके बाद वुड टू वुड)।
40 वही। ट्यूनिस में ब्रिटिश वाणिज्य दूतावास में आयोजित मार्डी ग्रास कॉस्ट्यूम पार्टी के लिए,
विस्काउंट अल्फ्रेड डी कैस्टन ने क्रिस्टीना वुड को समर्पित एक लंबी, बेहद खराब फ्रांसीसी कविता की रचना की, जिसे उन्होंने मेहमानों के लिए

छपवाया था - जिससे हमें इस बात का अंदाजा लगता है कि राजनयिक दल अपना खाली समय कैसे बिताता था।
41 गेनिएज, लेस ऑरिजिंस डु प्रोटेक्टोरेट फ़्रैंकैस एन ट्यूनीसी, 447-61; कंबोन, "लेट्रेस डी ट्यूनीसी।"
42 मार्टेल, लुई-अर्नोल्ड और जोसेफ एलेग्रो, 128–30। 43 वुड टू वुड; और ओ'डोनेल, ट्यूनीशिया में लॉन्ड्री, 61–62। 44 सर थॉमस रीड टू पामर्स्टन, 5 दिसंबर, 1834, fo 77/25, नौक। 45 सत्रहवीं शताब्दी के दौरान ओटोमन राजकुमारी 'अज़ीज़ा 'उथमाना ने ट्यूनिस में बड़ी संख्या में सार्वजनिक और निजी दान संस्थाओं को वित्त पोषित किया, जिनमें अस्पताल और गरीबों के लिए आश्रय स्थल शामिल थे; देखें लार्गुएचे, "वुमन एंड गिफ्ट टू द सिटी।"
46 इब्न अबी दियाफ, इथाफ 3:202-3।
47 ओटोमन साम्राज्य में गवर्नेंस के महत्व पर, पेटजेन, “‘Matmazels’ nell’harem.” देखें
48 इब्न अबी दियाफ, इथाफ अहल अल-ज़मान बि अख़बार मुलुक तुनिस वा 'अहद अल-अमान, अहमद 'अब्द अल-सलाम द्वारा संपादित (तुनिस: अल-जामिया अल-तुनीसिया, 1971), 212। उदाहरण के लिए, अनाम पांडुलिपियों में महल सेवा का चिकित्सक का विवरण, लगभग 1830 के दशक, एफ 80 1697, कैओम। ऐसेन-एलौफी, "बीइंग ओटोमन," महल की महिलाओं की हमारी समझ में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है।
49 जेम्स रिचर्डसन द्वारा प्रत्यक्ष हरम वृत्तांतों को एकत्रित करने का घोषित उद्देश्य यह था कि "
पाठक को ट्यूनीशियाई महिला अभिजात वर्ग का उचित विचार प्रस्तुत करना” (“ट्यूनीस की वर्तमान स्थिति का विवरण,” संलग्न “ट्यूनीशियाई हरम पर परिशिष्ट,” 1845, पृष्ठ 53, fo 102/29, नौक)। जहाँ तक पता लगाया जा सकता है, उनका विवरण कभी प्रकाशित नहीं हुआ, हालाँकि इसे 1847 में अंग्रेजी विदेश कार्यालय द्वारा उपयोग के लिए गोपनीय दस्तावेजों में “गोपनीय प्रिंट संख्या 137” (लंदन: टी. आर. हैरिसन, 1847) के रूप में पुन: प्रस्तुत किया गया था। जहाँ तक हमें पता है, बर्नर का विवरण केवल रिचर्डसन की रिपोर्ट में डाले गए संक्षिप्त रूप में ही बचा है; क्लैंसी-स्मिथ, “एक ट्यूनीशियाई हरम की यात्रा” देखें।
50 बर्नर, रिचर्डसन में उद्धृत, "ट्यूनीशियाई हरम पर परिशिष्ट," 60. 51 बर्नर, इबिड में उद्धृत, 62.

52 मेजर सर ग्रेनविले टी. टेम्पल, भूमध्यसागर में भ्रमण। अल्जीयर्स और ट्यूनिस, 1: 196.
53 स्मिथ, रिचर्डसन में उद्धृत, 53-54.
जहां अभिजात वर्ग मिलते हैं 209

54 स्मिथ, उद्धृत ibid. 59.
55 और, तुर्की लघु चित्रकला। वह पुस्तक अठारहवीं शताब्दी में एंडेरुनलू फ़ाज़िल की कृति, ज़ेनानामे (महिलाओं की पुस्तक) पर आधारित है। 56 स्टॉकडेल, अंग्रेज़ी और फ़िलिस्तीनी महिलाओं के बीच औपनिवेशिक मुठभेड़, 66; रॉबर्ट्स, अंतरंग बाहरी लोग।
57 स्मिथ, रिचर्डसन द्वारा उद्धृत, “ट्यूनीशियाई हरम पर परिशिष्ट,” 56–
57। 58 रॉबर्ट्स इस्तांबुल के हरमों की भौतिकता पर चर्चा करते हैं। तुलनात्मक रूप से, हुसैनिद आवासों के आंतरिक भाग यूरोपीय शैली में सुसज्जित प्रतीत होते हैं।
यह शैली इस्तांबुल की तुलना में थोड़ी पहले की थी (इंटिमेट आउटसाइडर्स, 59-79)। क्या यह ट्यूनिस में महल वर्ग की सेवा करने वाले निवासी यूरोपीय लोगों का प्रभाव था, या
सार्डिनियाई और सिसिली के ममलुक संबंध के बारे में? विंड्लर राजनीतिक पहलुओं पर चर्चा करते हैं।
और उपहार देने का सांस्कृतिक महत्व (La diplomatie comme expérience de l’autre, 485–535)। ट्यूनिस को भेजे गए बहुमूल्य उपहारों की आश्चर्यजनक मात्रा की एक विस्तृत सूची।
पेरिस से संबंधित जानकारी ह्यूगॉन, "1825 में पेरिस में एक ट्यूनीशियाई दूतावास" में मिलती है। 59 सर थॉमस रीड से अर्ल बाथर्स्ट, 18 अगस्त, 1825, fo 77/16, नौक। 60 रिचर्डसन, "ट्यूनीशियाई हरम पर परिशिष्ट," 64।
61 ह्यूगॉन, “1825 में पेरिस में एक ट्यूनीशियाई दूतावास,” 111. 62 विंड्लर, कूटनीति दूसरे के अनुभव के रूप में, 268–69. 63 कैमिल्ले रोचेस, 8 जनवरी, 1860, बॉक्स 207, फ़ोल्डर 96, ट्यूनीशिया के राष्ट्रीय अभिलेखागार (इसके बाद एंटी)। हर्बर्ट, ए सर्च आफ्टर सनशाइन, 248–63 भी देखें। 64 हेस्से-वार्टेग, ट्यूनिस, 82–83.

65 एफ. बे, “ले 1 र दिसंबर 1846,” इतिहास। अहमद बे का फ्रांसीसी राजा के पारिवारिक सैलून में स्वागत किया गया, जहाँ उन्हें रानी और राजकुमारियों से मिलवाया गया। 66 सर थॉमस रीड से पामर्स्टन, 29 अप्रैल 1835, एफओ 77/26, नौक। 67 स्मिथ, रिचर्डसन में उद्धृत, “ट्यूनीशियाई हरम पर परिशिष्ट,” 59। बेली, एम्पायर एंड इन्फॉर्मेशन, 18-19, 38-39 भी देखें; क्लैंसी-स्मिथ, “ट्यूनीशियाई हरम की यात्रा,” 46, 49।
68 हेस्से-वार्टेग, ट्यूनिस, 82-83।
69 हर्बर्ट, ए सर्च आफ्टर सनशाइन, 3. यह भी देखें 242–64. 70 वही, उद्धरण, 258–59.
71 गेरबोड, “उने फॉर्म डे सोसिआबिलिटे बुर्जुआ।” 72 गैलेंट, एक्सपीरियंसिंग डोमिनियन, 67. कॉर्बिन, द ल्यूर ऑफ द सी, 254–57 भी देखें। 73 “श्री विलियम कार्लटन, ब्रिटिश वाइस-कॉन्सुल, ऑफ द अल्डेलिया इन द रीजेंसी ऑफ ट्यूनिस का हलफनामा,” 21 जुलाई, 1834, fo 77/25, नौक।
74 कैवसिनो में उद्धृत, एमिली डी वायलर संस्थापक, 123, एमिली डी वायलर का फ्रांकोइस बौर्गेड को पत्र, 21 अगस्त, 1843।
75 डुनेंट, नोटिस सुर ला रेजेंस डी ट्यूनिस, 99. 76 चार्ल्स क्यूबिसोल से एडोल्फ रूसो, 29 जुलाई, 1858, और खैर अल-दीन द्वारा अरबी में पत्र, बॉक्स 413, सेंटर डी'आर्काइव्स डिप्लोमैटिक्स, नैनटेस, फ्रांस (इसके बाद)
खैर अल-दीन इस्लामी कानून पर भरोसा कर रहे थे।
सार्वजनिक स्थानों का उपयोग।
77 लकड़ी से लकड़ी तक।
78 वही।
79 लुई गैस्परी से पियरे गैस्परी 24 अप्रैल, 1824, बॉक्स 407, सीएडीएन।
210 जूलिया क्लैंसी-स्मिथ

80 “हम्माम कोरबूस से संबंधित बेयलिकल फरमान,” 1787–1885, श्रृंखला ई, बॉक्स 377,
फ़ोल्डर 3, चींटी.
81 मुहम्मद बायराम पंचम ने 1875 में इलाज के लिए फ्रांस और इटली की यात्रा शुरू की।

एक गंभीर तंत्रिका विकार के लिए, जिसमें पेरिस में एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी चिकित्सक द्वारा बिजली के साथ एक प्रायोगिक उपचार शामिल है; देखें अब्देस्सेलम, सत्रहवीं, अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के ट्यूनीशियाई इतिहासकार, 392; बायराम, सफ़वत अल-'इतिबार 1:96-103।
82 खैर अल-दीन, "मेमोइरेस," 42।
83. "हम्माम कोरबूस से संबंधित बेयलिकल फरमान" वाला फोल्डर, 1787–
1885, श्रृंखला ई, बॉक्स 377, फ़ोल्डर 3, एंट, में ग्रामीणों और सिदी 'अम्मारा वंश की ओर से अरबी में कई मार्मिक याचिकाएँ हैं, जिनमें सामाजिक न्याय की अपील के माध्यम से अधिग्रहण का विरोध किया गया है; उदाहरण के लिए, 30 मार्च, 1906 को, "सिदी 'अम्मारा के शेख ने शिकायत की कि उनकी जमीनों पर कब्जा कर लिया गया था।"
84 डी. कैनेडी, द मैजिक माउंटेंस। यह तर्क दिया जा सकता है कि औपनिवेशिक काल से पूर्व के ट्यूनीशिया की तुलना राज की तुलना में अठारहवीं शताब्दी के भारत से अधिक उपयोगी होगी। हालाँकि, 1830 के बाद का ट्यूनीशिया अठारहवीं शताब्दी के भारत से बहुत अलग था, खासकर वहाँ रहने वाले यूरोपीय प्रवासियों की भारी संख्या और उस व्यापक भूमध्यसागरीय राजनीतिक संदर्भ के संदर्भ में, जिससे ट्यूनीशियाई शासक वर्ग को निपटना पड़ा।
85 कॉनक्लिन और क्लैंसी-स्मिथ, परिचय। 86 जेनिंग्स, उपनिवेशवादियों का इलाज, 166-67। 87 अर्नाउड, लेस ईओ थर्मल्स, 6।
88 एम. स्टीवर्ट, स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए, 56-74. 89 उत्तरी अफ्रीका में रोमन चीजों के साथ फ्रांसीसी औपनिवेशिक पहचान और महिमाकरण के बीच अंतर्संबंधों पर, लोरसिन देखें, "अफ्रीका में रोम और फ्रांस।"
90 पर्किन्स, "इतना निकट और फिर भी बहुत दूर।" 91, मार्च 12, 1886, पृ. 1. ले पेटिट ट्यूनीशियाई स्वतंत्र
92 उदाहरण के लिए देखें, चैटर, डिपेंडेंस एट म्यूटेशन प्रीकोलोनियल्स। 93 बेली, द बर्थ ऑफ द मॉडर्न वर्ल्ड; स्कॉट और हिर्शकिंड, पावर्स ऑफ द सेक्युलर
आधुनिक। आधुनिकता को परिभाषित करने की कठिनाइयों पर, सैलर की पुस्तक "आधुनिकता और मोह" देखें।
94 जेम्स ए. मिलर और लॉरेंस ओ. मिकालक को महत्वपूर्ण जानकारी साझा करने के लिए धन्यवाद।

यह सामग्री बोरगुइबा की हुसैनीद परिवार के प्रति व्यक्तिगत, गहरी नफरत को दर्शाती है। ट्यूनीशिया के गणतंत्र घोषित होते ही, राष्ट्रपति बोरगुइबा ने प्रेस को सूचित किया कि वह अंतिम शासक अमीन बे को सुबह-सुबह उनके कार्थेज स्थित महल से बेदखल करने जा रहे हैं ताकि 73 वर्षीय व्यक्ति को अपमानित किया जा सके। बोरगुइबा का इरादा था कि फोटोग्राफर उनकी अपमानजनक स्थिति में तस्वीरें खींचने के लिए तैयार रहें। अपने भाषणों में, बोरगुइबा अक्सर दावा करते थे कि हुसैनीद वास्तव में ट्यूनीशियाई नहीं थे।

8 • हरेमास जीवनी

घरेलू वास्तुकला, लिंग और पुरानी यादें
आधुनिक सीरिया में

हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉ

8 माउंट वर्नोन लेडीज़ एसोसिएशन, एक परोपकारी संगठन (चित्र 1) की रीजेंट्स की 1873 की एक तस्वीर पर विचार करें। अच्छी तरह से कपड़े पहने, मध्यम आयु वर्ग की महिलाएं हाल ही में पुनर्स्थापित माउंट वर्नोन के पोर्टिको में बैठी हैं, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के पहले राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन का घर था।1 वे स्वयं जॉर्ज वाशिंगटन की संगमरमर की प्रतिमा के चारों ओर बैठी हैं। धनी,
इस प्रकार गणतंत्र की शिक्षित और देशभक्त माताएँ स्वयं को संपत्ति और विरासत की संरक्षक के रूप में प्रस्तुत करती हैं।
अपने देश के पिता।
यह छवि संयुक्त राज्य अमेरिका में ऐतिहासिक संरक्षण के प्रारंभिक काल का प्रतीक है और इसके लैंगिक आयाम को स्पष्ट रूप से उजागर करती है: आज की सम्मानित माताएँ अतीत के महान व्यक्ति की विरासत को उनकी संपत्ति का जीर्णोद्धार करके संरक्षित करती हैं। वे यह भी सुनिश्चित करती हैं कि संपत्ति
आम जनता के लिए सुलभ, ताकि उन्हें राष्ट्रीय इतिहास और नागरिक सद्गुणों की शिक्षा दी जा सके। देशभक्तिपूर्ण
इस प्रकार माताएँ संस्थापक पिता को एक आदर्श के रूप में स्थापित करती हैं, ऐतिहासिक संरक्षण और प्रदर्शन के माध्यम से उनकी राजनीतिक और सांस्कृतिक सत्ता को स्थापित करती हैं।2 यह छवि
212 हेघनार ज़ाइट्लियन वाटेनपॉघ के निर्माण के बीच संबंधों का सारांश प्रस्तुत करता है।

1. माउंट वर्नोन लेडीज़ एसोसिएशन की रीजेंट्स, जॉर्ज की प्रतिमा के चारों ओर खड़ी हैं।
वॉशिंगटन। लीट ब्रदर्स द्वारा 1873 में खींची गई तस्वीर। माउंट वर्नन लेडीज़ के सौजन्य से।
एसोसिएशन, बीडब्ल्यू-4928-बी.

किसी समाज में लैंगिक और सांस्कृतिक सत्ता तथा उस समाज का उससे संबंध अपनी विरासत के साथ, जैसा कि संरक्षण की प्रथाओं में निहित है। संरक्षण या परिरक्षण, अतीत की इमारतों को वर्तमान में नए उपयोगों और अर्थों के लिए पुनर्स्थापित करने की आधुनिक प्रथा है, जिसकी उत्पत्ति हुई।
अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यूरोप में संरक्षण की शुरुआत हुई। आज, संरक्षण एक आधुनिक पेशेवर अभ्यास है जो पश्चिमी यूरोप में उत्पन्न नियमों और विनियमों पर आधारित है।
उन्नीसवीं शताब्दी और बीसवीं शताब्दी में यूरोप।3 संरक्षण की आधुनिक मॉड्यूलर अवधारणा को दुनिया भर में मानकीकृत रूप में लागू किया गया है। विरासत का अर्थ है मूर्त और अमूर्त वस्तुओं और विशेषताओं का वह समूह जो एक समाज अतीत से प्राप्त करता है और भविष्य के लिए संरक्षित रखता है। संरक्षण और विरासत आधुनिक, संस्थागत और पेशेवर प्रथाओं का एक समूह है जो समाज के अपने अतीत के साथ संबंधों का प्रबंधन करता है। बारबरा

किर्शेनब्लाट-गिम्ब्लेट विरासत को "सांस्कृतिक उत्पादन के एक तरीके" के रूप में परिभाषित करते हैं।
जो अतीत का सहारा लेकर कुछ नया उत्पन्न करता है। सांस्कृतिक उत्पादन के एक माध्यम के रूप में विरासत, अप्रचलित को नया रूप देकर उसमें मूल्यवर्धन करती है।
स्वयं की एक प्रदर्शनी... विरासत का निर्माण मेटाकल्चरल संचालन के माध्यम से होता है जो संग्रहालय संबंधी मूल्यों और विधियों (संग्रह, प्रलेखन, जीवित व्यक्तियों के लिए संरक्षण, प्रस्तुति, मूल्यांकन और व्याख्या) उनका ज्ञान, प्रथाएं, कलाकृतियां, सामाजिक जगत और जीवन क्षेत्र।"4
हरम एक जीवनी के रूप में 213

अब एक और छवि पर विचार करें, इस बार लिखित रूप में: एक महिला बैठी है
एक पुराने अलेप्पोई घर का स्वागत कक्ष, जो साहित्यकारों के एक समूह की मेजबानी कर रहा था।
घर की छवि पाठ के पाठकों के लिए परिचित है, जो स्थानीय अतीत के लिए पुरानी यादों को जगाती है। इस अध्याय में, मैं प्रथाओं और प्रवचनों की आलोचना करता हूँ।
समकालीन समाज में संरक्षण को लिंग के परिप्रेक्ष्य से—विशेष रूप से, घरों में महिलाओं के चित्रण के माध्यम से—और
ये संदेश महिलाओं के स्थानों और घरों के बारे में यह बताते हैं कि वे उनके लिए स्थान हैं।
महिलाएं। यदि हरम अतीत की बात है, जिसे उसमें रहने वाली महिलाओं की आकृतियों के माध्यम से दर्शाया गया है, तो मैं तर्क देता हूं कि ऐसी प्रस्तुतियों में,
घरेलू स्थान स्वयं स्त्री का प्रतीक बन गया है। वर्तमान में संरक्षण के लिए किया जाने वाला प्रतिनिधित्वात्मक कार्य लैंगिक मुद्दों पर भी प्रकाश डाल सकता है।
महिलाओं के सार्वजनिक और निजी व्यक्तित्व की एक निश्चित व्याख्या प्रस्तुत करना
अतीत और वर्तमान। अध्याय की पृष्ठभूमि 1990 के दशक का सीरिया है, विशेष रूप से उत्तरी शहर अलेप्पो, और सर्वव्यापी आंगन वाले घर, भौतिक

यह वह स्थान था जहाँ हरम के पारिवारिक जीवन का निर्वाह होता था, जिसे बाद में धीरे-धीरे घरेलू वास्तुकला के नए प्रकारों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाने लगा, जिसकी शुरुआत 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुई।
उन्नीसवीं शताब्दी।
1990 के दशक की शुरुआत से, सीरियाई लोकप्रिय संस्कृति में एक नया बदलाव देखने को मिला है।
प्रत्यक्ष अतीत में रुचि। जिसे अल-अवदा इला कहा जाता है, उसके अंतर्गत। अल-तारिख (इतिहास की ओर वापसी) के संदर्भ में, हाल के अतीत पर केंद्रित टेलीविजन धारावाहिकों जैसे सांस्कृतिक रूपों को ऐतिहासिक परिवेश में फिल्माया जाता है और लोग इन्हें बड़े चाव से देखते हैं। ऐतिहासिक कालखंडों पर आधारित पुराने और नए उपन्यास और संस्मरण भी व्यापक रूप से पढ़े जाते हैं।
बौद्धिक और लोकप्रिय हलकों में इस पर पढ़ा और टिप्पणी की जाती है। इस घटनाक्रम में इसका व्यावसायीकरण और वस्तुकरण भी शामिल है।
ऐतिहासिक वास्तुकला। इस "वापसी" के सबसे दिलचस्प पहलुओं में से एक। पुराने आंगन वाले मकान—जिन्हें अक्सर बैत अरबी (अरबी शैली का मकान) कहा जाता है—कुलीन शहरी घरेलू वास्तुकला का एक विशिष्ट उदाहरण हैं। समकालीन सीरिया के मानवविज्ञानी और इतिहासकारों ने अतीत के इस विशिष्ट तत्व के संग्रहालयों में प्रदर्शन से लेकर रेस्तरां, त्योहारों या नाइट क्लबों के लिए पुनरुत्पादन और पुनर्प्रसंगीकरण तक के विचित्र विकास को देखा है। अतीत की ये संरचनाएं, जो उदासीनता से ओतप्रोत हैं, अक्सर पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को प्रमुखता देती हैं।
यह अध्याय पुराने आंगन वाले मकान की साहित्यिक संरचनाओं और उसके भौतिक संरक्षण की आलोचना की शुरुआत करता है, जिसमें मुख्य रूप से इस प्रश्न पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि...
मैं इस बात का अध्ययन करना चाहता हूँ कि किसी प्रख्यात महिला की जीवनियाँ और उनके द्वारा प्रस्तुत स्थानिक पदानुक्रम किस प्रकार सामाजिक और लैंगिक अनुभवों के विशिष्ट निरूपणों को बढ़ावा देते हैं या उन्हें सीमित करते हैं। मैं उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के साहित्य का उपयोग करता हूँ।

अलेप्पो की पहली आधुनिक कवयित्री, मारियाना मर्राश की जीवनियाँ, जो 214 में रहती थीं। हेघनार ज़ाइट्लियन वाटेनपॉघ

और उन्होंने उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में लिखा। मार्रैश उनमें से एक थे।
इस शहर की पहली महिला हस्तियाँ जिन्होंने सार्वजनिक पहचान बनाई। फिर भी उनकी जीवनियाँ
उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र में एक प्रकाशित कवयित्री के रूप में कम और पुराने आंगन वाले घर में समारोहों की अध्यक्षता करने वाली एक मेज़बान के रूप में अधिक चित्रित किया गया है। इस प्रकार, घर की वास्तुकला का वर्णन उनकी जीवनी का प्रतिनिधित्व करता है। जीवनी की महिला पात्र के व्यक्तित्व का यह छिपाव 5
और उसकी जगह घर का निर्माण होना—उसकी वास्तुकला और सामाजिक रीति-रिवाज। इसमें निवास करने वाले लोग सीरियाई अतीत की ओर उदासीन "वापसी" के परिणाम और उसे आकार देने वाले दोनों हैं।
लेकिन मार्रैश से मिलने से पहले, हमें उस काल्पनिक घरेलू परिवेश में प्रवेश करना होगा जिसमें ये जीवनियाँ उन्हें समाहित करती हैं।

आंगन घर को उसकी विरासत की वस्तु के रूप में उपयोग करना

सीरिया की समृद्ध प्राचीन शहरी विरासत में कम से कम एक ऐसा शहर है जो इतिहास में सबसे लंबे समय तक लगातार बसे रहने वाले शहर का खिताब हासिल करने की होड़ में है: अलेप्पो।6
कई बार पुनर्निर्मित प्राचीन किला शहर पर हावी है। यहाँ एक क्लासिक
1930 के दशक की अलेप्पो की क्षितिज रेखा की तस्वीर, जिसमें सबसे प्राचीन से लेकर हाल के काल तक के स्मारकों के ऊपर बने मीनारों की एक श्रृंखला दिखाई दे रही है।
इस्लामी इतिहास (चित्र 2)। जिस समय यह तस्वीर ली गई थी, उस समय सड़क पर टहल रहे पैदल यात्री के लिए, सभी मीनारें वास्तव में समकालीन थीं - एक-दूसरे के लिए और पैदल यात्री के लिए भी। विभिन्न समयों में निर्मित, वे

तब भी और आज भी, इन्होंने शहर के दृश्यमान और अनुभवजन्य ताने-बाने का निर्माण किया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, अलेप्पो में
ओटोमन साम्राज्य के अन्य हिस्सों में, गवर्नरों और स्थानीय अभिजात वर्ग ने व्यापक शहरी आधुनिकीकरण परियोजनाओं की शुरुआत की। उन्होंने शहरी नियोजन के आधुनिक सिद्धांतों के अनुसार उपनगरों का निर्माण किया, जो स्पष्ट रूप से भिन्न थे।
पुराने शहरी ढांचे के साथ।7 कुलीन परिवार अपने आंगन वाले घरों से निकलकर सुविधाजनक, आधुनिक विला या अपार्टमेंट इमारतों में चले गए (चित्र 3)।
जब इन नए मोहल्लों को बसाया और स्थापित किया गया था, तब अलेप्पो के लोग पुरानी और नई शैलियों के सर्वोत्तम संयोजन के लिए इनकी प्रशंसा करते थे। उन्होंने चौड़ी सड़कों, बहुमंजिला विला जैसी आधुनिक शहरी विशेषताओं की सराहना की।
और नए रेलवे स्टेशन जैसी सुविधाएं उनकी आधुनिक, बुर्जुआ जीवनशैली के अनुकूल थीं। अलेप्पो के इतिहासकार और न्यायविद कामिल अल-ग़ाज़ी (1853?–1933) ने ‘अज़ीज़िया उपनगर (1870 के दशक में शुरू हुआ) का वर्णन इस प्रकार किया: “इसे अलेप्पो के सबसे महान मोहल्लों में से एक माना जाता है और
सबसे चौड़ी सड़कों और सबसे शानदार घरों वाला एक घर...
पुरानी शैली और नई शैली का संयोजन... आपको वहां ऐसे घर दिखेंगे जो चौड़ी सड़कों पर बने भव्य महलों जैसे हैं।"8

2. पश्चिम की ओर से अलेप्पो का दृश्य। शहर की क्षितिजरेखा मीनारों की एक पंक्ति से परिभाषित होती है।
जो स्मारकों से भी ऊपर हैं। सौवागेट, अलेप, खंड 2, प्लेट xl से।

बीसवीं शताब्दी के दौरान, जैसे-जैसे शहरी आबादी का विस्तार हुआ, परिवार बाहरी उपनगरों में आधुनिक अपार्टमेंट भवनों में बसते रहे।
पुराने शहरी केंद्र से दूर। 1950 के दशक से लेकर 1970 के दशक तक, कई सीरियाई लेखकों और राजनेताओं ने आधुनिक प्रकार के आवासों को अपनाने में रुचि दिखाई।
सामाजिक और आर्थिक प्रगति के सूचक के रूप में। इस समझ के अनुसार, पुराना आंगन वाला घर पुरानी यादों से जुड़ी लालसा का विषय नहीं था, बल्कि एक पारंपरिक और पिछड़े जीवन का प्रतीक था। उदाहरण के लिए,
सीरिया के स्वास्थ्य मंत्री रहे चिकित्सक और राजनीतिज्ञ बशीर अल-अज़मा (1910-92) ने आंगन वाले घरों को अस्वच्छ बताकर उनकी कड़ी आलोचना की।9 उन्होंने इनडोर सुविधाओं वाले स्वस्थ, आधुनिक अपार्टमेंटों की तुलना में आंगन वाले घरों की निंदा की।

प्लंबिंग की सुविधा वाले आवास, जो शहरी सीरियाई लोगों की बढ़ती संख्या द्वारा अपनाए जा रहे आवासों का प्रकार है। पुराने शहर में छोड़े गए घर खाली पड़े रहे।
इन्हें ग्रामीण इलाकों से आए गरीब अप्रवासियों को बेच दिया गया या किराए पर दे दिया गया, या फिर इन्हें स्कूलों और अनाथालयों जैसे कम प्रतिष्ठित उपयोगों में परिवर्तित कर दिया गया। घरेलू वास्तुकला के रूप में, इनका मूल्य कम हो गया और ये जर्जर हो गईं।
हाल ही में अलेप्पो के पुराने शहर की ऐतिहासिक परतों पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा है, न केवल इसके प्रसिद्ध स्मारकों पर।
प्रशंसा, गर्व और इस बात पर गर्व है कि शहर के स्थापत्य खजानों के संरक्षण, उन्नयन और प्रदर्शन के लिए प्रयास किए गए हैं। पिछली शताब्दी में, साथ ही साथ
अत्यधिक शहरी विकास और जनसंख्या विस्फोट के साथ, अलेप्पो में
शहर के ऐतिहासिक केंद्र के शहरी नवीनीकरण और संरक्षण के कई अभियान देखे गए हैं, जिनमें सफलता का स्तर अलग-अलग रहा है।
216 हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉघ

3. अलेप्पो के आधुनिक उपनगर 'अज़ीज़िया में एक प्रतिष्ठित परिवार का यूरोपीय शैली का विला
(लगभग 1930 में निर्मित; वास्तुकार: पॉल मिकेली)। लेखक द्वारा खींची गई तस्वीर, 1997।

शहरी संरचना के परिवर्तन के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय और स्थानीय विशेषज्ञों, योजनाकारों, वास्तुकारों, इतिहासकारों और स्थानीय नेताओं को शामिल करते हुए जोरदार बहसें भी हुईं।10 फ्रांसीसी शासनादेश (1920-46) के दौरान, और
1946 में सीरिया को फ्रांस से स्वतंत्रता मिलने के बाद, नए गणराज्य के प्रमुख शहरों के विस्तार को विनियमित करने के लिए व्यापक योजनाएँ तैयार की गईं।
1950 के दशक से लेकर 1970 के दशक तक, शहरी योजनाकारों की एक श्रृंखला ने शहर की सीमाओं को भेदने की परिकल्पना की।
पुराने शहर में वाहनों के आवागमन के लिए उपयुक्त चौड़ी सड़कें थीं। शहर ने इन सिफारिशों को वर्षों में धीरे-धीरे लागू किया, जिसके परिणामस्वरूप... ऐतिहासिक केंद्र में शहरी संरचना का काफी नुकसान हुआ। इन सड़कों के दोनों ओर आधुनिक ऊंची इमारतें खड़ी हो गईं, जिससे आधुनिक वाणिज्यिक गलियारे बन गए। कुछ प्रसिद्ध स्मारक, जैसे कि महान मस्जिद,
इन्हें संरक्षित किया गया और चौड़ी सड़कों, ट्रैफिक लाइटों और स्थानिक अलगाव के एक नए शहरी संदर्भ को प्राप्त किया गया।
1980 के दशक की शुरुआत में, स्थानीय वास्तुकारों और पश्चिमी विशेषज्ञों और शहरी योजनाकारों के एक गठबंधन ने अलेप्पो को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित कराने के लिए पैरवी की।
धरोहर स्थल। 1986 में इसे सूचीबद्ध किए जाने के बाद, आक्रामक अभियान चलाए गए।
शहरी परिवर्तन रुक गया। हालांकि शहर के अधिकारियों ने पहले काम किया था। हरम एक जीवनी के रूप में 217

एक वृद्ध शहरी वातावरण को समकालीन आर्थिक उपयोगों के लिए रूपांतरित करना,

2005.14

संस्थानों के साथ-साथ, व्यक्तिगत संपत्ति मालिकों और उद्यमियों ने भी पुराने शहर की वास्तुकला में नए सिरे से पैदा हुई रुचि का लाभ उठाया है। संरचना। जबकि संगठन आमतौर पर बुनियादी ढांचे, पड़ोस, ऐतिहासिक स्मारकों या शहरी पुरातत्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वहीं व्यक्तिगत उद्यमियों के प्रयास स्वाभाविक रूप से व्यक्तिगत इमारतों पर केंद्रित होते हैं— विशेष रूप से
इस मामले में, आंगन वाले मकान और उनकी व्यावसायिक क्षमता।15 आंगन वाले मकानों के लिए रियल एस्टेट बाजार फिर से जीवंत हो गया है। बहुत से अलेप्पो और दमिश्क में पुराने घरों का जीर्णोद्धार किया जा रहा है, कुछ घरों का जीर्णोद्धार उनके मालिकों द्वारा निजी उपयोग के लिए किया जा रहा है, और अन्य का, अधिक स्पष्ट रूप से, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के रूप में किया जा रहा है। वास्तुकला की वह शैली जिसे पहले कम प्रतिष्ठा वाले उपयोगों तक सीमित कर दिया गया था, अब नए रूप में सामने आ रही है।
लाभदायक उद्यमों में परिवर्तित हो रहे हैं जो अपनी अपील 218 हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉघ से प्राप्त करते हैं

हाल ही में पुनर्मूल्यांकित क्षेत्र। अलेप्पो का जुदैदा इलाका, विशेष रूप से
अल-हताब स्क्वायर और सिसी स्ट्रीट के आसपास का इलाका काफी हद तक विकसित हो चुका है।
1995 से, पुनर्निर्मित आंगन वाले घरों में रेस्तरां, बेड-एंड-ब्रेकफास्ट, स्मारिका दुकानें और बार संचालित हो रहे हैं। जुडायडा एक पसंदीदा स्थान बन गया है।
फैशनपरस्त सीरियाई लोगों और पर्यटकों दोनों के लिए एक पसंदीदा स्थान, और इस अर्थ में यह एक जीवंत और सफल शहरी क्षेत्र है।
हालांकि, कुछ अलेप्पोई वास्तुकारों और आलोचकों ने इसका जश्न मनाने से इनकार कर दिया है।
इस विकास के बारे में वे बताते हैं कि पुराने शहर का अधिकांश हिस्सा अभी भी वंचित है, और पुनर्वास प्रयासों से एक नया स्वरूप सामने आया है।

यह एक प्रकार की अचल संपत्ति सट्टेबाजी है जिससे कुछ शहरी निवासियों को लाभ होता है, लेकिन अधिकांश को नहीं।16 पुराने शहर के 150,000 निवासियों में से अधिकांश सदस्य हैं।
उन बड़े, गरीब परिवारों के बारे में जो घटिया और भीड़भाड़ वाली परिस्थितियों में रहते हैं।
सीरियाई मध्यमवर्गीय लोगों और पर्यटकों द्वारा पसंद किए जाने वाले स्मारकों और व्यवसायों के यात्रा मार्गों से कुछ ही दूरी पर, गरीबी अक्सर स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, और भूमिगत रूप से मौजूद रहती है। अर्थव्यवस्थाएँ फल-फूल रही हैं।17 पुराने शहर के ऐसे क्षेत्रों में, विशेष रूप से पूर्वी मोहल्लों में, पुराने आंगन वाले घर सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक नहीं होते। बल्कि, वे अक्सर जर्जर आवास की दयनीय वास्तविकता मात्र होते हैं।
जहां मरम्मत के बार-बार किए गए प्रयास एक अप्रचलित वास्तुकला द्वारा लगातार विफल हो जाते हैं जो आश्रय देने के बजाय दम घोंटने का काम करती प्रतीत होती है।18
अलेप्पो में आंगन वाले घरों के शहरी स्वरूप और उपयोग में आए परिवर्तन का विश्लेषण करके मैं यह विचार कर सकता हूँ कि सीरिया में विरासत की अवधारणा घरेलू वास्तुकला के इर्द-गिर्द कैसे विकसित हुई है। मैं यहाँ केवल घरेलू वास्तुकला पर ही ध्यान केंद्रित नहीं कर रहा हूँ।
संरक्षण की प्रक्रिया—जिसमें उसकी सापेक्ष सफलताएँ और असफलताएँ शामिल हैं—बल्कि संरक्षण के उद्देश्य, यानी आंगन के बारे में स्थानीय समझ ही अधिक महत्वपूर्ण है।
घर।
1946 में स्वतंत्रता के बाद, जब अभिजात वर्ग और मध्यम वर्ग के लोगों का पलायन हुआ
आधुनिक पड़ोसों में रहने वाले शहरी सीरियाई लोगों के लिए यह व्यापक और व्यापक हो गया था।
अपरिवर्तनीय रूप से, आंगन वाले मकान राज्य के सांस्कृतिक संस्थानों में विरासत की वस्तु के रूप में उभरने लगे। पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालय लोक परंपराओं के दो प्रमुख संग्रहालय (मताहिफ अल-तकलीद अल-शाबिया) बनाए गए, दोनों ही प्रारंभिक आधुनिक घरेलू शहरी वास्तुकला के शानदार उदाहरणों

में स्थित हैं: दमिश्क में संग्रहालय (1954 में स्थापित) क़सर अल-अज़्म में, जो असद पाशा अल-अज़्म का अठारहवीं शताब्दी का घर था,19 और अलेप्पो में संग्रहालय (1967 में स्थापित) अठारहवीं शताब्दी में स्थित है।
बायत अजिकबाश (1979 तक)।20 जैसा कि मैंने अन्यत्र तर्क दिया है, इन संग्रहालयों में, स्थापत्य परिवेश और प्रदर्शित वस्तुएं दोनों ही अमूर्त थीं।
उन्हें उनके मूल संदर्भों से अलग करके एक प्रतिरूप के रूप में एक साथ प्रस्तुत किया गया है।
यह एक प्रामाणिक पुराना सीरियाई घर है, न कि ऐतिहासिक या कलात्मक रुचि की वस्तु के रूप में।
हरम एक जीवनी के रूप में 219

अठारहवीं शताब्दी की महिलाओं के स्वागत समारोह का डायोरामा
दमिश्क में कमरा

लोक परंपराओं का संग्रहालय (क़स्र अल-अज़्म)। रेहा गुनाय द्वारा खींची गई तस्वीर, 1983।
आगा खान के सौजन्य से
वास्तुकला के लिए पुरस्कार।

अपने आप में।21 दोनों लोककथा संग्रहालयों के संग्रह में शामिल हैं: ओटोमन काल के उत्तरार्ध की रोजमर्रा की उपयोग की वस्तुएं और साज-सामान, जिन्हें घर में उनके मूल कार्य को दर्शाने के लिए व्यवस्थित किया गया है। क़सर में कई कमरे।
अल-अज़्म में पुरुषों के स्वागत कक्ष, महिलाओं के स्वागत कक्ष जैसे कई दृश्य शामिल हैं।
स्वागत कक्ष और स्नानागार, जिसमें उस समय की वेशभूषा में सजे हुए पुतले उचित वस्तुओं के साथ रोजमर्रा की गतिविधियों में लगे हुए दिखाए गए हैं (चित्र 4)।
जिन दो भव्य भवनों में संग्रहालय स्थित हैं, विशेष रूप से बैत अजिकबाश, वे आधुनिकतावादी और पश्चिमीकरण की भावना के उदाहरण हैं।
अठारहवीं शताब्दी में बने ये ओटोमन काल के थे; इनका निर्माण कुलीन वर्ग के सदस्यों द्वारा किया गया था।
इस्तांबुल के नवीनतम रुझानों को अपनाया गया है। हालाँकि, ये प्रदर्शन अठारहवीं शताब्दी के ऐतिहासिक रूप से सटीक होने का दावा नहीं करते हैं। ये किसी शैलीगत या ऐतिहासिक विकास का दस्तावेजीकरण नहीं करते, बल्कि पूर्व-आधुनिकता के एक शाश्वत क्षण का पुनर्निर्माण करते हैं। दमिश्क और अलेप्पो के राष्ट्रीय कला संग्रहालयों के विपरीत, जहाँ उत्कृष्ट कृतियों को प्रदर्शित किया जाता है...
उनके निर्माण के सख्त कालानुक्रमिक क्रम में और सावधानीपूर्वक लेबल किए गए, 220 हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉघ में

लोककथा संग्रहालय में प्रदर्शित वस्तुएं कला की वस्तुएं नहीं हैं, न ही उन्हें व्यवस्थित किया गया है।
तिथि के अनुसार। परिणामस्वरूप, लोक परंपराओं के संग्रहालयों में प्रदर्शित वस्तुएँ

यह किसी विशिष्ट समय और स्थान का नहीं, बल्कि एक शाश्वत लोककथात्मक अतीत का आभास देता है।
1950 और 1960 के दशक में इन राज्य संस्थानों में प्रस्तुत की गई कालातीत प्रस्तुति उस तरीके को प्रतिध्वनित करती है जिसमें पुराने आंगन वाले घर को दर्शाया गया है।
आज जिस तरह से कल्पना और चित्रण किया गया है। हालाँकि, एक महत्वपूर्ण अंतर है:
हालांकि आज के समय में आंगन वाले घरों की नई-नई छवियां सीरियाई लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं, लेकिन लोक परंपराओं के संग्रहालयों में ऐसी कोई प्रदर्शनी नहीं है।
वफादार या उत्साही अनुयायी। सीरिया के संग्रहालय अक्सर सुनसान रहते हैं, सिवाय उन पर्यटकों और स्कूली बच्चों के जो अपनी-अपनी बसों से आते हैं। वैश्विक दक्षिण के कई देशों में, संग्रहालय राज्य संस्थाएं हैं। राष्ट्रीय पहचान के आधार स्तंभ तो हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि वे स्थानीय समुदाय के लिए महत्वपूर्ण या प्रासंगिक संदर्भ बन पाए हों।22 इसके विपरीत, सीरियाई लोग—
विशेषकर युवा लोग आंगन वाले घरों के नवनिर्मित व्यावसायिक स्थलों - रेस्तरां, कैफे और नाइटक्लबों - की ओर उमड़ पड़ते हैं।
आंगन वाले मकानों ने उस स्थिति में सफलता हासिल की है जहां संग्रहालय असफल रहे हैं, यानी युवा दर्शकों को पैतृक परिवेश की ओर आकर्षित करने में। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, 1990 के दशक में सीरियाई लोकप्रिय संस्कृति में दृश्यमान अतीत में नए सिरे से रुचि देखी गई और ऐतिहासिक टेलीविजन धारावाहिकों के रूप में ऐतिहासिक स्वरूप का व्यावसायीकरण और वस्तुकरण हुआ।
ऐतिहासिक संदर्भों में और इतिहास की ओर वापसी के शीर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया,
जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इन्हें न केवल उत्सुक जन दर्शक मिलते हैं बल्कि विद्वानों का ध्यान भी आकर्षित हुआ है।23 हर दूसरे वर्ष, दमिश्क में बेहद लोकप्रिय मारद अल-तौथिक (दस्तावेज़ीकरण का उत्सव) आयोजित होता है, जिसमें विभिन्न सरकारी एजेंसियां ऐतिहासिक दस्तावेजों का प्रदर्शन करती हैं। इसके अलावा, जैसा कि

ऊपर उल्लेखित, हाल के और पुराने ऐतिहासिक उपन्यास और संस्मरण पुराने आंगन वाले घर में जीवन का वर्णन करते हैं। पसंदीदा में से एक है कड़वे-मीठे संस्मरण द्वारा लिखित।
सिहम तुर्जुमान की रचना 'या मल अल-शाम' का उदाहरण है, जिसकी लेखिका संयोगवश दमिश्क के पुराने शहर के संरक्षण के लिए एक कार्यकर्ता हैं।24 यहां तक कि वे उपन्यास भी जो अतीत के प्रति कोमल उदासीनता से दूर हैं, घर की स्थानिक सेटिंग पर गहराई से ध्यान केंद्रित करते हैं और इसे महिला पात्रों से जोड़ते हैं।25 समर अत्तार के उपन्यास 'अल-बायत फ़ी सहत अर्नुस' में भी यही स्थिति है, जो तीन महिलाओं के जीवन के केंद्र में घर को रखता है, साथ ही घुटन भरे माहौल की निंदा भी करता है।
निरर्थक, दोहराव वाले घरेलू कामों की नीरसता महिलाओं के दैनिक जीवन को संरचित करती है और सीरियाई समाज द्वारा उनके दमन को दर्शाती है।
इस घटना को विशेष रूप से उल्लेखनीय बनाने वाली बात यह है कि
सीरिया में—कई अन्य स्थानों के विपरीत, जहाँ स्थानीय लोगों की तुलना में पश्चिमी लोग अधिक सक्रिय हैं
हरम एक जीवनी के रूप में 221

नागरिक, और खासकर युवा लोगों की तुलना में वृद्ध लोग, ऐतिहासिक स्थलों की तलाश करते हैं और
पैतृक इतिहास—इतिहास की लोकप्रियता सभी वर्गों के लोगों में देखी जाती है।
जीवन के हर क्षेत्र में, यहाँ तक कि शहरी और युवा लोगों में भी, यह प्रभाव देखा गया है। अपनी अंतर्दृष्टिपूर्ण पुस्तक 'ए न्यू ओल्ड दमिश्क' में, मानवविज्ञानी क्रिस्टा सलामंद्रा ने अतीत के कुछ रूपों और छवियों के पुनरुत्पादन और पुनर्प्रसंगीकरण का पता लगाया है, जिसमें पुराने दमिश्क के घर से लेकर पारंपरिक भोजन और समकालीन दमिश्क में उनके सामाजिक अर्थ और उपयोग तक शामिल हैं। "परंपरा की प्रतिष्ठा से किसे लाभ होता है?" इस प्रश्न पर आधारित होकर, उन्होंने पाया कि दमिश्क में कुछ समूह शहर से अपने वास्तविक या काल्पनिक जुड़ाव का बखान करते हैं।

सामाजिक भेदभाव और समूह पहचान बनाने और लागू करने के उद्देश्य से अतीत: "पुराने शहर की थीम पर आधारित कला प्रदर्शनियाँ और अन्य पुनर्कल्पना कार्यक्रम"
सामाजिक पहचान की ऐसी कथाएँ प्रस्तुत करना जो राज्य की नाममात्र समावेशी संरचनाओं के विपरीत हों... उदासीन संरचनाएँ, और बहिष्कृत समूहों द्वारा उन पर की गई प्रतिक्रिया, सामाजिक भेद के तरीकों के रूप में कार्य करती हैं, क्योंकि विभिन्न सामाजिक कलाकार बदलते मूल्यों के संदर्भ में प्रतिष्ठा और मान्यता के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। पुराना दमिश्क, भौतिक स्थान और कल्पित आदर्श दोनों के रूप में, एक
शहर में रहने वाले विभिन्न समूहों के बीच महत्वपूर्ण विभाजन रेखा। चयनात्मक
पुराने दमिश्क का उपभोग और अस्वीकृति ही सीमा निर्माण और पुनर्निर्माण का आधार है।26
अलेप्पो में आंगन वाले घर को लेकर जो चर्चा चल रही है, वह दमिश्क के लिए ऊपर बताई गई चर्चा के समान है। हालांकि, राजधानी में सामाजिक भेद का निर्माण राजनीतिक रूप से संवेदनशील है, लेकिन इसके राजनीतिक दावे
उत्तरी प्रांतीय शहर में यह कुछ हद तक मंद है, जिसका अपना विशिष्ट, विषम सामाजिक परिदृश्य है - जो महत्वपूर्ण उपस्थिति से परिभाषित है।
ईसाई समुदायों और द्विभाषी समूहों (आर्मेनियाई और कुर्द) के घरों की विशिष्ट भौतिक संरचना क्या है? आंगन वाले घरों की खासियत क्या है? सीरियाई शहरों के (चित्र 5)? सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक के।
सदियों से, घरों में सामाजिक, सांस्कृतिक और जलवायु संबंधी चिंताओं के आधार पर एक सुव्यवस्थित स्थानिक क्रम है।27 बाहरी रूप से, वे सड़क पर एक साधारण उपस्थिति, एक मामूली दरवाजे और कुछ ही खिड़कियों से पहचाने जाते हैं। दहलीज पार करते ही, व्यक्ति एक आंतरिक आंगन में प्रवेश करता है, जो आमतौर पर आयताकार होता है और हमेशा आकाश की ओर खुला रहता है। आंगन कई मंजिलों वाले घरेलू क्षेत्रों से घिरा हुआ है। आंगन के दो किनारों पर अक्सर विशेष स्थान होते हैं। आंगन पर एक भव्य रूप से सजा हुआ अग्रभाग है। यह शीतकालीन स्वागत कक्ष, या क़आ को दर्शाता है। अक्सर क्रॉस के आकार का और गुंबदनुमा, क़आ में एक अलंकृत आंतरिक भाग होता है, जिसकी दीवारें और छतें सजी हुई होती हैं।

रंगे हुए लकड़ी के पैनल और संगमरमर के मोज़ेक से ढके फर्श। गर्मियों में स्वागत समारोह आंगन में आयोजित किए जाते हैं, जिसके केंद्र में एक पूल है, जो 222 हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉघ से घिरा हुआ है।

5 इवान और आंगन, बेत
एक गीत के साथ (आज सिलिसिया)
प्राथमिक विद्यालय), अलेप्पो।
विभिन्न खंड इससे संबंधित हैं
सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक। जी. एरिक और एडिथ मैटसन की तस्वीर
संग्रह, 1936. सौजन्य से
कांग्रेस पुस्तकालय का,
प्रिंट और फोटोग्राफ प्रभाग, lc-Dig-matpc-03558.

सुगंधित नींबू के पेड़ों वाला गमला, या मनोरंजनकर्ताओं के लिए एक अंतर्निर्मित मंच,
एक ऊंचे इवान (तीन तरफा, मेहराबदार कमरा; स्थानीय भाषा में "लिवान") द्वारा समर्थित, जो आंगन की ओर खुला होता है। अलेप्पो में इवान हमेशा उत्तर की ओर मुख किए होते हैं।
जलवायु कारणों से।28 इन मुख्य स्थानों के अलावा, आंगन वाला घर
इसमें ऐसे कमरे हैं जो एक दूसरे से अगल-बगल होने के बजाय आंगन से जुड़े हुए हैं, साथ ही रसोई, शौचालय और भूमिगत भंडारण क्षेत्रों जैसी सुविधाएं भी हैं।
समकालीन शैली में आंगन वाले घरों का भौतिक नवीनीकरण
सीरिया में स्थिति बेहद असमान रही है, जिसमें विचारशील पुनर्निर्माण से लेकर कई तरह के बदलाव शामिल हैं।
प्रशिक्षित वास्तुकारों से लेकर जल्दबाजी में किए गए पुनर्निर्माण तक, जिनमें प्राच्य शैली के विवरण भरे हुए हैं। अनुकूलनशील पुन: उपयोग ने कभी- कभी विशिष्ट तत्वों में परिवर्तन को अनिवार्य बना दिया है। कभी-कभी किसी स्थान के नए उपयोग का अनुभव उसके प्रारंभिक आधुनिक उपयोग से बिल्कुल अलग होता है—जैसे कि अब ढके हुए आंगनों के मामले में।
सर्दियों में इसे गर्म रखा जाता है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है: हालांकि एक आंगन वाले घर में स्थित होटल प्रामाणिक ऐतिहासिक वास्तुकला का अनुभव प्रदान करने का दावा करता है, लेकिन मेहमानों को आकर्षित करने के लिए इसे आधुनिक सुविधाओं वाला एक आधुनिक होटल होना ही चाहिए।
हरम एक जीवनी के रूप में 223

6. अलेप्पो में मार्टिनी हाउस का स्वागत कक्ष (1978; वास्तुकार, उमर वास्फी मार्टिनी)।
अठारहवीं शताब्दी के आंगन वाले घर की सजावट के टुकड़ों को आधुनिक इंटीरियर डिजाइन के हिस्से के रूप में पुनः प्रासंगिक बनाया गया है।
मार्टिनी द्वारा खींची गई तस्वीर, 1978-83। सौजन्य से।
आगा खान आर्किटेक्चर पुरस्कार।

पुराने आंगन वाले मकानों के अनुभव को शाब्दिक के बजाय भौतिक रूप से पुनर्निर्मित करने के संदर्भ में, एक और घटना पर भी ध्यान देना आवश्यक है: नए संदर्भों में आंगन वाले मकानों के चुनिंदा अंशों का पुनर्निर्माण। पुराने शहर में घरों के नवीनीकरण के अलावा, अक्सर "पुराने अलेप्पो" का अनुभव भी देखने को मिलता है।
आधुनिक घरों और व्यवसायों में पूर्व-आधुनिक सजावटी योजनाओं के चुनिंदा उपयोग के माध्यम से इसे दर्शाया गया है। नए उपनगरों में स्थित अपार्टमेंटों में
आधुनिक फ्लोर प्लान में अक्सर रिसेप्शन रूम समकालीन शैली में बने पेंट किए गए लकड़ी के पैनलों से सजे होते हैं, जिन पर सुलेख, पुष्प और ज्यामितीय अलंकरण, कांच के लैंप, सोने के पानी चढ़े दर्पण और नीची मेजें बनी होती हैं।

पीतल की ट्रे और पारंपरिक घरों से जुड़े अन्य सजावटी तत्वों से सुसज्जित। ओटोमन काल की अलंकृत लकड़ी की छत इसके ऊपर बनी हुई है।
मार्टिनी हाउस का स्वागत कक्ष (चित्र 6)29 नए पड़ोस में
अल-शाहबा’। छत के किनारों पर आधुनिक दर्पण लगे हैं, जिनके बीच में प्राचीन लकड़ी के फूलों वाले पैनल बारी-बारी से लगे हैं। अतिरिक्त फूलों और सुलेख वाले पैनल भी हैं।
दीवारों को सजाया गया है और इन्हें आधुनिक दरवाजों पर लगाया गया है। सैलून की सजावट में तथाकथित लुई शैली में नीची, प्राच्य मेजें और फर्नीचर का संयोजन है।
फारूक शैली—अत्यधिक अलंकृत, प्रारंभिक आधुनिक यूरोपीय शैली का एक स्थानीय संस्करण।
सोने की परत चढ़े फर्नीचर, भारी फ्रेम और क्रिस्टल झूमर से सुसज्जित। मार्टिनी हाउस में इस्तेमाल की गई ओटोमन छत और पैनल, जो 1747 के हैं, sal-224 Heghnar Zeitlian Watenpaugh

ध्वस्त आंगन वाले घर से, जिसे बैत हमाविया के नाम से जाना जाता था, उसे अलग कर दिया गया।
पुराने शहर के उत्तरपूर्वी छोर पर स्थित क़र्लिक का इलाका।30
मार्टिनी हाउस का डिज़ाइन आधुनिक कुलीन घरों के बैठक कक्ष में ऐतिहासिक तत्वों को जानबूझकर शामिल करने वाले शुरुआती डिज़ाइनों में से एक था, जो अलेप्पो को विश्व धरोहर स्थल घोषित किए जाने से पहले का है। इस तरह की सजावटी योजनाएँ, जिनमें कभी-कभी एक अलग प्राच्य बैठक कक्ष भी शामिल होता है, आमतौर पर उन परिवारों के घरों में देखने को मिलती हैं जो खुद को उच्च वर्ग का मानते हैं या जिनके पास
उच्चवर्गीय आकांक्षाएँ। मध्य पूर्व में आधुनिक इंटीरियर डिजाइन में पुराने अलंकरणों के तत्वों का उपयोग, अपने आप में नया होते हुए भी, परिष्कृत रुचि को दर्शाता है।
नवधनी वर्ग की नई और आयातित चीजों के प्रति लालसा के विपरीत। प्रामाणिक या पुनर्निर्मित विरासत वस्तुओं पर इसका जोर यह दर्शाने के लिए है कि... परिवार की एक पुराने परिवार के रूप में स्थिति को मजबूत करना—संभवतः, हालांकि जरूरी नहीं, इसमें अयान (प्रतिष्ठित व्यक्तियों) की श्रेणी में

इसकी सदस्यता शामिल है, जो विरासत में मिली संपत्ति, भूमि स्वामित्व और विरासत में मिली संपत्ति वाले पारंपरिक सुन्नी मुस्लिम अभिजात वर्ग हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा और अलेप्पो में गहरी ऐतिहासिक जड़ों के साथ, ऐसे कई परिवार गर्व से अपने (पुरुष) पूर्वजों की जीवनियों को ऐसे सम्मानित संग्रहों में प्रदर्शित करते हैं।
रागिब अल-तब्बाख की 1920 के दशक के उल्लेखनीय नागरिकों का सार-संग्रह जैसी पुस्तकें
अलेप्पो.31 जैसा कि सलामंद्रा ने दमिश्क में इसी तरह के परिवारों के मामले में दिखाया है,32 विशिष्टता प्राप्त करने की यह प्रक्रिया एक ऐसे सामाजिक संदर्भ में तात्कालिक हो जाती है जहां पारंपरिक अभिजात वर्ग के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रभुत्व को अब स्वाभाविक नहीं माना जा सकता है और अक्सर यह अप्रचलित हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप
सीरिया में आजादी के बाद से हुए सामाजिक उथल-पुथल।
व्यवसाय भी नए और पुराने तत्वों को मिलाते हैं: दमिश्क में शेरेटन होटल में एक ओरिएंटल कैफे है जो हुक्का और पारंपरिक पेय पदार्थ परोसता है, जो मूल रूप से एक महंगे होटल के परिसर के भीतर पुराने शहर के अल-नवाफरा जैसे पारंपरिक कॉफीहाउस का पुन: निर्माण करता है।
यह मध्यम वर्ग के सीरियाई लोगों और विदेशियों की जरूरतों को पूरा करता है। 33 काम पर प्रक्रिया है
जिसके द्वारा एक ऐतिहासिक रूप या प्रथा, अपने मूल सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ से अलग होकर, एक ऐसी वस्तु बन जाती है जिसे पुनः प्रासंगिक बनाया जा सकता है और
कहीं भी पुनरुत्पादित किया जा सकता है। मैं वस्तुकरण और पुनर्प्रसंगीकरण की इस प्रक्रिया को अपने आप में कमतर नहीं आंकता: यह निश्चित रूप से एक रचनात्मक कार्य हो सकता है।
अतीत को वर्तमान में नए उपयोगों और अर्थों के लिए पुनर्परिभाषित करना। फिर भी यह है
यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि अलेप्पो के पुराने शहर का ताना- बाना, अपने लंबे इतिहास के साथ, इन रूपों को उनकी सांस्कृतिक पूंजी प्रदान करता है; यह उनका

उपभोग किए जा रहे शहर से दूर चयनात्मक प्रजनन।34 मूल्यवान रूप का उसके संदर्भ से यह अलगाव हमें अनदेखा नहीं करना चाहिए।
आधुनिक सीरिया में, ओटोमन काल की घरेलू वास्तुकला के प्रति रुचि अभी भी बनी हुई है।
स्थानीय दृश्य अतीत की चुनिंदा यादों का एहसास। आंगन वाला घर
हरम एक जीवनी के रूप में 225

और इसके हिस्सों को वस्तु के रूप में देखा जाता है और उन्हें बनाने वाले सामाजिक संदर्भ में कोई रुचि दिखाए बिना उनका उपभोग किया जाता है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की बहुत कम समझ है।
जिन प्रांतों में ये घर बनाए गए थे: ओटोमन साम्राज्य के प्रांत, जहाँ से फैशन शाही केंद्र से उत्पन्न होते थे, और जहाँ प्रांतीय
शहर एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते थे। आंगन वाले घर में पनपने वाले पारिवारिक और घरेलू संबंधों के प्रकार पर भी कोई विस्तृत चर्चा नहीं है: उच्च पदस्थ महिलाओं का एकांतवास, नौकरों या दासों का शोषण, और
बहुविवाह। चूंकि यह एक पुरानी यादों से भरी लालसा का विषय बन गया है, इसलिए समकालीन कल्पना में आंगन वाले घर का आलोचनात्मक रूप से विश्लेषण नहीं किया जाता है।
इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका पुराने आंगन वाले घर की साहित्यिक संरचनाओं और उसके भौतिक संरक्षण की आलोचना के माध्यम से है।
लिंग के परिप्रेक्ष्य से, एक प्रमुख महिला की जीवनी और उनके द्वारा प्रदर्शित स्थानिक पदानुक्रमों पर ध्यान केंद्रित करके।

आंगन घर का उपयोग वैकल्पिक निर्माण के रूप में किया जाता है

मारियाना मर्राश (1848-1919) ने अपना पूरा जीवन अलेप्पो में बिताया (चित्र 7)।
उनके जीवन के बारे में जानकारी बीसवीं शताब्दी में लिखी गई अरबी भाषा की कुछ चुनिंदा जीवनियों से मिलती है।35 फ़िलिब दी ताराज़ी ने कहा कि
तारिख अल-सिहाफा अल-अरबिया (अरबी पत्रकारिता का इतिहास) के अनुसार, वह अखबार में लेख प्रकाशित करने वाली पहली अरब महिला थीं।36 प्रारंभिक

जीवनी (तराज़ी की जीवनी सहित) उनकी साहित्यिक प्रतिभा के विकास का श्रेय देती हैं—
वह अपने माता-पिता, जो स्वयं बुद्धिजीवी थे, और अपने दो भाइयों, फ्रांसिस और अब्दुल्ला मर्रश, के प्रभाव में थीं, जो महत्वपूर्ण थे।
अलेप्पो और अरबी भाषी प्रवासी समुदाय में साहित्यिक हस्तियों के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध स्थापित हुआ।37 अपनी बेटी को शिक्षित करने के लिए प्रोत्साहित करके, उसके माता-पिता ने व्यापक रूप से प्रचलित धारणा को चुनौती दी।
यह धारणा थी कि किसी लड़की को शिक्षित करना अनुचित है, "ताकि वह स्कूल में न बैठे।"
पुरुषों का स्वागत कक्ष।"38 यह सूत्र लैंगिक भूमिकाओं के स्थानिक आयाम के बारे में स्पष्ट जागरूकता को दर्शाता है: एक पारंपरिक सम्मानित महिला ऐसा नहीं करती है
पुरुषों के स्वागत कक्ष में बैठें; एक शिक्षित आधुनिक महिला उस स्थान पर बैठने का अधिकार जता सकती है, जिससे उसके नियमों में बदलाव आएगा। हम इस विषय पर बाद में चर्चा करेंगे।
नीचे सुझाव दिया गया है।
मारियाना मर्राश उस समय में रहती थीं जब नाहदा (जागृति) का दौर चल रहा था, जो उन्नीसवीं शताब्दी में ओटोमन साम्राज्य के अरबी भाषी प्रांतों में आधुनिक बौद्धिक जीवन के उत्कर्ष को दर्शाने वाला शब्द है। हालाँकि इस आंदोलन से जुड़े शहर बेरूत, काहिरा और
दमिश्क, अलेप्पो भी एक महत्वपूर्ण स्थल था। अलेप्पोवासी हमेशा तत्पर रहते हैं।
यह याद दिलाना कि नाहदा की उत्पत्ति उनके शहर में हुई थी, क्योंकि इसमें पहले 226 हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉघ थे।

7 मारियाना मार्रश। से
फ़िलिब दी तराज़ी, तारिख अल-सिहाफ़ा अल-अराबिया, खंड। 1, भाग 2, पृ. 241.

मध्य पूर्व में अरबी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए प्रिंटिंग प्रेस का उपयोग किया गया।39 इस प्रकार अलेप्पो में आधुनिक अरबी साहित्य को बढ़ावा दिया गया, भले ही शहर का साहित्यिक स्तर सीमित था।
ये समुदाय मूलतः बहुभाषी थे: पुस्तकें और समाचार पत्र ओटोमन तुर्की, अरबी, अर्मेनियाई, हिब्रू और फ्रेंच में प्रकाशित होते थे। आधुनिक साहित्यकारों में से कुछ, जो सक्रिय साहित्य जगत का हिस्सा थे,
अलेप्पो का बुद्धिजीवी समुदाय 'अज़ीज़िया जैसे नए उपनगरों में रहता था, जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है और जिसे चित्र 3 में दिखाया गया है, जबकि अन्य लोग पूर्व-आधुनिक बस्तियों में रहते थे।
जुदैदा के पड़ोस।40 जबकि विभिन्न यूनाइट और ईसाई
इस साहित्यिक आंदोलन में पूर्वी संप्रदायों का प्रमुख योगदान था; इसके सदस्य शहर के सभी समुदायों से आते थे। कई, जैसे मार्राश बंधुओं ने...

प्रवासी अरबी भाषी समुदायों से उनके मजबूत संबंध थे और वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय थे। अलेप्पो की उन्नीसवीं सदी की कुछ प्रमुख हस्तियों में अरबी भाषी समुदाय भी शामिल थे।
बीसवीं सदी के कुछ प्रमुख व्यक्तित्व आज भी अच्छी तरह से याद किए जाते हैं, जिनमें समाचार पत्र संपादक रिज़क़ल्लाह हसन और इस्लामी आधुनिकतावादी 'अब्द अल-रहमान अल-कवाकिबी शामिल हैं।41 बीसवीं सदी के आरंभिक काल की मारियाना मर्रश की जीवनियाँ हमें बताती हैं कि अरबी और फ्रेंच के ज्ञान में वह उत्कृष्ट थीं, साथ ही साथ
गणित में रुचि रखती थी; संगीत की सराहना करती थी; और कानून (मध्य पूर्व का एक तार वाला वाद्य यंत्र) बहुत खूबसूरती से बजाती थी। अल-तब्बाख ने देखा कि वह
अलेप्पो में वह अद्वितीय थी, और "लोग उसे अलग नजर से देखते थे।"42
हरम एक जीवनी के रूप में 227

उनकी असाधारण स्थिति ने कई प्रतिष्ठित युवकों को उनका हाथ मांगने के लिए प्रेरित किया।
शादी के बारे में। वह शुरू में अविवाहित रहना चाहती थी, लेकिन अपनी माँ के बाद...
मृत्यु के बाद उन्हें विवाह के लिए राजी किया गया और उन्होंने हबीब ग़दबन 43 को चुना, जो एक सम्मानित स्थानीय ईसाई परिवार के वंशज थे; उनके तीन बच्चे थे। बीसवीं शताब्दी के आरंभिक जीवनियों में विवाह के निर्णय और जीवनसाथी के चुनाव में मर्राश की असाधारण सक्रियता पर जोर दिया गया है।44 सभी जीवनियाँ मर्राश को उनके विवाह संबंधी निर्णय और जीवनसाथी के चुनाव में असाधारण भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती हैं।
उनकी लेखन शैली के विवरण से पहले यह जानकारी इस बात पर ज़ोर देती है कि मार्रैश ने सृजनात्मक और कलात्मक दोनों ही दृष्टियों से स्वयं को साकार किया। एक अन्य जीवनी मार्रैश के एक अनुकरणीय माँ के गुणों पर बल देती है: "वे [उनकी]
बच्चों के पास [मर्राश में] बच्चों की अच्छी प्रशिक्षक (मुरब्बिया), एक कोमल माँ, शिष्ट व्यवहार और गृह प्रबंधन में आदर्श महिला थी।"45

जीवनीकारों ने मार्रैश के लेखन करियर पर ध्यान केंद्रित किया और अपने पाठकों को इसके बारे में जानकारी दी।
उनका पहला लेख 1870 में एक अखबार में प्रकाशित हुआ था। उनके कई लेख
उनकी कविताएँ और लेख 1893 में प्रकाशित 'बिन्त फिक्र' (बुद्धि की पुत्री) नामक एक संग्रह में संकलित किए गए थे।46 उनकी कविताओं के विषय महिलाओं की शिक्षा से लेकर सुल्तान 'अब्द अल-हमीद की माता की प्रशंसा, जमील पाशा (अलेप्पो के आधुनिकीकरण करने वाले गवर्नर) की प्रशंसा और उनके भाई फ्रांसिस की मृत्यु पर शोकगीत तक थे। बीसवीं शताब्दी के आरंभिक काल की जीवनियों में उनकी कविताओं के अंश शामिल हैं।47
हमें कुछ व्यक्तिगत जानकारी भी दी गई है। मार्रैश ने एक बार यूरोप की यात्रा की थी। वह अपने सौम्य स्वभाव और सुंदर गायन के लिए प्रसिद्ध थीं। उनकी आवाज़, और सबसे महत्वपूर्ण बात, उनका सैलून, जिसे उन्होंने अनौपचारिक रूप से एक
परिष्कृत लोगों (अहल अल-फदल) के लिए क्लब (नदी)।48 परिष्कृत लोगों में दोनों लिंगों के बुद्धिजीवी शामिल थे, जो विज्ञान और साहित्य के विषयों पर बातचीत करते थे।
मर्राश के जीवनीकारों ने एक आदर्श के रूप में उनकी सकारात्मक भूमिका पर जोर दिया।
महिलाओं के व्यवहार और एक महिला शिक्षिका के रूप में। ईसा इस्कंदर अल-मालूफ़ ने 1919 में लिखा कि उनके लेखन का उद्देश्य "महिलाओं को सच्ची सांस्कृतिक परिष्कार [तमद्दुन] प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना" था।49 राघिब अल-तब्बाख ने 1925 में कहा कि मर्राश के लेखन ने महिलाओं से कायरता और लालच जैसे पारंपरिक स्त्री गुणों को त्यागने और इसके बजाय दृढ़ संकल्प और साहस के लिए प्रयास करने का आग्रह किया।50
मर्राश का बौद्धिक जीवन असाधारण था, लेकिन यह उस दौर की अन्य असाधारण महिलाओं के व्यवहार के अनुरूप था जो शिक्षित थीं, पत्रिकाओं में अपने विचार प्रकाशित करती थीं और साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन करती थीं जहाँ बुद्धिजीवी अपने विचार साझा करते थे।
दोनों लिंगों के लोग आपस में घुलमिल गए: कोई काहिरा में खेदीव इस्माइल की भतीजी राजकुमारी नाज़ली फ़ाज़िल (लगभग 1840-1913) के बारे में सोच सकता है,51 और मय्य ज़ियादा (1886-1941),

काहिरा में रहने वाली एक फ़िलिस्तीनी-लेबनानी महिला। ये महिला बुद्धिजीवी थीं
सार्वजनिक व्यक्तित्व रखने वाले पहले लोगों में से। उन्होंने यह उपलब्धि जरूरी नहीं कि 228 हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉघ

घरेलू दायरे से बाहर उनकी भौतिक उपस्थिति के माध्यम से नहीं, बल्कि सार्वजनिक क्षेत्र में प्रकाशित अपने लेखन के माध्यम से, और अपने लेखन को सार्वजनिक क्षेत्र में प्रकाशित करके, और अपने लेखन को सार्वजनिक क्षेत्र में प्रकाशित करके।
घरेलू परिवेश को बुद्धिजीवियों के लिए अर्ध-सार्वजनिक स्थानों में परिवर्तित कर दिया गया। हालाँकि, माना जाता है कि इन अधिवेशनों में प्रवेश पर कड़ा नियंत्रण था।
मारियाना मार्रश के मामले में जो बात असामान्य है, वह उनकी जीवनी में निर्मित उनकी छवि का विकास है। जबकि उनकी शुरुआती जीवनी में...
जीवनियाँ (तराज़ी, अल-हिम्सी, अल-मा'लुफ़ और अल-तब्बाख द्वारा) अग्रभूमि एक कवयित्री के रूप में उनकी पहचान और उनकी कविताओं के उद्धरणों के बावजूद, स्थानीय बुद्धिजीवी अंतवान शारावी द्वारा 1995 में प्रकाशित उनकी सबसे हालिया जीवनी इस पैटर्न से हटकर है।52 यह जीवनी सीरिया के सबसे पुराने निजी स्वामित्व वाले जर्नलों में से एक, मजल्लत अल-दाद में प्रकाशित हुई थी। अलेप्पो में व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली यह सामान्य रुचि वाली पत्रिका, शहर के बुर्जुआ वर्ग से दृढ़ता से जुड़ी हुई है और इसमें शारावी, महमूद हिरायतानी और अब्दुल्ला युर्की हलाक जैसे स्थानीय बुद्धिजीवियों द्वारा विभिन्न विषयों पर लेख शामिल हैं।
इसलिए इसे स्थानीय बहसों और विचारों का एक अच्छा मापदंड माना जा सकता है। 1995 की जीवनी में, हमें मार्राश के जीवन का एक संक्षिप्त, बुनियादी विवरण मिलता है।
इससे पहले उनके दोनों भाइयों के जीवन और कार्यों का विस्तृत वर्णन दिया गया है।
यह खंड पिछली जीवनियों के मुख्य बिंदुओं को दोहराता है, जो स्पष्ट रूप से अल-तब्बाख के व्यक्तित्व को सबसे सटीक रूप से प्रतिबिंबित करता है।
हालाँकि, 1995 की जीवनी का अधिकांश भाग...

यह मूल रचना है और इसमें मार्राश के सैलून का विस्तृत वर्णन है। यह वर्णन संभवतः मनगढ़ंत है: हमें ठीक से नहीं पता कि उसका घर कहाँ था।
स्थित है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐतिहासिक जानकारी के आधार पर हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि उनके सैलून में कौन आता था और वे क्या चर्चा करते थे। इसके विपरीत, कुस्ताकी अल-हिम्सी, जो अक्सर उस जगह पर मेहमान के रूप में आते थे जिसे वे मजा कहते थे-
लिस अल-अदब वा अल-अहबाब (साहित्य और प्रियजनों की सभाएँ) ने मर्राश की जीवनी में उनके बारे में बहुत कम ठोस विवरण प्रदान किए, यह चुनते हुए इसके बजाय अपनी कविता के अंश साझा करने के लिए।53 इस प्रकार ऐसा प्रतीत होता है कि अल-हिम्सी
उन्होंने मार्रैश की घरेलू सैलून शामों को उनके सार्वजनिक व्यक्तित्व का हिस्सा माना, या कम से कम उन्होंने मार्रैश की कविता को उनके सैलून की तुलना में अधिक स्थान दिया।
शारावी मर्राश की कविता का उद्धरण नहीं देते। उनकी जीवनी में उद्धृत कविताएँ उन सुलेख पैनलों पर पाई जाती हैं जो ओटोमन काल के घरेलू आंतरिक सज्जा को सुशोभित करते थे: वे कुछ गुमनाम काव्य दोहों का उल्लेख करते हैं। सुलेख पैनल के औपचारिक गुणों को एक भौतिक वस्तु के रूप में वर्णित करता है।54 शारावी की मर्राश की साहित्यिक संध्याओं की कल्पना एक सूची तक फैली हुई है।
अतिथिगण, जो उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में अलेप्पो के बौद्धिक जीवन का एक जीवंत चित्रण प्रस्तुत करता है। उपस्थित लोगों में जिब्राइल अल-दलाल और उनकी पत्नी मरकारित [मार्गुराइट] अजुरी शामिल थे।
वह इतनी खूबसूरत थी कि जब वह पेरिस में ओपेरा देखने जाती थी तो
हरम एक जीवनी के रूप में 229

फ्रांसीसी अखबारों ने उन्हें 'पूर्व का सितारा' कहा। कुस्ताकी अल-हिम्सी के साथ
उनकी चांदी की मूठ वाली आबनूस की छड़ी, युवा कवि फिक्तुर [विक्टर] खय्यात... शेख'अब्द अल-रहमान अल-कावाकिबी, शेख'अब्द अल-सलाम अल-तरमानिनी, फ्रांसिस मार्राश, रिज़कल्लाह हसन, शेख कामिल अल-ग़ाज़ी, कवि

अंतवान अल-सक्काल अपने बेटे मिखाइल के साथ, व्यापारी अंतुन शारावी [लेखक के पूर्वज] अपनी छाती पर सोने की घड़ी की चेन पहने हुए, और उनकी पत्नी हिलिन [हेलेन] शाहियत।”55 इस प्रकार मर्राश ने सबसे प्रतिभाशाली लोगों की मेजबानी की।
शहर में उनकी सभाओं में। पहली बार पढ़ने पर ऐसा प्रतीत होता है कि 1919 की जीवनी में प्रस्तुत पारंपरिक चिंता, कि एक शिक्षित महिला
पुरुषों के स्वागत कक्ष में बैठने का साहस दिखाने का उनका प्रयास सफल रहा: मार्रैश न केवल स्वागत कक्ष में बैठीं, बल्कि उन्होंने एक सभा की अध्यक्षता भी की जिसमें शामिल थे
पुरुष और महिलाएं, और विभिन्न धार्मिक समुदायों के सदस्य। हालाँकि, शारवी की प्रस्तुति में, पुरुषों के स्वागत कक्ष में प्रवेश कवयित्री को सशक्त नहीं बनाता। बल्कि, शारवी अपने वर्णन में, उन्हें हाशिए पर धकेलते हैं।
मर्राश एक मूक मेज़बान की भूमिका में ढल गई, जिससे उसकी दिखावट, भोजन और घर के बारे में चर्चाएँ बढ़ गईं और उसकी उपलब्धियों पर होने वाली किसी भी चर्चा को दरकिनार कर दिया गया।
या बौद्धिक चर्चा में उनके योगदान के संदर्भ में।
दरअसल, शारावी हमें बताते हैं कि जब "सिट मारियाना" अपना सैलून आयोजित करती थीं, तो वह हमेशा नवीनतम यूरोपीय फैशन पहनती थीं, या तो पूरी तरह से काले रंग के कपड़े या फिर पूरी तरह से काले रंग के कपड़े।
सफेद रंग की पोशाक में, गले में लेस लगी हुई।56 शारावी के लेख में आंगन की भौतिक और कामुक विशेषताओं पर एक लंबी और काव्यात्मक चर्चा है।
घर, जिसमें बैठने से मिलने वाले इंद्रिय सुखों पर एक विवेचन भी शामिल है। गर्मियों में नींबू के पेड़ों की छाया में और शाम को चमेली की खुशबू के बीच। वह आंगन वाले घर के स्वागत कक्ष का बड़े प्यार से वर्णन करता है। (क़ाअ).57 साहित्यिक गोष्ठी में अब्बासिद कविता जैसे विषयों पर एक सप्ताह पहले से तय की गई चर्चाएँ होती थीं। अतिथियों ने कविताएँ पढ़ीं, जिनमें शामिल हैं:
मर्राश के पसंदीदा, प्राचीन अंश जिनमें महान कवि-नायक 'अन-' का वर्णन है—

तारा अपनी प्रेमिका 'अबला.58 को संबोधित करता है। हुक्का पीते हुए, मर्राश के मेहमान काव्य प्रतियोगिताओं और खेलों में व्यस्त हो गए। एक प्रतियोगिता ने उन्हें मजबूर कर दिया।
प्रत्येक खिलाड़ी को पिछले खिलाड़ी की पंक्ति के अंतिम शब्द से कविता की एक नई पंक्ति शुरू करनी होती है।59 हमें यह भी बताया गया है कि क्या खाया गया था,
अलेप्पो के स्वादिष्ट व्यंजनों की एक विस्तृत सूची, ऋतु के अनुसार व्यवस्थित: गुलाब—
मई में फूलों की पंखुड़ियों का जैम और साल के अन्य समय में किब्बे लबानिय्ये (दही की चटनी में मीटबॉल), कैंडीड बैंगन और कड़वे संतरे का सिरप परोसा जाता था। जैसा कि शारावी हमें याद दिलाते हैं, एक लोकप्रिय कहावत है कि अलेप्पोवासी भोजन को महत्व देते हैं: अल-हलाबी बिहिब्ब बट्नुह (अलेप्पोवासी अपने पेट से प्यार करता है)।60 स्थानीय शराब और अराक, सौंफ के स्वाद वाला एक मादक पेय, का सेवन किया गया और सुबह तक चर्चाएँ चलती रहीं, जब नाश्ता परोसा गया।
230 हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉघ

शारावी द्वारा मर्राश के साहित्यिक गोष्ठी के काल्पनिक चित्रण में एक विषय पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
घर के कुछ चुनिंदा आंतरिक क्षेत्र: स्वागत कक्ष, विशेष रूप से
क़आ, इवान और आंगन; उनके सजावटी तत्व और साज-सज्जा; और उनमें होने वाली सामाजिक गतिविधियाँ। इस स्थान की यह विशेष कल्पना
आंगन वाले घर को साहित्यिक गोष्ठी के रूप में देखने से यह नहीं लगता कि यह केवल महिलाओं के लिए ही स्थान है—यह उस अर्थ में हरम नहीं है। बल्कि, आंगन वाला घर
साहित्यिक गोष्ठी एक ऐसा स्थान है जहाँ मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवियों का एक चुनिंदा समूह एकत्रित होता है।
दोनों लिंगों के लोग एकत्रित होते हैं। शारावी व्यक्तियों का वर्णन छोटे- छोटे लेकिन महत्वपूर्ण विवरणों के माध्यम से करते हैं जो उनकी मध्यमवर्गीय स्थिति को प्रकट करते हैं: श्रीमती अजुरी उपस्थित होती हैं।

पेरिस में ओपेरा में, अल-हिम्सी एक सुरुचिपूर्ण छड़ी लिए हुए हैं, मर्राश लेस कॉलर पहने हुए हैं, और उनके पूर्वज सोने की घड़ी और चेन पहने हुए हैं।
इस प्रकार, मारियाना मर्राश का एक मेज़बान के रूप में वर्णन उनकी उच्च प्रतिष्ठा और प्रतिष्ठा को भी दर्शाता है।
एक विशेष प्रकार की बुर्जुआ सामाजिकता। यहाँ चित्रित साहित्यिक गोष्ठी, आंगन वाले घरों में होने वाले पारंपरिक सामाजिक समारोहों से भिन्न है। क़सर अल-अज़्म के डायोरामा में पुनर्निर्मित दृश्य के अनुसार, जहाँ सामाजिक जीवन लिंग के आधार पर विभाजित है। फिर भी, शारावी का चित्रण रूढ़िवादी लिंग भूमिकाओं का समर्थन करता है क्योंकि यह अपने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित बौद्धिक उपलब्धियों को कम करके आंकता है।
विषय, मर्राश, पर ज़ोर देते हुए, वह मेज़बान के रूप में उसकी भूमिका पर बल देती है (जैसा कि उसने कल्पना की है): एक अधिक स्त्री घरेलू भूमिका, जो आधुनिक मध्यम वर्ग से प्रभावित है।
मूल्यों पर जोर दिया गया है। यह पिछली जीवनियों में मार्रैश की साहित्यिक विरासत पर दिए गए जोर की तुलना में स्पष्ट रूप से कम प्रगतिशील है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ और अंत के बीच अरबी भाषा में प्रकाशित पहली कवयित्री की छवि के निर्माण में क्या परिवर्तन हुए हैं? उनकी कविताओं के अंश प्रस्तुत करने के बजाय, शारावी निम्नलिखित प्रश्न उठाती हैं:
हमें एक आदर्श आंगन वाले घर का वर्णन मिलता है जिसमें एक संपन्न, मेहमाननवाज परिवार रहता है। अब कवयित्री को एक बुद्धिजीवी के बजाय एक सार्वजनिक क्षेत्र में सांस्कृतिक निर्माता के रूप में, और उससे भी अधिक एक मेज़बान के रूप में।
पुराने आंगन वाले घर में अधिकतर पुरुष बुद्धिजीवियों की सभाएँ होती थीं। इस प्रकार घर की वास्तुकला और उसमें होने वाली सामाजिक गतिविधियों का वर्णन मिलता है।
उनकी जीवनी के स्थान पर इनका प्रयोग किया जाता है। स्वयं के इस गुप्तिकरण का कारण क्या हो सकता है? यह निश्चित है कि आंगन वाले घर में यह रुचि उत्पन्न होती है।
केवल एक महिला बुद्धिजीवी की चर्चा में। शारावी की 1995 की जीवनी

फ्रांसिस मार्रैश अपने काव्य करियर पर जोर देते हैं और एक विदेशी धरती पर सार्वजनिक स्थल, पेरिस ओपेरा में अपने व्यवहार का वर्णन करते हैं। फ्रांसिस के जीवन की कहानी उनके द्वारा बताई गई है।
उनकी यात्राओं और उनकी कविताओं के माध्यम से उनकी कहानी बताई जाती है, जबकि मारियाना की कहानी उनके घर और उनके मेहमानों के वर्णन के माध्यम से बताई जाती है। बीसवीं सदी के आरंभिक काल के विपरीत, उत्तरार्ध में
बीसवीं शताब्दी कुछ सुस्थापित लैंगिक रूढ़ियों की ओर लौट गई, प्रमुख इनमें महिला और घरेलू स्थान के बीच का अटूट संबंध भी शामिल है।
हरम एक जीवनी के रूप में 231

1995 की जीवनी में आंगन वाले घर के सुखों के भावुक चित्रण पर जोर दिया गया है, जो 1990 के दशक में सीरियाई लोगों की रुचि से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक संदर्भ में, और आंगन वाले घर को एक स्मृति-संग्रह की वस्तु के रूप में प्राथमिकता देने में। उदासीनता (हनीन) अरबी साहित्य में, विशेष रूप से बीसवीं शताब्दी में, एक सुप्रसिद्ध शैली है: खोए हुए फ़िलिस्तीन के लिए उदासीनता, उदासीनता
1960 के दशक के लिए, अय्याम अल-इज़ (गौरवशाली दिन), मध्ययुग में अरबों की महानता के लिए पुरानी यादें। ये सभी आम हैं, जैसे कि अब अपदस्थ राजाओं के अधीन बिताए गए रमणीय ग्रामीण बचपन और युवावस्था की व्यक्तिगत यादें। पुरानी यादें बीते समय और खोए हुए स्थानों दोनों की याद दिलाती हैं। यह अतीत और यादों पर निर्भर करती है, लेकिन यह एक आदर्श और काल्पनिक अतीत है, एक ऐसा अतीत जो शायद कभी अस्तित्व में ही नहीं था। जैसा कि माइकल कामेन कहते हैं,
“उदासीनता... मूलतः अपराधबोध से रहित इतिहास है। विरासत कुछ ऐसी है जो... यह हमें शर्म के बजाय गर्व से भर देता है।”61 उदासीनता मोहक और संक्रामक होती है, और केवल अरब जगत में ही नहीं; इसका व्यावसायिक शोषण व्यापक है, उदाहरण के लिए, पश्चिमी लोकप्रिय संस्कृति में। उदासीनता के कई आलोचक हैं: इसे आसानी से एक भोली, भावुक, रोमांटिक भावना के रूप में कम आंका जाता है— प्रतिगामी,
चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में देखने से इनकार करना।62 पुरानी यादें एक स्थायी प्रभाव डालती हैं।

मोहक, एक मीठा-कड़वा आनंद प्रदान करता है। फिर भी, अतीत की यादें पूरी तरह से काल्पनिक नहीं हैं। दार्शनिक एडवर्ड केसी ने इस धारणा का खंडन किया है

—

समकालीन सिद्धांत में उदासीनता के महत्व को इस प्रकार दर्शाया गया है कि यह स्मृति का एक रूप है। उन्होंने तर्क दिया है कि कल्पना से जुड़ाव होने के बावजूद, उदासीनता स्मरण का एक अनूठा रूप है—जो अन्य रूपों से भिन्न है।
अतीत की घटनाओं, स्थानों और तथ्यों की सच्ची स्मृति—और यह अतीत पर एक विशेष अंतर्दृष्टि प्रदान करती है: "उदासी हमें ज़बरदस्ती अतीत से बाहर ले जाती है।"
स्मृति और अतीत के बारे में सोचने के हमारे अभ्यस्त तरीकों को बदल देता है। हमें एक ऐसे अतीत में ले जाकर, जो कभी वर्तमान में मौजूद नहीं था, यह हमें स्मरण की कठोरताओं से मुक्त करता है... [उदासी] अतीत को स्पष्ट रूप से स्मरण करने के अलावा अन्य तरीकों से पुनः प्राप्त करने की संभावना प्रदान करती है।"63
हालांकि पुरानी यादें बेहद व्यक्तिगत हो सकती हैं, लेकिन ये सामूहिक भी हो सकती हैं। इसके अलावा, इन्हें राष्ट्रीय संग्रहालयों और स्मारकों की तरह संस्थागत रूप भी दिया जा सकता है।
जहां अतीत का एक दिया गया, आधिकारिक संस्करण विरासत में परिवर्तित हो जाता है।64 पूर्वाभ्यास, पुनरावृति, पुनरुत्पादन और प्रसार के माध्यम से उदासीन विमर्श सार्वजनिक हो जाता है। यह सार्वजनिकता उदासीनता को इससे बाहर निकाल देती है।
यह व्यक्ति के दायरे से निकलकर समुदाय के दायरे में प्रवेश करता है, और इसे वह अधिकार प्रदान करता है जो विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत प्रकार की पुरानी यादों को शायद न मिले।
अधिकार रखना। मानवविज्ञानी जेन हिल राजनीतिक आयाम पर जोर देती हैं। उदासीन प्रवचन में, शक्ति के एक कार्य के रूप में उदासीनता।65 इस अर्थ में, उदासीनता 232 हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉघ

यह एक निश्चित राजनीतिक कार्य करता है। यह वर्तमान को हमेशा हीन के रूप में प्रस्तुत करता है।

अतीत। जैसा कि सलामंद्रा ने दमिश्क के मामले में देखा है, पुराने दमिश्क के उदासीन विमर्श ने अतीत के सामाजिक पदानुक्रम में अपने स्थान के चित्रण के आधार पर सांस्कृतिक पूंजी के अपने दावों का समर्थन किया।
पुरानी यादों से भरी चर्चा अन्य कल्पनाओं—प्रति-चर्चाओं—को भी विस्थापित कर सकती है। शायद सबसे चिंताजनक बात यह है कि पुरानी यादें शिल्प कौशल को भी विस्थापित कर सकती हैं।
इतिहास या ऐतिहासिक शोध के संदर्भ में। इस अर्थ में, उदासीनता इसमें बाधा डालती है।
और यह अतीत के प्रति आलोचनात्मक स्मरणात्मक दृष्टिकोण को रोकता है। आज इस्लामी दुनिया भर में होने वाली चर्चाओं में, ऐतिहासिक वृत्तांतों का उपयोग किया जाता है।
अक्सर इनमें पुरानी यादों का भाव समाया रहता है, और विरासत की वस्तुएं जैसे कि पुराने आंगन वाले घर को भी पुरानी यादों के नजरिए से देखा जाता है। यह महज पुराने अच्छे दिनों की यादों में खो जाने का एक हानिरहित आनंद है, यह शैली वर्तमान में एक आवश्यक राजनीतिक कार्य भी करती है। यह अतीत के साथ आलोचनात्मक जुड़ाव को रोकती है और बाधित करती है, अन्य बातों के अलावा, और यह एक काल्पनिक अतीत की सुखद यादों में प्रतिगामी वापसी को प्रोत्साहित करता है। जरूरत इस बात की नहीं है कि उदासीनता की भावना को नीचा दिखाया जाए और खारिज किया जाए।
बल्कि इसे गंभीरता से लेना, आलोचनात्मक दृष्टिकोण से इसका अध्ययन करना और इसे समझना।
इसके मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आधार। यह सवाल उठता है कि इस उदासीनतापूर्ण शैली को इतनी तत्परता से समर्थन क्यों दिया जा रहा है: यह इतनी आधिकारिक क्यों बन गई है?
मारियाना मर्राश की जीवनी का विकसित होता स्वरूप इस भावुक मोड़ के लैंगिक आधार को उजागर करता है। शारावी का लेखन आंगन वाले घर के प्रति एक कोमल और भावुक दृष्टिकोण को आलोचनात्मक अध्ययन से प्रतिस्थापित करता है।
एक महिला बुद्धिजीवी के संदर्भ में। सीरिया में आज विरासत संबंधी चर्चाओं में हावी रहने वाला पुराने आंगन वाले घर का उदासीन विमर्श एक बहुत ही विशिष्ट छवि प्रस्तुत करता है।

अतीत का स्पष्ट रूप से लैंगिक दृष्टिकोण। यह घर के अंदर और बाहर पुरुषों और महिलाओं को अलग-अलग पदानुक्रमित भूमिकाओं में रखता है, ऐसी भूमिकाएँ जो संभवतः
यह कहानी सुकून देने वाली है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से संबंधित होने के कारण, जो लैंगिक भूमिकाओं और घरेलू वास्तुकला में तीव्र सामाजिक परिवर्तन का दौर था, उस समय के इस शाश्वत "पूर्व काल" का निर्माण, जब परिवार एक आंगन वाले घर में रहता था, बहुत ही मार्मिक है।
आधुनिक अपार्टमेंट की बजाय, जहाँ परिवार का हर सदस्य अपनी उचित जगह पर रहता था, वह व्यवस्था बेहद प्रतिगामी प्रतीत होती है। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में लिखी गई मार्रैश की जीवनियाँ उनकी चिंताओं को दर्शाती हैं। लिंग भूमिकाओं में बदलाव से उत्पन्न। वे दर्शाते हैं कि कैसे उनके पालन-पोषण ने एक महिला के स्थान के बारे में व्यापक रूप से प्रचलित मान्यताओं को चुनौती दी; और उनका यह आग्रह कि
ऐसा लगता है कि मार्राश ने गृहणी, पत्नी और माँ के रूप में अपने पारंपरिक घरेलू कर्तव्यों को छोड़े बिना बौद्धिक गतिविधियों में भाग लिया।
अपने पाठकों की किसी महिला के दखल पर संभावित आपत्तियों को पहले से ही दूर कर देना।
सार्वजनिक क्षेत्र.66 1995 में, यह तनाव दिखाई नहीं देता। बल्कि, पुराने आंगन वाले घर का उदासीन आह्वान तीव्र तनाव को छुपाने का काम करता है।
हरम एक जीवनी के रूप में 233

मर्राश के समय के सामाजिक परिवर्तन और शारावी के समय के सांस्कृतिक रूपांतरण
जीवनकाल। पुरानी यादें एक कालातीतता का भ्रम पैदा करती हैं जो इसमें योगदान देती है।
लेखन के आलोचनात्मक पहलू को सुन्न कर देना।
मारियाना मर्राश का मामला स्पष्ट रूप से दिखाता है कि पुराने समय के प्रति उदासीनता किस प्रकार
आंगन वाला घर जीवनी की महिला पात्र के व्यक्तित्व पर हावी हो जाता है; वास्तव में, घर का वर्णन जीवन के वर्णन को विस्थापित कर देता है।

मानव विषय। होस्टेस के रूप में चुने जाने के कारण, मार्रैश को कहानी से बाहर कर दिया जाता है।
कथा को घर और मेहमानों की सूची से प्रतिस्थापित किया जाना है, जो स्वयं प्रमुख पात्र बन जाते हैं, और काव्यात्मक वर्णनों से अभिभूत हो जाना है। प्रतियोगिताएं और पाक कला के आनंद। स्वतंत्रता के बाद के सीरिया के संदर्भ में—विशेष रूप से एक समाजवादी, आक्रामक रूप से धर्मनिरपेक्ष बाथवादी शासन की स्थापना के बाद से, जो महिलाओं की सीमित मुक्ति की वकालत करता है—
महिलाओं की स्थिति चिंता पैदा करती है।67 इस संदर्भ में, एक महिला को उसकी सही जगह पर रखना, जैसा कि 1995 की जीवनी में किया गया है, इस मामले में और भी अधिक आवश्यक है।
सार्वजनिक क्षेत्र और बौद्धिक गतिविधियों में कदम रखने वाली पहली महिला। आंगन वाला घर, जिसे पुनर्स्थापित करके विरासत की वस्तु या भौतिक आयाम में एक वस्तु के रूप में बनाया गया है, जिसकी कल्पना और वर्णन एक प्रतिनिधित्व के रूप में किया गया है।
इस प्रकार, स्थान का उपयोग समाज की लैंगिक भूमिकाओं को पुनर्व्यवस्थित करने के लिए किया जाता है, जो अतीत से अपने कथित संबंध से अपनी वैधता प्राप्त करती हैं।
1995 की जीवनी का वह पैराग्राफ अंततः मर्राश को छोड़कर एक बिल्कुल नए मेजबान का परिचय देता है: एक करारजी, या पुराने जमाने का समारोह संचालक जो देर रात तक पार्टी की अध्यक्षता करता है। जब तक पाठक उस पैराग्राफ तक पहुँचता है...
जीवनी के अंत तक, मारियाना मार्राश का व्यक्तित्व पहले ही भुला दिया जाता है, और उसकी जगह आंगन वाले घर और एक आदर्श बुर्जुआ की छवि ले लेती है। घरेलू सामाजिक परिवेश, जहां, हम निस्संदेह इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे, एक महिला को अपना वास्तविक स्थान मिलता है।

नोट्स

जब तक अन्यथा उल्लेख न किया गया हो, सभी अनुवाद मेरे स्वयं के हैं। मैं नासिर रब्बत और सुसान को धन्यवाद देता हूँ।

स्लायोमोविक्स, मैरिलिन बूथ और ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के गुमनाम समीक्षकों
उनके बहुमूल्य सुझावों और टिप्पणियों के लिए धन्यवाद।
1 इस तस्वीर के संदर्भ के लिए, ब्लूस्टोन की पुस्तक "टेनिस शूज़ पहने शिक्षाविद" देखें। 2 प्रदर्शन की अभिव्यक्ति एजेंसी किर्शेनब्लाट-गिम्ब्लेट की पुस्तक "डेस्टिनेशन" से ली गई है।
संस्कृति।
3 संरक्षण के इतिहास के परिचय के लिए, जोकिलेहटो की पुस्तक "आर्किटेक्चर का इतिहास" देखें।
स्थापत्य संरक्षण; चोए, ऐतिहासिक स्मारक का आविष्कार; लोवेनथल, अतीत एक विदेशी देश है।
4 किर्शेनब्लाट-गिम्ब्लेट, "नृविज्ञान से विरासत तक।" 5 मैं 'गुप्तता' शब्द का प्रयोग उस स्थिति के लिए करता हूँ जब एक वस्तु दूसरी वस्तु द्वारा छिपी होती है। 234 हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉघ

यह वस्तु प्रेक्षक और उसके बीच से गुजरती है, जो प्रेक्षक और गतिमान कई वस्तुओं के बीच एक गतिशील स्थानिक संबंध पर जोर देती है।
6. अलेप्पो के शहरी इतिहास के संक्षिप्त विवरण के लिए, सौवागेट की पुस्तक "अलेप्पो" देखें। शहर के हालिया इतिहास के लिए, गौबे और विर्थ की पुस्तक "अलेप्पो" और बियांका की पुस्तक "अरब जगत में शहरी स्वरूप" का अध्याय 13 देखें।
7 डेविड, “19 वीं शताब्दी में अलेप्पो में नई घरेलू वास्तुकलाएँ”; डेविड और
बेकर, "सीरिया में वास्तुकला में नवीनता का विस्तार"; डेविड और ह्यूबर्ट, "अलेप्पो में 20 वीं सदी की शुरुआत के घर और इमारतें"; कुर्दी, "अल-ततव्वुर अल-उमरानी ली-हलब फ़ी मुवजहा अल-ता'थिरत अल-उरुब्बिया।"
8 अल-ग़ाज़ी, किताब नहर अल-दहब फ़ी तारीख हलब, 2:397।
9 मैं नासिर रब्बत का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे बशीर अल-अज़मा की आत्मकथा (अल-अज़मा, जिल अल-हाज़िमा) में आंगन वाले घर के बारे में की गई टिप्पणियों से अवगत कराया। उस आत्मकथा पर शुमान की पुस्तक

"रेडिकलनैशनलिज़्म इन सीरिया अंड लिबानोन" और "द जेनरेशन ऑफ ब्रॉड एक्सपेक्टेशन्स" में चर्चा की गई है।
10 फ़्रीज़, "अलेप्पो और दमिश्क की योजनाएँ"; क़ुदसी, "अलेप्पो"; डेविड, "अलेप्पो में राजनीति और शहरी नियोजन, बाब अल-फ़राज़ परियोजना"; बियांका एट अल., अलेप्पो के पुराने शहर का संरक्षण।
11 हलाज, “शहरी विरासत के मूल्यांकन की प्रक्रिया,” 200–201। 12 खेचेन, “परिवर्तन में स्थानिक पैटर्न।” 13 बियांका, सीरिया; ऐतिहासिक शहर सहायता कार्यक्रम, आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर, जिनेवा के अभिलेखागार, विशेष रूप से फ़ाइल 90272; स्टीफन बैटल, सीरिया में कार्यक्रम के परियोजना प्रबंधक, जिनेवा के साथ 22 और 26 जून, 2007 को हुई बातचीत। गढ़ पर ट्रस्ट के काम में बरती गई जल्दबाजी की आलोचना के लिए, गोनेला, “अलेप्पो का गढ़” देखें।
14 बुस्केट्स, एड. अलेप्पो.
15 वाटेनपॉघ, “ज्ञान, विरासत, प्रतिनिधित्व।” 16 अलेप्पो के पुराने शहर के पुनर्वास में हाल के घटनाक्रमों पर हलाज टिप्पणी करते हैं: “राज्य के हस्तक्षेप से भूमि सट्टेबाजी में तेजी आती है (विरासत संपत्तियों के जीर्णोद्धार में निवेश में वृद्धि का एक स्पष्ट दुष्प्रभाव); फिर भी यह सामाजिक नेटवर्क के टूटने में योगदान देता है” (“शहरी विरासत के मूल्यांकन की प्रक्रिया,” 2:204)।
17 हिवरनेल, “बाब अल-नैराब, अलेप्पो का एक उपनगर, शहर के बाहर और शहर के भीतर।” 18 शहरवासियों के साथ साक्षात्कार और स्थल भ्रमण की जानकारी के लिए खेचेन, “परिवर्तन में स्थानिक पैटर्न” देखें।
1925 के दौरान क्षतिग्रस्त होने के बाद 'अज़म पैलेस' का व्यापक रूप से जीर्णोद्धार किया गया था।
फ्रांसीसी द्वारा दमिश्क पर बमबारी; आगा खान आर्किटेक्चर पुरस्कार, जिनेवा (जिसे आगे akaa कहा जाएगा) के अभिलेखागार देखें, 444.syr.
20 अल-मुदिरिया अल-अम्मा लिल-अथर वा अल-मताहिफ, दलील अल-मताहिफ वा अल-मवाकी'
al-athariyya fi Suriyya.
21 वाटेंपॉघ, "सीरिया में संग्रहालय और राष्ट्रीय इतिहास का निर्माण और लेबनान।

22 क़सर अल-अज़्म अक्सर संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रायोजित संगीत संध्याओं का आयोजन करता है।
भारत में संग्रहालयों के दर्शकों की इसी तरह की समस्या पर गुहा-ठाकुर्ता की पुस्तक 'स्मारक, वस्तुएं, इतिहास' के अध्याय 6 में विशेष रूप से चर्चा की गई है।
हरम एक जीवनी के रूप में 235

23 ब्लेचर, “जब टेलीविजन अनिवार्य हो”; कावाकिबी, “टेलीविजन की भूमिका” “ला रीलेक्ट्योर डे ल’हिस्टोइरे”; अर्ली, “सीरियन टेलीविज़न ड्रामा”; सलामंद्रा, “मूंछ के बाल खो गए” और एक नया पुराना दमिश्क, विशेष रूप से अध्याय 4. 24 तुर्जुमान, या मल अल-शाम। इसके कई पुनर्मुद्रण हो चुके हैं, और अंग्रेजी अनुवाद दमिश्क की बेटी है, जिसमें लेखक का नाम सिहम तेर्गेमान दिया गया है।
तुर्जुमान के संरक्षणवादी कार्यों पर, सलामंद्रा की पुस्तक 'ए न्यू ओल्ड दमिश्क' देखें। 25 अत्तार की पुस्तक 'अल-बायत फ़ी सहत अर्नस', जिसका अनुवाद 'द हाउस ऑन अर्नस स्क्वायर' है। इस लेखक की ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिए मैं नासिर रब्बत का आभारी हूँ। 26 सलामंद्रा, ए न्यू ओल्ड दमिश्क, 89। 27 डेविड, "द कोर्टयार्ड-गार्डन ऑफ़ द हाउसेस ऑफ़ अलेप्पो इन द ओटोमन एरा" और "अलेप्पो में 16 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध का एक बड़ा घर"; गोनेला, 'आइन क्रिश्चियन-ओरिएंटलिशेस'
अलेप्पो (सीरिया) की 17 वीं सदी की आवासीय इमारत; डूडा, सिरुज़ का आंतरिक सज्जा
16 वीं-18 वीं शताब्दी के टाउनहाउस। बेरूत में हेनरी फराओन संग्रह; सेरासी, "ऑटोमन हाउस प्रकारों का गठन।"
28 अब्दुलाक, “अरब देशों में पारंपरिक आवास डिजाइन।” 29 1978 के मार्टिनी घर का दस्तावेजीकरण अका, 377.सिर में किया गया है। यह घर जुदैदा के पास इसी नाम के आंगन वाले घर से अलग है, जिसका जीर्णोद्धार 1990 के दशक में किया गया था। 30 वास्तुकार का विवरण, अका, 377.सिर। क़रलिक मोहल्ले के बारे में, अल-ग़ज़ी, किताब नहर अल-धहाब फ़ी तारिख हलाब, 2:248–49 देखें।
31 अल-तब्बाख, इलम अल-नुबाला' द्वि-तारीख हलब अल-शहबा।' 32 सलामंद्रा, एक नया पुराना दमिश्क, 79-89। 33 वही., 75-76.

34 वाटनपॉघ, “ज्ञान, विरासत, प्रतिनिधित्व।” 35 अरब जगत में महिलाओं की आधुनिक जीवनियों पर, बूथ, मे हर लाइक्स देखें।
गुणा हो।
36 Tarazi, Tarikh, vol. 1, part 2, p. 241.
37 'ईसा इस्कंदर अल-मा'लुफ, "शाहिरत अल-निसा': मारियाना मार्राश अल-हलाबिया," फतत
अल-शर्क 13:9 (15 जून, 1919): 345-51, जैसा कि बूथ द्वारा उद्धृत और विश्लेषित किया गया है, मई हर
लाइक्स को गुणा किया जाए, 75, 125.
38 ‘ईसा इस्कंदर अल-मालूफ़, “मरियाना मर्रश,” उद्धृत ibid., 125. 39 प्रकाशक मतबा मारुनिय्या था, और 1706 में मुद्रित पहली पुस्तक बाइबिल का अरबी अनुवाद थी।
40 यह निश्चित रूप से जानना लगभग असंभव है कि कोई व्यक्ति कहाँ रहता था, लेकिन कुस्ताकी
अज़ीज़िया में अल-हिम्सी का आलीशान आधुनिक घर आज भी मौजूद है।
41 अल-हिम्सी, उदाबा' हलब; जुहा, अल-हयात अल-फ़िकरिया फ़ी हलब फ़ी अल-क़रन अल-तासी'' अशर। 42 अल-तब्बाख, इलम अल-नुबाला', 7:567. 43 अल-हिम्सी, उदाबा' हलब, 92; अल-तब्बाख, इलम अल-नुबाला', 7:568. 44 इसमें, मार्राश की जीवनियाँ बीसवीं सदी की अन्य प्रारंभिक जीवनियों के अनुरूप प्रतीत होती हैं, जो अक्सर जीवनसाथी के चुनाव में महिलाओं की एजेंसी पर प्रकाश डालती हैं और वैवाहिक संबंध. बूथ देखें, उसकी पसंद कई गुना हो सकती है, 206-19। 45 रिज़कल्लाह अफंदी ख्वावम, "शाहीरत अल-निसा': अल-सैय्यदा मारियाना मार्राश,"
फ़तत अल-शर्क 5:10 (15 जुलाई, 1911): 362, बूथ द्वारा अनुवादित और विवेचित, मई हर
लाइक्स बी मल्टीप्लाइड, 221.
46 मुझे इस प्रकाशन की प्रति नहीं मिल पाई है।
236 हेघनार ज़ीट्लियन वाटेनपॉघ

47 अल-हिम्सी, उदाबा' हलब, 91-94; अल-तब्बाख, इलम अल-नुबाला', 7:567-71; तराज़ी, ता-

rikh, vol. 1, part 2, p. 241–45.
48 अल-तब्बाख, इ'लम अल-नुबला', 7:571. 49 बूथ में उद्धृत, मे हर लाइक्स बी मल्टीप्लाइड, 75. 50 अल-तब्बाख, इ'लम अल-नुबला', 7:568. 51 बद्रान, फेमिनिस्ट्स, इस्लाम, एंड नेशन, 7, 257, 258; आर. एलन, "राइटिंग्स ऑफ मेंबर्स ऑफ द नाज़ली सर्कल."
52 शारावी, "अल अल-मरराश।"
53 अल-हिम्सी, उदाबा' हलब, 92.
54 शारवी, "अल अल-मरराश", 43-45। 55 वही, 46-47.
56 वही, 47.
57 वही, 43–45.
58 वही, 49.
59 वही, 51.
60 वही, 60.
61 कामेन, मिस्टिक कॉर्ड्स ऑफ मेमोरी, 688. 62 सिमेल, "द रुइन"; बॉयम, द फ्यूचर ऑफ नॉस्टैल्जिया; के. स्टीवर्ट, "नॉस्टैल्जिया: ए पोलिमिक।"
63 केसी, “उदासी की दुनिया,” 366. 64 लोवेनथल देखें, अतीत एक विदेशी देश है और अतीत द्वारा वश में। 65 हिल, “‘आज कोई सम्मान नहीं है’” 66 अनुकरणीय अरब महिलाओं की जीवनियों में मातृत्व के स्थान पर, बूथ देखें, मे हर लाइक्स बी मल्टीप्लाइड, 219–25।
67 अल्टोमा, “समकालीन सीरियाई साहित्य में महिलाओं की मुक्ति”; सलामंद्रा, ए न्यू ओल्ड दमिश्क, अध्याय 2।

भाग III • हरेम s envI s I o n e d 8

स्थान सामाजिक रूप से निर्धारित शरीरों द्वारा परिभाषित होते हैं। कोई स्थान इसलिए एक जगह कहलाता है क्योंकि वहाँ विशिष्ट रूप से वर्णित शरीरों की उपस्थिति उसे ऐसा बनाती है। यूरोपीय कलाकारों द्वारा हरमों के वर्णन में—चाहे चित्रों में हो, तस्वीरों में हो या लिखित ग्रंथों में—कपड़े (या उनकी कमी) चित्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं, जैसा कि जोन डेलप्लाटो हमें दिखाती हैं।
अध्याय 10 में। इसके अलावा, यह प्रस्तुति शरीर पर थोपी गई यौन इच्छाओं को दर्शाती है—उनका निर्माण करती है।
प्रस्तुत किया गया है, लेकिन अंतर्निहित प्रेक्षक या पाठक की दुनिया के भीतर कोडित किया गया है: उस दुनिया में क्या संभव हो सकता है, इसकी एक कल्पना।
दूसरी दुनिया। अध्याय 9 में, नैन्सी मिकलराइट ने उल्लेख किया है कि ओटोमन द्वारा ली गई और फिर उनकी तस्वीरों में "कल्पना और वास्तविकता के बीच बदलाव"। यूरोपीय फोटोग्राफर
इस्तांबुल में काम करते समय पर्यटकों की उन स्थलों से बढ़ती प्रत्यक्ष जान-पहचान के प्रति संवेदनशील रहना पड़ता था जिन पर फोटोग्राफर ध्यान केंद्रित करते थे, और साथ ही स्थानीय अभिजात वर्ग के ज्ञान के प्रति भी। और संभवतः परंपराओं के प्रति उनके आलोचनात्मक दृष्टिकोण— 238 हरेम enVisioneD

हरम कला के। ऐसे पोज़ और प्रॉप्स जो दर्शकों के लिए परिचित रहे होंगे। डेलप्लाटो द्वारा विश्लेषित चित्र फोटोग्राफी की इस उत्तरवर्ती कला में मौजूद हैं।
फिर भी इनका प्रयोग चंचल और आलोचनात्मक दोनों तरह से किया जाता है। धीरे- धीरे फोटोग्राफी एक स्थानीय शौक बन गई। मिकलराइट ने हमारे साथ ओटोमन काल की तस्वीरें साझा की हैं।
घरेलू आंतरिक साज-सज्जा स्थानीय अभिजात वर्ग के उपभोग पैटर्न का संकेत देती है, जो "वास्तविक" हरम अनुभव की तलाश करने वाले यूरोपीय लोगों को निराश कर सकती थी।

इस प्रकार, यदि उन्नीसवीं शताब्दी की यूरोपीय कला और यात्रा साहित्य हरम की छवियों से परिपूर्ण थी, तो मध्य पूर्व के बुद्धिजीवी और कलाकार भी सामाजिक जीवन के आंतरिक पहलुओं को कल्पनात्मक रूप से चित्रित करने में उतने ही तत्पर थे। चाहे वे ऐतिहासिक दृश्यों से प्रेरणा लेते हों या अपने समकालीन संसार से, तुर्की और अरब के दृश्य और साहित्यिक कलाकार अक्सर उन्होंने जिन परिदृश्यों की कल्पना की, उन पर आलोचनात्मक और सक्रिय दृष्टिकोण अपनाया।
जब घरेलू स्थानों का वर्णन उन पुरुषों और महिलाओं द्वारा किया गया जो उनमें निवास करते थे—और जो शायद दैनिक जीवन के तौर-तरीकों को बदलना चाहते थे,
अरब और तुर्की शहरों में अभिजात वर्ग द्वारा अपनाई जाने वाली एकांत या अर्ध-एकांत प्रथाओं से दूर हटते हुए—हरम एक मध्यमवर्गीय घर के रूप में हो सकता है
इसे आचरण और संबंधों के नए तरीकों को सीखने के स्थान के रूप में कल्पना की जानी चाहिए।
जैसा कि ए. होली शिस्लर हमें अध्याय 12 में दिखाती हैं। ओटोमन अहमद मिधात एफेंडी जैसे सुधारवादी लेखक, जिनके उपन्यासों को शिस्लर हमारे लिए खोलती हैं, और
अरब लेखक जुरजी ज़ायदान, जिनके ऐतिहासिक उपन्यास का ओरिट बश्किन ने अध्याय 11 में विश्लेषण किया है, ने पुरानी परंपराओं की आलोचना की और नई, सुचारु परंपराओं की ओर मार्ग प्रशस्त किया।
एक स्थानीय आधुनिकता का निर्माण करना जो उधार ले सकती है लेकिन पूरी तरह से नकल नहीं करेगी।
पश्चिमी तौर-तरीकों को। उनकी कहानियों ने आधुनिक नायकों और नायिकाओं का निर्माण किया—कभी-कभी ऐतिहासिक वेशभूषा में—जिनमें प्रतिद्वंद्वी आदर्श बनने की क्षमता थी।
पैगंबर की समकालीन महिलाएँ। बीसवीं सदी में, घरेलू कथाओं ने घर के स्थानों की कल्पना करने में अग्रणी भूमिका निभाई: अध्याय 13 में, मर्लिन बूथ
यह लेख सस्ते में छपी, "वेंट्रिलोक्वाइज़्ड" संस्मरणों की आलोचनात्मक क्षमता पर विचार करता है, जिनमें कुलीन परिवारों से भागने वाली युवा

महिलाओं को चित्रित किया गया है, जहाँ एकांत का अर्थ पिता के शिक्षा, व्यवहार संबंधी निर्देशों के अधीन होना था।
और विवाह। हरम का स्वरूप पूरी तरह बदल जाता है, वह अब सुरक्षा का स्थान नहीं, बल्कि खतरे का स्थान बन जाता है।

9 • हरेम हाउस सेट

फोटोग्राफी में घरेलू इंटीरियर
स्वर्गीय ओटोमन विश्व से

नैन्सी मिकलराइट

उन्नीसवीं सदी के मध्य पूर्व का हरम एक प्राच्यवादी रचना थी, लेकिन यह एक वास्तविक स्थान भी था जहाँ वास्तविक लोग अपना जीवन व्यतीत करते थे। हरम, और उससे जुड़ी सभी धारणाएँ, हमारे विमर्श में एक अस्थिर स्थान रखती हैं, जो वास्तविकता और कल्पना के बीच बदलती रहती हैं। हरम भी इस अस्थिरता, वास्तविकता और कल्पना के बीच इस बदलाव को साझा करता है।
और कल्पना, तस्वीर के साथ। स्वयं उन्नीसवीं सदी की रचना, तस्वीर को उससे कहीं अधिक महत्व दिया गया था।
यह सब इसकी सत्यता के कारण था—भले ही इस नई कला के उपभोक्ता और अभ्यासकर्ता फोटोग्राफिक छवि की निर्मित प्रकृति को प्रत्यक्ष रूप से जानते थे। शायद यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि
उन्नीसवीं शताब्दी में, हरम और फोटोग्राफी एक ऐसे स्थल के रूप में एक साथ आए जहाँ उनकी साझा विशेषताओं के कारण
हरम के बारे में जटिल और अक्सर परस्पर विरोधी विचार हो सकते हैं
बातचीत के माध्यम से। आगे के पृष्ठों में, मैं फोटोग्राफरों द्वारा निर्मित कई अलग-अलग हरमों की जांच करूंगा और
वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए अपने विषयों का उपयोग करते हैं।
यहां जिन चित्रों का विश्लेषण किया गया है, वे हरम की उस द्वैतता को दर्शाते हैं जो इस पुस्तक में हरम शब्द के प्रयोग की विशेषता है। 240 नैन्सी मिकलराइट

एक ओर, यह एक शक्तिशाली और भावपूर्ण रचना है, मुख्य रूप से
यूरोपीय कलाकार और लेखक एक काल्पनिक जीवनशैली की कल्पना करते थे, जिसका वास्तविक घरेलू स्थान या सामाजिक संस्था से बहुत कम संबंध होता था। दूसरी ओर, यह एक ओटोमन घर का भौतिक कमरा या कमरे होते थे जहाँ महिलाएं और

परिवार के छोटे बच्चे अपना समय उन जगहों पर बिताते थे जहाँ महिला आगंतुकों का स्वागत किया जाता था, और जहाँ विशेष परिस्थितियों में परिवार के पुरुष सदस्य भी उपस्थित हो सकते थे।
यह भी मौजूद हो सकता था। जबकि हरम एक काल्पनिक संरचना के रूप में मौजूद था। केवल इसके रचनाकारों के साहित्य, चित्रों और तस्वीरों में ही, हमें साहित्य में भौतिक, जीवंत हरम का भी अनुभव होता है, जैसे कि हम ओटोमन घरों में आगंतुकों के रूप में जाते हैं।
उन्होंने अपनी पुस्तकों में महिलाओं के निजी स्थानों की यात्राओं का वर्णन किया। और जैसा कि हम देखेंगे, वास्तविक घरेलू आंतरिक सज्जा, जिसमें हरम के रूप में परिभाषित स्थान भी शामिल हैं,
ओटोमन फोटोग्राफिक रिकॉर्ड में भी दिखाई देते हैं। इस प्रकार कल्पित और वास्तविक हरमों में कम से कम एक विशेषता समान होती है: शब्दों और चित्रों में उनका (पुनः) प्रस्तुतीकरण।
जैसा कि हम यहां कर रहे हैं, ऐतिहासिक तस्वीरों के साथ काम करना एक जटिल प्रक्रिया हो सकती है, इसलिए मैं इस विश्लेषण की शुरुआत एक संक्षिप्त टिप्पणी के साथ करूंगा।
मैं तस्वीरों को कैसे समझता हूँ। मैं ऐतिहासिक तस्वीरों को वस्तुओं के रूप में महत्व देता हूँ।
जो हमें कलात्मक अभ्यास की एक विस्तृत श्रृंखला के बारे में, उस पैमाने पर संरक्षण के बारे में बताते हैं जिस पर अन्य माध्यमों के अध्ययन में अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता है, और इसके बारे में भी बताते हैं।
उपभोग, एक बार फिर, जनसंख्या के एक बड़े हिस्से के बीच। ओटोमन प्रजा द्वारा निर्मित या खरीदी गई तस्वीरों के प्रकारों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से हमें उनके जीवन के विवरणों के साथ-साथ बड़े मुद्दों के बारे में भी जानकारी मिलती है।
इसमें सामाजिक पहचान में बदलाव और सांस्कृतिक प्रथाओं में परिवर्तन शामिल हैं।
इस अध्याय के संदर्भ में, 'ओटोमन' शब्द से तात्पर्य ओटोमन साम्राज्य के निवासियों से है। यदि मैं ओटोमन समाज के किसी विशिष्ट समूह का उल्लेख कर रहा हूँ, तो मैं इसे स्पष्ट कर दूँगा। अंत में, मेरा ध्यान यहाँ इस्तांबुल

में फोटोग्राफिक उत्पादन और उपभोग पर केंद्रित है। हम जानते हैं कि वहाँ क्या चल रहा था।
फोटोग्राफी के लिहाज से तो ओटोमन साम्राज्य के अन्य शहरों पर ही अधिक ध्यान दिया गया है, लेकिन छोटे कस्बों और दूरदराज के इलाकों में क्या होता था, इस पर बहुत कम ध्यान दिया गया है।
कुछ समानताएं हैं लेकिन कई और अंतर हैं जो फोटोग्राफी की पहुंच को ओटोमन साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों और मध्य पूर्व में व्यापक रूप से निर्धारित करते हैं;
इस अध्याय में किया गया विश्लेषण विशेष रूप से इस्तांबुल को उत्पादन और ग्रहण के केंद्र के रूप में मानता है।
हम 1858 और 1913 के बीच ली गई तस्वीरों की एक श्रृंखला का अध्ययन करेंगे, जो मुख्य रूप से इस्तांबुल में ली गई हैं। जैसा कि मैंने ऊपर बताया, इन तस्वीरों में दिखाई देने वाला हरम, उस हरम के बीच बदलता रहता है जिसे 1858 और 1913 के बीच निर्मित किया गया था।
चित्रकला, फोटोग्राफी और यात्रा साहित्य में यूरोपीय कलाकार और लेखक, और हरम एक वास्तविक रहने की जगह के रूप में। जबकि मैं मुख्य रूप से तलाश कर रहा हूँ।
हरम/घर/सेट 241

[ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के पास इस छवि के इलेक्ट्रॉनिक अधिकार नहीं हैं। इसे देखने के लिए, कृपया इस पुस्तक के मुद्रित संस्करण को देखें।]

1 रोजर फेंटन, “पाशा और
बायडेरे,” 1858. विभाग
फोटोग्राफ्स, जे. पॉल गेट्टी
संग्रहालय, लॉस एंजिल्स।

भौतिक परिवेश में, कई मामलों में लोग उस परिवेश में मौजूद होते हैं, इसलिए हम
साथ ही इस बात पर भी विचार करें कि ये फोटोग्राफिक विषय किसे या किस चीज का प्रतिनिधित्व करते हैं और क्या

वे संवाद कर रहे हैं। यह कल्पित और वास्तविक के बीच का बदलाव है (इस हद तक कि किसी संदर्भ में "वास्तविक" के बारे में बात करना संभव है)।
इस अध्याय में छवियों और विचारों की व्यवस्था मेरे प्रोजेक्ट के केंद्र में है, चाहे वह सेटिंग हो या विषय। हालाँकि इस अध्याय में छवियों और विचारों की व्यवस्था सख्ती से निर्धारित नहीं है।
कालानुक्रमिक रूप से, जिस तरह से इसमें रैखिक कालानुक्रम का एक तत्व मौजूद है,
हरम की विकसित हुई तस्वीरों, उनके निर्माण के संदर्भों और उन्हें खरीदने वालों के बारे में जानकारी।
जब ब्रिटिश फोटोग्राफर रोजर फेंटन ने 1858 में "पाशा और बायडेरे" (चित्र
1) शीर्षक से एल्बम प्रिंट तैयार किया, तब तक "हरम" शैली प्रचलित हो चुकी थी।
"महिला" प्राच्यवादी चित्रकारों के लिए एक सुस्थापित प्रतीक था1 और इसने 1839 में फोटोग्राफी के आविष्कार के बाद के शुरुआती दशकों में मध्य पूर्व की यात्रा करने वाले यूरोपीय फोटोग्राफरों के काम को प्रभावित किया। फेंटन ने एक युद्ध फोटोग्राफर के रूप में इस क्षेत्र का दौरा किया और 1855 में क्रीमियन युद्ध की अपनी तस्वीरों के परिणामस्वरूप पहली बार व्यापक जन ध्यान आकर्षित किया।
तकनीकी और अन्य दृष्टिकोणों से भी यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। फोटोग्राफिक युद्ध रिपोर्टिंग का इतिहास। 242 में नैन्सी मिकलेराइट के समय को छोड़कर।

क्रीमिया में रहने के दौरान, फेंटन ने मुख्य रूप से इंग्लैंड में काम किया और वहीं रहे, जहाँ उन्होंने प्राच्यवादी दृश्यों की इक्यावन श्रृंखला बनाई, जिसमें यह छवि भी शामिल है।2
फेंटन ने इस तस्वीर में हरम का दृश्य विशेष रूप से अपनी फोटोग्राफ श्रृंखला के लिए बनाया था, और उन्होंने इसे बाकी तस्वीरों में थोड़े-बहुत बदलाव के साथ इस्तेमाल किया।
इस श्रृंखला की तस्वीरों में, विभिन्न रंगों, बनावटों और पैटर्नों के वस्त्रों का भरपूर उपयोग करके बनाए गए स्थान को दर्शाया गया है, जिसे एक नीची सोफे और कुशन से सजाया गया है। छोटे सजावटी तत्व—

जड़ाऊ काम वाली मेज, कॉफी पॉट और कपों से सजी एक ट्रे, दो पाइप और संगीत वाद्ययंत्र (स्पाइक फिडल, टैम्बोरिन और ड्रम) दृश्य को पूरा करते हैं। हरम की तीनों निवासी, जिनकी मुद्राओं को फेंटन द्वारा सावधानीपूर्वक नियोजित किया गया था, ऐसे वस्त्रों का मिश्रण पहने हुए हैं जिनकी पहचान करना मुश्किल है।
किसी एक स्थान की पोशाक नहीं, बल्कि ऐसी पोशाकें जो स्पष्ट रूप से उस क्षेत्र की भावना को जगाने के लिए बनाई गई हों।
सामान्य तौर पर। फ़ेंटन के लंदन स्टूडियो की रोशनदानें तस्वीर में मुश्किल से दिखाई दे रही हैं, साथ ही नर्तकी की बाहों को एक्सपोज़र के लिए स्थिर रखने वाले तार भी दिख रहे हैं।
तस्वीर खींचने का समय।
यह तस्वीर 1859 में लंदन में छठे वार्षिक समारोह में प्रदर्शित की गई थी। फोटोग्राफिक सोसायटी की प्रदर्शनी, साथ ही कुछ अन्य लोगों की प्रदर्शनी भी शामिल है।
श्रृंखला। इन्हें मिली-जुली समीक्षाएँ मिलीं, कुछ आलोचकों ने इन्हें पूर्वी जीवन के वास्तविक दृश्यों के प्रशंसनीय चित्रण के रूप में वर्णित किया, जबकि अन्य ने इन्हें कमतर आंका।
उनकी स्पष्ट कृत्रिमता अविश्वसनीय थी। जहाँ तक मुझे पता है, उन्हें दोबारा प्रदर्शित नहीं किया गया और वे बिक्री के लिए उपलब्ध नहीं थे। बचे हुए अधिकांश नमूने
फेंटन की ओरिएंटलिस्ट श्रृंखला के उदाहरण तीन एल्बमों में बचे रहे जो कि 1978 और 1982 के बीच लंदन की नीलामी में बेची गईं।3 जब फेंटन लंदन में काम कर रहे थे, तब अन्य फोटोग्राफर भी अपना काम शुरू कर रहे थे।
मध्य पूर्व के शहरों में दुकानें पर्यटकों और स्थानीय निवासियों दोनों को तस्वीरें उपलब्ध कराती थीं। वे भी हरम की तस्वीरें बनाते थे, लेकिन वे
वे एक अलग संदर्भ में और कुछ अलग दर्शकों के लिए काम कर रहे थे।
इसमें वे लोग शामिल थे जिन्होंने वास्तव में उस क्षेत्र की यात्रा की थी या जो कुछ समय के लिए वहां रह रहे थे।4 यह सर्वविदित है कि मध्य पूर्व में पर्यटकों की जो अपेक्षाएं थीं, वे उनके लिए उपलब्ध व्यापक सचित्र यात्रा साहित्य से प्रभावित होती थीं। लेकिन इस बात पर कम ही चर्चा होती है कि उन अपेक्षाओं को किस हद तक चुनौती दी गई होगी।

या कम से कम संशोधित हो गया हो, उन दृश्यों और अनुभवों की बौछार से जो पर्यटकों को अपनी किताबों के पन्नों से निकलकर किसी शहर की सड़कों पर आने पर देखने को मिलते हैं।
वास्तविक शहर। एक बार जब आगंतुक वास्तविक इमारतों, बाजारों, स्थानीय निवासियों और ढेर सारे स्मृति चिन्हों से घिर जाते, तो वे एक और चीज़ की मांग करते।
उनके आस-पास जो कुछ देखा गया और जो प्रतीत हुआ, उसके बीच अधिक सामंजस्य। दूरस्थ लंदन स्टूडियो में बनाई गई पर्यटक तस्वीरों में। फोटोग्राफ-हरम/घर/सेट 243

[ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के पास इस छवि के इलेक्ट्रॉनिक अधिकार नहीं हैं। इसे देखने के लिए, कृपया इस पुस्तक के मुद्रित संस्करण को देखें।]

2 सेबाह और ज्वैलर. एन.245.
अनुसंधान पुस्तकालय। गेटी
अनुसंधान संस्थान, लॉस
एन्जिल्स (96.आर.14).

स्थानीय पर्यटकों के लिए काम करने वाले विक्रेता किसी ग्राहक की जरूरतों को पूरा करते होंगे।
आधार के लिए ऐसी छवियों की आवश्यकता होती है जो कम से कम कुछ हद तक विविधता से मेल खाती हों।
आगंतुकों के रूप में उनके अनुभवों की तीव्रता और विवरण। यह समझने के लिए कि फोटोग्राफरों द्वारा ली गई हरम की तस्वीरें किस प्रकार से प्रभावित करती हैं।
यदि यह क्षेत्र फेंटन या यूरोप में निर्मित अन्य लोगों से संबंधित है, तो हम निर्मित असंख्य हरम तस्वीरों के एक छोटे से नमूने को देख सकते हैं।
इस क्षेत्र में व्यावसायिक पर्यटन फोटोग्राफी के चरम काल में, लगभग
1865 से 1890 (चित्र 2)। यह वह समय था जब पर्यटकों की मार्गदर्शिकाएँ उन्हें फोटोग्राफरों की दुकानों की ओर निर्देशित करती थीं, जहाँ से वे अपनी पसंद की तस्वीरें चुनते थे।

कैटलॉग जिनमें सैकड़ों विकल्प मौजूद थे: वे स्मारकों, सड़क के दृश्यों, परिदृश्यों और मानव आकृतियों की छवियां ऑर्डर कर सकते थे। ग्राहक
वे तैयार एल्बम भी खरीद सकते हैं। यदि वे चाहें तो उनमें से चित्र चुन सकते हैं।
कैटलॉग और उनकी तस्वीरों को दुकान में उनके लिए एल्बम में संकलित किया जा सकता था, या वे बाद में अपने खुद के एल्बम बना सकते थे।
चित्र 2 में दिखाई गई तस्वीर, जो इस्तांबुल की सेबाह और जोइलियर 5 फर्म द्वारा ली गई है, हरम का आभास कराने के लिए उपयोग किए गए तत्वों के संदर्भ में फेंटन की छवि से उल्लेखनीय रूप से मिलती-जुलती है। हम इसमें वस्त्रों का वही उपयोग देखते हैं जो एक विशिष्ट दृश्य को परिभाषित करने के लिए किया गया है।
स्थान और कई छोटी सजावटी वस्तुएं: जड़ाऊ मेज, पानी का पाइप, और 244 नैन्सी मिकलराइट

विभिन्न प्रकार के धातु के बर्तन। स्टूडियो फोटोग्राफर इन्हें बनाने में माहिर थे।
एक ही आंतरिक स्थान की सीमाओं के भीतर विभिन्न प्रकार की सेटिंग्स, एक तथ्य
हरम की तस्वीरों से यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। हालांकि कुछ हरम की व्यवस्थाएं दूसरों की तुलना में अधिक विस्तृत होती हैं, फिर भी हरम की भौतिक सीमाएं परिभाषित होती हैं।
या तो दीवारों और फर्श पर लटके हुए वस्त्रों द्वारा, या इस अवधि की कई स्टूडियो छवियों में देखे जाने वाले मानक आंतरिक पृष्ठभूमि द्वारा, संयुक्त रूप से
कालीन या अन्य फर्श कवरिंग के साथ। स्टूडियो का भौतिक स्थान अक्सर
इसमें एक खिड़की शामिल थी (तकनीकी दृष्टि से प्राकृतिक प्रकाश महत्वपूर्ण था), लेकिन खिड़की से दिखने वाला दृश्य कभी भी हरम के अंतर्गत नहीं आता था। इस प्रकार, यह दृश्य छवि की आंतरिकता की भावना और रूढ़िवादी हरम की सीमित प्रकृति दोनों को सुदृढ़ करता है।
चित्र 2 में, केंद्रीय आकृति निश्चित रूप से हरम की निवासी है, जिसने पोशाक पहनी हुई है।

उपयुक्त विदेशी पोशाक पहने और शांति से बैठे हुए, तस्वीर से बाहर देखते हुए। जब इस विषय पर दर्जनों विविधताएँ तैयार की गईं,
सेबाह और जोइलियर की तुलना करने पर हमें उनके द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली का अंदाजा होता है। उनके पहनावे और हावभाव के माध्यम से हरम का चित्रण किया गया है।
मॉडल, सर्वव्यापी छोटी जड़ाऊ मेज और पानी का पाइप, और कई प्रकार के
अन्य प्रॉप्स। तस्वीरों में अक्सर दिखाई देने वाला सोफा, कालीन और चित्रित पृष्ठभूमि स्टूडियो प्रॉप्स हैं जिनकी मदद से बिना हस्ताक्षर वाली तस्वीरों को सेबाह और जोइलियर की कृति के रूप में पहचाना जा सकता है। हरम की तस्वीरों में महिलाओं द्वारा पहनी गई पोशाक सुंदर कढ़ाईदार रेशम की हो सकती है।
एंटारी के साथ मेल खाने वाला सलवार, एक प्रकार की पोशाक जो कुछ दशक पहले तक धनी महिलाओं द्वारा व्यापक रूप से पहनी जाती थी, या चित्र 2 में मॉडल की सामान्य हरम पोशाक।
चित्र 3 में, हम सेबाह और जोइलियर द्वारा निर्मित एक अधिक विस्तृत हरम संरचना देखते हैं, जिसमें तीन मॉडलों का उपयोग किया गया है। हालांकि छवि पर उनके हस्ताक्षर नहीं हैं, पृष्ठभूमि और अन्य प्रॉप्स से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि यह उन्हीं की रचना है।
उनका काम। संगीत, हरम की महिलाओं की मानक गतिविधियों में से एक - जैसा कि प्राच्यविद् कलाकारों और कुछ यात्रियों द्वारा वर्णित किया गया था - को दर्शाया गया है।
दो महिलाएं वाद्य यंत्र पकड़े हुए हैं। सेबाह और जोइलियर की हरम की कई तस्वीरों में, दृश्य के केंद्र में मौजूद मॉडल को दर्शक के अवलोकन के लिए प्रस्तुत किया जाता है, जो फर्नीचर पर या फर्श पर बैठी या लेटी होती है। तस्वीर में एक महिला फ्रेम के सामने फैली हुई है, उसका हाथ सिर के ऊपर है और वह तंबाकू और संगीत से स्पष्ट रूप से तनावमुक्त प्रतीत होती है। यह तस्वीर अब तक देखी गई अन्य तस्वीरों की तुलना में दर्शक की यौन कल्पना को कहीं अधिक स्पष्ट और प्रत्यक्ष तरीके से उत्तेजित करती है।6
बेशक, सेबाह और जोइलियर मध्य पूर्व में हरम के दृश्यों को चित्रित करने वाले एकमात्र व्यावसायिक फोटोग्राफर नहीं थे। एक पूर्व-
हरम/घर/सेट 245

[ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के पास इस छवि के इलेक्ट्रॉनिक अधिकार नहीं हैं। इसे देखने के लिए, कृपया इस पुस्तक के मुद्रित संस्करण को देखें।]

3 सेबा और जोइलियर, नहीं। 655. अनुसंधान पुस्तकालय। गेट्टी अनुसंधान संस्थान, लॉस एंज़िल्स
(96.आर.14).

किसी अन्य फोटोग्राफर द्वारा ली गई हरम की छवि का पर्याप्त उदाहरण शिक्षाप्रद है।
इस अवधि में व्यावसायिक फोटोग्राफरों द्वारा हरम के परिवेश को दर्शाने के लिए उपयोग किए जाने वाले सामान्य तत्वों और व्यक्तिगत भिन्नताओं दोनों की पहचान करना।
(चित्र 4)। गुइलौम बर्गग्रेन एक स्वीडिश फोटोग्राफर थे जिनका स्टूडियो लगभग 1870 से 1910 तक इस्तांबुल में था; उस दौरान उनका व्यवसाय काफी फलता- फूलता रहा।
समय.7 उनकी तस्वीर में वे तत्व भी शामिल हैं जिन्हें हम प्रतिष्ठित तत्व कह सकते हैं।
हरम का संकेत देने के लिए प्रयुक्त वस्तुएँ: छोटी मेजें, हुक्का, धातु के बर्तन, कम से कम एक कालीन, अक्सर एक सोफा, और इस मामले में एक छोटा पंखा, साथ ही, निश्चित रूप से,
इस मॉडल ने ड्रेस और ट्राउजर पहन रखे हैं।
बर्गग्रेन की छवि की तुलना सेबाह और जोइलियर की छवियों से करने पर यह आसानी से स्पष्ट हो जाता है।
यह देखने पर कि शब्दावली बहुत समान है, लेकिन सावधानीपूर्वक जांच करने पर तस्वीरों से पता चलता है कि इस्तेमाल की गई वस्तुएं—उदाहरण के लिए, छोटी मेज या पानी का पाइप—अपने विवरणों में भिन्न हैं। इसी तरह, हरम का माहौल बनाने के लिए इस्तेमाल किए गए फर्नीचर, कालीन या पृष्ठभूमि के बड़े तत्वों में भी छोटे लेकिन स्पष्ट अंतर दिखाई देते हैं। इन तत्वों में भिन्नता की सीमित सीमा के बावजूद,

यह हरम की संरचना की अपेक्षाकृत स्थिर प्रकृति को दर्शाता है, जैसा कि इसे बनाया गया था।
व्यावसायिक फोटोग्राफरों द्वारा, व्यक्तिगत तत्वों के बीच अंतर 246 नैन्सी मिकलेराइट की अनुमति देते हैं

[ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के पास इस छवि के इलेक्ट्रॉनिक अधिकार नहीं हैं। इसे देखने के लिए, कृपया इस पुस्तक के मुद्रित संस्करण को देखें।]

4 जी. बर्गग्रेन. एन.265. रिसर्च लाइब्रेरी. द गेट्टी रिसर्च इंस्टीट्यूट, लॉस एंजिल्स
(96.आर.14).

हस्ताक्षरहीन तस्वीरों की पहचान उनके स्वरूप के आधार पर करना।
वही पानी का पाइप, वही कालीन, वही अष्टकोणीय मेज, जैसा कि हस्ताक्षरित चित्रों में देखा जा सकता है, जैसा कि सेबाह और जोइलियर की तस्वीर में है। चित्र तीन।
सेबाह और जोइलियर, बर्गग्रेन और कई अन्य लोगों ने इस्तांबुल में लंबे समय तक सफल व्यावसायिक स्टूडियो चलाए।8 उनके ग्राहकों में पर्यटक, विदेशी निवासी, ओटोमन और सरकार शामिल थे, जिनके लिए उन्होंने पोर्ट्रेट, डॉक्यूमेंट्री तस्वीरें और अन्य सभी प्रकार की कलाकृतियाँ तैयार कीं। पर्यटक चित्रों में हरम के दृश्य प्रमुखता से दिखाए जाते थे, हालांकि जैसा कि मैंने कहीं और लिखा है, मेरा मानना है कि ये चित्र कहीं अधिक उन्नीसवीं सदी में यह उतना प्रचलित नहीं था जितना हम कल्पना करते हैं।9 इसके अलावा, हम
हम उनके लिए एक प्रामाणिक संस्करण मान लेते हैं, जिसकी हमने अब तक जांच की है।
जब हमें फोटो इतिहास में अक्सर प्रकाशित होने वाले हरम दृश्यों— प्रामाणिक संस्करणों—से परे देखने का अवसर मिलता है, तो हमें कुछ ऐसा मिलता है
आश्चर्यजनक छवियां (चित्र 5)। सेबाह और जोइलियर द्वारा ली गई इस तस्वीर में शामिल हैं

हरम के सभी स्थापित तत्व—वस्त्र, हुक्का, मेज इत्यादि—लेकिन यहाँ वे मॉडल की तरह ही उलटे हुए हैं।
हरम/घर/सेट 247

[ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के पास इस छवि के इलेक्ट्रॉनिक अधिकार नहीं हैं। इसे देखने के लिए, कृपया इस पुस्तक के मुद्रित संस्करण को देखें।]

5 सेबा और जोइलियर, नहीं। 918. अनुसंधान पुस्तकालय। गेट्टी अनुसंधान संस्थान, लॉस एंज़िल्स
(96.आर.14).

एक खूबसूरत पोशाक पहने, मदहोश महिला की कामुक प्रस्तुति, हम हैं
एक महिला हमें उल्टी ओर से देख रही है, उसके चेहरे पर शरारती मुस्कान है। इस मूर्खतापूर्ण या कुछ हद तक हास्यास्पद तस्वीर में, फोटोग्राफर ने
और यह मॉडल हरम के दृश्य की मानक तस्वीर को बाधित करता है। रूढ़िवादिता के साथ खेलकर, वे अपनी समझ को प्रकट करते हैं।
इसके प्रति उनकी संवेदनशीलता और आलोचनात्मक लेकिन हास्यपूर्ण तरीके से इसका सामना करने की उनकी तत्परता।
हरम की प्रतिष्ठित तस्वीर का शायद एक अधिक सामान्य रूप चित्र 6 में दर्शाया गया है, जिसमें हरम का परिवेश और वास्तव में
फोटोग्राफर के स्टूडियो के परिधान तो बरकरार हैं, लेकिन उन कपड़ों में मौजूद शरीर फोटोग्राफर के मॉडलों के बजाय यूरोपीय पर्यटकों के हैं। सजना- संवरना पर्यटकों का एक आनंददायक शगल था—हमारे पास
ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं जिनमें फोटोग्राफर, कलाकार और लेखक स्थानीय निवासियों के बीच किसी का ध्यान आकर्षित किए बिना रहने के लिए अपना वेश बदल लेते थे—लेकिन
यह एक ऐसी चीज़ भी थी जो लोग सिर्फ़ यह देखने के लिए करते थे कि कैसा लगता है। अक्सर, जैसा कि इस उदाहरण में है, उनका तैयार होना फ़ोटोग्राफ़र के स्टूडियो में होता था।
कभी-कभी हम सिर्फ देखकर ही समझ जाते हैं कि क्या हो रहा है; अन्य मामलों में

ऐसे मामलों में, हमारे पास सहायक दस्तावेज मौजूद हैं।
बर्गग्रेन द्वारा ली गई इस तस्वीर के संदर्भ में, हम जानते हैं कि ये चार स्वीडिश नागरिक—
248 नैन्सी मिकलराइट

6. गुइलौम बर्गग्रेन।
एक्सल एडेलस्कोल्ड, एंडर्स ज़ोर्न, क्लेस की तस्वीर
एडेलस्कोल्ड और एम्मा ज़ोर्न
क्रिसमस की पूर्व संध्या, 1885. ज़ोर्न
संग्रहालय, मोरा, स्वीडन।
ज़ोर्न कलेक्शंस के सौजन्य से,
मोरा, स्वीडन।

एक प्रसिद्ध चित्रकार और उनकी पत्नी, और एक स्वीडिश राजनेता और उनका बेटा दिसंबर 1885 में इस्तांबुल पहुंचे थे। मनोरंजन के लिए वे
उन्होंने बर्गग्रेन के स्टूडियो का दौरा किया, जहां उन्होंने वेशभूषा बदलकर एक दृश्य का अभिनय किया जिसमें एक दास व्यापारी, एक सुंदर दासी और दो पुरुष शामिल थे जो उसे खरीदना चाहते थे।
इस तस्वीर की कहानी राजनेता के संस्मरणों में मिलती है।10
चित्र 6 में बर्गग्रेन और उनके स्वीडिश आगंतुकों द्वारा बनाया गया वेशभूषा वाला दृश्य, लोकप्रिय पर्यटक स्मृति चिन्ह का थोड़ा अधिक विस्तृत संस्करण है।
एक ऐसी तस्वीर जिसमें विदेशी आगंतुक स्थानीय व्यक्ति के कपड़े और अस्थायी रूप से उसकी पहचान को अपनाकर देखता है। विदेशी महिलाओं के लिए, हरम के परिधानों को आज़माना और फ़ोटोग्राफ़र के स्टूडियो के "हरम" जैसे माहौल में पोज़ देना अनिवार्य है।
हरम के विचार के अपार आकर्षण को देखते हुए, यह लगभग अप्रतिरोध्य रहा होगा। फोटोग्राफर के स्टूडियो में पोशाकें आज़माना (या
तुर्की के उन घरों में जहाँ विदेशी महिलाएँ कभी-कभार जाया करती थीं)11 एक दूसरी पहचान को आज़माने का एक सम्मानजनक तरीका था, एक ऐसी पहचान जो अपने साथ लेकर चलती थी
यौन भोग और कामुक विलासिता का आकर्षण। फिर भी सांस्कृतिक क्रॉस-ड्रेसिंग यह इसलिए भी सुखद था क्योंकि अपनी क्षणभंगुरता में ही इसने सत्य को रेखांकित किया था।
हरम/घर/सेट 249

7. अली सामी। पारिवारिक तस्वीर, 1908। निजी संग्रह।

विषय की गैर-देशी पहचान को उजागर करते हुए सामाजिक सीमाओं को और मजबूत किया गया।
क्रॉस-ड्रेसिंग को धुंधला करने का दावा किया गया था।12 हालाँकि, क्रॉस-ड्रेसिंग स्वयं क्षणभंगुर थी, लेकिन तस्वीर नहीं। एक स्थायी अनुस्मारक के रूप में
एक अलग और मोहक पहचान के साथ प्रयोग करते हुए, सज-धजकर ली गई वह तस्वीर एक तरह की ट्रॉफी के रूप में काम करती थी जो उस प्रलोभन की गवाही देती थी जिसका सामना किया गया था और जिस पर विजय प्राप्त की गई थी।
आइए, इस्तांबुल के फोटोग्राफरों द्वारा अपने स्टूडियो में बनाए गए हरम से हटकर, उन हरमों पर ध्यान दें जिनमें इस्तांबुल में रहने वाले ओटोमन वास्तव में रहते थे—दूसरे शब्दों में, ओटोमन घरों के आंतरिक सज्जा पर।
इस काल के परिवार। उन घरेलू आंतरिक सज्जा या हरमों की तुलना पर्यटकों के लिए बनाई गई फोटोग्राफिक संरचनाओं से किस प्रकार की जा सकती है? हालाँकि इस विषय पर विस्तृत चर्चा यहाँ मेरे लिए संभव नहीं है, लेकिन हम जानते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, ओटोमन संस्कृति के कई अन्य पहलुओं के साथ-साथ ओटोमन घरेलू आंतरिक सज्जा में भी परिवर्तन आने लगे।13

फिर भी, हम कुछ बेहद दुर्लभ तस्वीरें देख सकते हैं जो हमें इस अवधि के घरों की झलक दिखाती हैं, जिनमें से पहली तस्वीर अली द्वारा ली गई है।
ओटोमन सेना के एक अधिकारी, सामी, और उनके परिवार की यह तस्वीर 1908 में ली गई थी (चित्र 7)। अली सामी (1866-1936) ने तोपखाने के अधिकारी के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया था, लेकिन उन्होंने अपना अधिकांश जीवन सैन्य सेवा में बिताया।
इंपीरियल स्कूल ऑफ इंजीनियर्स में कला और फोटोग्राफी पढ़ाने का करियर। इसके अलावा उन्होंने अब्दुल हामिद के लिए सैन्य फोटोग्राफर के रूप में भी काम किया। उन्होंने नैन्सी मिकलराइट के साथ भी काम किया।

8. अली सामी. हामिदे हनीम.
1905. अली सामी. निजी
संग्रह।

उन्होंने अपने दोस्तों और परिवार की बहुत सारी तस्वीरें लीं, जिनमें से कुछ तस्वीरें इस प्रकार हैं:
अब इस्तांबुल में एक निजी संग्रह में है।14 इस तस्वीर में, परिवार और उनके चार अलग-अलग अखबार तस्वीर का केंद्र बिंदु हैं, न कि कमरा।
स्वयं तो नहीं, लेकिन हम कुछ विवरण देख सकते हैं: संगमरमर की ऊपरी सतह वाली ड्रेसर और उससे मेल खाता दर्पण, वह कुर्सी जिस पर एक महिला बैठी है, और उस पर लगी तस्वीरें।
ड्रेसर। हमें इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि यह परिवार कितनी आसानी से खुद को प्रस्तुत करता है।
वह कैमरे के लिए काम करता है और एक विशेष छवि बनाने के लिए फोटोग्राफर के साथ सहयोग करता है।
जैसा कि हमने सेबाह और जोइलियर की हरम की तस्वीरों में और उन्नीसवीं सदी की अनगिनत अन्य फोटोग्राफी के उदाहरणों में देखा है,
दुनिया भर में, फोटोग्राफरों के लिए यह एक मानक प्रथा थी कि वे
किसी विशेष परिवेश को दर्शाने के लिए प्रॉप्स का उपयोग करें। चित्र 8 में, जो 1905 में बनी एक युवती, हामिदे हनीम (ओटोमन संदर्भ में, हनीम एक सम्मानजनक उपाधि है, जो मैडम या मैडमोजेल के समान है) का चित्र है, मुझे अली सामी द्वारा चुने गए प्रॉप्स में दिलचस्पी है, जो एक विशिष्ट फोटोग्राफिक शैली को दर्शाते हैं।
संक्षिप्त रूप में, यह उनके विषय के लिए एक आंतरिक संदर्भ है, इस मामले में एक युवती।
जो परिवार के एक करीबी दोस्त, चित्रकार होका अली रिज़ा की बेटी थीं। हरम/घर/सेट 251

[ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के पास इस छवि के इलेक्ट्रॉनिक अधिकार नहीं हैं। इसे देखने के लिए, कृपया इस पुस्तक के मुद्रित संस्करण को देखें।]

9. अज्ञात फोटोग्राफर। घर के बाहर परिवार का समूह। अनुसंधान पुस्तकालय। गेटी रिसर्च इंस्टीट्यूट, लॉस एंजिल्स (96.r.14).

हमीदे हनीम एक ऐसे फोटोग्राफिक स्थान में रहती हैं जिसमें एक फ्लोर लैंप, एक साइड टेबल और एक बेंटवुड कुर्सी शामिल है, ये सभी यूरोपीय शैली के बैठक कक्ष के तत्व हैं।
यहां सेबाह और जोइलियर के हरम जैसा कुछ भी नहीं है, और न ही पहले कभी था।
पिछली तस्वीर में दर्शाया गया आंतरिक भाग।
ओटोमन शासकों द्वारा अपने घरों की खींची गई तस्वीरें बहुत कम ही देखने को मिलती हैं।
प्रकाशित फोटोग्राफिक रिकॉर्ड में दर्ज हुआ, यही एक कारण है कि अली सामी का काम इतना अधिक रुचिकर है। तस्वीरों का एक आकर्षक समूह,
गेटी रिसर्च इंस्टीट्यूट के विशेष संग्रह में मौजूद उनसठ स्नैपशॉट छवियों की एक श्रृंखला15, ओटोमन घरेलू आंतरिक सज्जा का दूसरा उदाहरण प्रस्तुत करती है (चित्र 9)। संग्रह के अधिग्रहण संबंधी नोट्स में केवल "ओटोमन परिवार, 1890, विविध छवियां"16 लिखा है। यह तिथि छवियों में कुछ महिलाओं द्वारा पहने गए कपड़ों से पुष्ट होती है, जिन्हें ओटोमन काल का माना जा सकता है।
1890 के दशक.17
ये तस्वीरें संभवतः एक साधारण बॉक्स कैमरे से ली गई थीं, जो 1880 के दशक से आम तौर पर उपलब्ध होने लगे थे।
इस संदर्भ में, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इन नए, सरल कैमरों के आगमन ने फोटोग्राफी के तरीकों को किस हद तक बदल दिया।
उपयोग किया जा सकता है।18 अब बहुत अधिक लोगों के पास चित्र बनाने की सुविधा उपलब्ध थी और इस प्रकार
स्वयं को और अपने जीवन को प्रस्तुत करने के तरीके पर नियंत्रण रखने के लिए (फोटो-252 नैन्सी मिकलराइट)

चित्रात्मक रूप से। इन तस्वीरों के समूह को देखते हुए, मुझे आश्चर्य हुआ कि कौन
तस्वीर में दिख रहे परिवार के सदस्यों में फोटोग्राफर भी शामिल था— संभवतः यह वही व्यक्ति था।
इस समूह के केंद्र में सैन्य वर्दी पहने सज्जन थे, क्योंकि इंपीरियल स्कूल ऑफ इंजीनियर्स में ही फोटोग्राफी का प्रशिक्षण दिया जाता था।

सबसे पहले यह व्यापक रूप से ओटोमन मुसलमानों के लिए उपलब्ध हुआ।
ये तस्वीरें एक उत्साही शौकिया फोटोग्राफर की रचना हैं।
और उन सभी को थोड़े-थोड़े समय के अंतराल में ही ले जाया गया—वे लोग जो तस्वीरों की उम्र एक जैसी ही रहती है और कुछ मामलों में, कपड़े भी वही रहते हैं। विषयवस्तु की विविधता उन तस्वीरों के प्रकार से मिलती-जुलती है जो हम देखते हैं।
आजकल हम अपने परिवारों की तस्वीरें लेते हैं: पार्टियां, पोर्ट्रेट, विशेष कार्यक्रम, घर कैसा दिखता है, इत्यादि। सभी तस्वीरों में लगभग वही दस लोग हैं।
साथ ही कुछ अन्य लोग भी हैं जो स्पष्ट रूप से आगंतुक हैं। उन्हें देखते हुए और बार-बार, परिवार के सभी सदस्यों के नाम और कहानियां देना लुभावना लगता है, लेकिन यह इस अध्याय के दायरे से बाहर है। तस्वीरें
यहां हम आंतरिक छवियों के बड़े समूह के एक प्रतिनिधि नमूने का अध्ययन करेंगे। पूरे समूह में से लगभग आधी तस्वीरें बाहरी स्थानों पर ली गई थीं, जिनमें से अधिकांश
घर के बगीचे में। वे कई कारणों से आकर्षक हैं, लेकिन
चूंकि यहां हमारा विषय घरेलू आंतरिक सज्जा है, इसलिए ये बाहरी तस्वीरें भी मेरी वर्तमान परियोजना के दायरे से बाहर हैं।
चित्र 9 में, घर की पृष्ठभूमि में परिवार के समूह पर ध्यान केंद्रित किया गया है, इसलिए हमें अग्रभाग का केवल एक हिस्सा दिखाई देता है। नौ लोगों का समूह एक दूसरे से सटा हुआ है।
बीच में बैठे, सैन्य वर्दी पहने हुए व्यक्ति के चारों ओर संगठित।
एक घुटने पर तलवार रखे हुए वर्दीधारी व्यक्ति के बाईं ओर दो छोटे लड़के खड़े हैं। इस समूह में अन्य छह आकृतियाँ विभिन्न आयु वर्ग की महिलाओं की हैं, जिनमें शामिल हैं:
एक व्यक्ति जो तस्वीर के फ्रेम से आंशिक रूप से बाहर, दरवाजे पर खड़ा है। दो छोटे लड़के, बीच में खड़े आदमी से टिके हुए हैं, तीनों ने अपनी बाहें फैला रखी हैं।
उनकी छाती पर मुड़ी हुई आकृतियाँ एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं, जैसे कि

हमारे बाईं ओर बैठी बुजुर्ग और युवा महिलाएं। ये दोनों महिलाएं और बीच में बैठा पुरुष, बड़े समूह के भीतर एक और घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ समूह बनाते हैं।
जिनमें से कुछ अपने घर की सीढ़ियों पर बैठे हुए प्रतीत होते हैं। यह तस्वीर, और इसमें प्रदर्शित व्यक्तियों के बीच के संबंध, एक प्रकार के प्रतीक के रूप में कार्य करते हैं।
विभिन्न समूहों में दिखाई देने वाले कई लोगों के परिचय के बारे में, श्रृंखला की अन्य तस्वीरों में।
इन तस्वीरों के माध्यम से हमें घर के अंदर के कई कमरे भी देखने को मिलते हैं।
अंदरूनी हिस्से। लोगों से खाली, ऐसा लगता है कि ये तस्वीरें उस समय कमरे, फर्नीचर और विभिन्न सजावटों की स्थिति को दस्तावेज़ के रूप में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से ली गई थीं।
तस्वीर का। इन तस्वीरों में से, जिनमें से आकृति 10 एक उदाहरण है,
उपभोग की आदतों के दुर्लभ और अत्यंत मूल्यवान प्रमाण प्रदान करते हैं हरम/घर/सेट 253

[ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के पास इस छवि के इलेक्ट्रॉनिक अधिकार नहीं हैं। इसे देखने के लिए, कृपया इस पुस्तक के मुद्रित संस्करण को देखें।]

10 अज्ञात फोटोग्राफर। कमरे का आंतरिक भाग। अनुसंधान पुस्तकालय। गेटी अनुसंधान पुस्तकालय।
संस्थान, लॉस एंजिल्स (96.r.14).

इस काल में ओटोमन साम्राज्य के इस वर्ग और उनके द्वारा अपने घरेलू आंतरिक सज्जा के निर्माण के तरीकों के बारे में। कमरा वस्तुओं से भरा हुआ है। हम एक दीवार को देखते हुए, जो फर्श से छत तक फैली अलमारियों से घिरी हुई है और एक आले के दोनों ओर बनी हुई है।
कमरे के एक कोने में। अलमारी के दरवाज़े नक्काशीदार लकड़ी की वस्तुओं और अन्य चीज़ों से सजाए गए हैं। इसकी सावधानीपूर्वक सममित व्यवस्था के साथ।

पंखों, फूलदानों, आदमकद मूर्तियों और सजावटी ट्रे पर चित्रित चित्रों के समूह को केंद्र में रखी चार वस्तुओं के चारों ओर रखा गया है, जिससे ऐसा लगता है कि आला ही केंद्र बिंदु है।
छवि।
जब हम तस्वीर का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हैं, तो हमें फर्नीचर के दो अन्य टुकड़े दिखाई देते हैं जिनका एकमात्र कार्य सजावटी वस्तुओं को प्रदर्शित करना प्रतीत होता है।
कुछ अन्य वस्तुएँ भी हैं, साथ ही कुछ स्पष्ट रूप से उपयोगी चीज़ें भी हैं, जैसे कि दाईं ओर दीवार पर टंगे हुए चिमनी के औजार। आले के सामने एक असममित, लकड़ी का गद्दीदार सोफा या चेज़ है, जिसके एक हाथ पर सजावटी कपड़ा लिपटा हुआ है। कमरे के बीच में एक बड़ी मेज और कुर्सियाँ दिखाई देती हैं, लेकिन तस्वीर में यह आंशिक रूप से दिखाई नहीं दे रही है और इसे स्पष्ट रूप से देखना मुश्किल है।
पढ़ें। यह कमरा, जो स्पष्ट रूप से घर के सामने तस्वीर में दिख रहे परिवार का रहने का स्थान है, पूरी तरह से भरा हुआ है, और इस कमरे में दिखाई देने वाली कोई भी चीज़ पर्यटक की तस्वीरों में दिखने वाले हरम का संकेत नहीं देती है। दूसरे शब्दों में, यहाँ वस्तुतः कुछ भी नहीं है।
व्यावसायिक फोटोग्राफरों द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुओं के समूह और नैन्सी मिकलेराइट के बीच कोई ओवरलैप नहीं है।

[ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के पास इस छवि के इलेक्ट्रॉनिक अधिकार नहीं हैं। इसे देखने के लिए, कृपया इस पुस्तक के मुद्रित संस्करण को देखें।]

11 अज्ञात फोटोग्राफर। परिवार चाय पी रहा है। अनुसंधान पुस्तकालय। गेटी रिसर्च।
संस्थान, लॉस एंजिल्स (96.r.14).

“हरम” का संकेत और उसी काल के कुछ ओटोमन लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ
उन्होंने अपने रहने की जगह के लिए चुना।19

इन तस्वीरों के समूह में मौजूद कई छवियां विशिष्ट सामाजिक परिस्थितियों को दर्शाती हैं।
इस परिवार के जीवन के कुछ क्षणों को दर्शाया गया है। उदाहरण के लिए, एक सावधानीपूर्वक तैयार किए गए दृश्य में...
एक चाय पार्टी (चित्र 11) में, हम घर के बाहरी हिस्से से पारिवारिक दृश्य में तीन लोगों को पहचानते हैं: सोफे पर बैठी दो महिलाएं और छोटा लड़का। उनके बीच में एक महिला खड़ी है। उनके साथ बाईं ओर बैठी एक और महिला, उसके पीछे खड़ी एक युवती और कैमरे की ओर देख रहा एक व्यक्ति भी शामिल हैं। नीची कुर्सी पर या ज़मीन पर बैठे हुए। सभी ने फैशनेबल यूरोपीय कपड़े पहने हुए हैं, जो उस समय इस्तांबुल के कई निवासियों, कुलीन और उभरते मध्यम वर्गों द्वारा आमतौर पर पहने जाते थे।
चाय परोसना आम तौर पर मेज़बान का अधिकार होता है, जिससे यहाँ के पारिवारिक रिश्तों को समझने में मदद मिलती है। यह समूह सतही है।
दो खिड़कियों के बीच दीवार के सहारे रखे सोफे पर और उसके आसपास लोग इकट्ठा हुए हैं।20 सोफे के पीछे की दीवार पर कपड़ा लिपटा हुआ है, जिस पर कुछ लटका हुआ है।
हरम/घर/सेट 255

[ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के पास इस छवि के इलेक्ट्रॉनिक अधिकार नहीं हैं। इसे देखने के लिए, कृपया इस पुस्तक के मुद्रित संस्करण को देखें।]

12 फोटोग्राफर
अज्ञात। परिवार
सजे-धजे। शोध
पुस्तकालय। गेटी
शोध संस्था,
लॉस एंजिल्स (96.आर.14).

एक बड़ी फ्रेम वाली तस्वीर, जिसे पहचानना मुश्किल है। उसके नीचे, एक और फ्रेम वाली तस्वीर, झुकी हुई है।

सोफे के सामने सुलेख का एक पृष्ठ जैसा कुछ दिखाई दे रहा है।21 चित्र 12 में, हम परिवार को औपचारिक मुद्रा में देखते हैं, जिसमें तीन लोग देख रहे हैं।
कैमरे की ओर सीधे देखते हुए और चार लोग अंतरिक्ष में देख रहे हैं, जो हरम के रूढ़िवादी दृश्य की पैरोडी है। हम इस दृश्य को चाय की दुकान के रूप में पहचानते हैं—
शराब पीने का दृश्य, और वही चार लोग, सभी को फिर से व्यवस्थित किया गया। सोफे के चारों ओर। हालाँकि, यह न तो पिछली तस्वीर की तरह एक सीधा-सादा पारिवारिक दृश्य है, और न ही उस दौर की शौकिया नाट्य परंपरा में रचा गया एक साधारण दृश्य है। यहाँ, सभी ने अजीबोगरीब कपड़े पहने हुए हैं; पुरुषों ने पगड़ी, चोगा और किसी प्रकार का लिपटा हुआ कपड़ा ओढ़ा हुआ है।
वस्त्र के नीचे पहना जाने वाला परिधान, बेल्ट के साथ (कमरबंद नहीं जो पहले हुआ करते थे)
पारंपरिक पोशाक के लिए विशिष्ट) उनके परिधानों को एक साथ बांधे हुए हैं। सभी महिलाएं हल्के बेड कवर या मेज़पोश जैसी चीज़ों में लिपटी हुई हैं।22 तीन बुजुर्ग महिलाओं के बालों में स्कार्फ जैसी सजावट है, लेकिन
ये वही असली याश्माक हैं जिन्हें वे आम तौर पर घर के बाहर पहनती थीं। दो युवा महिलाएं नौकरानियों के वेश में हैं, समूह के दोनों ओर एक-एक खड़ी हैं। परोसने के लिए रखी गई थालियाँ—एक पर दो कॉफी के कप, दूसरी पर छोटी-छोटी पेस्ट्री।
256 नैन्सी मिकलराइट

[ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के पास इस छवि के इलेक्ट्रॉनिक अधिकार नहीं हैं। इसे देखने के लिए, कृपया इस पुस्तक के मुद्रित संस्करण को देखें।]

13 फोटोग्राफर
अज्ञात. हरम
महिलाएं। अनुसंधान
पुस्तकालय। गेटी
शोध संस्था,
लॉस एंजिल्स (96.आर.14).

उनके सामने कालीन पर एक कांच का पानी का पाइप पड़ा है, और उनमें से एक
एक आदमी एक लंबी पाइप की डंडी पकड़े हुए है।
अगली तस्वीर उस श्रृंखला की एक और कड़ी प्रस्तुत करती है जिसे मैं हरम श्रृंखला मानता हूँ।23
पिछली तस्वीर में दिख रही दो महिलाएं सोफे पर लेटी हुई हैं, जिनकी सेवा में एक युवा नौकर मौजूद है (चित्र 13)। हम वही दृश्य देखते हैं और
एक जैसी वस्तुएं: मोती, पंखा और जलपान की प्लेटें। ये तस्वीरें हमें एक बार फिर उस तरीके की याद दिलाती हैं जिसमें एक ही विषय के विभिन्न दृष्टिकोण, विभिन्न निर्माण, स्टूडियो में एक साथ मौजूद थे और आपस में टकराते थे। इस्तांबुल और अन्य जगहों पर व्यावसायिक फोटोग्राफर। जब इस्तांबुल के ओटोमन निवासी व्यावसायिक फोटोग्राफरों की दुकानों पर जाते थे, तो
अपने चित्र बनवाने के लिए, वे अपने
पर्यटकों को बेचने के लिए उपलब्ध छवियों के भंडार में हरम के दृश्य सहित कई प्रकार की तस्वीरें शामिल हैं। यहाँ उन व्यावसायिक पर्यटक तस्वीरों का एक जवाब दिया गया है, जिन्हें उन लोगों ने बनाया है जो स्पष्ट रूप से मानक हरम दृश्य और उसके अलग-अलग घटकों से पूरी तरह परिचित थे।
2000 के एक निबंध में, ज़ेनेप सेलिक ने एक संक्षिप्त अंश शामिल किया है जिसमें वर्णन किया गया है
तुर्की लेखिका फातमा अलीये हनीम (1862-) के बीच एक काल्पनिक आदान-प्रदान हरम/घर/सेट 257

1936) और उनके घर पर तीन पेरिस की महिला मेहमान, जिनमें फात्मा अलीये हनीम एक एल्बम लाती है जिसमें एक महिला की तस्वीर है जो सजी-धजी है। मेहमानों के मन में बनी छवि के अनुसार... फिर वह तस्वीर में मौजूद विदेशी 'तुर्की' दृश्य का विश्लेषण करती है: सिर पर पहना जाने वाला स्कार्फ अरबी शैली का है।
कफ़िये, बनियान और पतलून अल्बानियाई हैं।”24 हालाँकि इस मामले में फ़ातमा अलीये हनीम का विवरण काल्पनिक है, फिर भी यह ओटोमन साम्राज्य की ओर इशारा करता है।
महिला की रूढ़िवादिता और उसके निर्मित स्वरूप दोनों से परिचितता,

यह परिचितता निस्संदेह कई दृश्य साक्षर ओटोमन लोगों द्वारा साझा की जाती थी। हरम की रूढ़िवादिता के साथ खेलते हुए, ओटोमन स्नैपशॉट यह प्रकट नहीं करते हैं कि...
न केवल रूढ़िवादिता की समझ, बल्कि पैरोडी की एक जटिल भावना भी। स्वयं रूढ़िवादिता को अपनाकर और जानबूझकर उसका एक दोषपूर्ण संस्करण बनाकर, फोटोग्राफर और उसके विषय अपनी पहचान का दावा कर रहे हैं।
पश्चिमी समाज की अवधारणाओं को संबोधित करने (और उनका उपहास करने) में अपनी स्वयं की भूमिका निभाना। जैसा कि मैरी रॉबर्ट्स ने इसी तरह की एक तस्वीर के बारे में लिखा है,
किसी दूसरी संस्कृति पर महारत हासिल करने का इससे बेहतर प्रदर्शन और क्या हो सकता है कि उस संस्कृति की अपनी संस्कृति से जुड़ी रूढ़ियों का मज़ाक उड़ाया जाए? विदेशी भाषा में मज़ाक करना यह दर्शाता है कि...
उस भाषा की परिष्कृत समझ।"25 इस तथ्य के कई उदाहरणों से
प्रकाशित ओटोमन तस्वीरों के अपेक्षाकृत छोटे संग्रह में इस तरह की फोटोग्राफिक पैरोडी का उभरना उस समय की परिष्कृतता का संकेत है।
जिसमें ओटोमन साम्राज्य के अंतिम वर्षों में फोटोग्राफी और सांस्कृतिक आलोचना दोनों के प्रति दृष्टिकोण अपनाया गया था।26
इस अध्याय में प्रदर्शित तस्वीरों का विशेष संग्रह—
यह बताना आवश्यक है कि सैकड़ों संभावित विकल्पों में से एकत्रित की गई यह रचना, परस्पर परस्पर क्रिया के प्रमाण प्रस्तुत करती है।
और विरोधाभासी संदर्भ। सबसे पहले और सबसे स्पष्ट रूप से, वे हमें फोटोग्राफरों द्वारा काल्पनिक हरमों के निर्माण के बारे में बताते हैं, या तो अपने स्वयं के उद्देश्यों के लिए, जैसा कि फेंटन के मामले में है, या किसी विशिष्ट बाजार के लिए, जैसा कि सेबाह के मामले में है।
और जोइलियर और कई अन्य। ये काल्पनिक हरम एक जटिल, अस्थिर, बहुआयामी प्राच्यवाद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे जिसने बहुत कुछ आकार दिया।
इस काल और क्षेत्र में सांस्कृतिक आदान-प्रदान। तस्वीरों में हम यह भी देखते हैं कि हरम के दृश्य भी, जिनके लिए छवियों का ऐसा स्पष्ट मानदंड मौजूद है।
जब इनका विकास हुआ था, तब ये कभी-कभी अप्रत्याशित, यहाँ तक कि अनियंत्रित भी थे।

जब हम अपना ध्यान ओटोमन तुर्कों द्वारा अपने परिवारों की ली गई तस्वीरों की ओर मोड़ते हैं, तो हमें उस क्षमता की परिष्कृत समझ दिखाई देती है।
घर और पारिवारिक जीवन की कुछ निश्चित संरचनाएँ बनाने के लिए कैमरे का उपयोग किया गया: इस प्रकार अली सामी परिवार अपने चार समाचार पत्रों के साथ, और दूसरा परिवार अपने
चाय पार्टियाँ। यदि हम उन संरचनाओं को देखें, तो हमें परिवार के सदस्यों को घेरने वाले फर्नीचर और अन्य वस्तुओं में नैन्सी मिकलराइट के 258 साक्ष्य मिलते हैं।

घरेलू स्थान के नए उपयोग और इस क्षेत्र में उभर रहे नए उपभोग पैटर्न
अंत में, हरम की प्राच्यवादी रूढ़िवादिता के इर्द-गिर्द एक प्रति-कथा के प्रमाण के रूप में, एक प्रति-कथा जो बौद्धिक या कलात्मक अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं है, ये तस्वीरें हरम की छवि और ओटोमन दुनिया में इसके विभिन्न प्रभावों की हमारी समझ को जटिल और गहरा बनाने के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

नोट्स

मैं नासिर रब्बत को 2004 में भाग लेने के निमंत्रण के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।
एमआईटी संगोष्ठी, "इतिहास और कल्पना में हरम," जहाँ मैंने इस कृति का एक पूर्व संस्करण प्रस्तुत किया था, और सम्मेलन में भाग लेने वालों को उनकी उपयोगी टिप्पणियों के लिए धन्यवाद देने के लिए। सभी अनुवाद मेरे द्वारा किए गए हैं, जब तक कि अन्यथा इंगित न किया गया हो।
1. प्राच्यवादी चित्रकला पर व्यापक साहित्य उपलब्ध है, जिसमें हरम की छवियां भी शामिल हैं।
इस जटिल विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों के लिए, देखें ब्यूलियू और रॉबर्ट्स, ओरिएंटलिज़्म के वार्ताकार; लुईस, जेंडरिंग ओरिएंटलिज़्म; मैकेंज़ी, ओरिएंटलिज़्म; नोचलिन, "द इमेजिनरी ओरिएंट"; और रोसेन्थल, ओरिएंटलिज़्म। 2 ये चित्र बाल्डविन और रोजर फेंटन द्वारा लिखित एक उत्कृष्ट लघु पुस्तक का विषय थे।
3 वही, 6, 102.

4. ओटोमन लोगों ने इन्हीं फोटोग्राफरों को संरक्षण दिया होगा, लेकिन मेरा मानना है कि हरम की तस्वीरें और अन्य प्रकार की तस्वीरें जरूरी नहीं कि ओटोमन लोगों द्वारा ही खरीदी गई हों, हालांकि स्टूडियो में आने पर उन्होंने निश्चित रूप से उन्हें देखा होगा।
5. ओज़ेन्डेस की पुस्तक "सेबा और जोइलियर की फ़ोटो सबा" देखें। ओज़ेन्डेस के अनुसार, पास्कल सेबाह, जिनका जन्म लगभग 1823 में हुआ था, सीरियाई ईसाई और अर्मेनियाई मूल के थे और उन्होंने तैंतालीस वर्ष की आयु में एक अर्मेनियाई महिला से विवाह किया था। यद्यपि स्रोत के अनुसार विशिष्ट विवरण भिन्न-भिन्न हैं, पास्कल (या उनके पुत्र जीन, पास्कल की मृत्यु के बाद, 1886 में) ने 1880 के दशक में फ्रांसीसी फ़ोटोग्राफ़र पोलिकार्प जोइलियर के साथ मिलकर काम किया। उनका पेरा में एक स्टूडियो था और संभवतः काहिरा में भी एक स्टूडियो था, और उनका व्यवसाय बहुत फलता-फूलता और सफल रहा।
6 वास्तव में, यह उदाहरण आम तौर पर हरम की तस्वीरों की तरह ही यौन रूप से स्पष्ट है।
इससे स्पष्ट संकेत मिलता है कि इन छवियों की कामुकता वास्तविक तस्वीर की तुलना में दर्शक की कल्पना में कहीं अधिक निहित है। यह सामग्री अलूला द्वारा 1986 में प्रकाशित पुस्तक "द कोलोनियल हरेम" में लोकप्रिय बनाई गई सामग्री से बिल्कुल भिन्न है, जिसमें उन्होंने अल्जीरियाई औपनिवेशिक संदर्भ से महिलाओं के स्पष्ट रूप से यौन और उत्तेजक पोस्टकार्ड पर ही ध्यान केंद्रित किया है।
7 बर्गग्रेन के लिए, विग, बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटिनोपल से फोटोग्राफिक दृश्य देखें।
8 हम जानते हैं कि उस समय बड़ी संख्या में व्यावसायिक फोटोग्राफर सक्रिय थे।
इस कालखंड में इस्तांबुल। उदाहरण के लिए, डब्ल्यू. एलन की पुस्तक "सिक्सटी-फाइव इस्तांबुल फोटोग्राफर्स, 1887-1914" देखें; चिज़गेन की पुस्तक "फोटोग्राफी इन द ओटोमन एम्पायर" का संदर्भ अनुभाग देखें।
9 मिकलराइट, ए विक्टोरियन ट्रैवलर इन द मिडिल ईस्ट, विशेष रूप से 102-11 देखें।

10 विग, बोस्पोरस और कॉन्स्टेंटिनोपल के फोटोग्राफिक दृश्य, 32. 11 इस्तांबुल आने वाली कई महिला आगंतुकों के लिए, हरम/घर/सेट 259 में ओटोमन महिलाओं से मिलने का अवसर।

घर जाकर एक "वास्तविक" हरम को प्रत्यक्ष रूप से देखना उनके अनुभव का एक अनिवार्य पहलू था।
हालाँकि, भाषा संबंधी बाधाएँ अक्सर अभेद्य थीं, और इस प्रकार ऐसी गतिविधियाँ जहाँ
बातचीत करना अनिवार्य नहीं था—जैसे एक-दूसरे के कपड़े पहनकर देखना—यही केंद्रीय बन गया। इन मुलाकातों की चर्चा और अंग्रेजी और ओटोमन महिलाओं द्वारा लिखित अंशों के लिए लुईस और मिकलराइट की पुस्तक "जेंडर, मॉडर्निटी एंड लिबर्टी" देखें।
उन्हें।
12 लुईस की पुस्तक "रीथिंकिंग ओरिएंटलिज़्म" और रॉबर्ट्स की "कल्चरल क्रॉसिंग्स" दोनों ही सांस्कृतिक क्रॉस-ड्रेसिंग की प्रथा के साथ-साथ इसके उपयोग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं।
इस विषय पर पहले किए गए कार्य।
13 इस विषय की प्रारंभिक जांच के लिए, जिसमें विस्तृत ग्रंथसूची भी शामिल है,
शेक्टर की पुस्तक "आधुनिक युग में घरेलू उपभोग और पारिवारिक जीवन में परिवर्तन" देखें।
मध्य पूर्व।
14 अली सामी की तस्वीरें सिज़गेन में प्रकाशित हुईं, फ़ोटोग्राफ़र/फ़ोटोग्राफ़ी अली
सामी।
15 स्नैपशॉट शब्द का प्रयोग मूल रूप से कोडक कंपनी द्वारा 1880 के दशक में शुरू किए गए ब्राउनी कैमरों से ली गई तस्वीरों को संदर्भित करने के लिए किया जाता था।
हालांकि यह जानना संभव नहीं है कि ये तस्वीरें वास्तव में ली गई थीं या नहीं।

कोडक बॉक्स कैमरे का उपयोग करते हुए, कुछ लोगों के अनौपचारिक ढंग से पोज़ देने के तरीके से यह स्पष्ट है।
विषयों और इस तथ्य के कारण कि एक ही छवि की कई प्रतियां छापी गईं
थोड़े अलग-अलग आकारों में, यह छवि समूह एक उत्साही व्यक्ति की रचना है।
ये तस्वीरें शौकिया फोटोग्राफर की हैं, पेशेवर फोटोग्राफर की नहीं, और इसलिए ये बिल्कुल उसी तरह की तस्वीरें हैं।
ब्राउनी कैमरे के आविष्कार ने इसे संभव बनाया।
16 ये स्नैपशॉट गिगोर्ड संग्रह के हिस्से के रूप में प्राप्त किए गए थे, जिसे गेट्टी रिसर्च इंस्टीट्यूट ने 1996 में पियरे डी गिगोर्ड से खरीदा था।
17 कई तस्वीरों में महिलाएं जैकेट या बड़ी-बड़ी ड्रेस पहने हुए हैं।
ये आस्तीनें, जिन्हें लेग-ऑफ-मटन स्लीव्स के नाम से जाना जाता है, 1890 के दशक में लोकप्रिय थीं।
बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में यह प्रचलन से बाहर हो गया था।
18 स्नैपशॉट के इतिहास के अच्छे परिचय के लिए कोए और गेट्स की पुस्तक देखें।
स्नैपशॉट फोटोग्राफ; फोर्ड और स्टाइनौथ, आप बटन दबाएं, बाकी काम हम करेंगे।
19 हम जानते हैं कि विक्टोरियन काल की सजावट की शैली में जो दिखता है उसे प्राथमिकता दी जाती थी
हमारी समकालीन दृष्टि से ये सतही अलंकरण और असंख्य चीजों की अधिकता हैं। छोटी-छोटी सजावटी चीज़ें, लेकिन यह कमरा विक्टोरियन मानकों के हिसाब से भी ज़रूरत से ज़्यादा सजा हुआ लगता है। हालाँकि, खाली कमरों की ज़्यादातर तस्वीरों का मकसद शायद यही होता है।
घर के जीवन के एक क्षण को कैद करने के लिए, इस कमरे को घर के अन्य हिस्सों से पसंदीदा वस्तुओं को लाकर विशेष रूप से तस्वीर के लिए तैयार किया जा सकता था।
घर की सजावट को और अधिक निखारने और इसे और भी अधिक स्पष्ट रूप से दर्शाने के लिए।
इस परिवार का समकालीन स्वाद।
20 यह दिलचस्प है कि पारिवारिक समूहों को दर्शाने वाली कोई भी तस्वीर

ये घटनाएँ उन खाली कमरों में घटित होंगी जिनके साज-सामान का इतनी सावधानीपूर्वक दस्तावेजीकरण किया गया था।
यह संभवतः अपेक्षाकृत सरल स्नैपशॉट कैमरे की तकनीकी सीमाओं और समूह दृश्यों के लिए प्रकाश व्यवस्था की आवश्यकताओं का परिणाम है।
21 मैं इरविन शिक का आभारी हूं कि उन्होंने इस विवरण की ओर मेरा ध्यान दिलाया, और तंदूरी के लिए—
इस सुलेख को एक तरह के सुलेख कौशल या स्नातक प्रमाण पत्र के रूप में पहचानना, जो इस परिवार को मुस्लिम के रूप में पहचानने का काम करता है। 260 नैन्सी मिकलराइट

22 वे भव्य कढ़ाई वाले और सुंदर ढंग से सिले हुए वस्त्र जो उस समय के होते इस तस्वीर में दिख रही महिलाओं की माताओं और दादियों द्वारा पहने गए वस्त्र अक्सर सहेज कर रखे जाते थे, इसी वजह से उन्नीसवीं सदी के परिधान संग्रहालयों के संग्रह और बाज़ारों में बिकने के लिए उपलब्ध हो गए हैं। ऐसा लगता है कि अगर इन लोगों को ओटोमन काल के सटीक पुनर्निर्माण में रुचि होती, तो उन्हें उपयुक्त वस्त्र मिल सकते थे—यह तथ्य उनके द्वारा हरम के दृश्य के व्यंग्यात्मक पुनर्निर्माण की सचेत प्रकृति को पुष्ट करता है। 23 “हरम” श्रृंखला में कुल सात तस्वीरें हैं, जो सभी एक ही स्थान पर ली गई हैं।
इन तस्वीरों में एक ही समूह के अलग-अलग लोगों को शामिल किया गया है, जिनमें से कुछ में केवल महिलाएं हैं और कुछ में केवल पुरुष। सभी तस्वीरों में एक ही तरह की वस्तुएं दिखाई देती हैं।
24 फात्मा अलीये हनीम की निस्वान-ए-इस्लाम (इस्लाम की महिलाएं; 1891-92) की यह कहानी, सेलिक द्वारा "विश्व कोलंबियन प्रदर्शनी में प्राच्यवादी प्रवचन का जवाब देते हुए" शीर्षक से पुनर्कथन की गई है। इसे मेरे ध्यान में लाने के लिए मैं उनका आभारी हूं।
25 रॉबर्ट्स, “कल्चरल क्रॉसिंग्स,” 89 देखें। 26 यहाँ चर्चा की गई तस्वीरों के अलावा, और रॉबर्ट्स की “कल्चरल क्रॉसिंग्स” में ओटोमन-मिस्र की राजकुमारी नाज़ली हनुम की तस्वीरों के जोड़े के अलावा, चिज़गेन के फोटोग्राफर/फोटोग्राफी अली सामी ने हमीदे हनीम की एक तस्वीर भी शामिल की है जिसमें वह हरम की लड़की के रूप में कैमरे के सामने पोज़ दे रही हैं। यह

स्पष्ट है कि इसी तरह की अन्य तस्वीरें अभी भी निजी संग्रहों में मिल सकती हैं।

10 • कपड़े और अधोवस्त्र

उन्नीसवीं सदी में वस्त्र और कामुकता
हरम के दृश्य निरूपण

जोन डेलप्लाटो

8 यह अध्ययन उन्नीसवीं शताब्दी के फ्रांस और ब्रिटेन में निर्मित सजे-धजे और निर्वस्त्र हरम महिलाओं की छवियों पर विचार करता है। हरम के दृश्य चित्रण अक्सर उत्तेजना पैदा करने के लिए कार्य करते थे।
पश्चिमी स्वयं और उसके लिए जानकारी प्रदान करना और पहचान बनाना।
पूर्वी अन्य, और वस्त्रों को उन उद्देश्यों का समर्थन करने के रूप में समझा जा सकता है। यह शोध इस बात पर विचार करता है कि प्राच्यवादी किस प्रकार
कला के चुनिंदा उदाहरणों में कामुक पूर्वी स्त्री 'अन्य' की अवधारणा का दृश्यात्मक चित्रण देखने को मिलता है। अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो, यह
यह शोध चार प्रतिनिधि हरम चित्रों के माध्यम से पश्चिमी कामुकता की प्रकृति को स्पष्ट करने और यह समझने का प्रयास करता है कि वस्त्रों ने इसकी गतिशीलता की कल्पना करने में किस प्रकार मौलिक योगदान दिया।
कला में वस्त्रधारी और नग्न शरीर सहवर्ती विषय हैं। फैशन के अध्ययन की अग्रणी ऐनी हॉलैंडर।
यूरोपीय ललित कला में, यह तर्क दिया जाता है कि नग्न या लगभग नग्न रूप में चित्रित महिलाओं के शरीर पूरी तरह से कपड़े पहने महिलाओं के शरीर से बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं, और नग्नता को परिभाषित किया जा सकता है।
वस्त्रों का अभाव, जबकि भारी वस्त्रों से ढका शरीर नग्नता के अभाव को दर्शाता है।1 मैं हॉलैंडर के विचारों को आगे बढ़ाना चाहूंगा।
अवलोकन करते हुए तर्क देते हैं कि हरम की नग्न तस्वीरों को
उनके द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों के संबंध में परिभाषित किया जा सकता है, और 262 जोन डेलप्लाटो

उनके रिश्ते से ही कामुकता का विकास होता है। मैं इससे आगे जाता हूँ।

हॉलैंडर ने बिना कपड़ों वाली हरम महिलाओं की तस्वीरों के भीतर (और उससे परे) लिंग निर्माणों की खोज की है। और जिन दो पूरी तरह से कपड़े पहनी हुई हरम महिलाओं का मैं विश्लेषण करता हूँ, उनके मामलों में मेरी रुचि कुछ बुनियादी मनोवैज्ञानिक पहलुओं में है।
पश्चिमी इच्छा के निर्माण में कार्यरत यौन सिद्धांत / विशुद्ध रूप से सौंदर्यपरक प्रतीत होने वाली छवियों पर दृश्य प्रभुत्व। मेरा मानना है कि प्राच्यवादी दृष्टिकोण कला की कामुकता में औपनिवेशिकता के एक सूक्ष्म क्षेत्र के रूप में उभरते हैं।
वर्चस्व, जिससे मेरा दृष्टिकोण हॉलैंडर के दृष्टिकोण से अधिक राजनीतिक हो जाता है। चाहे हरम की महिला को विस्तृत परिधानों में दिखाया गया हो या नहीं।
नग्नता में लिपटी ये छवियां, ब्रिटेन और फ्रांस को अलग करने वाले राष्ट्रीय विभाजन के पार विद्वानों के मुद्दों के आश्चर्यजनक रूप से समान समूह प्रस्तुत करती हैं।2
दोनों देशों का इतिहास और कला आपस में जुड़े हुए थे।3 उन्होंने नवाचारों को साझा किया।
उद्योग और वस्त्र उत्पादन में, कलात्मक रूप से जागरूक बुद्धिजीवी वर्ग में, और उपनिवेशों और प्रभाव क्षेत्रों पर विश्व प्रभुत्व की स्थिति में। ब्रिटिश और फ्रांसीसी टिप्पणीकारों ने ओटोमन साम्राज्य को "यूरोप का बीमार आदमी" कहा। दोनों देशों के आर्थिक संबंध
तुर्की ने उन प्रभुत्वशाली राज्यों का पक्ष लिया। एंग्लो-ओटोमन संधि से 1838 के उस अधिनियम ने इंग्लैंड के लिए मुक्त व्यापार की गारंटी दी, लेकिन ओटोमन साम्राज्य के वाणिज्यिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप सदी के अंत तक तुर्की की स्थिति लगातार बिगड़ती चली गई।4 जिन चित्रों की मैं चर्चा करूंगा, उनमें व्याप्त कामुकता में पश्चिमी दृश्यात्मक गतिशीलता का प्रमुख आधार इंग्लैंड का आर्थिक प्रभुत्व है। फ्रांस। इस तरह के असंतुलन ने हरम के कपड़ों के अध्ययन में शामिल भौतिक उत्पादों को भी प्रभावित किया। उपनिवेशवादी और उपनिवेशित के बीच शास्त्रीय आर्थिक संबंध कपड़े और वस्त्रों के निर्माण के क्षेत्र पर स्थापित हुआ था। 1905 तक, जब तुर्की ने अपने आयात और निर्यात के आंकड़े

रखना शुरू किया, तब तक वह ऊन, कपास, वलोनिया जैसे कच्चे माल का निर्यात करता था।
कोकून और रेशम अपशिष्ट, जिनकी कुल कीमत 32 लाख पाउंड थी, का आयात किया गया, जबकि इसने ऊनी सामान, सूती प्रिंट (कैलिको), अमेरिकी कपड़ा जैसे निर्मित सामान आयात किए।
और सूती धागे की कुल कीमत 55 लाख पाउंड थी।5 वस्त्र निर्माण से संबंधित वस्तुओं के तुर्की निर्यात और आयात के बीच का अंतर ओटोमन साम्राज्य की स्थिति को दर्शाता है।
तुर्की की पश्चिमी देशों पर वित्तीय निर्भरता। इस प्रकार, ब्रिटिश और फ्रांसीसी चित्रात्मक प्रस्तुतियों में पूर्वी माने जाने वाले वास्तविक वस्त्रों को पश्चिमी भी माना जा सकता है।6
उन्नीसवीं सदी के कलाकारों द्वारा कामुकता के निर्माण में पूर्वी और पश्चिमी नारीत्व के बीच अंतर बनाए रखना आवश्यक था।
पुरुष कलाकारों के सामने एक दुविधा थी: हरम की प्रमुख विशेषताओं का पता कैसे लगाया जाए।
वास्तविक हरम और उसमें रहने वाली महिलाएं, जब वह पवित्र संस्था-
कपड़े पहनना और उतारना 263

उनके लिए शिक्षा सुलभ नहीं थी। मुद्रित पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने शिक्षा के विषय पर परामर्श किया।
हरम में, कलाकार उन अधिकारियों के प्रति सम्मान दिखा सकते थे जिन्होंने संभवतः उन्हें ये पेशकश की थी।
हरम के बारे में सच्चाई, जिसे वे ज्ञान के रूप में आगे बढ़ा सकते थे। इस प्रक्रिया में, ऐसे अधिकारियों के अंतरपाठ्य संदर्भों ने कलाकारों को उजागर किया।
उनकी परिष्कृत सांस्कृतिक आकांक्षाओं के साथ-साथ हरम की बेलगाम यौन गतिविधियों के बारे में प्रचलित भद्दी रूढ़ियों से उनका संघर्ष। वास्तव में,
कलाकार को न केवल यह सुनिश्चित करने के लिए बल्कि कई अन्य ग्रंथों का सहारा लेने के लिए विवश होना पड़ा।

कलाकृति का विषय पूर्वी दृश्य है, लेकिन इसका उद्देश्य न केवल उनके हरम चित्र के कामुक आयामों का निर्माण करना है, जिसमें चित्रित वस्त्र भी शामिल हैं।
हरम के प्रतिनिधित्व से संबंधित कई परस्पर जुड़े प्रश्न उठते हैं— इसके अधिकारी कौन हैं? इसके बारे में क्या सच है? इसकी प्रकृति क्या है?
अन्य ग्रंथों के साथ प्रस्तुति की परस्पर निर्भरता?—इस खंड के अन्य अध्यायों में यह विषय उभर कर सामने आता है, चाहे विद्वतापूर्ण विषय दृश्य हो या शाब्दिक ग्रंथ। मैरिलिन बूथ कथावाचक (जिसे पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया गया है) द्वारा प्रयुक्त युक्तियों पर ध्यान देती हैं।
ए. अतिया की मुधक्किरात 'अमिल फी बिका' अल-'अहिरात (वेश्याओं के ठिकाने में काम करने वाले एक व्यक्ति के संस्मरण) में पतित महिलाओं के लिए बोलने का अधिकार ग्रहण करना।
वह आवाज, किताब के अन्य पात्रों की तरह, दावा करती है कि उसके हैं
“सच्ची कथाएँ, वास्तविक कहानियाँ।”7 बूथ हमें 1920 के दशक के साहित्यिक बाज़ार को समझने और साथ ही अपने द्वारा विश्लेषित हरम कथाओं के अर्थों का निर्माण करने में मदद करने के लिए एक “अंतरपाठ्य परिपथ” में ले जाती हैं; इसी प्रकार, ओरिट बाश्किन बताती हैं कि पूर्व ग्रंथों से परिचित पाठक, बिना किसी पूर्व अनुभव वाले पाठकों की तुलना में, अपने पठन में व्याख्या के अधिक स्तर लाएँगे।
ऐसे ग्रंथों को पढ़ने के बारे में। नैन्सी मिकलराइट ने तस्वीर का मुद्दा उठाया है, जिसका इतिहास, पेंटिंग के इतिहास से भी कहीं अधिक, माना जाता था वास्तविक जीवन से सांकेतिक संबंध रखना—हालाँकि यह एक गहरे स्तर पर समस्याग्रस्त है जब हरम की तस्वीरें दांव पर लगी हों। "आधुनिक" उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के दर्शकों और पाठकों ने (सही ही) संदेह व्यक्त किया।
उन्हें मिले असंख्य हरम ग्रंथों का मिथ्याकरण, मंचन और अतिशयोक्ति।
प्रामाणिकता, अधिकारिता और अन्य ग्रंथों के साथ संगति के दावे।
ये लेख हरम के चित्रण में निहित स्वीकृति या अस्वीकृति की रणनीति बन गए।

आई एनजी आर ई एस ' एस जी रा एन डी ओ एल आई एस क्यू यू ई (1814)

जीन ऑगस्ट डोमिनिक इंग्रस द्वारा बनाई गई ग्रांडे ओडालिस्क (चित्र 1) पश्चिमी कला के इतिहास में सबसे अधिक बार चित्रित नग्न चित्रों में से एक है। इंग्रस ने अपनी पेंटिंग को "ओडालिस्क" (ओडालिक) नाम दिया है, जो मूल रूप से एक महिला दास रखैल को संदर्भित करता था। हालाँकि, अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक, 264 जोन डेलप्लेटो

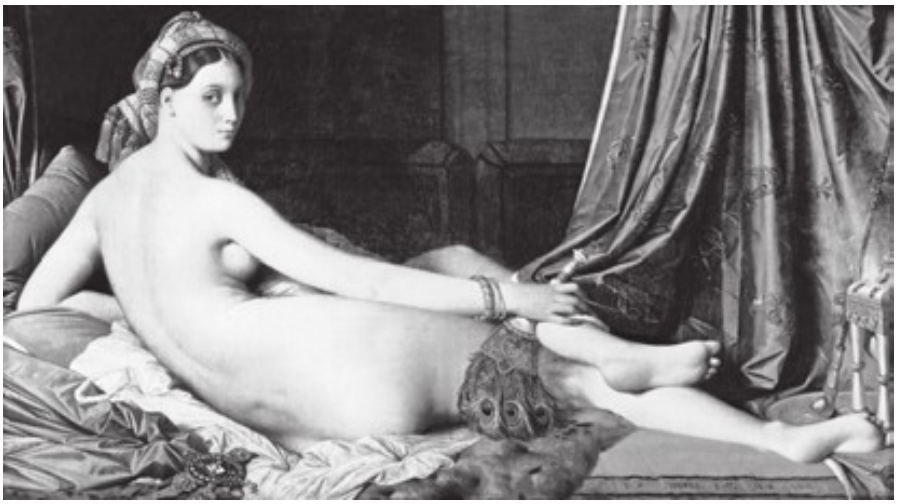

1 जीन अगस्टे डोमिनिक इंग्रेस, ग्रांडे ओडालिस्क, 1814, तेल, पेरिस, मुसी डू लौवरे।
©फोटो आरएमएन। एरिक लेसिंग/आर्ट रिसोर्स, न्यूयॉर्क के सौजन्य से।

यह शब्द पश्चिम तक पहुँच गया था, जहाँ यह उल्लेखनीय रूप से महिला नग्न चित्रों की एक शैली को संदर्भित करता था जो नाममात्र की पूर्वी थी।
एक प्राचीन उस्ताद की कृति के रूप में इसकी स्थिति और लोकप्रिय संस्कृति में इसकी पहचान के बावजूद, इंग्रस की पेंटिंग को बहुत कम ही चित्रण के रूप में माना गया है।
वह हरम की एक कैदी है, और इससे भी कम बार उसके कपड़ों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
हालांकि इस कृति ने लगभग दो शताब्दियों में अन्य एजेंडों के लिए एक माध्यम के रूप में काम किया है, फिर भी विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया है।8 और फिर भी, जैसा कि एलीन ने कहा है

रिबेरो हमें याद दिलाते हैं: “कलाकारों और लेखकों के प्राच्य कल्पना की दुनिया में प्रवेश करने के तरीकों में से एक वेशभूषा और वस्त्रों के माध्यम से था, जो
पश्चिम के कपड़ों और सहायक उपकरणों से ये बहुत अलग थे।”9
यह चित्र फ्रांसीसी अकादमिक कला के इतिहास में अद्वितीय स्थान रखता है। हालाँकि, हमारी लोकप्रिय सांस्कृतिक और विद्वतापूर्ण पहचान इससे अलग है। इस कृति ने हमें इसके महत्वपूर्ण पहलुओं से अंधा कर दिया है। हालांकि हम सोचते हैं कि हम पेंटिंग को जानते हैं, लेकिन इसकी कामुकता पर अभी तक निरंतर ध्यान नहीं दिया गया है।
विशेष रूप से हरम की दासी और उसके वस्त्रों के विषय के संदर्भ में। इस नग्न आकृति के त्यागे हुए वस्त्रों और उनके अंतर्पाठ्य संदर्भों की गहन जांच से दासी की परिभाषा स्पष्ट होती है और उसकी पहचान अन्य दासियों से अलग होती है।
फ्रांसीसी दर्शक.10 एक विश्लेषण प्रारंभिक और मध्य उन्नीसवीं शताब्दी में हरम कामुकता की गतिशीलता की जिज्ञासु समझ को भी प्रकट करता है।
इस कृति में मध्य पूर्वी संदर्भ को प्रासंगिक बना दिया गया था
नेपोलियन का 1797 में मिस्र का अभियान और विद्वानों का वह समूह जिसने... कपड़े पहनना और उतारना 265

इसके बाद देश में ही रहा। पहले प्रदर्शन सहित अवधि में।
1819 में ग्रांडे ओडालिस्क की प्रदर्शनी और 1846 और 1855 में इसके बाद के प्रदर्शनों के साथ, 1843 में अल्जीरिया पर कब्ज़ा करने से अल्जीरिया में फ्रांसीसी उपस्थिति प्रतीकात्मक रूप से मजबूत हो गई।
अल्जीरियाई प्रतिरोध नेता अब्द अल-कादिर की स्माला या यात्रा राजधानी का दृश्य। राजा लुई-फिलिप के पुत्र ड्यूक ऑफ औमाले के नेतृत्व में फ्रांसीसी हमले में 300 अल्जीरियाई मारे गए, जबकि 3,000 को बंदी बना लिया गया, जिनमें पवित्र हरम में अब्द अल-कादिर के परिवार के सदस्य भी शामिल थे।11 इस प्रकार, इंग्रस की पेंटिंग की स्वीकृति और एक नाममात्र मध्य पूर्वी महिला के कामुक चित्रण पर की गई टिप्पणी को समझने के लिए
ऐतिहासिक घटनाओं के घटित होने के संदर्भ में और फ्रांसीसी संसद द्वारा अल्जीरिया की पूर्ण विजय की वकालत के संदर्भ में।

ग्रांडे ओडालिस्क में, एक अकेली नग्न महिला, जिसका पार्श्व भाग पीछे की ओर मुड़ा हुआ है, चित्र तल के अग्रभाग में स्थित है और अपने लंबे अंगों और धड़ को प्रदर्शित करती है। वह अपने दाहिने कंधे के ऊपर से दर्शक से दृष्टि संपर्क बनाती है।
एक चंचल खेल में, शरीर को उजागर किया जाता है लेकिन छिपाया भी जाता है। हरम की ओडालिस्क की केंद्रीय आकृति को समझने के लिए, हमें उन तत्वों पर ध्यान केंद्रित करना होगा जिन्हें आमतौर पर चित्र के सहायक तत्व माना जाता है: उसका पगड़ी और आभूषण, जो उसने पहने हुए हैं।
शरीर; और उसके चारों ओर और नीचे पड़े हुए कपड़े। सामूहिक रूप से इन वस्तुओं को "पोशाक" या "फैशन" कहा जा सकता है, और वास्तव में ये प्राथमिक हैं। अर्थ संप्रेषित करना। उलरिच लेहमान कहते हैं: "फैशन का सबसे आकर्षक पहलू यह है कि यह हमें आधुनिकता की पहचान, क्षणभंगुरता को, उच्च सम्मान के माध्यम में परिवर्तित करने की चुनौती देता है, साथ ही साथ इसकी मूल भावना को भी बनाए रखता है।"
विशिष्ट विशेषताएं।"12 इस कृति की कामुकता इतनी सम्मोहक थी कि कुछ आलोचकों ने शिकायत की कि इंग्रस ने मानकों को पार कर लिया है।
उच्च कला के लिए सुरुचि का होना आवश्यक है। महिला की पोशाक ने इस धारणा को बल दिया।
कई फ्रांसीसी नग्न चित्रों के विपरीत, इंग्रस की ओडालिस्क किसी धुंधली चादर से ढकी नहीं है।
अकादमिक वस्त्र, वह आकारहीन सफेद कपड़ा जिसे परंपरागत रूप से महिला जननांगों पर रखा जाता है ताकि अकादमी में प्रशिक्षित कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन कर सकें।
कपड़े की सिलवटों को पुन: प्रस्तुत करते हुए, यह शालीनता की ओर एक संकेत के रूप में कार्य करता है। इसके बजाय, यह बिना कोर्सेट वाली महिला13 कम से कम दो अलग-अलग वस्त्रों पर लेटी हुई है:
एक पतला, सफेद और अर्धपारदर्शी कपड़ा; दूसरा भारी सुनहरे रंग का कपड़ा। वजनदार कपड़ा, संभवतः साटन जैसा प्रतीत होता है, इसकी चौकोर तहों को देखकर ऐसा लगता है। इनके बीच एक अलंकृत आभूषण पड़ा है। जहाँ तक सफेद वस्त्र की बात है,

हॉलैंडर ने घरेलू कमीज़ का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा है कि यह लगभग पंद्रह वर्षों तक सभी यूरोपीय महिलाओं और पुरुषों के लिए "एकमात्र बुनियादी अंतर्वस्त्र" था।
सदियों पुराना। विशाल, सरल और सफेद, यह घुटने तक लंबा था और इसमें विभिन्नताएँ थीं।
आस्तीन की लंबाई और ऊंचाई, हालांकि इसमें लगभग कोई सजावट नहीं थी, जैसा कि बी-266 जोन डेलप्लाटो में दिखाया गया है।

यह अपने निजी कार्य के लिए उपयुक्त था।14 वही वस्त्र रात्रि वस्त्र के रूप में भी कार्य करता था।
फिलिप के अनुसार, इसे यूरोप में तीन शताब्दियों से दोनों लिंगों द्वारा पहना जाता रहा है।
पेरोट.15 रात्रि वस्त्र व्यक्तिगत वस्त्रों का एक अत्यंत अंतरंग हिस्सा था। शैली और बनावट में सरल और अलंकृत होने के कारण, इसे बाहर नहीं देखा जाना चाहिए था।
बेडरूम में भी इसका जिक्र नहीं किया जाता था, न ही बातचीत में इसका उल्लेख किया जाना था।16 लेकिन यहाँ इसे सार्वजनिक रूप से दिखाई देने वाली उच्च कला में ऐसे समय में प्रस्तुत किया गया है जब हरम को समझा जाता था
इसके यूरोपीय समर्थकों द्वारा इसे समृद्ध पूर्वी घरों के निजी, महिला वर्ग के रूप में वर्णित किया गया है।17 इंग्रस द्वारा कमीज़ को शामिल करने से दृश्य में कामुकता का भाव उत्पन्न होता है: यह चित्रित महिला की त्वचा के सबसे करीब का वस्त्र था, क्योंकि यह अंतिम वस्तु है।
ओडालिस्क ने अपने कपड़े उतारकर अपने बाहरी वस्त्रों के ढेर के ऊपर रख दिए हैं। फिर भी, इंग्रस सफेद कमीज़ को कम करके उसे शालीन बनाए रखती है।
इसे अंडरवियर या नाइटवियर के रूप में पहचाना जा सकता है। और यह परिधान इसके बगल में स्थित है।
रेशमी वस्त्र को "उच्च पुनर्जागरण काल की महिलाओं की पोशाक का एक अनिवार्य संयोजन" कहा जाता है,18 एक ऐसा संयोजन जिसे इंग्रस अपनी रचना को सौंदर्यपूर्ण बनाने के लिए दोहराते हैं।
और ओडालिस्क।

कलाकार द्वारा चांदी की ब्रोकेड और जालीदार कपड़ों के बीच अंतर करना और उनकी तुलना करना।
लेडी मैरी की टिप्पणी पर: "उन्होंने सोने की ब्रोकेड का कफ्तान पहना हुआ था।"
कपड़े पहनना और उतारना 267

चांदी से सजी यह पोशाक उनकी आकृति पर बहुत अच्छी तरह से फिट बैठती है और उन्हें बेहद आकर्षक बनाती है।
उसके वक्षस्थल की सुंदरता, जो उसकी पतली सी पोशाक से मात्र ही झलक रही थी। 21
जहां इंग्रस आकृति की भुजाओं और आभूषणों, विशेष रूप से विशिष्ट बेल्ट, सिर के आभूषणों और बालों की चोटियों पर जोर देते हैं, वहीं लेडी मैरी टिप्पणी करती हैं।
उसके सुंदर हाथ हीरों के कंगनों से सजे थे, और उसकी चौड़ी कमरबंद भी हीरों से जड़ी थी; उसके सिर पर एक कीमती तुर्की रूमाल था।
गुलाबी और चांदी के रंग की, उसके अपने सुंदर काले बाल कई लटों में काफी लंबे लटके हुए थे, और उसके सिर के एक तरफ गहनों की कुछ सुइयां थीं।22 और इंग्रेस ने ओडालिस्क के पैरों के पास एक धूपदान का उल्लेख किया है, जबकि लेडी मैरी लिखती हैं: "नृत्य करने वाली दासियाँ अपने हाथों में चांदी के धूपदान लेकर कमरे में प्रवेश करती थीं और अंबर, अगरबत्ती और अन्य समृद्ध सुगंधों से हवा को महका देती थीं।"
सुगंध।"23 इंग्रस की पेंटिंग के विवरण कामुक और बनाए गए दोनों हैं कलाकार द्वारा लेडी मैरी के प्रामाणिक पत्रों के उपयोग से यह स्पष्ट है कि वे पूर्वी शैली के हैं, जो पहली बार 1762 में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुए थे। ये पत्र कई बार प्रकाशित हुए थे।
उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान अंग्रेजी और फ्रेंच में।24 इंग्रस ने काफी रचनात्मक ढंग से—लेकिन सावधानीपूर्वक—इन "प्रामाणिक" कपड़ों को एक दूसरे के ऊपर ढेर कर दिया, बजाय इसके कि उन्हें खड़े शरीर पर गलत तरीके से लपेटने का जोखिम उठाया जाए।25
चित्र तल के सामने केंद्र में ओडालिस्क और उसके फर को प्रमुखता से रखने से लेडी मैरी की टिप्पणी याद आती है: "सबसे भीतरी [कमरे] में,

मैंने उस महिला को अपने सोफे पर एक सेबल बनियान पहने हुए पाया,"26 एक ऐसा वर्णन जिसने महिला के बारे में इंग्रेस की समग्र दृष्टि को प्रभावित किया होगा।
इंग्रस द्वारा ओडालिस्क के नितंबों के विभाजन पर वस्त्रों की रणनीतिक व्यवस्था और उसकी दाहिनी छाती के निप्पल को बांह से और बाईं आंख को छाया से ढकने से ग्रांडे ओडालिस्क की कामुकता और भी बढ़ जाती है। ओडालिस्क की शालीनता ही वस्त्र का काम करती है। शरीर के जिन अंगों को ढका गया है, ठीक उन्हीं की उपस्थिति का आह्वान किया गया है।27 वस्त्रों के विरोधाभासों के बारे में पेरोट की टिप्पणियाँ सही साबित होती हैं: “वस्त्र... प्रकट करते हैं
क्योंकि यह उन कामुक अंगों को छुपाता और प्रदर्शित करता है जिन्हें यह छिपाता है... जिस शालीनता का यह दावा करता है, वही इस बात का संकेत देती है कि यह किस प्रकार का आकर्षण पैदा करता है।
आवरण।”28
इसी प्रकार, कला में वस्त्र एक फ्रेमिंग उपकरण के रूप में कार्य करते हैं जो दोनों को प्रदर्शित करता है
लिंडा नीड के अध्ययन के अनुसार, यह विषय को समाहित करता है और इसमें शरीर भी शामिल है।
नग्नता और अश्लीलता के बारे में। वह कहती हैं कि वस्त्र "महिला शरीर को सहारा देते हैं—छिद्रों को बंद करते हैं और सीमांत पदार्थों को अतिक्रमण करने से रोकते हैं।"
शरीर के अंदर और बाहर को विभाजित करने वाली सीमा।" वस्त्र "स्वयं को दूसरे के स्थान से अलग करने" में मदद करते हैं, जिससे पहचान स्थापित होती है।29 नीड की स्त्री "अन्य" को एडवर्ड के साथ जोड़ा जा सकता है।
इस पेंटिंग पर विचार करते समय सईद का मध्य पूर्वी "अन्य"।30 कामुकता से भरपूर 268 जोन डेलप्लाटो

वस्त्रों का कार्य कामुक स्त्री दृश्य को पुरुष दृश्य से अलग करना है।
दर्शक और आगे पश्चिम को पूर्व से अलग करता है।

1819 के सैलून में पेंटिंग की पहली प्रदर्शनी में इस पर बहुत कम टिप्पणी की गई, लेकिन 1855 के एक्सपोज़िशन यूनिवर्सले में, जब तीन परस्पर जुड़ी प्रवृत्तियाँ सामने आईं, तो इसने ध्यान आकर्षित किया।
पूर्व के प्रति जन जागरूकता, उभरते हुए प्रेस के माध्यम से वहां की घटनाओं का अंतरराष्ट्रीय कवरेज और फ्रांसीसी अकादमिक प्राच्यवाद के विकास के कारण, इसे इंग्रस के कार्यों को समर्पित एक कमरे में प्रदर्शित किया गया था। लगभग हर
जैसा कि कैरोल ओकमैन ने उल्लेख किया है, प्रदर्शनी में चित्रों पर टिप्पणी करने वाले पैंसठ आलोचकों में से एक ने इंग्रस की ग्रांडे ओडालिस्क पर टिप्पणी की। फिर भी, कुछ ही आलोचकों ने इंग्रस के कामुकता के पहलुओं का उल्लेख किया, और उनका विमर्श उनकी रेखाओं के प्रयोग पर केंद्रित प्रतीत होता है।31 उन्नीसवीं सदी के फ्रांस में सौंदर्य संबंधी टिप्पणियों की परंपराओं को देखते हुए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि अल्जीरिया में समकालीन औपनिवेशिक राजनीति के लिए ग्रांडे ओडालिस्क की प्रासंगिकता पर कोई स्पष्ट चर्चा नहीं हुई।
हालाँकि, थियोफिल गौटियर ने ग्रांडे ओडालिस्क की एक असामान्य समीक्षा लिखी, जो मेरे इस तर्क से प्रासंगिक है कि चित्र की कामुकता आकृति के शरीर और उसके वस्त्रों के संबंध से और भी बढ़ जाती है, जिससे हरम की एक सदस्य के रूप में उसकी विशिष्ट पहचान भी उभरती है। गौटियर को निस्संदेह इस विषय पर समीक्षा लिखने के लिए उपयुक्त माना जाता था, क्योंकि उन्होंने 1852 में मध्य पूर्व की यात्रा की थी और 1853 में अपनी पुस्तक कॉन्स्टेंटिनोपल प्रकाशित की थी। उस कृति में, उनके "महिलाएँ" शीर्षक वाले अध्याय की शुरुआत इस प्रकार होती है: "पूर्व से लौटने पर प्रत्येक यात्री से पूछा जाने वाला पहला प्रश्न हमेशा यही होता है, 'अच्छा,
और महिलाएं?’ जिस पर हर कोई मुस्कुराता है, जो उसकी मूर्खता के अनुसार कमोबेश रहस्यमय होती है, लेकिन फिर भी काफी हद तक कुछ न कुछ संकेत देती है। रोमांटिक रोमांचों के बारे में।"32 गौटियर फ्रांसीसी दर्शकों के लिए हरम सेक्स के प्रश्न की लोकप्रियता का सुझाव देते हैं, लेकिन वे किसी भी प्रत्यक्ष अनुभव से इनकार करते हैं।
मध्य पूर्वी महिलाएं। यह दावा करते हुए कि उन्हें यह जानकारी एक स्रोत से मिली है।

एक प्रभावशाली फ्रांसीसी महिला, जिसने हरम में प्रवेश प्राप्त कर लिया था, के बारे में वह कमरे के साज-सामान, हरम की महिलाओं के भोजन और उनके कपड़ों का विस्तृत वर्णन करता है।
और हीरे।
इंग्रस की ग्रांडे ओडालिस्क की प्रदर्शनी पर गौटियर की प्रतिक्रिया में उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा का गहन अध्ययन बहुत कुछ प्रकट करता है। वे लिखते हैं कि ओडालिस्क के "स्तन एक ग्रीक वीनस के समान हैं, जिसे क्लियोमेनेस ने साइप्रस के मंदिर के लिए तराशा था और पाशा के हरम में ले जाया गया था।"33 एक ओर, गौटियर द्वारा यूनानियों का संदर्भ देना अकादमी द्वारा क्लासिकवाद के प्रति सम्मान की अभिव्यक्ति मात्र माना जा सकता है। दूसरी ओर, इस वर्णन में
गौटियर ने इस बात को दोहराया है कि ओडालिस्क एक यूनानी महिला थी जो हरम की कैदी बन गई थी।
बंदी बनाई गई यूनानी महिला को हरम में जबरन रखने का दीर्घकालिक विषय कपड़े पहनना और उतारना 269

क्रूर तुर्कों द्वारा गुलामी—हालाँकि नाममात्र के लिए उसका ग्रीस प्राचीन है
और उन्नीसवीं सदी का ईसाई वाला नहीं।34 राजनीतिकरण में प्रचलित
1820 के दशक में ग्रीक स्वतंत्रता संग्राम की भाषा में प्रयुक्त ग्रीक हरम दासी की अवधारणा ने 1850 के दशक तक गौटियर के लिए अपना कट्टरपंथी- उदारवादी स्वरूप खो दिया था।
दक्षिणपंथी विचारधारा का एक आलोचक, जो सार्वभौमिकता की गैर-राजनीतिक सौंदर्यवादी भाषा में सिमट जाता है, शायद अन्वेषण के लिए बेहतर पृष्ठभूमि माना जा सकता है।
कामुकता का।
गौटियर स्पष्ट रूप से दर्शक का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि ओडालिस्क "अपना सिर दर्शक की ओर घुमा रही है," जो एक परिष्कृत दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

दर्शक को पाशा के प्रतिनिधि के रूप में देखने की अवधारणा को समझना और कामुकता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कल्पना और प्रक्षेपण की प्रक्रियाओं का सुझाव देना।
कला का दर्शक के साथ गतिशील आदान-प्रदान। गौटियर के वाक्यांश का व्यापक संदर्भ बताता है कि कामुक इच्छा को व्यक्त करने के लिए सक्रिय भागीदारी आवश्यक है: "तकियों में धंसी कोहनी पर आधी उठी हुई, ओडालिस्क अपना सिर घुमा रही है।"
दर्शक की ओर एक सुंदर चाल से, सुनहरे सफेदी वाले कंधे और पीठ दिखाई देती है, जिसकी कोमल त्वचा में एक मनमोहक सर्पाकार रेखा दौड़ती है।"35 ओडालिस्क को एक सरल लेकिन शक्तिशाली मुद्रा करते हुए चित्रित किया गया है।
अपने खूबसूरत कंधों और पीठ को दर्शक के सामने प्रकट करते हुए। जॉर्जेस बटाइल के अनुसार, नग्नता तक पहुँचने के लिए एक मुखर गति आवश्यक है:
“नग्न होना एक निर्णायक क्रिया है। नग्नता आत्म-नियंत्रण के विपरीत है।” बटाले के इस कथन के जवाब में, मारियो पेरनिओला इच्छा और अन्य प्रवृत्तियों के बीच घनिष्ठ संबंधों पर टिप्पणी करते हैं, “प्रेरणा
स्वयं को और दूसरों को निर्वस्त्र करना, [और] नग्नता के निषेध का उल्लंघन करना।"36 लेकिन गौटियर कहते हैं कि ओडालिस्क "अपनी पवित्र नग्नता प्रदर्शित करती है,"
जो विरोधाभासी है: वह अपने प्रदर्शन के कृत्य में अपराधी है, लेकिन वह अपनी पवित्रता में निष्क्रिय भी है; हमें फिर से बताया जाता है कि उसके "कुंवारे" हैं।
स्तन।"37 संक्षेप में, आदर्श कामुक महिला अछूती होती है लेकिन सक्रिय रूप से
वह स्वयं को—संभवतः पहली बार—दर्शक को समर्पित करती है, जिसे पुरुष माना जाता है।38 कोई पुन: प्रयुक्त वेश्या नहीं,39 यह स्त्री केवल दर्शक के आनंद के लिए उपलब्ध है, और केवल उसकी आँखों के सामने ही वह जीवंत हो उठती है और अपनी यौन क्षमता को प्रकट करती है। इसी में इस स्त्री की कामुकता निहित है।
गौटियर के लिए। जैक्स लाकान बुनियादी मान्यताओं में से एक को स्पष्ट करते हैं (उनका

पश्चिमी बुर्जुआ यौन जीवन की धारणाओं की मनोविश्लेषणात्मक समझ में मौजूद कमियों को इस प्रकार व्यक्त किया जाता है: कि "आवश्यकता के विषय या वस्तु होना ही पर्याप्त नहीं है।"
प्रेम के संदर्भ में—उन्हें इच्छा के कारण का स्थान धारण करना चाहिए।”40 गौटियर द्वारा चित्र के कामुक आयाम की व्याख्या इस पुरुष-प्रधान दृष्टिकोण पर आधारित प्रतीत होती है।
पुरुष (दर्शक) को स्त्री इच्छा का स्रोत मानने की धारणा, जो एक बार उत्तेजित होने पर, बदले में पुरुष की इच्छा और भी प्रबल हो जाती है। यह उल्लेखनीय है कि गौ-270 जोन डेलप्लाटो

टियर से यह तात्पर्य निकलता है कि यह महिला अपना पूरा ध्यान दर्शक पर केंद्रित करती है, जबकि
हरम की बहुविवाही संरचना यह मानती है कि वह कई महिलाओं में से एक है।
वे महिलाएं जो गुरु के स्नेह को साझा करती हैं। इसी प्रकार, इंग्रस द्वारा इस चित्र तल में एक अकेली महिला की उपस्थिति अंतरंगता के इस क्षण को और भी गहरा कर देती है:
अन्य पत्नियों या रखैलियों का कोई चित्रात्मक संदर्भ नहीं है। दोनों चित्रों में बहुविवाह के प्रलोभन से एकविवाह की कामुक गतिशीलता को जीवंत किया गया है।
और टिप्पणी।
अपने द्वारा अभी-अभी उतारे गए वस्त्रों के बारे में लिखते हुए, गौटियर यह संकेत देती हैं कि इंग्रेस वस्त्रों से वस्त्रहीनता की अवस्था में परिवर्तन को दर्शाती हैं, समय और स्थान दोनों के माध्यम से गति का सुझाव देकर चित्रात्मक सतह को सक्रिय करती हैं, बिना किसी भी अवस्था पर बहुत जल्दी स्थिर हुए। यह परिवर्तन रुचिकर है
पेरनिओला, जो उस प्रक्रिया का वर्णन करते हैं जिसके द्वारा शांत, आत्मविश्वासी,
और वस्त्रधारी शरीर आत्म-त्याग और अव्यवस्था की ओर बढ़ता है; यही गति उनकी कामुकता की अवधारणा के केंद्र में है। वे लिखते हैं, “आलंकारिक कलाओं में, कामुकता वस्त्र और नग्नता के बीच एक संबंध के रूप में प्रकट होती है। इसलिए, यह गति की संभावना पर निर्भर है।”

पारगमन—एक अवस्था से दूसरी अवस्था में।"41 इंग्रस की महिला को दिखाने की चाल
वस्त्र उतारने की प्रक्रिया में ओडालिस्क (महिला चित्रकार) अत्यंत भावपूर्ण प्रतीत होती है। इसी संदर्भ में, इंग्रस ओडालिस्क के चारों ओर से वस्त्र उतारकर बिखेरते हुए दिखाते हैं।
गौटियर भी इस बात पर ध्यान देते हैं: त्यागे हुए वस्त्र "इधर-उधर बिखरे पड़े हैं।"42 हॉलैंडर का दावा है कि किसी चित्र में कामुकता तब तीव्र हो जाती है जब नग्नता के साथ "रोजमर्रा की वस्तुएं" भी शामिल होती हैं।43 हालांकि वह इसके कारण का पता नहीं लगातीं, फिर भी हम
पेरनिओला से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है: नग्न शरीर के आसपास बिखरे हुए कपड़े और अन्य मूर्त वस्तुएं, कपड़े पहने हुए शरीर और नग्न शरीर के बीच एक गहरा विरोधाभास पैदा करती हैं।
यह अवस्था दमित भावनाओं और उनकी मुक्ति से जुड़ी है, और इस प्रकार दर्शक को आगे बढ़ने के दौरान अपनाए जाने वाले मार्ग का एक दृश्य मानचित्र प्रदान करती है।
रोजमर्रा की जिंदगी से लेकर उत्तेजना की चरम अवस्था तक।
इंग्रस की ओडालिस्क को एक ऐसी कुंवारी के रूप में पढ़ने के अलावा, जो यौन जागृति का अनुभव करती है और खुद को निर्वस्त्र करते समय गतिरोध में फंसी हुई है, गौटियर
वह आकृति के शरीर के अंगों को कामुक वस्तु की तरह चित्रित करके चित्र के अपने ऊपर पड़ने वाले कामुक प्रभाव को व्यक्त करता है। सिर से लेकर कंधों तक, पीठ से लेकर पैरों तक, पंजों तक, पैर की उंगलियों तक, बाहों तक, कूल्हों तक,
स्तन, मुंह, गाल, पीठ का निचला हिस्सा—यहां तक कि उसकी नाक और नीले-हरे रंग की आंखें भी
शिष्य: स्थलों की उनकी सूची एक तात्कालिक शाब्दिक भूमिका निभाती है। नारी शरीर का यह विखंडन, जो विकसित हो रहे आधुनिकतावादी सौंदर्यशास्त्र में एक आम रणनीति है, उनके द्वारा निर्मित एक श्रृंखला से विकसित होता है, नामकरण और परिष्करण की एक प्रक्रिया, जो इसके जुनूनी आधार का सुझाव देती है। गौटियर के दो

अनुच्छेदों में कपड़ों और अन्य संदर्भों के संबंध में महिला शरीर के अंगों के नाम दिए गए हैं।
अनोखी चीज़ें: कोहनी तकियों में धंस जाती है; पैर स्मरना से लाए गए कालीनों में डूब जाते हैं और
कपड़े पहनना और उतारना 271

हरम के कुंडों की संगमरमरी सीढ़ियों से टकराना; पगड़ी का किनारा छूता है गर्दन का पिछला भाग; बालों की चोटियाँ मोतियों के मुकुट में प्रतिध्वनित होती हैं।
गौटियर द्वारा ओडालिस्क के पंखे को नीचे करने का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त कामुक भाषा यह और भी स्पष्ट करती है कि उसके शरीर की कामुक अपील और भी बढ़ जाती है।
इसके आसपास की वस्तुएं: पंखा महिला के शरीर के उद्भव के लिए एक प्रतीकात्मक ढांचा है। वह लिखते हैं कि वह "एक पंख वाला पंखा पकड़े हुए है जो
फिसलती है, शरीर से पर्याप्त रूप से अलग हो जाती है जिससे कुंवारी स्तनों को अनुमति मिल जाती है
"अति सुंदर रूप देखने को मिलता है।"44 गौटियर का वर्णन, जो शरीर के अंगों से लेकर वस्तुओं—तकिए और पंखे—तक जाता है, पूरक और विस्तार प्रदान करता है।
उसके शरीर के मोहक अंग। कभी शांत न होने वाली इच्छा की तरह, गौटियर नए स्थलों की तलाश में बेताब रहता है; उसकी जुनूनी भाषा अनिवार्य रूप से
यह ओडालिस्क के आकर्षण के संपूर्ण प्रभाव को पकड़ने में विफल रहता है। इच्छा की क्रियाओं का वर्णन करने वाले मनोविश्लेषण के कुछ बुनियादी उपकरणों को उधार लेकर इंग्रस की पेंटिंग की अधिक गहराई से व्याख्या की जा सकती है। लाकान ने इस पर पुनर्विचार किया है।
फ्रायड की विस्थापन और संघनन की अवधारणा—स्वप्न प्रक्रियाएं जिनमें अचेतन मन रक्षा तंत्र बनाता है—उन प्रक्रियाओं में जिन्हें वह मेटोनिमी और मेटाफ़ोर का नाम लिया गया है। मेटोनिमी, जो यहाँ विशेष रूप से प्रासंगिक है,

यह एक मानसिक रक्षा तंत्र है जिसमें व्यक्ति संपूर्णता का प्रतिनिधित्व करने के लिए भागों का उपयोग करता है। इसलिए गौटियर के लिए, ओडालिस्क को उसके शरीर के अंगों के माध्यम से ही समझा जाता है।
जैसा कि लाकान के उदाहरण में, एक जहाज को विषय के संदर्भ से समझा जाता है। पाल। लाकान लिखते हैं कि "इच्छा एक मेटोनिमी है,"45 जिससे उनका सुझाव है कि यह प्रवृत्ति प्रेम वस्तुओं के टुकड़ों से क्रमिक रूप से जुड़ी हुई है। इच्छाएँ परिवर्तनशील होती हैं (गौटियर की वस्तुओं और शरीर के अंगों की सूची पर विचार करें), "किसी और चीज़ की इच्छा की ओर शाश्वत रूप से विस्तारित होती रहती हैं।"46 गौटियर द्वारा स्त्री ओडालिस्क का शाब्दिक पुनर्निर्माण भाषाई रूप से असंबद्ध और खंडित है। इंग्रेस की चित्रकला में भी मेटोनिमिक उपकरण दिखाई देते हैं। उनके द्वारा चित्रित स्त्री शरीर स्थानिक विसंगतियों से ग्रस्त है—पतले धड़ और
अंग, अचानक ऊपर उठता घुटना, अजीब तरह से रखे हुए पैर। ग्रांडे ओडालिस्क का शरीर और स्थानिक असंतुलन दर्शक का ध्यान आंख, पीठ, पैर और कंधे के विवरण पर केंद्रित रखता है। गौटियर की प्रतिक्रिया आंख की क्षणभंगुरता को दर्शाती है क्योंकि वह एक ही बार में पूरी आकृति को देखने का प्रयास करती है। प्रत्येक पाठ—चाहे वह चित्रकला हो या आलोचनात्मक टिप्पणी—की उपस्थिति को पुनर्स्थापित करने के लिए काम किया जाता है।
एक वांछित लेकिन हमेशा अनुपस्थित रहने वाली शख्सियत।
गौटियर द्वारा ओडालिस्क के पंख वाले पंखे का उल्लेख चित्र में इसके गहन विश्लेषण को आमंत्रित करता है। इंग्रेस द्वारा पंख वाले पंखे और फर के वस्त्र दोनों को ओडालिस्क के पैरों के बीच की गहरी छाया के ठीक स्थान पर रखना इस बात का संकेत देता है।
यह अदृश्य जघन बालों का दोहरा रूपक है, जिसकी बनावट दोनों से मिलती जुलती है।
पंख और फर। नग्न शरीर पर बालों का उन्मूलन एक सदियों पुरानी परंपरा थी। 272 जोन डेलप्लाटो

ललित कला की पहचान, और इंग्रस इसका उल्लंघन नहीं करते। प्रकृति में, पंख, फर,

बाल और शरीर के आवरण के रूप में, चाहे वह पशु का हो या मानव का, एक दूसरे के समान हैं। पूर्वी महिलाओं द्वारा गुप्तांगों के बाल हटाने की प्रथा इंग्रस के समय में ज्ञात थी, क्योंकि सार्वजनिक स्नानागारों में की जाने वाली विस्तृत बाल हटाने की प्रक्रियाओं का दस्तावेजीकरण किया गया था। सोलहवीं शताब्दी से यूरोपीय यात्रियों के वृत्तांतों में इसका उल्लेख मिलता है।47 इसलिए मेरा तर्क है कि इंग्रस के पंख और फर, विशेष रूप से पूर्वी देशों में जननांगों को शेव करने की प्रथा (जिसे उस समय एक अपेक्षाकृत
यूरोप में प्रचलित एक विचित्र प्रथा (और केवल कुछ दर्शकों को ही ज्ञात) को बनाए रखते हुए, फ्रांसीसी अकादमिक मर्यादा की सीमा को भी बरकरार रखा गया है। ये अनोखी वस्तुएँ
इससे इंग्रस को स्त्री जननांगों, और अधिक सटीक रूप से योनि के आंतरिक भाग का सूक्ष्म संकेत देने की अनुमति मिलती है, जिसके चारों ओर पूरी चित्रात्मक रचना घूमती है।
यह स्थान स्वयं में मात्र एक शून्य है, एक पश्चिमी विस्थापन है।
पुरुष की कामुक प्रवृत्ति, जिसे यह चित्र प्रदर्शित करता है—भले ही इसकी संरक्षक, नेपल्स की रानी कैरोलिन बोनापार्ट मूरत, सबसे छोटी बहन थीं। नेपोलियन का.48

एम ए यू आर आई एन ’ एस कॉन्स्टेंट आई नोपल (1833)

जुलाई राजशाही के दौरान विभिन्न विषयों पर निर्मित हजारों लोकप्रिय चित्रों की तरह, निकोलस यूस्टाचे मॉरिन द्वारा बनाया गया कॉन्स्टेंटिनोपल (चित्र 2) ऐतिहासिक संदर्भ में अनिश्चित है: हम यह सटीक रूप से प्रमाणित नहीं कर सकते कि इसमें कौन शामिल है।
इस चित्र को कैसे देखा गया, या इसे कैसे समझा गया। फिर भी, यह स्पष्ट है कि कलाकार ने कुशलता से
कलाकृति की कामुक गतिशीलता को उभारने के लिए वह हरम के वस्त्रों, आभूषणों और साज-सामान का हेरफेर करता है, जिसे अंतरपाठिक संदर्भों के उपयोग से और भी तीव्र किया जाता है।

[illegible] (in [illegible]) [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] in [illegible], in [illegible] [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] in [illegible] in, [illegible] in [illegible] [illegible] in in

in [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] in [illegible] in, [illegible] in in [illegible] [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] in [illegible] in [illegible] in: [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], in

[illegible]; [illegible] [illegible] in [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] in [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible] in [illegible] in [illegible] ([illegible] in [illegible] [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] [illegible] in [illegible])

[illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] [illegible], in [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] in

in [illegible] [illegible] in [illegible] in [illegible])[49]

in [illegible] [illegible] [illegible], in in [illegible] in [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] in, [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] in, [illegible] in in [illegible] [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] in [illegible], in [illegible] in [illegible] [illegible] [illegible], in [illegible] [illegible] ([illegible] in [illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] in; [illegible] [illegible] in in [illegible] in [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] in, [illegible] [illegible]...

[illegible] [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] [illegible] in in [illegible] [illegible] [illegible] in [illegible] in, [illegible] in [illegible] in [illegible] [illegible] in, in [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] in [illegible] [illegible] in; [illegible] [illegible] in [illegible]

2 निकोलस यूस्टाचे मॉरिन, कॉन्स्टेंटिनोपल, 1833, लिथोग्राफ। फोटो सौजन्य से।
फ्रांस का राष्ट्रीय पुस्तकालय, पेरिस।

पूर्ण हृदय से, वह अपने घातक खंजर को एक हाथ में छुपा लेता है। एक अलंकृत कृपाण है।
उसके दूसरे हाथ में कुछ मिला है, और वह दोहरे हत्याकांड की योजना बना रहा है। कहानी का मुख्य आकर्षण यह है कि हमें यह एहसास होता है कि खुशहाल जोड़ा अपनी जान से पहले ही बर्बाद होने वाला है।
उनका भाग्य। उसके हाथ उसके स्वामी के हाथों से बिलकुल अलग हैं: उसकी रत्नजड़ित उंगलियां और कलाई यह संकेत देती हैं कि उसके प्रेम का दायरा समाप्त हो जाएगा।
मृत्यु के घेरे में कुचली हुई; उसकी बाहों के चारों ओर तलवार उसकी जगह ले लेगी
प्रेमी की गर्दन को उसके सिर कलम करने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया गया। अवैध प्रेम और आसन्न मृत्यु के विषय पर कई अंतर्पाठ्य संदर्भ।

मॉरिन के प्रिंट में विनाश के संकेत मिल सकते हैं। पहला पाठ तेरहवीं शताब्दी के एक व्यभिचारी इतालवी दंपति, रिमिनी के पाओलो और फ्रांसेस्का से संबंधित है।
इस कहानी में एक महिला और उसके देवर को प्यार हो जाता है और उनका भेद खुल जाता है।
उनके पति, जियानसिओटो मालाटेस्टा द्वारा, जो उन्हें मौके पर ही मार डालता है।
डांटे के इन्फर्नो के पांचवें काण्ड में उन्हें अमर कर दिया गया है, जहां वे नरक के दूसरे घेरे में अधर में लटके हुए हैं, हवाओं की तरह भटकने के लिए अभिशप्त हैं, अनंत काल तक एक-दूसरे की उपस्थिति को महसूस करते हुए, लेकिन कभी एक-दूसरे को छूने की अनुमति नहीं है। जब यात्री डांटे उनसे मिलता है, तो फ्रांसेस्का उनके प्रेम की कहानी सुनाती है—उस जोड़े की कहानी। उन्होंने लैंसलॉट की कहानी एक साथ पढ़ी और एक चुंबन के साथ एक-दूसरे के प्यार में पड़ गए—और उनके दोहरे हत्याकांड का एक दिल दहला देने वाला अंश, जिसमें एक विचित्र 274 जोन डेलप्लाटो भी शामिल है।

लिंग भूमिकाओं का उलटफेर तब होता है जब पाओलो केवल रोता रहता है जबकि फ्रांसेस्का बात करती रहती है।
मॉरिन के समय में, इस कहानी को कई फ्रांसीसी और ब्रिटिश लेखकों द्वारा चित्रित किया जा चुका था।
विलियम ब्लेक सहित कलाकार; आर्य शेफ़र, जिन्होंने 1835 में पेरिस सैलून में इस विषय का एक संस्करण प्रदर्शित किया; और इंगरेस ने 1819 में और फिर से
1855–60.
घातक प्रेम के बारे में एक और लेख जिसने मॉरिन की छवि को प्रभावित किया होगा, वह है...
अरेबियन नाइट्स का एक दृश्य पुस्तक की प्रस्तावना के पहले पन्नों में दिखाई देता है। हालाँकि यह दृश्य संक्षिप्त है, वैवाहिक बेवफाई का यह दृश्य राजा शाहज़ेनन के महिलाओं के प्रति अविश्वास की भावना को जन्म देता है, जिसकी प्रतिध्वनि उनके भाई सुल्तान शाहरियार से संबंधित दूसरे दृश्य में भी मिलती है, जो अपनी बेवफा पत्नी की हत्या कर देता है। दोनों भाइयों

का यह दोहरा छल संपूर्ण रचना की मुख्य अवधारणा की नींव रखता है: शेहेरज़ाद की सफलता,
वज़ीर की बेटी, जो शाहरियार को मनगढ़ंत कहानियाँ सुनाती है और ऐसा करके अपनी जान बचाती है और अंततः उसके प्रति शाहरियार का प्यार सुनिश्चित करती है। राजा को अपनी पत्नी के बारे में पता चलता है।
“घर के सबसे निचले अधिकारियों में से एक” के साथ संबंध। मॉरिन की तस्वीर शाहज़ेनन की घातक प्रतिक्रिया के इस विवरण से मेल खाती है, जो इसमें पाई जाती है।
एडवर्ड फोर्स्टर द्वारा एंटोनी गैलैंड के पहले अनुवाद का अंग्रेजी अनुवाद
अरेबियन नाइट्स की पश्चिमी शैली में प्रकाशित एक कथा के अनुसार: “दुर्भाग्यपूर्ण सम्राट, अपने पहले क्रोध में आकर, अपनी तलवार निकाली और पलंग के पास पहुँचकर,
एक ही झटके में उनकी नींद मौत में बदल गई: फिर उन्हें एक-एक करके उठाकर उसने खिड़की से चारों ओर फैली खाई में फेंक दिया।
महल।"50
यदि यह वाकई अरेबियन नाइट्स की कहानी का चित्रण है, तो मॉरिन की रुचि मनोवैज्ञानिक नाटक में है, जैसा कि राजा के चेहरे के गंभीर भाव से स्पष्ट होता है।
उस निर्णायक क्षण में, जब उस निर्दोष दंपति की हत्या कर दी जाती है, उसकी अविश्वास की भावना क्रोध में तब्दील हो जाती है।
हालांकि मॉरिन के प्रिंट के बाद निर्मित, थियोफिल गौटियर का लेखन (फिर से) हरम में एक पुरुष घुसपैठिए के प्रवेश की पौराणिक स्थिति को प्रमाणित करता है, जो पश्चिमी भी हो सकता है। 1853 में इसी नाम से प्रकाशित अपनी पुस्तक में कॉन्स्टेंटिनोपल की अपनी यात्रा का वर्णन करते हुए, गौटियर इस तरह की कहानी के बारे में व्यंग्यात्मक ढंग से लिखते हैं:

पूर्वी कथाओं में इससे अधिक मनमोहक कुछ नहीं होता, कि कैसे एक सुनसान गली में एक बूढ़ी औरत आपको सावधानी से उसका अनुसरण करने का संकेत देती है।

और कुछ दूरी पर; और एक गुप्त दरवाजे से आपको एक ऐसे कमरे में ले जाया गया जो पूर्व के सभी विलासिताओं से भरा हुआ था, जहाँ एक शानदार दीवान पर गहनों से सजी एक सुल्ताना लेटी हुई थी, जो हालाँकि फीकी पड़ गई थी।
अपनी असाधारण सुंदरता के साथ-साथ, वह बेसब्री से आपके आने की प्रतीक्षा कर रही थी और उसने कोमल मुस्कान और स्वागत के साथ आपका स्वागत किया। उचित समय पर,
कपड़े पहनना और उतारना 275

साहसिक यात्रा गुरु के अचानक आगमन के साथ समाप्त हो जानी चाहिए, जो
आपके पास पिछले दरवाजे से निकलने का समय शायद ही बचेगा; जब तक कि, वास्तव में, कोई और
एक दुखद चरमोत्कर्ष तब आता है, जब एक संघर्ष में आप बाल-बाल बच निकलते हैं और आधी रात को बोस्फोरस में छलांग लगा देते हैं।
एक बोरी जो कुछ हद तक मानव रूप से मिलती-जुलती है।51

यह तथ्य कि हरम में "प्रवेश" करने वाला पश्चिमी व्यक्ति भी खतरे में है, इसका एक हिस्सा है।
कहानी के पुनर्कथन में नायक और पाठक दोनों के लिए कामुक रोमांच का अनुभव होता है। जब वह हरम की खूबसूरत महिला से मिलता है, तो वह अनिवार्य रूप से सुरुचिपूर्ण कपड़ों और भव्य आभूषणों से सजे हुए, तीन साल की उम्र में प्रतीक चिन्ह के रूप में
विभिन्न स्तर। सबसे स्पष्ट रूप से, ये विलासितापूर्ण वस्तुएँ उस विलासितापूर्ण संस्था का संकेत देती हैं जिसमें वह भाग लेती है। फ्रांसीसी रोकोको के अक्सर इस्तेमाल होने वाले प्रतीकों में रेशम शामिल हैं।
फर और गहने उसके जननांगों का संकेत दे सकते हैं। महंगे कपड़े और रत्न भी पाशा के उसके प्रति गहरे प्रेम को व्यक्त करने का माध्यम हो सकते हैं।
तीन संभावित संदर्भ मॉरिन की छपाई में भी विषयवस्तु के रूप में मौजूद हैं। इस चित्र में महिला के वस्त्र ऊपर वर्णित पारदर्शी सफेद कमीज़ की याद दिलाते हैं। यहाँ इसे उसके कंधों पर इतना नीचे खिसका दिया गया है कि

यह निष्ठा अत्याचारी होने के साथ-साथ हिंसक भी है। तस्वीर से यह संकेत मिलता है कि हम "अति" देख रहे हैं: बेवफाई के "छोटे पाप" को "बड़े पाप" से दंडित किया जा रहा है।
हत्या के मामले में। एक न्यायपूर्ण कानूनी व्यवस्था के अभाव में, पति ही न्यायाधीश, जूरी और जल्लाद बन जाता है, भले ही विवाह में कुछ खामियां हों। अपने जीवनसाथियों के बीच उम्र का अंतर होना। प्रेम के नाम पर संबंध बनाना इस स्थिति में संभव नहीं है।
प्राचीन परंपराओं का चेहरा।
यह प्रिंट, तकनीक में सूक्ष्म होने के बावजूद, रूढ़िवादिता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।
पूर्वी देशों में लैंगिक व्यवहार इस प्रकार है: स्त्री/पत्नी पूर्णतया शरीर और प्रेम से परिपूर्ण होती है, जबकि पुरुष/पति धूर्त और निर्दयी होता है। कलाकार का तात्पर्य है कि हरम, जिसे जबरदस्ती वाला और निर्धारित विवाहों का गढ़ माना जाता है,
यह महिलाओं को प्रेम साथी चुनने की स्वतंत्रता से वंचित करता है, इस प्रकार प्रकृति को धोखा देता है और नकारता है, जिससे दुखद परिणाम होते हैं।
यूरोपियों और ओटोमन साम्राज्य के सुधारवादी लेखकों द्वारा हरम के बारे में व्यक्त की गई एक लंबे समय से चली आ रही चिंता यह है कि इसकी पुरानी शैली की व्यवस्था
विवाह आधुनिक बदलावों के साथ टिक नहीं सका, जैसा कि ए. होली शिस्लर ने कहा है।
इस पुस्तक में इसे “सहचर विवाह” कहा गया है। तुर्की विद्वान अहमद मिधात एफेंडी के हरम संबंधी विचारों का उनका सारांश लगभग एक सदी पहले के विचारों को दोहराता है।
बाद में, मॉरिन के लेख का मुख्य बिंदु यह था: "बिना पसंद के या एक-दूसरे के लिए अनुपयुक्त व्यक्तियों के बीच बने संबंध वास्तविक रूप से अधूरे होंगे।"
स्नेह और इच्छाशक्ति दुर्भाग्य का कारण बनेगी।" इसी प्रकार, बाश्किन का वर्णन

विवाह की पुरानी और नई प्रथाओं का अध्ययन करना उपयोगी है, जिनमें से पुरानी प्रथा "पति/स्वामी के सत्तावादी नियंत्रण" पर आधारित है।
विवाह की संरचना में—चाहे वह पश्चिमी यूरोप हो या ओटोमन साम्राज्य और उसके अरब प्रांत।
हरम के तंग भौतिक क्षेत्र में फंसी हुई, मॉरिन की...
भव्य सजावट जुनून की प्रचुरता की अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करती है।
उत्तम वस्त्र और अन्य जटिल बनावट वाले कपड़े इस बात का प्रमाण देते हैं।
विलासिता का घातक पाप। जिस प्रकार ये पात्र उत्तम (या बहुत कम) वस्त्रों से ढके हुए हैं, उसी प्रकार कमरा स्पर्शनीय और दृश्य उत्तेजनाओं से भरा हुआ है।
हरम की "यौन अतिशयोक्तियाँ" "सामान्यीकृत ब्रह्मांड" में घटित होती हैं। मालेक अलूला के शब्दों में कहें तो, "विकृति और आनंद की पूर्ण असीमितता।"52 अंततः, धनी, बहुविवाहित हरम का आनंदमय जीवन—जिसे भौतिक और नैतिक अतिरेक के रूप में समझा जाता है—इस प्रिंट में आनंदित और निंदा दोनों किया जाता है।
कपड़े पहनना और उतारना 277

3 जॉन फ्रेडरिक लुईस,
बेय के बगीचे में,
एशिया माइनर, 1865, तेल चित्र।
हैरिस के सौजन्य से
संग्रहालय और कला गैलरी,
प्रेस्टन, लंकाशायर, यूके/
ब्रिजमैन आर्ट लाइब्रेरी।

le W I s ’s I n the B e y ’s g ar de n, as s I a m I no r (1865)

विक्टोरियन इंग्लैंड में हरम के प्रमुख चित्रकार निःसंदेह थे
जॉन फ्रेडरिक लुईस (1805-76), जो तीसरी तिमाही में सबसे अधिक सक्रिय थे।

उन्नीसवीं सदी के चित्रकारों में से एक, उनकी पेंटिंग 'बे के बगीचे में, एशिया माइनर' (चित्र 3) में हरम के वस्त्रों और स्त्री कामुकता का परिष्कृत चित्रण देखने को मिलता है। यद्यपि ऊपर चर्चा की गई हरम की नग्नता की दो फ्रांसीसी छवियों से यह नाटकीय रूप से भिन्न है, फिर भी इस छवि में वस्त्रों में अंतर्पाठ्यता का प्रयोग किया गया है, जो कलाकार की प्रामाणिकता की खोज को दर्शाता है। फ्रांसीसी चित्रकारों की तरह,
हरम की महिलाओं की छवियों के विपरीत, बे का बगीचा दृश्य को कामुक और स्त्रीत्वपूर्ण बनाने के लिए पोशाक का उपयोग करता है, और ऐसा करके अर्थ की कई परतों को उजागर करता है। यह कथा मॉरिन के प्रिंट की तरह समय के साथ घटित होने वाली कहानी का एक नाटकीय क्षण नहीं है, बल्कि एक घटनात्मक मुठभेड़ है।
एक सुरुचिपूर्ण हरम महिला। यह वाक्यविन्यास की दृष्टि से कम और प्रतिमानिक दृष्टि से अधिक है। 278 जोन डेलप्लाटो

एक महिला द्वारा बगीचे में फूल काटकर उन्हें रखने की सामान्य क्रिया।
एक फूलदान की तुलना में यह तथ्य अधिक महत्वपूर्ण है कि पूरा दृश्य कपड़ों, रंगों, बनावटों और प्रकाश का एक अद्भुत संगम है। उसकी पोशाक और सिर का आभूषण मोटा और बारीक बुना हुआ है, जैसा कि उसके निचले हिस्से की चौकोर सिलवटों और उसके घूंघट के ढंग से स्पष्ट होता है।
उसके पीठ पर गिरता है। उसके वस्त्रों में बुने हुए पैटर्न, विशेष रूप से उसकी बेल्ट में बने पैस्ले फूलों के डिज़ाइन और उसके सिर पर बनी फूलों की टेपेस्ट्री, उसके शरीर के साथ खूबसूरती से घुलमिल जाते हैं।
उसके चारों ओर बिखरे हुए और लुढ़कते हुए, कटे हुए अफीम के फूल, लिली, गुलाब और फुकसिया के फूल...
बिना काटे, चित्र तल से लेकर पूरे स्थान में व्याप्त। चित्रित फूलों से सजे मिट्टी के बर्तन—लंबा फूलदान और प्लेट—को और भी सजाया गया है। सीढ़ियाँ। वास्तव में, फूल, कपड़े और स्त्रीत्व के बीच की रेखाएँ धुंधली हो गई हैं, ठीक वैसे ही जैसे प्रकृति और प्रतिनिधित्व के बीच की रेखाएँ धुंधली हो गई हैं।
कला समीक्षक के लिए यही बात अत्यंत प्रसन्नता का स्रोत थी।

1865 में जब एथेनियम में इस पेंटिंग की प्रदर्शनी लगी, तो एक समीक्षक ने इसकी इतनी प्रशंसा की कि सुंदर स्त्री, सुंदर वस्त्र और सुंदर फूलों के बीच की सीमाएँ धुंधली हो गईं। उन्होंने पेंटिंग का वर्णन करते हुए कहा: “एक सर्कसियन युवती, अपने फैशन में सुंदर, क्रिया में अनुग्रह की मिसाल, लिली काट रही है।”
उनसे एक कीमती चीनी मिट्टी के बर्तन को भरना जो उसके पैरों के पास रखा है। पूरा
चित्र अत्यंत चमकीला और रंगों से भरपूर है: महिला की पोशाक देखिए, और उससे भी अधिक उत्कृष्ट चित्रकला के रूप में, बगीचे में खिले हुए हरे-भरे फूल देखिए।
धरती और जार।"53
इस समीक्षक के लिए, यह कार्य कुल मिलाकर बेहद सफल है, जिसका मुख्य कारण यह है कि
विवरणों को उत्कृष्ट ढंग से संभालने और लुईस के ज्ञानवान होने की प्रतिष्ठा के कारण
पूर्व की यात्रा करने वाला यात्री: “श्री जे. एफ. लुईस ने वास्तविक ज्ञान और यात्रा के परिपूर्ण परिणामों के साथ प्राच्य विषयों को नई शक्ति और दृढ़ता से चित्रित किया है... यदि हम
इस कृति के पास खड़े होकर देखें तो इसके विवरण असाधारण रूप से समृद्ध और सुंदर हैं; जब हम थोड़ी दूरी से देखते हैं तो यह उतनी ही व्यापक और शानदार प्रतीत होती है।54
एथेनियम के आलोचक के अलावा, लुईस की पेंटिंग के एक और प्रशंसक, संभवतः, इस कृति के संरक्षक रिचर्ड न्यूशम थे - एक धनी, मध्यम-वर्गीय वकील और परोपकारी व्यक्ति जिनके पिता ने बैंकिंग और कपास व्यापार से अपनी संपत्ति अर्जित की थी।55 कपड़ों पर इतना ध्यान देने वाली, यहाँ तक कि उसके कपड़े और धागों के विवरण तक, लुईस के चित्र के प्रति न्यूशम के आकर्षण को उनके अपने परिवार के वाणिज्यिक कपड़ा व्यापारियों के इतिहास के प्रकाश में देखना आकर्षक है।
दिलचस्प बात यह है कि ठीक इसी बिंदु पर—लुईस के अत्यंत सूक्ष्म विवरण का महत्व—की बात सामने आती है।

कपड़ों और फूलों के बारे में - लंदन का टाइम्स अखबार दुविधा में है। उस अखबार के आलोचक पोशाक में इस्तेमाल की गई पेंटिंग तकनीक की प्रशंसा करते हैं ("महिला की पोशाक अद्भुत ढंग से चित्रित की गई है, हर अलग रंग और बनावट को लगभग दर्दनाक बारीकी से दर्शाया गया है")। उसी पैराग्राफ में, काम की आलोचना करते हुए कहा गया है कि यह बहुत अधिक है।
लेविस की तकनीक की तुलना दर्शकों को लुभाने वाले प्रकाश प्रभावों से करते हुए, इसे यांत्रिक बताया गया है।
कपड़े पहनना और उतारना 279

इंग्लैंड और फ्रांस में लोकप्रिय: "इस संग्रह का शीर्ष भाग"
सूक्ष्म स्तर पर नकल किए गए वस्त्र गुड़िया जैसे, सपाट और बेहद अवास्तविक होते हैं।
निराशाजनक हद तक, ऐसा लग रहा है जैसे किसी पारदर्शी सतह पर पीछे से रोशनी डाली गई हो। वास्तव में, फ्रांसीसी चित्रकारों के पास एक
"peindre à la lanterne वाक्यांश, ठीक इसी तरह के काम के लिए।" समीक्षा में लुईस को युवा पीढ़ी के लिए एक बुरा आदर्श बताकर उन पर और भी प्रहार किया गया है।
एक कलाकार, जो सरल विशेष प्रभावों पर निर्भर करता है। लुईस की "उत्कृष्ट कलाकारी" "कभी भी बड़े या महान परिणाम नहीं दे सकती।" आलोचक लुईस के काम में एक उच्च अर्थ खोजने की व्यर्थ कोशिश करता है, जो अपनी कला की स्थिति से ऊपर उठने में विफल रहता है।
उत्तम वस्त्रों का एक दृश्य रिकॉर्ड: "यद्यपि कुछ हिस्सों में अद्भुत और सुंदर होने के बावजूद, उनकी रचनाएँ समग्र रूप से, और छोटे पैमाने को छोड़कर, कभी भी उच्च स्थान प्राप्त नहीं कर सकतीं।"
लेकिन हस्तकला के चमत्कारों के रूप में।"56 आलोचकों के बीच ऐसा मतभेद इससे पता चलता है कि लुईस की पेंटिंग ने कला जगत में हलचल मचा दी, जहाँ लोग एक ऐसे युग में कला को परिभाषित करने के लिए संघर्ष कर रहे थे, जिसमें फैशन में अत्यधिक रुचि को भ्रामक माना जाता था और कपड़ों के चित्रात्मक पुनरुत्पादन को सतही समझा जाता था।57
लुईस की रचना 'बेज़ गार्डन' में वस्त्रों से कई अंतर्पाठ्य संदर्भों का संकेत मिलता है, जो मेरे अनुसार सदियों पुरानी पौराणिक कथाओं और

अतिशयोक्तियों से भरे विषय को सटीकता प्रदान करने के लिए आवश्यक थे। एक संदर्भ कुरान है, जिसमें स्वर्ग का वर्णन करने वाले अंश हैं। वहां, सांसारिक हरम स्वर्ग के हरम को प्रतिबिंबित करता है, जिसमें (पुरुष) विश्वासियों को हूरों से पुरस्कृत किया जाना था - काली आंखों वाली कुंवारी कन्याएं जो परलोक में विश्वासियों को अर्पित की जाती थीं।
इस बात पर संदेह करने का कारण है कि लुईस कुरान से परिचित थे। मिस्र में अपने दस साल के प्रवास के बाद, जहाँ विलियम मेकपीस थैकरे ने उनसे मुलाकात की थी।
और दावा किया कि वह एक मूल निवासी की तरह दिखता और कपड़े पहनता था, लुईस की हरम की तस्वीरों में मुस्लिम धर्मग्रंथों के अंश शामिल थे; 1876 की एक हरम पेंटिंग है
यहां तक कि इसका शीर्षक भी हूरी रखा गया है।
कुरान के एक संस्करण में स्वर्ग के जो वर्णन दिए गए हैं, जिसे लुईस शायद जानते थे, उनमें आत्माओं द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों का वर्णन है। विश्वासी और उनके बैठने के सोफे हरे ब्रोकेड और रेशम से बने होते हैं।58 इस्लामी विद्वानों और विश्वासियों ने समान रूप से हरे रंग को महत्व दिया है।
यह एक दिव्य रंग है, क्योंकि यह मृत्यु और रेगिस्तान की शुष्कता के बिल्कुल विपरीत, परम आध्यात्मिक नखलिस्तान का प्रतिनिधित्व करता है; इसके अलावा, यह महान आध्यात्मिक अनुभवों का रंग है।59 लुईस के हरम में हरा रंग प्रमुख है।
उनकी तस्वीर में महिला की जैकेट और ब्रोकेड रेशम प्रमुखता से दिखाई देते हैं। दृश्य बाहर, पेड़ों से घिरे एक बगीचे में है। बगीचा समृद्ध है। इस्लाम में सांस्कृतिक प्रतीक, पृथ्वी और स्वर्ग में थके हुए यात्री को विश्राम प्रदान करता है।
स्वर्ग। वास्तव में, स्वर्ग एक बगीचा है, जैसा कि जोन डेलप्लाटो की पुस्तक में 130 से अधिक बार उल्लेख किया गया है।

4 □□□□□□□ □□□□□□□ □□□,
□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□
□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□, '□□ □□□□□□□ □□ □ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□' □□
□□□□□□ □□□□□□□
□□□□□□□ □□□□□□□□□□□, □□□ 1, □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□

1836.

कुरान में वर्णित है कि यह उद्यान बहुत विशाल है (कभी-कभी इसे दोहरा उद्यान भी कहा जाता है), लेकिन यह दीवारों से घिरा हुआ है। यह फूलों से भरा हुआ है, जिनमें से प्रत्येक में एक
पवित्र अर्थ; सामूहिक रूप से, इन्हें अल्लाह की प्रशंसा के रूप में समझा जा सकता है। हालाँकि
लुईस द्वारा इस चित्र का शीर्षक 'बे के बगीचे में' रखा गया है, जिसे ईश्वर के बगीचे का प्रतीक माना जा सकता है। इस प्रकार, इस चित्र में वस्त्रों के माध्यम से इसे पवित्र स्वर्ग के दृश्य के रूप में देखा जा सकता है।
लुईस द्वारा चित्रित कपड़ों के लिए दूसरा अंतरपाठ्य संदर्भ यह है कि महान मिस्र के विद्वान की क्लासिक कृति के एक चित्र में पाया गया
और यात्री एडवर्ड विलियम लेन द्वारा लिखित 'एन अकाउंट ऑफ द मैनर्स एंड कस्टम्स ऑफ द मॉडर्न इजिप्शियंस', जिसका शीर्षक है 'ए लेडी इन द ड्रेस वोर्न इन प्राइवेट 60' (चित्र 4)। लुईस के ऑयल पेंटिंग और उनके मित्र लेन द्वारा बनाए गए वुडकैट में उल्लेखनीय समानताएं हैं।61 लुईस ने लेन के वुडकैट से महिला के कपड़ों की कटिंग, उसकी धारीदार स्कर्ट और आस्तीन, और शरीर से सटी बहुस्तरीय फिटिंग को उधार लिया है।
शरीर, और विशेष रूप से जमीन पर कपड़े के निचले हिस्से का लटकना। लेन इसकी शुरुआत करती है।
कपड़े पहनना और उतारना 281

अपनी पुस्तक के इस खंड में उन्होंने कहा: “मध्यम और मध्यम वर्ग की महिलाओं की पोशाक
उच्चतर क्रम सुंदर और सुरुचिपूर्ण है।"62 पहली बार 1836 में प्रकाशित, लेन की
उन्नीसवीं शताब्दी में कम से कम ग्यारह अंग्रेजी संस्करणों वाली यह सचित्र पुस्तक बुद्धिजीवियों और कलाकारों के लिए एक प्रमुख स्रोत थी। लुईस, जिन्होंने
वह अपनी मॉडल और पत्नी मारियन (एक अंग्रेज महिला जिससे उनकी मुलाकात मिस्र में हुई और शादी हुई) द्वारा पहने गए मिस्र की महिलाओं के कपड़ों के

नमूने भी वापस लाए।63 लेन के मौखिक विवरण के कुछ पहलुओं के प्रति भी वह वफादार रहते हैं।
यह वर्णन मिस्र की उच्च वर्ग की महिलाओं द्वारा घर पर पहने जाने वाले परिधानों के बारे में है। लुईस ने महिला जैकेट को छोटा बनाया है और हरम पैंट को छोड़ दिया है।
(जो विक्टोरियन इंग्लैंड में एक महिला के लिए अनुचित होता), लेकिन वह कमर पर बटन वाली पूरी लंबाई की बनियान का संकेत देता है, जिसे लेन नाम देता है येल'-एक जैकेट "शरीर और बांहों से कसकर चिपकी हुई" होती है और इसकी आस्तीनें लंबी और चौड़ी होती हैं।64 लेन और लुईस दोनों ने इसे धारीदार कपड़े का बनाया है और अपनी तस्वीरों में जैकेट के बाहर उसी कपड़े की आस्तीनें दिखाई हैं। लेन ने स्पष्ट किया है, और लुईस ने भी यही समझा है, कि येल'-एक जैकेट "कूल्हे की ऊंचाई से नीचे की ओर दोनों तरफ से खुली होती है।" दोनों तस्वीरें लेन की टिप्पणी को दर्शाती हैं।
येल'-एक का किनारा उस लंबाई से दो या तीन अधिक होना चाहिए
इंच, या उससे अधिक।" छाती के आसपास, येल'-एक को इस तरह से काटा जाता है कि शर्ट दिखाई दे सके। लुईस "चौकोर शॉल, या कढ़ाईदार रूमाल" का भी संकेत देते हैं।
तिरछे रूप से दोगुना किया गया, कमर के चारों ओर ढीले ढंग से एक कमरबंद के रूप में रखा जाता है।"65 लुईस एक कपड़े की जैकेट जोड़ता है, जिसे लेन एक अन्य प्रिंट पर पीछे से दृश्य में दिखाता है,
इसे अक्सर मखमल से बने सालताह के रूप में वर्णित किया गया है।66 जहाँ तक सिर के पहनावे की बात है, लुईस पगड़ी का अधिक चित्रण करते हैं जो लेन के दूसरे प्रिंट में दिखाई देता है, जो दो या दो से अधिक रूमालों से बना होता है "हमेशा एक ऊंचे, सपाट आकार में लिपटा हुआ, पुरुषों की पगड़ी से बहुत अलग"67 और कभी-कभी इसमें एक मुकुट जैसा सिर का टुकड़ा होता है।
लेन ने स्त्री शरीर के प्रतीकात्मक विस्थापन के रूप में वस्त्रों के किसी विशेष कार्य का संकेत नहीं दिया है। लेकिन एथेनियम और द टाइम्स फूलों, कपड़ों और स्त्रीत्व के प्रतीकात्मक पहलुओं का सुझाव देते हैं।
उन्हें आपस में सटे हुए रूप में प्रस्तुत करते हुए। बे के गार्डन में महिला के वस्त्र केवल शरीर को ढकते नहीं हैं, बल्कि इंग्रस और मॉरिन दोनों की छवियों में प्रयुक्त नग्नता की तरह, लुईस की पेंटिंग में वस्त्र अदृश्य

शरीर के बारे में एक रहस्य पैदा करते हैं, जो इसकी कामुकता का मूल आधार है।
मिशेल फूको के इस तर्क की प्रतिध्वनि करते हुए कि
विक्टोरियन युग में कामुकता के दमन की बजाय उस पर अत्यधिक चर्चा होती थी।
68 मेरा मानना है कि यह चित्र हरम की महिला के शरीर को पुनः प्रस्तुत करता है।
कपड़ों, फूलों और बर्तनों के माध्यम से। शरीर से वस्त्रों का संबंध।
यह अधिक सटीक रूप से रूपक का है, अस्वीकृति का एक रूप जिसमें संपूर्ण ob-282 जोन डेलप्लेटो

वस्तुओं की तुलना वांछित वस्तु से उनके समान गुणों के आधार पर की जाती है। लुईस की पेंटिंग में, फैशन के परिधान के टुकड़े महत्वपूर्ण संकेतक बन जाते हैं।
स्त्री शरीर। सिर पर बंधा स्कार्फ चमकदार काले बालों को ढकता है, फिर भी इसके आयताकार, सपाट खंड बालों की मांग और बनावट को दर्शाते हैं। हल्का, जालीदार लिनेन
गर्दन और कलाई पर अंतर्वस्त्र मलाईदार त्वचा के रंग को दोहराता है और मांस की स्पर्शनीयता का संकेत देता है। सालताह की सफेद किनारी पर रोएँदार डिज़ाइन है।
यह कई परतों के नीचे स्थित स्तनों की उपस्थिति को छुपाता और घोषित करता है।
यह भारी-भरकम कमरबंद देखने वाले का ध्यान भीतर स्थित गर्भाशय की ओर आकर्षित करता है, और अपने पैस्ले पैटर्न में गर्भाशय के आकार की नकल करता है। इसी प्रकार, दोनों गमलों में लगे फूल भी उसी प्रकार के हैं।
और फूलदान इस महिला और उसके लंबे बेलनाकार आकार से मिलते-जुलते हैं, जिसके ऊपर चेहरे की सुंदर सुंदरता उभर कर आती है।

कपड़े और प्रादेशिक वेब

बेय के बगीचे में लुईस की बौद्धिक परियोजना, आधुनिक मिस्रियों के रीति- रिवाजों के विवरण में लेन की परियोजना के समान है। लेकिन हम अपने वैचारिक दायरे को विस्तृत करके यहाँ विश्लेषण किए गए दृश्य सांस्कृतिक ग्रंथों के

चारों निर्माताओं को शामिल कर सकते हैं। उनके आपसी संबंध के बारे में तीन बातें स्पष्ट करनी आवश्यक हैं। सबसे पहले, प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार का दर्जा इसलिए दिया गया क्योंकि
उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा के कारण। लुईस और लेन का मध्य पूर्व के साथ व्यापक, प्रत्यक्ष अनुभव था, जबकि इंग्रस (जिन्होंने कभी वहां यात्रा नहीं की)
वह फ्रांसीसी अकादमी के सर्वोच्च रैंकिंग वाले सदस्यों में से एक बन गए, और
अपनी मृत्यु के समय उन्हें फ्रांसीसी कला का उस्ताद कहा जाता था। मॉरिन के जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है, लेकिन उनकी उत्कृष्ट कलात्मक तकनीक उनके कार्यों को एक निश्चित सांस्कृतिक श्रेष्ठता प्रदान करती है। साथ ही। एडवर्ड सईद इन पुरुषों को अंतरसांस्कृतिक विशेषज्ञों के रूप में यूरोपीय स्तर पर ऊंचा उठाने में निहित शक्ति को पहचानते हुए कहते हैं: "विशेष रूप से भूमिका
प्रशिक्षित और सुसज्जित विशेषज्ञ ने एक अतिरिक्त आयाम ग्रहण किया: प्राच्यविद्
इसे पश्चिमी शक्ति के विशेष एजेंट के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि इसने प्रयास किया था
पूर्व के प्रति नीति। पूर्व की यात्रा करने वाला प्रत्येक विद्वान (और कम विद्वान) यूरोपीय यात्री स्वयं को एक प्रतिनिधि पश्चिमी व्यक्ति के रूप में महसूस करता था जो अस्पष्टता के पर्दों के पीछे उतर गया था।69
दूसरे, इन चारों सांस्कृतिक ग्रंथों में से प्रत्येक कलाकार की इच्छा को प्रकट करता है।
पूर्वी समाज के बारे में वास्तविकता के अंशों के रूप में पोशाक के अंशों को प्रस्तुत करना। ऐसा माना जाता है कि पूर्वी समाज के जीवन की संपूर्ण जटिलता को समझा जा सकता है।
उस जीवन का वर्णन करने वाले विवरणों के संपूर्ण संकलन द्वारा कैद किया गया। वस्त्र के भीतर कपड़े का हर धागा, बालों का हर एक रेशा, हर फूल
एक बगीचे में, एक बेल्ट के भीतर हर रत्न—ये कच्चे माल हैं
जिससे एक मूल्यवान उत्पाद का निर्माण किया जा सके, एक ऐसा उत्पाद जो मूल्यवान हो-

कपड़े पहनना और उतारना 283

क्योंकि इसे सटीक और सत्य माना जाता है। जब कला समीक्षक
ऊपर उद्धृत टाइम्स लिखता है कि "महिला की पोशाक को अद्भुत ढंग से चित्रित किया गया है, प्रत्येक अलग रंग और बनावट को लगभग पीड़ादायक सूक्ष्मता के साथ दर्शाया गया है।" लेन के लेखन की तरह, लुईस की पेंटिंग भी विस्मय उत्पन्न करती है, जो कपड़ों को दिए गए विवरण के प्रति एक उपयुक्त प्रतिक्रिया है। फिर भी, जैसा कि सईद रेखांकित करते हैं, विवरणों का ऐसा अनुभवजन्य संयोजन न तो सत्य है और न ही "वास्तविकता", बल्कि गढ़े गए सत्य के धागे हैं, जिन्हें ये विशेषज्ञ फिर से गढ़ने और संपादित करने के लिए स्वतंत्र हैं।
alize upon: “विद्वान प्राच्यविद् का दृष्टिकोण एक वैज्ञानिक जैसा था, जिसने पाठ्य अंशों की एक श्रृंखला का सर्वेक्षण किया, जिसे उसने बाद में संपादित और व्यवस्थित किया।”70
ये सांस्कृतिक प्राधिकरण अन्य सांस्कृतिक प्राधिकरणों का संदर्भ देते हैं।
हरम की महिलाओं के वस्त्रों का विषय। लुईस लेन का संदर्भ देते हैं; मॉरिन अरेबियन नाइट्स का संदर्भ देते हैं; इंग्रेस लेडी मैरी वर्टली मोंटेगु का संदर्भ देते हैं। वास्तव में, एडवर्ड फोर्स्टर द्वारा अरेबियन नाइट्स के 1802 संस्करण की प्रस्तावना में भी यही बात कही गई है।
ऊपर उद्धृत नाइट्स ने लेडी मैरी के पत्र 110 का अंश लिया है जो हरम की महिलाओं के कपड़ों का वर्णन करता है और इसमें कुछ सबसे दृश्य भाषा शामिल है,71 जबकि
यहां दांव पर लगे अंतरपाठ्य जाल की सघनता का संकेत देते हुए। सईद की आलोचना
प्राच्यवाद के अभेद्य जाल में न केवल विद्वान और कलाकार एडवर्ड विलियम लेन शामिल हैं, जिनका नाम उन्होंने पूरे अध्ययन में लिया है, बल्कि वे कलाकार भी शामिल हैं जिनका हमने इस अध्ययन में विश्लेषण किया है। सईद लिखते हैं: "प्राच्यवादी आपस में एक-दूसरे के काम को एक ही उद्धरणात्मक तरीके से देखते हैं।"72 शक्ति है

एक बुद्धिजीवी से दूसरे बुद्धिजीवी के बीच स्थानांतरित होता रहा, और प्राच्यविद् की एक बंद प्रणाली
विचार स्थापित हो चुका है। हरम से संबंधित ग्रंथ, यहाँ तक कि चित्रात्मक ग्रंथ भी, केवल अन्य ग्रंथों का संदर्भ देते हैं और प्रत्यक्ष रूप से किसी बाहरी वास्तविकता का संदर्भ नहीं दे सकते।
हरम की छवि में कपड़ों की भूमिका का इतिहास अनिवार्य रूप से पवित्र और वर्जित के बीच तनाव से भरा हुआ है, एक विरोधाभास।
यह कई स्तरों पर काम करता है। इंग्रस और मॉरिन जैसी फ्रांसीसी कामुक हरम चित्रों में यह अधिक स्पष्ट है, लेकिन लुईस और लेन की छवियों में भी, जहाँ शालीनता का पालन होता प्रतीत होता है, कपड़ों का चित्रण
पश्चिमी प्रभुत्वशाली दृष्टिकोण के निर्माण को बनाए रखकर प्राच्य को नियंत्रित करने का कार्य करना। अरबी शब्द 'हरिम' में निषिद्ध और निषिद्ध दोनों के अर्थ निहित हैं।
और पवित्र।73 अपने सबसे मूलभूत रूप में, पश्चिमी कामुकता द्वारा प्रस्तुत की गई
हरम की तस्वीर मुस्लिम निजी जीवन की पवित्रता की स्वीकृति और उल्लंघन दोनों है। कुछ लोग निस्संदेह तर्क देंगे कि प्रत्येक कला
यह वस्तु पवित्रता का उल्लंघन करती है,74 एक जीवन शक्ति जो पूर्वी और पश्चिमी संस्कृतियों में समान रूप से पवित्र है। ये चारों कलाकृतियाँ कम या ज्यादा हद तक अपनी प्रेरणा प्राप्त करती हैं।
एक ही समय में घोर अनुचितता की सीमा पर नृत्य करके कामुक रोमांच का अनुभव करना।
इन्हें शिक्षाप्रद, अंतरसांस्कृतिक चित्रात्मक अभिलेख माना जाता है। 284 जोन डेलप्लाटो

निषिद्ध की मोहक प्रकृति चारों चित्रों का आधार है; केवल
मौरिन प्रिंट में इस तरह के कब्जे के घातक परिणाम व्यक्त होते हैं, क्योंकि घुसपैठिया जिज्ञासु, अभिमानी पश्चिमी स्थिति का प्रतीक है। ये हरम चित्र बताते हैं कि उन्नीसवीं सदी के कलाकारों के लिए,

विचारकों और उनके श्रोताओं के लिए, मृत्यु की प्रवृत्ति (थानाटोस) के कारण हरम का कामुक आकर्षण और भी बढ़ गया था। मध्य पूर्व के लोगों के दृष्टिकोण से,
हरम का पश्चिमी चित्रात्मक चित्रण संभवतः "रूपों में से एक" हो सकता है। औपनिवेशिक हिंसा के सौंदर्यपरक औचित्य के बारे में।"75

नोट्स

इस अध्याय का एक अंश सर्वप्रथम उन्नीसवीं शताब्दी के फ्रांसीसी सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया था।
सेंट लुइस में मिसौरी विश्वविद्यालय में स्टडीज एसोसिएशन का वार्षिक सम्मेलन,
अक्टूबर 2004 में, "फ्रांसीसी नग्नता की विरासत" नामक एक पैनल के हिस्से के रूप में, जिसकी अध्यक्षता की गई थी
मैं सुसान वालर की टिप्पणियों की सराहना करता हूँ। मैं छात्रों का भी आभारी हूँ।
मेरे कला इतिहास के तीन पाठ्यक्रम—हरम की कल्पना, कला में वस्त्र और लाकान
और दृश्य आनंद—इस विषय में उनकी रुचि और इसमें उनके वास्तविक योगदान के लिए।
इससे मेरी सोच को प्रेरणा मिली। मैं ब्रायन गुडविन को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ।
गहन अध्ययन और उपयोगी सुझाव। सभी अनुवाद मेरे हैं, जब तक कि अन्यथा न कहा गया हो।
संकेत दिया गया।
1. हॉलैंडर का तर्क है कि नग्न शरीर, समय के साथ स्थिर रहने के बजाय, फैशन के उतार-चढ़ाव से ढले हुए प्रतीत होते हैं, और उनका रूप और जोर
शरीर के विशिष्ट अंगों की, यहाँ तक कि बिना कपड़ों के भी, उभार, फैलाव, चुभन, लहरदारपन, छंटाई और फैलाव के प्रभावों का संकेत मिलता है, जिन्हें उन्नीसवीं सदी के फैशन ने दर्शाने का प्रयास किया था।

(फैब्रिक ऑफ विजन, अध्याय 3) को प्राप्त करना। वह यह भी तर्क देती हैं कि भारी वस्त्रों में लिपटी, एकाकी और चिंतनशील महिला की छवियां, जो कई परतों में सजी हुई हैं (दो उदाहरण)
जिसका विश्लेषण मैं नीचे करूंगा), विशेष रूप से उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध की यूरोपीय चित्रकला में,
ऐसा प्रतीत होता है मानो स्त्री ही उसके वस्त्र हैं और इसलिए उसे नग्नता की आवश्यकता नहीं है (वही, 165)।
2. ओटोमन अभिजात वर्ग और दरबारी हरम में दासता की विशेष पद्धति ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति की बयानबाजी को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इंग्लैंड में
और फ्रांस में, बहुविवाह के अस्तित्व और हिजड़ों को बनाने को लेकर उन्माद फैला हुआ था।
और दास प्रथा को आसानी से ओटोमन-विरोधी एजेंडा के साथ जोड़ दिया गया। लेकिन इन सब के बावजूद भी
इसमें इंग्लैंड में होने वाली बहसों सहित घरेलू राजनीति और नीतियों पर चर्चा हुई।
फ्रांस में तलाक, कोर्सेट और ड्रेस सुधार, वेश्यावृत्ति, दासता और महिलाओं की भूमिका जैसे ज्वलंत विषयों पर बहस चल रही है।
3. ब्रिटिश और फ्रांसीसी छवियों की तुलना करना कला इतिहास में अपरंपरागत है, जहाँ
छात्रवृत्ति को अभी भी आम तौर पर राष्ट्रीय विद्यालयों के भीतर ही देखा जाता है। आखिरकार, दोनों
विभिन्न देशों के अलग-अलग धर्म, इतिहास और सामाजिक रीति-रिवाज थे। और जबकि फ्रांस में
कला में नग्नता को सम्मान देने की एक लंबे समय से चली आ रही परंपरा के बावजूद, ब्रिटेन ने ऐसा नहीं किया।
आलोचक जॉन रस्किन ने 1872 में कला में नग्नता के चित्रण के खिलाफ काफी जोरदार ढंग से लिखा था।
इस आधार पर कि "यहां तक कि उन लोगों के बीच भी जहां यह सबसे स्पष्ट और शुद्ध था,

इससे निस्संदेह ऐसी बुराई उत्पन्न हुई जो किसी भी सिद्ध रूप से संभव अच्छाई से कहीं अधिक बड़ी थी।
कपड़े पहनना और उतारना 285

इसका पता लगाया जा सकता है” (जॉन रस्किन की रचनाएँ, 22:235)। हालाँकि, ब्रुकलिन में आयोजित प्रदर्शनी "द विक्टोरियन न्यूड" में विक्टोरियन कला में नग्नता के पुनर्विचार पर ध्यान दें।
2002 में कला संग्रहालय।
4 उदाहरण के लिए, "मुक्त व्यापार का आगमन और परिणाम" में कोयमेन के विश्लेषण को देखें।
ओटोमन साम्राज्य।" ओवेन द्वारा किए गए हालिया अध्ययन, "1838 एंग्लो- तुर्की सम्मेलन" को भी देखें।
5 ये आंकड़े एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, 11 वें संस्करण, खंड "तुर्की" से लिए गए हैं।
6 जब, 1872 में, रस्किन ने कहा कि "'सुई के काम के विभिन्न रंगों' में आनंद, और
कढ़ाई की कल्पना में, धीरे-धीरे पूर्वी पोशाक के डिजाइन को परिष्कृत और रोशन करें।
(जॉन रस्किन की रचनाएँ, 22:275), संभवतः वे पर्यटन कला का जिक्र कर रहे थे, क्योंकि स्वदेशी ओटोमन हस्तशिल्प कलाओं का उत्पादन इसके परिणामस्वरूप कम हो गया था।
प्रतियोगिता।
7 'अतिया, मुदक्किरत फ़ि बिका' अल-अहिरत, 62।
8 अपने समय में, यह नवशास्त्रीय शैली का बचाव या उसकी कड़ी आलोचना करने के लिए एक एकजुटता केंद्र के रूप में कार्य करता था।
इंग्रस के नेतृत्व में कला का वह स्कूल, जिसने पुराने अकादमिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए बहादुरी से संघर्ष किया।
यूजीन डेलाक्रॉइक्स के नेतृत्व में नए रोमांटिक रंग चित्रकारों के विरुद्ध। वास्तव में, प्रतिक्रियाएँ
इस काम को लेकर उन आलोचकों ने कड़ी प्रतिक्रिया दी जिन्होंने महिला के शरीर में बहुत अधिक कशेरुकाएँ गिनी थीं।

यह कहानी फ्रांसीसी उस्ताद द्वारा नियमों को तोड़ने के बारे में एक मनगढ़ंत कहानी बन गई है।
डिजाइन सिद्धांतों के हित में, कला के क्षेत्र में हो रहे नवाचार के विकास की भविष्यवाणी करते हुए।
1970 के दशक से नारीवादी कला इतिहासकारों, विशेष रूप से जॉन कॉनॉली और कैरोल डंकन ने, ग्रांडे ओडालिस्क को एक पूर्णतः निष्क्रिय स्त्री शरीर के प्रतिनिधित्व के रूप में स्थापित किया है, जो सक्रिय पुरुष दृष्टि द्वारा दृष्टिगत रूप से पूरी तरह से प्रभावित है। इंग्रेस की इरोटिसाइज्ड में कैरोल ओकमैन द्वारा इंग्रस की तस्वीरों में कामुकता के हालिया विश्लेषण, 'बॉडीज़' में कई कमियां हैं।
पुरानी नारीवादी विरासत के साथ, जिसने लौरा मुल्वे के 1970 के दशक के फिल्म सिद्धांत से उधार लिया गया एक महत्वपूर्ण मनोविश्लेषणात्मक आयाम विकसित किया था। ओकमैन
इससे यह तथ्य सामने आता है कि यह पेंटिंग नेपोलियन की तीन बहनों में सबसे छोटी, रानी कैरोलिन बोनापार्ट मूरत द्वारा बनवाई गई थी - एक पूरक के रूप में।
अब लुप्त हो चुकी नेपल्स की स्लीपर नामक कृति, जिसे राजा मूरत ने खरीदा था लेकिन 1815 के दंगों में नष्ट हो गई थी, ओकमैन का सुझाव है कि यह कृति न केवल पुरुषों को बल्कि महिलाओं को भी कामुक आनंद प्रदान करती है।
रानी और स्वयं लेखिका सहित महिलाओं के लिए, यह दर्शाता है कि वर्तमान में राजनीतिक प्रश्न कला के इतिहास के हमारे लेखन को प्रभावित करते हैं। वह तर्क देती हैं कि
ग्रांडे ओडालिस्क की "अपमानजनक स्थिति," एक अवधारणा जिसे वह जूलिया क्रिस्टेवा से उधार लेती है, का उपयोग नारीवादी प्रतिरोध के साधन के रूप में किया जा सकता है, एक तर्क जिसकी नारीवादी विचारधारा द्वारा आलोचना की गई है।
कला इतिहासकार अबीगैल सोलोमन-गोडेउ ("नारीवादियों के लिए समस्याएं और आनंद")
मुख्यतः क्रिस्टेवा के अनुप्रयोग के लिए। नॉर्मन ब्रायसन की समस्याग्रस्त रचना भी देखें।

बीस साल से भी पहले यह तर्क दिया गया था कि इंग्रस की ग्रांडे ओडालिस्क “हरम के अंदरूनी हिस्से को विश्वसनीय रूप से चित्रित करने में ‘विफलता’” का प्रतिनिधित्व करती है (परंपरा और इच्छा, 142)।
9 रिबेरो, इंग्रेस इन फैशन, 204.
10 फिलिप पेरोट का तर्क है: "क्योंकि स्वयं को वस्त्र पहनाना एक प्रकार का भेदभावपूर्ण कार्य है,
यह मूलतः अर्थ व्यक्त करने की एक क्रिया है। कला के अध्ययन के लिए इसका महत्व है।
जिसमें कलाकार और संस्कृति व्यक्ति के वस्त्रों को तैयार करने की प्रक्रिया में योगदान देते हैं।
(बुर्जुआ वर्ग का निर्माण, 8)।
11 यह एक ऐसी घटना थी जिसे जोन डेलप्लाटो द्वारा 66 फुट लंबे पैनोरमिक कैनवास में यादगार बनाया गया था।

होरेस वर्नेट द्वारा बनाई गई यह पेंटिंग, जो अब वर्साय संग्रहालय में रखी है, और जिसे उन्होंने एल'इलस्ट्रेशन पत्रिका के पन्नों में चित्रित किया था। इस आधिकारिक पेंटिंग के बारे में, जो मैंने अब तक देखी है, अपने एक भाग में हरम के अपमान का सबसे अधिक महिमामंडन करती है, डेलप्लेटो की पुस्तक 'मल्टीपल वाइव्स, मल्टीपल प्लेज़र्स' के पृष्ठ 54-56 पर देखें।
12, 4. टाइगर की छलांग
13 रिबेरो हमें याद दिलाते हैं कि फ्रांसीसी नग्न चित्र परिभाषा के अनुसार बिना कोर्सेट के होते हैं (इंग्रस ने फास-
आयन, 200)। थियोफिल गौटियर (नीचे चर्चा की गई) हरम महिलाओं के कोर्सेट की अनुपस्थिति को उल्लेखनीय पाते हैं, कोर्सेट को "यातना का वह उपकरण" कहते हैं और दावा करते हैं कि यह "पूर्व में अज्ञात है, या केवल धनुष की डोरी या बैस्टिनाडियो द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है" (कॉन्स्टेंटिनोपल, 197)। 14 हॉलैंडर, सीइंग थ्रू क्लोथ्स, 159. हॉलैंडर, फैब्रिक ऑफ विजन, 22 भी देखें। 15 पेरोट, फैशनिंग द बुर्जुआज़ी, 164–65. 16 पेरोट आगे कहते हैं कि उन्नीसवीं सदी के मध्य तक बेडरूम बुर्जुआ घर का एक निजी हिस्सा था (वही, 165)।

17 इसी प्रकार, ब्रिटिश और फ्रांसीसी सांस्कृतिक विमर्श में, अधिक स्पष्ट अंतर
दृश्य कला और अन्य प्रकार के प्रतिनिधित्वों में पुरुष और महिला क्षेत्रों, सार्वजनिक और निजी व्यवहारों, और धनी और गरीब सामाजिक वर्गों के बीच अंतर स्थापित किए जा रहे थे।
18 हॉलैंडर, कपड़ों के माध्यम से देखना, 163. उदाहरण के लिए, जियोर्जियोन की 1510 वेनेशियन पेंटिंग, स्लीपिंग वीनस में कपड़ों की उपस्थिति की तुलना करें।
19 डेलप्लेटो देखें, “तुर्की हरम में एक ब्रिटिश ‘नारीवादी’।” 20 ब्राउन, “हरम का ऐतिहासिक चित्रण,” 60. 21 लेडी मैरी वर्टली मोंटागु, पत्र, इसोबेल ग्रुंडी, संपादक (लंदन: पेंगुइन, 1997), 164. रिबेरो द्वारा टखने तक की पोशाक, गोम-लेक (इंग्रस इन फैशन, 213–14) से समानता पर ध्यान दें।
22 मोंटागु, पत्र, 164. लेडी मैरी अपने बालों के बारे में भी लिखती हैं जो "मोतियों से गुंथे हुए" थे।
(148).

23 वही, 165.
WorldCat.org पर फ्रेंच भाषा में कम से कम तेरह मुद्रण (पेरिस और बोर्डो) सूचीबद्ध हैं।
अठारहवीं कक्षा इंग्लैंड (लंदन) में 1800 से 1899 तक।
25 लेडी मैरी द्वारा "सुंदर फातिमा" को देखने में व्यक्त की गई खुशी एक महिला के बारे में बताती है।
महिलाओं को निहारने में आनंद का यह भाव, समलैंगिक प्रेम (यदि मुझे एक नया शब्द प्रयोग करने की अनुमति हो) में एक अभिजात्य और पूर्व-विक्टोरियन निर्भीकता को दर्शाता है, जो एक अलंकारिक युक्ति के रूप में कार्य करता है और महिला लेखिका के आनंद की तुलना पुरुष लेखक के आनंद से करके उसे सशक्त बनाता है। पूरा वाक्य इस प्रकार है: “मुझे यह स्वीकार करने में कोई शर्म नहीं है कि मैंने सुंदर फातिमा को निहारने में इतना आनंद लिया जितना किसी उत्कृष्ट मूर्ति से भी नहीं मिल सकता था” (मोंटागु, पत्र, 164)। बेशक, कला को निहारने से तुलना करते हुए भी, लेडी मैरी जॉर्जियाई शिष्टाचार के मानकों का पालन करती हैं।
26 वही, 161.

27 और इसका विपरीत भी लागू होता प्रतीत होता है। जैसे वस्त्र नग्नता का संकेत देते हैं, वैसे ही “नग्नता वस्त्र का संकेत देती है” (हॉलैंडर, सीइंग थ्रू क्लोथ्स, 157)।
28 पेरोट, फैशनिंग द बुर्जुआज़ी, 12. 29 नीड, फीमेल न्यूड, 6.
30 एडवर्ड सईद, प्राच्यवाद।
कपड़े पहनना और उतारना 287

31 ओकमैन ने ग्रांडे ओडालिस्क के प्रति आलोचनात्मक प्रतिक्रियाओं का एक मूल्यवान संग्रह उजागर किया है।
इंग्रस की कामुककृत देह में।
32 गौटियर, कॉन्स्टेंटिनोपल, 188.
33 मूल फ्रांसीसी संस्करण में: "क्लियोमेनेस द्वारा गढ़ी गई ग्रीक वीनस की छाती"
साइप्रस के मंदिर के लिए और पादिशा के हरम में ले जाया गया” (272)। हालाँकि मध्य पूर्व में “पादिशा” और “पाशा” के अलग-अलग अर्थ हैं,
फ्रांस में इनका प्रयोग अक्सर एक दूसरे के स्थान पर किया जाता था।
34 इसी संदर्भ में, रिबेरो लिखते हैं कि इंग्रस की ओडालिस्क में नीले रंग की प्रधानता के साथ
दासी एक ईसाई महिला का संकेत देती है, क्योंकि नीला रंग वर्जिन मैरी के लबादे का रंग था।
(इंग्रस इन फैशन, 234)।
35 गौटियर, कला समीक्षक: “अपनी कोहनी पर आधा उठी हुई, जो कुशन में दबी हुई है, ओडालिस्क, अपना सिर दर्शक की ओर एक सुंदर झुकाव के साथ घुमाते हुए, सुनहरे सफेदी वाले कंधे और एक ऐसी पीठ प्रदर्शित करती है जहाँ एक नाजुक— सुंदर सर्पनुमा रेखा” (272).
36 पेरनिओला, “कपड़ों और नग्नता के बीच,” 245. पेरनिओला ने बटाले के उद्धरण दिए हैं।
कामुकता: मृत्यु और इंद्रिय सुख।
37 गौटियर, क्रिटिक डी'आर्ट: "अपनी पवित्र नग्नता में खुद को फैलाया"; "एक कुंवारी स्तन" (272)। 38 इस खंड में अपने अध्याय में बूथ की टिप्पणी देखें कि पाठक "अप्रत्यक्ष रूप से पुरुष है।"

39 इस खंड में, दो अन्य विद्वान उन ग्रंथों का अध्ययन प्रस्तुत करते हैं जो संघर्ष करते हैं
हरम की महिला और वेश्या के बीच की सीमा रेखा। ए. होली
शिस्लर एक ऐसे पाठ का पता लगाती हैं जिसमें कैनान, "अच्छी" ओडालिक, को एक पुरुष के प्रति उसकी अनन्य भक्ति द्वारा परिभाषित किया गया है, और वह "बुरी" वेश्या से अलग है जो
वह कई लोगों को खुश करने के लिए पैसे लेकर काम करती है। आदर्श स्थिति यह है कि कैनान एक समर्पित एकपत्नी पत्नी की तरह व्यवहार करे, जबकि उसके स्वामी की बहुविवाह प्रथा यहाँ मुद्दा नहीं है।
बूथ के अध्याय, मुधक्किरात वसीफा मिस्रिय्या (एक मिस्री महिला की सहेली के संस्मरण) में एक बिल्कुल अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें ज़ैनब को गली के परिवेश में रखकर उसे उसके घुटन भरे परिवेश से मुक्ति दिलाई गई है।
पिता का हरेमलिक।
40 लाकान, “फालस का अर्थ,” 277.
41 पेरनिओला, “कपड़ों और नग्नता के बीच,” 237. 42 गौटियर, क्रिटिक डी'आर्ट: “इधर-उधर फेंका हुआ!” (273). 43 हॉलैंडर, कपड़ों के आर-पार देखना, 175. 44 गौटियर, क्रिटिक डी'आर्ट: “हाथ में पंखों का पंखा पकड़े हुए जो उड़ जाता है, शरीर से इतनी दूर चला जाता है कि एक उत्तम आकार का कुंवारी स्तन दिखाई देता है”
(272).

45 लाकान, “अचेतन में अक्षर का उदाहरण,” 166. 46 वही, 158.
47 ब्राउन, “द हरेम डी-हिस्टोरिसाइज्ड,” 64 और फुटनोट 80. 48 ऊपर नोट 8 देखें।
49 उन्नीसवीं शताब्दी में हरम के बारे में लिखे गए लेखों में यह एक आम बात है। इस पर
इस बिंदु के लिए, इस खंड में ए. होली शिस्लर का अध्याय देखें।
50, 1:4. मैं इस ट्रांस-अरेबियन नाइट्स में पाए जाने वाले पात्रों के नामों की वर्तनी का उपयोग करता हूँ।
स्थान के संदर्भ में, अरेबियन 288 जोन डेलप्लाटो द्वारा वर्णित दृश्य का वर्णन इस प्रकार है।

फ़ॉर्स्टर के अनुवाद में नाइट्स समरकंद, टार्टरी है, जिसकी घोषणा कहानी की शुरुआत में की गई है (1:2), जबकि मॉरिन का शीर्षक, कॉन्स्टेंटिनोपल, उनके चित्र को कम अस्पष्ट स्थान देता है।
51 गौटियर, कॉन्स्टेंटिनोपल, 188–89.
52 अलोला, औपनिवेशिक हरेम, 95.
53, 6 मई, 1865, 626. एथेनियम
54 वही, 626–27.
55 हिबर्ट, चित्रों और रेखाचित्रों की सूची, 5. रिचर्ड न्यूशम ने अपने संपूर्ण कला संग्रह के एक भाग के रूप में बे के बगीचे को प्रेस्टन शहर को दान कर दिया, जहाँ उनका जन्म 1798 में हुआ था; यह नगरपालिका कला दीर्घा का केंद्र बन गया जो आज भी मौजूद है। लुईस के संरक्षकों के बारे में अधिक विस्तृत चर्चा के लिए, डेलप्लेटो, "कलेक्शन/पेंटिंग हरम/क्लॉथिंग" देखें। 56, 29 अप्रैल, 1865, 12. द टाइम्स
57 इसी प्रकार, चार्ल्स बॉडेलेयर की "डैग्यूरोटाइपोमेनिया" की तीखी आलोचना देखें।
उन्होंने अपने प्रसिद्ध निबंध "आधुनिक जनता और फोटोग्राफी" (1857) में पेरिस को एक यंत्रवत व्यवस्था के रूप में चित्रित किया है।
58 लेन, कुरान से चयन, 311–12. 59 शिमेल, “इस्लाम में स्वर्गीय उद्यान,” 13. 60 लेन, आधुनिक मिस्रियों के रीति-रिवाजों का विवरण, 1:60. 61 लुईस और लेन कई मायनों में समानांतर व्यक्तित्व हैं। लुईस का जन्म 1805 में हुआ था, जबकि लेन का जन्म 1801 में हुआ था। दोनों सुशिक्षित थे और संपन्न परिवारों से थे। दोनों ने मिस्र की यात्रा की और वहाँ लंबे समय तक रहे, लेन 1825 से 1835 तक और फिर 1842-49 में, लुईस 1840-50 में। दोनों मिस्र के समाज में पूरी तरह घुलमिल गए और वहाँ के पारंपरिक वस्त्र धारण करते थे, और वहाँ से गुजरने वाले ब्रिटिश कलाकारों और बुद्धिजीवियों का स्वागत करते थे। हालाँकि न तो लुईस और न ही लेन मुसलमान बने, फिर भी इंग्लैंड लौटने पर दोनों ने मिस्र की आदतों को बनाए रखा।
62 लेन, आधुनिक मिस्रियों के रीति-रिवाजों का विवरण, 1:58। 63 लुईस के विपरीत, लेन एक ग्रीक मूल की महिला, नेफीसेह के साथ लौटे, जो उनकी दासी थी और कलाकार रॉबर्ट हे द्वारा उपहार स्वरूप दी गई थी। लेन ने अंततः 1840 में

इंग्लैंड में उससे शादी कर ली। नेफीसेह के बारे में, देखें लीला अहमद, एडवर्ड डब्ल्यू. लेन, 39। लुईस ने 1840 के दशक में मिस्र की यात्रा की थी और 1850 में इंग्लैंड लौट आए, जहाँ वे 1876 में अपनी मृत्यु तक रहे। उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा मुख्य रूप से अपने प्राच्यवादी चित्रों से बनाई, जिनके कारण उन्हें ओल्ड वॉटरकलर सोसाइटी की सदस्यता से पदोन्नति मिली और 1865 तक रॉयल अकादमी की पूर्ण सदस्यता प्राप्त हुई।
64 लेन, आधुनिक मिस्रियों के रीति-रिवाजों और परंपराओं का विवरण, 1:58. 65 वही, 1:61.
66 वही, 1:63.
67 वही, 1:61.
68 फौकॉल्ट, हिस्ट्री ऑफ सेक्सुअलिटी, खंड 1, भाग 2, "द रिप्रेसिव हाइपोथिसिस।" 69 सईद, ओरिएंटलिज्म, 223.
70 वही, 176.
71 फोस्टर प्रस्तावना में लिखते हैं: “अब मैं कुछ लेखकों का उल्लेख करूंगा, जिन्होंने बात की है
अरेबियन नाइट्स में रीति-रिवाजों और परंपराओं का सटीक चित्रण मिलता है। कपड़े पहनना और उतारना 289

प्राच्य राष्ट्रों के बारे में; और हमारी सुंदर देशवासी, लेडी मैरी वर्टली मोंटेग्यू [sic] से शुरू करते हैं, जिनके मनोरंजक और मुझे विश्वास है कि सटीक पत्रों से मैं दो अंश लूंगा” (अरब नाइट्स, xxxi)। 72 सईद, प्राच्यवाद, 176।
73 पेरनिओला ने "निकट" के लिए नग्नता पर एक व्यापक, मानवशास्त्रीय बयान दिया है।
पूर्वी आबादी: "कपड़े मनुष्य को उसका मानवशास्त्रीय सामाजिक स्वरूप प्रदान करते हैं।"
और धार्मिक पहचान, संक्षेप में कहें तो—उनका अस्तित्व। इस परिप्रेक्ष्य से नग्नता एक
नकारात्मक अवस्था, अभाव, हानि, बेदखली। विशेषण: नग्न, वंचित,
और वंचित शब्द ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जिसे किसी ऐसी चीज से वंचित कर दिया गया हो जो उसे मिलनी चाहिए।

है। इस अवधारणा के दायरे में—जो व्यापक रूप से विस्तारित है
निकट पूर्वी आबादी (मिस्रवासी, बेबीलोनवासी और हिब्रू) के लिए, नग्न होने का अर्थ था स्वयं को एक अपमानित और शर्मनाक स्थिति में पाना, जो कि जेल की स्थिति के समान थी।
दास या वेश्याएं, इनमें से जो विक्षिप्त, शापित या अपवित्र हैं" ("बीच में वस्त्र और नग्नता,” 237)।
पत्र संख्या 110 में लेडी मैरी की अंतिम टिप्पणी यह है कि जब वह हरम में थी तब उसने
मुझे ऐसा महसूस हो रहा था मानो मैं कुछ समय मुहम्मद के स्वर्ग में रहा हूँ, इतना अधिक कि
मैं जो कुछ मैंने देखा उससे मंत्रमुग्ध हो गया था” (मोंटागु, पत्र, 165)। 75 अलोला, औपनिवेशिक हरेम, 120।

11 • जुर जी आई ज़ायदान की रचनाओं में हरम, महिलाएं और राजनीतिक अत्याचार

ओरिट बाश्किन

8 इस अध्याय में, मैं बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में अरबी भाषा में लिखे गए कई ऐतिहासिक उपन्यासों में हरम (हरीम) के चित्रण का विश्लेषण करता हूँ। महिला नायिकाएँ और हरम, महिलाओं के एकांतवास से संबंधित समस्याओं पर चर्चा का केंद्र बन जाते हैं।
और राजनीतिक अत्याचार और तानाशाही की निंदा करने के अवसर।
जिन उपन्यासों की मैं चर्चा कर रहा हूँ, वे जुरजी ज़ायदान (1861-1914) द्वारा लिखे गए थे, जो एक विपुल इतिहासकार, उपन्यासकार और पत्रकार थे। उनका जन्म एक
बेरुत में एक निम्न-मध्यमवर्गीय परिवार में पले-बढ़े ज़ायदान ने मेडिकल की पढ़ाई की।
उन्होंने बेरूत के सीरियाई प्रोटेस्टेंट कॉलेज में सिनेमा में दाखिला लिया, लेकिन अपनी पढ़ाई पूरी नहीं की। वे मिस्र चले गए, जहाँ उन्होंने बढ़ते हुए मिस्र के प्रेस में लेख लिखे। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से शुरू होकर, कई ईसाई सीरियाई - विशेषकर पत्रकार, प्रकाशक और अन्य बुद्धिजीवी मिस्र में आकर बस गए थे। हालाँकि, उनमें से कुछ को मिस्र के मूल निवासी अभिजात वर्ग द्वारा अवसरवादिता के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा। ब्रिटिशों के साथ सहयोग के कारण, कई सीरियाई ईसाईयों ने मिस्र के मुद्रण बाजार में प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया।
प्रकाशकों, अनुवादकों, उपन्यासकारों और पत्रकारों के रूप में।1 ज़ायदान इस सांस्कृतिक घटना के एक प्रमुख प्रतिनिधि हैं।
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 291

1891 में, उन्होंने अपना खुद का जर्नल, प्रसिद्ध और आज भी प्रकाशित होने वाला अल-हिलाल, शुरू किया और अगले वर्ष उन्होंने एक प्रकाशन गृह (दार अल-हिलाल) की स्थापना की। उन्होंने इतिहास पर कई विपुल ग्रंथ भी लिखे जिनमें वैश्विक इतिहास, पूर्व-इस्लामिक युग में अरबों का इतिहास और अरबी भाषा और साहित्य का इतिहास जैसे विषय शामिल थे। रूढ़िवादी हलकों के विरोध के कारण

ज़ैदान को मिस्र (बाद में काहिरा) विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर का पद नहीं मिला। उन्होंने इस अस्वीकृति का कारण ज़ैदान को बताया।
इस तथ्य के कारण कि वह एक ईसाई थे।2 उन्होंने बाईस उपन्यास लिखे, जिनमें से एक को छोड़कर बाकी सभी ऐतिहासिक उपन्यास थे। इन रचनाओं को तुरंत सफलता मिली:
1893 और 1919 के बीच, कई उपन्यासों के कई संस्करण छपे; कुछ का बाद में तुर्की और फ़ारसी में अनुवाद किया गया। ज़ायदान ने स्वयं कहा था कि... उनकी सफलता को मान्यता मिलने पर, स्थानीय स्तर पर कई लोगों ने उनका अनुकरण किया। फराह अंतुन जैसी अन्य बुद्धिजीवियों ने भी उनका अनुसरण किया और ऐतिहासिक उपन्यासों का उपयोग राजनीतिक उत्पीड़न, महिलाओं के अलगाव और निरंकुशता पर प्रहार करने के लिए किया।3
ज़ायदान के उपन्यासों में अपेक्षाकृत बड़ी संख्या में महिला पात्रों का परिचय दिया गया है (जिनमें रानियाँ, दासियाँ, आधुनिक शिक्षित महिलाएँ, रखैलें आदि शामिल हैं)।
और आदिवासी महिलाएं) और वे स्थान जो विशेष रूप से महिलाओं से जुड़े हैं, विशेषकर हरम। यह उपन्यासों की योजनाबद्ध संरचना का परिणाम हो सकता है, जो हमेशा एक न्यायप्रिय और दयालु नायक और नायिका को एक पुरुष और एक महिला खलनायक के विपरीत प्रस्तुत करती है। फिर भी, कुछ उपन्यासों के शीर्षकों में महिला नामों की उपस्थिति और उन पर दिए गए ध्यान से यह स्पष्ट होता है कि...
ज़ायदान के उपन्यासों में महिला नायिकाओं के इतिहास से पता चलता है कि ऐतिहासिक कथाओं के चयन में लैंगिक पहलुओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐतिहासिक उपन्यासों के विषय के रूप में महिलाओं का चयन इससे जुड़ा हुआ है...
मिस्र के शिक्षित मध्यम वर्ग में अवकाश-पाठ की संस्कृति का उदय हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मिस्रवासियों ने अधिक पढ़ना शुरू किया और
बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में, वे समाचार पत्रों और साहित्यिक एवं वैज्ञानिक पत्रिकाओं के संपर्क में आईं, जिन्हें वे घर पर और समाजों एवं क्लबों में पढ़ती थीं।4 मर्लिन बूथ और बेथ बैरन ने महिला भूमिका के महत्व पर प्रकाश डाला है।

पाठक वर्ग: साहित्यिक और पत्रकारिता संबंधी रचनाएँ महिलाओं को लक्षित करके लिखी जाती थीं और अक्सर महिलाओं द्वारा ही लिखी जाती थीं, तथा शिक्षा, घरेलू जीवन आदि के बारे में नए विचारों का प्रसार करती थीं।
और सामाजिक आचरण।5 दिलचस्प बात यह है कि महिला प्रेस में लोकप्रिय अरबी उपन्यास और यूरोपीय उपन्यासों के अनुवाद शामिल थे। बूथ, विशेष रूप से, ऐतिहासिक कथाओं और ऐतिहासिक
इस अवधि में महिला पहचान के निर्माण में आदर्श भूमिका निभाने वाले व्यक्ति।6 पत्रिकाएँ
अल-हिलाल और अल-मुक्ततफ जैसे अखबारों ने भी घरेलू जीवन और लिंग से संबंधित विषयों पर सलाह स्तंभों और जीवन में आए बदलावों पर निबंधों के माध्यम से चर्चा की।
विश्वभर की महिलाओं की।
292 ओरिट बाश्किन

मिस्र के पाठकों ने नारी पहचान, कामुकता और अन्य पहलुओं के बारे में भी बहुत कुछ सीखा।
घरेलू जीवन को एक लोकप्रिय साहित्यिक शैली के रूप में देखा जाता है जिसे मिस्र के साहित्यिक आलोचक ने
‘अब्द अल-मुहसिन ताहा बदर ने इन्हें “मनोरंजन और आनंद के उपन्यास” कहा। (रिवयत अल-तस्लिया वा अल-तर्फिह), जिनमें अक्सर युवा महिलाओं (और स्वाभाविक रूप से, युवा पुरुषों) के प्रेम प्रसंगों का वर्णन होता था। अक्सर, ये वृत्तांत कालानुक्रमिक और भौगोलिक दृष्टि से मिस्र के परिवेश से अलग होते थे और दूर-दराज के स्थानों (जैसे जापान या रूस) की घटनाओं और विदेशी महिलाओं पर केंद्रित होते थे, जैसे कि "जापानी लड़की" (उपन्यास अल-फतत अल-याबानिय्या, 1903 में) या "अद्भुत यहूदी महिला" (उपन्यास अल-यहूदिया अल-अजीबा में)।
(1903 में प्रकाशित 'अव फतत इसराइल')
या अनुवादक ईसाई थे।7 ज़ायदान के उपन्यास ऐसी रचनाओं से प्रतिस्पर्धा करते थे। एक विशिष्ट ज़ायदान उपन्यास पाठकों को कम से कम तीन या चार परिवेशों में ले जाता था, तीन या चार प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं को शामिल करता था, और विभिन्न प्रकार के तत्वों का मिश्रण प्रस्तुत करता था।

रोमांस, कामुकता और रोमांच। ये उपन्यास अल-हिलाल में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुए और बाद में दार अल-हिलाल द्वारा पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किए गए। जैसा कि हम देखेंगे, इसका उपयोग
इस शैली ने ज़ायदान को, एक ईसाई होने के नाते, दूरस्थ स्थानों और मध्ययुगीन अतीत में अपनी कहानियों को स्थापित करके महिलाओं के अधिकारों के बारे में क्रांतिकारी राजनीतिक सुझाव देने की अनुमति दी।
ज़ैदान के उपन्यासों में महिला पात्रों की उपस्थिति का क्या महत्व है? सबसे पहले, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, इन कृतियों ने मध्य पूर्व में असाधारण लोकप्रियता हासिल की, जो लेखक की मृत्यु के बाद भी लंबे समय तक कायम रही।
इसके अलावा, उपन्यास न केवल वयस्कों द्वारा बल्कि बच्चों द्वारा भी पढ़े जाते थे,8 और परिणामस्वरूप उनके विचार बहुत बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचे। दूसरा, उपन्यास
यह ज़ायदान की उस समय के विभिन्न ईसाई और मुस्लिम बुद्धिजीवियों द्वारा व्यक्त किए गए राजनीतिक सिद्धांत और महिलाओं के अधिकारों से संबंधित वाद-विवादों के प्रति उनकी जागरूकता को दर्शाता है। अन्य शब्दों में, उनकी अवधारणाएँ
शब्दों के माध्यम से, मध्य पूर्व के शहरी केंद्रों के सार्वजनिक क्षेत्रों में हो रहे विमर्शों पर प्रतिक्रिया देना और साथ ही साथ उनका उपयोग और उन पर चर्चा करना।
प्राच्यविदों और पश्चिमी विद्वानों के बीच बहस के विषय। तीसरा, अरब चिंतन में ज़ायदान के महत्व को मान्यता मिलने के बावजूद, हाल ही में
उनके उपन्यासों को राजनीतिक और सामाजिक विचारों को व्यक्त करने के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में पढ़ा जाने लगा।9 यह अध्याय इन नई व्याख्याओं में लैंगिक आयाम जोड़ता है।10
ज़ायदान के उपन्यासों में हरमों का जो चित्रण किया गया है, वह महिलाओं की घरेलू भूमिका और उपभोग के बारे में महत्वपूर्ण चर्चाओं को प्रतिबिंबित करता है।
अच्छी तरह से प्रशिक्षित महिलाओं को अपने घरों को कैसे व्यवस्थित और सुव्यवस्थित करना चाहिए, इस विषय पर आदतों के साथ-साथ वाद-विवाद भी, जो

ओटोमन और मिस्र के सार्वजनिक क्षेत्रों में काफी प्रचलित थे। यह व्यापकता, उदाहरण के लिए, इस पुस्तक के अध्यायों में दिखाई देती है। जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 293

ए. होली शिस्लर और नैन्सी मिकलराइट की पुस्तक। दोनों यह दर्शाती हैं कि कैसे
आत्मनिर्भरता, विवाह और गृह प्रबंधन के विषय अत्यधिक महत्वपूर्ण थे।
यह अभिजात वर्ग और उभरते मध्यम वर्ग के साथ-साथ इन प्रक्रियाओं के अर्थों पर बहस करने वाले बुद्धिजीवियों के लिए भी महत्वपूर्ण है। शिस्लर और मिकलराइट दिखाते हैं
इन चर्चाओं में हरम की छवि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बूथ आगे यह भी प्रदर्शित करते हैं कि मिस्र में वेश्यावृत्ति के बारे में बहसें अपने मूल रूप में सामने आईं।
लोकप्रिय कथाओं में महिलाओं की आवाज़ों के प्रतिनिधित्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
आधुनिक परिवार, सार्वजनिक और निजी की अवधारणाओं, और घरेलू जीवन और शिष्टाचार के विचारों के बारे में इस नई चर्चा के भीतर, हमें यह समझना चाहिए कि हमें
ज़ायदान के उपन्यासों की ओर आइए।11
महिलाओं और समाज में उनकी भूमिकाओं के बारे में तीन महत्वपूर्ण विमर्श जो ज़ायदान के ऐतिहासिक उपन्यासों के निर्माण के साथ-साथ चल रहे थे, वे हैं इन उपन्यासों में यही बात प्रतिध्वनित होती है। पहला उपन्यास महिलाओं के एकांतवास, अलगाव और शिक्षा की कमी पर एक बहस थी। नारीवादी विचारक मलाक हिफनी नासिफ ने इस विषय को उठाया।
उदाहरण के लिए, (1886-1918) ने महिलाओं के एकांतवास की तुलना इस्लाम-पूर्व अरब में लड़कियों को जिंदा दफनाने की प्रथा से की।12 प्रभावशाली लेखकों की रचनाएँ
मिस्र के बुद्धिजीवी कासिम अमीन (1863-1908) ने महिलाओं की निंदा की थी। एकांतवास के विरोध और महिलाओं की शिक्षा के आह्वान ने मिस्र में नारीत्व के बारे में महत्वपूर्ण चर्चाओं को जन्म दिया। कई महत्वपूर्ण बुद्धिजीवियों ने इस चर्चा में भाग लिया और एकांतवास के विरुद्ध अमीन के

तर्कों के पक्ष और विपक्ष में अपनी-अपनी राय रखी।13 यह बहस कम से कम उतनी ही पहले शुरू हो गई थी।
1870 के दशक। इस प्रकार ज़ायदान के ऐतिहासिक उपन्यास एकांतवास के बारे में इस समकालीन चर्चा से संबंधित हैं।
उपन्यासों को प्रेरित करने वाला दूसरा विमर्श राजनीतिक सिद्धांत और निरंकुश नेताओं की शक्ति को नियंत्रित करने में प्रतिनिधि सरकारों और विधायी निकायों की महत्वपूर्ण भूमिकाओं पर जोर दिया गया। अत्याचार के बारे में वाद-विवाद।
और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से ही मध्य पूर्वी बौद्धिक जगत में संवैधानिकवाद प्रमुख रहा था। ओटोमन साम्राज्य में 1908 की संवैधानिक क्रांति—जिसने सुल्तान अब्द अल-हमीद द्वितीय को मजबूर कर दिया— (1876-1909) में 1876 के संविधान को पुनः लागू करने और विधायिका को वापस बुलाने का प्रयास ज़ायदान जैसे बुद्धिजीवियों के लिए एक महत्वपूर्ण घटना थी। पिछली सीमाएँ
क्रांति के बाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर लगे प्रतिबंध थोड़े समय के लिए हटा दिए गए थे, और कई
उत्साही पत्रकारों और बुद्धिजीवियों ने इस घटना को एक नए संवैधानिक युग की शुरुआत के रूप में चिह्नित किया। इस प्रकार, क्रांति को इस प्रकार समझा गया:
कई अरब बुद्धिजीवियों ने इसे सत्तावादी शासन के खिलाफ एक अत्यंत आवश्यक सुरक्षा उपाय के रूप में देखा।14 ज़ायदान ने इस विमर्श को अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में एकीकृत किया।
और राजनीतिक उत्पीड़न और महिलाओं के बीच संबंधों को रेखांकित किया। उत्पीड़न।
तीसरा, ज़ायदान एक प्राच्यवादी विमर्श का हिस्सा थे। जैसा कि डोनाल्ड 294 ओरिट बाश्किन ने उल्लेख किया है।

रीड के अनुसार, काहिरा विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण प्राच्यविदों के लिए आकर्षण का केंद्र था; ज़ायदान
वह ऐसे विद्वानों से परिचित हो गया था और उनके सिद्धांतों की प्रशंसा करता था।

“उन्होंने 1866 में ब्रिटिश संग्रहालय के वाचनालय में यूरोपीय प्राच्यवाद की खोज की थी” और इस प्रकार “अरबी और इस्लामी इतिहास को देखने लगे थे—इसलिए
सांस्कृतिक पुनरुद्धार के केंद्र में—मुख्य रूप से प्राच्यवादी दृष्टिकोण से।”15 जैसा कि इंगे बोअर ने उल्लेख किया है, प्राच्यवादी कल्पना में हरम की छवियां प्रमुख थीं।
“क्योंकि इसमें तानाशाही से जुड़े सामान्य विषय शामिल हैं, जैसे कि बहुविवाह, . . .”
और निरंकुश शासन के अधीन महिलाओं की कथित दमनकारी स्थिति।"16 मोंटेस्क्यू द्वारा रचित 'फ़ारसी पत्र' इसका एक उदाहरण है। मोंटेस्क्यू, डिडेरोट और वोल्टेयर की रचनाओं में वर्णित पूर्व एक काल्पनिक रूप से विस्तृत छवि थी—हम कह सकते हैं कि यह मध्य पूर्व में वास्तव में रहने वाले यात्रियों या मिशनरियों द्वारा चित्रित पूर्व की तुलना में कहीं अधिक गढ़ी हुई थी। और फ्रांसीसी
लेखकों ने मुख्य रूप से यूरोपीय राजनीति पर चर्चा करने के लिए प्राच्य का उपयोग किया।17 फ़ारसी पत्र एक फ़ारसी हरम में हुए विद्रोह की कहानी सुनाते हैं ताकि वहाँ के अत्याचार की तुलना प्रतिनिधि सरकार से की जा सके, फ़ारसी मुखिया और उसके हिजड़े की अतार्किकता की तुलना फ्रांसीसी तर्कवाद और कानून से की जा सके, और फ़ारसी पत्नियों के अलगाव की तुलना फ्रांसीसी महिलाओं की स्वतंत्रता से की जा सके।18 ज़ायदान
उन्होंने वास्तव में हरम को आलस्य, कामुकता और कामोत्तेजना के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया।19 हालाँकि, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने रूपक का भरपूर उपयोग किया।
रूपकात्मक फ्रांसीसी राजनीतिक संदर्भों को रूपांतरित करके समकालीन मिस्र और ओटोमन राजनीति को प्रतिबिंबित करने के लिए हरम को राजनीतिक उत्पीड़न के स्थल के रूप में चित्रित किया गया है।
ऐतिहासिक उपन्यास अतीत और वर्तमान के विषयों को आपस में जोड़ते हैं। अल-तबरी जैसे लेखकों द्वारा रचित महत्वपूर्ण पूर्व-आधुनिक ऐतिहासिक और धार्मिक ग्रंथ,

अल-खतीब अल-बगदादी, इब्न अल-अथिर और इब्न खलदून को उपन्यासों के स्रोत के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, और कुछ मामलों में, ज़ैदान ने ग्रंथों को फुटनोट में भी शामिल किया है।
वे स्रोत जिनसे उन्होंने अपनी जानकारी ली। उपन्यासों के पात्र,
दरअसल, ये उपन्यास मध्यकालीन इतिहास ग्रंथों से लिए गए संपूर्ण पाठों का पाठ करते हैं। इन उपन्यासों में लोकप्रिय विधाओं और कहानियों को भी शामिल किया गया है, जैसे कि अरब और अन्य देशों के नायकों की जीवनियाँ।
मुस्लिम संस्कृति (सियार) और अरेबियन नाइट्स, जिन्हें संगीतकारों और कहानीकारों द्वारा शहरी गरीबों को सुनाया जाता था और सस्ती किताबों में वर्णित किया जाता था।20
शास्त्रीय मध्ययुगीन साहित्य ने ज़ायदान को बहुत कुछ सिखाया होगा।
इस खंड में नादिया मारिया एल शेख द्वारा अपने अध्याय में इंगित की गई घटना को भी मान्यता दी गई है - जो महिलाओं द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिकाओं से संबंधित है।
अब्बासिद महलों में सत्ता संघर्ष, और खलीफा या उसकी माँ से निकटता का महत्व—साथ ही यह तथ्य कि महिलाओं की राजनीतिक और सामाजिक भूमिकाओं के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की जा सकती थी—
मध्यकालीन साहित्यिक संग्रह।21 हालाँकि, यह तथ्य कि ज़ायदान ने
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 295

समकालीन अत्याचार और राजनीतिक दमन पर चर्चा करने के लिए इस तरह की मध्ययुगीन कथाओं ने उन्हें एक बिल्कुल नया अर्थ दिया। इससे भी अधिक मौलिक रूप से, उपन्यासों ने...
विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों में समान विषयों (अल्पसंख्यक अधिकार, और अलगाव और उत्पीड़न के प्रति प्रतिरोध) की पुनरावृत्ति ने यह धारणा उत्पन्न की कि
इन किताबों में प्रगति की अवधारणा का कोई अस्तित्व ही नहीं था। इसलिए, ये उपन्यास अतीत की रोमांटिक छवि बनाने का प्रयास नहीं थे, जैसा कि सर वाल्टर ने कहा था।
स्कॉट ने ऐसा किया था,22 लेकिन बल्कि, जैसा कि थॉमस फिलिप ने ठोस तर्क दिया है,

इतिहास को अच्छाई और बुराई के बीच संघर्ष के एक शाश्वत चक्र के रूप में समझना।23 ऐसे ग्रंथों ने औपनिवेशिक और स्थानीय ज्ञान का संकरण और संयोजन किया।24
नीचे मैं ज़ायदान की हरम संबंधी समझ का बारीकी से विश्लेषण करता हूँ ताकि महिलाओं और समाज में उनकी भूमिका के प्रति उनके दृष्टिकोण का पता लगाएं। मैं इस पर प्रकाश डालता हूँ।
इन रचनाओं में हरम को मिलने वाले महत्वपूर्ण स्थानिक अर्थ, एक ओर तो स्त्री सौहार्द का प्रतीक स्थल के रूप में, और दूसरी ओर एक प्रतिनिधित्व के रूप में
दूसरी ओर, राजनीतिक दमन और निरंकुश शासकों की अपनी महिलाओं को अलग-थलग करने और अपनी प्रजा पर अत्याचार करने की शक्ति का चित्रण भी है। हालाँकि इस तरह के चित्रण विभिन्न संदर्भों (अब्बासिद, ममलुक और ओटोमन) में दिखाई देते हैं, ज़ायदान की सभी रचनाएँ
मेरे विचार में, उपन्यासों को राजनीतिक रूपकों के रूप में देखा जाना चाहिए जो सामान्य रूप से अत्याचार को विशेष रूप से महिलाओं के उत्पीड़न से जोड़ते हैं, इस तरह से कि
यह इस्लामी अतीत के बजाय उनके वर्तमान को दर्शाता है। अंत में, मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि ज़ायदान ने इस्लामी अतीत से संबंधित प्रतीकों का उपयोग और उनका विकृतीकरण दोनों किया।
हरम का प्राच्यवादी निर्माण, कामुकता, आलस्य और
अनैतिकता। मैं सर्वप्रथम उनके उन उपन्यासों पर ध्यान केंद्रित करता हूँ जो आधुनिक और प्रारंभिक आधुनिक काल में हरमों से संबंधित हैं। दूसरे, मैं हारून अल-रशीद (786-809) के शासनकाल के दौरान बगदाद में रचित एक उपन्यास में मिस्र और ओटोमन हरमों के उनके उपयोग की जाँच करता हूँ।

पाठ और निरूपण: हम भारतीय पत्र

ज़ायदान के पहले उपन्यास मिस्र के हालिया इतिहास और उससे संबंधित विषयों पर आधारित हैं।

मध्य पूर्व। अल-ममलुक अल-शरीद (भगोड़ा ममलुक) मुहम्मद अली (1805-49) के युग में स्थापित है।25 अन्य प्रारंभिक उपन्यासों में घटनाओं का पुनर्रचना की गई है।
‘उराबी विद्रोह (1879-82), सूडान में महदी राज्य,26 और अली बे अल-कबीर का शासनकाल (1760-72)।27 उपन्यास बहुआयामी प्रतिनिधित्व प्रस्तुत करते हैं।
हरम में रहने वाली महिलाओं की। ये महिलाएं, एक अत्याचारी और मनमौजी पितृसत्तात्मक व्यक्ति के अधीन और उसके द्वारा उत्पीड़ित, आधुनिक समाज के विपरीत मानी जाती हैं।
वे साक्षर महिलाएं जिनके विवाह प्रेम और मित्रता पर आधारित हैं।
इस संदर्भ में, ज़ायदान सत्तावादी शासन के रूपक के रूप में हरम का उपयोग करता है।
296 ओरिट बाश्किन

हालांकि, वह हरम के सकारात्मक गुणों को भी एक अद्वितीय रूप में चित्रित करता है,
महिलाओं के लिए एक विशेष स्थान जहाँ महिलाएं एक-दूसरे की सहायता करती हैं और आश्रय पाती हैं
पुरुषवादी क्रोध और अत्याचार।
राजनीतिक उत्पीड़न और महिलाओं के अलगाव के बीच संबंध अपेक्षाकृत बाद के उपन्यास अल-इंक़िलाब अल-उथमानी (ओटोमन क्रांति)28 में अधिक स्पष्ट है। उपन्यास का दुष्ट अत्याचारी, सर्वोत्कृष्ट ज़ायदान खलनायक, ओटोमन सुल्तान अब्द अल-हमीद द्वितीय है।
यह किरदार एक क्रूर, व्यामोहग्रस्त, लगातार सिगरेट पीने वाला अत्याचारी है जो हॉलीवुड शैली के माफिया सरगना और पूर्वी तानाशाह की छवि का मिश्रण है।
यह काफी हद तक अब्दुल हामिद: सा वी पॉलिटिक एट इंटिमेट नामक फ्रांसीसी पाठ का अरबीकृत संस्करण है, जो हामिद-विरोधी सनसनीखेज विवरण है।29 अब्दुल हामिद से शादी करना या उनके द्वारा शासित होना वास्तव में एक भयावह अनुभव था। सुल्तान का राजनीतिक दर्शन एक काल्पनिक संवाद में प्रस्तुत किया गया है जो वह मैकियावेली, "महानतम तर्कवादी दार्शनिकों में से एक" के साथ करता

है।30 अपने वास्तविक और काल्पनिक दोनों शत्रुओं से दुनिया को मुक्त कराने तक नरसंहार न रोकने की शपथ लेते हुए, सुल्तान स्वीकार करता है कि वह मैकियावेली के विश्वदृष्टिकोण से सहमत है। "आप सही थे, मैकियावेली," सुल्तान कहता है।
कहते हैं कि महान पुरुषों को राज्य पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए नैतिक मूल्यों का त्याग करना चाहिए।31 सुल्तान को लगता है कि यह दर्शन अबू मुस्लिम अल-खुरासानी32 जैसे अन्य महान पुरुषों द्वारा भी साझा किया गया, जिन्होंने अब्बासिद क्रांति की ओर से हत्याएं कीं, और स्वयं अब्बासिदों द्वारा भी, जिन्होंने
सत्ता पर अपना नियंत्रण मजबूत करने के बाद उन्होंने अबू मुस्लिम को मार डाला।
मैकियावेली का हवाला यह दिखाने के लिए दिया गया है कि सुल्तान खुद को एक आधुनिक शासक मानता है। वह अखबार पढ़ता है और फोनोग्राफ सुनता है, और उसका साम्राज्य
इसे (ऐतिहासिक रूप से सही तरीके से) टेलीग्राफ जैसी आधुनिक तकनीकों द्वारा संचालित दिखाया गया है। साथ ही, वह इससे प्रेरित भी है।
अब्बासिद शासन और वह स्वयं को प्राच्य वंश की एक लंबी परंपरा से संबंधित मानता है।
निरंकुश शासक। पुराने और नए, आधुनिक और मध्ययुगीन का यह मिश्रण, हामिद की निरंकुशता को सार्वभौमिक बना देता है और इसे पूर्व-पश्चिम के दायरे से बाहर कर देता है।
द्विआधारी। हालांकि, हरम की छवि पूर्व-पश्चिम के विरोध को पुनर्जीवित करती है, हालांकि अधिक जटिल प्रारूप में।
इस उपन्यास में दो महिला पात्रों का परिचय दिया गया है: शिरीन, एक आधुनिक, शिक्षित महिला।
अल्बानिया की एक तुर्की लड़की, और सुल्तान की पसंदीदा रखैल (कदीन), जिसे केवल उसके नाम के पहले अक्षर, जे से जाना जाता था।33 रखैल जे और शिरीन की कहानी उनमें से एक है।
कथानक में दो मुख्य कथाएँ हैं, जिनमें से दूसरी 1908 की क्रांति की कहानी है। इन दोनों कथाओं का संयोजन एक विद्रोह को दर्शाता है।
राजनीतिक स्वतंत्रता की खोज में हरम।

शिरिन एक आधुनिक लड़की है। हम उससे पहली बार उसकी माँ के बगल में बैठे हुए मिलते हैं।
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 297

यूरोपीय फैशन के कपड़े पहने और फ्रेंच भाषा की पत्रिका पढ़ते हुए
जिसमें उसका प्रेमी, रमीज़, गुमनाम रूप से उसके खिलाफ लेख प्रकाशित करता है।
सुल्तान का अत्याचार। शिरीन को एक आधुनिक महिला के रूप में वर्गीकृत करना इस बात से पुख्ता हो जाता है कि वह अपनी माँ द्वारा चुने गए पुरुष से शादी न करने का फैसला करती है, क्योंकि वह
वह स्वतंत्रता प्रेमी रमीज़ से प्यार करती है। उसकी फ्रांसीसी डायरी भी उसे रमीज़ के साथ जोड़ती है।
आधुनिकता। असिर अल-मुतमहदी (अल-मुतमहदी का कैदी) में, शिक्षित नायिका सूदा, "अल-मुक्ततफ नामक वैज्ञानिक पत्रिका पढ़ती है, जिसका उपयोग वह मनोरंजन के लिए करती थी।"34 बैरन ने टिप्पणी की है कि "एक किताब एक प्रतीक बन गई... जो साक्षरता और साहित्य के प्रति एक नए दृष्टिकोण को दर्शाती है।" वह बताती हैं कि बुद्धिजीवी लबीबा हाशिम ने आधुनिक महिलाओं की किताबें और पत्रिकाएँ साथ रखने की प्रवृत्ति पर ध्यान दिया, और उनकी सहकर्मी, मा— लका साद ने महिलाओं को किताबें, पत्रिकाएं और समाचार पत्र रखने की भी सलाह दी।
स्वागत कक्ष में एक मेज।35 ज़ायदान के उपन्यासों में महिलाएं भी ऐसा ही करती हैं। हालाँकि, शिरीन की डायरी की उपस्थिति यह भी दर्शाती है कि संबंध पाठक और पत्रकार के बीच का संबंध प्रेमपूर्ण और सकारात्मक है क्योंकि आधुनिक महिला का मंगेतर लेखों को प्रकाशित करके उससे संवाद स्थापित करता है।
उसकी प्रेमिका.36
रमीज़ को संविधान समर्थक गतिविधियों के लिए जेल में डाल दिया जाता है। उसका पता लगाने की कोशिश में, शिरिन यिल्डिज़ में पहुँच जाती है, जो शाही महल है।
इस्तांबुल, जिसे अब्द अल-हमीद ने अपना घर बनाया था। शिरीन को यिल्डिज़ हरम में लाया जाता है, जहाँ उसे उपपत्नी जे की देखरेख में रखा जाता है, जो अब्द

अल-हमीद द्वारा अपने घोर शत्रु अर्मेनियाई लोगों के खिलाफ जासूसी के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक अर्मेनियाई दासी है।37 उपपत्नी जे सुल्तान के बच्चे से गर्भवती है और उस पर गर्भपात कराने का दबाव डाला जा रहा है। सुल्तान द्वारा विभिन्न अधिकारियों को आदेश दिया जाता है कि...
बच्चे को और यदि आवश्यक हो तो माँ को भी हटा दो। ज़ायदान इस अवसर का उपयोग यिल्डिज़ के हरम का वर्णन करने के लिए करता है। वह महल में विभिन्न प्रकार की दासियों, रखेलों और रखैलियों का परिचय देता है।
और उन्हें नस्लीय और धार्मिक रूप से वर्गीकृत करता है। हरम की महिलाएं सुल्तान की इच्छाओं के अधीन होती हैं। आधुनिक शिरीन तब चकित हो जाती है जब उसका सामना हरम में कई नकाबपोश महिलाओं से होता है जिनकी एकमात्र इच्छा "उस्मान परिवार के सुल्तान को प्रसन्न करना" है।38
जो “सभी विश्वासियों के सेनापति के दास हैं।”39 पाठ में दर्शाया गया है शिरिन के आधुनिक दृष्टिकोण से हरम की प्रथाओं और नियमों का वर्णन किया गया है। वह महिलाओं को यूं ही बातें करते, नाचते या जानवरों के साथ खेलते हुए देखती है। उपपत्नी जे
शिरिन के अकेलेपन को महसूस करती है, जिसका कारण वह अपरिचित वातावरण (वसात) को मानती है। महल की महिलाएं शिरिन का मनोरंजन करने के लिए एक तरीका अपनाती हैं, वह है एक काली दासी को लाकर उससे तरह-तरह के जानवरों की आवाज़ें निकलवाकर उसका मनोरंजन करवाना। पाठक शिरिन की नज़र से सीखते हैं कि 298 ओरिट बश्किन

"यिल्दिज़ में स्थित हरम 'अब्द अल-हमीद के लिए आनंद का क्षेत्र (मलहा) मात्र है और वह वहां तभी जाता है जब वह स्वयं को संतुष्ट करना चाहता हो।" हरम की महिलाओं का स्वभाव सुख की खोज से निर्धारित होता है। सर्वज्ञानी कथावाचक की आधिकारिक आवाज इस बात पर जोर देती है: “क्या
उन महिलाओं से क्या उम्मीद की जा सकती है जिनकी खाने-पीने के अलावा कोई जिम्मेदारी नहीं है और जो अपने जीवन का अधिकांश समय अज्ञानता में बिताती हैं? कैसे?
वे अपना समय खेलकूद, गायन, नृत्य, बिल्लियों और पक्षियों को पालने, खाने- पीने या जिन्नों और राक्षसों के बारे में व्यर्थ की बातें करने के अलावा अन्य चीजों में व्यतीत करते हैं?40

अपने आधुनिक आदर्शों के प्रति निष्ठावान, शिरिन इस प्रकार के जीवन में समाहित होने से इनकार करती है। वह यह अवश्य देखती है कि उपपत्नी जे बुद्धिमान है, लेकिन इस तथ्य के कारण कि...
“परिस्थितियाँ [वसात] नैतिकता को प्रभावित करती हैं,” वह उस तरह का जीवन नहीं जी रही है जिसकी वह स्पष्ट रूप से हकदार है। शिरीन महल की अवैध रूप से अर्जित संपत्ति से दुखी है।
और “जिस प्रकार ‘अब्द अल-हमीद जैसा एक रक्तपिपासु व्यक्ति [सफ्फा] रमीज़ और उसके जैसे अन्य स्वतंत्र और सम्मानित व्यक्तियों पर शासन करता है और उन्हें गिरफ्तार करता है।”41 इस प्रकार, महिलाओं पर होने वाले अत्याचार को ओटोमन साम्राज्य के भीतर राजनीतिक और आर्थिक उत्पीड़न की एक व्यापक चर्चा के संदर्भ में रखा गया है। सुल्तान द्वारा उन्हें एक-दूसरे के विरुद्ध भड़काने के लगातार प्रयासों के बावजूद, दोनों महिलाएं अच्छी दोस्त बन जाती हैं। जब शिरीन कहती है कि साम्राज्य में लाखों महिलाएं सुल्तान की पत्नियां बनना चाहती हैं,42 तो रखैल जवाब देती है: “ओटोमन लोगों में सुल्तान की पत्नियों से अधिक दुखी कोई नहीं है।
हमारे गुलाम हमसे ज्यादा खुश हैं।" और फिर: "हमारे कुत्तों को मिली आजादी हमारे पक्षियों का आनंद लें... यहां तक कि मच्छरों और मक्खियों का भी... यही वह स्वतंत्रता है जिससे हम वंचित हैं, अन्य लोगों के विपरीत। जब एक महिला गुलाम बन जाती है, तो वह
उसे उसके महल में दफनाया गया है।43
अपने महल में कैद, उपपत्नी जे को बाहर जाने की स्वतंत्रता से वंचित कर दिया गया है।
और प्रकृति का आनंद लें। शिरीन जवाब में कहती हैं: “स्वतंत्रता, मेरी महोदया, की मांग है
सुल्तान के विरुद्ध संघर्ष करने वाले स्वतंत्र पुरुष।”44 उपपत्नी इस प्रकार शिरीन से “उसे इस कारागार से छुड़ाने” की विनती करती है।45 कारावास का वातावरण
उपपत्नी के अंधेरे, उदास कमरे के वर्णन में भी यह स्पष्ट है, जिसमें खिड़की की दरारों से केवल कुछ ही प्रकाश की किरणें प्रवेश करती थीं।46
शिरिन के माध्यम से उपपत्नी को युवा वर्ग के विचारों से परिचित कराया जाता है।

तुर्क, वे अधिकारी, सैनिक और कॉलेज के छात्र जिन्होंने 1908 की क्रांति का नेतृत्व किया और सुल्तान की शक्ति को सीमित किया। ज़ायदान, यंग तुर्क पर विश्वास करते हुए।
नेतृत्व में बुद्धिजीवी शामिल थे, और वे हमीद के निरंकुश शासन के प्रति उनके आक्रोश और आधुनिकीकरण की योजनाओं से प्रभावित थे।47 प्रारंभ में, उपपत्नी जे, शिरिन द्वारा लाए गए नए विचारों से सहमत नहीं होती हैं।
उसके साथ। हालाँकि, धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से, वह अपना मन बदल लेती है। अंततः, वह
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 299

उसे पता चलता है कि उसकी अर्मेनियाई पृष्ठभूमि उसके जीवन के लिए खतरा है, क्योंकि सुल्तान
उसने सुना है कि उसके शासन का अंत एक अर्मेनियाई के बेटे द्वारा किया जाएगा।
महिला.48 ‘अब्द अल-हमीद द्वारा अपनी रखैल के साथ किया गया दुर्व्यवहार न केवल स्वतंत्रता के प्रति उनकी घृणा से जुड़ा है, बल्कि उनकी विदेशियों के प्रति घृणा से भी जुड़ा है।
अल्पसंख्यकों, विशेषकर अर्मेनियाई लोगों के बीच। परिणामस्वरूप, रखैल शिरिन के साथ महल से भाग जाती है और अपने बच्चे को जन्म देती है, और शिरिन रामिज़ से शादी कर लेती है।
1908 की क्रांति के बाद।
उपपत्नी की कहानी में कई महत्वपूर्ण तत्व शामिल हैं। ज़ायदान का हरम, वास्तव में, संस्था से जुड़ी नकारात्मक गुणों की यूरोपीय सूची को समाहित करता है: कामुकता, बहुविवाह, अत्यधिक धन-दौलत, सुस्ती, कारावास और महिलाओं की निष्क्रियता जो उन्हें मात्र जानवरों तक सीमित कर देती है।49
जैसा कि उपन्यास में पक्षियों, बिल्लियों, कुत्तों और मुर्गों के संदर्भों में परिलक्षित होता है।
फिर, यह पाठ कुशलतापूर्वक हरम की प्राच्यवादी छवि का उपयोग करते हुए कामुकता और संवेदनशीलता, नस्ल (काले लोगों की तुलना करते हुए) की कहानियों को आपस में जोड़ता है।

(जानवर की गुलामी), और किसी व्यक्ति के चरित्र पर पर्यावरण के प्रभावों के बारे में सिद्धांत। हालाँकि, पाठ में महिला के एकांतवास को भी इसके बराबर बताया गया है।
राजनीतिक अत्याचार, इस प्रकार मध्य पूर्वी बुद्धिजीवियों के समान दावों को प्रतिबिंबित करता है। हामिदियन सत्तावाद के विरुद्ध विद्रोह और रखैल के भाग निकलने के बीच की समानता सत्तावाद को राजनीतिक अत्याचार से जोड़ती है।
महिलाओं का अलगाव। इस परिप्रेक्ष्य से देखा जाए तो, हरम उस निगरानी प्रणाली का पर्याय बन जाता है जो पूरे साम्राज्य की विशेषता है।
ज़ायदान के दावों का विश्लेषण करने का एक उपयोगी तरीका यह है कि उनकी तुलना दास प्रथा के बारे में प्रचलित ओटोमन विचारों से की जाए। एहूद टोलेडानो ने प्रदर्शित किया है कि ओटोमन दास प्रथा से संबंधित विवाद, एक "मनोरंजक सांस्कृतिक अनुवाद" है।
अन्य चीजों के अलावा, नाटक, उपन्यास और कविताएँ भी रची गईं। इस बहस के दौरान, हरम व्यवस्था के बचाव में "गरीबी से अमीरी" की कहानी का इस्तेमाल किया गया, क्योंकि हरम ने महिला दासों को उनकी निम्न स्थिति से उठाकर सर्वोच्च स्थान तक पहुँचाया।
साम्राज्यवादी व्यवस्था के। हालाँकि, साथ ही साथ यंग तुर्क्स जैसे राजनीतिक रूप से सक्रिय सुधारवादी समूहों ने गुलामी की छवि को राजनीतिक और सामाजिक उत्पीड़न के लिए एक शक्तिशाली रूपक के रूप में इस्तेमाल किया। 50 ज़ायदान को भी इन विवादों के दायरे में रखा जा सकता है। वह दासी लड़की के रूपक का प्रयोग करते हैं।
एक ओर तो हरम में राजनीतिक उत्पीड़न को दर्शाने के लिए, वहीं दूसरी ओर महिलाओं के आरामदायक और सुखी जीवन जीने की धारणा का पुरजोर खंडन करें।
दूसरी ओर, हरम में। अल-इंक़िलाब अल-उथमानी में, हरम की महिलाएं सुल्तान की अतार्किक सनक की दबी हुई कैदी हैं, न कि शाही सफलता की प्रतीक।
हमीदियन के निर्माण में एक और विषय उभर कर सामने आता है।
हरम में पति/स्वामी पर सत्तावादी नियंत्रण विनाशकारी होता है (300 ओरिट बाश्किन)

परिवार की संरचना। ज़ायदान की कहानी इस विश्वास को दर्शाती है कि विवाह

अशिक्षित महिलाओं और शिक्षित पतियों के बीच, साथ ही विवाहों के बीच भी। केवल पति-पत्नी के बीच यौन संबंधों पर आधारित, जिनके बीच और कुछ भी समान नहीं है, ऐसे संबंध असफल होने के लिए अभिशप्त हैं।51
हमीदियन शासन को स्पष्ट रूप से एक अव्यवस्थित परिवार के रूप में चित्रित किया गया है। सुल्तान स्वयं एक उदास स्वभाव का व्यक्ति है जो बुरे सपनों और अनिद्रा से ग्रस्त है और रात में अपने महल में व्यर्थ ही भटकता रहता है। अपराधबोध और भय से ग्रस्त। एक दृश्य में वह अपने बगीचे में, शानदार जानवरों और खिलते फूलों से घिरा हुआ है: "इस बगीचे में हर प्राणी
अब्द अल-हमीद को छोड़कर बाकी सब आनंदित और मुस्कुरा रहे थे।52 घर में अस्वस्थ संबंधों का अस्तित्व पिता-पुत्र के रिश्ते में स्पष्ट है। जब अब्द अल-हमीद का बेटा एक तोते से लगाव करने लगता है, तो सुल्तान यह जानना चाहता है कि बच्चा किसे ज्यादा पसंद करता है और अंत में ईर्ष्यावश तोते को मारने का आदेश देता है। अब्द अल-हमीद की अपनी अर्मेनियाई रखैल के बच्चे को मारने की इच्छा भी उन तरीकों का संकेत है जिनसे एक अत्याचारी अपने परिवार को नष्ट कर सकता है।53 इसके अलावा, दरबार की महिलाओं की अज्ञानता यह साबित करती है कि...
यह शारीरिक रूप से खतरनाक है क्योंकि इससे उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि किसी अन्य व्यक्ति द्वारा दी गई दवा
एक बच्चे के लिए हत्यारा महज एक जादूगर द्वारा तैयार किया गया जादुई पेय है। निगरानी और दमन की राजनीति, जो हामिदियन शासन की विशेषता है,
यहां नियम एक बेहद परेशान, अव्यवस्थित पारिवारिक इकाई में रिश्तों में रूपांतरित हो जाते हैं, जिसमें एक पिता (अब्द अल-हमीद), उनकी पत्नियां और उनके परिवार के सदस्य शामिल हैं।
पुत्र। इस संदर्भ में, यह ध्यान देने योग्य है कि ज़ायदान के कई उपन्यास एक पारिवारिक इकाई के विनाश का वृत्तांत सुनाइए: एक बेटा लापता हो जाता है, एक पिता का अपहरण कर लिया जाता है, या एक महिला को उस आदमी से शादी करने के लिए मजबूर किया जाता है जिससे वह नफरत करती है।
हमारे मामले में, हरम और घर दोनों ही ओटोमन साम्राज्य की स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं। उपन्यास के अंत में, "सबसे बड़ी विजय" नामक अध्याय में इन दोषपूर्ण संबंधों का एक विकल्प प्रस्तुत किया गया है।

(अल-फौज़ अल-अकबर)। यह अध्याय आधुनिक शिरीन और रमीज़ के एकविवाही विवाह का जश्न मनाता है, जो प्रेम और सम्मान पर आधारित विवाह है और संवैधानिक शासन की शुरुआत का प्रतीक है। यह विवाह और राष्ट्र का नया प्रबंधन एक उज्जवल, बेहतर भविष्य का संकेत देते हैं।54
‘अब्द अल-हमीद का नकारात्मक चित्रण आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए, क्योंकि उनके शासन के प्रति ईसाई सीरियाई प्रवासियों के बीच प्रचलित दृष्टिकोण और 1908 की क्रांति से पहले चलाए गए हमीदी विरोधी प्रचार।55
हालांकि, अत्याचार और दमन के चित्रण ज़ायदान के 1890 के दशक के उपन्यासों की भी विशेषता हैं, जो ममलुक शासन के अधीन मिस्र का चित्रण करते हैं। फिर भी, ये ग्रंथ
साथ ही महिलाओं के बीच एकजुटता और साझा पहचान की भावनाओं को भी उजागर करना।
जिसका संकेत अल-इंक़िलाब अल-उथमानी में दिया गया था (के बीच की दोस्ती में) जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 301

शिरीन और रखैल, सुल्तान की शक्ति के संदर्भ में)। हरम को स्त्री एकता और सद्भाव के स्थल के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो पुरुष सत्तावाद के विपरीत है।
इस्तिबदाद अल-ममालिक (ममलुकों का अत्याचार) नामक उपन्यास में, जिसका शीर्षक अपने आप में स्पष्ट है, पाठकों को ममलुकों के कुकर्मों के प्रति मिस्र के लोगों की शिकायतों से परिचित कराया जाता है। इस शासन के निर्दोष पीड़ितों में से एक 'अब्द अल-रहमान है, जो अली बे अल-कबीर (1760-72) के शासनकाल के दौरान काहिरा में साबुन बेचने वाला एक व्यापारी है। 'अब्द अल-रहमान के परिवार में वह स्वयं, उसकी पत्नी और उसका बेटा, साथ ही कुछ महिलाएँ शामिल हैं।
काले और गोरे दोनों तरह के गुलाम। ज़ायदान लिखते हैं: "वह अपनी अपार संपत्ति, समृद्ध व्यवसाय और
अगर ममलुकों के अत्याचार और दमन तथा उनके भारी करों के बोझ के कारण ऐसा न होता तो घरेलू जीवन शांतिपूर्ण होता।56
हालांकि, षड्यंत्रों के कारण 'अब्द अल-रहमान को अपनी संपत्ति खोनी पड़ती है। जब उसका

पत्नी सलीमा को जब पता चलता है कि उनके बेटे का सेना में चयन हो गया है, तो वह फूट-फूटकर रोती है और घर में मौजूद सभी दासियाँ और नौकरानियाँ भी रोने लगती हैं।
आंसू।" अंततः सलीमा खुद को अली बे अल-कबीर के हरम में पाती है।
“महल में सेवा करने वाले दर्जनों गुलामों में से एक।”57 ‘अली बे की मुख्य पत्नी को सुंदर और बुद्धि, अच्छे विवेक और
दुर्भाग्यशाली लोगों के प्रति करुणा। वह सलीमा के प्रति दयालु है: "उसकी दया बढ़ती गई और वह उसके पास गई, सलीमा के सिर पर अपना हाथ रखा, अपनी करुणा दिखाते हुए।"
कोमलता।"58 अपनी सद्भावना के बावजूद, अली बे की पत्नी कुछ करने में असमर्थ है क्योंकि वह अपने पति के क्रोध से भयभीत है: "उसका क्रोध उसे बदला लेने के लिए प्रेरित कर सकता है, जैसे कि उसकी हत्या करना, उसे नील नदी में फेंक देना, या उसे देश से निकाल देना।"
उसने महल में उसे अत्यंत अपमानजनक तरीके से विदा किया। उसे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि वह उससे प्यार करता था और अपनी सभी पत्नियों और रखेलों से उसे अधिक महत्व देता था।
फिर भी, वह उसके क्रोध से सुरक्षित थी, और वह जानती थी कि वह बहुत जल्दी भड़क उठता है।
बदला लेने के लिए, और किसी को भी अपने आदेशों का उल्लंघन करने की अनुमति न देने में असमर्थ। वह जानती थी कि कोई भी ममलुक महिलाओं का सम्मान नहीं करता, और उनके लिए इससे आसान कुछ भी नहीं है।
अपनी पत्नियों को तलाक दे रहे हैं।"59
जब बे ने सलीमा को फांसी देने का आदेश दिया, तो उसने दासों को धन्यवाद दिया।
हरम की दयालुता के लिए: "मेरी प्यारी बहनों, मैं आप सभी को आपकी कोमल,
मेरी भावनाएँ बहुत नेक हैं, और मैं आपसे बस इतना ही अनुरोध करता हूँ कि... आप अपनी आदरणीय स्वामियों को बता दें कि मैं उनकी गरिमा और महानता को कभी नहीं भूलूँगा।”60 इन शब्दों ने गहरा प्रभाव छोड़ा।
इससे गुलामों के दिलों पर गहरा असर पड़ा और वे अपने आँसू नहीं रोक पाए।61

ज़ायदान के पहले उपन्यास, अल-मामलुक अल-शरीद में, हम खुद को मुहम्मद अली के मिस्र (1805-49) में पाते हैं। एक बेटा, घुरैब, अपनी मां, 302 ओरित बश्किन से अलग हो गया है

जमीला। स्वतंत्र स्वभाव वाली जमीला ने अपने परिवार द्वारा चुने गए व्यक्ति से शादी करने से इनकार कर दिया था।
उसके लिए चुना गया और वह अपने प्रियतम के साथ मिस्र में बस गई थी।62 फिर, षड्यंत्र
पारिवारिक त्रासदी के कारण जमीला को शाही हरम में भेज दिया जाता है, जहाँ हरम की महिलाएं उसके प्रति बहुत दयालुता दिखाती हैं। वह उनसे दोस्ती कर लेती है, और वे उसकी मदद करने की कोशिश करती हैं।
उसे सांत्वना देने के लिए।63 उसका बेटा, घुरैब, करीमा नाम की एक महिला को उसके पति से बचाता है, जो एक शराबी अमीर है और लगातार उसके साथ दुर्व्यवहार करता है। जब वह उसे ले जाता है
उसे उसके पति से दूर ले जाते हुए, वह चिल्लाते हुए विरोध करता है: "तुम मुझे क्यों ले जा रही हो?"
क्या मेरी पत्नी मुझसे दूर है? क्या वह मेरी संपत्ति नहीं है जिसके साथ मैं जैसा चाहूँ वैसा व्यवहार कर सकता हूँ?
इन लेखों में ज़ायदान के राजनीतिक दर्शन के नए और पुराने दोनों तत्वों का परिचय दिया गया है। एक उदारवादी और विश्वभर में बेस्टसेलर रहे 'सेल्फ-' के प्रशंसक...
सैमुअल स्माइल्स द्वारा रचित "हेल्प" (1880 में अरबी में अनुवादित) में, ज़ायदान उस स्थिति पर शोक व्यक्त करते हैं जिसमें राजनीतिक उत्पीड़न के कारण एक मेहनती व्यापारी अपना व्यवसाय और अपनी सारी संपत्ति खो देता है। 65 दिलचस्प बात यह है कि ये ग्रंथ शासक के दासों और घरेलू दासों—अर्थात निजी व्यक्तियों के स्वामित्व वाले दासों—के बीच अंतर करते हैं। बाद वाले को परिवार के हिस्से के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
वे इसके सुख-दुखों में भागीदार होते हैं, और अपने स्वामियों की तरह ही परेशान होते हैं जब कोई

बेटे को ले जाया गया।66 'अब्द अल-रहमान का परिवार किसी भी तरह से अव्यवस्थित परिवार नहीं था, जैसा कि हामिदियन परिवार के मामले में था। इसके अलावा, ये ग्रंथ
हरम में महिलाओं के बीच घनिष्ठता पर जोर दिया गया है, साथ ही दयालु महिला दासियों के बीच सहायक संबंध को भी दर्शाया गया है (जिन्हें निष्क्रिय नहीं दिखाया गया है)।
या पशुवत), और साथ रहने की सामान्य भावना। साथ रहना
ऐसा लगता है कि महिलाओं ने सलीमा और करीमा दोनों को क्रूर तानाशाहों से बचाया। अतीत के हरमों में महिलाओं की एकजुटता और सामाजिक समारोहों के बारे में लिखते हुए, ज़ायदान शायद अपने समय के मिस्र में मौजूद महिला संगठनों के बारे में सोच रहे थे। दूसरे शब्दों में, महिलाओं की एकजुटता का संबंध हो सकता है।
महिलाओं के लिए बने आधुनिक सामाजिक सभाओं, पठन समूहों और समितियों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए, इन स्थानों पर महिलाएं सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित होती थीं और अन्य महिलाओं की शिक्षा और ज्ञानवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान देती थीं।
साहित्य, स्वच्छता और घरेलू प्रबंधन के ज्ञान के लिए। उदाहरण के लिए, 1909 में, मिस्र की सबसे प्रसिद्ध नारीवादियों में से एक, हुदा शारावी ने... (1879-1947) ने तर्क दिया कि उच्च वर्ग की महिलाओं को श्रमिक वर्ग की महिलाओं को शिक्षित करना चाहिए।
महिलाएं अपने परिवारों के लिए स्वच्छता और स्वास्थ्य का ध्यान रखती हैं। 67 उपन्यासों के दास और मालकिनें, चाहे वे बूढ़े हों या जवान, इस प्रकार एक दूसरे से परामर्श करते हैं और एक दूसरे को सांत्वना देते हैं।
हरम में रहते हुए, वे महिलाओं के एक एकीकृत समूह के रूप में कार्य करती हैं।
या फिर, पत्नी को बे के गुस्से का डर—जो कि, आश्चर्यजनक रूप से,
यह सुल्तान अब्द अल-हमीद के स्वभाव से स्पष्ट रूप से मिलता-जुलता है।
यह पाठ ज़ायदान के बाद के कार्यों से जुड़ा है। अल-ममलुक अल-शरीद में, दुर्व्यवहार का वर्णन है।
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 303

अमीर की नज़र में, महिलाओं का संबंध इस्लामी कानून से है:
वह यह दावा करके अपने दुर्व्यवहार को उचित ठहराता है कि इस्लामी कानून उसे इस तरह से कार्य करने की अनुमति देता है।
वैसे। उपन्यास शजरत अल-दुर्र में भी राजनीतिक रूप से भ्रष्ट तत्वों द्वारा इस्लामी कानून के दुरुपयोग को दर्शाया गया है। इस रचना की महिला खलनायिका क्रोधी है—
उन्होंने कहा कि उनकी प्रतिद्वंदी शजरत अल-दुर्र "इस्लाम की पहली रानी" बनने जा रही हैं और उनका दावा है कि महिलाओं को दी गई राजनीतिक शक्ति एक अवांछित नवाचार है।
(बिदअ).68 खलनायक समझाता है: “मैं स्त्री जाति [जिन्स अल-निसा’] को जानता हूँ। वे नहीं
वादे निभाना। मैं यह नहीं कह रहा कि शजरत अल-दुर्र ऐसी हैं, लेकिन आम तौर पर महिलाएं ऐसी ही होती हैं। और धर्म की किताबों में भी यही बात कही गई है। महिलाओं के बारे में भी यही बात कही जाती है।”69 हिंसक अमीर की तरह, वह इस्लाम (यहाँ “धर्म की किताबों” द्वारा दर्शाया गया है) का इस्तेमाल साथी महिलाओं को दबाने और बाधा डालने के लिए करती है।
एक नए और न्यायपूर्ण राजनीतिक शासन प्रणाली का उदय।
ज़ायदान के उपन्यासों में अनेक आवाज़ें सुनाई देती हैं: हरम की निवासी, दासियाँ और महिलाएँ, सभी औपनिवेशिक, अरब, मिस्र, सीरियाई ईसाई और ओटोमन विचारधाराओं की गूंज सुनाती हैं। ज़ायदान की रचनाएँ महिलाओं और दासियों के अलगाव और हाशिए पर होने की स्थिति का विश्लेषण करती हैं।
पुरुष तानाशाह की पंगु कर देने वाली निगाहों से परे, ये उपन्यास कई द्वंद्वों (पुरुष/महिला, तानाशाह/उदारवादी, हरम/आधुनिक परिवार) को चित्रित करके नारी की हाशिए पर स्थिति को पुनर्परिभाषित करते हैं, जो पुरुष के प्रभाव को दर्ज करते हैं।
दृष्टि को ध्वस्त करता है और उसकी शक्ति को तोड़ता है। हालांकि, साथ ही साथ, ये ग्रंथ यूरोपीय लहजे में बोलते हैं, जिसमें स्त्री निष्क्रियता की छवियां जुड़ी हुई हैं।
हरम—यह दृष्टिकोण अरबी प्रकाशनों में भी प्रमुखता से सामने आया।
दूसरे शब्दों में, इन ग्रंथों में महिलाओं के चित्रण लगातार उपनिवेशवादियों और स्थानीय पुरुषों के दृष्टिकोणों के बीच बदलते रहते

हैं, और साथ ही नए अरब और ओटोमन विमर्शों को भी प्रस्तुत करते हैं जो इन औपनिवेशिक और पुरुषवादी धारणाओं को उलटने का प्रयास करते हैं।70

a C a g e d de s pot: s e C lUs I on a nd t y ra n n y I n a l-‘a B Bas a U K h t a l-ra s h I d

ज़ायदान के मध्यकालीन उपन्यासों की समकालीन प्रकृति ममलुक/ओटोमन उपन्यासों में व्यक्त पूर्व धारणाओं की पुष्टि करती है। अब्बासिद उपन्यास (अबू मुस्लिम अल-खुरासानी और अल-अमीन वा अल-मामून) राजनीतिक निरंकुशता और महिलाओं के अधिकारों का विश्लेषण करते हैं, जिनमें प्रचुर मात्रा में विवरण शामिल हैं।
अब्बासिद काल की दासियों, रखेलों और पत्नियों के बारे में। यह जानने के लिए कि मध्यकालीन उपन्यासों में सत्ता के ये संबंध कैसे काम करते हैं, आइए अब हम आगे बढ़ते हैं।
अल-अब्बासा उख्त अल-रशीद और नकबत अल-बारामिका ('अब्बासा, [हारुन] अल-रशीद की बहन, या बरमाकिड्स की तबाही), एक उपन्यास पहली श्रृंखला -304 ओरिट बश्किन

इसे 1906 में अल-हिलाल में प्रकाशित किया गया और 1911 में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया। इसमें खलीफा हारून अल-रशीद के फारसी वज़ीर जाफ़र अल-बरमाकी के विवाह का वर्णन है।
(786–809), और खलीफा की बहन अब्बासा। कहानी के अनुसार, हारून अल-रशीद को इस रिश्ते की जानकारी नहीं थी, और इसके पता चलने के परिणामस्वरूप...
वे दुखद घटनाएँ जिन्होंने अब्बासिद शासन का भाग्य बदल दिया।
हालाँकि उपन्यास में 'हरिम' शब्द का उल्लेख नहीं किया गया है, फिर भी यह हरम से संबंधित साहित्य में प्रचलित कई विषयों की पड़ताल करता है: दासों की मुक्ति, आलोचना
निर्धारित विवाहों और धार्मिक कानूनों को चुनिंदा रूप से लागू करने और उनमें हेरफेर करने वाले पुरुषों के पाखंड का वर्णन करता है। ये विषय इस ग्रंथ को अब्बासिद काल की सीमाओं से कहीं आगे ले जाते हैं। अपने ओटोमन समकक्ष की तरह, अब्बासिद हरम का निर्माण प्राच्यवादी कल्पना के अनुसार एक स्थान के रूप में किया गया है।

संदिग्ध नैतिकता, जासूसी, निगरानी, सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाली महिलाओं के बीच प्रतिद्वंद्विता और अवैध यौन संबंध।
ज़ायदान की कल्पना में, अब्बासिद स्वर्ण युग काफी हद तक इसके समान है। काहिरा में ममलुक शासनकाल से लेकर हमीदी युग तक। हारून अल-रशीद और अब्द अल-हमीद में समान विशेषताएं हैं: अब्द की तरह
अल-हमीद, हारून अल-रशीद, व्यामोहग्रस्त हैं, और उनका व्यामोह प्रकट होता है।
बगदाद में एकांत स्थानों के निर्माण के माध्यम से शहर को स्थानिक रूप से विभाजित किया गया है। इस प्रकार शहर को पुरुषों और महिलाओं के लिए, अरबों और अन्य लोगों के लिए अलग-अलग स्थानों में विभाजित किया गया है।
फारसियों के लिए, शासक और शासित। बगदाद को दीवारों और किलेबंद महलों से घिरा हुआ दिखाया गया है, जो एक ऐसे शहर को दर्शाता है जिसके शासक अपनी प्रजा से डरते हैं। उपन्यास का शुरुआती पैराग्राफ चतुराई से माहौल तैयार करता है।
पाठकों को यह जानकारी है कि बगदाद को दूसरे अब्बासिद खलीफा अल-मंसूर (शासनकाल 754-75) द्वारा शिया और खुरासानी विद्रोहियों से अभिजात वर्ग की रक्षा के लिए किलेबंद किया गया था। अल-मंसूर,
इसलिए, उसने शहर को तीन दीवारों से घेर लिया और अपने लिए अलग-अलग क्वार्टर बना लिए। बगदाद की छवि एक अत्याचारी साम्राज्य के आदर्श के रूप में उभरती है।
यह इस तथ्य से परिलक्षित होता है कि बगदाद का प्रसिद्ध नाम, मदीनत अल-सलाम (शांति का शहर), उपन्यास में कहीं भी उल्लेखित नहीं है।71
हारून अल-रशीद का गुस्सा और लगातार मनमानी करने की आदत उन्हें एक नकल बना देती है।
अब्द अल-हमीद की तरह। अब्द अल-हमीद की तरह, वह अनिद्रा से पीड़ित है, आराम करने के लिए अपने महल के बगीचे में घूमता है, और जानवरों के प्रति क्रूर है।
जन्मजात क्रूरता। एक महत्वपूर्ण दृश्य में हारुन अल-रशीद को महल के बगीचे में, जंगली जानवरों के पिंजरों के पास दिखाया गया है, जहाँ वह एक पिंजरे में बंद शेर को देखता है: "संभवतः, शेर की शक्ति के प्रति प्रशंसा और उससे उत्पन्न आश्चर्य ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया होगा।"

उसे देखकर मन में उस प्राणी जैसा बनने की इच्छा जाग उठती है। वह रखवाले से शेर को खाना फेंकने और थोड़ी देर बाद खाना रोककर रखने को कहता है।
कुछ दूरी से, जाहिर तौर पर भूखे शेर को चिढ़ाने के लिए। जवाब में, जानवर ने वह पिंजरे में चिड़चिड़ाकर इधर-उधर घूमता है, जबकि रखवाला उसकी भूख पर हंसता है।
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 305

कथावाचक हमें बताते हैं कि हारून अल-रशीद ने शेर के क्रोध को साझा किया: "एक जानवर ने
इसे अपनी भावनाओं को प्रकट करने से रोकने वाला कुछ भी नहीं है; यह अपने भय में दहाड़ता है।
एक समझदार व्यक्ति [अक़ील] अपने क्रोध पर नियंत्रण रखता है और अपने शिकार को मारने से खुद को रोकता है... [अल-रशीद] खुद को एक बुद्धिमान शेर समझते थे। शेर की दहाड़ से अल-रशीद अचानक डर गए और उन्होंने रखवाले को जानवर को खाना खिलाने का इशारा किया... अल-रशीद ने कुछ देर इस दृश्य पर विचार किया, और उसे यह विश्वास हो गया कि यदि वह अपनी प्रजा के प्रति अपने क्रोध को नियंत्रित कर सके,
और यदि वह अपने क्रोध पर काबू पा लेता, तो वह एक समझदार शेर होता।”72 अब्बासिद सम्राट, ओटोमन निरंकुश शासक की तरह, अपने ही क्रोध का कैदी है। क्रोध और पाशविक इच्छाओं से ग्रस्त। खुद को पिंजरे में बंद और एकांत में रखकर, वह तर्कसंगतता और पशुवत व्यवहार के बीच फंसा हुआ है। उपन्यास के अंत में, उसका अमानवीय व्यवहार,
पशुवत गुण हावी हो जाएंगे। जब हारून को पता चलता है कि उसकी बहन अब्बासा ने गुपचुप तरीके से जाफ़र से शादी कर ली है, तो कथाकार खलीफ़ा को उसी शब्दावली का प्रयोग करते हुए चित्रित करता है जिसमें उसने पिंजरे में बंद शेर का वर्णन किया था। क्रोधित होकर,
हारून अल-रशीद अपनी बहन और उसके पति दोनों को मारने का फैसला करता है। अपनी बहन की हत्या के बाद, उसे अपने कमरे में इधर-उधर टहलते हुए दिखाया गया है। ठीक उसी तरह जैसे शेर अपने पिंजरे में चहलकदमी कर रहा था।73

फिलिप का मानना है कि हर्बर्ट स्पेंसर के राजनीतिक सिद्धांत ने ज़ाय-दान के दर्शन को प्रेरित किया। स्पेंसर के सिद्धांत के अनुसार, मनुष्य और पशु जन्मजात होते हैं।
स्वयं के प्रति और अपने लिए उपयोगी हर चीज़ के प्रति सहज प्रेम के साथ। हारुन अल-रशीद के चरित्र में पशुवत शासन का उदाहरण मिलता है।
यह पशु और मनुष्य के बीच संभावित अंतरों को समाप्त करता है।74 इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह पाठ बताता है कि शाही सत्ता को नियंत्रित करने के लिए कानूनी तंत्रों के अभाव में, सम्राट और प्रजा दोनों ही पिंजरे में बंद, भयभीत, पशुवत प्राणियों में परिवर्तित हो जाते हैं। इस प्रकार शासक का व्यामोह और भय उसे और उसकी प्रजा को एकांतवास के लिए मजबूर कर देता है। अल-इंक़िलाब अल-उथमानी की तरह, इस उपन्यास में भी महिलाएं निरंकुश शासक की बेलगाम शक्ति की दुखद कीमत चुकाती हैं। नस्लवादी हारून अल-रशीद अनुमति नहीं देता।
वह अपनी बहन का विवाह मावली (फ़ारसी धर्मान्तरित इस्लाम धर्मान्तरित) के वंशज से कराने का प्रयास करता है और जब वह उसका विरोध करती है तो उसकी हत्या कर देता है। अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले, अब्बासा अपने भाई की ओर मुड़कर कहता है: “मैं तुम्हें तुम्हारे महल में मौजूद दासियों और रखैलियों की याद दिलाना चाहती हूँ। वे बहुत हैं। तुम्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता।”
इस्लामी कानून द्वारा निषिद्ध होने के बावजूद, उनका आनंद लेना गलत है। तो फिर आप मेरे किसी पुरुष से वैध विवाह को कैसे रोक सकते हैं? क्या यह अत्याचार नहीं है?”75
अब्बासा यह भी बताते हैं कि खलीफा की पत्नी उसे रखैलें मुहैया कराती है। और सैकड़ों गुलाम उसके महल में घूमते रहते हैं। अब्बासा की दयनीय स्थिति है।
एक बार फिर निरंकुश शासन का ही परिणाम। राजनीतिक शासक (खलीफा) के रूप में भी।
306 ओरिट बाश्किन

और परिवार के सबसे बड़े पुरुष होने के नाते, हारून अल-रशीद को एक विशेष अधिकार प्राप्त है।

इससे वह कानून से ऊपर हो जाता है। इसलिए वह अपनी बहन की निंदा कर सकता है। इस्लामी मानदंडों के अनुसार वैध होने के बावजूद, वह विवाह को अवैध और पापपूर्ण मानता है। विवाह के प्रति उसकी आपत्तियों का असली कारण उसकी विदेशियों के प्रति नफरत है।
उनका रुख—अर्थात्, इस्लाम में परिवर्तित फारसियों को अस्वीकार करके "शुद्ध" अरबों का पक्ष लेना। इस राजनीतिक रूपक की समकालीन प्रकृति को देखते हुए, यह
इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अब्बासा का बहुविवाह के विरुद्ध दिया गया जोशीला भाषण, जो प्रेम के लिए विवाह करने के गुणों पर प्रकाश डालता है, किसी अब्बासिद राजकुमारी के कथन की बजाय हुदा शारावी के भाषण जैसा अधिक लगता है।
इस प्रकार, अल-रशीद की पितृसत्तात्मक भूमिका अत्याचार से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, जो अब्द अल-हमीद और दमनकारी ममलुकों के चरित्रों की प्रतिध्वनि करती है।
ज़ायदान के आधुनिक उपन्यासों से। इन सभी मामलों में, शासक अत्याचारी, मनमौजी और चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं। फिर भी, जब गुलामी की बात आती है, अल-अब्बासा उख्त अल-रशीद अव नक़बत अल-बरमिका महिलाओं के एकांतवास के संबंध में नए बिंदु प्रस्तुत करता है। उपन्यास के शुरुआती अध्याय पूरी तरह से दास व्यापार को समर्पित हैं और हमें पिन्हाज़ नामक एक यहूदी दास व्यापारी से परिचित कराते हैं।76 उनके ग्राहकों में से एक दुष्ट राजनीतिज्ञ अल-फदल इब्न है।
अल-रबी', जाफ़र अल-बरमाकी का प्रतिद्वंद्वी था। पिन्हाज़ ने फ़दल को दोनों लिंगों और सभी नस्लों के गुलामों का एक विस्तृत चयन प्रदान किया: श्वेत, पीले और काले, जिनमें शामिल हैं
स्लाव, तुर्क, फारसी, अर्मेनियाई और बर्बर। युवा श्वेत लड़कियों की सबसे अधिक कीमत मिलती है। दासों के बीच भौगोलिक अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं:
फदल एक कमरे से दूसरे कमरे में जाता है, और हर कमरे में उसे एक अलग जातीय समूह या

गुलाम लड़कियों का नस्लीय समूह। पहले कमरे में, वह देखता है, "सफेद, बेहद कम उम्र की लड़कियों का एक समूह, जिनमें सबसे बड़ी मुश्किल से दस साल की थी। वे सभी
नग्न, केवल चिथड़ों से ढके हुए, जो उनके जननांगों को मुश्किल से ढक पा रहे थे। रेगिस्तान की कठोरता उन पर स्पष्ट थी; उनके बाल, जिन्हें छुआ तक नहीं गया था।
जन्म से ही कंघी से संवारे गए, उन्हें आज़ाद छोड़ दिया गया। लेकिन उस दृश्य को देखकर
उनके चेहरों की चमकती सफेदी में प्राकृतिक सुंदरता झलक रही थी, जिसमें हल्की सी लालिमा भी थी, जो उनके स्वस्थ शरीर का प्रमाण थी...
उनमें सुनहरे बालों वाली, हरी आंखों वाली और सांवली महिलाएं थीं... हर बार जब दरवाजा खुलता और वे फदल और उसके आदमियों को देखते, तो वे हिरणों की तरह भाग जाते।
शिकारियों से बचते हुए। उनके चेहरों पर डर झलक रहा था, लेकिन कमरा बहुत छोटा था।
ताकि वे भाग सकें।
जब फादल को इन लड़कियों की कम उम्र देखकर असहजता महसूस होती है, तो पिन्हाज़
वह "गरीबी से अमीरी" की कहानी को दोहराता है (जिसका इस्तेमाल ओटोमन काल में गुलामी को सही ठहराने के लिए भी किया जाता था): वह कहता है कि गुलामी में बेचे जाने से उन्हें मुक्ति मिली और वे अमीर बन गए।
उन्हें सभ्यता (मदानिया) और सुखमय जीवन की ओर ले जाया गया। अगले कमरे में, फदल ने "काली चमड़ी वाली, घुंघराले बालों और चपटी नाक वाली लड़कियों" को देखा। फदल जानता था
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 307

वे अश्वेत जाति [ज़ुनुज] की बेटियाँ थीं। पहले कमरे के दासों की तुलना में वे गंदगी और बर्बरता के सबसे करीब थीं।
यह सबसे बदसूरत रंग है और सुंदरता के साथ शायद ही कभी मेल खाता है।"78 पाठक को बताया जाता है कि इन काले गुलामों को सस्ते में बेचा जाता है और उनका उपयोग या तो

कठिन श्रम के लिए या श्वेत महिला दासों के सेवकों के रूप में। अंतिम कमरों में किशोर उम्र की श्वेत दासियाँ हैं, जो सभी पुरुषों की यौन इच्छा को उत्तेजित करती हैं।
उपस्थित।
दासों की नस्लीय पदानुक्रम दिलचस्प है। एक ओर, यह पाठ आधुनिक उपनिवेशवादियों और दासता के समर्थकों दोनों की भाषा का उपहास करता है, क्योंकि क्रूर दास व्यापारी यह कहकर अपने आप को उचित ठहराता है कि दासता महिला दासों को सभ्यता में लाने का एक तरीका है। दूसरी ओर, जैसा कि
यह फ्रांसीसी लेखक द्वारा बेची जाने वाली गुलाम लड़कियों के वर्णन से मिलता-जुलता प्रतीत होता है।
और यात्री गेरार्ड डी नर्वल के अनुसार, यह पाठ ज़ायदान के नस्लवाद को उजागर करता है क्योंकि आधिकारिक कथावाचक - न कि फ़दल या पिन्हा - ही वह व्यक्ति है जो
यह लेख अश्वेतों को बदसूरत और गंदा बताता है। अश्वेतों को पशुवत प्राणियों के रूप में चित्रित करना, अश्वेत दासों के पशुवत वर्णन के समान है।
ओटोमन हरम में। हम दासी लड़कियों को उनके दृष्टिकोण से देखते हैं।
वे पुरुष जो खुले दरवाजों और खिड़कियों से उन्हें (पिन्हा और फदल को) घूरते हैं।
अल-ममलुक अल-शरीद में स्पष्ट नस्लीय श्रेणियों पर टिप्पणी करते हुए, स्टीफन शीही निम्नलिखित अंश का अनुवाद करते हैं: “भिक्षुओं में से एक दरवाजा खोला। दस्तक देने वाला एक लंबा, काला गुलाम था।
असवाद]. . . . उनके बगल में शोक के काले कपड़े पहने एक बेहद खूबसूरत महिला थी, और दास की गोद में एक बच्चा था. . . . भिक्षु जमीला की सुंदरता और शुद्ध सफेदी तथा उसके काले नौकर के बदसूरत चेहरे के बीच के भारी अंतर को देखकर चकित थे।”79 शीही बताते हैं कि नस्लीय टिप्पणियों का प्रयोग एक विरोधाभास स्थापित करने के लिए किया गया है।
नस्लों और रंगों के बीच, और साथ ही साथ एक असामान्य, अनियमितता को दर्शाने के लिए
पारिवारिक संरचना जिसमें एक काली दासी—पत्नी के बजाय—बच्चे को गोद में लिए हुए है। इस प्रकार परिवार की असामान्यता सुंदर और बदसूरत, गोरे और

काले, और राजकुमारी और दासी के बीच के द्वंद्वों द्वारा स्थापित की जाती है।80 यद्यपि पाठ में दासों के वर्णन के साथ अबू अल-फराज अल-इस्फहानी की किताब अल-अघानी के उद्धरण भी दिए गए हैं, यह चित्रण आधुनिक मिस्र के संदर्भ को भी संदर्भित करता है।81 यद्यपि मिस्र में दास प्रथा 1877 में समाप्त कर दी गई थी, फिर भी सार्वजनिक क्षेत्र में दास प्रथा पर चर्चा जारी रही। अब्बासिद दास व्यापार के बारे में ज़ैदान के कुछ वर्णन मिस्र के पाठकों को परिचित लगे होंगे। जैसा कि गैब्रियल बेयर ने दिखाया है,
उन्नीसवीं शताब्दी में, मिस्र में दासों को वर्गीकृत किया जाता था और उनका मूल्यांकन निम्नलिखित के अनुसार किया जाता था:
त्वचा का रंग, नस्ल और लिंग। जबकि श्वेत दास कहीं अधिक महंगे थे, काले दास 308 ओरिट बाश्किन

महिला दासियों का उपयोग घरेलू कामों और रखैल के रूप में किया जाता था।82 इसके अलावा, उपन्यास में इतना महत्वपूर्ण विवाह का प्रश्न,
मिस्र की संस्कृति में क़दी (न्यायाधीश) मुक्त की गई महिला दासों का विवाह कराने से इनकार करते थे।83 अब्बासिद काल में स्पष्ट रूप से समानताएँ थीं। उपन्यास में दर्शाई गई गुलामी और उन्नीसवीं सदी की मिस्र की गुलामी के बीच अंतर स्पष्ट होता है। इसलिए, गुलामी पर ज़ायदान का दृष्टिकोण केवल निरंकुश शासन का रूपक नहीं था।
शक्ति के साथ-साथ बिक्री और बिक्री की प्रथाओं पर एक समकालीन टिप्पणी भी। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व सत्तर वर्षों के दौरान मनुष्यों की खरीद-फरोख्त की जाती थी, ऐसी प्रथाएँ जिनके उन्मूलन पर लिखित रूप में चर्चा की गई थी।84
दास प्रथा का मुद्दा इस प्रथा में पश्चिमी हस्तक्षेप से भी जुड़ा हुआ था। पश्चिमी कौंसलों (विशेषकर ब्रिटिश कौंसलों) ने दबाव डाला।
मिस्र सरकार ने गुलामों को मुक्त करने का आदेश दिया। 1870 के दशक में, यूरोपीय अधिकारी गुलाम व्यापारियों के खिलाफ अभियानों में शामिल थे।85 ज़ायदान, जैसा कि हमें ध्यान देना चाहिए, जनरल को बचाने के लिए 1884 में सूडान में ब्रिटिश अभियान में शामिल हुए थे।

चार्ल्स गॉर्डन, जो युद्ध संवाददाता और दुभाषिया के रूप में कार्यरत थे।
86 इस प्रकार ज़ायदान अपने समय के प्रमुख पश्चिमी दृष्टिकोण से प्रभावित हो सकते थे।
जिसमें अफ्रीकियों को प्रगति की राह में पिछड़े हुए के रूप में चित्रित किया गया था।
ज़ायदान द्वारा अल-अमीन के दासों का वर्णन प्राच्यविद् और मध्यकालीन इस्लामी स्रोतों का एक और दिलचस्प मिश्रण है। सत्रह वर्षीय बलवान और सुंदर अल-अमीन ने यौवन के सुखों का अनुभव कर लिया है; वह दासों के प्रति विशेष रूप से आसक्त हो गया है। मध्यकालीन स्रोत उसकी इन विलासिताओं पर ज़ोर देते हैं।
और भी अधिक। वह अपना अधिकांश समय अपने महल में बिताता था और उससे इतना मोहित था।
उसके पुरुष दासों के बारे में उसकी माँ को उसकी महिला दासों को युवा पुरुषों के रूप में कपड़े पहनाने पड़ते थे ताकि उसे उनके साथ सोने के लिए लुभाया जा सके।87 ज़ायदान अल-अमीन के अपने दासों के साथ संबंधों का वर्णन अधिक संयमित ढंग से करते हैं: “अल-अमीन ने ताली बजाई और एक तुर्की लड़का अंदर आया। वह सुंदर था और अभी पूरी तरह से युवा नहीं हुआ था... यह
लड़का लड़की जैसा दिखता था... अगर आप उसे बोलते सुनते तो आपको यकीन हो जाता कि वह
वह एक लड़की थी... और अल-अमीन के महल में उसके जैसे कई गुलाम थे। अल-अमीन उन्हें तुर्की के सुदूर इलाकों से लाने का विशेष प्रयास करता था।
उनकी सेवा करने के लिए।"88
कथावाचक इस बात पर भी जोर देता है कि गुलाम अरब नहीं थे: “जैसे ही
जैसे ही उन्होंने एक शब्द बोला, श्रोता को एहसास हुआ कि अरबी उनकी भाषा नहीं थी। उनमें से कुछ स्लाव थे और कुछ तुर्क या बीजान्टिन थे, और अधिकांश बगदाद में नए थे।89 अल-अमीन के महल में नारीत्व का प्रबल वर्चस्व है—
यह रंगों से भरपूर एक स्थल है जो फूलों से सजा हुआ है और इसमें विदेशी पक्षी निवास करते हैं, और यह गायन और नृत्य का स्थान है। अन्य पुरुष पात्रों के विपरीत,
जिन्हें मर्दाना कार्य करते हुए चित्रित किया गया है (घोड़े की सवारी करना, सामान ढोना)।

(युद्धों से लौट रहे हथियारों के कारण), अल-अमीन अपना अधिकांश समय अंदर ही बिताता है।
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 309

उसका महल, बंद दीवारों के पीछे, एक ऐसा व्यवहार जो आमतौर पर महिलाओं से जुड़ा होता है
हरम। अल-अमीन अपने महल से केवल अपनी माँ से मिलने के लिए ही बाहर निकलता है।
महल के अंदर हमें रेशमी कपड़े, फूल और संगीत वाद्ययंत्र जैसी वस्तुएं मिलती हैं, जो आमतौर पर पुरुषों की तुलना में महिलाओं से जुड़ी होती हैं। अल-अमीन के कपड़े (रंगीन वस्त्र, फूलों से सजी टोपी) और उनके साथियों का चुनाव उनके स्त्रीत्वपूर्ण लक्षणों पर जोर देते हैं।
हालाँकि अल-अमीन कथानक में एक महत्वपूर्ण पात्र नहीं है, फिर भी उसके महल, दावतों और व्यवहार का वर्णन उपन्यास में लगभग तीस पृष्ठों में किया गया है।90 ये वर्णन कथानक के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे
यह दर्शाता है कि भावी खलीफा अल-अमीन में राजनीतिक क्षमताओं की कमी है, और इसे उनके पिता की अनुशासनात्मक पद्धतियों का दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम माना जाता है।
ठीक उसी तरह जैसे अब्द अल-हमीद ने अपने बेटे अल-रशीद के व्यक्तित्व को भ्रष्ट किया था—
एकांतवास ने एक ऐसे पुरुष को जन्म दिया है जिसमें स्त्रीत्व के लक्षण प्रकट हो गए हैं और जो महल से बाहर निकलने की इच्छा भी नहीं रखता, और जिसकी खलीफा के रूप में शासन करने की भावी क्षमता संदिग्ध है।
श्रेष्ठ।
हालांकि, एक और समस्याग्रस्त मुद्दा अभी भी बना हुआ है, जो अल-अमीन का है।
समलैंगिकता। ज़ायदान को मध्यम वर्ग की धारणाओं को ध्यान में रखना था।
अपने पाठकों के बीच शालीनता बनाए रखने के लिए। जैसा कि मिशेल फौको ने दिखाया है, यौन संबंध, विशेष रूप से समलैंगिकता पर विक्टोरियन युग का विमर्श सीमित हो गया था।
चिकित्सा, पेशेवर क्षेत्र (मनोचिकित्सकों, चिकित्सकों आदि के दायरे में) से संबंधित है, और दैनिक बातचीत के दायरे से बाहर निकल गया है।91

मध्य पूर्वी संदर्भ में, कासिम अमीन ने विक्टोरियन दृष्टिकोण से सहमति जताते हुए शिकायत की कि मिस्रवासी सार्वजनिक स्थानों पर और अपने बच्चों के सामने अनुचित यौन विषयों पर चर्चा करते हैं।92 ज़ायदान, तब, ऐसा नहीं कर सके।
ऐसे विषयों पर खुलकर बात करने के लिए, वह एक जटिल लेखन तकनीक अपनाता है जिसमें उसका पाठ अपने पाठकों को दो अलग-अलग स्तरों पर संबोधित करता है। पहला स्तर उन पाठकों के लिए है जो मध्यकालीन स्रोतों से परिचित थे और, इसलिए, अल-अमीन और उसके दासों के बीच संबंधों का कहीं अधिक विस्तृत वर्णन दिया गया है। ऐसे पाठकों के लिए, लेखक द्वारा प्रदान की गई प्रत्येक जानकारी महत्वपूर्ण है।
अल-अमीन अंतरपाठीय संदर्भों के एक नेटवर्क से जुड़ा हुआ है। दूसरा स्तर उन पाठकों के लिए है जो मध्यकालीन स्रोतों से परिचित नहीं थे और उन पर निर्भर थे।
जानकारी के लिए पाठ पर ही। उनके लिए, ऐसे विवरणों का अर्थ होगा
केवल इतना ही कि खलीफा अपने बेटे को अनुशासित करने में असफल रहा। हालाँकि, सबसे महत्वपूर्ण बात स्त्री-प्रधान स्थान का चित्रण है और
गुलामी का अस्तित्व। अल-रशीद (और अब्द अल-हमीद) का अत्याचार उनके घर के भीतर उनके तर्कहीन और हिंसक व्यवहार में स्पष्ट था।
(अपनी बहन के संबंध में) और इसके बाहर (अपनी प्रजा के संबंध में), अल-अमीन एक अलग तरह का प्राच्य सम्राट: कामुक, आलसी और उदासीन।
310 ओरिट बाश्किन

पुरुष दासों की उपस्थिति, अल-अमीन का समलैंगिक होना, और उनकी अनैतिक गतिविधियों में लिप्त होना।
शारीरिक सुखों से जुड़े सभी पहलू महल के वातावरण को हरम के रूप में उभारते हैं।
अल-अमीन ने स्वयं को एक ऐसे स्त्रीत्व से युक्त पुरुष की भूमिका में ढाल लिया है जो एकांत की तलाश करता है।
बद्र ने ज़ायदान के परिचय के आधार पर अल-अब्बासा उख्त अल-रशीद और नकबत अल-बारमिका को एक शैक्षिक उपन्यास के रूप में वर्गीकृत किया है, जिसमें उन्होंने कहा है: "हम

इस उपन्यास में इस्लामी इतिहास को सरल बनाने और घटनाओं का वर्णन करने का प्रयास किया गया है।
अरबों और बाकी मुसलमानों के बीच।”93 जैसा कि हमने देखा है, उपन्यास में महिलाओं के एकांतवास और गुलामी तथा अत्याचार के बीच संबंध जैसे समकालीन मुद्दों का भी उल्लेख किया गया है। ज़ैदान ने अल-हिलाल में लिखा है कि अब्बासिद अक्सर अपनी प्रजा के साथ अन्याय करते थे, जैसा कि उनके व्यवहार में देखा जा सकता है।
अमीन और अल-रशीद दोनों के और उन क्रूर नरसंहारों के बारे में जो तब हुए जब राजवंश सत्ता में आया।94 ज़ायदान अल-रशीद के काल के अन्य, अधिक सकारात्मक पहलुओं पर ज़ोर दे सकते थे, जैसे कि यूरोप के साथ उनके कथित संपर्क।
और व्यापार का विकास। कुछ इस्लामी स्रोतों में अल-रशीद को एक परोपकारी और धार्मिक खलीफा के रूप में सकारात्मक छवि प्राप्त है। लोकप्रिय छवि अरेबियन नाइट्स में हारून अल-रशीद का चित्रण उन्हें साधारण कपड़ों में दिखाता है ताकि वे अपनी पहचान छिपा सकें और अपनी प्रजा की समस्याओं के बारे में जान सकें।95 हालांकि, ज़ैदान ने इन सभी सकारात्मक गुणों को नज़रअंदाज़ करना चुना क्योंकि ये बगदाद को भ्रष्ट हमीदी साम्राज्य के समान चित्रित करने की उनकी इच्छा में बाधा डालते थे। अपने ऐतिहासिक अध्ययनों में, लेकिन इस उपन्यास में नहीं, ज़ैदान ने अब्बासिद काल को दो भागों में विभाजित किया: पहला, स्वर्ण युग का समृद्ध काल।
दिनों (इज़दिहार), जिसमें अल-रशीद का काल शामिल था, और फिर पतन का युग।96 इस प्रकार ज़ैदान के उपन्यास में हारून अल-रशीद का बगदाद—उनके ऐतिहासिक ग्रंथों में इसके चित्रण के विपरीत—राजनीतिक षड्यंत्रों का अड्डा है और नस्लवाद और हिंसा से चिह्नित है।
ज़ायदान ने अपने उपन्यासों की ऐतिहासिक सत्यता पर ज़ोर दिया और अपने पाठकों को बताया कि...
पाठकों को यह विश्वास दिलाया कि उन्होंने अतीत का सटीक विवरण प्रस्तुत किया है। हालांकि उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इतिहासकार और कथाकार पतन के कारणों पर असहमत थे।
अपने उपन्यास 'बरमाकिड्स' के माध्यम से उन्होंने 'प्रेम कहानी' के रूप में 'उनके पतन के राजनीतिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कारणों' को सामने रखा।

उन्होंने ऐतिहासिक स्रोतों की विविधता पर जोर दिया, जिनका उपयोग उन्होंने आगे यह दर्शाने के लिए किया कि...
उनके निरूपणों की सत्यता।97 फिर भी उपन्यास के शैक्षिक और शिक्षणात्मक उद्देश्यों ने इसे इसकी कथित ऐतिहासिक प्रामाणिकता से दूर कर दिया, और इसने अतीत को वर्तमान के और भी करीब ला दिया।
अल-रशीद और अब्द जैसे डरपोक और अविश्वासी सम्राटों पर चर्चा करते हुए अल-हमीद और ज़ैदान ने यह धारणा बनाई कि अत्याचारी अपने ही लोगों से डरते थे।
प्रजा। हमें बार-बार बताया जाता है कि तानाशाह खुद को अलग-थलग रखना चाहते हैं।
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 311

लोग, चाहे वे महिलाएं हों या उनके अपने पुरुष प्रजाजन, क्योंकि वे साझा करने से डरते हैं
सत्ता। अल-रशीद और अब्द अल-हमीद का निर्माण सत्ता के प्रतीक के रूप में। भावी पीढ़ियों की बौद्धिक बहसों में निरंकुशता का बोलबाला रहा। सलामा मूसा ने कहा कि "हमारे संवैधानिक राष्ट्र के हित में यह उचित नहीं है कि..." हारून अल-रशीद या अल-मामून की प्रशंसा करो क्योंकि दोनों ही अब्दुल हमीद की तरह तानाशाह शासक थे।"98 हालांकि, सती अल-हुसरी ने दावा किया कि शासन व्यवस्था
‘अब्द अल-हमीद और मुहम्मद अली की विचारधाराएँ इस्लामी शासन प्रणालियों के साथ-साथ निरंकुश यूरोपीय मॉडलों से भी प्रेरित थीं।99 इस तुलना का आधार, और ‘अब्द अल-हमीद और मुहम्मद अली दोनों की विशेषताओं को दर्शाने का आधार, ज़ायदान के ऐतिहासिक उपन्यासों में अल-रशीद को दमनकारी शासक के रूप में स्थापित किया गया था।

निष्कर्ष: q U e e n v I C t o r I a
आई एन द ए ज़ेड बा के आई वाई वाई जी आर डी एन एस

हालांकि इस अध्याय में जुरजी ज़ायदान द्वारा रचित कुछ काल्पनिक रचनाएँ प्रस्तुत की गई हैं।

हरम और राजनीतिक अत्याचार पर उस टिप्पणी के बारे में, मेरे (मामूली) दावे ज़ायदान के उपन्यास ऐतिहासिक हैं। ज़ायदान महिलाओं से संबंधित चर्चा में सक्रिय भागीदार थे और उन्होंने उनके अलगाव का पुरजोर विरोध किया। उन्होंने यह भी आगाह किया कि निरंकुश शासकों की अनियंत्रित शक्तियों के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर विनाशकारी प्रभाव होते हैं। भौगोलिक दृष्टि से, उन्होंने हरम को एक क्षेत्र के रूप में इस्तेमाल किया। सुल्तान के दमनकारी शिकंजे में रहते हुए, ज़ायदान के ऐतिहासिक उपन्यासों को राजनीतिक रूपकों के रूप में पढ़ा जाना चाहिए जो अत्याचार की समस्या का विश्लेषण करते हैं, और साथ ही अत्याचार को विशेष रूप से महिलाओं के उत्पीड़न से जोड़ते हैं। ये उपन्यास बहुस्तरीय शैली में लिखे गए हैं जो विभिन्न पाठकों के लिए उपयुक्त हैं।
विभिन्न श्रोतागण।
हारुन अल-रशीद और अब्द अल-हमीद के बीच समानताएं यह दर्शाती हैं कि ज़ायदान ने उस समय लिखा था जब अरब के स्वर्णिम अतीत और ओटोमन साम्राज्य के पतन के बीच विरोधाभास दिखाने वाला राष्ट्रीय अरब आख्यान पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हुआ था। ज़ायदान द्वारा अपने बेटे को लिखा गया एक पत्र उनके दृष्टिकोण को स्पष्ट कर सकता है।

तुर्की भाषा सीखने का आपका निर्णय मुझे बहुत प्रसन्न करता है। यह हमारी संस्कृति की भाषा है।
हमारी सरकार, अत्याचार के अंधकार के छंट जाने के बाद,
ज्ञान ने अज्ञान पर विजय प्राप्त कर ली है और संविधान के बाद
घोषणा हो चुकी है, अब समय आ गया है कि हम अन्य राष्ट्रों को यह प्रदर्शित करें।
कि हम एक जीवंत राष्ट्र हैं जो एकत्रित होना और एकजुट होना जानते हैं और हम अपनी ज़ुबानों से अपनी सरकार की मदद करें... कमेटी का उदय
यूनियन एंड प्रोग्रेस और पुरानी एवं निरंकुश पार्टी पर उसकी विजय, एक 312 ओरिट बाश्किन की रचना है।

अज्ञान पर ज्ञान की विजय का संकेत, क्योंकि मनुष्य
उस पार्टी के लोग अज्ञानी, लालची और निरंकुश थे, जबकि पार्टी के सदस्य

संघ और प्रगति समिति के सभी सदस्य दार्शनिक, कवि और शिक्षित व्यक्ति हैं। प्रथम प्रकार के लोग रक्तपात करते हैं, जबकि द्वितीय प्रकार के लोग इससे बचते हैं।100

ज़ायदान, जिनकी दासता और स्वतंत्रता की छवियां ओटोमन नाटकों और उपन्यासों में दिखाई देती थीं, अभी भी ओटोमन-साम्राज्यवादी दृष्टिकोण से सोच रहे थे। हालाँकि,
‘अब्द अल-हमीद को अत्याचारी, ईसाई-विरोधी आतंक के प्रतीक के रूप में चित्रित करना एक ऐसी छवि थी जो बाद के वर्षों में अरब राष्ट्रवादियों, विशेष रूप से जॉर्ज एंटोनियस के बीच प्रमुख बन गई। फिर भी, नकारात्मक
उस समय के अरब, ओटोमन और यूरोपीय हलकों में सुल्तान की एक निरंकुश शासक के रूप में छवि पहले से ही आकार ले रही थी। संयोगवश, लगभग
‘अब्द अल-हमीद के व्यक्तित्व में मौजूद हर संभव नकारात्मक गुण (क्रूरता, व्यामोह, स्त्री द्वेष, निरंकुशता, तर्कहीनता और उग्र स्वभाव), जो स्थानीय और यूरोपीय दोनों स्रोतों से संश्लेषित किए गए हैं, वही उनके चरित्र को इतना विशिष्ट बनाते हैं।
मनोरंजक (कम से कम इस पाठक के लिए)।
ज़ायदान के उपन्यासों ने विभिन्न विषयों पर प्रतिक्रिया व्यक्त की, उन्हें अपनाया और उन पर टिप्पणी की।
मुहम्मद अब्दू, कासिम अमीन और तलत हर्ब जैसे प्रख्यात बुद्धिजीवियों द्वारा लिखित साहित्य और रचनाओं में इस विषय पर चर्चा की गई है। उनके ऐतिहासिक उपन्यासों में यह बात झलकती है।
आधुनिक विचार यह है कि महिलाओं को शिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे बेहतर बन सकें।
उनके परिवारों की गुणवत्ता; एक शिक्षित पुरुष और एक शिक्षित महिला के बीच समतावादी संबंध एक अच्छे विवाह की कुंजी है;
और अंत में, महिलाओं को अलग-थलग रखना सरासर अन्यायपूर्ण और अनुचित है। ज़ायदान द्वारा अपनी रचना में आलसी रखेलों के चित्रण में इन विचारों को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।
यिल्डिज़ का हरम; अब्बास और शिरिन का दुख, जो (कम से कम)

(शुरू में) वे अपने प्रिय पुरुषों से शादी करती हैं; शाही हरम की जेल से समानता; और शाही परिवारों में लगातार पनपते रहस्य और षड्यंत्र।
तानाशाह। दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति अपने ही घर में बहुविवाह का अत्याचारी है, वह अपने घर के अंदर या बाहर कभी भी सभ्य व्यक्ति नहीं हो सकता।
जैसा कि मोंटेस्क्यू के फ़ारसी पत्रों से पता चलता है, हरम के विरुद्ध विद्रोह
जैसा कि अल-इंक़िलाब अल-उथमानी में दिखाया गया है, यह व्यवस्था वास्तव में अधिनायकवाद के विरुद्ध क्रांति है और इसे राजनीतिक मुक्ति के क्षण के समान माना जाता है।

1908.

हालांकि, विपरीत दृष्टिकोण से पढ़ने पर ज़ायदान का अपना नस्लवाद उजागर होता है और
एक उपनिवेशित देश द्वारा औपनिवेशिक ज्ञान के संकरण का निहितार्थ
उनके उपन्यास भी एक प्रकार का विनियोग हैं, जिनमें उपनिवेशित व्यक्ति स्वयं को सुधारने और अपने द्वारा सुधार करने का अधिकार जताना चाहता है। औपनिवेशिकों की भाषा का प्रयोग करके अपनी ही हाशिए पर पड़ी आबादी (इस मामले में, महिलाएं) को निशाना बनाया गया। पश्चिमी विचारों को अपनाने से नए विचार सामने आए।
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 313

ज़ायदान के ग्रंथों के अनुसार: काली दासी लड़कियों की प्राच्य छवियां जो मिलती-जुलती हैं
जानवरों और समलैंगिकता के बारे में सांकेतिक बातचीत (इसके अस्तित्व को स्वीकार करते हुए, फिर भी मध्यमवर्गीय मर्यादा की धारणाओं के कारण इसका सीधे वर्णन करने से बचना)।
ज़ायदान के उपन्यास इस बात की ओर इशारा करते हैं कि पूर्व और पश्चिम को अलग-अलग संस्थाओं के रूप में देखना असंभव है, क्योंकि वे प्रत्येक उपन्यास में एक साथ विलीन हो जाते हैं और
हर हरम में, यही भावना थी। इस परिप्रेक्ष्य से देखा जाए तो ज़ायदान के 1893 के गैर-ऐतिहासिक उपन्यास जिहाद अल-मुहिब्बिन (प्रेमियों की लड़ाई) की शुरुआती पंक्तियों का अध्ययन करना दिलचस्प है: “21 जून, 1887 को काहिरा के लोगों ने इंग्लैंड की रानी विक्टोरिया के शासन के पचास वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया। उन्होंने अज़बकिया उद्यानों को रोशनी से सजाया। अकेले और समूहों में, लोग
बगीचे में एकत्रित हुए: सभी समुदायों की महिलाएं, पुरुष और बच्चे।
और जीवन के सभी क्षेत्रों से।101
हालाँकि महारानी विक्टोरिया का शासन कब्जे से पहले ही शुरू हो गया था। मिस्र में, यह मिस्र के समय का हिस्सा बन जाता है। इसके अलावा, समय की यह अवधारणा मिस्र के उपन्यास का हिस्सा बन जाती है जो तिथि को संदर्भ बिंदु

के रूप में उपयोग करता है। यह तिथि मिस्र के स्थान को भी प्रभावित करती है (सजावट को)।
अज़बकिया उद्यान)। महिलाओं, हरमों और निरंकुश शासकों की छवियां भी इसी प्रकार पूर्व और पश्चिम की श्रेणियों को ध्वस्त कर देती हैं क्योंकि ये छवियां आपस में मिश्रित हो जाती हैं।
मध्य पूर्वी और पश्चिमी दोनों स्रोतों से उधार लेकर नए रूपकों में परिवर्तित करना।

नोट्स

मैं समाह सेलिम, फारूक मुस्तफा, मर्लिन बूथ और प्रेस के पाठकों को धन्यवाद देता हूँ।
उनकी टिप्पणियाँ। सभी अनुवाद मेरे द्वारा किए गए हैं, जब तक कि अन्यथा उल्लेख न किया गया हो।
1. मिस्र में अरब सीरियाई बौद्धिक उत्पादन के लिए, रीड की पुस्तक "द सीरियन क्रिश्चियंस" देखें।
और अरब जगत में प्रारंभिक समाजवाद," फराह अंतुन की ओडिसी, और "सीरियाई ईसाई, गरीबी से अमीरी की कहानी, और मुक्त उद्यम"; केनी, "पूर्व बनाम अल-मुक्ततफ़ में पश्चिम, 1875-1900।"
2 फिलिप, गुरगी ज़ायदान और "जुरजी ज़ायदान के विचारों में राष्ट्रीय चेतना"; क्रैब्स, उन्नीसवीं सदी के मिस्र में इतिहास लेखन; डि-कैपुआ, "आधुनिक मिस्र के इतिहास लेखन का विचार और अभ्यास, 1890-1970"; रीड, “काहिरा विश्वविद्यालय और प्राच्यविद्,” 62–64। ज़ायदान की अपनी धारणा पर
विश्वविद्यालय से बर्खास्तगी, उनका 12 अक्टूबर, 1910 का पत्र देखें, अनुवादित और
फिलिप, गुरगी ज़ायदान, 210-14 में उद्धृत। 3 28 मार्च, 1912 को अपने बेटे को लिखे एक पत्र में, ज़ायदान ने दावा किया कि अन्य लेखकों ने "इस्लाम के बारे में ऐतिहासिक उपन्यास लिखने में मेरी नकल करने की कोशिश की और असफल रहे।"

ज़ायदान ने ऐतिहासिक उपन्यासों के अन्य लेखकों को प्रभावित किया और उनसे प्रभावित भी हुए।
उपाधियों के चयन में समानता प्रकट होती है। ज़ायदान अक्सर "की कन्याएँ..." का प्रयोग करते थे।
उनकी उपाधियाँ ('अधरा' कुरैश, 1889; ग़दात कर्बला', 1901; फ़ातत ग़ासन, 1898, फ़ातत 314 ओरित बश्किन

अल-क़ैरवान, 1912); यह वाक्यांश कई ऐतिहासिक उपन्यासों के शीर्षकों में भी दिखाई दिया।
उस समय के (उदाहरण के लिए, अहमद सईद बगदादी, ग़दत जबल अनासिया, 1897; अहमद शॉकी, 'अधरा' अल-हिंद, 1897; 'अब्द अल-रहमान इस्माइल, ग़दात अल-अंदालुस, 1899; 'अब्द अल-मसीह अल-अंताकी, 'अधरा' अल-याबान, 1906; और सादा मुरली, फतत अल-बुस्फुर, 1911)। 'अब्द अल-मुहसिन ताहा बद्र और मैटी मूसा ने ध्यान दिया कि अन्य ऐतिहासिक उपन्यास, जैसे कि खलील बे सादा का असरार अल-थवरा अल-रूसिया (1905), फराह अंतुन का उर्शालिम अल-जदीदा (1904), और याकूब सर्राफ का फतत मिस्र (1905) ज़ायदान द्वारा चर्चा किए गए विषयों के समान विषयों से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, लबीबा हाशिम की क़ल्ब अल-राजुल (1904) ने धार्मिक अल्पसंख्यकों की जांच की, जो ज़ायदान के उपन्यासों में खोजा गया एक विषय है। शिरीन (1907) में, उन्होंने एक अर्मेनियाई महिला को सस्सानिद महल में रखा; ऐसा हो सकता है कि ज़ायदान का अल-इंक़िलाब अल-उथमानी हाशिम की शिरीन से प्रेरित हो। देखें फ़िलिप, गुर्गी ज़ायदान, 217; बद्र, ततव्वुर अल-रिवाया अल-अरबिया अल-हदीथा फ़ी मिसर, 409-21, 116-84; मूसा, द ओरिजिन्स ऑफ मॉडर्न अरेबिक फिक्शन, 219-52।
4. मिस्र में प्रेस के उदय के लिए, देखें अयालोन, द प्रेस इन द अरब मिडिल ईस्ट; कोल, “प्रिंटिंग एंड अर्बन इस्लाम इन द मेडिटेरेनियन वर्ल्ड, 1890– 1920।”
5 बैरन, मिस्र में महिलाओं का जागरण और "मिस्र में पाठक और महिला प्रेस"; बूथ, मे हर लाइक्स बी मल्टीप्लाइड; ज़िग्लर, "अल-हरका बरका!"; कैनन, "उन्नीसवीं सदी के अरबी लेखन महिलाओं और समाज पर।"
6 बूथ, मे हर लाइक्स बी मल्टीप्लाइड, विशेष रूप से अध्याय 1-3 और 5-7; ज़ैदान और ज़ैनब फ़व्वाज़ के बीच तुलना भी देखें, उनकी "ऑन जेंडर

हिस्ट्री...एंड फिक्शन" में। बदर, ताताव्वुर, 123 (फतत अल-शर्क में अनुवादों पर) और मूसा, द ओरिजिन ऑफ़ मॉडर्न अरेबिक फिक्शन, 91-121 (उन्नीसवीं सदी में मिस्र और सीरियाई अनुवादकों पर) भी देखें।
7 शैली पर, देखें बदर, ताताव्वुर, 116–84.
8 शीही, "दोहरापन और द्वंद्व", 90-105; मूसा, अल-यौम वा अल-ग़ाद, 236; अय्यूब, "मुअमरत अल-अघबिया'", अल-अथर अल-कामिला ली-अदब धी अल-नून अय्यूब, वॉल्यूम में। 1, पृ. 3-50.
9. दो उल्लेखनीय अपवाद दी-कैपुआ और शीही हैं।
10 बूथ द्वारा ज़ायदान के उपन्यास अरमानुसा अल-मिस्रिया की संक्षिप्त तुलनात्मक व्याख्या भी देखें।
बूथ में, “लिंग, इतिहास... और कथा पर,” 234–37.
11 इस खंड में शिस्लर, मिकलराइट और बूथ द्वारा लिखित अध्याय देखें। 12 कोल, “भूमध्यसागरीय जगत में मुद्रण और शहरी इस्लाम, 1890-1920,” 344-64। 13 अमीन, तहरीर अल-मरआ और अल-मरआ अल-जदीदा। इस वाद-विवाद पर, अहमद, महिलाएँ देखें।
और इस्लाम में लिंग, 144-68; कोल, "शताब्दी के मोड़ पर मिस्र में नारीवाद, वर्ग और इस्लाम।"
14 हौरानी की पुस्तक "अरबी थॉट इन द लिबरल एज, 1798-1939" देखें, विशेष रूप से 73-83 (तहतावी के विचारों पर), 88-94 (खैर अल-दीन अल-तुनिसी के विचारों पर), 173-92 (लुत्फी अल-सैय्यद, अली अब्द अल-रज़ीक और अन्य के बीच वाद-विवाद और खिलाफत के प्रश्न पर)। 1876 के अर्थों पर वाद-विवाद के लिए, कोल की पुस्तक "कॉलोनियलिज्म एंड रिवोल्यूशन इन द मिडिल ईस्ट", 118-122 देखें। 1876-1909 की अवधि के लिए, कयाली की पुस्तक "इलेक्शन्स एंड द इलेक्टोरल प्रोसेस इन द ओटोमन एंपायर, 1876-1919" और "अरब्स एंड यंग तुर्क्स", अध्याय 1 और 2 देखें।
15 रीड, “काहिरा विश्वविद्यालय और प्राच्यविद्,” 62.
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 315

16 बोअर, “पर्दे के नीचे से निरंकुशता,” 43. ज़ोनाना, “सुल्तान और
दास।" हरम के प्राच्यवादी निर्माण की आलोचना भी देखें।

[illegible]

17 [illegible], “[illegible],” 119.

18 [illegible], 124.

19 [illegible]. [illegible], “[illegible]: [illegible], [illegible], [illegible], 32 ([illegible], 1995 –1996), 43–73[illegible]

20 [illegible], [illegible], 3–25.

21 [illegible] 22 [illegible], [illegible], 1797-1939, 277. 23 [illegible], [illegible], 78.

24 [illegible] “[illegible]” [illegible], [illegible], [illegible],

30 ज़ायदान, अल-इंक़िलाब अल-उथमानी, 228. डोरिस यह भी कहते हैं कि सुल्तान मैकियावेली के प्रिंस के शौकीन थे (डोरिस, द प्राइवेट लाइफ ऑफ द सुल्तान ऑफ टर्की, 176-77)।
31 ज़ायदान, अल-इंक़िलाब अल-उथमानी, 227।
32. फारसी मूल के सेनापति अबू मुस्लिम अल-खुरासानी (700-55) की हत्या कर दी गई।
अब्बासिद खलीफा अल-मंसूर ने अब्बासिद काल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, इसके बावजूद उन्होंने अब्बासिद काल में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।
क्रांति और सत्ता में उनके उदय में।
33 कदीन शब्द के विकास पर, पियर्स, द इंपीरियल हरेम, 108 देखें। 34 ज़ायदान, असिर अल-मुतमहदी, 12।
35 बैरन, “मिस्र में पाठक और महिला प्रेस,” 222. विश्लेषण भी देखें।
सलीम बुस्तानी के लेखन में शिक्षित लड़की को सद्गुण के आदर्श के रूप में दर्शाया गया है, जैसा कि मूसा नामक रचना में वर्णित है।
आधुनिक अरबी कथा साहित्य की उत्पत्ति, 162. 36 अरब महिलाओं और पुरुषों द्वारा लिखे गए शुरुआती उपन्यासों में युवा महिला पात्रों को अक्सर पढ़ने और लिखने की क्रियाओं में चित्रित किया जाता था, बूथ ने तर्क दिया है, ये क्रियाएं कभी-कभी उनकी जान बचाती थीं। इस खंड में बूथ का अध्याय और उनका "कथा साहित्य का कल्पनात्मक संग्रह," 282 देखें।
37 अर्मेनियाई जासूसों पर, डोरिस की पुस्तक, द प्राइवेट लाइफ ऑफ द सुल्तान ऑफ टर्की, 234-35 देखें। 316 ओरिट बाश्किन

38 ज़ायदान, अल-इंक़िलाब अल-उथमानी, 265. 39 वही। डोरिस शाही हरम का भी वर्णन प्रदान करता है, जिसमें महिलाएं एक ओर धूम्रपान कर रही हैं, जानवरों के साथ खेल रही हैं और षड्यंत्रों में व्यस्त हैं, और दूसरी ओर सुल्तान के क्रोध से डरी हुई हैं (तुर्की के सुल्तान का निजी जीवन, 241-43)।
40 ज़ायदान, अल-इंक़िलाब अल-उथमानी, 270. 41 वही।
42 वही, 278.
43 वही।
44 वही, 279.
45 वही।

46 वही, 280.
47 फिलिप, गुर्गी ज़ायदान, 78.
48 ज़ायदान, अल-इंक़िलाब अल-उथमानी, 292. डोरिस ने सुल्तान की अर्मेनियाई लोगों के प्रति घृणा पर विस्तार से चर्चा की है और तर्क दिया है कि सुल्तान की माता अर्मेनियाई थीं, हालांकि सुल्तान ने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। ज़ायदान ने इस दावे को दोहराया है। डोरिस, द प्राइवेट लाइफ ऑफ द सुल्तान ऑफ टर्की, 1-3, 81 देखें।
49 ज़ोनाना, “सुल्तान और दास,” 602. 50 टोलेडानो, “दासता की उत्तरकालीन ओटोमन अवधारणाएँ (1830-1880),” 490-94, 503-1. टोलेडानो, ओटोमन मध्य पूर्व में दासता और उन्मूलन, 112-35 भी देखें।
51 अमीन के समान कथनों को देखें, तहरीर अल-मरआ, 60-63; अल-मरआ अल-जदीदा, 61-62 में घूंघट और आलस्य (बटाला) के बीच संबंध पर उनके विचारों को भी देखें। 52 ज़ायदान, अल-इंक़िलाब अल-उथमानी, 96. डोरिस सुल्तान की नींद न आने और बार-बार आने वाले बुरे सपनों के बारे में भी बात करती है (तुर्की के सुल्तान का निजी जीवन, 177-79)।
53 ज़ैदान, अल-इंक़िलाब अल-उथमानी, 96–102. 54 पाठ में दो विजयों का उल्लेख है। एक अध्याय 70 की है, जिसका शीर्षक है "एक गौरवशाली विजय" (फौज़ बहिर), जिसमें रखैल हरम से भागने का फैसला करती है; दूसरी "सबसे बड़ी विजय" है, जो यंग तुर्कों की है।
55 इस अवधि पर, हनियोग्लू, क्रांति की तैयारी देखें। 56 ज़ायदान, इस्तिबदाद अल-ममालिक, 7–8। 57 वही, 70।
58 वही, 71.
59 वही, 74.
60 वही, 76.
61 वही।
62 ज़ायदान, अल-मामलुक अल-शरीद, 110. 63 उक्त, 27.
64 वही, 27. यह ध्यान देने योग्य है कि मुहम्मद अली द्वारा उनके नरसंहार से पहले करीमा की शादी एक अन्य ममलुक से हुई थी। शराबी अमीर, जिसे उसने जानवर (इंसान मुतवाहिश) बताया है, उसका दूसरा पति है।
65 फिलिप, गुरगी ज़ायदान, 12, 68–69. मुस्कान पर, टी. मिशेल, कॉलोनाइजिंग इजिप्ट, 108–11 भी देखें। ज़ायदान अक्सर व्यक्तिगत उपलब्धियों के लिए

प्रयास करने वालों की प्रशंसा करते थे। अपनी माँ के बारे में लिखते हुए, उन्होंने उल्लेख किया कि यद्यपि वह निरक्षर थीं, फिर भी उन्हें आलस्य से घृणा थी, वे कड़ी मेहनत की प्रशंसा करती थीं, और "घर पर कुछ काम निपटाने के लिए समय निकाल लेती थीं" (ज़ायदान, द ऑटोबायोग्राफी ऑफ़ जुरजी ज़ायदान, 27)।
जुरजी ज़ायदान की रचनाओं में हरम 317

66 घरेलू गुलामी की क्रूरता का अधिक यथार्थवादी चित्रण देखने के लिए, टोलेडानो देखें।
ओटोमन मध्य पूर्व में दासता और उन्मूलन, 54-80. 67 बद्रान, "दोहरी मुक्ति," 16.
68 ज़ायदान, शजारत अल-दुर्र, 42.
69 वही, 74. जोर दिया गया.
70 इस पैराग्राफ में मैं एरिक मेयर के उन शब्दों को अपने शब्दों में व्यक्त कर रहा हूँ जो उन्होंने उन तरीकों के बारे में कहे हैं जिनसे जिसके लिए यूरोपीय हरम साहित्य का अध्ययन किया जा सकता है। मेयर की रचना, “‘मैं तुम्हें जानता हूँ’” देखें।
नहीं, मैं तुम्हारी जाति से घृणा करता हूँ,’” 683.
71 ज़ायदान, अल-अब्बासा उख्त अल-रशीद और नकबत अल-बारमिका, 5-7। 72 वही., 214-16.
73 वही, 297.
74 फिलिप, गुर्गी ज़ायदान, 80.
75 Zaydan, Al-‘Abbasa ukht al-Rashid aw nakbat al-baramika, 269. 76 Ibid.,
12. नौवीं शताब्दी में यहूदी दास व्यापारियों और मध्य और पश्चिमी यूरोप से इस्लामी साम्राज्य में दासों के व्यापार में उनकी भूमिका पर, EI2, 1:24– 40 में “ ‘Abd ” देखें।
77 ज़ायदान, अल-अब्बासा उख्त अल-रशीद और नकबत अल-बारमिका, 50। 78 वही।
79 शीही का अनुवाद ("दोहरापन और द्वैत," 96) अल-ममलुक अल-शरीद का है, मुअल्लाफत जुरजी ज़ायदान अल-कामिला (बेरुत: दार अल-जिल, 1981) के खंड 7 में, 232-33। 80 शीही, "दोहरापन और द्वैत," 96।

81 नस्ल के बारे में औपनिवेशिक और मिस्र के विमर्शों के एकीकरण पर, ट्राउट देखें
पॉवेल, उपनिवेशवाद का एक अलग पहलू। 82 बेयर, "उन्नीसवीं सदी के मिस्र में गुलामी।" टोलेडानो, द ओटोमन भी देखें।
दास व्यापार और उसका दमन, 1840-1890, 205-19। 83 बेयर द्वारा उपयोग किए गए दस्तावेज़ 1878-80 के दास मुक्ति से संबंधित हैं। बेयर, "उन्नीसवीं सदी के मिस्र में दासता," 436 (n. 130), 438 (n. 140) देखें। 84 ट्राउट पॉवेल, उपनिवेशवाद का एक अलग रंग देखें। शफीक की 1892 की कृति अल-रिक्क फ़ी अल-इस्लाम (113-20) भी देखें, जिसमें शफीक और अहमद दोनों के लेख शामिल हैं। ज़की ने अल-मुअय्यद में दासता पर लेख प्रकाशित किए थे और शफीक ने इस विषय पर भाषण दिए थे। शफीक की पुस्तक के प्रभावों के बारे में जानने के लिए टोलेडानो की पुस्तक "द ओटोमन स्लेव" देखें।
व्यापार और उसका दमन, 1840-1890, 276-78; बेयर, "उन्नीसवीं सदी में दासता" मिस्र,” 440 (बेयर अल-मनार में प्रकाशित विचारों का भी उल्लेख करते हैं)। 85 बेयर, “उन्नीसवीं सदी के मिस्र में गुलामी,” 430–36.86 मूसा, आधुनिक अरबी कथा साहित्य की उत्पत्ति, 197. 87 अल-हिब्री, इस्लामी इतिहासलेखन की पुनर्व्याख्या, अध्याय अल-रशीद द्वारा अल-बरमिका की पराजय, 123. 89 वही। 90 अल-अब्बासा उख्त अल-रशीद और नकबत अल-बारामिका में निम्नलिखित अध्याय अल-अमीन और उसके महल से संबंधित हैं: 20, "अल-अमीन का महल"; 22, "मुहम्मद अल-अमीन";
23, “भेड़ों का जलप्रपात”; 24, “हरम”; 25, “गायन दल”; 26, “द
गायक और अबू नुवास”; और 27, “व्यंग्य कविताएँ।”
91 फौकॉल्ट, हिस्ट्री ऑफ सेक्सुअलिटी, खंड 1. 92 अमीन देखें, तहरीर अल-मरआ, 61 (इस तथ्य के बारे में एक शिकायत कि जब महिलाएं इकट्ठा होती हैं, तो वे स्पष्ट रूप से यौन विषयों पर बात करती हैं), अल-मरआ अल-जदीदा, 65-66 (एक शिकायत 318 ओरिट बश्किन

इस तथ्य के बारे में कि मिस्र के बच्चों को उनके बचपन में यौन विषयों पर बातचीत सुनने को मिलती थी

□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□, □□□□-□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□

93 □□□□, □□□□□□□□□□□□, 94 □□□□ □□□□□□□□; 93-107 □□ □□□□□□□□

94 □□□□□□□□□, □□-□□□□□□□ 18, □□. 2 (□□□□□□□ 1909): 119-22□

95 □□-□□□□□□□□, □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□ 2. □□□□□□ "□□-□□□□□□□□□□," □□□□ 2, 1:1033-36□

96 □□□□□□□□□, □□□□□□ □□-□□□□□□□□□ □□-□□□□□□□□□, 2:37-119□

97 □□□□□□□□□, □□-□□□□□□□ 18, □□. 2 (□□□□□□□ 1909): 119-22□

98 □□□□□, □□-□□□□ □□ □□-□□□□, 236□

99 □□-□□□□□□, "□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□,"□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□

100 □□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□□□, 78□

101 □□□□□□□□□, □□□□□□ □□-□□□□□□□□□□□□, 1.

12 • हरेम का केंद्र
मध्यम वर्ग उद्योग और नैतिकता

अहमत मिधात एफेंदी की कल्पना

ए. होली शिस्लर

8 अहमद मिधात एफेंडी (1844-1912) एक निबंधकार, उपन्यासकार, अनुवादक और समाचार पत्र संपादक थे। अपने करियर के दौरान उन्होंने दो सौ से अधिक रचनाएँ लिखीं और उनके द्वारा स्थापित समाचार पत्र, टेरकुमान-आई
हकीकत, जो 1878 से 1922 तक प्रकाशित हुई, उन्नीसवीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण धारावाहिक प्रकाशनों में से एक थी।1 वे दर्शन, धर्म, इतिहास और अर्थशास्त्र पर लोकप्रिय ग्रंथ लिखने के लिए जाने जाते थे, और उनकी रचनाएँ अपने समय में इतनी सफल रहीं कि मध्य युग पर पश्चिमी विद्वत्ता की समकालीन प्रमुख कृतियों में से एक मानी जाती है।
ईस्ट ने उन्हें “आधुनिक तुर्की के सबसे महत्वपूर्ण लेखक” कहा।2 हालांकि आधुनिक विद्वानों ने कभी-कभी उनके ग्रंथों को महज अश्लील सामग्री और उनकी कहानियों को कलाकृतियों के बजाय भद्दे शिक्षण उपकरण कहकर खारिज कर दिया है, लेकिन यह निर्विवाद है कि व्यापक दर्शकों तक पहुंचने की अहमद मिधात की रुचि ने उन्हें एक ऐसी लेखन शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया जो आकर्षक होने के साथ-साथ अपनी स्पष्टता के लिए भी उल्लेखनीय थी।3 एक लोकप्रिय लेखक के रूप में उनकी सफलता ने उन्हें प्रभावशाली बनाया, और विशेष रूप से उनकी कहानियों ने उन्हें अपने विचारों को व्यापक स्तर पर व्यक्त करने का अवसर दिया।
सेंसरशिप का ज्यादा ध्यान आकर्षित किए बिना यथासंभव व्यापक जनसमुदाय तक पहुंचना।
320 ए. होली शिस्लर

अहमेट मिधात की रचनाएँ उन मुद्दों से संबंधित हैं जिन्हें माना जाता था अपने समय में इसका तत्काल महत्व था, और क्योंकि यह बात उनके बारे में भी उतनी ही सच है।

उनके निबंधों की तरह ही उनकी काल्पनिक रचनाओं में भी कई अंतर्निहित विषय समान पाए जाते हैं। उनकी रुचि के प्रमुख क्षेत्रों में से एक अर्थशास्त्र था, क्योंकि उन्होंने देखा कि
पूंजीवाद प्रगति का एक मूलभूत पहलू और कारण है। वास्तव में, हिल्मी ज़िया उल्केन ने बताया है कि अर्थशास्त्र ने अहमद मिधात का ध्यान किसी भी अन्य विषय की तुलना में अधिक निरंतर रूप से आकर्षित किया, और इस विषय पर उनके लेखन में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।
ये विषय उनके सबसे गहन चिंतन में से थे। जैसा कि फ्रांकोइस जॉर्जियन ने दिखाया है, 1850 के दशक से ही अर्थशास्त्र ओटोमन बुद्धिजीवियों के बीच अध्ययन और चर्चा के विषय के रूप में महत्वपूर्ण हो गया था। इस विषय पर विचार करने वाले कई लोगों ने उदार अर्थशास्त्र के सिद्धांतों को स्वीकार किया।
और वास्तव में उदारवाद के बारे में भी। उन विचारकों ने इसे मान्यता दी। व्यक्तिगत स्वतंत्रता और व्यक्तिगत उद्यम को नवाचार और समृद्धि के प्रेरक के रूप में देखा जाता था।4 साथ ही, उन्नीसवीं सदी के कई ओटोमन बुद्धिजीवी, जो यूरोपीय प्रगति और पूंजीवादी विकास के प्रचलित स्पष्टीकरण से परिचित थे, यूरोपीय लोगों के बीच प्रचलित इस विचार से सहमत थे कि...
लेखकों का मानना था कि एकल परिवार और सहचर विवाह आधुनिकता और आधुनिक पूंजीवाद के विकास से संबंधित हैं। यह विचार कि पितृसत्तात्मक परिवार और निर्धारित विवाहों से आधुनिकता की ओर बदलाव
एकल परिवार, सहचर विवाह और दंपत्ति के भीतर "आधुनिक" भावनाओं का विकास पूंजीवाद के उदय से जुड़ा हुआ था।
अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही यूरोपीय चिंतन में यह विचार मौजूद रहा है।5 इसलिए ओटोमन विचारकों ने सहचर विवाह को ऐसे पुरुषों के विकास के स्रोत के रूप में देखा जिनमें व्यक्तिवाद के गुण थे और जो सक्षम थे। व्यक्तिगत, आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता का प्रयोग करने के बारे में। अहमद मिधात का अर्थशास्त्र के प्रति दृष्टिकोण, जो चार कृतियों में सन्निहित है,
1879 और 1889 के बीच प्रकट हुआ, जो प्रचलित मुक्त व्यापार नीति से भिन्न था।

उन्होंने कई महत्वपूर्ण तरीकों से आर्थिक दृष्टिकोणों को प्रभावित किया। जहाँ उन्होंने आधुनिक, अनुशासित कार्यबल की प्रशंसा की और एक मजबूत कार्य नीति की वकालत की, वहीं उन्होंने गरीबों के लिए सामाजिक प्रावधानों का भी बचाव किया और इस पारंपरिक धारणा को खारिज कर दिया कि दान से आलस्य को बढ़ावा मिलता है या कम मजदूरी को सब्सिडी मिलती है। प्रशंसा करते हुए, निजी व्यक्ति की उद्यमशीलता की भावना पर जोर देते हुए, उन्होंने सामाजिक एकजुटता की आवश्यकता पर बल दिया, जिसमें सुरक्षात्मक टैरिफ जैसे उपाय भी शामिल थे, यदि अपेक्षाकृत विलंबित औद्योगिक विकास या असमान व्यापार जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं।
ओटोमन साम्राज्य और यूरोपीय शक्तियों के बीच हुए समझौतों और रियायतों ने इन्हें आवश्यक बना दिया था। इसी प्रकार, अहमद मिधात ने भी इन्हें अपनाया। पारिवारिक संरचना और पूंजीवादी विकास के बीच कथित संबंध,
सहचर विवाह पर जोर देने के साथ। उनका मानना था कि पारिवारिक जीवन
हरम और मध्यम वर्ग 321

निरंकुश नहीं होना चाहिए और अजनबी लोगों को आपस में शादी नहीं करनी चाहिए, अगर कोई
एक उत्पादक और स्वस्थ समाज का निर्माण करना चाहते थे। लेकिन साथ ही,
अपने उपन्यासों में और अपने आर्थिक निबंधों में भी, अहमद मिधात ने इस धारणा पर सामाजिक एकजुटता को प्राथमिकता दी कि निजी बुराई सार्वजनिक भलाई उत्पन्न करती है। इसके विपरीत
उस धारणा के आधार पर, उनका मानना था कि निजी सद्गुण से सार्वजनिक भलाई उत्पन्न होती है, और सार्वजनिक भलाई निजी सद्गुण को सुरक्षित रखने में भूमिका निभाती है। उन्होंने दंपति को देखा और
परिवार का निजी जीवन, उचित रूप से गठित, सामाजिक एकजुटता के सिद्धांत का पहला और सबसे परिपूर्ण प्रतीक है। इस प्रकार, उनकी कई कहानियाँ घरेलू व्यवस्थाओं से संबंधित हैं और सहचर्य जैसे प्रश्नों को संबोधित करती हैं। विवाह, महिलाओं का एकांतवास, गुलामी और वेश्यावृत्ति जैसे विषयों पर वे अक्सर वित्तीय व्यवस्थाओं और अन्य पहलुओं पर उल्लेखनीय ध्यान देते हैं।
विभिन्न परिस्थितियों के वित्तीय या आर्थिक आधार।

हरम की संस्था—अर्थात्, महिलाओं को दुनिया से अलग करके पुरुषों की सुरक्षा में रखना, जबकि उन्हें
अहमद मिधात के अनुसार, उचित मार्गदर्शन के साथ, जहाँ चाहें वहाँ घूमने- फिरने की स्वतंत्रता, परिवार की सबसे गहरी संरचना की रक्षा करने का एक तरीका है।
बाजार की ताकतों से। उनके लिए हरम एक पुरुष की अभिव्यक्ति है।
अपने परिवार का भरण-पोषण करने का दायित्व, एक ऐसा दायित्व जो परिवार की आधारशिला है, जिसे पूरकता और प्रेम की इकाई के रूप में समझा जाता है। एक पुरुष
जो व्यक्ति आश्रित महिलाओं वाले घर के भरण-पोषण की जिम्मेदारी संभालता है, वह अधिक खुश और समाज का अधिक उत्पादक सदस्य होता है।
ऐसे परिवार के बिना रहने वाले व्यक्ति की तुलना में, अहमद मिधात का सुव्यवस्थित हरम के जीवन का चित्रण स्वार्थ, प्रतिस्पर्धा और बेलगाम व्यक्तिवाद के सिद्धांतों को खारिज करता है।
प्रगति का। उनकी रचनाएँ स्वार्थ की एक अलग समझ का आग्रह करती हैं, एक ऐसी समझ जो व्यक्तिगत पसंद और स्वतंत्रता को महत्व देती है, लेकिन वास्तविक स्वार्थ को इस रूप में देखती है।
स्वार्थ से अलग। एक सुस्थापित व्यक्ति जो एक
एक सुखी परिवार में रहने वाला व्यक्ति स्वयं और दूसरों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना रखता है। वह मेहनती होने के साथ-साथ परोपकारी भी है। इसे समझाने के लिए, मैं दो व्यक्तियों की तुलना करूँगा।
अहमद मिधात के उपन्यासों, फ़ेलातुन बे इले राकिम एफ़ेंडी (1875 में प्रकाशित) और हेनूज़ 17 यासिंदा (1881 में प्रकाशित) का विश्लेषण करते हुए, मैं यह दिखाने का प्रयास करूँगा कि हरम संस्था के किन पहलुओं को, उचित रूप से समझा जाए, तो अहमद मिधात एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए केंद्रीय मानते थे। इस तुलना को शुरू करने से पहले, हरम से मेरा क्या तात्पर्य है— या यों कहें कि अहमद मिधात का इससे क्या तात्पर्य था—इसका संक्षिप्त स्पष्टीकरण और कथानक का संक्षिप्त सारांश आवश्यक है।
दोनों उपन्यासों में से प्रत्येक का।
हरम शब्द अक्सर विस्तृत और कामुक कल्पनाओं से परिपूर्ण 322 ए. होली शिस्लर की छवि को दर्शाता है।

किसी महान और धनी व्यक्ति या राजवंश के घर में महिलाओं के रहने का स्थान, जैसे कि
ओटोमन साम्राज्य के शाही हरम का मामला। लेकिन ओटोमन साम्राज्य में और मध्य पूर्व के अन्य हिस्सों में, इस शब्द का अर्थ कहीं अधिक व्यापक था। जैसा कि लेस्ली पियर्स ने परिभाषित किया है: "हरम परिभाषा के अनुसार एक अभयारण्य या एक पवित्र स्थान होता है।"
परिसर। इसका तात्पर्य यह है कि यह एक ऐसा स्थान है जहाँ आम लोगों का प्रवेश वर्जित या नियंत्रित होता है और जहाँ कुछ व्यक्तियों या कुछ विशेष तरीकों की उपस्थिति प्रतिबंधित या निषिद्ध होती है।
व्यवहार के कुछ विशेष प्रकार निषिद्ध हैं। निवास स्थान के निजी कक्षों में, और उनके द्वारा
इन क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को 'हरम' भी कहा जाता है, यह इस्लामी प्रथा से आया है जिसमें इन क्वार्टरों में प्रवेश प्रतिबंधित होता है, विशेष रूप से पुरुषों का प्रवेश निवासी महिलाओं के साथ एक निश्चित सीमा से अधिक रक्त संबंध से परे प्रतिबंधित होता है।
इस अध्याय में, मैं मोटे तौर पर पियर्स की परिभाषा का अनुसरण करूँगा। हालाँकि, अहमद
मिधात के उपन्यासों में उन्नीसवीं शताब्दी के साधारण परिवारों की घरेलू व्यवस्थाओं का चित्रण मिलता है, न कि प्रारंभिक आधुनिक काल के ओटोमन शाही हरम का। चूंकि उनके नायकों के पास बड़े-बड़े रहने के स्थान नहीं थे।
अनेक कमरों वाले घर में, मैं हरम शब्द का प्रयोग उन महिलाओं के लिए करूँगा जो इस प्रकार संगठित थीं कि उनके सामाजिक संपर्क सीमित थे।
अन्य महिलाओं और अपने करीबी पारिवारिक दायरे के पुरुषों के साथ, वे कभी भी किसी पुरुष संरक्षक या बहुत अधिक उम्र की दासी महिला की सुरक्षा के बिना बाहर नहीं जाती थीं।
जबकि पुरुष आगंतुकों को फोन करने पर एक या दो विशिष्ट कमरों तक ही सीमित रखा जाता था।
परिवार पर. हेनुज़ 17 यासिंडा और फेलातुन बे इले रकीम एफेंदी, अहमत में मिधात हरम शब्द का प्रयोग अधिक नहीं करते, हालांकि उनकी पुस्तकों के मूल में पारिवारिक मामलों की यह व्यवस्था और समाज पर इसके परिणाम मौजूद हैं।

हालांकि, उनकी 1875 की व्यंग्यात्मक लघु कहानी, "बेकारलिक सुल्तानलिक मी देदिन?" (तो क्या आप कहते हैं कि कुंवारा जीवन राजा का जीवन है?), व्यक्तिगत सुख और घरेलू मितव्ययिता के लिए ऐसी व्यवस्थाओं के निहितार्थों के जीवंत वर्णन में इस शब्द का उल्लेख करती है।

इस्तांबुल के एक इलाके सिहांगीर में, एक छोटे से चार कमरों वाले तंग घर में एक साधारण परिवार रहता है, जिसमें एक माँ, एक बेटी और एक दामाद हैं। सार्वजनिक कमरों में एक पुरुष नौकर है और परिवार की सेवा के लिए हरम में एक काली दासी (फेदयी कल्फा) है।
फिर भी, सास, क्योंकि वह इस बात को लेकर चिंतित रहती है कि उसके दामाद की संपत्ति बर्बाद न हो और सब कुछ सुचारू रूप से चले, और क्योंकि वह एक सच्ची नारी है,
नौकरानी बाज़ार से जो भी सामान मंगवाती है, उसकी कीमत एक-एक करके देखती है और फिर उसी हिसाब से पैसे चुकाती है, और वह हर दिन ऐसा करती है।
वह दासी के काम की सावधानीपूर्वक निगरानी करने के लिए दिन में पांच या दस बार रसोई में जाता है। वहीं, युवा पत्नी प्रतिदिन खुद को संवारती है।
हरम और मध्यम वर्ग 323

जैसे कि वह नई दुल्हन हो। और केवल वही अपने पति की देखभाल करती है।
शाम की थाली तैयार करता है और उसकी देखभाल करता है... और इस तरह यह खुशहाल दामाद
इस कथन में व्यक्त निर्णय की वैधता को नहीं समझा जा सकता।
“कुंवारे का जीवन राजा का जीवन है” और न ही सामने आने से इनकार करने की चतुराई
अविवाहित जीवन से निकलकर जीवन के घर में प्रवेश करें। और यहां तक कि [उनका] बजट भी।
यह इतना सही रास्ते पर है कि पूरे बड़े परिवार के खर्चे
प्रत्येक माह पंद्रह सोने के लीरा से कवर किया जाता है और इसके अतिरिक्त दस सोने के लीरा दिए जाते हैं।
अपनी संपत्ति में [बचत के माध्यम से] वृद्धि करने से उसकी खुशहाली बढ़ती है।7

यदि हम फ़ेलातुन बे इले में राकिम एफ़ेंडी के घर के वर्णन पर विचार करें राकिम एफेंडी, जिसमें सीढ़ियों के नीचे तीन छोटे कमरे और एक रसोईघर था, जिसमें घर का मालिक राकिम, उसकी रखैल और भावी पत्नी रहती थीं।
कैनान और उसकी बूढ़ी काली दासी, दादि कल्फ़ा, जो घर के सभी भारी काम करती है, को देखकर हम समझ सकते हैं कि वर्णित वातावरण लगभग एक जैसा है।8

उपन्यासों का सारांश

Felâtun Bey ile Râkım Efendi अपने दो नायकों, Felâtun Bey, एक धनी परिवार के बिगड़े हुए वंशज, जो धन को बर्बाद कर देता है, की प्रगति की तुलना करता है।
महिलाओं के पीछे भागने और निरर्थक मनोरंजन पर अपनी पैतृक संपत्ति खर्च करने वाले राकिम एफेंडी, जो एक साधारण पृष्ठभूमि से आए थे और जिन्होंने कड़ी मेहनत और लगन से सफलता हासिल की।
मितव्ययिता के बल पर वह दुनिया में आराम से अपना जीवन स्थापित कर लेता है। कहानी का असली नायक, जो पाठक का अधिकांश ध्यान आकर्षित करता है, राकिम एफेंडी है।
वह कम उम्र में ही पिता विहीन हो गया था। उसकी माँ और उसका अश्वेत दास, फेदयी
दादी (जिन्हें दादी कल्फा भी कहा जाता था) ने कड़ी मेहनत और त्याग के बल पर उसका बचपन बिताया, उसकी माँ सिलाई का काम करती थी और दादी
कल्फ़ा कपड़े धोने का काम करती है। रकीम फ्रेंच भाषा का अध्ययन करता है और कम उम्र में ही अनुवादक और लेखक के रूप में मामूली कमाई शुरू कर देता है। उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है, वह दादी कल्फा के साथ अकेला रहता है, जो उसका घर संभालती है और
पैसों का प्रबंधन करता है। रकीम के अथक प्रयासों के कारण उसे निजी ग्राहकों के लिए दस्तावेजों का अनुवाद करने और ओटोमन तुर्की पढ़ाने का अतिरिक्त काम भी मिला।

विदेशियों के बीच। उनकी कार्यशैली और संयमित आदतें उनके जीवन को स्थिर आधार प्रदान करती हैं। इस प्रकार हम रकीम को एक आकर्षक, बुद्धिमान और ऊर्जावान युवक के रूप में देखते हैं।
अब पेशेवर और आर्थिक रूप से अच्छी तरह से स्थापित, और बेदाग प्रतिष्ठा के साथ। इसके विपरीत, फेलतुन बे एक धनी व्यक्ति का इकलौता बेटा है। उसके पिता, मुस्तफा मेराकी एफेंडी, आधुनिक और फैशनेबल हर चीज से मोहित हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि फेलतुन को पश्चिमी शैली के स्कूल में पढ़ाया जाए और उसे नवीनतम यूरोपीय फैशन के कपड़े पहनाए जाएं। स्कूल छोड़ने पर, फेलतुन को 324 ए. की उपाधि मिली। होली शिस्लर

सरकारी दफ्तर में एक ऐसा पद जहाँ वह शायद ही कभी उपस्थित होते थे, हालाँकि वह यूरोपियन शैली के सभी नाइट क्लबों और थिएटरों में नियमित रूप से जाया करता था।
एक दिन रकीम को चौदह साल की एक सर्कसियन लड़की बिकती हुई दिखाई देती है, और वह आवेग में आकर उसे खरीद लेता है। वह उसका नाम कानन रखता है, और अगले एक साल तक उसकी देखभाल करता है।
उसे तुर्की और फ्रेंच बोलना, ओटोमन तुर्की, फारसी और अरबी पढ़ना-लिखना और फारसी कविता पढ़ना सिखाया गया।
शिक्षा के समापन में मैडम नाम की एक ईसाई महिला से पियानो की शिक्षा भी शामिल है।
जोसेफिनो, जो राकिम की दोस्त है और पड़ोसी धनी परिवारों की महिला दासियों (कारियेलर) को प्रशिक्षण देती है। कैनान, जो...
बहुत ही मासूम, जल्दी ही अपने मालिक के प्रति आकर्षित हो जाती है, लेकिन अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में असमर्थ है।
इस वर्ष के दौरान, राकिम और मैडम जोसेफिनो की दोस्ती गहरी हो जाती है और उनका आपस में प्रेम संबंध शुरू हो जाता है। साथ ही, वह एक अंग्रेज श्री ज़िकलास की बेटियों को तुर्की भाषा पढ़ा रहे होते हैं।
इनमें सबसे बड़ी, जान, धीरे-धीरे रकीम के प्रति आकर्षित हो रही है। वहीं, फेलतुन शहर में आवारागर्दी कर रही है, नखरे दिखा रही है और लोगों को मूर्ख बना रही है।

वह विशेषाधिकार और निर्भरता का परिणाम है, जो सबसे पहले अपने परिवार से मिलने वाले पैसे पर निर्भर करता है।
अपने पिता और सरकारी पद पर मिली मानद नौकरी, और बाद में उनकी विरासत से मिली संपत्ति से संपन्न, वह केवल सतही तौर पर शिक्षित है, नवीनतम फैशन का गुलाम है, फिजूलखर्ची करता है, अय्याश महिलाओं के पीछे भागता है, जुआ खेलता है और शेखी बघारता है।
हेनुज़ 17 याशिंदा की शुरुआत असनाफ (संगठित संघों) वर्ग के दो दोस्तों, हुलुसी और अहमद एफेंडी के साथ होती है, जो एक रात बेयोग्लू में थिएटर जाते हैं, जहाँ शो के बाद वे बारिश में फंस जाते हैं। इसके साथ ही,
अत्यधिक शराब पी लेने के कारण वे घर जाने के लिए टैक्सी नहीं ले पा रहे हैं और बेयोग्लू में रात बिताने के लिए कमरा भी नहीं मिल पा रहा है।
वे पास के एक वेश्यालय में रात बिताते हैं। वहाँ दार्शनिक अहमद एफेंडी की मुलाकात कल्योपी से होती है। हालाँकि वह शारीरिक रूप से उसमें दिलचस्पी नहीं रखता,
वह कलयोपी की स्थिति से मोहित हो जाता है और बार-बार उसके पास लौटता रहता है।
वह एक वेश्यालय में जाता है, जहाँ वह उससे बारीकी से पूछताछ करता है ताकि उसकी कहानी और उस प्रतिष्ठान के साथ उसके समझौतों का विवरण जान सके। कल्योपी एक
आया स्टेफानोस (येसिलकोय) में रहने वाले एक उच्च-मध्यम वर्गीय ईसाई परिवार में पली-बढ़ी कल्यापी के पिता ने तंबाकू के कारोबार से धन कमाया था। जब रेगी9 के कारण यह क्षेत्र सिकुड़ने लगा, तो उन्होंने अपने घर की पहली मंजिल पर एक नाइटक्लब (मेहाने) खोल लिया। वहीं कल्यापी की मुलाकात एक युवा मुस्लिम युवक से हुई, जिसने मीठी बातों और उपहारों से चुपके से उसका दिल जीत लिया। कल्यापी को उसकी बड़ी बहन ने इस रिश्ते को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि वह इसे बहनों के लिए दहेज के लिए आवश्यक गहने प्राप्त करने का एक तरीका मानती थी, जो उनके पिता अब नहीं दे सकते थे। जब यह बात उस युवक को पता चली, तो युम्नी ने...

बे ने यह सोचकर कि लड़कियां कभी भी अपने पिता के सामने उसकी शादी का प्रस्ताव नहीं रखेंगी, कल्योपी का अपहरण कर लिया और गवाहों के सामने उससे कानूनी तौर पर शादी कर ली।
वह खुश थी और उसके परिवार ने इस्तीफा दे दिया, लेकिन गांव के ईसाई इसे मुसलमानों का अत्याचार मानकर बहुत क्रोधित हुए। वे लाए
एक न्यायाधीश के समक्ष मामले की सुनवाई के दौरान कल्योपी को धमकाया गया और धमकी दी गई कि अगर उसने सच बताया तो...
न्यायाधीश ने कहा कि अगर वह युम्नी बे के साथ नहीं रहना चाहती, तो वे उसे एक ईसाई से शादी करने के लिए दहेज के रूप में पैसे देंगे, लेकिन यह भी कहा कि अगर वह युम्नी के साथ रहती है तो...
बे, वे उसे देर-सवेर मार ही डालेंगे। डर और भोलेपन के कारण कल्योपी ने युम्नी बे को त्याग दिया। हालाँकि, इसके बाद उसके परिवार को वहाँ से जाने के लिए मजबूर होना पड़ा।
गांव, उनकी प्रतिष्ठा और संपत्ति सब कुछ बर्बाद हो गया।
वे इस्तांबुल के एक गरीब इलाके में चले गए, जहाँ उनके पिता को काम नहीं मिल रहा था और महिलाएं कपड़े धोकर पैसे कमाने की कोशिश करती थीं।
परिवार भूखा मर रहा था। परिवार की एक पुरानी सहेली आई और उसने कल्योपी को अपने साथ बेयोग्लू स्थित अपने घर ले जाने की पेशकश की, जहाँ वह काम कर सकती थी।
एक दर्जी। लेकिन असल में, यह महिला अपना जीवनयापन एक अन्य काम से करती थी।
एक दर्जी के बजाय वेश्यावृत्ति करने वाली लड़की बनने के बाद, कल्योपी भी जल्द ही उसी स्थिति में आ गई।
326 ए. होली शिस्लर

हालांकि, इसके लिए उसे नए कपड़े, इत्र, गहने आदि की आवश्यकता थी।
वह लगातार पैसे कमा रही थी और अपने परिवार को घर पैसे भेजने की भी कोशिश कर रही थी। जल्द ही वह गिर पड़ी।
स्थानीय व्यापारियों के कर्ज में डूब गई। कुछ ही समय बाद, ठुकराए गए एक प्रेमी ने उसकी बड़ी बहन की चाकू मारकर हत्या कर दी। चिकित्सा और अंतिम संस्कार के खर्चों ने कल्योपी को कंगाल कर दिया।

वह अपनी मनचाही शादी का इंतजाम करती है। अंत में, कल्योपी की शादी एक हर्षोल्लासपूर्ण चर्च समारोह में सफेद पोशाक में होती है।

विवाह, स्वतंत्रता और गृहस्थी

परिवार, प्रेम और सामाजिक एकजुटता की भूमिका पर अहमद मिधात के कई विचार इन कहानियों में देखे जा सकते हैं, साथ ही पूरक विचार भी।
एक नेक पुरुष और उसके सुव्यवस्थित हरम में सन्निहित सहायक-सहयोगियों का संबंध सामाजिक एकजुटता और उससे उत्पन्न उत्पादकता और सुव्यवस्था का प्रतीक है। इनमें सबसे पहला विचार यह है कि उत्पादक विवाह...
सहचर विवाह दो व्यक्तियों द्वारा किए गए चुनाव पर आधारित होते हैं, जो एक-दूसरे के प्रति स्नेह रखते हैं (या कम से कम जो एक-दूसरे के लिए उपयुक्त होते हैं)।
एक और बात यह है कि उनके बीच इस तरह का स्नेह विकसित होने की उम्मीद की जा सकती है।
जो विवाह करने का चुनाव करने के लिए स्वतंत्र हैं, और जिनमें ऐसा करने की क्षमता है।
हरम और मध्यम वर्ग 327

इसलिए, इससे यह विचार भी निकलता है कि दोनों पति-पत्नी को होना चाहिए
आयु, शिक्षा, बुद्धि और अन्य पहलुओं के संदर्भ में एक दूसरे के लिए उपयुक्त।
सुंदरता। बिना पसंद के या एक-दूसरे के लिए अनुपयुक्त व्यक्तियों के बीच बने संबंधों में वास्तविक स्नेह की कमी होगी और इसके परिणामस्वरूप... दुर्भाग्य। यहाँ यह बात ज़ोर देकर कहना ज़रूरी है कि यद्यपि सच्चा स्नेह महत्वपूर्ण है, यह अवधारणा रोमांटिक प्रेम की अपील नहीं है, जिसे अहमद मिधात जुनून की एक नासमझ उड़ान मानते हैं। बल्कि, स्नेह इसका परिणाम है। उपयुक्तता का मुद्दा। दोनों उपन्यास जीवनसाथी चुनने की स्वतंत्रता और क्षमता, और चुने गए जीवनसाथी की उपयुक्तता के मुद्दों को सीधे तौर पर संबोधित करते हैं।

साथ यौन संबंध) बना लेती और उसे पुत्र जन्म देती, तो उसे काफी धन-दौलत मिल जाती थी।
प्रतिष्ठा और शक्ति।10 इस प्रकार, राकिम, कनान को एक सुनहरा अवसर प्रदान करता हुआ प्रतीत होता है। कनान राकिम के प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए तैयार दिखती है।
इस मामले में वह इच्छुक तो है, लेकिन उसे छोड़कर जाने के विचार से वह बहुत दुखी है। रकीम उसे प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए मनाता है और कहता है कि निश्चित रूप से उसे उसके नए घर में एक ओडालिक (दादी) बना दिया जाएगा, और इसके अलावा वह उसके साथ सारे कपड़े भी भेज देगा।
और जो उपहार वह उसे पहले ही दे चुका था, और वह उसे वह सारी राशि देगा जो 328 ए. होली शिस्लर

खरीदार ने उसके लिए भुगतान किया। वह एक आलीशान घर में रहने वाली एक अमीर महिला बन जाएगी, जिसके पास...
एक उत्तराधिकारी की माँ बनने की प्रबल संभावना थी। कैनान ने इसे अस्वीकार कर दिया।
आँसू भरी आँखों से पेशकश करते हुए। इस प्रकार, जब कैनान और राकिम के बीच यौन संबंध बनते हैं, तो अहमद मिधात ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह उनका वास्तविक चुनाव है जो इस पर आधारित है।
वास्तविक स्नेह, अन्य विकल्पों पर विचार करने और उन्हें अस्वीकार करने के बाद। इसके अलावा, दोनों प्रेमियों की उपयुक्तता पर बार-बार जोर दिया जाता है।
उपन्यास में कई मौकों पर, मैडम जोसेफिनो बताती हैं कि रकीम और
कैनान और राकिम दोनों युवा, आकर्षक, मेहनती और सम्मानित हैं। मैडम जोसेफिनो, हालांकि एक अच्छी महिला हैं जिनसे राकिम सचमुच मोहित है, लेकिन जीवन साथी के रूप में उनसे बचना ही बेहतर है क्योंकि वह अनुपयुक्त हैं, खासकर उनकी उम्र के लिहाज से (वह चालीस वर्ष की हैं, राकिम पच्चीस वर्ष का है)। जब राकिम
जब जोसेफिनो आश्चर्य व्यक्त करता है कि वह उसे कैनान की बाहों में धकेल रही है, तो वह चिल्लाता है: "क्या तुमने सच में मुझे उन थिएटर की वेश्याओं

में से एक समझा था? मेरे पास भी दिल है! एक दिल!"11 बाद में वह खुद रकीम से कहती है कि अगर वह और अधिक
उससे गहरे रूप से जुड़े होने के कारण, बहुत नुकसान हो सकता था। फिर भी, राकिम और कानन के बीच जो सच्चा और रचनात्मक प्रेम पनपा, वह इससे अछूता नहीं रहा।
यह अचानक उत्पन्न हुए जुनून का फल था, पहली नजर में प्यार का नहीं, बल्कि दो ऐसे व्यक्तियों के बीच धीरे-धीरे पनपी सहानुभूति का, जो एक-दूसरे के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे।
फ़ेलातुन का भावनात्मक जीवन और पारिवारिक पृष्ठभूमि, राकिम के खुशहाल विकल्पों के विपरीत है। फ़ेलातुन में, हम उन विवाहों के प्रभावों को देखते हैं जो
पसंद और उपयुक्तता के सिद्धांतों पर आधारित नहीं—स्रोत
सच्चे स्नेह के बजाय, ये वासना और फैशनेबल दिखने की चाहत जैसी क्षणिक और सतही भावनाओं पर आधारित होते हैं। फ़ेलातुन के दादाजी
वे कम उम्र में शादी करने में विश्वास रखते थे और इसी वजह से फेलतुन के पिता, मुस्तफा मे-राकी एफेंडी ने सोलह साल की उम्र में बारह साल की लड़की से शादी कर ली थी।
इन पारिवारिक व्यवस्थाओं को कुछ हद तक पारंपरिक माना जा सकता है।
वे उस प्रकार के लोग नहीं हैं जिन्हें अहमद मिधात एक आधुनिक, प्रगतिशील समाज की आधारशिला मानते थे, और वह उनके नकारात्मक प्रभावों को दिखाने में जरा भी देर नहीं लगाते।
फ़ेलातुन की माँ, एक ऐसे लड़के से तयशुदा शादी में दुल्हन बनी, जिसने कभी दुनिया में अपना रास्ता खुद बनाना नहीं सीखा, और फिर एक माँ बनी...
बहुत कम उम्र में ही छब्बीस वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। उस मिलन से उत्पन्न फेलतुन,
उसका पालन-पोषण ऐसे माहौल में हुआ जो एक तरफ तो लाड़-प्यार से भरा था और दूसरी तरफ उसके पिता की मनमर्जी के अधीन था।
एक पुरुष होने के नाते, फ़ेलातुन को कभी भी जीविका कमाने के लिए काम करने या आत्म-अनुशासन दिखाने की आवश्यकता नहीं होती है। वह केवल अनुचित इच्छाओं की तलाश करता है जो उसकी इच्छा को संतुष्ट करती हैं।

घमंड या सुख की तात्कालिक प्यास बुझाने के लिए। पहले वह इनमें से किसी एक के साथ छेड़छाड़ करता है।
ज़िकलास परिवार की नौकरानियाँ, एक युवती जिसे वह वास्तव में नहीं जानता। हरम और मध्यम वर्ग 329

और जिसके प्रति उसके मन में कोई वास्तविक भावना नहीं है। अपने पिता की मृत्यु के बाद, फ़ेलातुन,
अब खुद एक धनी व्यक्ति बन चुका वह व्यक्ति फ्रांसीसी अभिनेत्री के साथ संबंध में पड़ जाता है।
मैडमोजेल पोलिनी से उनका रिश्ता है, लेकिन उनके संबंध सतही हैं और पूरी तरह से एक-दूसरे की आत्म-संतुष्टि की इच्छा पर आधारित हैं, न कि विचारों के किसी वास्तविक मेल पर।
उदाहरण के लिए, अहमद मिधात मैडमोजेल पोलिनी और फेलतुन के बीच एक बहस का वर्णन करते हैं, जिसमें वह उन्हें जुए में हुए नुकसान को एक मर्द की तरह स्वीकार न करने के लिए उपहास करती है, और फिर जब वह शिकायत करता है तो उसे जाने का आदेश देती है।
उसे जुए की मेज पर उसके द्वारा निर्देश देना पसंद नहीं है। लेखक बताते हैं कि मैडमोजेल पोलिनी जैसी महिला हमेशा एक ऐसे साथी की तलाश में रहती है जो उसे संतुष्ट कर सके।
किसी पुरुष से झगड़ा करने का बहाना बनाना, अंततः उसे पूरी तरह से मोहित करना और उसकी संगति के विशेषाधिकार के लिए उससे अधिक कीमत वसूलना।
उनके बीच दरार पड़ने पर, फेलतुन केवल यही सोच सकता है कि उसके जैसे श्रेष्ठ गुणों वाले व्यक्ति के साथ ही ऐसा हो सकता है।
एक दर्जन मैडमोजेल पोलिनी खरीदने में सक्षम होना चाहिए।12

खुशी की बहुलता

इन कहानियों में ध्यान देने योग्य सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक यह है कि इस मामले में
फ़ेलातुन और पोलिनी के प्रेम का आधार पूरी तरह से उनके अहंकार, स्वार्थ और आत्म-संतुष्टि की इच्छा पर है, जबकि राकिम और कानन के प्रेम का आधार...

तुम्हारी बहन होने से मुझे वो आनंद नहीं मिलेगा जो तुम्हारी दासी होने से मिलेगा। मैं ये बात कहती हूँ।
मैं अब तक अपनी स्थिति से खुश रहा हूँ। अगर आप मुझे लाभ कमाने और अपने स्वार्थों को साधने के लिए नहीं बेच रहे हैं, तो मुझे आपके पैर चूमने दीजिए।
और आपकी सेवा करूँगी, महोदय। मुझे जैसी हूँ वैसी ही रहने दीजिए। जब आप फिर से 'कनान' कहेंगे (जैसा आप पहले कहते थे), तो सारी दुनिया मेरी होगी, जबकि अगर आप 'मेरी बहन' कहेंगे, तो मैं कुछ भी नहीं कर पाऊँगी।
मुझे वही आनंद फिर से महसूस करने को मिलता था जो पहले मेरे दिल में होता था।13
यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसी संभावनाएं मौजूद हैं जिन्हें पक्षकार प्रेम के कारण आगे नहीं बढ़ाना चाहते। यह स्वार्थ का सही अर्थ है;
सच्चे स्वतंत्र व्यक्ति यह समझते हैं कि मानवीय संबंधों को वस्तु के रूप में नहीं देखा जा सकता, क्योंकि स्वयं का वास्तविक लाभ दूसरों के लाभ में निहित है। इस बात को न समझना
इसके आर्थिक और नैतिक कल्याण पर स्पष्ट परिणाम होते हैं।
व्यक्ति और समाज दोनों।

हरम और सच्ची स्वतंत्रता

Felâtun Bey ile Râkım Efendi और Henüz 17 Yaşında दोनों ही रचनाएँ एक पूर्णतः स्वार्थी और लालची व्यवस्था की स्पष्ट स्वतंत्रता और हरम में बंद रहने के कथित उत्पीड़न के बीच जीवंत तुलना प्रस्तुत करती हैं। Canan the cariye एक हरम की लड़की है—उसका मालिक उसके बिना निगरानी के घर की चारदीवारी से बाहर जाने से असहज है (“यदि तुम मेरे साथ नहीं हो तो
“मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि कानन देश से बाहर कदम रखे,” वह दादि कल्फा से कहता है, “
सामने का दरवाज़ा”) और जब उसे पता चलता है कि वह पड़ोसियों के घर पियानो सीखने जा रही है, तो वह पियानो खरीदना और घर पर ही सीखने की व्यवस्था करना पसंद करता है।14 इसी तरह, जब ज़िकलास परिवार असली अलातुर्का जीवन का अनुभव करने के लिए उसके घर आता है, तो राकिम उन्हें समझाता है कि उसके घर

में पुरुषों और महिलाओं का कड़ा अलगाव रहेगा: “आप किसी भी महिला को नहीं देख पाएंगे; आप
"केवल एक काली [महिला] का हाथ कमरे के दरवाजे से एक थाली अंदर धकेलते हुए दिखाई देगा।"15 फिर भी अहमद मिधात की कल्पना में कैनान स्वतंत्र है: वह किसी भी स्थान पर जा सकती है।
शहर का एक हिस्सा दादी कलफा के साथ है, और उनके पारिवारिक घर में रसोई और बगीचे सहित तीन कमरों में उनकी हर जरूरत पूरी होती है।
यह सुनिश्चित करता है कि दुनिया उसके पास वहाँ आ जाए। आखिरकार, कैनान उसे पा ही लेती है।
पियानो की कक्षाएं।
इसके विपरीत, कल्योपी का जबरन संसार में प्रवेश करना सबसे क्रूर उत्पीड़न है। अहमद मिधात झूठी स्वतंत्रताओं के बीच अंतर को उजागर करने के लिए लगातार कारिये के प्रतीक और गुलामी की छवियों का उपयोग करते हैं। बाजार-प्रेरित अंतरंगता और स्नेह के बंधनों की वास्तविक मुक्ति के बीच का अंतर। यहां तक कि कल्योपी के पहले विवाह की कहानी भी इस बात पर जोर देने के लिए रची गई है कि
हरम और मध्यम वर्ग 331

इसके विपरीत: युम्नी बे अपने लंबे समय के बाद युवा कल्योपी का अपहरण कर उससे शादी कर लेता है।
उससे गुप्त रूप से प्रेम निवेदन करने के बावजूद उसके पिता ने उन्हें अनुमति नहीं दी।
विवाह करने के लिए। फिर भी अपहरण से जन्मा यह विवाह एक सुखद विवाह के रूप में चित्रित किया गया है। युम्नी बे विवाह को एक संयमित और जिम्मेदार जीवन शैली के लिए प्रेरणा के रूप में देखती हैं।
जीवन, और वह कल्योपी का अच्छा पालन-पोषण करने वाला है, जिससे कल्योपी को स्नेह हो गया है।16 इसके बाद उससे जबरन अलग होना और बाहरी दुनिया में प्रवेश करना।
यह एक अत्याचारपूर्ण कृत्य है और उसके बाद की सभी विपत्तियों की जड़ है।
जैसा कि हम

देखेंगे, अहमद मिधात हमेशा कल्योपी के कर्ज और उसे किसी भी ग्राहक को खुद को सौंपने के लिए मजबूर किए जाने को गुलामी के रूप में प्रस्तुत करता है। पैसों के लिए खरीद-फरोख्त। वह वेश्यावृत्ति को एक यूरोपीय आविष्कार मानता है, और वह एक वेश्या की स्थिति की तुलना बहुत ही प्रतिकूल तरीके से करता है।
एक कर्की स्वर में: “अरे, यूरोपियनो! यहाँ आप कुछ इधर-उधर उछाल रहे हैं।” सभ्यता के प्रचार और स्वतंत्रता के प्रेम के बारे में शब्द और तुर्की में गुलामी को रोकने का प्रयास। हालाँकि, हमारे बीच कभी कोई गुलाम नहीं होगा। "ऐसी वेश्यालयों में बेचा जाता है ताकि सबसे नीच बदमाशों की सेवा की जा सके।"17 और वह आगे कहते हैं कि जबकि ओटोमन ईसाई लड़कियों के ऐसा करने की अधिक संभावना है
दहेज के बोझ के कारण मुस्लिम लड़कियों की तुलना में वेश्यावृत्ति में धकेल दी जाने वाली महिलाओं की संख्या अधिक होती है।
यह व्यवस्था गरीब परिवारों पर बोझ डालती है, यह व्यवस्था भी एक यूरोपीय नवाचार है: "आजकल, जिसे ईसाई लोग 'उपकरण' कहते हैं..."
जो लोग अपने सिर पर स्थानीय आवरण पहनते हैं, उनकी शैली हम मुसलमानों के बीच प्रचलित शैली के समान है। लेकिन कई स्थानीय ईसाइयों ने यूरोपीय रीति- रिवाजों को तुरंत अपना लिया।
वे अपने सिर पर [यूरोपीय शैली की] टोपियाँ पहनते हैं, और वे उन्हें मानने लगे हैं।
दहेज विवाह का एक मूलभूत हिस्सा है। क्या हम भूल गए हैं कि कल तक अर्मेनियाई महिलाएं घूंघट पहनती थीं? और क्या हम यह नहीं देखते कि अनातोलिया और अरब में ईसाई महिलाएं आज भी मुस्लिम महिलाओं की तरह ही सदाचारी और घूंघट (मेस्तुर) पहनती हैं?”18
जब कल्योपी वेश्यालय से मुक्त हो जाती है, तो वह पूरी तरह से एकांतवास में रहना चाहती है।
और किसी भी अजनबी आदमी, यहाँ तक कि डॉक्टर द्वारा भी न देखी जाए। फिर से खुद को एक व्यक्ति, पहले अहमद एफेंडी और
बाद में दूसरे पति से विवाह, और दुनिया से उनका अलगाव तथा अजनबी पुरुषों की संगति से धीरे-धीरे दूर हो जाना, उनकी अपनी पसंद और परम इच्छा थी।

स्वार्थ और मानवीय मूल्य की एक घटिया और मौद्रिक अवधारणा को प्रस्तुत किया गया है।
प्रदर्शित किया गया और कठोरता से आंका गया। सबसे पहले, उपयोगितावादी दृष्टिकोणों का
वेश्यालय के ग्राहकों की तुलना लड़कियों के दोहरे चरित्र से की गई है, और यह स्पष्ट रूप से सामने आता है कि ये दोनों एक दूसरे के परिणाम हैं। कल्योपी अपने बारे में कहती है।
और घर में काम करने वाले बाकी लोग: “हम क्या हैं? हम जानवरों जैसे प्राणी हैं, जो दुनिया में किसी से कभी प्यार नहीं कर सकते। जब कोई ग्राहक हमें खरीदता है, तो वह
वह हमसे स्नेह और सुख की अपेक्षा रखता है, लेकिन चाहे कितना भी स्नेह हो, उसके प्रति हमारी जो भी इच्छा और प्रसन्नता हम दिखाते हैं, वह सब झूठ है। क्या यही सच्चाई नहीं है? हम उसके पास अपनी इच्छा से नहीं जाते; हम तो अपनी फीस कमाने के लिए जाते हैं।20
इस गतिशील प्रक्रिया का दूसरा पहलू तब सामने आता है जब कल्योपी, अहमत एफेंडी को वेश्यालय के कामकाज के बारे में समझाते हुए, क्यूनेद की कहानी सुनाती है।
कुनेद, वेश्यालय की एक युवती लासिमाकी का नियमित ग्राहक है। लासिमाकी कुनेद को पसंद करती है और इस बात पर अफ़सोस करती है कि वह बार-बार वेश्यालय आने पर कितना पैसा बर्बाद कर रहा है। वह अक्सर उससे अपना कर्ज़ चुकाने का आग्रह करती है।
कि वे वेश्यालय में लगने वाले खर्च के एक अंश में एक साथ रह सकते हैं, और उसे उसे किसी और के साथ साझा नहीं करना पड़ेगा। क्यूनेद का जवाब है
हमेशा एक जैसा: "अगर मैं खुद को बंद करके घर पर ही रहने वाला होता तो..."
जो स्त्री सिर्फ मेरी हो, मैं उससे शादी कर लूँगा। मुझे पत्नी की ज़रूरत नहीं, मुझे तो बस उत्तेजना चाहिए। वो अपने बालों को उस तरह लहराती है जैसे मुझे पसंद है और मुझे आनंद आता है।
मैं खुद को पूरी तरह से आज़ाद महसूस करता हूँ। मैं जो चाहूँ वो करता हूँ। जब मैं उससे ऊब जाता हूँ, तो मुझे किसी और में दिलचस्पी हो जाती है। तो, बात यही है।”21

पुरुषों और लड़कियों के बीच के भाड़े के संबंधों को युवा महिलाओं और ग्राहकों के बीच के संबंधों के संदर्भ में और अधिक स्पष्ट किया गया है। हरम और मध्यम वर्ग 333

वेश्यालय और उसकी मालकिन, डुडू के पास। जब अहमद एफेंडी और हुलुसी
कल्योपी अपनी सहेली और सहकर्मी से कहती है, "पहली मुलाकात के बाद वे जगह छोड़ दें।"
वेश्या अगावनी से कहती है कि यह शर्म की बात है कि दुदु ने पुरुषों से इतना अधिक शुल्क लिया है। अगावनी जवाब देती है: "शर्म-बकवास! वे मेरे लिए क्या हैं? बेवकूफ।"
“गधों को इतना भुगतान नहीं करना चाहिए था।” जब कल्योपी ने विरोध करते हुए कहा कि वे अच्छे लोग थे, गधे नहीं, तो अगावनी ने तीखे लहजे में जवाब दिया: “वे लोग जो मूर्ख नहीं हैं।”
"यहाँ बेवकूफ लोग नहीं आते।" वह आगे कहती हैं, "मैं उनके जैसे कई समझदार लोगों से मिल चुकी हूँ।"
वे बड़ी-बड़ी बातें तो करते हैं, लेकिन अंत में जब भुगतान का समय आता है, तो वे भी जानते हैं कि अगर दुनिया में कोई एक सच्ची चीज है, तो वह पैसा ही है।" फिर अगावनी
वह कल्योपी को यह सलाह देता है:

खैर, चूंकि आपको अहमद एफेंडी पसंद हैं, तो कोशिश कीजिए कि वह भी आपको पसंद करने लगे...
[फिर] जब वो आदमी आए, तो सबसे बढ़िया राकी और मेज़ेलर मंगवाओ, और ढेर सारा सामान।
इसका। ये सब बीन्स का सलाद और नमकीन मैकेरल नहीं! समझे? बढ़िया खाना! शानदार खाना! डुडू को भी बुलाओ। यहाँ तक कि उससे भी कुछ मांगो।
अगर आप डूडू को मना सकें तो उसके लिए एक तोहफा। समझे? इसमें मत पड़ना। अपने लिए जल्दी करो; एक बार जब वह डुडू को कुछ दे देगा, तो वह निश्चित रूप से
मैं तुम्हें भी कुछ दूंगी। इस तरह, डुडू तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव नहीं करेगी।

दूसरी लड़कियों की तरह। मेरी बात ध्यान से सुनो: अगर तुम बनना चाहती हो कोई मेरी बात मानो। नहीं तो, तुम वेश्यालयों में सिर्फ़ रात के किराए पर ही गुज़ारा करोगे, और कुछ कमा नहीं पाओगे; सब कुछ तुम्हारे लिए ही होगा।
कुछ नहीं.22

कल्योपी ने अहमद एफेंडी को स्थिति को बेरहमी से स्पष्ट रूप से समझाया। उसे और अन्य महिलाओं को या तो उनके माता-पिता ने उस घर में बेच दिया था या फिर... उन्होंने कर्ज चुकाने के लिए या भूख से मरते हुए खुद को बेच दिया: “खैर, मैं यहाँ आया और बस गया और उस कर्ज की वजह से यहीं रह गया। मैं बन गया
डुडु की मुख्य राजधानी।"23
यह बात स्पष्ट है कि ये व्यवस्थाएं आत्मा को नष्ट करने वाली हैं, लेकिन अहमद मिधात ने इसके व्यापक सामाजिक और आर्थिक प्रभावों को भी सामने रखा है।
कल्योपी की एक टिप्पणी से प्रेरित होकर, अहमद एफेंडी मन ही मन ऐसे प्रतिष्ठानों में बर्बाद हुए धन के मूल्य का अनुमान लगाता है:

इस तरह की जगह पर एक आदमी के ठहरने का प्रति रात का शुल्क डेढ़ लीरा है। अगर कुछ और नहीं तो गाइड के लिए सुझावों में आधा मेसिडिये (एक तरह का छोटा सा सुझाव) जरूर होगा।
तीन या चार बोतल राकी के पैसे और इस तरह दो और बन जाते हैं।
मेसिडिये। सुबह-सुबह, एक मेसिडिये वेटरों को टिप देता है। एक और मेसिडिये- स्नानघर में एक साबुन की टिकिया के लिए 260 से 270 कुरुश लगते हैं।
लेकिन उस आदमी की पूंजी क्या होगी जो सुबह से शाम तक पीठ पर टोकरी लादकर फल और सब्जियां बेचता है? अगर उसके पास पचास ओक्का अंगूर हों। 334 ए. होली शिस्लर

उसने उन्हें अपनी पीठ पर लादकर बेचा और प्रत्येक पर अपना मुनाफा भी शामिल कर लिया, प्रति पीस चालीस पैरा की दर से।
यह पचास कुरुश के बराबर है। यानी, पचास कुरुश एक गरीब की राजधानी हो सकती है।

इसका मतलब है कि 270 कुरुश एक गरीब आदमी की नहीं बल्कि पाँचों की पूंजी है... जो आदमी इतनी दौलत लेकर अनातोलिया से यहाँ आया हो...
वह अपना व्यवसाय शुरू कर सकेगा और साथ ही अपना भरण-पोषण और गृह देश में करों का भुगतान भी कर सकेगा। इसके अलावा, तीन से पांच वर्षों में वह पांच या दस करोड़ रुपये की बचत कर लेगा।
हज़ार कुरुश खाकर वापस चले जाओ। उफ़!! एक ही रात में हमने जो पैसा लुटा दिया, वह वाकई बहुत बड़ी रकम थी [जब आप इस तरह से सोचें तो]। हमने इतना पैसा बर्बाद कर दिया कि एक नहीं बल्कि कई गरीब आदमियों का गुजारा हो सकता था। लेकिन वैसे भी हममें से ज्यादातर लोग यहाँ अपनी कमाई से नहीं आते। हम यहाँ वो पैसा लेकर आते हैं जो हमारे माता-पिता ने या तो कमाया है या किसी और से प्राप्त किया है।
एक सरकारी पद जिस पर उन्हें नियुक्त किया गया था क्योंकि उनके पास कनेक्शन.24

डुडू जैसे घरों में अक्सर आने-जाने वाले पुरुष पैतृक संपत्ति वाले पुरुष होते हैं।
और सरकारी पद—अर्थात् फेलतुन बे जैसे लोग। किसी भी कारण से, महिलाओं और बच्चों के साथ सुखमय जीवन व्यतीत करने में असफल रहने के बाद
जिन लोगों की रक्षा और रखरखाव की जिम्मेदारी वे लेते हैं, उनकी संपत्ति और देश की संपत्ति वे बर्बाद कर देते हैं। मानवीय संबंधों, विशेषकर पुरुषों और महिलाओं के बीच के संबंधों का वस्तुकरण स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। व्यक्ति और व्यापक समाज पर विनाशकारी आर्थिक और नैतिक प्रभाव। फ़ेलातुन बे और द्वारा किए गए अलग-अलग अभियान इसका एक उत्तम उदाहरण हैं।
रकीम एफेंडी इस्तांबुल के मशहूर पिकनिक स्थल कागीथाने जा रहे हैं। रकीम, कानन, फेदयी दादि और अपनी दोस्त और पूर्व प्रेमिका मैडम जोसेफिनो के साथ एक यात्रा का आयोजन करते हैं। यह यात्रा सप्ताह के किसी ऐसे दिन होती है जब वह जगह सुनसान होती है। समूह रात में निकलता है और चांद-तारों की रोशनी में नाव से गोल्डन हॉर्न की ओर यात्रा करता है। वे अपना सामान खुद लाते हैं। वे अपने साथ भोजन लेकर चलते हैं; भोर होने से पहले, वे एक चरवाहे से खरीदा हुआ ताजा दूध पीने के लिए रुकते हैं। अंत में वे नदी किनारे एक रमणीय स्थान पर पहुँचते हैं।

जहां वे दिन का बाकी समय लगभग किसी और से मिले बिना बिताते हैं। वे खाते हैं,
चाय पीना, तैरना, ताश खेलना और नदी किनारे टहलना। शाम को आखिरी भोजन के बाद, वे नाव से वापस घर लौट आते हैं।
कुछ दिनों बाद—एक शुक्रवार को, जब नदी के किनारे लोगों से भरे होते हैं— मैडमोजेल पोलिनी दो घोड़ों द्वारा खींची गई एक खुली गाड़ी में दिखाई देती हैं।
वह गहनों से लदी हुई है, और फेलैटुन घोड़ों पर सवार होकर उसके पीछे-पीछे चल रहा है।
एक शानदार घोड़े पर सवार होकर, वे दोनों वहाँ कुछ घंटे बिताते हैं और साथ में बैठे पाँच-छह सज्जनों के साथ संगीतकारों के दो समूहों का संगीत सुनते हैं।
वहाँ विक्रेता आइसक्रीम, मिठाइयों और अन्य स्वादिष्ट व्यंजनों से भरी ट्रे की अंतहीन कतार लेकर खड़े रहते हैं। ग्राहक संगीत के लिए पैसे लुटाते हैं।
हरम और मध्यम वर्ग 335

बाद वाले कलाकार अनुरोधों पर, तुर्की और यूरोपीय दोनों तरह के संगीत बजाते हैं। अंत में फेलतुन और पोलिनी आगे बढ़ते हैं, जबकि भीड़ अपनी आँखों से उनका अनुसरण करती है।
टिप्पणी यह है कि वह सज्जन दोनों हाथों से पैसा लुटा रहे हैं, लेकिन निश्चित रूप से शाही अंदाज में आनंद ले रहे हैं। बाद में हमें पता चलता है कि पैसा...
यह जुए से आता है।25
रकीम के समय और फ़ेलातुन के समय के बीच का अंतर—वह समय जब संबंध निजी, अंतरंग, दीर्घकालिक, सरल सुखों पर आधारित और पुरुष के दायरे में पूरी तरह से समाहित थे।
साधन; दूसरा एक सार्वजनिक तमाशा जिसमें वास्तविक मानवीय संपर्क का अभाव हो, अल्पकालिक हो, बेतहाशा महंगा हो, और व्यक्ति की सामर्थ्य से परे हो— शायद ही संभव हो सके।
और भी चरमपंथी बनो।

दोनों उपन्यासों में इनके बीच के संबंध को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है।
एक ओर अच्छी आर्थिक स्थिति और अर्थव्यवस्था, और दूसरी ओर सुखी, नैतिक परिवार।
दूसरी ओर, राकिम एक मेहनती, आत्मनिर्भर व्यक्ति है, जो अपनी माँ द्वारा कुछ समय के लिए बसाए गए प्रेमपूर्ण हरम और एक समर्पित दास की संतान है।
जिसने उसे बचपन से पाला-पोसा है और बेटे की तरह प्यार करता है। जीवन में अच्छी तरह से स्थापित हो जाने के बाद, वह कारिये को खरीद लेता है, जो समय के साथ विकसित होता है।
एक ऐसी युवती में परिवर्तित हो गया जो उसकी पत्नी बनने के योग्य थी।
हालाँकि वह स्वतंत्र रूप से घूम-फिर सकता था।
वह चाहती है कि वह हर समय उसकी सुरक्षा में रहे और कभी भी उस सुरक्षा के बिना न रहे। वह लगातार कड़ी मेहनत करता रहता है ताकि वह ऐसा कर सके।
वह सुरक्षा प्रदान करता है, और उसके हरम की महिलाएं—कनान और फ़ेदयी दादि, दोनों नाममात्र की दासियां—उसके धन और घर का सर्वोपरि प्रबंधन करती हैं। दक्षता और मितव्ययिता। कैनन अपनी मर्जी से आ-जा सकती है, लेकिन
उसे किसी चीज की कमी नहीं है और वह शायद ही कभी बाहर जाती है। अहमद मिधात ने उसकी परिस्थितियों का वर्णन इस प्रकार किया है:

जैसा कि हमने पहले कहा था, इस्तांबुल में जो भी फैशन प्रचलित होता था, कैनान उसका हिस्सा होता था।
इसे पहनने वालों में से वह पहली थीं। इसके अलावा, उनके पास अपने वॉर्डरोब में पैटर्न वाले कपड़े भी थे।
उच्चतम गुणवत्ता के कपड़े। कुछ हीरे के ब्रोच, कुछ झुमके।
और उसकी अलमारी में अंगूठियों की कोई कमी नहीं थी। एक हफ्ता भी नहीं बीता होगा कि राकिम
कैनान को अपने निजी इस्तेमाल के लिए अस्सी या सौ कुरुश चमकीले रंग में नहीं दिए।
सोने या चांदी का सिक्का। लेकिन कैनान उस पैसे का क्या करने वाली थी? मुझे कभी बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ी और मुझे किसी चीज की कमी नहीं हुई, तो फिर पैसे खर्च करने की क्या जरूरत थी?

उसने यह सब दादी कल्फ़ा को दे दिया, और कल्फ़ा ने इसे अलग रख दिया और जब यह थोड़ा-थोड़ा जमा हो गया तो उसने रकीम एफ़ेंडी से इसका इस्तेमाल करके एक नई चीज़ खरीदने को कहा।
अंगूठी, घड़ी, हार या कारीगरी का कोई अन्य छोटा सा सुंदर टुकड़ा
कैनान। क्या इससे अधिक कुछ कहना आवश्यक है?26

दूसरी ओर, फेलतुन जुआ, थिएटर आदि पर खुलकर पैसा खर्च करता है।
नाइटक्लबों में जाना और एक प्रेमिका के साथ महंगे होटलों में रहना। उसने यहाँ तक कि 336 ए. होली शिस्लर से भी मुलाकात की।

रकीम से अत्यधिक काम करने और जीवन का आनंद न लेने के लिए कहता है: "काम करो, काम करो,"
काम! ये सब काम क्या है? कब खत्म होगा यार?
"तुमने जो पैसा कमा लिया है, वह काफी है। उस कमाई को थोड़ा-थोड़ा खर्च करने के बारे में सोचो।" रकीम की घरेलू स्थिति की सच्चाई जाने बिना, वह कहता है राकिम का कहना है कि उसे एक विदेशी रखैल की ज़रूरत है क्योंकि ओटोमन महिलाएं रूढ़िवादी, रूढ़िवादी और नीरस होती हैं, जबकि एक विदेशी महिला के मामले में: "क्या
हम जैसे स्वतंत्र मनुष्य किसी दास से क्या सुख प्राप्त कर सकते हैं? कौन जाने कहाँ
क्या उसका दिल [सचमुच] तुम्हारे लिए है? क्योंकि वह तुम्हारी गुलाम है, इसलिए वह तुम्हारे सामने झुकने के लिए विवश है। विडंबना यह है कि मैडमोजेल पोलिनी प्यार नहीं करती।
फ़ेलातुन को पूरी तरह से त्याग देता है और जैसे ही उसका पैसा खत्म हो जाता है, उसे छोड़ देता है, जबकि कानन एक आदर्श प्रेममयी पत्नी बन जाती है। फ़ेलातुन की बातें सुनकर, रकीम लगभग हार मान लेता है।
वह पेट पकड़कर हंसता है और मन ही मन सोचता है: "अरे बेवकूफ, क्या गुलाम के पास नहीं होता?"
दिल? यह किसी लड़की की आज़ादी को पाँच या दस कुरुश में खरीदने का मामला नहीं है। उसका दिल जीतो और देखो वह कितनी अच्छी साथी साबित होती है!27

जिस प्रकार रकीम और फ़ेलातुन की कहानियाँ हमें दिखाती हैं कि पारिवारिक जीवन के विभिन्न मॉडल समाज और अर्थव्यवस्था पर क्या अच्छा और क्या बुरा प्रभाव डाल सकते हैं, उसी प्रकार
हेनुज़ 17 याशिंदा हमें आर्थिक व्यवस्था के टूटने से उत्पन्न नैतिक और पारिवारिक बुराइयों को दर्शाती है। काल्योपी के पतन की ओर ले जाने वाली घटनाओं की श्रृंखला में पहला कारक ओटोमन अर्थव्यवस्था में विदेशी शक्तियों का हस्तक्षेप है, जो रेगी के रूप में सामने आता है, और उसके पिता योरगाकी के तंबाकू व्यवसाय का पतन है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, योरगाकी की आर्थिक स्थिति और भी बिगड़ती जाती है, और इसके साथ ही उसकी अपने परिवार की महिलाओं की रक्षा करने की क्षमता भी कम होती जाती है।
परिवार और नैतिक मूल्यों में आई भारी उथल-पुथल। तंबाकू व्यापारी से वह मेयहाने (एक प्रकार का तंबाकू विक्रेता) का काम करने लगता है और अंत में भिखारी बन जाता है। कुछ समय तक उसकी पत्नी और बेटियाँ कपड़े धोने और सिलाई करके उसका और परिवार का सहारा बनती हैं, और अंततः कल्योपी वेश्यावृत्ति में उतर जाता है। पिता की रक्षा करने की क्षमता में पूर्ण विफलता उसे बुरी तरह प्रभावित करती है।
भौतिक और आध्यात्मिक रूप से उसका परिवार इस तथ्य में निहित है कि वह जानता है
कल्योपी किस तरह उसका और परिवार के बाकी सदस्यों का समर्थन कर रही है, यह तो सब जानते हैं, लेकिन वह उसे रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठाता, बल्कि सच्चाई से मुंह मोड़ लेता है। दरअसल, परिवार की महिलाएं...
उसका परिवार उसके लिए एक प्रकार की अघोषित पूंजी बन गया है, जैसे कल्योपी, डुडु के लिए है। कठिन आर्थिक परिस्थितियों ने उसे तोड़ दिया है।
परिवार के ताने-बाने को तोड़कर उसे क्रूर और विनाशकारी शक्तियों के सामने उजागर कर दिया।
अहमद मिधात इसे राज्य और समाज की व्यापक विफलता के रूप में देखते हैं, और साथ ही इसे बाजार के सभी सदस्यों के नैतिक पतन की जड़ भी मानते हैं। परिवार.28
इसीलिए, कल्योपी को वेश्यावृत्ति की गुलामी से मुक्त कराने के लिए,
न केवल उसे उसकी गुलामी के स्थान से हटाकर स्वतंत्रता और एकांत के सदाचारी जीवन में पुनर्स्थापित किया जाना चाहिए, बल्कि उसके पिता को भी

हरम और मध्यम वर्ग 337

उन्हें रक्षक के रूप में उनकी भूमिका में बहाल किया जाए। हालाँकि प्रारंभ में कल्योपी को वापस लौटा दिया जाता है।
उसके परिवार के घर, उसके बचावकर्ताओं, अहमद एफेंडी और हुलुसी, को उसकी परवाह नहीं है।
योरगाकी को भरोसेमंद माना जाता है। हुलुसी योरगाकी को चेतावनी देता है कि कल्योपी अब हुलुसी के अधीन है।
अहमद एफेंडी की सुरक्षा में (हिमाये) भले ही वो अपने पिता के घर में रह रही हो, इसलिए योर्गाकी को लड़की को फिर से नुकसान पहुंचाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। हू-लुसी योर्गाकी को फटकारते हुए कहता है, “अगर कुछ और नहीं तो क्या तुम पुल पर पानी बेचकर काम नहीं कर सकते थे? सत्रह साल की, परी जैसी मासूम लड़की को सबसे भयानक यातनास्थल में भेजने पर तुम्हें शर्म क्यों नहीं आती? ... इसके बाद, अगर तुमने लड़की को फिर से बर्बाद किया, तो इसका खामियाजा तुम्हें भुगतना पड़ेगा।”
अंततः बर्बाद हो जाएगी। लेकिन कल्योपी फिर कभी बर्बाद नहीं होगी क्योंकि उसे अहमद एफेंडी का संरक्षण प्राप्त रहेगा।”29
इसके तुरंत बाद, अहमद एफेंडी ने फैसला किया कि इसे स्थानांतरित करना आवश्यक है।
पूरा परिवार एक नए मोहल्ले में नए घर में चला जाता है। वहाँ, कई महीनों तक, वह परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने और साथ ही साथ अपनी संपत्ति को भी संवारने के लिए काम करता है।
उनके नैतिक मूल्यों को—जिन्हें वह अटूट रूप से एक दूसरे से जुड़ा हुआ मानता है। वह परिवार के लिए एक घर किराए पर लेता है और उसे धीरे-धीरे सजाता है; वह और हुलुसी अक्सर
वे कल्योपी के साथ भोजन करने के लिए उनसे मिलने जाते हैं, और अक्सर जब वे ऐसा करते हैं, तो वे
उसे भाईचारे के भाव से गहनों का उपहार दें ताकि वह अन्य अच्छी, विवाहयोग्य युवतियों की तरह सज-धज सके। लेकिन साथ ही, अहमद

एफेंडी कुछ अजनबी आदमियों को कलयोपी के घर भेजता है और उनसे कहता है कि अगर वह उनका "मनोरंजन" करने के लिए राजी हो जाए तो वे उसे बड़ी रकम देंगे। वह यह सुनिश्चित करना चाहता है कि...
केवल इतना ही कि उसे उसके पतन के भौतिक कारणों से दूर कर दिया गया है, लेकिन
कि उसके मन से इसका निशान मिट गया है—अर्थात, वह यह सुनिश्चित करना चाहता है कि उचित सुरक्षा मिलने के बाद वह उस सुरक्षा पर भरोसा करेगी।
और पुरुषों के साथ विशुद्ध रूप से मौद्रिक संबंध बनाने की ओर वापस न लौटना। अहमद एफेंडी द्वारा उनके एकांतवास और पवित्रता के चुनाव को इस प्रकार समझा गया है।
इस लक्ष्य की प्राप्ति के संकेत। स्वयं पर पूरी तरह से भरोसा करने में असमर्थता।
किसी पुरुष द्वारा उसकी रक्षा करना, उसे बचाने के उसके प्रयासों की विफलता को दर्शाता है। ऐसी अक्षमता ही वह कारण है जिसके चलते वेश्यालय की दूसरी लड़की अगावनी को बचाया नहीं जा सकता।
बचा लिया गया। जब कल्योपी को बचाया गया, तब अगावनी और डुडू को पता चला कि अहमद एफेंडी ने कल्योपी को बड़ी रकम नहीं दी है और न ही उसे खरीदा है। अपना खुद का घर होने के बावजूद, उन्हें पूरा यकीन है कि वह अंततः वेश्यालयों में ही लौट आएगी।
कुछ महीनों बाद, अगावनी स्पष्ट कर देती है कि वह ऐसा प्रस्ताव स्वीकार नहीं करेगी। वह हुलुसी से कहती है: “देखो! अगर वह लड़की को घर खरीद दे तो क्या होगा?”
या तो उसे ढेर सारा पैसा दे दे या उसे अंगूठियां, हार या इसी तरह के उपहार खरीद दे जिन्हें बाद में नकदी में बदला जा सके, संक्षेप में, अगर वह ऐसा करता है
अगर कल्योपी समृद्ध होता, तो चीजें वैसी नहीं होतीं जैसा मैंने कहा है। मैं यहाँ से चला जाता।
किसी की रखैल बनना ठीक नहीं है, लेकिन मैं उस तरह से (यानी पैसे लेकर) चली जाऊंगी।
338 ए. होली शिस्लर

फिर, अगर मेरा दोस्त मेरे प्रति उदासीन हो जाए और मुझे छोड़ दे, तो मैं सक्षम हो पाऊंगा
मैंने अपने हाथों में मौजूद संसाधनों से अपना रास्ता खुद बनाया।”30 इसके विपरीत,
कल्योपी अपने नए घर में उससे संपर्क करने वाले पुरुषों को भगाते हुए कहती है: “मुझे किसी चीज की कमी नहीं है। अगर मुझे दस लीरा की भी जरूरत महसूस हो, तो जो भी आदमी मेरी मदद करेगा, मैं उसे दे दूंगी।”
मेरी हर इच्छा की पूर्ति ही उन्हें प्रदान करेगी।”31 कल्योपी के पुनर्वास के साथ-साथ, अहमद एफेंडी के प्रयासों से योरगाकी का भी पुनर्वास हो रहा है। वह योरगाकी से कहता है कि सभी जीवित
परिवार के खर्चों का भुगतान हो जाता है—खाने-पीने का सामान, घर का किराया — और फिर वह योरगाकी को व्यवसाय शुरू करने के लिए कुछ पैसे देता है। योरगाकी को व्यवसाय में जो भी लाभ होगा, अहमद एफेंडी वादा करता है कि व्यवसाय के अच्छी तरह स्थापित होने तक वह उतनी ही राशि का योगदान देगा। और परिवार का भरण-पोषण करने के लिए पर्याप्त लाभदायक हो। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि
अहमेट एफेंडी परिवार के भरण-पोषण पर खर्च हो रही धनराशि को सीधे योरगाकी को नहीं दे देता। अपनी स्थिति बहाल करने के लिए
प्रदाता और संरक्षक के रूप में उचित सामाजिक और आर्थिक भूमिका निभाने के लिए, योर्गाकी को स्वयं वह स्थान अर्जित करना होगा, भले ही उसे मदद और समर्थन की आवश्यकता हो।
जैसा कि इन प्रसंगों से स्पष्ट होता है, नैतिकता, जिसमें पवित्रता एक पहलू है,
यह हृदय का एक गुण है, साथ ही इसके आर्थिक पूर्व-शर्तें और परिणाम भी होते हैं। आवश्यक आर्थिक संदर्भ की विफलता विनाशकारी हो सकती है।
योर्गाकी के मामले की तरह, एक प्रेमपूर्ण, नैतिक परिवार का ताना-बाना; लेकिन भौतिक परिस्थितियाँ अनुकूल होने पर भी, यदि आवश्यक भावनात्मक परिस्थितियाँ अनुकूल न हों तो उनका कोई लाभ नहीं होगा। अहमद मिधात के लिए, असली प्रेरक शक्ति
सद्गुण और उद्यम का बंधन प्रेम का बंधन है जिसे स्वेच्छा से ग्रहण किया जाता है, और उस प्रेम का सबसे मूलभूत स्वरूप साथी युगल है।

पूरक भूमिकाएँ—स्त्री पुरुष के समर्थन और संरक्षण पर भरोसा करती है, पुरुष खुशी-खुशी और गंभीरता से उस जिम्मेदारी को निभाता है। कल्योपी का सद्गुण और सम्मान उसके हृदय में है; यहाँ तक कि उसका पतन भी।
अपने परिवार के प्रति प्रेम और उनकी मदद करने की इच्छा के आधार पर, वह प्यार करने, भरोसा करने और सुरक्षा स्वीकार करने में सक्षम है, और इसलिए, जैसे ही उसे सही स्थिति में रखा जाता है, वह तुरंत तैयार हो जाती है।
इन परिस्थितियों में वह खूब फलती-फूलती है। जब उसका रक्षक, अहमद एफेंडी, अपने एक दोस्त के नौकर से उसकी शादी के बारे में बात करता है, तो वह उसे उसकी पूरी कहानी बताता है।
उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि उसे वर्तमान से अधिक भविष्य में रुचि है। अतीत की घटनाओं को कुरेदने का कोई कारण नहीं है, और उस विपत्ति के इतिहास को फिर से कुरेदने का भी कोई कारण नहीं है जिससे वह लड़की बच निकली है।32 ऐसा लगता है कि उनका भविष्य सुखमय होगा, क्योंकि
वेश्यालय से निकाले जाने और अपने घर में बसने की अनुमति मिलने के महीनों बाद, कल्योपी ने न केवल सद्गुण का आदर्श साबित किया है, बल्कि
साथ ही, यह मितव्ययी गृहव्यवस्था का एक आदर्श उदाहरण भी है। लेखक ने प्रशंसा के साथ टिप्पणी की है कि
हालाँकि कल्योपी अपने माता-पिता और भाई-बहनों के साथ रहती है, जिसका अर्थ यह है कि
हरम और मध्यम वर्ग 339

परिवार में आठ लोग हैं, और हालांकि हुलुसी, अहमद एफेंडी,
और अक्सर उनके कई दोस्त घर पर परिवार के साथ भोजन करने के लिए आते हैं।
या सप्ताह में पांच बार, कल्योपी के घरेलू खर्चे "एक महीने में आठ या नौ लीरा से ज्यादा नहीं होते थे और कभी भी दस लीरा तक नहीं पहुंचते थे।"33 इसके अलावा,
यह सुनिश्चित करने के लिए कि सही परिस्थितियाँ बनी रहें, अहमद एफेंडी कल्योपी के भावी पति को धन का उपहार देता है जिससे वह योर्गाकी के अब फलते- फूलते व्यवसाय में भागीदार बन सके। इस प्रकार, जब विवाह संपन्न हुआ, तो "भाग्य का निर्णय अपने उचित स्थान पर आ गया" और व्यवस्था बहाल हो गई।34

अहमेट मिधात का मध्यमवर्गीय हरम वह स्थान है जहाँ लोग सीखते हैं कि प्रेम के लिए स्वार्थी हितों और इच्छाओं का त्याग करने से क्या लाभ होता है।
यह दुख नहीं बल्कि सुख है। दूसरे शब्दों में, यह एक ऐसी जगह है जहाँ सदस्य समाज को यह सीखना चाहिए कि सच्चा स्वार्थ क्या होता है, और इससे परिश्रम, संतोष और न केवल अपने मित्रों के प्रति बल्कि अपने परिवार के प्रति भी जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न होती है।
न केवल परिवार के लिए, बल्कि दूसरों के लिए भी। 'हेनुज़ 17 याशिंदा' का नायक, अहमद एफेंडी, एक अमीर आदमी नहीं है। उसे अपनी आजीविका जुटाने में काफी मेहनत करनी पड़ती है।
कल्योपी के कर्ज चुकाने, उसके और उसके परिवार के लिए घर किराए पर लेने, उसे ठीक से सजाने, उसके पिता को व्यवसाय में फिर से खड़ा करने और उस युवक के लिए बचत करने के लिए पैसे की ज़रूरत है जिसे उन्होंने उसके लिए शादी के लिए चुना है।
उसे उचित आर्थिक परिस्थितियों में रखना। पूरी कहानी में यह स्पष्ट है कि अहमद एफेंडी को कल्योपी में कोई यौन रुचि नहीं है। उसके इरादे परोपकारी हैं।
और उनके द्वारा इन बातों को व्यक्त करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य का समाज के प्रति क्या दायित्व है और
स्वार्थ की सही परिभाषा क्या है? जैसा कि वह कल्योपी से कहता है: “क्या इस तरह की रकम आम तौर पर सुख-सुविधाओं की खोज में खर्च नहीं की जाती? लेकिन कौन
क्या कोई कहता है कि आनंद या सुख नामक वस्तु में केवल नशा और कामुकता ही शामिल है? हमने पहले ही तय कर लिया था कि यह एक सुखद अनुभव होगा।
एक बिल्ली के चंगुल से एक पक्षी को बचाना एक आनंददायक उपलब्धि है। तुम्हारे जैसी लड़की को वेश्यावृत्ति के चंगुल से, यानी सबसे भयानक चंगुल से, छुड़ाकर उसे घर भेजना—क्या यह कोई छोटी खुशी है, कोई छोटा सुख है?”35 सरल शब्दों में कहें तो, अहमद मिधात का मानना था कि एक विधिवत निर्मित, स्वतंत्र रूप से अनुबंधित सहचर विवाह, जिसमें पति-पत्नी की भूमिकाएँ समान रूप से निर्धारित हों,
पूरक रूप से परिभाषित लिंगों ने उद्यमशील और परोपकारी नागरिकों को जन्म दिया और एक समृद्ध अर्थव्यवस्था और एक नैतिक समाज का निर्माण किया।

आर्थिक इकाई के रूप में, सहयोगी दंपत्ति कुशल थे: पुरुष सामूहिक जीविका कमाता था, और महिला घर और उनके वित्त का प्रबंधन करती थी।
सामाजिक दृष्टि से, पुरुष रक्षक की भूमिका निभाता था, जबकि महिला एक भूमिका निभाती थी।
एक स्थिर प्रभाव के रूप में, उनकी ऊर्जा को एक उत्पादक दिशा में निर्देशित करते हुए।
340 ए. होली शिस्लर

अहमद मिधात एफेंडी के अनुसार, उनका संगठन इस पर आधारित है।
सही मायने में समझा जाए तो सच्चा प्यार—अर्थात आकर्षण, स्वतंत्र चुनाव और उपयुक्तता के आधार पर—पुरुष अपने दायित्वों से बंधा हुआ महसूस नहीं करता, और स्त्री अपनी सीमित कार्यक्षेत्र से बंधी हुई महसूस नहीं करती; उसे परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है, उसे मितव्ययिता की, और दोनों को संतोष मिलता है। यह अहमद मिधात का मध्यमवर्गीय हरम है: यह पारंपरिक समृद्ध,
मुस्तफा मेराकी एफेंडी का मनमौजी और प्रेमहीन हरम; उससे भी कम यह
हरम का खुलना और महिलाओं का दुनिया में प्रवेश, या सहज और नासमझी भरी भावनाओं का आलिंगन। अहमद मिधात का मानना था
इस आदर्श पारिवारिक संरचना से विचलन के कारण ऐसे नागरिक उत्पन्न हुए जो अभिमानी, अदूरदर्शी, आलसी और स्वार्थी थे। वे वास्तविक प्रकृति से अनभिज्ञ थे।
प्रेम के मामले में, उन्होंने सभी संबंधों को वस्तु बना दिया, और स्वीकार करने की उनकी अनिच्छा
किसी भी जिम्मेदारी ने उन्हें यह समझने में असमर्थ बना दिया कि उनका अपना स्वार्थ वास्तव में कहाँ निहित है या खुशी की प्रकृति क्या है। उन्होंने अपना समय बर्बाद कर दिया।
वे अपना जीवन और अपनी आजीविका निरर्थक, तात्कालिक सुखों पर केंद्रित कर लेते हैं, जिससे उन्हें स्वयं का, अर्थव्यवस्था का और समग्र रूप से समाज के ताने-बाने का नुकसान होता है।
सुव्यवस्थित हरम समाज को ऐसी विपत्तियों से बचाने का एक मजबूत कवच है।

नोट्स

जब तक अन्यथा इंगित न किया गया हो, सभी अनुवाद मेरे द्वारा किए गए हैं। 1 उनके जीवन के विवरण के लिए, गोवसा, "अहमेट मिधात एफेंडी" और सियावुस्गिल, "अहमेट मिधात एफेंडी" देखें।
2 ओस्ट्रुप, “अहमद मिधात,” 199.
उनकी रचनाओं के अपेक्षाकृत उपेक्षापूर्ण आकलन तानपिनार, XIX. असिर में पाए जा सकते हैं।
तुर्क एदेबियाती तारीही, 464; फिन, द अर्ली टर्किश नॉवेल, 13–21। एक विपरीत दृष्टिकोण के लिए, बर्केस, द डेवलपमेंट ऑफ सेक्युलरिज्म इन टर्की, 282 देखें। 4 अहमद मिधात के अर्थशास्त्र संबंधी लेखन की चर्चा के लिए, उलकेन, तुर्कियेदे देखें।
समकालीन विचार का इतिहास, 166-74; जॉर्जियोन, "एल'इकोनॉमी पोलिटिक सेलोन अहमद।"
मिधात।" इसमें ओटोमन आर्थिक चिंतन पर भी अच्छी चर्चा की गई है। उन्नीसवीं शताब्दी में अधिक सामान्यतः।
5. इस विचार के विकास और प्रभाव पर चर्चा, जिस पर अब ऐतिहासिक जनसांख्यिकीविदों द्वारा व्यापक रूप से सवाल उठाए जा रहे हैं, थॉर्नटन की पुस्तक "द डेवलपमेंटल" में पाई जा सकती है।
पैराडाइम, इतिहास को अलग-अलग दृष्टिकोण से पढ़ना और पारिवारिक परिवर्तन।" मैं केन का आभारी हूं।
कुनो, इस लेख की ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिए धन्यवाद। मैक्फर्लेन की पुस्तक 'द सेव' का अध्याय 14...
'वॉर ऑफ पीस' नामक पुस्तक में सहचर विवाह और आर्थिक जीवन के बीच संबंध पर एक अत्यंत रोचक चर्चा भी शामिल है।
6 पियर्स, द इंपीरियल हरेम, 4–5.
7 अहमद मिधात एफेंडी, “क्या आपने कहा कि कुंवारापन सल्तनत है?” 280–81. 8 अहमद मिधात एफेंडी, फेलतुन बे इले राकिम एफेंडी, 153. 9 रेगी हरम और मध्य वर्ग के वितरण और बिक्री पर विदेशी-संचालित एकाधिकार था 341

ओटोमन साम्राज्य में तंबाकू और तंबाकू उत्पादों की स्थापना जनता द्वारा की गई थी।
1881 में ओटोमन सरकार द्वारा दिवालियापन घोषित करने और अपने ऋणों को समेकित करने के बाद ऋण आयोग का गठन किया गया था।
10 इस विषय पर, उदाहरण के लिए, डेविस, द ओटोमन लेडी, 99-114 देखें।
11 अहमत मिधात एफेंदी, फेलातुन बे इले रकीम एफेंदी, 181।
12 वही, 222–23.
13 वही, 190.
14 वही, 150.
15 वही, 105–7.
16 अहमत मिधात एफेंदी, अभी भी केवल 17 वर्ष का, 139-41। 17 वही, 104–5.
18 वही, 123.
19 वही, 199.
20 वही, 44.
21 वही, 69.
22 वही, 79.
23 वही, 172. यहाँ शब्द सरमाये एक तरह का दोहरा अर्थ रखता है: यह वेश्यालय में वेश्या के लिए एक आम बोलचाल का शब्द है, और यह आर्थिक अर्थ में पूंजी के लिए भी शब्द है।
24 वही, 64–65. लीरा, मेसिडिये, कुरुश और पारा सभी ओटोमन मुद्रा की इकाइयाँ हैं। चालीस पारा एक कुरुश के बराबर, बीस कुरुश एक मेसिडिये के बराबर और पाँच मेसिडिये एक स्वर्ण लीरा के बराबर होते हैं। अहमद एफेंडी की गणना के अनुसार वेश्यालय में एक रात का वास्तविक खर्च 240 कुरुश आता है, लेकिन वह इसे 260-70 तक पूर्णांकित करता है। एक ओक्का ओटोमन मुद्रा की एक इकाई है जो 2.8 पाउंड के बराबर होती है।
25 अहमत मिधात एफेंदी, फेलातुन बे इले रकीम एफेंदी, 212-21। 26 वही., 174-75.
27 वही, 194–98.
28 अहमद मिधात राज्य को राष्ट्रपिता बताते हैं और कहते हैं कि उसे ऐसा करना चाहिए।

अपने लोगों की रक्षा करना, लेकिन यह तभी प्रभावी ढंग से कर सकता है जब जनमत का एक बहुमत—सामान्य इच्छा—राज्य की कार्रवाई का समर्थन करता है (हेनुज़ 17 यासिंडा, 124–25)। 29 वही, 192।
30 वही, 182.
31 वही, 210.
32 वही, 212–13.
33 वही, 210.
34 वही, 213.
35 वही, 174–75.

13 • हरेम और घर के बीच नाव का उपयोग करें
“पतन”, लैंगिक स्थान और स्त्रीत्व
1920 के दशक में मिस्र में राष्ट्रीय विषय

मैरिलिन बूथ

8 जब 1920 के दशक की शुरुआत में मिस्र को ब्रिटिश शासन से आंशिक स्वतंत्रता मिली, तो राज्य के संवैधानिक स्वरूप और भविष्य को लेकर अभिजात वर्ग के बीच संघर्ष तेज हो गया। इसका एक रूप यह बहस थी कि कौन
किन स्थानों पर अधिकार रखने का अधिकार था? लैंगिक व्यक्तिपरकता और लैंगिक स्थानों (क्या वे बदल रहे थे? क्या उन्हें बदलना चाहिए?) के प्रश्न स्थानीय प्रेस में तब से बहस का विषय बने हुए हैं।
1880 के दशक के उत्तरार्ध में। 1920 के दशक तक, राष्ट्रीय राजनीति में कुलीन महिलाओं की प्रत्यक्ष सक्रियता ने इस प्रश्न को तात्कालिक बना दिया कि आधुनिक नारीत्व किन भौतिक स्थानों और सामाजिक अभिव्यक्तियों को परिभाषित करता है।
मिस्र में कब्जा कर सकते हैं। इस बीच, कुछ पुरुष राजनेताओं को उम्मीद थी कि स्थान के लैंगिक गठन फिर से अपनी जगह ले लेंगे।
अभ्यस्त, संकट-पूर्व के स्वरूपों का पालन करते हुए और महिलाओं के सार्वजनिक रूप से प्रकट होने के नैतिक परिणामों के बारे में खुलकर चिंता व्यक्त करते हुए।
ऐसा लगता है कि यह कोई संयोग नहीं है कि उसी दशक में यह सब देखने को मिला। एक नई साहित्यिक शैली का उदय, सामाजिक-यौन, लैंगिक "पतन" की प्रथम-पुरुष, संस्मरण-शैली की कथा।
ये लेख एक तात्कालिक राजनीतिक मुद्दे को संबोधित करते हैं—कि क्या वेश्यावृत्ति को विनियमित रखा जाना चाहिए और इस प्रकार राजनीतिक रूप से वैध ठहराया जाना चाहिए। लेकिन ये लेख वेश्यावृत्ति पर होने वाली बहसों को एक अधिक व्यापक प्रश्न से जोड़ते हैं: व्यवस्थाओं को किस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहिए?
हरम और हाउस बोट के बीच 343

क्या ये ग्रंथ लैंगिक सामाजिक स्थान परिवर्तन के बारे में एक ऐसे समाज में बहस को आगे बढ़ाते हैं जो राष्ट्रवादी आधुनिकता की ओर अग्रसर है? मेरा तर्क है कि ये ग्रंथ प्रतिनिधित्व के माध्यम से इस तरह की बहस को आगे बढ़ाते हैं।
स्थान, विशेष रूप से, घर का स्थान बनाम सड़क का स्थान। हरम से लड़कियों और महिलाओं की आवाजाही और उसमें उनकी उपस्थिति का वर्णन करते हुए।
कथित तौर पर संरक्षित और एकांत घरेलू स्थान के रूप में प्रदर्शित की गई यह जगह, संरक्षित होने के बजाय हर तरह से संरक्षित दिखाई देती है।
शहरी स्थान का मानचित्रण करते हुए, ये लेख युवा महिला पात्रों को उजागर करते हैं जो
उन स्थानिक सीमाओं को पार करना, जो कथाओं के अनुसार, अब तक उनके जीवन की अनुभवात्मक सीमाओं को चिह्नित करती थीं। ऐसी सीमाएँ अंकित थीं, और
यह सम्मान की सीमाओं के बारे में पारंपरिक धारणाओं का प्रतिनिधित्व करता था, ऐसी धारणाएँ जिन्हें इस्लामी आचार संहिता में समाहित करके अनुशासनात्मक बल दिया गया था।
ये संस्मरण, स्थानिक सीमाओं का उल्लंघन करते हुए एक विमर्श को चिह्नित करते हैं।
उस पतित स्त्री (अल-सकीता) पर, जिसकी अंतरिक्ष यात्राएँ नैतिक सीमाओं का उल्लंघन करती हैं। लेकिन पाठ के केंद्र में वे जिस आकृति का निर्माण करते हैं, वह है...
सबसे बढ़कर, पतनशील स्त्री, एक संभावित वेश्या के रूप में: वह युवती जो अपने पिता का घर छोड़कर अनिवार्य रूप से एक खालीपन—या शून्य—में गिर जाती है।
आसन्न यौन खतरे का। दूसरों द्वारा खींची गई सीमाओं का अभाव, और सार्वजनिक, शहरी परिवेश में फेंकी गई बेटी, पुरुष संरक्षकों द्वारा संरक्षित महिला, यानी 'मासुना' की स्थिति से बाहर निकल चुकी है, हालाँकि इन ग्रंथों में उन पुरुष संरक्षकों की सुरक्षा को एक दिखावा दिखाया गया है। संरक्षित होना "सम्मानजनक" होना है; इस प्रकार 'मासुना', एक वर्णनात्मक शब्द, सम्मान का प्रतीक बन जाता है। वे घर—हमेशा बहुवचन में—जो बेटी को आश्रय देते हैं।

हरम की सुरक्षा से भाग निकली महिलाएं वेश्याओं के घर में जाती हैं, जो परंपरागत रूप से पिता के घर के बिल्कुल विपरीत होते हैं।
घर की आदर्शवादी धारणाओं और घरेलू स्थान को सुरक्षात्मक के बजाय खतरनाक के रूप में उजागर करना, इन और अन्य संस्मरणों में लगातार पाए जाने वाले विषय हैं।
इस दशक के लेख।
इन वर्णित पतनशील आकृतियों का विश्लेषणात्मक विश्लेषण करने के लिए अनेक पृष्ठभूमियाँ उपलब्ध हैं। मैं इन ग्रंथों को संक्षेप में संदर्भ में प्रस्तुत करता हूँ।
अभिजात वर्ग द्वारा लिखित महिला अनुभवों के संस्मरणों और जीवनियों के विपरीत, मैंने इन्हें वैधीकृत अधिकारों के विरुद्ध एक विशिष्ट और समकालीन अभियान के संदर्भ में पढ़ा।
वेश्यावृत्ति.1

1920 के दशक की एक शैली

मुदक्किरत वसीफा मिसरिया (मिस्र की एक महिला के साथी के संस्मरण);
इसके बाद संस्मरण (Memoirs) 1927 में तीस से चालीस पृष्ठों की कई सस्ती मुद्रित पुस्तिकाओं में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुए और इसके तुरंत बाद 344 मैरिलिन बूथ प्रकाशित हुए।

असरार वसीफा मिस्रिया द्वारा (एक मिस्री महिला की सहेली के रहस्य; जिसे आगे रहस्य कहा जाएगा)।2 दोनों कृतियों पर एक महिला के हस्ताक्षर हैं: जैसा कि वर्णित है
संस्मरणों के आवरण पर लिखा है कि इन्हें “साहसी युवती ज़ैनब मुहम्मद” ने लिखा है। इसलिए ये लेखक और पाठक के बीच “आत्मकथात्मक समझौते” को पूरा करने का दावा करते हैं: पाठक को विश्वास होता है कि पाठ में प्रथम पुरुष कथावाचक और पाठ के लेखक एक ही हैं, और लेखक को अपना कर्तव्य निभाना होता है।
वह विश्वास।3 यह समझौता एक वास्तविकता प्रभाव को बनाए रखता है: पाठक यह मान लेता है कि

लेखक-कथावाचक अपने जीवन के बारे में सच बता रहा है। हालाँकि हाल के कई शोधों और उत्तरी अमेरिका में इसकी विषयवस्तु को लेकर हुए घोटालों के बावजूद,
और कुछ लोकप्रिय संस्मरणों के सत्य दावों से आत्मकथा की निर्मित प्रकृति का पता चलता है, फिर भी यह वास्तविकता का प्रभाव आत्मकथा का एक प्रमुख आकर्षण बना रहता है।
आत्मकथात्मक लेखन।
देखने में तो ऐसा लगता है कि 'मेमोयर्स एंड सीक्रेट्स' की लेखिका और कथावाचक एक ही हैं। कथावाचक "ज़ैनब" ही लेखिका "ज़ैनब मुहम्मद" हैं। लेकिन इस श्रेय को एक और स्पष्टीकरण से और भी जटिल बना दिया गया है: प्रत्येक किस्त के आवरण पर यह घोषणा की गई है कि इस कृति को दो प्रसिद्ध लेखकों मुहम्मद द्वारा उपन्यास के रूप में ढाला गया, सुधारा गया और परिष्कृत किया गया [या संशोधित किया गया]।
बेक अहमद अल-बुहैदी और महमूद एफेंडी कामिल फरीद।" यह स्वीकृति एक अधिक अस्पष्ट समझौते का संकेत देती प्रतीत होती है: कि संस्मरण और दोनों
लेखक की रचनाएँ काल्पनिक हो सकती हैं, लेकिन यदि ऐसा है, तो वे ऐसी काल्पनिक रचनाएँ हैं जो संस्मरण के अनुभवजन्य अधिकार का सहारा लेती हैं और सत्य का दावा करती हैं। अर्थात्, केवल रूप ही भिन्न है।
“उपन्यास की तरह।” क्या इन संस्मरणों को आत्मकथात्मक दस्तावेज माना जाता या क्या इन्हें इनके प्रारंभिक पाठकों द्वारा काल्पनिक कहानियों के रूप में पढ़ा जाता, यह एक दिलचस्प प्रश्न बना हुआ है।4 इसके अलावा,
ज़ैनब मुहम्मद की वास्तविक रचनाकार कौन थी—क्या ज़ैनब मुहम्मद एक काल्पनिक पात्र है—यह मुद्दा इस तथ्य से और भी उलझ जाता है कि एक संग्रह में कथित तौर पर कुछ ऐसी रचनाएँ शामिल हैं जो
राष्ट्रवादी नेता साद ज़गलुल के “ऐतिहासिक भाषण”, जिनका संपादन ज़ैनब ने किया है।
मुहम्मद का नाम इन संस्मरणों के एक खंड के अंत में विज्ञापित किया गया है। 5 क्या यह ग्रंथसूची संबंधी जानकारी केवल विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए रची गई एक चाल मात्र है?
क्या यह किसी महिला द्वारा लिखित काल्पनिक कथा है?6

मेरी अगली रचना, मुधक्किरात 'अमिल फ़ी बिक़ा' अल-'अहिरात (वेश्याओं के ठिकाने में काम करने वाले एक मज़दूर के संस्मरण), 'ए. अतिया द्वारा लिखित, लगभग उसी समय प्रकाशित हुई।7 यह
यह कृति किसी वेश्या या तथाकथित पतित/पतनशील स्त्री की आवाज होने का दावा नहीं करती, न ही आत्मकथात्मक कथावाचक के रूप में। बल्कि, वेश्या ही वह पात्र है जो...
एक सहानुभूतिपूर्ण विषय, जिसका अवलोकन, साक्षात्कार और वर्णन एक व्यक्ति द्वारा किया गया हो।
पुरुष—और माना जाता है कि पतित नहीं—कथावाचक। कई वेश्याएं और संरक्षक-नास कृति में पात्रों के रूप में दिखाई देती हैं; उनके प्रथम-पुरुष वर्णन को पुरुष कथावाचक की संवादात्मक और खोजी भूमिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, एक
हरम और हाउस बोट के बीच 345

पाठ में एक पात्र के रूप में और व्यापक रूप से मिस्र समुदाय के एक वक्ता के रूप में,
पाठ के लिए निर्मित श्रोतागण। युवक मिस्र की तथाकथित पतित महिलाओं की ओर से बोलने का अपना अधिकार स्थापित करता है। क्योंकि वे महिलाओं के आने-जाने के इर्द-गिर्द संगठित हैं।
विभिन्न सामाजिक परिवेशों के पात्रों के माध्यम से, ये ग्रंथ प्रश्न उठाते हैं, हालांकि वे
मैं यहाँ हरम नामक संस्था का नाम नहीं ले रहा हूँ। मैं हरम को उस बंद स्थान के रूप में परिभाषित कर रहा हूँ जिसमें धनी परिवारों की महिलाएं और बच्चे रहते थे।
इस विभाजन के लिए पर्याप्त जगह और परिवार के सदस्यों को एकांत में रखने के लिए पर्याप्त। दूसरे शब्दों में, हरम वह स्थान था जिसे समझा जाता था। करीबी रिश्तेदारों के अलावा अन्य पुरुषों के लिए वर्जित क्षेत्र।8 मैं हरम शब्द का प्रयोग मध्य और उच्च वर्गों के लिए सामान्य एक अलग सामाजिक स्थान को दर्शाने के लिए करता हूँ।
1920 के दशक तक भी, शहरी मिस्र में (दूसरे शब्दों में, उन परिवारों में जहाँ घर के बाहर महिलाओं का श्रम सामूहिक अस्तित्व के लिए आवश्यक नहीं

था)। जैसा कि इस खंड के अन्य लेखकों ने उल्लेख किया है, हरम समय के साथ बदलता रहता है।
और अंतरिक्ष में। मिस्र में 1920 के दशक के संक्रमणकालीन युग में, यदि अरबी
हरीम शब्द घर की महिलाओं को दर्शाता था, साथ ही यह उस स्थान को भी इंगित करता था जो गैर-सेविका, मध्यम और उच्च वर्ग की महिलाओं को आदर्श रूप से— यदि हमेशा नहीं तो—प्राप्त होता था।
वास्तविकता—जीवंत। लेकिन यह आदर्श कड़ी चुनौती के अधीन था: व्यवहार में और इसे चुनौती देने वाले प्रवचनों के माध्यम से इसका टूटना एक विषय था। कई चिंतित लेखकों ने इसे मुद्रित रूप में प्रस्तुत किया है।
मैंने जिन ग्रंथों पर चर्चा की है, उनके स्वरूप और विषयवस्तु में समान अन्य ग्रंथ भी मौजूद हैं।
इस अध्याय में।9 उदाहरण के तौर पर, इसी दशक का एक और ग्रंथ, यौमिय्यत मुहम्मद अहमद यूसुफ द्वारा लिखित साकिता (एक पतित स्त्री की डायरी) के मुखपृष्ठ पर ही पतितता की स्थिति और उससे जुड़े निहितार्थों का संकेत मिलता है।
महिलाओं के सामाजिक परिवेश में निवास के लिए, क्योंकि इसका उपशीर्षक है "उपन्यास [या कथा] रूप में सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा।" संस्मरणों के विपरीत, यौमियत
सकीता अपनी काल्पनिक प्रकृति को लेखक और कथावाचक के बीच नाम से किए गए अलगाव (और लैंगिक अंतर) के माध्यम से दर्शाती है—मुहम्मद यूसुफ निश्चित रूप से पतित महिला नहीं हैं।10 लेकिन, एक पूर्वव्यापी वृत्तांत होने के बजाय, यूसुफ का पाठ डायरी प्रविष्टियों से बना है जो एक अनाम महिला डायरी लेखक की दैनिक लय को दर्शाती हैं। वह अपनी डायरी के रूप में फ्लैशबैक के माध्यम से अपने अतीत को अंकित करती है।
प्रगति हो रही है, जिससे महिलाओं के निजी स्थान में "तत्काल" व्यवधान की अनुमति मिल रही है।
हिंसक रूप से दखल देने वाले पुरुषों के रूप में। लेकिन लेखक महिला आवाज के दिखावे को और भी कमजोर कर देता है क्योंकि वह अपने पाठ को वेश्यावृत्ति पर पुरुषों द्वारा लिखित रचनाओं की एक श्रृंखला में स्पष्ट रूप से रखता है,

कथित डायरी की प्रस्तावना में उन पूर्व रचनाओं के अंशों को शामिल करके।11 हालांकि यहां इस पर आगे चर्चा नहीं की गई है, यह
यह लेख इस दशक और आने वाले दशक के प्रकाशन परिदृश्य को अच्छी तरह से दर्शाता है।
एक, जिसमें वेश्यावृत्ति पर एक सामान्यीकृत विवाद का गठन किया गया था और 346 मर्लिन बूथ

वेश्याओं के जीवन की कथित कहानियों से आंशिक रूप से पोषित, जो सस्ते में छपती थीं।
छोटी पुस्तक के रूप में। और यह साहित्यिक संरचनाओं के एक समान अंतर्संबंध के समानांतर है।
अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के इंग्लैंड में संस्मरण और विवादात्मक सामग्री का।12
1920 के दशक में प्रथम-पुरुष (छद्म) अधीनस्थ संस्मरणों का अचानक उदय अपने आप में एक आकर्षक प्रश्न है जो इतिहास से जुड़ा हुआ है।
अरबी उपन्यास का निर्माण और विषयवस्तु की उभरती धारणाएँ
और नागरिकता, जैसा कि मैंने अन्यत्र चर्चा की है।13 इन ग्रंथों की संभावना की शर्तें न केवल राष्ट्र के प्रश्नों के भीतर लिंग के बदलते स्थान से संबंधित थीं, बल्कि प्रिंट उत्पादन की बदलती संस्कृति से भी संबंधित थीं। 1920 के दशक के दौरान शहरी मिस्र में, एक शोरगुल भरा, विविध प्रिंट और दृश्य
नई तकनीकों और सार्वजनिक राजनीतिक परिदृश्य के मेल से संस्कृति का उदय हुआ।
यह एक ऐसा क्षेत्र था जिसमें मिस्र की युवा राष्ट्रवादी सरकार के हर कदम का आलोचनात्मक रूप से विश्लेषण किया गया था।
प्रकाशन जगत ने पाठकों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए प्रतिक्रिया दी और नए पाठक वर्ग का निर्माण किया। लड़कियों और लड़कों दोनों के लिए शैक्षिक अवसर बढ़ रहे थे, हालांकि
मुख्यतः प्राथमिक स्तर पर। व्यापक साक्षरता से अधिक व्यापक दर्शक वर्ग का वादा था।

स्थानीय स्तर पर प्रकाशित ग्रंथों के लिए। और यह भी संभव है कि सस्ते में छपे, कुछ हद तक सनसनीखेज, आसानी से पढ़े जाने वाले ऐसे ग्रंथ सबसे लोकप्रिय रहे हों।
उन लोगों में से जिन्हें हाल ही में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हुई है। हालाँकि ताकतें
अल-हदाथा (आधुनिकता) का आगमन वास्तव में मिस्र में लंबे समय से चल रहा था, लेकिन इस प्रक्रिया के सामाजिक प्रभाव अधिक गहन सार्वजनिक निगरानी में थे।
पहले से कहीं अधिक गहन जांच-पड़ताल का दौर शुरू हो गया, क्योंकि पत्रिकाओं और सस्ते दामों पर छपी किताबों की भरमार हो गई, जो पाठकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए होड़ कर रही थीं। 1920 का दशक लोकप्रिय पत्रिकाओं और धारावाहिक प्रेम कहानियों, बोलचाल की कविता और व्यंग्य चित्रों का दशक था; यही वह समय था जब पत्रिकाओं के परिदृश्य में रंगों का अभूतपूर्व आगमन हुआ। पाठकों की संख्या अभूतपूर्व रूप से बढ़ने के साथ, प्रकाशकों को तेजी से काम करना पड़ा—
वे अक्सर अपने प्रकाशनों को विशिष्ट दलों के राजनीतिक मंचों से जोड़ते हुए, दर्शकों की मांगों को पूरा करने और उन्हें आकार देने का प्रयास करते थे। इनमें से कई थे
सांस्कृतिक स्थल जहां राजनीति का मंचन किया जाता था, कभी-कभी अप्रत्याशित क्षेत्रों से इसका विरोध किया जाता था और अक्सर एक शोरगुल भरी खुलेपन के साथ जो चौंकाने वाला लगता है।
इक्कीसवीं सदी के शुरुआती दौर के अधिक रूढ़िवादी युग से।
कम से कम 1880 के दशक से, और उससे पहले भी कुछ आवाजों द्वारा, अरबी काल्पनिक और निबंधात्मक ग्रंथों ने सामाजिक स्थान के लिंगीकरण पर बहस की थी।
इतिहास और वर्तमान में।14 उपन्यासों और आचरण पुस्तकों ने युवा महिलाओं के लिए अधिक, हालांकि अभी भी सीमित, विकल्पों वाले भविष्य की सावधानीपूर्वक रूपरेखा तैयार की थी।
युवा पुरुषों के मामले में, विशेष रूप से प्रेम और विवाह के संदर्भ में।15 लेकिन

1920 के दशक का शोरगुल भरा सांस्कृतिक उत्पादन परिदृश्य, और शायद नई धारणाएँ
हरम और हाउस बोट के बीच 347

व्यक्तिगत और सामूहिक अधिकार के कारण, लड़कियों और युवाओं के मुद्दे को उठाया जा सका।
महिलाओं के बदलते सामाजिक परिवेश को प्रथम-पुरुष वृत्तांतों के इस नए रूप में, स्पष्ट रूप से नारीवादी संस्मरणकारों की आवाज़ों में प्रस्तुत किया जाना है। फिर भी, नारी के "बोलने" के अधिकार को पुरुष प्रधान संपादकीय अधिकार के दायरे में सीमित कर दिया गया है, जो शिक्षित महिला नागरिक को नए राष्ट्र के प्रतीक के रूप में ढालने की पुरुषवादी अभिजात वर्ग की परियोजना को प्रतिध्वनित करता है। मैं इसे एक कठपुतली की तरह देखता हूँ। इस प्रक्रिया में, पुरुष लेखकों (और संपादकों, या वास्तव में लेखक के रूप में कार्य करने वाले संपादकों) ने प्रथम पुरुष कथा लेखन के माध्यम से नारीत्व की भावना को व्यक्त किया। फिर भी, कुछ मामलों में, हम यह नहीं जानते कि इन संस्मरणों को किसने लिखा है; और मैं इस संभावना को पूरी तरह से नकारना नहीं चाहता कि ये रचनाएँ किसी न किसी रूप में आत्मकथात्मक हैं।
इस युग में, अरबी भाषा में ऐसी रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं जो स्पष्ट रूप से आत्मकथात्मक थीं, अरब और मुस्लिम महिलाओं द्वारा लिखित व्यक्तिगत वृत्तांत थे (हालाँकि
इससे पहले खंडित आत्मकथात्मक वृत्तांत मुद्रित हो चुके थे। 1910 के दशक के विरल महिला-लिखित आत्मकथात्मक वृत्तांत और
1920 के दशक की रचनाएँ आत्मकथाओं या संस्मरणों के बजाय निबंधात्मक "विचार" (सवानिह, जिसका अर्थ "शुभ संकेत" भी होता है) थीं, और उनके लेखक थे अत्यंत सम्मानित बौद्धिक महिलाएं। इस प्रकार के लेखन के लिए यात्राओं की आवश्यकता नहीं होती थी।
हरम। सवानिह एक पूरी तरह से विनम्र, सतर्क, बौद्धिक, "छिपी हुई" प्रकार की व्यक्तिगत, प्रथम-पुरुष टिप्पणी थी, इसलिए पर्याप्त रूप से अव्यवहारिक थी।
महिलाओं के लिए अपने नाम से प्रकाशन करना सशक्त और सम्मानजनक है।

तुर्की मूल की मिस्र की राजकुमारी क़ादरिया हुसैन की रचना 'सवानिह अल-अमीरा' (राजकुमारी के विचार) का अरबी अनुवाद (तुर्की से) प्रकाशित हुआ। 1920 में, और प्रसिद्ध फिलिस्तीनी-लेबनानी - लेकिन मिस्र में रहने वाले - लेखिका और वक्ता मय्य ज़ियादा ने 1922 में अपनी पुस्तक 'सवानिह फतत' (एक युवती के विचार) प्रकाशित की (जो जुरजी ज़ायदान की सांस्कृतिक पत्रिका 'अल-हिलाल' से पुनर्मुद्रित थी)। हुसैन और ज़ियादा ने अत्यंत संयमित, लेकिन व्यक्तिगत विचार लिखे। ये बौद्धिक आत्मकथाएँ थीं और (ज़ियादा की आत्मकथा में)
(मामला) रोमांटिक चित्रकारी का एक अभ्यास था। वे सार्वजनिक राजनीतिक बहस में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं थे, न ही उन्होंने किसी रोमांचक वादे की पेशकश की।
बेडरूम के अंदर झाँकें।
लेकिन दूसरों के निजी जीवन में झाँकने की ऐसी बातें प्रचलित थीं। जबकि यूरोपीय लेखक कथित तौर पर प्राच्यवादी दृष्टि को जीवित रखे हुए थे...
अरबी भाषा में लिखे गए यात्रा वृत्तांतों के माध्यम से, यूरोपीय महिलाओं के जीवन का निर्माण मुद्रित रूप में न केवल प्रसिद्ध महिलाओं की जीवनियों के माध्यम से किया गया, बल्कि हरम के बारे में भी जानकारी दी गई।
महिलाओं के सतर्क प्रेस में ही नहीं, बल्कि अनुवादित (और कभी-कभी मनगढ़ंत) संस्मरणों और जीवनियों में भी, अधिक उत्साहपूर्वक। महिलाओं का जीवन
जैसे सारा बर्नहार्ट, लेडी एस्क्विथ, "अल-कॉम्टेसा सुज़ैन डे विन-सेनेस," और "कैथरीन द्वितीय, पहनने वालों में सबसे प्रसिद्ध महिला पापी 348 मर्लिन बूथ

"ताजगी"16 जब मुद्रित रूप में "अनावरण" किया गया तो इन लोगों के निजी स्थानों का पता लगाया गया
सामाजिक और भौगोलिक रूप से दूर स्थित (यूरोपीय) महिलाओं को अक्सर ऐसे ग्रंथों में चित्रित किया जाता है जिनमें पाठक या दर्शक का ध्यान आकर्षित करने के लिए एक उत्तेजक आवरण रेखाचित्र होता है।
इसके विपरीत, किसी स्थानीय और पतित महिला के सस्ते में छपे संस्मरण या डायरी से हरम या शयनकक्ष के निकटवर्ती, और इसलिए अधिक रहस्यमय रूप से

वर्जित, स्थान तक पाठ्य पहुँच प्राप्त होती प्रतीत होती थी— जबकि संस्मरण का संदर्भगत दिखावा पेशकश करता प्रतीत होता था (और करता भी था) जीवन के अनुभवों और आंतरिक ज्ञान की स्पष्ट सच्चाई। अपने द्वारा चित्रित स्थानों में घर के करीब, एक कठपुतली की तरह बोलने वाला, स्वीकारोक्तिपूर्ण संस्मरण।
अरबी भाषी महिला कथावाचक ने बगल वाले घर का अंदरूनी दौरा कराने का वादा किया, जो उस दूरी से लिए गए बौद्धिकतावाद या रोमांटिक लहजे के बिल्कुल विपरीत था।
हुसैन या ज़ियादा के निजी विचार। पतन के संस्मरण अजीबोगरीब ढंग से
यह पुस्तक हरम के बारे में लिखे गए प्राच्यवादी यूरोपीय लेखों की प्रतिध्वनि (और शायद उपहास) प्रस्तुत करती है, जिसमें विवरण प्रकट करने का वादा तो किया गया है, लेकिन वर्णन को अंतहीन रूप से टाला गया है। वेश्यालयों के भीतरी इलाकों, विशेष रूप से अवैध वेश्यावृत्ति के "गुप्त घरों" (अल-बुयुत अल-सिर्रिय्या) के बारे में, जो प्रेस में शिकायतों और केंद्र सरकार को दी गई याचिकाओं के अनुसार, कम से कम 1890 के दशक से काहिरा, अलेक्जेंड्रिया और मिस्र के प्रांतीय कस्बों और शहरों के सम्मानित इलाकों में उभर रहे थे।17 ऐसे घर, सचमुच, कुछ मध्यम-वर्गीय पाठकों और लेखकों के लिए "पड़ोस का घर" बन रहे थे, फिर भी कथित तौर पर अनैतिक क्षेत्र होने के कारण, उनके अंदरूनी हिस्से (नैतिक रूप से) उतने ही दुर्गम थे जितने कि महिलाओं के कथित रूप से सम्मानित हरम के शयनकक्ष शारीरिक रूप से वर्जित थे।
इन ग्रंथों में दर्शाए गए अनुसार, वेश्यालयों के स्थान—के विपरीत हरम—1920 के दशक की इस विशिष्ट शैली द्वारा चित्रित एक व्यापक भूमिगत परिदृश्य का हिस्सा थे। कुल मिलाकर, अधीनस्थ और संभवतः वेंट्रिलोक्विज़्ड संस्मरण की शैली ने जिज्ञासु पाठक को अंडरवर्ल्ड की यात्रा का अवसर प्रदान किया—न केवल आस-पास के इन वेश्यालयों में, बल्कि काहिरा के शहरी ताने-बाने के निम्न-स्तरीय स्थलों में भी, रौद अल-फराग के जुआ अड्डों से लेकर
नील नदी पर बने हाउसबोट वेश्यालयों से लेकर विश अल-बिरका बुलेवार्ड पर अवैध यौन संबंध के अड्डे खोलने वाली भव्य इमारतों और उनके पीछे स्थित हशीश के अड्डों तक, हर जगह यही हाल है।

अल-अज़हर मस्जिद। 1920 के दशक के ये सभी संस्मरण इनके द्वारा व्यक्त नहीं किए गए थे।
महिला कथावाचक। सबसे प्रसिद्ध वेंट्रिलोक्वाइज़्ड सबाल्टर्न संस्मरणों में से कई पुरुष कथावाचकों द्वारा रचित हैं: मुधक्किरात लकीत (एक फाउंडर के संस्मरण)
लिंग; 1923), मुधक्किरात 'अरबागी (एक टैक्सी चालक के संस्मरण; धारावाहिक रूप में प्रकाशित 1923), या मुधक्किरात फुटुव्वा (एक गली के गुंडे के संस्मरण; दूसरा मुद्रण, 1927)।
फिर भी, विशेष रूप से महिलाओं के (छद्म) संस्मरण ही चिंता का संकेत देते हैं।
हरम और हाउस बोट के बीच 349

सामाजिक परिवर्तन के बारे में कहानियाँ। सड़कों पर भटकती पतित स्त्री की आकृति।
यह बेचैनी का प्रतिनिधित्व कर सकता है—और संभवतः इसे बनाए रखने में सहायक भी रहा हो सकता है—
आधुनिकता के कारण नैतिकता पर पड़ने वाले धुंधले प्रभावों को लिंगों के स्थानिक पृथक्करण के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है। जैसा कि डेबोरा एपस्टीन नॉर्ड टिप्पणी करती हैं...
उन्नीसवीं सदी के ब्रिटिश और फ्रांसीसी: "मध्य शताब्दी के कुछ ग्रंथों और शोधों में वेश्याओं के जीवन के जो वृत्तांत सामने आने लगे, उन्होंने इस विचार को बल दिया कि सड़क पर रहने वाली महिला पूरी तरह से अलग नहीं थी।" एक सम्मानित बुर्जुआ परिवार से।"18

पिता से भागना

संस्मरण में इसकी कथित लेखिका ज़ैनब मुहम्मद की कहानी बताई गई है, जो पारंपरिक रूप से, इसकी शुरुआत उनकी वंशावली से होती है: वह तुर्की मूल के एक बेक (बे) की बेटी हैं, वह बताती हैं—इस प्रकार, वह ओटोमन मिस्र के पुराने परिवार की सदस्य हैं।

कुलीन वर्ग, जिसे उस समय आंशिक रूप से एक स्वदेशी मिस्री कुलीन वर्ग द्वारा प्रतिस्थापित (और विवाह के माध्यम से उसमें शामिल) किया जा रहा था, हालांकि मिस्री-तुर्की परिवारों ने भी उत्पादन किया।
बीसवीं सदी के मिस्र के कुछ प्रमुख जमींदार और राजनेता
साथ ही इसकी कुछ सुधारवादी आवाज़ें भी। इसलिए, लेखक का घर उच्च वर्ग के हरम की याद दिलाता है, जिसका वर्णन समकालीन अभिजात वर्ग की बेटी हुदा शारावी ने अपने संस्मरणों में खूबसूरती से किया है (जो 1920 के दशक के बहुत बाद लिखे और प्रकाशित हुए थे)। उनकी जन्मतिथि 1896 बताते हुए (और,
जन्मतिथि का उल्लेख करना भी आवश्यक नहीं है, संस्मरण की संदर्भगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए।
ज़ैनब एक पात्र के रूप में मिस्र की कुलीन वर्ग की उन बेटियों की पहली पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें घर से बाहर शिक्षा प्राप्त हुई। उनके पिता, जिनका वह वर्णन करती हैं
एक वरिष्ठ सिविल सेवक के रूप में, उन्हें शुरू में अपनी पीढ़ी और सामाजिक स्थिति के एक आधुनिक और कुछ हद तक असामान्य सदस्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, क्योंकि वे
पिता अपनी बेटी को स्कूल भेजता है। इस प्रकार पिता पहली पीढ़ी का प्रतीक है।
मिस्र के कुलीन पुरुषों द्वारा सार्वजनिक रूप से लड़कियों की शिक्षा का समर्थन करने और अपनी बेटियों को स्कूल भेजने के प्रयासों की सराहना की गई। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ऐसे पुरुषों की प्रशंसा की गई।
ऐसा करने के लिए मिस्र की प्रेस का आभार व्यक्त किया गया—लेकिन उनमें से अधिकांश संभवतः मूल मिस्रवासी या सीरियाई अप्रवासी पुरुष थे, जो ईसाई और मुस्लिम दोनों थे, न कि किसी अन्य देश के वंशज।
पुराने तुर्की मुस्लिम अभिजात वर्ग, जैसे कि यहाँ पिता, "मुहम्मद बेक" प्रश्न चिह्न।"
ज़ैनब द्वारा अपने बचपन का वर्णन एक आदर्श पिता-पुत्री संबंध के रूप में उभरती आधुनिकता का एक शांत दृश्य प्रस्तुत करता है, जिसमें पिता द्वारा पहले घर पर और फिर स्कूल में उसकी शिक्षा पर दिए गए ध्यान पर ज़ोर दिया गया है।
मिसाल कायम करने वाला और प्रतिष्ठित सानिया गर्ल्स स्कूल, जहाँ ज़ैनब

ज्ञान के एक नए जीवन में प्रवेश किया... इस महान विद्यालय में आकर अत्यंत प्रसन्न हूँ।
350 मैरिलिन बूथ

मैं हर सुबह अपने पिता की गाड़ी में वहाँ जाता था। ड्राइवर वापस लौट आता था।
मैं अपने पिता को दीवान ले जाने के लिए घर वापस जा रहा था। शाम चार बजे गाड़ी वापस आ जाती।
स्कूल के प्रवेश द्वार के सामने, और मैं घर वापस जाती थी।”19 ये विवरण अनावश्यक नहीं हैं। ये लड़कियों के लिए स्वीकार्य स्थान को परिभाषित करते हैं।
अभिजात वर्ग की। स्कूल के प्रवेश द्वार से सीधे घर तक अपने पिता की बंद गाड़ी में सवार होकर जाना—एक ऐसा मार्ग जिसे ठीक समानांतर बताया गया है। पिता का घर और सरकारी कार्यालय के बीच आवागमन—ज़ैनब एक
हरम का विस्तार जिसने स्कूल जाना संभव बनाया और जिसने उसे शुरू से ही सड़क के जीवन से अलग करके सम्मानजनक मसूना (संरक्षित; परिणामस्वरूप, सम्माननीय) के रूप में स्थापित किया। अपने पिता के मार्ग का अनुसरण करते हुए, जो राज्य का काम करते हैं, ज़ैनब भी अपना काम करती है।
एक स्त्री के रूप में, वह शिक्षायोग्य होने के साथ-साथ अपने पिता के व्यवहार में आज्ञाकारी भी है।
और हमेशा एकांत में रहने वाली। फिर भी ज़ैनब का रास्ता शायद जितना दिखता है उससे कहीं अधिक अस्पष्ट है, क्योंकि घर से उसका सुरक्षित और अस्थायी प्रस्थान ही है।
भविष्य की परिकल्पना का परिणाम: "जब मेरी मानसिक चपलता ने मेरे पिता को मेरे भविष्य के प्रश्न पर ध्यान देने का कारण दिया, तो उन्होंने मुझे सानिया में दाखिला दिला दिया।"
विद्यालय।"20 शायद लड़की के "भविष्य" का उल्लेख करना ही पाठ को आधुनिक बनाता है। शायद घर से अलग (यदि घर से जुड़ा हुआ हो) शिक्षा को मान्यता देने के संदर्भ में ही लड़कियों के पास "भविष्य" जैसी कोई चीज़ होती है।
भले ही यह लगभग अनिवार्य रूप से विवाह और मातृत्व का ही क्यों न हो।
"भविष्य होने" की अवधारणा को व्यक्त करना नई संभावनाओं को पहचानना था।

महिलाओं की सक्रियता के लिए सामाजिक स्थान।
ज़ैनब के सामाजिक विशेषाधिकारों और सतर्क आधुनिकतावादी अन्वेषण से भरे शांत जीवन में बाधा और विनाश का कारण पितृसत्तात्मक अधिकारों का पूर्ण दुरुपयोग है: विशेष रूप से, पिता का उच्च अधिकारियों की अनुमति के बिना एकतरफा तलाक प्राप्त करने का अधिकार। ज़ैनब का संरक्षक वर्ग विशेषाधिकार और उसकी शिक्षा उसे धार्मिक ग्रंथों में निहित असुरक्षा से नहीं बचा सकती।
कानून द्वारा समर्थित और राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त: “मेरा जीवन ऐसा था जैसा ईव की बहुत कम बेटियों को मिलता है। मैंने लगभग दो साल स्कूल में बिताए, जब तक कि भाग्य ने मुझे चौंका नहीं दिया।
मेरे पिता द्वारा मेरी माँ को तलाक देने का एक रूप।"21 यह जीवन घटना—जो "भाग्य" से अधिक पिता और (माता के हस्तक्षेप न करने) के कारण घटी—
राज्य की स्थिति हरम की दीवारों में दरार पैदा कर देती है, जिससे यह उजागर हो जाता है कि यह महिलाओं और बच्चों के जीवन को सुरक्षित रखने वाला कोई आवरण नहीं है। जब पिता अपनी पहली (जाहिर तौर पर जिसे उसने पहले त्याग दिया था) पत्नी से दोबारा शादी कर लेता है, तो ज़ैनब को बाहर कर दिया जाता है। परिवार के दायरे में। बात सिर्फ इतनी ही नहीं है कि वह अब अपने पिता की लाडली और स्नेह की पात्र नहीं रही, जो उसकी माँ की ही एक शाखा थी। अपने पिता के बदलते रवैये के साथ।
अपने बेटे (ज़ैनब के सौतेले भाई) के हितों के प्रति सम्मान के कारण, वह अब सुरक्षित नहीं है।
उसके सौतेले भाई द्वारा उसे बहकाने के बार-बार किए गए प्रयासों में यह बात आश्चर्यजनक रूप से प्रदर्शित होती है।
हरम और हाउस बोट के बीच 351

उसे। घर की दीवारें अब उसकी रक्षा नहीं कर सकतीं, क्योंकि खतरा भीतर ही है।
दरअसल, हरम की दीवारें, जो उसे अंदर रखती हैं और उसके भाई को
एक ऐसे स्थान में प्रवेश करना जिससे वह अब बाहर नहीं निकल सकती, उसके शारीरिक अखंडता को खतरे में डालता है।
सजयनाब के सपनों में भी अनाचार का घिनौना खतरा मंडराता रहता है।
प्रतीकात्मक रूप से, उसका भाई नुमान, राष्ट्र के सामाजिक और नैतिक

स्वास्थ्य के लिए यूरोपीयकरण की प्रथाओं के खतरे का प्रतीक है। उसके द्वारा किए गए प्रलोभन के प्रयास कामुक यूरोपीय पोस्टकार्डों के माध्यम से व्यक्त किए जाते हैं, जिन्हें वह अपनी बहन के चेहरे के सामने लहराता है और उससे आग्रह करता है कि वह उन्हें अपने कमरे में उसके लिए रखे।
नारी सद्गुणों का पवित्र और निर्विवाद स्थान, वहाँ के निवासियों की इच्छा के विरुद्ध, पश्चिमीकरण की सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था द्वारा अपने सबसे क्रूर रूप में आच्छादित हो जाता है।
अश्लील रूपों.22 फिर भी यह सबसे स्थानीय और अंतरंग माध्यमों से होता है। एजेंटों में से, (मान लीजिए कि केवल सौतेला) भाई। और भाई के बहकावे को प्राचीन मिस्र के इतिहास के माध्यम से भी व्यक्त किया गया है: "प्राचीन काल कितना सुंदर था," नुमान कहते हैं, "वे युग जिनमें एक भाई अपनी बहन से विवाह करता था। काश मैं उस समय तुम्हारे साथ होता, तो मैं..."
मैंने तुमसे शादी कर ली है...” इसके जवाब में ज़ैनब ने पलटवार करते हुए “उन लोगों” को लताड़ा।
युगों को अय्याम अल-जाहिलिया (अज्ञानता के दिन) के रूप में परिभाषित किया गया है।23 अज्ञानता पूर्व-इस्लामी काल को इस्लामी काल से अलग करती है। नैतिक रूप से और इस प्रकार कालातीत रूप से, ये दोनों युग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं: आधुनिकता के संदर्भ में, जाहिलिया का अर्थ ऐसे आचरण से हो गया जिसे (कम से कम कुछ लोगों द्वारा) उचित नहीं माना जाता था।
सही मायने में इस्लामी, और जो विशेष रूप से यूरोपीय सामाजिक से जुड़ा हुआ था
व्यवहार में, जाहिलिया आज के इस्लामी विमर्शों में एक प्रमुख अवधारणा और अलंकारिक युक्ति बनी हुई है, जिसका प्रयोग अक्सर विशेष रूप से कथित संदर्भ में किया जाता है।
महिलाओं के व्यवहार में विचलन। यदि इसे अक्सर मुस्लिम ब्रदरहुड के सिद्धांतकार सैयद कुत्ब के कुछ बाद के लेखन से जोड़ा जाता है, तो इसका उपयोग
यहां दिए गए संदर्भ से पता चलता है कि यह अवधारणा 1920 के दशक में ही आकार ले रही थी; वास्तव में, लोकप्रिय साहित्य की एक रचना में इसका उपयोग यह दर्शाता है कि यह कई पाठकों के बीच प्रचलित थी। ज़ैनब के लिए, हरम जाहिलियत

का स्थान बन गया है - महिलाओं के अनैतिक व्यवहार के कारण नहीं, बल्कि परिवार के किसी पुरुष सदस्य के नैतिक रूप से निंदनीय आचरण के कारण।
हरम के खतरे में पड़ने के बाद, ज़ैनब ने शारीरिक सम्मान और अपनी
अपने धर्म के पालन पर आधारित नैतिक दृष्टिकोण को त्यागना होगा। इस्लामी नैतिक निष्ठा के प्रति उसके दावे और उसके भाई के अश्लील व्यवहार के बीच का अंतर स्पष्ट नहीं है।
ग्राफिक पोस्टकार्ड को औपचारिक रूप से उसकी शारीरिक और शाब्दिक अशिष्टता में, और उनके आदान-प्रदान की भारित भाषाई प्रक्रिया में दर्शाया गया है, जिसमें वह
वह शिक्षित और लिखित आदान-प्रदान की आधुनिक साहित्यिक अरबी बोलता है।
वह एक भद्दी ढंग से प्रस्तुत बोलचाल की भाषा को प्राथमिकता देता है—या केवल उसी का उपयोग कर पाता है।24
352 मैरिलिन बूथ

लेकिन ज़ैनब का भोलापन—जिसे कथित तौर पर एक उचित, स्वीकृत संकेत माना जाता है—
संरक्षित, अतः सम्माननीय, स्त्री (मसुना)—यह भी विवाद का विषय है।
इसका तात्पर्य यह है कि सुरक्षा के पुराने तरीके अब कारगर नहीं रहे, वे युवा महिलाओं को यौन उत्पीड़न के खतरों से बचाने के बजाय उन्हें असुरक्षित बना देते हैं।
इस अर्थ में, ज़ैनब की कहानी एकांतवास को सुरक्षात्मक मानने वाली पुरानी, पारंपरिक धारणाओं और आधुनिकता के पुनर्परिभाषित पितृसत्तात्मकता, दोनों को चुनौती देती है। लड़कियों को घर पर शिक्षा देने के बजाय स्कूल में भेजना
कुछ महिलाओं की आवाजाही और निवास के सामाजिक दायरे को विस्तारित करने की संभावना को स्वीकार करना। इसमें कुलीन लड़कियों को आत्म-निगरानी का प्रशिक्षण देना शामिल था, जिससे वे सार्वजनिक स्थान में, भले ही अदृश्य रूप से, प्रवेश कर सकें। ढके हुए चेहरे और ढके हुए स्थान (पिता का वाहन) हरम का विस्तार करें।25 यदि राष्ट्रवादी आदर्श लिंग-आधारित का एक पुनर्व्यवस्थित समूह है

सावधानीपूर्वक संशोधित लेकिन अंततः स्थिर स्थानिक अनुपालनों पर आधारित मानदंड, जहां आधुनिक अभिजात वर्ग की नारीवादी आत्म-पहचान प्रशिक्षित आत्म-पहचान पर क्रियान्वित की जाएगी—
सार्वजनिक स्थानों पर पुलिसिंग और घरेलू-केंद्रित पहचान के रखरखाव के संदर्भ में, यहाँ प्रश्न यह उठता है कि महिलाओं के पुराने तौर-तरीकों की हस्तांतरणीयता क्या है।
उभरते उत्तर-औपनिवेशिक राज्य की मांगों (और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा?) के प्रति अलगाव। पाठ में यह भी सवाल उठाया गया है कि क्या एक व्यक्ति की शिक्षायोग्यता है।
युवा (पुरुष) पीढ़ी पश्चिम (अल-ग़र्ब) के आकर्षण में फंसी हुई है। शायद युवा पुरुषों को ही घर में रखना बेहतर है। ज़ैनब अपने भाई के हमले को परिवार के चारदीवारी वाले बगीचे में रोकती है।
माना जाता है कि यह घरेलू स्थान का एक सुरक्षित, क्योंकि एकांत, विस्तार है — और
बाद में उसके शयनकक्ष में, जो हरम का केंद्र था। उसे वहाँ फँसाने में असफल रहने पर (शायद हरम—उसके शयनकक्ष के दरवाजे पर लगा ताला—कुछ हद तक अपनी छाप छोड़ता है)।
सुरक्षात्मक बल!), नुमान घर के बाहर अधिक सफल है, जहाँ उसकी बहन की प्रतिष्ठा हमेशा खतरे में मानी जाती है।
घर के ठीक बाहर गली में, घर और पारिवारिक गाड़ी के बीच, नुमान की चाल शाब्दिक रूप से पारिवारिक सम्मान की दहलीज पर स्थित है और इसकी सफलता लड़कियों की आत्म-निगरानी के एक नए सिद्धांत की नाजुकता को उजागर करती है। नुमान यह सुनिश्चित करता है कि उसके पिता ठीक उसी समय सड़क पर हों जब उसकी बहन गाड़ी से उतरकर सड़क पर आती है, जिसके बाद
वह उसे अपने एक पुरुष साथी के साथ बहस में उलझा लेता है।
इससे ज़ैनब (और इसलिए उसके पिता) की प्रतिष्ठा सार्वजनिक रूप से सवालों के घेरे में आ जाती है, साथ ही संभवतः कुछ लोगों द्वारा रखे गए इस विचार का व्यंग्य या आलोचना भी होती है।
महिलाओं की आवाज़ें ‘अवरा’ थीं, उस चीज़ का हिस्सा थीं जिसे छिपाकर या ढककर रखना ज़रूरी था। एक आधुनिक बेटी (आधुनिक बेटियों की पहली पीढ़ी) के रूप

में, वह सड़कों पर चलने में सक्षम रही है, हालांकि पूरी तरह से घूंघट ओढ़े हुए।
वह चुपचाप अपने पिता की गाड़ी में बैठी थी, इस प्रकार एक गतिशील, परिवहनीय हरम में थी।
हरम और हाउस बोट के बीच 353

इस पारिवारिक दायरे से बाहर, उसने अपनी आवाज़ बुलंद करके नियमों का उल्लंघन किया है।
सड़क पर जाने के लिए। अब, पिता उसे "वेश्या" कहकर उसकी निंदा करता है और उसे घर में बंद कर देता है।
उसे घर के अंदर।26

pro s t I t Ut I on a nd p U B l I C dI s C o U r s e

कुलीन परिवार, वह स्थान जहाँ हरम की विचारधारा को व्यवहार में लाया जाता है,
यह रक्षा नहीं करता: यह कैद करता है और स्त्री शारीरिक अखंडता को खतरे में डालता है। फिर भी यह "पतन" (संभावित और वास्तविक, और सामाजिक और नैतिक दोनों) नहीं है
इसे गरीबी या यौन इच्छा का परिणाम बताया जाता है। वास्तव में, यह उस अपरिहार्य अंत का उदाहरण है जब कोई लड़की यौन उत्पीड़न के खतरों से बचने के लिए भाग जाती है।
परिवार द्वारा, और/या जबरन शादी से भाग जाने के बाद, बलात्कार
एक और नाम, जो उसके पिता ने उसकी इच्छा के विरुद्ध तय किया था। वैवाहिक घर एक ऐसी जगह है—एक हरम—जो उसके सपनों के भविष्य के बिल्कुल विपरीत है। लड़की को स्कूल में शिक्षित किया गया।27 नुमान द्वारा घर में—हरम में— अपनी सौतेली बहन के साथ बलात्कार का प्रयास कई महिलाओं के जीवन का एक अधिक नाटकीय रूप से चौंकाने वाला संस्करण हो सकता है।
फिर भी, यहाँ एक विशिष्ट और यौनिकरण से संबंधित वैचारिक संदर्भ मौजूद है। यदि महिलाओं की दृश्यता और नारीवादी सक्रियता को लेकर चिंताएँ उन ताकतों में से थीं जो इस बदलाव का नेतृत्व कर रही थीं, तो

इन संस्मरण-आधारित ग्रंथों के लिए, यह भी निश्चित रूप से मायने रखता था कि तात्कालिक ऐतिहासिक क्षण वेश्यावृत्ति के बारे में सार्वजनिक चिंता की अभिव्यक्ति का क्षण था।
राष्ट्र के लिए एक समस्या—एक ऐसा विमर्श जिसने दृश्यता के मुद्दे को छुआ सभी महिलाएं। हालाँकि उन्नीसवीं शताब्दी में मिस्र की राज्य हस्तक्षेप का सामना वेश्याओं ने किया था (वास्तव में, लंबे समय तक उन्हें निर्वासित कर दिया गया था)।
(काहिरा से), वेश्याओं पर सरकारी निगरानी औपचारिक रूप से उस सदी के अंत में ही स्थापित की गई थी, 1896 में जारी एक प्रशासनिक आदेश के बाद।
ब्रिटिश कब्जे की शुरुआत के बाद पुलिस की कड़ी निगरानी का दौर
1882.28 उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के समाचार पत्रों ने लगातार वेश्यालयों की उपस्थिति के प्रति समुदाय की असंतोष की ओर ध्यान आकर्षित किया।
विभिन्न शहरी केंद्र।29 प्रथम विश्व युद्ध के बाद, वेश्यावृत्ति को ग्रंथों में अधिक व्यापक रूप से दर्शाया गया, जो संभवतः शहरी केंद्रों में इस प्रथा की बढ़ती दृश्यता और साक्षर एवं धनी लोगों के जीवन से इसकी बढ़ती निकटता को दर्शाता है। उन्नीसवीं शताब्दी में इसके नियमन में राज्य की भूमिका को लेकर राजनीतिक विवाद और स्थानीय संवेदनशीलता स्पष्ट थी।
सदी में, उस युग में भी कमी नहीं आई जब काहिरा, अलेक्जेंड्रिया और उससे आगे ब्रिटिश साम्राज्यवादी सैनिक सर्वव्यापी थे (जिनमें से कई ब्रिटिश उपनिवेशों, विशेष रूप से ऑस्ट्रेलिया से थे), और जब स्थानीय पर्यवेक्षकों ने मिस्र के बारे में अफसोस जताया।
यह उस प्रथा का केंद्र था जिसे श्वेत दासता कहा जाता था।30
354 मैरिलिन बूथ

इस प्रकार, वेश्यावृत्ति साम्राज्य की पहुंच का मुद्दा थी, लेकिन केवल यही नहीं।
युद्ध के तुरंत बाद के दौर में उत्पन्न राष्ट्रवादी उथल-पुथल ने कई सामाजिक बुराइयों पर गहन सार्वजनिक चर्चा को जन्म दिया, क्योंकि विभिन्न गुट राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष में राजनीतिक वैधता की तलाश कर रहे थे। कई निबंधों में...

प्रेस में अभिजात वर्ग के लेखकों द्वारा युवा महिलाओं और पुरुषों के लिए अधिक स्थानिक स्वतंत्रता के रूप में देखी जाने वाली बातों के बारे में चिंता व्यक्त की गई; चिंता का यह विमर्श सभी प्रकार के लोगों की स्थिति के बारे में सार्वजनिक बेचैनी को प्रतिबिंबित करता था, लेकिन साथ ही उसे और भी बढ़ावा देता था।
सामाजिक सीमाएं और स्थानीय स्तर पर निहित पश्चिमीकरण समर्थक प्रवृत्तियां
लैंगिक स्थान का पुनर्व्यवस्थापन। वास्तव में, इस कालखंड में वेश्यावृत्ति पर लिखे गए लेखों के साथ-साथ काल्पनिक ग्रंथों में भी 'सकीता' (पतित स्त्री) शब्द का प्रयोग स्थानीय विमर्शों में यूरोपीय महानगर की व्यापक उपस्थिति को दर्शाता है। मैं इस शब्द के प्रथम प्रयोग का पता नहीं लगा पाई हूँ।
साकिता (और इससे संबंधित क्रियावाचक संज्ञा सुकुत, जिसका अर्थ है पतन) का प्रयोग वेश्याओं के संदर्भ में किया जाता है, लेकिन मुझे संदेह है कि यह विक्टोरियन युग के प्रवचन से सीधा उधार लिया गया है।
जिसमें पतन की विशिष्ट ईसाई धारणा का धर्मनिरपेक्षीकरण हो गया था। अमांडा एंडरसन ने अपने महत्वपूर्ण अध्ययन में इस बात पर ध्यान दिया है कि उन्नीसवीं सदी के ब्रिटेन में पतन: “पतन को पुनर्परिभाषित किया गया विक्टोरियन युग के दौरान धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक प्रतिमानों ने अंततः धार्मिक और नैतिक आधारों को कमजोर करने का काम किया।31 इसी धर्मनिरपेक्ष युग में धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक प्रतिमानों ने धार्मिक और नैतिक बंधनों को ढीला कर दिया।
(लेकिन फिर भी अत्यधिक नैतिक) इस अर्थ में कि यह शब्द मिस्र में गूंजता था, अपने व्याकरणिक रूप, एक स्त्रीलिंग रूप के माध्यम से एक विशिष्ट लैंगिक बल को बरकरार रखता था।
विशेषण—एक लिंग-विशिष्टता जो निश्चित रूप से अंग्रेजी में मौजूद नहीं है उपयोग।
मिस्र में प्रारंभिक नारीवादियों ने वेश्याओं पर अपना आंदोलन चलाया, इसे अभिजात वर्ग के पितृसत्तात्मक सामाजिक सुधार का एक महत्वपूर्ण केंद्र मानते हुए। 1920 के दशक की शुरुआत में, उन्होंने गरीब युवा महिलाओं को आकर्षित करने के लिए परियोजनाएं शुरू कीं।

महिलाओं को वेश्यावृत्ति से दूर रखना। मिस्र नारीवादी संघ (स्थापित) 1923 में, कुलीन महिलाओं के एक समूह की निराशा से उपजी (जो इस बात से नाराज़ थीं कि पुरुष राष्ट्रवादी नेताओं ने महिलाओं के मताधिकार को संवैधानिक अधिकार के रूप में समर्थन देने से इनकार कर दिया था) ने कानूनी वेश्यावृत्ति के खिलाफ अभियान चलाया और इस विडंबना का विरोध किया कि वेश्यावृत्ति को कानून द्वारा मान्यता प्राप्त थी जबकि वेश्याओं को— लेकिन
उनके ग्राहक नहीं—उन्हें बदनाम किया गया और पीड़ित बनाया गया।32 प्रकाशित बहसें और
सक्रियतावाद ने राज्य को सक्रियतावाद (यदि वेश्यावृत्ति नहीं तो) को कम करने के लिए नए नियामक कानून लागू करने और वेश्याओं की दृश्यता को कम करने, उनके कार्यस्थलों को शहर की सीमाओं पर सामाजिक रूप से सीमांत स्थानों पर स्थानांतरित करने के लिए प्रेरित किया होगा, जबकि चिकित्सा जांच के माध्यम से वेश्याओं के शरीर पर नियंत्रण बनाए रखा गया होगा।
(जिसे मिस्र में वेश्याओं के लिए बहुत पहले ही प्रस्तावित किया गया था) मुहम्मद अली, उनके मुख्य चिकित्सा अधिकारी, फ्रांसीसी क्लॉट बे द्वारा)। 33
हरम और हाउस बोट के बीच 355

विरोधियों का तर्क था कि वेश्यावृत्ति को वैध बनाए रखना साम्राज्यवादी पद्धति का अनुसरण करना था। ब्रिटिश शासन के दौरान वेश्यावृत्ति को वैध कर दिया गया था।
संरक्षणवादी शासन के विरोधियों ने कथित रूप से स्वतंत्र मिस्र के पहले मंत्रालय को साम्राज्यवादी आकाओं के साथ मिलीभगत करने वाला माना। थॉमस कई वर्षों तक काहिरा के पुलिस प्रमुख रहे और ब्रिटिश मिस्र सेवा के एक प्रमुख स्तंभ रहे रसेल ने याद किया कि 1924 में सरकार ने "बंद कर दिया था..."
विशश अल-बिरका में "वेश्यालयों" को बंद कर दिया और "जिले की प्रतिष्ठा को बहाल किया।"34
लेकिन दो साल बाद—और संस्मरण और मुधक्किरात 'अमिल फ़ी बिक़ा' अल-'अहिरात के प्रकाशन से एक साल पहले—यह मुद्दा स्थानीय प्रेस में छा गया था। 1923

में, शेख महमूद अबू अल-'उयुन (1882-1951; उनके उपनाम का अर्थ है "आँखों वाला") ने वैध वेश्यावृत्ति को समाप्त करने के लिए एक अभियान शुरू किया था।35 अबू अल-'उयुन एक निर्विवाद पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति थे, जो अल-अज़हर विश्वविद्यालय और उससे संबद्ध इस्लामी संस्थानों में स्नातक, फिर प्रोफेसर और पाठ्यक्रम एवं शिक्षण निरीक्षक थे, और एक सशक्त साम्राज्यवाद-विरोधी थे।
1923 से पहले के कार्यकर्ता। वे राजनेताओं को शर्मिंदा करके कार्रवाई करवाने में माहिर थे। प्रेस और पुनर्प्रकाशित निबंधों के कई खंडों में वर्णित, अबू अल-उयुन के बारे में...
1926 में अपने दूसरे अभियान के साथ ही उनकी सक्रियता अपने चरम पर पहुंच गई।
प्रमुख काहिरा समाचार पत्र के प्रधान संपादक दाऊद बरकत द्वारा समर्थित। दैनिक अल-अहराम (पिरामिड) में, अबू अल-उयुन ने न केवल एक के बाद एक लेख प्रकाशित किए, बल्कि सरकारी मंत्रियों और अन्य प्रमुख राजनीतिक हस्तियों से भी मुलाकात की। वेश्यावृत्ति पर उनके विचार जानने के लिए उनका साक्षात्कार लिया और उनकी टिप्पणियों को अल-अहराम में और फिर पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। इस प्रकार, उन्होंने वेश्यावृत्ति के विरुद्ध कई घोषणाएँ कीं, जिनमें चतुराई से यह संकेत दिया गया था कि सरकारी विनियमन का समर्थन करना—जिसे अबू अल-उयुन के पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण से "व्यभिचार का वैधीकरण" और "अनैतिकता की व्यवस्था" करार दिया गया था—स्वयं नैतिक रूप से अस्वीकार्य प्रथा का समर्थन करना था।36
अबू अल-उयुन ने मिस्र की राजनीतिक स्वतंत्रता के नुकसान को किसी अन्य चीज़ के नुकसान से जोड़ा।
न केवल आर्थिक बल्कि नैतिक स्वतंत्रता भी। उन्होंने उस "लंबे और कठिन संघर्ष [जिहाद]" का उल्लेख किया जो मिस्रवासियों को "खुद को मुक्त करने" के लिए करना होगा।
अत्याचारी लालसाओं की बेड़ियाँ।"37
वेश्याओं ने उन स्थानिक सीमाओं को धुंधला कर दिया जो अभिव्यक्त करने के लिए थीं और
स्वीकार्य व्यवहार की गारंटी: "बदनाम व्यवसायों के सदस्य थे

अक्सर उन्हें शारीरिक रूप से बेईमान व्यक्तियों के रूप में अलग कर दिया जाता था और उनकी बाहरी दिखावट से उनकी पहचान की जा सकती थी।38 राज्य नीति ने बार-बार प्रयास किया था
वेश्याओं को काहिरा और अन्य शहरों के बाहरी किनारों पर, सम्मानित परिवारों के "सुरक्षित" स्थानों से दूर, "बाहर" रखने की नीति—हरम व्यवस्था के अंदर/बाहर के द्वंद्व का एक व्यापक उदाहरण। कम से कम उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से, वेश्याओं ने अलगाव की इस नीति का विरोध किया था।

अच्छे मोहल्लों में बसने के लिए, अपने नए पड़ोसियों को पीछे छोड़ते हुए स्तब्ध। राष्ट्रीय समाचार पत्रों में छपी स्थानीय खबरों में 1890 के दशक से ही अधिकारियों से इन इलाकों में वेश्याओं के बढ़ते प्रभाव को रोकने का आह्वान किया गया था। वकील मुहम्मद सईद अल-बाय्यूमी को अपनी रचना लिखने की प्रेरणा मिली।
1919 में उन्होंने "गुप्त घरों"—राज्य द्वारा लाइसेंस प्राप्त न किए गए वेश्यालयों—पर एक ग्रंथ लिखा, जब उन्हें पता चला कि ऐसा ही एक घर उनके घर के पास ही खुल गया है।
अपना निवास.39
शारीरिक पहचान चिह्न भी अब स्पष्ट नहीं रह गए थे: 1890 के दशक से प्रेस की बहसों में, टिप्पणीकारों ने उस युग में "सम्मानित महिलाओं" और "पतित महिलाओं" के बीच अंतर करना असंभव होने पर दुख व्यक्त किया, जब कुछ शहरी मध्यम वर्ग और कुलीन महिलाएं पारंपरिक बंधनों से बाहर निकलना शुरू कर रही थीं।
सार्वजनिक स्थानों में उनकी आवाजाही पर प्रतिबंध। यदि युवा महिलाएं अपने चेहरे से नकाब हटाकर और "वेश्याओं की तरह" कपड़े पहनकर, भला किसे पता चलता?
‘अधरा’ (कुंवारी) और ‘अहिरा’ (वेश्या) के बीच क्या अंतर है? हरम व्यवस्था द्वारा परिवार और सार्वजनिक स्थान के विभाजन के रूप में प्रतीकात्मक रूप से दर्शाए गए और नियंत्रित किए गए विभाजन और दूरियाँ खतरे में प्रतीत हो रही थीं। और कथित रूप से व्यापक वेश्यावृत्ति के खिलाफ विरोध प्रदर्शन एक से अधिक क्षेत्रों में कारगर साबित हो सकते हैं।

एक ही दृष्टिकोण से: क्या उनका उद्देश्य वेश्यावृत्ति को रोकना था, या सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं द्वारा अपने विशेषाधिकारों को जताने के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करना था? क्या उनका उद्देश्य मिटाना था? वेश्यावृत्ति, या महिलाओं को घर भेजना? पुरुष दरिंदों की निंदा करने वाले लेखों का उपयोग यह ज़ोर देने के लिए किया जा सकता है कि महिलाओं का स्थान घर में ही है। "कीमती
घरों की बेटियों और परिवारों की सम्मानित महिलाओं का पीछा किया जा रहा है। “उपनगरों और सार्वजनिक चौकों से होकर!” अबू अल-उयुन ने कहा।40
हम यह नहीं जान सकते कि संस्मरण और इसी तरह के ग्रंथ कितने व्यापक रूप से प्रसारित और पढ़े गए। लेकिन मेरा सुझाव है कि 1920 के दशक में इनका निर्माण ऐसे सामाजिक मुद्दों के बारे में व्यापक जन चिंता, या व्यापक चिंता पैदा करने के प्रयास का संकेत देता है। चूंकि ये ग्रंथ नारीवादी अनुभवों को बयान करने के अधिकार का दावा करने वाली "आत्मकथात्मक आवाज़ों" का निर्माण करके एजेंसी के मुद्दों को केंद्र में रखते हैं, इसलिए ये रचनाएँ—भले ही कठपुतली की तरह बोली गई हों, नकली आवाज़ें हों— वेश्यावृत्ति-विरोधी विमर्श में पाए जाने वाले शहरी स्थान के मानचित्रण से भिन्न मानचित्रण प्रस्तुत करती हैं। इन ग्रंथों में, शरणस्थल पति या पिता का नहीं है—जहाँ
स्त्री आकृति या तो कैद में है या जिससे उसे निष्कासित कर दिया गया है— लेकिन
बल्कि यह वेश्यालय के अंदर और आसपास रहने वाली महिलाओं के समुदाय की स्थिति है। हरम का स्थान वह स्थान है जो युवा महिलाओं को कैद कर लेता है। विषय; यह वह स्थान है जो जबरन विवाह और यौन खतरों को जन्म देता है। कोई निश्चित रूप से यह तर्क दे सकता है कि यहाँ मुद्दा पिता की विफलता है और भाई को हरम प्रणाली को ठीक से लागू करने में विफल रहना चाहिए; इसके लिए वे ही दोषी हैं।
दरार पड़ना। दूसरी ओर, इस कृति के महिला पात्रों के लिए और
हरम और हाउस बोट के बीच 357

कुछ अन्य लोगों के लिए, सड़क और वेश्यालय जैसी जगहें ही शरण प्रदान करती हैं।

हालांकि अस्थायी रूप से, घर की हिंसा से, क्योंकि वे सहारा प्रदान करते हैं पिता के कोड़े और सौतेले भाई द्वारा बलात्कार के प्रयास के बजाय महिला का साथ।

यह किसका सम्मान है, और इसे कहाँ पाया जा सकता है?

ज़ैनब की कहानी को प्रतीकात्मक रूप से राष्ट्रीय सम्मान पर एक टिप्पणी के रूप में पढ़ा जा सकता है, जो पितृसत्तात्मक साम्राज्यवादी शासक की "देखभाल" की धमकियों से खतरे में पड़ गया था।
“संरक्षित राज्य” के बहाने अन्य नामों से यह सिलसिला जारी रहा, और फिर आयातित सांस्कृतिक कलाकृतियों की अश्लीलता के माध्यम से अपमानजनक ढंग से बहकाया गया।
यहां दांव पर लगी प्रतिष्ठा को, एक प्रभावशाली ढंग से बताई गई प्रथम-व्यक्ति कथा के माध्यम से उजागर किया गया है।
इस कहानी का मुख्य पात्र उस युवती की कहानी है, जिसने—जैसा कि कई टिप्पणीकारों ने पाठकों को याद दिलाया—राष्ट्र का भविष्य अपने हाथों में थाम रखा था।
यह बात और भी ज़ोरदार ढंग से सामने आती है क्योंकि ज़ैनब खुद को अलग-थलग कर लेती है, उसके भाई द्वारा उसके प्रति यौन आकर्षण के फुसफुसाए इशारे उसे मजबूर कर देते हैं।
अपने पिता द्वारा उसे कारावास में डालने से पहले वह खुद को अपने कमरे में बंद कर लेती है।
“सम्मानजनक” एकांतवास का माहौल।41 आज्ञाकारी और सुप्रशिक्षित ज़ैनाब “अपनी छोटी सी मेज पर बैठकर कुछ उपन्यास और कहानियाँ पढ़ती है”42 इसके विपरीत है
अपने भाई की पढ़ने और देखने की सामग्री के साथ, जिसमें (पोस्टकार्ड के साथ) एक पुनर्प्रकाशित पूर्व-आधुनिक यौन नियमावली और राष्ट्रवादी समाचार पत्र अल-मुअय्यद शामिल हैं। अपनी मेज पर आज्ञाकारी रूप से बैठी ज़ैनब की छवि स्थानीय प्रेस में लंबे समय से चली आ रही एक आलोचना को चुनौती देती प्रतीत होती है: कि लड़कियां जानबूझकर दुराचार के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में, या पितृसत्तात्मक घर की दीवारों को तोड़ने, हरम का उल्लंघन करने के साधन

के रूप में उपन्यास पढ़ती हैं।43 शायद पढ़ने वाली लड़की अपने उपन्यासों से कुछ सीखती है—जीवन रक्षा के बारे में कुछ। चौदह वर्षीय ज़ैनब अपने पिता के घर से भाग जाती है।
कारावास में रहते हुए, उसने अपने गहनों को छिपाकर भुखमरी से खुद को बचाया। अपने शरीर को ढककर और खुद को एक मिलाया बलादी में लपेटकर, जो एक गैर-कुलीन महिला (जिसे एकांतवास की सुविधा प्राप्त नहीं होती) का काला लबादा होता है, उसने हरम से अपने प्रस्थान को छिपाया। लेकिन, अपने एकांतवास से बाहर निकलने पर, उसके पास वास्तव में कोई सुरक्षित गंतव्य नहीं है, क्योंकि एकांतवास ने उसे जीवन के अनुभवों से वंचित कर दिया है।
दुनिया, सचमुच बिना किसी ठिकाने के। कुलीन लड़कियों का स्कूल, अपने सावधानीपूर्वक सीमित स्थान—अपने वैकल्पिक हरम—के साथ, उसे इसके लिए तैयार नहीं कर पाया है।
दुनिया में यह चौंकाने वाला प्रवेश (हालांकि इसका मतलब यह भी हो सकता है कि वहां केवल दो साल बिताने के बाद, अपने पिता के कारण उसे वहां से निकाल लिया गया)
तलाक के कारण उन्हें पर्याप्त समय और प्रशिक्षण नहीं मिल पाया। ज़ैनब तुरंत
एक महिला द्वारा उठाया गया जो उसे पारिवारिक संरक्षण की शर्तों के तहत अपने घर में पनाह देती है, 358 मर्लिन बूथ

एक बेटी के रूप में। फिर भी इस महिला के घरेलू स्थान की प्रचुरता व्यंग्यात्मक रूप से दर्शाती है
एक अलग दिशा—उसके "तीन घर" किसी घरेलू चूल्हे का प्रतीक नहीं हैं।
बल्कि ये वेश्यालयों का स्पष्ट संकेत हैं, खासकर इसलिए क्योंकि जिस मोहल्ले में ये जाते हैं, और जहां ये घर स्थित हैं।
अल-बग़ग़ला, जो कि काहिरा का एक कुख्यात रेड-लाइट इलाका था, स्थित था। पाठ के दौरान, ज़ैनब बार-बार उसी इलाके में गायब हो जाती है।
विभिन्न पुलिस स्टेशनों के दरवाजों से लेकर अभिजात वर्ग के चारदीवारी वाले बगीचों तक

ऐसे घर जो—उसके घर की तरह—बेटियों को सुरक्षा देने के बजाय पाखंड के जाल में फंसा देते हैं। वह नील नदी पर तैरती हुई हाउसबोट में समय बिताती है; ये तैरती हुई हाउसबोटें
उस समय "घर" कुख्यात रूप से अवैध कुलीन वेश्यालयों के रूप में जाने जाते थे, जिन्हें अक्सर यूरोपीय स्वामित्व के भ्रम के माध्यम से "संरक्षित" किया जाता था और इस प्रकार मिस्र के अभियोजन से मुक्त रखा जाता था।44 (आज, काहिरा में नील नदी पर लंगर डाले हुए नावों में महंगे मछली रेस्तरां, नाइटक्लब और एक टी.जी.आई. फ्राइडेज़ हैं।) ये तैरते हुए आनंद महल हरम के आदर्श के बिल्कुल विपरीत थे, न केवल अपने
न केवल सम्मान का उल्लंघन, बल्कि ऐसे स्थान भी जिन्हें पितृसत्तात्मक राज्य नियंत्रित नहीं कर सकता था—और वास्तव में, जिन पर उसके पुरुष कर्मचारियों का संरक्षण था।
प्रधानमंत्री अदली याकन पाशा उन्हें एक पुस्तिका की प्रति भेंट करेंगे। वेश्यावृत्ति के संदर्भ में, अथक अबू अल-उयुन ने न केवल काहिरा के आधिकारिक वेश्यावृत्ति क्षेत्रों का उल्लेख किया, बल्कि "ऐसे क्षेत्रों का भी उल्लेख किया जो गणना [या नियंत्रण] से परे हैं, जैसे कि दहाबेह और [अन्य] हाउसबोट ['अवमत], नील नदी के किनारे की झोपड़ियाँ, पेंशन।"45
अब ज़ैनब हमेशा उन आवरणों में लिपटी रहती है जिन्हें मिस्र के मध्यम और उच्च वर्ग की महिलाएं घर के बाहर पहनती हैं (जैसा कि वह लगातार उल्लेख करती रहती है), और वह अपने स्वयं के सदाचार की भावना से सुरक्षित होकर शहरी परिवेश में घूमती है।
पितृसत्तात्मक रूप से परिभाषित हरम के विकल्प को चिह्नित करते हुए—इस पाठ में एक सुरक्षित स्थान के रूप में निर्मित विकल्प। यहाँ, शरीर की उपस्थिति और लैंगिक स्थानिक लेन-देन के बीच एक स्पष्ट संबंध है:
अब जबकि ज़ैनब सड़क के पुरुष प्रधान क्षेत्र में है—एक ऐसा क्षेत्र जहाँ निश्चित रूप से कई महिलाएँ आती-जाती हैं, भले ही आमतौर पर उसकी वर्ग की महिलाएँ न हों—उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि वह कुछ बदलाव करे।
उसका शरीर एक प्रकार के यात्राकालीन एकांत के अनुरूप है, एक पूर्ण आवरण जो उसे सम्मानित व्यक्ति के रूप में दर्शाता है। जबकि, घरेलू परिवेश में, उसे अपने कपड़ों का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है—क्योंकि यह अप्रासंगिक है—जब वह सड़क पर निकलती है,

एक तरह से यह आवरण वही है, और इसे उसकी उपस्थिति के बाहरी संकेत के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
ज़ैनब एक घुमंतू पत्रकार की भूमिका निभाती है, जो दर्शकों को अन्य महिलाओं के "संस्मरण" सुनाती है, जो उसे अपनी कहानियाँ सुनाती हैं। ये अंतर्निहित ये कथाएँ महिलाओं की मौखिक कहानी कहने की परंपराओं को उजागर कर सकती हैं। लेकिन उनकी कहानियों की विषयवस्तु (जबरन विवाह, जबरन रखैल रखना, उत्पीड़न से शरण लेना)
हरम और हाउस बोट के बीच 359

(वेश्यालयों में रहने वाले पति और पिता, इत्यादि) व्यंग्यात्मक रूप से प्रतीत होता है
और दुख की बात है कि इससे उन कहानियों की नैतिक दिशा उलट जाती है जिनमें महिलाओं को शामिल किया गया हो सकता है।
घर पर अपनी बेटियों को बता रही हैं।46
संस्मरणों में अंतर्निहित प्रमुख कथा एक ऐसी महिला की है जिससे ज़ैनब की मुलाकात हाउसबोट पर होती है। यह महिला अपने पिता द्वारा जबरन एक बहुत बड़े उम्र के व्यक्ति से शादी करने के बाद वहां से भागकर आई है।47 इसी तरह, अपने संस्मरणों के दूसरे खंड, 'रहस्य' में अपनी कहानी की एक अगली कड़ी बताते हुए, ज़ैनब खुद भी एक तयशुदा शादी से बचने के लिए अपने पैतृक घर से दूसरी बार भाग निकलती है। वह एक "घरेलू सेवा कार्यालय" के माध्यम से नौकरी खोजने का प्रयास करती है, लेकिन इसका परिणाम यह होता है कि उसे एक और दलाल अपने साथ ले जाती है: "किस्मत ने मुझे वेश्यालय में धकेल दिया। आदरणीय पाठक इसे उचित समय पर पढ़ेंगे।"48 इस खंड में, पाठ ज़ैनब और उन महिलाओं के बीच विरोधाभासों की एक श्रृंखला के इर्द-गिर्द संरचित है जिनसे वह मिलती है, जो अपरिवर्तनीय रूप से पतित हो चुकी हैं और विशिष्ट हैं।
उनके यूरोपीय पहनावे से, जो अबू अल-उयुन और उनके साथियों द्वारा शोक व्यक्त किए गए यूरोपीय तौर-तरीकों में सामाजिक पतन का प्रतीक है।49 इस प्रकार, मुठभेड़
पश्चिम के आकर्षणों से प्रभावित युवा मिस्री महिला की स्थिति का कारण यह नहीं है कि...

अखबार को गुमनाम पत्र लिखने वाले लेखकों ने वास्तविक खतरे को रेखांकित किया।
महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता: "अपनी कमाई और अपने दम पर स्वतंत्र" संपत्ति होने पर, उसे पता चलेगा कि उसे किसी विशेष पुरुष का अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि वह अपने आसपास मौजूद सर्वश्रेष्ठ पुरुषों में से किसी एक को चुन सकती है।52
इस प्रकार, वेश्यावृत्ति को वैध बनाने को लेकर पुरुषों के बीच हुई तीखी बहस के केंद्र में महिलाओं के अधिकारों को लेकर उनकी धारणाओं से जुड़ी चिंताएँ थीं।
उभरती हुई स्वतंत्रताएँ। ज़ैनब की कहानी इन चिंताओं को दूर करती है।
यह पाठ यह दर्शाता है कि सड़कों पर घूमने की उसकी "आज़ादी" वास्तव में उसके पिता के घर से एक हताश पलायन है, और वेश्यावृत्ति को पितृसत्तात्मक दबाव से भाग रही हताश महिलाओं के अंतिम उपाय के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार यह पाठ स्थान के सामाजिक अर्थों, लैंगिक मानदंडों के तरीकों और सामाजिक व्यवस्थाओं के प्रभाव की ओर ध्यान आकर्षित करता है।
स्थानों पर किस प्रकार कब्जा किया जाना है, यह भी सत्ता संबंधों को निर्धारित और बनाए रखता है।
इसके अलावा, अपनी औपचारिक शिक्षा के बावजूद, ज़ैनब घर के बाहर ही दुनिया को सीखती है, और यहीं वह पढ़ने का उपयोग खुद की मदद करने और सीखने की शुरुआत करने के लिए करती है।
वह अपना भविष्य खुद तय कर सकती है। इस प्रकार यह पाठ स्थान और ज्ञान तक पहुंच के बीच संबंध को संबोधित करता है: किसी व्यक्ति को सीमित रखना उसे ज्ञान से वंचित कर सकता है।
कुछ प्रकार की शक्तियों को जानने और उनका प्रयोग करने से, जैसा कि डैफ्ने ने किया था।
स्पेन ने विशेष रूप से इस पर जोर दिया है।53
कहानी के अंत में, कथावाचक अपने पिता के घर लौटने का विकल्प चुनती है।
जिस आखिरी घर में उसने शरण ली थी, उस पर छापा मारा जा चुका है, और पिता के घर लौटना ही इस मजबूरी से बचने का एकमात्र रास्ता है।
वेश्याओं को जिन चिकित्सा परीक्षाओं से गुजरना पड़ता था, वे दुखद थीं।

पिता और राज्य के बीच चुनाव करते हुए, ज़ैनब अधिक परिचित सत्ता और पारिवारिक परिवेश को चुनती है। ऐसा लगता है कि घर में कैद होना ही उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती है।
राज्य के विकल्प की तुलना में घर बेहतर है, हालांकि दोनों विकल्पों की संभावित भयावहता घर में संदिग्ध स्वागत को रेखांकित करती है। ज़ैनब के पिता उसे पाते हैं
पुलिस स्टेशन में, और उसे यह विकल्प चुनने के लिए एक अप्रत्याशित पुरस्कार मिलता है।
उसे बुलाओ। वह उसे बताता है कि (उसकी शादी अभी तक पूरी नहीं हुई है, क्योंकि वह शादी की रात अपने पिता का घर छोड़कर भाग गई थी) उसकी
उसके पति की पिछली रात मृत्यु हो गई है और वह ग्रामीण इलाके में अपनी विशाल संपत्ति उसके नाम कर गया है। हालाँकि, पाठ में मुख्य रूप से उसकी पुनर्स्थापना पर ज़ोर दिया गया है।
अपने पैतृक घर में, पिता के स्नेह की पात्र और सौतेली बेटी के रूप में— माँ का सम्मान। हालाँकि वह अपनी प्रतिष्ठा खो चुकी है, लेकिन ज़ैनब का अपने सभी कारनामों के दौरान किसी तरह कुंवारी बने रहना इस बात का प्रमाण है कि वह फिर से अपनी प्रतिष्ठा वापस पा सकती है।
हरम के दायरे में प्रवेश करें। कहानी के सुखद अंत का सार यह है कि सभी पात्र सहचर्य के उदार राष्ट्रवादी आदर्श से वश में हो जाते हैं।
शादी। ज़ैनब के सौतेले भाई नुमान का एक "अच्छी महिला" से विवाह होने के बाद सुधार हो गया है। ज़ैनब अपनी नई भाभी के भाई से खुशी-खुशी शादी कर लेती है, उसे एक उत्कृष्ट युवक बताते हुए और स्वेच्छा से।
हरम और हाउस बोट के बीच 361

अपने पिता द्वारा तय की गई शादी की व्यवस्था का पालन करते हुए, जिसमें दूल्हा-दुल्हन की सुनियोजित मुलाकात और एक अभिभावक की देखरेख में दुल्हन को देखना शामिल था।
अब जबकि वह अपने पैतृक घर में सुरक्षित वापस आ चुकी है। फिर भी, इस पाठ में स्थान की राजनीति एक चेतावनीपूर्ण अनुस्मारक प्रदान करती है कि
घरेलू स्थान को स्वतः ही स्त्री स्थान के रूप में नहीं देखा जा सकता। जैसा कि मीके बाल ने कहा है, यह समीकरण कम से कम समस्याग्रस्त है, क्योंकि घर

जहां मुखिया होता है: “घर में पितृत्व स्थापित होता है;
घर पितृत्व का प्रतीकात्मक रूपक बन जाता है।”54 हमारे उद्देश्य के लिए, यह घरेलू स्थान पर पितृसत्तात्मक नियंत्रण को उजागर करता है। इस संदर्भ में, मिल्ड्रेड मोर्टिमर शरणस्थल के रूप में कमरे के महत्व को इंगित करती हैं, वूल्फियन लेखन और स्वप्न देखने के स्थान के रूप में।55 पितृसत्तात्मक घरेलू स्थान में कैद होने से स्वतंत्रता के आंतरिक स्थान की तलाश होती है। ज़ैनब का कमरा, किताबों से भरी उसकी मेज़ और उसके सपने। लेकिन उसके लिए, ये सपने बुरे सपने हैं, और इससे भी बढ़कर, जब उसका भाई उसके कमरे में घुसकर उसे नशीली दवा देने की कोशिश करता है, तो उनकी भविष्यसूचक भूमिका साकार होती प्रतीत होती है। कमरा—या, ज़ैनब के विशेष ऐतिहासिक संदर्भ में, लघु और
आधुनिक हरम, जो महिलाओं की सुरक्षा का स्थान है, कोई समाधान नहीं देता। केवल भाग निकलने से, और साथ ही पश्चाताप कर चुके पिता के पास लौटने से ही लड़की का भविष्य सुखमय हो सकता है। पिता और पुत्री दोनों ही इस अनुभव से अनुशासित प्रतीत होते हैं।
संरक्षण के झूठे दावों को उजागर करके और इसके दमनकारी पहलू पर जोर देकर उच्चवर्गीय घर के संदर्भ में, यह पाठ हरम की अवधारणा पर सवाल उठाता है—और लैंगिक स्थानिक पृथक्करण की अवधारणा—सही सामाजिक व्यवहार के लाभकारी और सौम्य गारंटर के रूप में। इसके विपरीत, वे महिलाएं जो आती-जाती रहती हैं। हाउस बोट में और "घर" अपनी शारीरिक अखंडता के गारंटर हैं, क्योंकि वे ही (और महत्वपूर्ण रूप से) घावों को भरने वाले भी हैं।
अन्य महिलाओं के। इसका यह मतलब नहीं है कि यह या अन्य ग्रंथ ऐसे स्थलों को प्रस्तुत करते हैं।
वेश्यावृत्ति को निर्विवाद रूप से सकारात्मक रोशनी में चित्रित किया गया है, क्योंकि इन ग्रंथों में ऐसे पुरुष और महिलाएं भी मौजूद हैं जो दबंग, क्रूर, चोर और बुरी माताएं हैं।
जो अपनी बेटियों को वेश्यावृत्ति में धकेलते हैं, और यूरोपीय शहरी गरीबी के दयनीय अवशेषों को दर्शाते हैं। ऐसा ही एक परिदृश्य मेरे अगले लेख में देखने को मिलेगा।
मुदक्किरत 'आमिल फ़ी बिका' अल-अहिरत (वेश्या के ठिकाने पर काम करने वाले के संस्मरण)।

वेश्याओं के साथ झुग्गी-झोपड़ी में रहना

यह "वेश्याओं के ठिकाने में काम करने वाला" कौन है? पहली नज़र में, शीर्षक की व्याकरणिक संरचना एक पुरुष वेश्यालय कर्मचारी के नज़रिए से सब कुछ बताने का वादा करती प्रतीत होती है। लेकिन वास्तव में, वह एक दर्शक है, और अधिक-362 मर्लिन बूथ

स्पष्ट रूप से श्रमिक वर्ग का नहीं बल्कि एक एफेंडी (एक शिक्षित, श्वेत व्यक्ति)
(कॉलर कर्मचारी या पेशेवर)। वह इन "ठिकानों" में मौजूद तो है, लेकिन उनका हिस्सा नहीं है। इसलिए, उसका "संस्मरण" किसी अधीनस्थ वक्ता का नहीं, बल्कि कम से कम संभावित रूप से मध्यम-वर्गीय पर्यवेक्षक का है, जो 1920 के दशक की लोकप्रिय मिस्री पत्रिकाओं का निर्माण और पठन करने वालों का प्रतीक है।56 सक्रिय कृदंत
‘अमिल (श्रमिक)’ को यहाँ शायद इसके कृदंत रूप में बेहतर समझा जा सकता है। सक्रिय का अर्थ, क्योंकि भले ही वह एक प्रकार के फ्लैनेउर के रूप में प्रस्तुत होता है, कथाकार कार्यकर्ता और पर्यवेक्षक दोनों की भूमिका निभाता प्रतीत होता है।57 एक अंतरपाठ्य परिपथ इन दोनों ग्रंथों को जोड़ता है, उस समय प्रचलित प्रथा के माध्यम से जिसमें परस्पर संदर्भित, पिछले पृष्ठ के विज्ञापन प्रसारित किए जाते थे जो नैतिक व्याख्याओं और उत्तेजक संकेतों के मिश्रण को दोहराते थे।
इन और इसी तरह के अन्य ग्रंथों में पाए जाने वाले संदर्भों को दर्शाने का प्रयास ज़ैनब के संस्मरण में किया गया है।
मुधक्किरात ‘अमिल फ़ी बिक़ा‘ अल-‘अहिरात के लिए पाठकों को आकर्षित करने हेतु इसके पिछले पृष्ठों पर विज्ञापन सामग्री में यह स्पष्ट किया गया है कि यह संस्मरणकार किस दूरी पर स्थित है।
उनके विषय से:

हमने इन संस्मरणों को पढ़ा और पाया कि ये उन सभी लोगों के लिए सर्वश्रेष्ठ सबक हैं जो बुराइयों में डूबे हुए हैं, क्योंकि इसके लेखक ने पतित जीवन के

जहाजों पर वेश्यावृत्ति के सभी नुकसानों का गहन शोध किया है। लेखक ने अपने संस्मरण लिखे हैं।
वेश्याओं के प्रेम, उनकी धूर्तता और
धूर्तता, जो मनुष्य को बांधती है और जो उसे हानि पहुंचाती है। वास्तव में ये सभी के लिए एक स्पष्ट और उत्कृष्ट सबक हैं। लेखक ने इन संस्मरणों को एक उसने वेश्याओं की सभी सनक और सुख-सुविधाओं की जांच करके सदाचार की सेवा की है।58

ज़ैनब की तरह, यह कथाकार भी अपने वर्णन की संदर्भबद्धता पर ज़ोर देता है: "ये किसी साहित्यकार द्वारा लिखी गई काल्पनिक कहानियों का समूह नहीं हैं, न ही किसी अन्य साहित्यकार द्वारा लिखी गई कोई काल्पनिक कहानी है।"
किसी कुशल कथाकार द्वारा रचित कहानी संग्रह, या सिद्धांत... ये सच्ची कथाएँ, वास्तविक कहानियाँ, महत्वपूर्ण शोध, स्पष्ट चित्र हैं, जो हमारी सामाजिक स्थिति को स्पष्ट करते हैं।"59 वास्तव में, "वेश्याओं का ठिकाना" एक
समाज का सूक्ष्म रूप, जहाँ "संस्मरणकार" को "जीवन के अध्ययन" के प्रति अपने जुनून की सर्वोत्तम संतुष्टि मिलती है, एक सामूहिक स्थल जहाँ "हर तरह के लोग प्रवेश करते हैं"
...सामाजिक संरचना के प्रत्येक प्रतिनिधि, चाहे वह सरकारी कर्मचारी हो, प्रशासक हो, लेखक हो, कवि हो, छात्र हो, किसान हो, शिल्पकार हो या व्यापारी हो, सभी महिलाओं के निर्णयों के अधीन होते हैं।60 महिलाएं और वेश्याएं बन जाती हैं
यहां धुंधली और अतिव्यापी श्रेणियां हैं, एक बिंदु है जिसे मैं नोट करना चाहता हूं, यदि नहीं
इस पर विचार करने के लिए। और यह तथ्य कि शीर्षक में अस्पष्ट शब्द biqa‘ (एकवचन,
बुका (buq‘a) का अर्थ है धब्बे, दाग या स्थान, न कि कोई अधिक विशिष्ट शब्द। जैसा कि बायुत अल-दा'आरा (वेश्यावृत्ति के घर) से पता चलता है कि "वेश्याओं"
हरम और हाउस बोट के बीच 363

"ठिकाने" की जानकारी सीमित होने के बजाय व्यापक है। यह फैलकर अन्य क्षेत्रों में भी पहुंच जाती है।
गली।
कथाकार जिन "महिलाओं के फैसलों" का जिक्र कर रहा है, वे आम बोलचाल में प्रचलित जुनून से प्रेरित घिसे-पिटे और मनमौजी फैसले नहीं हैं।
इस युग के आख्यानों और अनुवादों में। इस पाठ में, महिलाओं को कुछ हद तक अभिकर्ता के रूप में चित्रित किया गया है, लेकिन न तो उनके स्वयं के पतन के अभिकर्ता के रूप में और न ही
पुरुषों की इच्छाओं पर शासन करने वाले अत्याचारी। उनकी सक्रियता एक स्त्रीकृत अस्तित्व रणनीति में निहित है, जिसमें धूर्तता को परिपूर्ण करना शामिल है, जो सदियों से चली आ रही महिलाओं की चालाकी की धारणा का एक आधुनिक और व्यावहारिक रूप है, जो कथाओं में पिरोई हुई है।
उत्तरी अफ्रीका से ईरान तक।61 समानांतर रूप से, और फिर भी पूरी तरह से अलग, पुरुष कथावाचक की धूर्तता यह है कि वह "मेरे सामने की भूमिकाओं को निभाता है, और एक ही दिन में कई लोगों को पालता है।"
पर्दों के ज़रिए इन "धूर्त महिलाओं" की दुनिया को उजागर करना: "और मैं यह कर सकती थी"
केवल इन स्थानों पर बार-बार जाकर, अपना खाली समय इनमें व्यतीत करके ही मैं ऐसा कर सकता हूँ।”62 लेकिन कथाकार/लेखक का समय का निवेश उतना सरल नहीं है जितना प्रतीत होता है।
ऐसा प्रतीत होता है, क्योंकि वह अंततः पाठक को यह बता देता है कि वह दिन में एक सरकारी कर्मचारी है, राज्य का सेवक है। यदि यह उसे उस बात को उजागर करने का अधिकार देता है जिसे वह स्पष्ट करता है, तो
समाज के निचले तबके में, यह उसे औपचारिक रूप से सीधे तौर पर फंसाता है। सत्ता संरचना सीमाओं की निगरानी के लिए जिम्मेदार है। यहाँ, पुरुष कथावाचक अपने शरीर के चारों ओर नैतिकता का आवरण ओढ़ लेता है, जैसे ही वह उजागर करता है।
कम सुरक्षित शरीरों में रहकर, वह खुद को उनके द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियों के संक्रमण से बचाता है। वह उनका वार्ताकार, पर्यवेक्षक और व्याख्याकार है—लेकिन देखने में कभी भी उनका प्रेमी नहीं। एक कथाकार के रूप में, वह ज़ैनब के समकक्ष है; फिर भी, उससे अलग

उसके पास असीमित शक्ति है, वह बिना किसी पिता या बड़े भाई की इच्छा के हस्तक्षेप के, और निश्चित रूप से हरम की दीवारों से बेपरवाह होकर, आ-जा सकता है।
यदि किसी क्षण वह किसी अन्य युवक से क्षण भर के लिए मोहित होता हुआ प्रतीत होता है, तो उस प्रलोभन को अस्वीकार करना एक सामाजिक आलोचक के रूप में उसके अधिकार को पुनः स्थापित करता है।
मुख्यधारा के समलैंगिक सामाजिक विमर्श में, "पुरुष से पुरुष।" क्या उसका संकेत
क्या युवक के समलैंगिक दृष्टिकोण के प्रति संवेदनशीलता समलैंगिक सामाजिक अधिकार को मजबूत करती है और स्त्री दर्शकों को और अधिक बहिष्कृत करती है? अपने अनाम वार्ताकार, जिसे "एक [पुरुष] मित्र" के रूप में वर्णित किया गया है, और निश्चित रूप से पाठक (जो परोक्ष रूप से पुरुष है) के लिए, यह पर्यवेक्षक निम्नलिखित का वर्णन करता है:
उस युग और उसके सामने की सामाजिक वास्तविकता को सर्वव्यापी भ्रष्टाचार और कुकर्मों की "कथा" के रूप में प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा: "मेरा मानना है कि आपने पवित्रता, सम्मान और सुंदर स्त्री के व्यापार की कहानी पढ़ी है; [हम] कुंवारी कन्याओं की बिक्री के युग में हैं।"
और संभ्रांत महिलाओं के बारे में।" यह कथाकार खुद को उस युग के कथित प्रतिनिधि पात्रों से अलग करते हुए घोषणा करता है कि वह स्वयं को उनमें से एक नहीं मानता।
“इस पीढ़ी के पुत्रों में।”63 इस पाठ में, सुकुत—पतन—है
समाजव्यापी और केवल अस्पष्ट रूप से लिंग-विशिष्ट। यह 364 मर्लिन बूथ से अधिक मेल खाता है।

पतन की अवधारणा पर एंडरसन की अंतर्दृष्टि के करीब, इसे "नाटकीयकरण" के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
एजेंसी की दुविधाएँ और आत्म-पहचान की प्रकृति के बारे में अनिश्चितताएँ, चरित्र और समाज।"64 और अगर वेश्याएं कथित तौर पर बिना पुरुषों वाली महिलाएं हैं, तो यह कथा (ज़ैनब की तरह) वेश्याओं को पुरुषों के साथ महिलाओं के रूप में दिखाती है।

वे पुरुष—चाहे पति हों, पिता हों, भाई हों या “साथी”—जो वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देते हैं और उसे बनाए रखते हैं। सम्माननीय तो वे प्रतीत होते हैं जो
पुरुष-नियंत्रित स्थान से हमेशा के लिए मुक्त हो गए हैं।65
पुरुष पर्यवेक्षक और इतिहासकार सड़क से देखते हुए और कभी-कभी अपने वार्ताकारों के "घरों" में जाते हुए, अंतर्निहित कहानियाँ
ये व्यक्ति घर/निजी/सुरक्षित बनाम सड़क/सार्वजनिक/असुरक्षित के द्वंद्व का उलटा निर्माण करते हैं। ज़ैनब की कहानी की तरह, यह "घरेलू स्थान" है। वह खतरनाक है, जबकि सड़क (अस्थायी) सुरक्षा प्रदान करती है। यह परिवार है। जो युवा महिलाओं को खतरे में डालता है: पति अपनी पत्नियों को बेचते हैं, माताएं अपनी बेटियों को बेचती हैं, और महिलाएं दुर्व्यवहारपूर्ण विवाहों से खुद को मुक्त कराती हैं, जबकि राज्य...
यह पितृसत्तात्मक अधिकारों के साथ खिलवाड़ करता है। उदाहरण के लिए, वेश्या के रूप में पकड़े जाने और पंजीकृत होने से एक अलग हो चुकी या तलाकशुदा महिला असुरक्षित स्थिति में आ जाती है, क्योंकि अब उसके पति या पूर्व पति के लिए उसे ढूंढना आसान हो जाता है।
और उस पर अपना दावा जताए। कथाकार बताते हैं, "उसे डर था कि वह झूठा दावा करेगा कि वह उसके घर से भाग गई है, और फिर उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा।" उसने मुझसे वकील लेने के बारे में सलाह मांगी। मैं उसकी कहानी सुनकर दंग रह गया, और मुझे एहसास हुआ कि चूंकि वही उसे इस जगह लाया था, इसलिए वही अपराधी था।”66
प्रारंभ में, यह कथावाचक अन्य कथावाचकों की तुलना में कहीं अधिक सहानुभूतिपूर्ण प्रतीत होता है।
अबू अल-उयुन ने सुधारवादी चिंताओं से ग्रस्त महिलाओं के बारे में लिखा है। इसके अलावा, विभिन्न पुरुषों के दोषों को इंगित करने के साथ-साथ, उन्होंने कुछ रूपों का वर्णन भी किया है।
राज्य के प्रति महिलाओं का प्रतिरोध (जैसे कि एक महिला वेश्यालय मालकिन का पूरे पुलिस दस्ते के साथ सफल टकराव)। लेकिन जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ती है जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, यह पर्यवेक्षक लगभग एक गुप्त एजेंट बन जाता है—और वह भी किसी खास उद्देश्य से नहीं।

वह जिन महिलाओं का अवलोकन करता है, उनकी ओर से। सरकार के हस्तक्षेप को बढ़ाने के उनके समर्थन से—ऐसा प्रतीत होता है कि वह अबू अल-उयून के पक्ष में नहीं हैं—यह बात अज़बकिया के पुलिस प्रमुख के साथ उनके पत्राचार से स्पष्ट होती है। काहिरा का यह ज़िला, पुराने और नए शहर के बीच स्थित, शहर का केंद्र था।
वेश्यालय की गतिविधियों को कानूनी मान्यता प्राप्त है और यहाँ कई "गुप्त घर" स्थित हैं। कथावाचक पुलिस प्रमुख को पत्र लिखकर कोकीन के अड्डों की मौजूदगी के बारे में "सूचित" करता है। वह उन "महिलाओं" का भी उल्लेख करता है जो [दवाइयों के लिए] फार्मेसी नहीं जाती हैं।
निर्धारित चिकित्सा परीक्षण], और वे लोग जो केवल देर से आते हैं, और वे महिलाएं जो जहर का व्यापार करती हैं, और वे कहाँ छिपती हैं जब टुकड़ी आती है
बीत जाता है।"67 लैंगिक स्थानों की राजनीति के लिए यहाँ जो महत्वपूर्ण है, वह यह है कि
पिता या पति का घर—और राज्य के पितृसत्तात्मक शासन के क्षेत्र
हरम और हाउस बोट के बीच 365

और कारावास (पुलिस स्टेशन, फार्मेसी)—को एक साथ समूहीकृत किया गया है महिलाओं के लिए खतरे के स्थान बन जाते हैं, जबकि सड़क और वेश्यालय भी खतरे के स्थान बन जाते हैं।
(सापेक्ष) सुरक्षा के साथ-साथ महिला समुदाय की भी। और दोनों ग्रंथ उन तरीकों को उजागर करते हैं जिनमें पिता द्वारा परिभाषित "निजी" पारिवारिक स्थान और "सार्वजनिक"
राज्य द्वारा परिभाषित सरकारी नियमन और सुरक्षा के क्षेत्र, एक साथ मिलकर काम करते हैं और अंततः युवा महिलाओं के स्वास्थ्य और खुशी के खिलाफ कार्य करते हैं।
इस संदर्भ में, आइए संक्षेप में ज़ैनब की ओर लौटें। एक ऐसे दृश्य में जो बहुत कुछ कहता है।
अखबारों में अपराध और पुलिसिंग को समर्पित कॉलम स्पेस में हो रही बढ़ती जगह के संदर्भ में, हाउसबोट (वेश्यालय) की मालकिन के पति ने यह बात कही।

जिसने उसे अपने घर में पनाह दी थी, वह ज़ैनब को "अखबारों में छपी लड़की" के रूप में पहचानती है।68 वह, अपनी निराशा के साथ, अनुशासनात्मक निहितार्थों को पहचानती है: वह
उसे भाग जाना चाहिए, वरना उसके पिता उसे ढूंढ लेंगे। पाठ एक साथ इन दोनों बातों का आह्वान करता है।
नए सार्वजनिक प्रदर्शन और उचित सामाजिक व्यवहार की सीमाओं को नियंत्रित करने के लिए पितृसत्तात्मक अधिकार का होना—भले ही ज़ैनब की कहानी सुनाते समय ऐसा हो—
उन सीमाओं की वैधता पर सवाल उठाता है।

सी ऑनसी एलयूएस आई ओएन एस

ये ग्रंथ न केवल हरम के स्थान को एक परिवर्तनशील ऐतिहासिक परिदृश्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं,
लुप्त होते सामाजिक स्थान; वे इस धारणा पर भी सवाल उठाते हैं कि यह शब्द सम्मान और संरक्षण का एक पवित्र स्थान है। वे सुझाव देते हैं
इसके बजाय यह जोखिम और यहां तक कि खतरे का स्थान हो सकता है—कि यह
यह उस सम्मान के विपरीत परिणाम उत्पन्न करता है जिसकी रक्षा करने का इसका उद्देश्य है। महिलाओं की (प्रतीकात्मक) आवाज़ों के माध्यम से इस आलोचना को व्यक्त करके, जो अपनी बात स्पष्ट रूप से कहती हैं।
इस व्यवस्था और इसकी अपेक्षाओं के शिकार के रूप में, ये ग्रंथ उन राष्ट्रीय नागरिकों की आवाज़ों के लिए जगह बनाते प्रतीत होते हैं जिन्हें आमतौर पर मौका नहीं दिया जाता था।
उस युग के सार्वजनिक विमर्शों में एक महत्वपूर्ण आवाज़। हरम की आलोचना इसलिए सशक्त है क्योंकि कथा संरचना अप्रत्यक्ष रूप से अभिजात राष्ट्रवादी टिप्पणीकारों (चाहे पुरुष हों या महिला) के उस अधिकार को चुनौती देती है जिसके तहत वे हरम के स्थान को परिभाषित करते हैं।
दयनीय स्त्री विषय। फिर भी, अंत में, ये ग्रंथ एक वेंट्रिलोक्विज़्म का कार्य करते हैं जो कथात्मक अधिकार को राजनीतिक केंद्र में वापस लाता है, जबकि शायद

इससे विवेचनात्मक अधिकार के उस स्वीकृत केंद्र को व्यापक बनाने की संभावना खुल जाती है।
पतन के वृत्तांतों के रूप में, अपने सावधानीपूर्वक और व्यापक स्थानिक मानचित्रण में, ये संस्मरण स्त्री शरीर की नई—या शायद केवल अधिक दृश्यमान—गतिशीलता के बारे में चिंता के विमर्श का जवाब देते हैं। यद्यपि यह विमर्श स्थानीय था, यह साम्राज्यवादी विमर्शों से आकारित और प्रभावित था।
प्रथाएं भी। "महिला प्रश्न" पर स्थानीय और साम्राज्यवादी विमर्श।
366 मैरिलिन बूथ

इसने स्थान और सामाजिक विमर्श में स्त्री शरीर को पराया बना दिया, उसे विस्थापित कर दिया।
सार्वजनिक चिंता का एक क्षेत्र, जबकि स्पष्ट रूप से इसे निरंतर प्रयास का लक्ष्य बनाया जा रहा है।
सार्वजनिक आलोचना। दूसरे शब्दों में, और स्थानीय प्रेस के माध्यम से फैलते हुए, महिला शरीर पर एक प्रमुख विवेचनात्मक ध्यान केंद्रित किया गया है—एक ऐसे शरीर के रूप में जो विच्छेदित है।
घरेलू परिवेश में निहित होने के कारण—ऐसा प्रतीत होता है कि यह वास्तविक युवा महिलाओं के भाग्य से उतना चिंतित नहीं था जितना कि उससे कहीं अधिक चिंतित था।
स्थानिक लिंग-निर्धारक सीमाओं का कथित निलंबन और
सामाजिक पुनरुत्पादन के परिचित स्वरूपों पर इस निलंबन के परिणाम। महिला शरीर परिवार का प्रतीक था; और महिला के लिए पार करना
सम्मान के क्षेत्र को सीमांकित करना परिवार और इस प्रकार राष्ट्र के साथ विश्वासघात करना था।
ये “संस्मरण” नारी शरीर को केंद्र में लाते हैं—आंशिक रूप से एक अंतहीन प्रक्रिया के माध्यम से
यौन हिंसा की एक विलंबित लेकिन हमेशा अपेक्षित कहानी—क्योंकि वे कुलीन परिवारों की युवा महिलाओं के लिए हरम प्रणाली की विफलता को उजागर करते हैं।

और सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से स्वीकार्य विकल्प का अभाव। वे नारी- प्रधान परिवेश में घेराबंदी की व्यवस्था की झूठी प्रतिष्ठा को दर्शाते हैं।
“संरक्षण” और बहिष्कार (दूसरे शब्दों में, हरम) के विरोधाभासों को एक साथ रखकर स्पष्ट किया गया है।
पितृसत्तात्मक और पितृसत्तात्मक परिवार, परित्यक्त महिला का घर और वेश्यालय। वे विशेषाधिकार प्राप्त सामाजिक सम्मान के विमर्श को उजागर करते हैं—महिलाओं की पवित्रता और आज्ञाकारिता पर आधारित सम्मान, और साथ ही (महत्वपूर्ण रूप से) आर्थिक विशेषाधिकार पर आधारित सम्मान—"भविष्य" का वर्णन करके।
अभिजात वर्ग और मध्यम वर्ग की युवा महिलाओं का व्यक्तित्व उनकी पसंद से आकार लेता है, लेकिन केवल
दो समान रूप से दर्दनाक विकल्पों में से एक का चुनाव। वे उस दोष को विस्थापित करते हैं जो कई मामलों में युवा महिलाओं (और कुछ हद तक युवा पुरुषों) पर डाला गया था।
उस समय की बयानबाजी पिता की छवि और पितृसत्तात्मक घर के स्थान पर केंद्रित थी, जिसे हरम के रूप में दर्शाया गया था, लेकिन केवल इसकी नकारात्मक संभावनाओं में।69
स्त्री सामाजिकता और आपसी सहयोग के स्थान के बजाय, हरम से निष्कासित महिलाओं के बीच सामाजिकता और सहयोग देखने को मिलता है। इनमें से कुछ रचनाएँ—जैसे ज़ैनब की कहानी—
इसे एक से अधिक तरीकों से पढ़ा जा सकता है। क्या हरम प्रणाली विफल हो गई है? या क्या पिता इसे ठीक से लागू करने में विफल रहे हैं? एक अच्छा बनकर कहानी के अंत में, पिता उस व्यवस्था को पुनः स्थापित कर देते हैं, जैसा कि उसे काम करना चाहिए।
फिर भी, परिवार के पुरुषों के क्रोध और मनमानी के प्रति युवती की संवेदनशीलता इस व्यवस्था की नैतिक कमजोरी को रेखांकित करती प्रतीत होती है।
चतुर संस्मरण, ये ग्रंथ केवल पुनः प्राप्त करने के लिए ही देते हैं। जबकि वे वास्तविक जीवन के अनावरण का विज्ञापन करते हैं, लेखकत्व और

कथात्मक प्रामाणिकता पर सवाल उठाते हुए, वे अनुभव की प्रामाणिकता और प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं, जबकि दावा करते हैं कि वे इसे बिना किसी समस्या के प्रस्तुत करते हैं। जिसे मैंने कहा है
हरम और हाउस बोट के बीच 367

कृत्रिम या कृत्रिम आवाज़ में लिखे गए संस्मरण हाशिए पर पड़े या उपेक्षित सामाजिक व्यक्तियों के अनुभवों को आवाज़ देने और इस प्रकार उनकी कमियों को उजागर करने का दावा करते हैं।
अभिजात वर्ग वंचितों के दैनिक जीवन का वर्णन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शोधकर्ता के सामने विश्लेषणात्मक, अभिलेखीय और राजनीतिक दुविधा यह है कि वह इस संभावना का सम्मान करे कि...
मौखिक, शाब्दिक रूप से मध्यस्थ अनुभव, साथ ही इन ग्रंथों को आकार देने वाले प्रतिनिधित्व और जिम्मेदारी की (अतिरिक्त) परतों पर ध्यान देना।
उन विषयों के लिए आत्मकथात्मक अधिकार का दावा करना जिनकी कोई आवाज़ नहीं थी
ये ग्रंथ उस समय के प्रमुख विमर्शों को विभाजित करते हैं और कभी-कभी उनकी प्रतिध्वनि भी करते हैं। फिर भी, अपनी-अपनी कथाओं की रूपरेखा में, वे
उन अधिक आधिकारिक प्रवचनों की चुप्पी को उजागर करना—चाहे वे राज्य प्रतिनिधियों के हों, नारीवादियों के हों, वेश्यावृत्ति विरोधी कार्यकर्ताओं के हों, या सरकार के विरोध में उदार राष्ट्रवादियों के हों। यदि उभरते अरबी उपन्यास ने पता लगाया
स्थानीय अभिजात वर्ग की समाज में महिलाओं के व्यवहार से जुड़ी प्रचलित अपेक्षाओं के प्रति चिंता को दर्शाते हुए, इस कृत्रिम संस्मरण ने उस चिंता को एक कदम आगे बढ़ाते हुए एक प्रथम-पुरुष कथावाचक शैली का निर्माण किया, जो महिलाओं के अनुभवों से (और केवल उनके लिए नहीं) बोलने का दावा करती है, और पाठकों को कथात्मक प्रामाणिकता प्रदान करने का आशय व्यक्त करती है। काहिरा के अंडरवर्ल्ड में प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर यह पुस्तक एक मार्ग का पता लगाती है।
हरम से लेकर हाउसबोट तक। स्थान के अपने संगठन और शहरी मिस्र के अपने विशेष मानचित्रण में, ये ग्रंथ संस्था पर सवाल उठाते हैं।

आदरणीय बैत—घर, परिवार—को आलोचनात्मक दृष्टि से खोलकर और उसे काल्पनिक बताकर। साथ ही, जैसे-जैसे ये ग्रंथ हरम की दीवारों की अभेद्यता को ध्वस्त करते हैं, वैसे-वैसे वे अन्य घरों का निर्माण करते हैं जो
इनमें कोई अवरोध नहीं है, बल्कि पुरुषों और महिलाओं का निर्बाध आवागमन होता है। और इन अन्य घरों के स्थानों से, लेख अभिजात वर्ग की आलोचना को व्यक्त करते हैं।
राजनीति और व्यवहार के क्षेत्र। वे समाज में महिलाओं की बढ़ती दृश्यता को लेकर व्याप्त चिंताओं के विमर्श का प्रतिवाद करते हैं।
फिर भी, इन ग्रंथों द्वारा उत्पन्न अंतिम मार्ग, इच्छा का मार्ग है,
यह एकतरफा रास्ता नहीं है। वास्तव में, ये कथाएँ पिता के घर लौटने का मार्ग प्रशस्त करती हैं। उस वापसी की संभावना की परिस्थितियाँ इसमें निहित हैं। नारी पवित्रता के रूप में सम्मान का संरक्षण, एक सामाजिक मूल्य जिसका ये ग्रंथ विरोध नहीं करते बल्कि समर्थन करते हैं। हालाँकि, वे ऐसा करते समय पैतृक घर की दीवारों से सम्मान को विस्थापित करके शारीरिक हरम का निर्माण किया गया।
स्वयं स्त्री शरीर के लिए। इस प्रकार वे स्त्री सम्मान की एक नई सीमा, आवागमन की एक सार्वजनिक सीमा को चिह्नित करते हैं। लेकिन स्त्री शरीर, दावा करने के लिए
वह स्थान अछूता और अदृश्य रहना चाहिए: वह ढका हुआ रहना चाहिए।
वह शरीर इहतिजाब को हिजाब से बदल देता है—मोटे तौर पर, घर में एकांतवास के बदले परिवार के दायरे से बाहर होने पर परिपक्व महिला शरीर को ढकना। ये ग्रंथ 368 मर्लिन बूथ से बहुत अधिक दूरी नहीं बनाते हैं।

अरब नारीवादी कह रही थीं कि नारीवादियों पर जो आरोप लगाए गए थे (उनके द्वारा)
विरोधियों द्वारा किए जा रहे कार्यों के लिए, और व्यापक रूप से लोकप्रिय और रूढ़िवादी दृष्टिकोण से।
वर्गीय व्यवहार की संरचनाएँ—जिनके लिए पश्चिमीकरण का आरोप एक संक्षिप्त रूप बन गया था। इसलिए, ग्रंथ अंतहीन रूप से स्थगित करते हैं।
एक पवित्र वातावरण बनाकर नारीवादी आधुनिकता का निर्माण करते समय यौन हिंसा का खतरा बना रहता है। केवल नग्न शरीर ही वापस नहीं लौट सकता।

पिता के घर। यह शरीर पश्चिमी वस्त्रों में लिपटा हुआ है, जो आयातित उपभोग के तरीकों के विज्ञापन के माध्यम से एक राष्ट्रीय खतरे का रूप धारण करता है। यह शरीर पतन के चरम बिंदु को दर्शाता है।
वह स्थान जहां सम्मान—व्यक्तिगत और राष्ट्रीय, बाहरी व्यक्ति के बलात्कार से अप्रभावित—को अपूरणीय के रूप में चिह्नित किया जाता है।

नोट्स

मैं ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस के तीन पाठकों को उनके अत्यंत उपयोगी सुझावों के लिए धन्यवाद देता हूं।
और एमआईटी सम्मेलन के प्रतिभागियों को पहले के मसौदे पर उपयोगी टिप्पणियों के लिए धन्यवाद।
अनुवाद मेरे द्वारा किए गए हैं, जब तक कि अन्यथा इंगित न किया गया हो।
1. इन ग्रंथों का विश्लेषण लड़कियों की शिक्षा और पठन-पाठन संबंधी चर्चा के माध्यम से भी किया जा सकता है।
मिस्र में प्रारंभिक दौर की अभिजात वर्ग की नारीवादियों की प्रथाएं, घोषणाएं और परोपकारी गतिविधियां;
1920 के दशक में मिस्र में यूरोपीयकरण को लेकर व्यापक चिंता व्यक्त की गई थी।
प्रेस; और 1920 से 1930 के दशक के पुरुष लेखकों के उपन्यास जो प्रसिद्ध हुए
आधुनिक अरबी कथा साहित्य के जनक के रूप में प्रतिष्ठित।
एक और संदर्भ, निश्चित रूप से, वेश्यावृत्ति की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। हालाँकि मेरे पास यहाँ ऐसा करने के लिए जगह नहीं है, फिर भी मेरा काम इससे प्रभावित है।
वेश्यावृत्ति और पतन की अवधारणाओं और प्रवचनों पर शोध ने
अमांडा एंडरसन, चार्ल्स बर्नहाइमर, कैरोल बर्नस्टीन, टिमोथी गिलफॉयल द्वारा
डोना गाय, गेल हर्षैटर, डोमिनिक कलिफा, अर्लेट लाफार्ज, जूडिथ वाल्को—

विट्ज़, और अन्य। इसके अलावा, इन रचनाओं की तुलना अन्य सांस्कृतिक संदर्भों से स्वीकारोक्तिपूर्ण काल्पनिक संस्मरणों से की जा सकती है: जॉन क्लीलैंड की फैनी हिल, या मेम-
'ओयर्स ऑफ ए वुमन ऑफ प्लेजर' का नाम तो निश्चित रूप से याद आता है, साथ ही पीकमैन की रचनाएँ भी।
वेश्याओं की जीवनियाँ 1700-1825।
2. मुहम्मद, मुधक्किरात वसीफा मिस्रिया और असरार वसीफा मिस्रिया। इन ग्रंथों का प्रकाशन इतिहास जटिल है; इन्हें धारावाहिक रूप में और फिर पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया था, और यह भी स्पष्ट नहीं है कि कितने भाग प्रकाशित हुए थे। स्वयं पाठ में आठ या दस भागों (दोनों पुस्तकों को मिलाकर) के प्रकाशित होने का दावा किया गया है।
प्रेस में होना है। मैंने सात का पता लगाया है (वे क्रमांकित नहीं हैं)। नुसैर ने मुधक्किरात का उल्लेख किया है।
वसीफ़ा मिसरिया जैसा कि एक बार, 1927 में, सात भागों में, दार अल-मा'आरिफ़ द्वारा प्रकाशित किया गया था; मेरे पास है
वह संस्करण नहीं मिला। मेरे पाठ धारावाहिक भाग हैं, जिनका उल्लेख मैंने इन फुटनोट्स में किया है, क्योंकि प्रत्येक भाग को अलग-अलग पृष्ठ संख्या दी गई है। नुसैर, अल-कुतुब अल-अरबिया अलती नुशी- देखें।
रैट फाई मिस्र बयाना 'अमेय 1926-1940, 166. 3 फिलिप लेज्यून को आम तौर पर "आत्मकथात्मक संधि" का प्रमुख सिद्धांतकार माना जाता है। लेज्यून, ले पैक्ट आत्मकथा देखें।
हरम और हाउस बोट के बीच 369

4 “संपादकों” में से एक निःसंदेह कथा साहित्य और सामाजिक टिप्पणी का एक विपुल लेखक था, और उसकी प्रमुख रुचियों में से एक पतन की अवधारणा थी। फरीद का असरार
अल-शावरी' वा अल-कुसूर (गली और महलों के रहस्य: एक समकालीन नैतिक)
मिस्र के साहित्यिक वृत्तांत पर प्रकाशन की कोई तिथि अंकित नहीं है, लेकिन इसके आवरण पर "वृत्तांत" (या "उपन्यास") ऐतिहासिक रिपोर्टिंग की स्थिति को दर्शाता है—"इसका आश्चर्यजनक

लगभग 1916 से 1919 ईस्वी के बीच काहिरा शहर में घटनाएँ घटीं।”—और एक सटीक तिथि से कहानी शुरू होती है। तीसरे व्यक्ति में रचित, अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत
प्रत्यक्ष अनुभव से पाठ की दूरी शायद इस ऐतिहासिक संदर्भ को प्रेरित करती है।
5. मुझे यह पुस्तक नहीं मिल पाई है, लेकिन इसका उल्लेख भाग 1 के अंत में किया गया है।
असरार वसीफ़ा मिसरिया और संपादक के रूप में ज़ैनब मुहम्मद का नाम उल्लेखित है।
देखें "मजमुअत ख़ुतब साद अल-तारिखिया," "यौमियत तिलमिध 'आशिक" (एक की डायरी)
प्रेमी शिष्य), 48, असरार वसीफ़ा मिसरिया। मुहम्मद ने असरार के अंत में घोषणा की
वसीफा मिस्रिया का अंतिम कार्य यह है कि वह "सामाजिक" विषयों पर पुस्तकों के साथ अपने पाठकों के पास वापस लौटेंगी।
विषय" बहुत निकट भविष्य में ("दावलत वा-दवाहिहा: अल-खटीमा" [दावलत और
उसकी आपदाएँ: अंत], 34, असरार वसीफ़ा मिसरिया)।
6 इस मुद्दे पर अधिक जानकारी के लिए, बूथ की पुस्तक "घोड़े के पिछले हिस्से और वेश्यालय से" देखें।
चाबी का छेद।
7 ज़ैनब मुहम्मद के लेख में इस कृति का विज्ञापन किया गया है: इस प्रकार, कम से कम पहला खंड
यह संभवतः 1927 तक प्रकाशित हो चुका था। कवर पर इसे खंड 2 कहा गया है, लेकिन इसका कोई संकेत नहीं है।
पाठ में यह बताया गया है कि यह एक निरंतरता है।
8 विशेष रूप से, वे पुरुष जिन्हें रिश्तेदारी के प्रकारों के कारण प्रतिबंधित नहीं किया जाएगा
(सह-स्तनपान के साथ-साथ रक्त संबंध या विवाह द्वारा संबंध), विवाह करने से घर की महिला सदस्य।
9 इसके अलावा, इस अवधि में कुछ अध्ययन और राजनीतिक निबंध भी प्रकाशित हुए।

वेश्यावृत्ति, हालांकि इनमें से अधिक मामले 1930 के दशक की शुरुआत और 1949 के बीच सामने आए।
जब वेश्यावृत्ति को वैध घोषित कर दिया गया था।
10 यूसुफ, यौमिय्यत सकीता। इसी शैली में एक और रचना स्पष्ट रूप से काल्पनिक 1922 है।
मुदक्किरत बघी (एक वेश्या के संस्मरण), मुहम्मद रफ़त जमाली द्वारा, जो मैं यहाँ इस विषय पर चर्चा नहीं करूँगा। यह संभव है कि ये रचनाएँ इनके द्वारा रचित हों।
पुरुष छद्मनामों का प्रयोग करने वाली महिलाएं। उस समय की पत्रिकाओं में मेरा शोध—जिनमें
जिन रचनाओं को पहले धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया जाता था, उनका विज्ञापन किया जाता था या उन पर चर्चा की जाती थी—इससे अब तक कोई परिणाम नहीं निकला है।
लेखकत्व से जुड़े इन जटिल मुद्दों पर जानकारी।
11 मैं बूथ के लेख "घर पर असुरक्षित" में इस पाठ पर चर्चा करता हूँ।
12 ऐसे ग्रंथों के संग्रह के लिए (संस्मरण और वाद-विवाद दोनों, जो निश्चित रूप से हैं)
(पूरी तरह से अलग नहीं), पीकमैन, वेश्या जीवनियाँ 1700-1825 देखें। इन ग्रंथों और मेरे द्वारा विश्लेषण किए गए ग्रंथों के बीच कई समानताएँ हैं, लेकिन वे इस विश्लेषण के दायरे से बाहर हैं।
इस निबंध में। मैंने पीकमैन के काम की समीक्षा में ऐसी समानताओं का उल्लेख किया है जो प्रकाशित हुई है।
बायोग्राफी: एन इंटरडिसिप्लिनरी क्वार्टरली 31, नं. 3 (ग्रीष्म ऋतु 2008): 468–75.
13 मैं बूथ में इन ग्रंथों में लेखकत्व, राजनीति और लोकप्रिय मुद्दों से निपटता हूँ।
"घोड़े के पिछले हिस्से और वेश्यालय के ताले के छेद से।"
14 इसके अलावा, स्थान को लैंगिक रूप में पाठ्य रूप देने का यह कार्य, इससे घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था...
उन्नीसवीं शताब्दी में अरबी उपन्यास का उदय। बूथ देखें, "फिक्शन का कल्पनाशील अभिलेखागार और समाचार पत्र के स्थानीय घोटाले।"

370 मैरिलिन बूथ

15 उन्नीसवीं सदी के अरबी साहित्य में इस विषय पर, देखें वही; शीही, फाउंडेशन-
आधुनिक अरब पहचान के पहलुओं पर चर्चा के लिए, और इसी काल के ओटोमन तुर्की साहित्य में विषमलैंगिक प्रेम को दर्शाने वाले साहित्य के लिए, इस खंड में शिस्लर का अध्याय देखें।
16 उत्तरार्द्ध कातिरिन अल-थानिया, अशहर अल-खातिअत मिन सही- शीर्षक का अनुवाद है
बात अल-तिजान। यह पुस्तिका, जो 1922 में अल-हिलाल पत्रिका के पाठकों के लिए एक उपहार अनुपूरक के रूप में प्रकाशित की गई थी, यह बताती है कि इसका अनुवाद विशेष रूप से पत्रिका के लिए किया गया था, लेकिन इसमें लेखक या अनुवादक का नाम नहीं दिया गया है।
17 बूथ, "स्थानीय स्तर पर व्यवधान।" याचिकाओं पर, फ़हमी देखें, "वेश्यावृत्ति में"
उन्नीसवीं सदी में मिस्र।
18 नॉर्ड, वॉकिंग द विक्टोरियन स्ट्रीट्स, 10. स्थानीय और प्रांतीय घटनाओं पर उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के समाचार पत्रों की रिपोर्टों में दर्शाई गई इस चिंता पर, बूथ देखें, "फिक्शन का कल्पनात्मक अभिलेखागार और समाचार पत्र के स्थानीय घोटाले" और "स्थानीय व्यवधान।"
19 मुहम्मद, "'आशिक उख्तिह" [उसकी बहन का प्रेमी], 4, मुदक्किरत वसीफा मिसरिया। 20 वही.
21 वही।
22 इस मामले में, पोस्टकार्ड दृश्य घटक हैं; लिखित घटक एक
1920 के दशक में काहिरा में पुनर्प्रकाशित मध्ययुगीन यौन नियमावली, जिसे नुमान ज़ैनब के सामने लहराती है। संभवतः यह यूरोपीय चित्रणों द्वारा स्थानीय यौनिकता संबंधी विचारों पर हावी होने (और/या उन्हें सुदृढ़ करने) का संकेत है। ये पोस्टकार्ड स्थानीय प्रकाशन जगत में दृश्य चित्रणों, विशेष रूप से यूरोपीय और फिर स्थानीय मनोरंजन सितारों के नए रेडियो और फिल्म पत्रिकाओं में उभरने की ओर एक व्यंग्यात्मक और कटाक्षपूर्ण इशारा भी हो सकते हैं।

निम्नलिखित चर्चा मेरी “घर पर असुरक्षित” पर आधारित है। 23 मुहम्मद, “‘आशिक उख्तिह,” 8–9, मुधक्किरात वसीफा मिस्रिया। 24 भद्दी हरकतों की बढ़ती संख्या में, उसकी बोलचाल की भाषा सचमुच उसकी वाक्पटुता को खामोश कर देती है। संकट तब आता है जब वह उसे एक दोस्त के भाई के साथ घर जाते हुए देखकर उससे कहता है: “वाह, क्या आदमी है, तो अब तुमने वह चीज़ देख ली जो केले जैसी है” (“‘आशिक उख्तिह,” 23, मुधक्किरात वसीफा मिस्रिया)।
25 इस शैली और युग के अन्य “संस्मरण” हालांकि, “गुप्त रूप से” होने वाले यौन संबंधों का वर्णन करके इस अपेक्षा की नाजुकता को उजागर करते हैं— विशेष रूप से, टैक्सी और पूरे चेहरे को ढकने वाले नकाब की आड़ में। बूथ की पुस्तक, “फ्रॉम द हॉर्स रम्प एंड द व्होरहाउस कीहोल” देखें।
26 मुहम्मद, “‘आशिक उख्तिह,” 29, मुधक्किरात वसीफा मिस्रिय्या। 27 इस बिंदु के विस्तार के लिए बूथ, “घर पर असुरक्षित” देखें, इसी पाठ में अंतर्निहित कथा के संबंध में जिसमें वक्ता मेडिकल स्कूल में जाने की अपनी टूटी हुई आशा व्यक्त करती है।
28 उन्नीसवीं सदी के मिस्र में वेश्यावृत्ति पर, जो सार्वजनिक मनोरंजन के साथ-साथ बढ़ते विनियमन के अधीन थी, देखें हिलाल, अल-बघाया फ़ी मिस्र; वैन नीउवकेर्क, "किसी भी अन्य व्यापार की तरह," अध्याय 2; टकर, उन्नीसवीं सदी के मिस्र में महिलाएं, 150-55; और फ़हमी, "उन्नीसवीं सदी में मिस्र में वेश्यावृत्ति।" जैसा कि टकर ने नोट किया है (153), 1896 के कानून का मुख्य उद्देश्य ग्राहकों को बीमारियों से बचाना था, न कि किसी भी अर्थ में वेश्याओं की सुरक्षा करना। फ़हमी ने ठोस तर्क दिया है कि वेश्यावृत्ति को लेकर चिंता, विशेष रूप से हरम और हाउसबोट के बीच 371

अधिकारियों का इससे नैतिक पहलू से कम और जनता की चिंताओं से अधिक संबंध था।
सुरक्षा और (विशेषकर सदी के आरंभ में) स्वास्थ्य।
29 बूथ, मे हर लाइक्स बी मल्टीप्लाइड, 141, और "फिक्शन का कल्पनाशील संग्रह और समाचार पत्र के स्थानीय घोटाले।"
30 युद्ध के दौरान और 1920 के दशक के आरंभिक वर्षों में, वेश्यावृत्ति में भारी वृद्धि हुई, क्योंकि
यौन रोग हो गया; देखें हिलाल, अल-बघया फ़ी मिसर, 182-92।

31 एंडरसन, टैंटेड सोल्स एंड पेंटेड फेसेस, 3. 32 बद्रान, फेमिनिस्ट्स, इस्लाम, एंड नेशन, 192. 33 फहमी, “उन्नीसवीं सदी में मिस्र में वेश्यावृत्ति,” 86–87. 34 रसेल, बूथ में उद्धृत, बायराम अल-तुनिसी का मिस्र, 294 नोट 42. अज़बकिया और विशश अल-बिरका को वेश्यावृत्ति क्षेत्रों के रूप में और 1920 के दशक के लोकप्रिय साहित्य (विशेष रूप से बोलचाल की कविता) में उनके प्रतिनिधित्व पर, देखें वही, 150–51, 196–97. 35 अबू अल-उयून की संक्षिप्त जीवनी के लिए, देखें हिलाल, अल-बगाया फ़ी मिस्र, 204, नोट; और उनके अभियान पर, 205–14.
36 वास्तव में, अबू अल-उयुन द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र, विशेषकर प्रकाशन का राजनीतिक उपयोग, अनुकरणीय राजनीति का एक उदाहरण है: विभिन्न मंत्रियों के साथ अपने संवादों को प्रकाशित करके, वह उन्हें रिकॉर्ड पर रखता है और उन्हें जवाबदेह ठहराता है। वह ज़की से कहता है
न्याय प्रशासन के अब्द अल-सुउद ने कहा: “हम इन विचारों को इसलिए प्रकाशित कर रहे हैं ताकि
लोगों को एहसास होता है कि मंत्रालय के अपने लोग हैं, सरकार के अपने नायक हैं... और
ताकि वे जान सकें कि इन पुरुषों के विचार उनके कर्मों के अनुरूप हैं” (अबू अल-उयून,
(सफहा धहाबिया, 32).
37 वही, 5.
38 वान नीउवकेर्क, "किसी भी अन्य की तरह एक व्यापार," 6. 39 अल-बयुमी, अल-मनाज़िल अल-सिरिया, 1. प्रेस में इस विषय पर, बूथ देखें, "स्थानीय विघटन।" 40 अबू अल-उयून, सफ़हा धहाबिया, 4. करीमा (बहुवचन, करा'इम), "बेटी," का मूल अर्थ "कीमती वस्तु" या "शरीर का अंग" भी है।
41 मैं बूथ की रचना “Un/safe/ly at Home” में इस पाठ के प्रतीकात्मक संबंध पर आगे चर्चा करता हूँ। 42 मुहम्मद, “‘Ashiq ukhtih,” 18, Mudhakkirat wasifa misriyya. 43 ज़ैनब के उपन्यास पढ़ते हुए की छवि एक साथ उसकी कथा की प्रतिष्ठा का समर्थन करती है, जिससे उसकी संभावित नैतिक प्रभावशीलता को बल मिलता है, हालाँकि यह एक दूरी पर है।

इसे संस्मरण के रूप में परिभाषित किए जाने के कारण काल्पनिक होने के संभावित संदेह से बचाया जा सकता है। लेकिन इन कथित संस्मरणों और अपराध उपन्यास श्रृंखलाओं के बीच की सीमा वास्तव में धुंधली प्रतीत होती है। सीक्रेट्स में प्रकाशक के अगले उद्यम के रूप में विज्ञापित। 44 पाठ में दावा किया गया है कि एक किस्त के प्रकाशन और दूसरी किस्त के प्रकाशन के बीच, इसमें सुधारवादी प्रभावकारिता है, यह देखते हुए कि एक किस्त में उजागर किया गया एक "घर" (वेश्यावृत्ति का) अगली किस्त के प्रकाशित होने से पहले बंद कर दिया गया था। बूथ देखें, "घोड़े से"
"रम्प और वेश्यालय का कीहोल।"
45 अबू अल-उयुन, सफ़हा धहाबिया, 11. प्रधानमंत्री का जवाब था: "आपने इस विषय का अच्छी तरह से अध्ययन किया है।"
46 इसका यह मतलब बिलकुल भी नहीं है कि महिलाओं की कहानियों में यौन सामग्री या हिंसक और स्त्री-द्वेषी दृश्य नहीं रहे हैं। लेकिन संभवतः ऐसी कहानियों में
वेश्यालयों में बिताए गए समय के प्रथम-व्यक्ति वृत्तांतों पर केंद्रित नहीं रहे हैं। 47 इस बारे में अधिक जानकारी के लिए, बूथ, "घर पर असुरक्षित" देखें।
372 मैरिलिन बूथ

48 मुहम्मद, “यौमियत तिलमिध ‘आशिक,” 24, असरार वसीफा मिस्रिय्या। 49 इन व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व न केवल हाउस बोट पर मौजूद अन्य महिलाओं द्वारा किया जाता है, बल्कि ज़ैनब की हाउस बोट वार्ताकार के पति की रखैल बहिया हनीम द्वारा भी किया जाता है, और पति के उपभोग पैटर्न एक विस्तृत संवाद का केंद्र बिंदु हैं। उपभोग और पहनावे का यह प्रतीकात्मक अंतर्संबंध जटिल है, जो वर्गीय उपभोग प्रथाओं और प्रदर्शनवाद दोनों को राष्ट्र के लिए खतरा पैदा करने वाले संक्रमण के रूप में दर्शाता है, जो “गुप्त रोगों” (यौन रोगों) और, विस्तार से, वेश्यावृत्ति के “गुप्त घरों” के संक्रमण के समानांतर है। रोग और संक्रमण के प्रतीक विक्टोरियन ब्रिटिश और समकालीन फ्रांसीसी वेश्यावृत्ति संबंधी वाक्पटुता में सर्वव्यापी थे। बर्नहाइमर, फिगर्स ऑफ इल रेपुट, विशेष रूप से अध्याय 1, पैरेंट-डुचेटेलेट के कार्य पर देखें। दरअसल, नियंत्रण के साथ-साथ क्षय और संक्रमण

के वे सभी पहलू - जो पैरेंट-डुचेटेलेट के विचार में, सरकार की ओर से निरंतर विनियमन और सतर्कता को आवश्यक बनाते हैं - जिन्हें बर्नहाइमर इस बयानबाजी में पाते हैं, 1930 के दशक के मिस्र के सुधारवादी प्रवचन में लगातार प्रतिध्वनित होते हैं, हालांकि वह प्रवचन वेश्यावृत्ति को विनियमित करने
- और इस प्रकार कुछ हद तक स्वीकार करने - की नैतिक रूप से निंदनीयता पर जोर देता है।
50 अज़हर शेख 'अब्द अल-बकी सुरूर नईम द्वारा लिखित एक लेख देखें, जो पहली बार प्रकाशित हुआ था।
अल-अहराम और अबू अल-उयुन द्वारा सफ़ा दहाबिया, 63-66, विशेष रूप से 66 में पुनर्मुद्रित। मैं मुदक्किरत वसीफा मिसरिया के जबरन विवाह के प्रतिनिधित्व पर बूथ में आगे चर्चा करता हूं, "घर पर अन/सुरक्षित/झूठ।"
51 ‘अब्द अल-बकी सुरूर नईम, अबू अल-उयुन, सफ़हा धहाबिया, 66 में पुनर्मुद्रित। 52 अबू अल-उयुन, सफ़हा धहाबिया, 57 में पुनर्मुद्रित। 53 स्पेन, जेंडर्ड स्पेसेस। मर्निसी, ड्रीम्स ऑफ़ ट्रेसपास, 186 भी देखें, जिसमें युवा लेखिका की माँ उसे बताती है कि “पुरुष महिलाओं को हरम में इसलिए रखते हैं ताकि वे ज़्यादा बुद्धिमान न हो जाएँ।”
54 बाल, मोर्टिमर में उद्धृत, "यह किसका घर है?" 469. 55 मोर्टिमर, "यह किसका घर है?" 56 एफेंडी और इस शैली के बारे में अधिक जानकारी के लिए, बूथ देखें, "घोड़े के नितंब और वेश्यालय के कीहोल से।"
57 ‘अतिया, मुधक्किरात फ़ी बिक़ा’ अल-‘अहिरात, 3–4. पाठ का सावधानीपूर्वक संपादकीय स्वरूप— “समर्पित... उन महिलाओं के व्यक्तित्वों की पड़ताल करने के लिए, और उनसे प्रेम करने वालों के लिए, महिलाओं की परिस्थितियों के अध्ययन और उनके पतन के कारणों की जानकारी, और सभी के पालन-पोषण और नैतिकता के लिए”—उनके इस प्रयास के उपदेशात्मक महत्व पर बल देता है; इस लेखक ने “उच्चारण और प्रसारण में सत्यता बनाए रखने का ध्यान रखा है... जो इन जांचों और टिप्पणियों को पढ़ेगा उसे एक सच्चा पाठ मिलेगा, व्याकरण में नहीं बल्कि उन महत्वपूर्ण पाठों में से एक जो सामूहिक जीवन के सभी पहलुओं को समाहित करता है, उन लोगों के लिए जिन्होंने अपने सामान्य पाठ पूरे कर लिए हैं” (4)।
58 मुहम्मद, “हवानिम अल-क़र्न अल-इशरिन” (बीसवीं सदी की महिलाएं), 47,

मुदक्किरत वसीफा मिसरिया। इतिराफत मुमिस (एक वेश्या का इकबालिया बयान) के लिए असरार वसीफा मिसरिया में विज्ञापन भी देखें: "दो सौ पेज, कीमत 5 पियास्टर" (मुहम्मद, "यौमियत तिलमिध आशिक," 48, असरार वसीफा मिसरिया)। हरम और हाउस बोट के बीच 373

59 'अतिया, मुदक्किरत फ़ी बिका' अल-अहिरत, 62. 60 उक्त, 3.
61 मिलानी देखें, “फ़ारसी रोमांस में दाई की मध्यस्थता की चालाकी” (साथ ही पत्रिका के विशेष अंक में अन्य निबंध जिसमें यह छपा है); नजमाबादी, "'वील्स ऑफ वुमेन' कहानियों को मर्दानगी की कल्पना के रूप में पढ़ना।" 62 'अतिया, मुदक्किरत और बिका' अल-अहिरत, 3. 63 वही।,
64 एंडरसन, टैन्टेड सोल्स एंड पेंटेड फेसेस, 1. 65 बूथ में "अन/सेफ/ली एट होम" में डायरीज़ ऑफ़ ए के कथावाचक की चर्चा देखें।
एक वेश्या, एक उम्रदराज वेश्या जिसका अपना घर है और जो अपने सम्मानजनक जीवन को परिभाषित करती है—
संभावित ग्राहकों से पैसे चुराकर गरीबों को देने के रूप में। 66 ‘अतिया, मुधक्किरात फ़ी बिक़ा‘ अल-‘अहिरात, 6–7. 67 वही, 24. विडंबना यह है कि पुलिस प्रमुख से उनकी शिकायत राज्य विनियमन के प्रति महिलाओं के प्रतिरोध को उजागर करती है। “महिलाओं के जागरण” के लिए काम करने वालों को उनकी सलाह— कि वे उन सभी महिलाओं को “बहिष्कृत” कर दें जो “स्वीकृत” नियमों से बाहर काम करती हैं
नैतिक सीमाएँ"- आगे सहानुभूति की कमी का सुझाव देती हैं।" 68 मुहम्मद, "हवानीम अल-क़रन अल-'इश्रिन," 37, मुदक्किरत वसीफ़ा मिस्रिया संस्मरण के संबंधित कार्य
और चिंतन, या अल्ताफ फातिमा के उपन्यास में जो कुलीन मुस्लिम परिवारों के बीच स्थापित है
भारत। देखें मर्निसी, ड्रीम्स ऑफ ट्रेसपास; अहमद, ए बॉर्डर पैसेज; फातिमा, द
जिसने पूछा ही नहीं।

8

ग्रंथसूची 8

8

प्रकाशन की तिथियां उपलब्ध जानकारी के आधार पर ईसाई युग, इस्लामी युग या दोनों युगों के लिए दी गई हैं।
‘अब्द अल-‘अज़ीज़ बदर, हमज़ा, और डैनियल क्रेसेलियस। “अवकाफ़
काहिरा में अल-हज बशीर आगा का।” इस्लामोलॉजिकल एनाल्स 27 (1993): 291-308। 'अब्द अल-बक़ी, मुहम्मद फ़ुआद। अल-मुअज़म अल-मुफ़हरस ली-अल्फ़ाज़ अल-कुरान अल-करीम। इस्तांबुल: अल-मकतब अल-इस्लामिया मेहमद ओज़देमिर, 1982।
‘अब्द अल-राज़ीक, अहमद। ममलुक काल में महिलाएं।
मिस्र। काहिरा: काहिरा स्थित फ्रांसीसी प्राच्य पुरातत्व संस्थान, 1973। अब्देस्सेलम, अहमद। 17 वीं और 18 वीं शताब्दी के ट्यूनीशियाई इतिहासकार। और 19 वीं शताब्दी: सांस्कृतिक इतिहास पर एक निबंध। पेरिस: क्लिंकसीक, 1973.
अब्दुलाक, समीर। “अरब देशों में पारंपरिक आवास डिजाइन।” इस्लामिक संस्कृतियों में डिजाइनिंग 2: शहरी आवास, एम. बी. सेवचेंको द्वारा संपादित, पृष्ठ 2-9। कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स: आगा खान इस्लामिक वास्तुकला कार्यक्रम, 1982।
अबू अल-उयुन, महमूद। सफ़हा दहबिया: अरा' वुज़ारा'
अल-दावला अल-मिसरिया फ़ी अल-बाघा' वा-अरा' रिजालिन मस'उलिना वा-अमीरिन मिन किबार अल-उमरा।' काहिरा: मतबात अल-मा'आरिफ़, 1928।
अफसरुद्दीन, अस्मा। उत्कृष्टता और वरीयता: मध्यकालीन इस्लामी
वैध नेतृत्व पर प्रवचन। लीडेन: ब्रिल, 2002. 376 ग्रंथसूची
———. “कुरान की उत्कृष्टता: पाठ्य पवित्रता और प्रारंभिक इस्लामी समाज का संगठन।” जर्नल ऑफ द अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी 122, नं. 1
(2002): 1–24.

———. “□□□□□□: □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□”
□□□□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□: □□□□□□□□□/□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ "□□□□□□□□□□" □□□□□□ □□ □□□□□□□
□□□□□□□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□, 1–28□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□: □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□, □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□, 1999□
□□□□□□, □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□: □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□" □□□□□□□□□ □□ □□□□: □□□□□□□□, □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□□: □□□□□□□ □□□□
□□□□□□□□□□□□, □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□
□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□: □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□; □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□
□□□□□: □□□□□□□□□, 1999□
□□□□□□□ □□□□□□□□. □□□□: □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□
□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□: □□□□□□□□□□, 1978□ ———□ “□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□” □□□□□□□□□
□□□□□□□ 8, □□□□□□□ 3 (1982): 521–34.
———. □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□. □□□□□ □□□□□: □□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□, 1992□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□ □□-□□□□□□□': □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ (□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□), □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□: □□□□□□□□□□, 2000. □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ "□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□?" 1875. □□□□□□□□-□ □□□□□□□ □□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□, 269-81□ □□□□□□□□□□: Çağrı Yayınları, 2001.
———. □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ 1875. □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□
□□□□□: □□□□□□□□ I, □□□□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□. □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□,
27–273. □□□□□□□: □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□, 2000. ———. □□□□ □□ 17 □□□□□ □□ □□□□. 1881. □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□: □□□□□□□□

लार VII, नूरी सैगलम, काज़िम यतिस और एम. फातिह एंडी द्वारा संपादित, 5-213। अंकारा: तुर्क दिल कुरुमु यायिनलारि, 2000।
ऐसेन-एलौफी, एमी। "ओटोमन होना: परिवार और आधुनिकता की राजनीति" "ट्यूनीशिया प्रांत।" पीएच.डी. शोध प्रबंध, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, 2007। अकगुंडुज़, अहमद। ओटोमन विधि संहिताएँ और कानूनी विश्लेषण। अब तक 12 खंड।
इस्तांबुल: फे फाउंडेशन, 1990–।
अल्बर्टी, लियोन बतिस्ता। भवन निर्माण कला पर दस खंडों में। जोसेफ द्वारा अनुवादित।
रिकवर्ट, नील लीच, और रॉबर्ट टैवर्नर। कैम्ब्रिज: एमआईटी प्रेस, 1988। एलन, जॉन। लॉस्ट जियोग्राफीज़ ऑफ़ पावर। माल्डेन, मैसाचुसेट्स: ब्लैकवेल, 2003। एलन, रोजर। "नाज़ली सर्कल के सदस्यों के लेखन।" जर्नल ऑफ़ द अमेरिकन मिस्र में अनुसंधान केंद्र 8 (1969-70): 79-84। एलन, विलियम। "इस्तांबुल के पैंसठ फोटोग्राफर, 1887-1914।" छाया और
सब्सटेंस: फोटोग्राफी के इतिहास पर निबंध, कैथलीन कॉलिन्स द्वारा संपादित, 127–
36. ब्लूमफील्ड हिल्स, मिशिगन: एमोर्फस इंस्टीट्यूट प्रेस, 1990. अलोला, मालेक. औपनिवेशिक हरेम. मायर्ना गोडज़िच और व्लाद गोडज़िच द्वारा अनुवादित. साहित्य का सिद्धांत और इतिहास, खंड 21. मिनियापोलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ
मिनेसोटा प्रेस, 1986।
ग्रंथसूची 377

अल्टोमा, सालिह जे. “समकालीन सीरियाई साहित्य में महिलाओं की मुक्ति।” सीरिया: समाज, संस्कृति और राजनीति, रिचर्ड टी. एंटौन और डोनाल्ड क्वाटार्ट द्वारा संपादित, पृष्ठ 79–96। अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, 1991। अमीन, कासिम। अल-मर’आ अल-जदीदा। काहिरा, 1900।
——— । 1899। तहरीर अल-मर’आ। काहिरा: दार अल-मआरिफ, 1970। और, मेटिन।
तुर्की लघु चित्रकला। अंकारा: दोस्त ययिनलारी, 1974। एंडरसन, अमांडा।
कलंकित आत्माएँ और चित्रित चेहरे: “पतन” की बयानबाजी।

विक्टोरियन ब्रिटेन में। इथाका: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993। एप्टर, एमिली। "औपनिवेशिक हरम में महिला समस्या।" अंतर 4, संख्या 1 (1992): 205-24।
अरेबियन नाइट्स। एडवर्ड फोर्स्टर द्वारा अनुवादित और प्रस्तावना सहित। 5 खंड। लंदन:
विलियम मिलर, 1802।
आर्डेनर, शर्ली। परिचय। महिलाएँ और स्थान: बुनियादी नियम और सामाजिक मानचित्र, शर्ली आर्डेनर द्वारा संपादित, 1–30. ऑक्सफ़ोर्ड: बर्ग, 1997. आर्डेनर, शर्ली, संपादक. महिलाएँ और स्थान: आधारभूत नियम और सामाजिक मानचित्र. ऑक्सफ़ोर्ड: बर्ग, 1997.
'अरिब. सिलात तारिख अल-तबारी। एम. जे. डी गोएजे द्वारा संपादित। लीडेन: ब्रिल, 1897. आरिफ़, मेहमद। “क़ानुन्नमे-ए-अल-ए उस्मान।” तारिह-ए उस्मानी एनक्यूमेनी मेकमुआसी।
अनुपूरक। इस्तांबुल: तारिह-ए उस्मानी एनक्यूमेनी, 1329/1911–12। अरकून, मोहम्मद। समकालीन इस्लामी विचार में अविचार। लंदन: साकी, 2002।
अरनॉड, जे. ट्यूनिस (ट्यूनीशिया) के पास कोरबूस के ऊष्मीय जल। पेरिस: लेवे, 1912। असद, तलल। धर्मनिरपेक्षता का निर्माण: ईसाई धर्म, इस्लाम, आधुनिकता। स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993।
'अता, तय्यरज़ादे अहमद अताउल्लाह। तारिह-ए 'अता, 5 खंड। इस्तांबुल: याह्या एफेंदी मतबासी, 1875-76।
अतिल, एसीन। लेवनी और सुरनामे: अठारहवीं सदी के एक ओटोमन की कहानी। त्योहार। इस्तांबुल: कोकबैंक, 1999.
'अतिया, 'ए. मुदक्किरत 'आमिल फ़ी बिका' अल-अहिरत। वॉल्यूम. 2. काहिरा: मतबात वाडी
अल-मुलुक, तिथि अज्ञात।
अत्तार, समर. अल-बेअत फ़ि सहात अर्नस। सिडनी: मन्शूरत शरबल बिअयनी, 1988. ———. अर्नस स्क्वायर पर घर। लेखक द्वारा अनुवादित. प्यूब्लो, कोलो.: पसेग्गियाटा, 1998।
अयालोन, अमी। अरब मध्य पूर्व में प्रेस। न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
प्रेस, 1995।

अय्यूब, धू अल-नून। अल-अथर अल-कामिला ली-अदब धी अल-नून अय्यूब। बगदाद: विजारत अल-इलाम, 1978.
अज़हरी, अबू मंसूर मुहम्मद b. अहमद अल-. तहदीब अल-लुघाट। द्वारा संपादित 'अब्द अल्लाह दरविश और मुहम्मद अली अल-नज्जर। 9 खंड. काहिरा: अल-दार अल-मिस्रियाह लि'ल-ता'लिफ़ वा अल-तर्जमा, 1964-66।
'अज़मा, बशीर अल-। जिल अल-हाज़िमा: बयना अल-वहदा वाल-इंफ़िसल; मुधक्किरत। लंदन: रियाद अल-रयिस लिल-कुतुब वाल-नश्र, 1991।
बाबायान, कैथरीन। “‘अक़ाइद अल-निसा’: सफ़वीद महिलाओं की एक झलक”
स्थानीय इस्लामी संस्कृति।" मध्यकालीन इस्लामी दुनिया में महिलाएं, गैविन हैम्बली द्वारा संपादित, 349-81। न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन, 1998। 378 ग्रंथसूची

गैस्टन बैचलार्ड। अंतरिक्ष की काव्यशास्त्र। मारिया जोलास द्वारा अनुवादित। बोस्टन: बीईए।
कॉन, 1969.
बछरोच, तौफिक। ट्यूनीशिया में संत और राजकुमार: पौ- के ट्यूनीशियाई अभिजात वर्ग
देखना और समर्पण। ट्यूनिस: मानव विज्ञान संकाय के प्रकाशन।
और ट्यूनिस के सामाजिक, 1989।
बद्र, 'अब्द अल-मुहसिन ताहा। ततव्वुर अल-रिवाया अल-अरबिया अल-हदीथा फ़ी मिसर,
1870–1938. काहिरा: दार अल-मा'आरिफ, 1963. बद्रान, मार्गोट. “द्विमुक्ति: मिस्र में नारीवाद और राष्ट्रवाद, 1870–1925.” नारीवादी मुद्दे 8, संख्या 1 (1988): 15–34. ———. नारीवादी, इस्लाम और राष्ट्र: लिंग और आधुनिक मिस्र का निर्माण.
प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995।
———. प्रस्तावना। हुदा शारावी की पुस्तक, हरेम इयर्स: द मेमोयर्स ऑफ एन इजिप्ट-
तियान फेमिनिस्ट, 7–22. मार्गोट बद्रान द्वारा अनुवादित। लंदन: विरागो, 1986. बेडेकर, कार्ल। बेडेकर का कॉन्स्टेंटिनोपल, बाल्कन राज्य, एशिया माइनर, द्वीपसमूह,

साइप्रस: यात्रियों के लिए पुस्तिका। लीपज़िग: कार्ल बेडेकर, 1914। बेयर, गैब्रियल। "उन्नीसवीं सदी के मिस्र में दासता।" जर्नल ऑफ अफ्रीकन हिस्ट्री
8, संख्या 3 (1967): 417–41.
बहलौल, जोएल। स्मृति की वास्तुकला: कोलो में एक यहूदी-मुस्लिम परिवार। नियल अल्जीरिया, 1937–1962. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996. बाल्डविन, गॉर्डन. रोजर फेंटन: पाशा और बायडेरे. लॉस एंजिल्स: जे. पॉल गेट्टी संग्रहालय, 1996.
बालिबार, इटियेन। "राष्ट्र स्वरूप: इतिहास और विचारधारा।" एटियेन बालिबार में
और इमैनुएल वालरस्टीन, रेस, नेशन, क्लास: एम्बिगुअस आइडेंटिटीज, 86–106. क्रिस टर्नर द्वारा अनुवादित। लंदन: वर्सो, 1991।
बरकान, ओमर लुत्फी। 15 वीं और 16 वीं शताब्दी में ओटोमन साम्राज्य में कृषि।
अर्थव्यवस्था के कानूनी और वित्तीय आधार: कानून। इस्तांबुल: बुरहानेद्दीन एरेनलर
मुद्रण गृह, 1943।
———. “कनुननामे.” एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इस्लाम, 6:185–96. इस्तांबुल: राष्ट्रीय शिक्षा
प्रकाशन गृह, 1977।
———. “ओटोमन काल में अक कोयुनलू शासक उज़ुन हसन बे से संबंधित कानून।” ऐतिहासिक दस्तावेज़ 1–2 (1941): 91–106; 3 (1941): 184–96. बैरन, बेथ. “मिस्र में पाठक और महिला प्रेस।” पोएटिक्स टुडे 15, नं. 2
(1994): 217–40.
———. मिस्र में महिलाओं का जागरण। न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस,

1994.

□□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□: □□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□
□□ □□□□□□: □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□, 1973□
□□□□□, □□□□□□□□□□□□ “□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□” □ □□□□-□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□: □□□□□□□□□□, □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□□ □□. □□□□□□ □□□□□□□, 19–26. □□□□□: □□□□□□ □□□□ □□□□□, 1988. □□□□□, □□. □. □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□, 1780–1914: □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□: □□□□□□□□□, 2004□ ———□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□: □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□, 1780-1870□ □□□□□□□□□□: □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□, 1996□ □□□□□□□□□□ 379

□□□□□□□ □□, □□□□□□□□□ □□□□□□ □□-□□□□□□□ □□-□□□□□□□□□ □□-□□□□□ □□ □□-□□□□□□□ 5 □□□.
□□□□□□: □□□□ □□□□□□, 1974□
□□□□□□, □□□□□□□□ □□□□ □□-□ □□-□□□□□□□□ □□-□□□□□□□□□□ □□□□□□□: □□□□□□ □□□□ □□□□,

1919.

ब्यूलियू, जिल, और मैरी रॉबर्ट्स, संपादक। ओरिएंटलिज़्म के वार्ताकार: पेंटिंग, आर्किटेक्चर-
प्रकृति और फोटोग्राफी। डरहम: ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002। बेहदाद, अली। "कामुक प्राच्य: मोंटेस्क्यू और उनके पूर्ववर्तियों में हरम की छवियां।" स्टैनफोर्ड फ्रेंच रिव्यू 13, 2-3 (1989): 109-26। बेन अचौर, मोहम्मद अल अजीज। द्वितीय शताब्दी में ट्यूनीशियाई समाज की श्रेणियां। 19 वीं सदी के मध्य में। ट्यूनिस: राष्ट्रीय पुरातत्व एवं कला संस्थान, 1989। ——— ट्यूनिस के बे का दरबार। ट्यूनिस: एस्पेस दीवान, 2003। बर्गाउई, मोहम्मद। ट्यूनीशिया में पर्यटन और यात्रा: राजशाही काल। तीसरा संस्करण। ट्यूनिस: सिम्पैक्ट, 2005।
बर्केस, नियाज़ी। तुर्की में धर्मनिरपेक्षता का विकास। न्यूयॉर्क: रूटलेज।

1998.

बर्नहाइमर, चार्ल्स। बदनाम हस्तियाँ: उन्नीसवीं सदी में वेश्यावृत्ति का चित्रण।
सेंचुरी फ़्रांस। डरहम: ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, 1997। बे, अल-मोख्तार।
ट्यूनिस के बे (1705-1957): वंशानुक्रम, संप्रभुता, वंशावली।
ट्यूनिस: सर्विस्ड, 2002।
बे, फैसल। “1 दिसंबर, 1846: फ्रांसीसी राजा के दरबार में ट्यूनिस के बे।” हिज़-
टोइरे, मार्च 19, 2004, 68-69।
———. ला डेर्निएर ओडालिस्क. पेरिस: स्टॉक, 2001. भाभा, होमी के. “अजूबों के लिए लिए गए संकेत: मई 1817 में दिल्ली के बाहर एक पेड़ के नीचे अस्पष्टता और अधिकार के प्रश्न।” होमी के. भाभा में, द
संस्कृति का स्थान, 101–22. लंदन: रूटलेज, 1994. बियांका, स्टेफानो, संपादक। सीरिया: पूर्व और पश्चिम के बीच मध्यकालीन गढ़। ट्यूरिन: उम्बर्टो एलेमांडी, 2007.
अरब जगत में शहरी स्वरूप, अतीत और वर्तमान। लंदन: थेम्स एंड
हडसन, 2000.
बियांका, स्टेफ़ानो ए., जीन-क्लाउड डेविड, जियोवानी रिज़ार्डी, यवेस बेटन, और
ब्रूनो चौफ़र्ट-य्वार्ट। अलेप्पो के पुराने शहर का संरक्षण: एक रिपोर्ट सीरियाई अरब गणराज्य की सरकार के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा तैयार किया गया
शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन। प्रतिबंधित तकनीकी रिपोर्ट पीपी/1979–80/4/7.6/05. पेरिस: यूनेस्को, 1980.
बिन हमीदा, मुहसिन। अल-बाजी अल-मसूदी। ट्यूनिस: ट्यूनीशियाई पब्लिशिंग हाउस,

1962.

ब्लैकबर्न, डेविड। “‘टेकिंग द वाटर्स’: फैशनपरस्त लोगों के मिलन स्थल” विश्व।" अंतर्राष्ट्रीयतावाद की यांत्रिकी: संस्कृति, समाज और राजनीति से
1840 के दशक से प्रथम विश्व युद्ध तक, मार्टिन एच. गेयर और जोहान्स पॉल द्वारा संपादित—
मान, 435-57. ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001. ब्लेचर, रॉबर्ट। "जब टेलीविजन अनिवार्य है: 1990 के दशक में सीरियाई टेलीविजन नाटक।" फ़्रांस में, सीरी एट लिबन 1918-1946: लेस एम्बिगुएटेस एट लेस डायनामिक्स
मैंडेट संबंध पर, नादिन मेउची द्वारा संपादित, 169-80। दमिश्क: दमिश्क के फ्रांसीसी अरब अध्ययन संस्थान, 2002।
380 ग्रंथसूची

ब्लिली, लीला टेमिमे। पारिवारिक इतिहास: विवाह, त्याग और दैनिक जीवन। ट्यूनिस, 1875–1930. ट्यूनिस: स्क्रिप्ट, 1999. ब्लूस्टोन, डैनियल. “टेनिस शूज़ में शिक्षाविद: ऐतिहासिक संरक्षण और अकादमी.” जर्नल ऑफ़ द सोसाइटी ऑफ़ आर्किटेक्चरल हिस्टोरियंस 58, नं. 3 (सितंबर 1999): 300–307.
बोअर, इंगे ई. “पर्दे के नीचे से निरंकुशता: निरंकुश और हरम की मर्दाना और स्त्री व्याख्याएँ।” कल्चरल क्रिटिक 32 (1995–96): 43–73. बोनेबाकर, एस. ए. “अदाब और ललित साहित्य की अवधारणा।” द कैम्ब्रिज में
अरबी साहित्य का इतिहास: अब्बासिद ललित साहित्य, जूलिया अश्तियानी, टी. एम. जॉनस्टोन, जे. डी. लैथम और आर. बी. सर्जेंट द्वारा संपादित, 16-30। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990।
बूथ, मर्लिन। “आर्मचेयर हरेम।” एच-जेंडर मिडईस्ट, 29 सितंबर को प्रकाशित।
2007. http://h-net.msu.edu/.
बायराम अल-तुनिसी का मिस्र: सामाजिक आलोचना और कथात्मक रणनीतियाँ।
एक्सेटर,
ग्रेट ब्रिटेन: इथाका प्रेस, 1990।
———. “स्थानीय व्यवधान, नारीत्व का विस्फोट: स्थानीय रिपोर्टिंग

और 1890 के दशक के एक मिस्र के दैनिक समाचार पत्र में राष्ट्रीय चिंताएँ।" यह शोधपत्र प्रस्तुत किया गया था
भूमध्यसागरीय अनुसंधान बैठक, रॉबर्ट शुमान यूरोपीय केंद्र विश्वविद्यालय, मोंटेकाटिनी टर्मे, इटली, 12-15 मार्च, 2008। ———। “कथाओं का कल्पनाशील संग्रह और समाचार पत्र के स्थानीय घोटाले: उन्नीसवीं सदी के मिस्र का मामला।” आर्काइव स्टोरीज: फैक्ट्स, फिक्शन्स एंड द में। इतिहास लेखन, एंटोनेट बर्टन द्वारा संपादित, 274–95। डरहम: ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005।
———. “घोड़े के पिछले हिस्से और वेश्यालय के कीहोल से: 1920 के दशक के मिस्र में राजनीतिक आवाज के रूप में वेंट्रिलोक्वाइज्ड संस्मरण।” मगरेब रिव्यू 32, संख्याएँ।
2–3 (2007): 233–61.

———. “जॉन स्टुअर्ट मिल. . . इस्लामी? आचरण साहित्य, इस्लामी राजनीति, और मिस्र में लिंग। अप्रकाशित पांडुलिपि, 2004। ———। उनकी लोकप्रियता कई गुना बढ़े: मिस्र में जीवनी और लिंग राजनीति।
बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2001।
———. “लिंग, इतिहास... और कल्पना पर।” मध्य पूर्व इतिहासलेखन में: बीसवीं सदी का वर्णन, इज़राइल गेर्शोनी, एमी सिंगर और द्वारा संपादित। वाई. हाकान एर्डेम, 211–41. सिएटल: यूनिवर्सिटी ऑफ़ वाशिंगटन प्रेस, 2006. ———. “घर पर असुरक्षित: 1920 के दशक के मिस्र में यौन उत्पीड़न की कथाएँ।”
शनि द्वारा संपादित "हिंसा, भेद्यता और देहधारण पर विशेष अंक" में डी'क्रूज़ और अनुपमा राव, 744–68. लिंग और इतिहास 16, संख्या 3 (2004). बोसेरुप, एस्टर. आर्थिक विकास में महिला की भूमिका. न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन्स,

1970.

□□□□□□□□□, □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□:
□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□, 1990□
□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□:
□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□, 1977□
□□□□□□□, □□□□ “□□ □□ □□□□□□□: □□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ (1790–
1794)□” □□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ 268 (□□□□□□-□□□□□ 1987): 158-75□
□□□□□□□□□□ 381

□□□□, □□□□□□□□□□□ □ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□: □□□□□□, 2001□
□□□□, □□□□□□□□ "□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□" □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ 7, □□□□□□□ 2 (2004): 159-69□
□□□□□□□, □□□□□□□□ □□. “□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□: □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□” □□□ 61, □□□□□□□ 10 (□□□□□□□□ □□□ 1987): 58–68.
□□□□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□: □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□

1984.

बुखारी, मुहम्मद बी. इस्माइल अल-. सही. द्विभाषी संस्करण. मुहम्मद मुहसिन खान द्वारा अनुवादित। 9 खंड. शिकागो: काज़ी, 1979.
बर्टन, एंटोनेट। “समीक्षित कृति(याँ): जेंडरिंग ओरिएंटलिज़्म: रेस, फेमिनिनिटी,
रीना लुईस द्वारा प्रतिनिधित्व और औपनिवेशिक कल्पनाएँ: एक नारीवादी दृष्टिकोण की ओर
मेयदा येगेनोग्लू द्वारा प्राच्यवाद का पठन।" संकेत 25, संख्या 1 (शरद ऋतु 1999): 243–46।
बुस्केट्स, जोन, संपादक। अलेप्पो: पुराने शहर का पुनर्वास; आठवीं वेरोनिका रुडगे ग्रीन शहरी डिजाइन पुरस्कार। कैम्ब्रिज: हार्वर्ड ग्रेजुएट स्कूल ऑफ
डिजाइन, 2005।
कंबोन, पॉल. "ट्यूनीशिया से पत्र।" रिव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस 3 (मई 1931): 127-50;

373–98.

कैनन, बायरन डी. "महिलाओं और समाज पर उन्नीसवीं सदी के अरबी लेखन: काहिरा में मेसोनिक प्रेस की अंतरिम भूमिका (अल-लताइफ, 1885-1895)।"
इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मिडिल ईस्ट स्टडीज़ 17, संख्या. 4 (1985): 463-84। कार्लियर, उमर. "ले कैफ़े मौरे: सोशिएबिलिटे मैस्क्युलिन एट इफ़रवेसेंस सिटोयेन (अल्जीरी XVIIe-XXe सिएकल्स)।" एनाल्स: अर्थव्यवस्थाएँ, समाज, सभ्यताएँ 45, संख्या। 4 (1990): 975-1003।
केसी, एडवर्ड एस. “उदासीनता की दुनिया।” मैन एंड वर्ल्ड 20, नं. 4 (1987):

361–84.

कैवासिनो, एग्नेस। एमिली डी वियालर संस्थापक: सेंट-जोसेफ डी ल'अप्पा की बहनें-
मिशनरी मण्डली. फॉन्टेने-सूस-बोइस, फ़्रांस: मण्डली
सिस्टर्स ऑफ सेंट जोसेफ ऑफ द अपेरिशन, 1987।
सेलिक, ज़ेनेप। "विश्व कोलंबियन प्रदर्शनी में प्राच्यवादी प्रवचन का प्रतिवाद।" नोबल ड्रीम्स, विकेड प्लेज़र्स: ओरिएंटलिज़्म इन अमेरिका में।

1870–1930, होली एडवर्ड्स द्वारा संपादित, पृष्ठ 77–98। प्रिंसटन: प्रिंसटन विश्वविद्यालय
प्रेस, 2000.
सेरासी, मौरिस। “ऑटोमन घरों के प्रकारों का गठन: एक तुलनात्मक अध्ययन” पड़ोसी संस्कृतियों के साथ अंतःक्रिया का अध्ययन।” मुकर्नास 15 (1998): 116–56। चापौतोत-रेमादी, मौनीरा। “ममलुक शहर में महिलाएं।” जर्नल ऑफ द ओरिएंट का आर्थिक और सामाजिक इतिहास 38, संख्या 2 (1995): 145–64. चैटर, खलीफा। निर्भरता और औपनिवेशिक काल से पहले के परिवर्तन: 1815 से ट्यूनिस की रीजेंसी
1857 तक। ट्यूनिस: ट्यूनिस विश्वविद्यालय के प्रकाशन, 1984। चटर्जी, पार्थ। राष्ट्र और उसके खंड। प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993।
चोए, फ्रांस्वा। ऐतिहासिक स्मारक का आविष्कार। लॉरेन द्वारा अनुवादित। ओ'कोनेल. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001. सिज़गेन, एंगिन। फ़ोटोग्राफ़र/फ़ोटोग्राफ़ी अली सामी, 1866-1936। इस्तांबुल: हासेट किताबेवी, 1989।
382 ग्रंथसूची

———. ओटोमन साम्राज्य में फोटोग्राफी। इस्तांबुल: हाशेत किताबेवी, 1987। क्लैंसी-स्मिथ, जूलिया। "लिंग के अंतर्राष्ट्रीय इतिहास में अंतरंग, पारिवारिक और स्थानीय।" जर्नल ऑफ विमेंस हिस्ट्री 18, नं. 2 (2006): 174–83। ———. "विदेशीपन, विलोपन और अनुपस्थिति: अल्जीयर्स का जनसमूह, 1830–1900।" वॉल्स ऑफ अल्जीयर्स: नैरेटिव्स ऑफ द सिटी थ्रू टेक्स्ट एंड इमेज में, ज़ेनेप सेलिक, जूलिया क्लैंसी-स्मिथ और फ्रांसेस टेरपाक द्वारा संपादित। लॉस एंजिल्स: गेटी
रिसर्च इंस्टीट्यूट और सिएटल: यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस, 2009, 19–
61. ———. “औपनिवेशिक दृष्टि: फ्रांसीसी अल्जीरिया में इस्लाम, लिंग और पहचान।”
फ़्राँस्वा आर्मेन्गौड द्वारा अनुवादित। नोवेल्स प्रश्न फेमिनिस्ट्स 25, संख्या। 1
(2006): 25–40.

भूमध्यसागरीय: प्रवासन के युग में उत्तरी अफ्रीका और यूरोप, लगभग 1800– 1900. बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2010. ———. “ट्यूनीशियाई हरम की यात्रा.” जर्नल ऑफ मगरेबी स्टडीज 1–2, नं. 1
(वसंत 1993): 43–49.
कोए, ब्रायन और पॉल गेट्स। स्नैपशॉट फोटोग्राफ: लोकप्रिय फोटोग्राफी का उदय।
ग्राफी. लंदन: ऐश एंड ग्रांट, 1977. कोल, जुआन आर. आई. मध्य पूर्व में उपनिवेशवाद और क्रांति: सामाजिक और सांस्कृतिक
मिस्र के ‘उराबी आंदोलन’ की उत्पत्ति। काहिरा: अमेरिकन यूनिवर्सिटी इन काहिरा प्रेस।

1999.

———. “नारीवाद, वर्ग और इस्लाम बीसवीं शताब्दी के अंत के मिस्र में।” अंतर्राष्ट्रीय-
नेशनल जर्नल ऑफ मिडिल ईस्ट स्टडीज 10, नं. 2 (1981): 393–405. ———. “भूमध्यसागरीय दुनिया में मुद्रण और शहरी इस्लाम, 1890–1920।” मॉडर्निटी एंड कल्चर फ्रॉम द मेडिटेरेनियन टू द इंडियन ओशन में, द्वारा संपादित लीला ताराज़ी फ़वाज़ और सी. ए. बेली, 344–64. न्यूयॉर्क: कोलंबिया विश्वविद्यालय
प्रेस, 2002.
कॉन्क्लिन, एलिस एल., और जूलिया क्लैंसी-स्मिथ। प्रस्तावना। "राइटिंग फ्रेंच" में।
"औपनिवेशिक इतिहास," एलिस एल. कॉनक्लिन और जूलिया क्लैंसी-स्मिथ द्वारा संपादित, 497–
505. विशेष अंक, फ्रेंच हिस्टोरिकल स्टडीज 27, संख्या 3 (ग्रीष्म ऋतु 2004)। कॉनेली, ब्रिजेट। अरब लोक महाकाव्य और पहचान। बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1986।
कुक, माइकल ए. इस्लामी विचार में सही का आदेश देना और गलत को रोकना। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001।
कॉर्बिन, एलेन। समुद्र का आकर्षण: पश्चिमी क्षेत्र में समुद्रतट की खोज विश्व, 1750-1840। जोसेलिन फेल्प्स द्वारा अनुवादित। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994।
क्रैब्स, जैक ए. उन्नीसवीं सदी के मिस्र में इतिहास लेखन: एक अध्ययन राष्ट्रीय परिवर्तन। डेट्रॉइट, मिशिगन: वेन स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस, 1984। डेविड, जीन-क्लाउड। "ओटोमन काल के दौरान अलेप्पो में घरों का आंगन-बगीचा।"
रेस ओरिएंटेल्स 3 (1991): 63-72।
———. “अलेप्पो में 16 वीं सदी के उत्तरार्ध का एक बड़ा घर।” बुलेटिन ऑफ स्टडीज
ओरिएंटेल्स 50 (1998): 61-96।

———. “19 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?” [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible], 217-43。
[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], 2003。
[illegible] 383

———. “[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible]” [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], 317-24。 [illegible]: [illegible]'[illegible], 1989。
[illegible], [illegible]-[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] 1-2 (1994-95): 50-75。 [illegible], [illegible]-[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] 20 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. 10-11 ([illegible] 1982): 94-101。
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] 1718 [illegible] 1918。 [illegible],
[illegible]: [illegible], 1986。
[illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible]:
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible], 1992。
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]. [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:
[illegible]:
[illegible]. [illegible], 1892.
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] “[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible]”
[illegible] [illegible] [illegible]” [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], 147-93。 [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], 2003。 [illegible] [illegible], [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]-

लिंग की ननोलॉजी: सिद्धांत, फिल्म और कथा पर निबंध, 1–30। ब्लूमिंगटन: इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस, 1987।
डेब्बाश, इवान। ला नेशन फ्रांसेज़ एन ट्यूनीसी (1577-1835)। पेरिस: सिरे, 1957। डेलप्लाटो, जोन। "तुर्की हरम में एक ब्रिटिश 'नारीवादी': लेडी मैरी वर्टली मोंटागु का एक चित्र।" अठारहवीं शताब्दी की महिलाएं और कला, फ्रेडरिक कीनर और सुसान लोर्श द्वारा संपादित, 148-63। वेस्टपोर्ट, कॉन.: ग्रीनवुड।

1988.

———. “हरम के वस्त्रों का संग्रह/चित्रण।” भौतिक संस्कृति में, 1740– 1920, जॉन पोटविन और अल्ला मायज़लेव द्वारा संपादित, 87–108. एल्डरशॉट, इंग्लैंड:
एशगेट, 2009.
———. “अंतरविषयक प्रतिमान के रूप में स्थान की लेफेब्रे की आलोचना: इच्छा
और डेलाक्रॉइक्स, रेनॉयर और लुईस द्वारा चित्रित तीन हरम चित्रों में उपनिवेशवाद।
1834-70।" लैंगिक परिदृश्य: अतीत के स्थानों का एक अंतःविषयक अन्वेषण में और स्पेस, बोंज स्ज़्जिगेल, जोसेफिन कारुबिया और लॉरेन डॉवलर द्वारा संपादित।
66–81. यूनिवर्सिटी पार्क: पेंसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी, सेंटर फॉर स्टडीज इन
भूदृश्य इतिहास, 2000।
———. अनेक पत्नियाँ, अनेक सुख: हरम का प्रतिनिधित्व, 1800–1875. मैडिसन, एन.जे.: फेयरली डिकिंसन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002. ड्यूश, सारा. महिलाएँ और शहर: बोस्टन में लिंग, स्थान और शक्ति, 1870–
1940. ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000. डायल्मी, अब्देसमाद. आवास, कामुकता और इस्लाम. कैसाब्लांका: एडिफ एडिशन्स,

1995.

डि-कैपुआ, योआव। "आधुनिक मिस्र के इतिहास लेखन का विचार और अभ्यास, 1890-1970।" पीएच.डी. शोध प्रबंध, प्रिंसटन विश्वविद्यालय, 2004। डोमोश, मोना, और जोनी सीगर। महिलाओं को उनके स्थान पर स्थापित करना: नारीवादी भूगोलवेत्ता।
दुनिया को समझो। न्यूयॉर्क: गिलफोर्ड, 2001।
384 ग्रंथसूची

डोरिस, जॉर्जेस। तुर्की के सुल्तान का निजी जीवन। आर्थर द्वारा अनुवादित।
हॉर्नब्लो। न्यूयॉर्क: एपलटन, 1902।
ड्यूबेन, एलन, और सेम बेहार। इस्तांबुल के परिवार: विवाह, परिवार और प्रजनन क्षमता।
1880–1940. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991. डूडा, डोरोथिया. 16 वीं-18 वीं शताब्दी के सिरुज़ टाउनहाउस की आंतरिक वास्तुकला: संग्रह-
बेरूत में हेनरी फ़राओन। बेरूत: फ्रांज स्टीनर, 1971. डुनैंट, जे. हेनरी। सुर ला रेजेंस डे ट्यूनिस पर ध्यान दें। जिनेवा: जूल्स फिक, 1858. डंकन, नैन्सी। "सार्वजनिक और निजी स्थानों में लिंग और कामुकता पर पुनः बातचीत।" बॉडीस्पेस में: लिंग और कामुकता की अस्थिर भूगोल, नैन्सी डंकन द्वारा संपादित, 127-45। लंदन: राउटलेज, 1996। दुज़दाग, एम. ई. सेहुलिस्लाम एबुसुद एफेंदी फ़ेटवलारि इस्सिनडा 16: असिर तुर्क
हयाती. इस्तांबुल: एर्दोगन किताबेवी, 1983. अर्ली, एवलिन ए. "सीरियाई टेलीविजन ड्रामा: अनुमत राजनीतिक प्रवचन।" मुस्लिम मध्य पूर्व में रोजमर्रा की जिंदगी में, डोना ली बोवेन द्वारा संपादित।
एवलिन ए. अर्ली, 322–34. द्वितीय संस्करण. ब्लूमिंगटन: इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002. एल शेख, नादिया मारिया. “अब्बासिद हरमों का पुनरीक्षण.” जर्नल ऑफ मिडिल ईस्ट
महिला अध्ययन 1, अंक 3 (पतझड़ 2005): 1–19. ———. “महिलाओं का इतिहास: अल-तनुखी का अध्ययन।” नारी लेखन में:

अरब स्रोतों में महिलाएं, मैनुएला मारिन और रैंडी डेगुइल्हेम द्वारा संपादित, 129–
48. लंदन: आई. बी. टॉरिस, 2002.
एल्डेम, सेदाद एच., और फ़ेरीडुन अकोज़न। टोपकापी पैलेस: एक वास्तुकला अध्ययन।
इस्तांबुल: संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय, 1982।
अल-हिब्री, तैयब। इस्लामी इतिहासलेखन की पुनर्व्याख्या: हारून अल-रशीद और अब्बासिद खिलाफत का वृत्तांत। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

1999.

□□-□□□□□□□, □□□□□□□ □□□□-□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□, 1500-1800□

□□□□□□□: □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□, 2005□

□□□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ 11 □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□: □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□, 1910–

11.

इस्लाम का विश्वकोश। नया संस्करण। एच. गिब और अन्य द्वारा संपादित। लीडेन: ब्रिल, 1960–
2008. [ईआई 2 के रूप में उद्धृत।]
एंट्रिकिन, जे. निकोलस। स्थान की मध्यस्थता: आधुनिकता के भूगोल की ओर। बाल्टीमोर: जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991।
फ़हमी, खालिद। “उन्नीसवीं सदी में मिस्र में वेश्यावृत्ति।” आउट-
यूजीन रोगन द्वारा संपादित, "आधुनिक मध्य पूर्व के हाशिये पर" नामक लेख में,
77–103. लंदन: आई. बी. टॉरिस, 2002.
फ़रीद, महमूद कामिल. असरार अल-शवारी' वा अल-क़ुसूर: रिवया अदबिया मिसरिया अख़लाक़िया 'असरिया। काहिरा [इदारत मतबा'अत अल-माहिद द्वारा वितरित], एन.डी. फातिमा, अल्ताफ. जिसने नहीं पूछा. रुखसाना अहमद द्वारा अनुवादित। ऑक्सफोर्ड: हेनेमैन, 1993।
फे, मैरी एन। “महिलाएं और वक्फ: महिलाओं के अधिकारों पर पुनर्विचार की ओर” ममलुक परिवार में स्थान।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मिडिल ईस्ट स्टडीज
29 (1997): 33–51.

फ़ैरुज़ाबादी अल-शिराज़ी, मजद अल-दीन मुहम्मद बी. या'क़ुब अल-. क्यूमस अल-मुहीत।
4 खंड. काहिरा: अल-मतबाह अल-कुस्तलियाह, 1289 [ए.एच.]।
ग्रंथसूची 385

फिन, रॉबर्ट। प्रारंभिक तुर्की उपन्यास, 1872-1900। इस्तांबुल: आइसिस, 1984। फिशमैन, रॉबर्ट। बुर्जुआ यूटोपिया: उपनगरों का उदय और पतन।
न्यूयॉर्क: बेसिक, 1987।
फोर्ड, कॉलिन, और कार्ल स्टाइनॉर्थ, संपादक। आप बटन दबाएँ, बाकी हम करेंगे: स्नैपशॉट फोटोग्राफी का जन्म। लंदन: निशेन, 1988। फौकॉल्ट, मिशेल।
अनुशासन और दंड: जेल का जन्म। एलन शेरिडन द्वारा अनुवादित। न्यूयॉर्क: विंटेज, 1979।

———. यौनिकता का इतिहास। खंड 1, प्रस्तावना। रॉबर्ट हर्ली द्वारा अनुवादित।
न्यूयॉर्क: विंटेज, 1978।
———. “अन्य स्थानों के बारे में।” जे मिस्कोविएक द्वारा अनुवादित। डायक्रिटिक्स 16, संख्या 1
(1986): 22–27.

फ्राइज़, फ्रैंक। "अलेप्पो और दमिश्क की योजनाएँ, शहरी नियोजन के लिए एक परीक्षण स्थल"
डेंजर ब्रदर्स (1931-1937)। मुस्लिम जगत और भूमध्यसागर की समीक्षा।
नी 73-74 (1994): 311-25।
गैब्रिएली, फ्रांसेस्को। “फ़राग बा'दा स-सिद्दा का साहित्यिक और ऐतिहासिक मूल्य
तनुही।” रेविस्टा डेगली स्टुडी ओरिएंटली 19 (1940–41): 16–44. गैलेंट, थॉमस डब्ल्यू. एक्सपीरियंसिंग डोमिनियन: कल्चर, आइडेंटिटी, एंड पावर इन द ब्रिटिश भूमध्यसागरीय क्षेत्र। नोट्रे डेम, इंडियाना: नोट्रे डेम विश्वविद्यालय प्रेस।

2002.

गैनियाज, जीन। ट्यूनीशिया में फ्रांसीसी संरक्षित राज्य की उत्पत्ति (1861-1881)। ट्यूनिस:
ट्यूनीशियाई प्रकाशन गृह, 1968।
गौबे, हेंज और यूजीन विर्थ। अलेप्पो: ऐतिहासिक और भौगोलिक योगदान संरचनात्मक डिजाइन, सामाजिक संगठन और आर्थिक गतिशीलता के लिए
नामिक, निकट पूर्व का एक प्रमुख व्यापारिक महानगर। विस्बाडेन, जर्मनी: एल. रीचर्ट, 1984.
गौटियर, थियोफाइल। कॉन्स्टेंटिनोपल। 1853। रॉबर्ट होवे गोल्ड द्वारा अनुवादित।
न्यूयॉर्क: हेनरी होल्ट, 1875।
कला आलोचना, सैलून से उद्धरण (1833-1872)। मैरी-हेलेन द्वारा संपादित। गिरार्ड. पेरिस: सेगुएर, 1994.
जॉर्जियन, फ्रांकोइस। “अहमद मिधात के अनुसार राजनीतिक अर्थव्यवस्था।” डेस ओटो-
मैन्स ऑक्स टर्क्स: नाइसेंस डी'उन नेशन, फ्रांकोइस जॉर्जियोन द्वारा संपादित, 223-40।
इस्तांबुल: आईएसआईएस, 1995।
गेरबोड, पॉल। "बुर्जुआ सामाजिकता का एक रूप: फ्रांस में तापीयवाद," बेल्जियम और जर्मनी में, 1800-1850।" सामाजिकता और बुर्जुआ समाज में फ्रांस, बेल्जियम और जर्मनी, 1750-1850, एटियेन फ्रांकोइस द्वारा संपादित, 105–
22. पेरिस: ला डॉक्यूमेंटेशन फ़्रैन्काइज़, 1986।
ग़ज़ाली, अबू हामिद मुहम्मद b. मुहम्मद, अल-. इह्या' 'उलूम अल-दीन'। 5 खंड. काहिरा: मुअस्सत अल-हलाबी, 1967-68।
ग़ाज़ी, कामिल अल-. किताब नहर अल-दहाब फाई तारीख हलब। 1923-26. द्वारा संपादित
शॉकी शाथ और महमूद फाखुरी। 3 खंड. दूसरा संस्करण. अलेप्पो: दार अल-क़लम अल-अरबी, 1991-93.

गोले, निलुफर। निषिद्ध आधुनिकता: सभ्यता और आवरण। एन आर्बर: यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस, 1997।
गोनेला, जूलिया। एक 17 वीं सदी की ईसाई-प्राच्य शैली की आवासीय इमारत। अलेप्पो (सीरिया): इस्लामी कला संग्रहालय, स्टेट-386 पुस्तकालय में स्थित "अलेप्पो कक्ष"
बर्लिन के संग्रहालय – प्रशियाई सांस्कृतिक विरासत फाउंडेशन। मेंज, जर्मनी: संग्रहालय
इस्लामी कला, 1996।
———. “अलेप्पो का गढ़: हाल के अध्ययन।” मुस्लिम सैन्य वास्तुकला में- ग्रेटर सीरिया में इतिहास: इस्लाम के आगमन से लेकर ओटोमन काल तक, द्वारा संपादित
ह्यू कैनेडी, 165–75. लीडेन: ब्रिल, 2006.
गुडी, जैक। “बहुविवाह, अर्थव्यवस्था और महिलाओं की भूमिका।” द कैरेक्टर में
किंशिप पर आधारित पुस्तक, जैक गुडी द्वारा संपादित, पृष्ठ 175-90। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय
प्रेस, 1973।
गोव्सा, इब्राहिम. "अहमत मिधात एफेंदी।" तुर्क मेशुरलारि में, 21-22।
इस्तांबुल:
येदिगुन पब्लिकेशन्स, तिथि अज्ञात।
ग्रैबर, ओलेग। इस्लामी कला का गठन। न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

1987.

ग्राहम-ब्राउन, सारा। महिलाओं की छवियां: फोटोग्राफी में महिलाओं का चित्रण
मध्य पूर्व 1860-1950। लंदन: क्वार्टेट, 1988। ग्रीन, अर्नोल्ड एच. ट्यूनीशियाई उलेमा, 1873-1915: सामाजिक संरचना और प्रतिक्रिया
वैचारिक धाराएँ। लीडेन: ब्रिल, 1978। ग्रोसरिचर्ड, एलेन। सुल्तान का दरबार: पूर्व की यूरोपीय कल्पनाएँ। लिज़ हेरॉन द्वारा अनुवादित, म्लाडेन डोलर द्वारा परिचय सहित। लंदन: वर्सो, 1998। गुहा-ठाकुरता, तापती। स्मारक, वस्तुएँ, इतिहास: औपनिवेशिक काल में कला की संस्थाएँ।
राष्ट्रीय और उत्तर-औपनिवेशिक भारत। न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004। गुरलिट, कॉर्नेलियस। कॉन्स्टेंटिनोपल की वास्तुकला। बर्लिन: ई. वासमथ, 1912। हैबरमास, जुर्गन। सार्वजनिक क्षेत्र का संरचनात्मक परिवर्तन: एक जांच।
बुर्जुआ समाज की श्रेणी में। थॉमस बर्गर द्वारा अनुवादित। कैम्ब्रिज: प्रेस के साथ, 1998।
हल्लाज, उमर अब्दुलअज़ीज़। “शहरी विरासत के मूल्यांकन की प्रक्रिया: सीरिया के अलेप्पो और यमन के शिबाम का तुलनात्मक विश्लेषण।” स्टेट्स एंड सोसाइटीज़ ऑफ़
अरब पूर्व भविष्य की तलाश में, 1945-2005, गेरार्ड डी. खौरी द्वारा संपादित।
नादिन मेउची, 2:195–208. पेरिस: ग्यूथनर, 2007. हानियोग्लू, एम. शुकरू. क्रांति की तैयारी: युवा तुर्क, 1902–1908.
ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001।
हैनसन, सुसान, और गेराल्डिन प्रैट। लिंग, कार्य और स्थान। लंदन: रूटलेज, 1995।
हैथवे, जेन। बशीर आगा: ओटोमन शाही हरम का प्रमुख हिजड़ा।
ऑक्सफोर्ड: वन वर्ल्ड, 2005।
———. “मिस्र में निर्वासित एक ओटोमन हिजड़े की संपत्ति और प्रभाव: अब्बास आगा की वक्फ सूची।" जर्नल ऑफ द इकोनॉमिक एंड सोशल हिस्ट्री

ओरिएंट 37, नं. 4 (1994): 293–317. हेडन, डोलोरेस. द ग्रैंड डोमेस्टिक रिवोल्यूशन. कैम्ब्रिज: एमआईटी प्रेस, 1980. ———. अमेरिकी सपने का पुनर्रचना: लिंग, आवास और पारिवारिक जीवन. न्यूयॉर्क: नॉर्टन, 2002. हेगलैंड, मैरी ई. “अलीआबाद महिलाओं की राजनीतिक भूमिकाएँ: सार्वजनिक-निजी द्वंद्व का अतिक्रमण।” मध्य पूर्वी इतिहास में महिलाएं: बदलती सीमाएं- निक्की आर. केडी और बेथ बैरन द्वारा संपादित सेक्स और जेंडर में मेष राशि, 215-30।
न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991।
ग्रंथसूची 387

हर्बर्ट, लेडी मैरी ई. ए सर्च आफ्टर सनशाइन, ऑर अल्जीरिया इन 1871. लंदन: बेंट—
ले, 1872.
हेसे-वार्टेग, बैरन अर्न्स्ट वॉन। ट्यूनिस: भूमि और लोग। लंदन:
चैटो और विंडस, 1882।
हेयड, यूरियल। प्राचीन ओटोमन आपराधिक कानून में अध्ययन। ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस।
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1973।
हिबर्ट, जेम्स। न्यूशम वसीयत के चित्रों और रेखाचित्रों की सूची।
प्रेस्टन निगम. प्रेस्टन, इंग्लैंड भूमि: आर. पार्किंसन, 1884. हिलाल, 'इमाद। अल-बग़या फ़ी मिसर: दिरसा तारिखिया इज्तिमा'इया (न्यूनतम 1834-1949)।
काहिरा: अल-'अरबी लिल-नश्र वा अल-तावज़ी', 2001।
हिल, जेन। “‘आज कोई सम्मान नहीं है’: पुरानी यादें, ‘सम्मान,’ और विरोधात्मकता
मेक्सिकनो (नाहुआटल) भाषा विचारधारा में प्रवचन।" भाषा विचारधाराओं में: अभ्यास और सिद्धांत, बी. शिफेलिन, के. वूलार्ड और पी. क्रोस्किटी द्वारा संपादित।
68–86. न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1998.
हिलनब्रैंड, रॉबर्ट। इस्लामी वास्तुकला। न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।

1994.

हिम्सी, कुस्ताकी अल-। उदाबा 'हलब धू अल-अथर फ़ी अल-क़रन अल-तासी' 'अशर।
अलेप्पो:
अल-मतबा अल-मारुनिया, 1925।
विंटर, जैक्स। “बाब अल-नैराब, अलेप्पो का एक उपनगर, शहर के बाहर और भीतर सिटे।” एट्यूड्स रूरल्स 155–56 (2000): 215–38. हॉफनर, हैरी ए., जूनियर। “हित्ती अनातोलिया की कानूनी और सामाजिक संस्थाएँ।” प्राचीन निकट पूर्व की सभ्यताओं में, जे. सैसन द्वारा संपादित, 1:555–69. न्यूयॉर्क: स्क्रिबनर्स, 1995.
हॉलैंडर, ऐनी। फ़ैब्रिक ऑफ़ विज़न। लंदन: नेशनल गैलरी, 1992। ———। कपड़ों के आर-पार देखना। बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, 1993। हुसैन, रोकेया सखावत। सुल्ताना का सपना: एक नारीवादी यूटोपिया, और चुनिंदा रचनाएँ।
एकांतप्रिय लोगों से। रौशन जहाँ द्वारा संपादित और अनुवादित। उपसंहार।
हाना पापानेक द्वारा। न्यूयॉर्क: सिटी यूनिवर्सिटी में फेमिनिस्ट प्रेस।
न्यूयॉर्क, 1988।
हौरानी, अल्बर्ट। उदारवादी युग में अरबी विचार, 1798-1939। लंदन: ऑक्सफोर्ड
यूनिवर्सिटी प्रेस, 1962।
ह्यूगन, हेनरी। "1825 में पेरिस में एक ट्यूनीशियाई दूतावास (सी महमूद काहिया का मिशन)।" रिव्यू ट्यूनीसिएन नं. 13-14 (1933): 108-14। हंटर, जेम्स डेविसन। इंजीलवाद: आने वाली पीढ़ी। शिकागो: शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस, 1987।
हुसरी, सती अल-। अबहथ मुख्तार फ़ि अल-क़ौमिया अल-अरबिया। काहिरा: दार अल-मा'आरिफ़,

1964.

□□□□ '□□□□ □□-□□□□, □□□□□ □□. '□□□□□□□□□. □□-□□□□□□□□ □□□ □'□□□□ □□-□□□□ □□□□□: □□□

□□-□□□□□ □□-□□□□□□, 1415/1995□

□□□□ '□□□□ □□□□□□□ □□-□□□□ □□-□□□□□□ □□□□ □□-□□□□□ □□-□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ 9 □□□. □□□□□: □□□ □□-□□□□□ □□-□□□□□□, 1983□

□□□□ □□□ □□□□□, □□□□ [□□□□ □□□ □□□□□]□ □□□□□ □□□ □□-□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□

□□□□□□□ □□ '□□□ □□-□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ 8 □□□□ □□□□□□□: □□□□□□□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□, 1989□

388 □□□□□□□□□

□□□□ □□-□□. □□-□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□-□'□□ □□-□□□□□ □□-□□□□□□ □□□□□□: □□-□□□□

□□-□□□□□□□□, 1929.

□□□□ □□-□□□□□□□ □□□□□ □□-□□□□. □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□: □□□□□□

□□-□□□□□, 1411/1991.

- □□-□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□-□□□□ □□ □□-□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□. 8 □□□. □□□□□: □□□ □□-□□□□□ □□-□□□□□□, 1992. □□□□ □□□□ □□-□□□□□□□□□□ □□-□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□-□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ 8 □□□. □□□□□□□: □□-□□□ □□-□□□□□□ □□ □□-□□□□□, 1975-79□ □□□□ □□□□□. □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□. □. □□. □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□

□□□ 2. □□□□□□ □□□□□□□□ 117 (□□□□□□□ □□□□□□□□), □□□□□□□□□: □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□

□□□□□, 1962□

□□□□ □□□□□□ □□-□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□-□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□

□□□□□□. □□□□□□□: □□-□□□□□ □□-□□□□□□□□□, 1961□

□□□□□ □□□□ □□-□□□□□□□□□□, □□□□□ □□. '□□□□. □□-□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□-□□□□□□□ 8 □□□□.

□□□□□□:

□□□□ □□-□□□□□□ □□-'□□□□□□□□, □□.□□.

□□□□□ □□□□□. □□□□□□ □□-□□□□□. □□□□□ □□-□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□: □□□□

□□-□□□□□□ □□-□□□□□, 1980.

□□□□□ □□□□□□ □□-□□□□□□□□□□ ['□□□□ □□. □□□□□ □□□□□ □□□□□□]□ □□□□ □□-□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□. □□□□□□: □□-□□□□□□□□□ □□-'□□□□□□□ □□-□□-□□□□□□□' □□ □□-□□□□□, 1993□ □□□□□ □□□□□□, '□□□□ □□. □□□□□. □□-□□□□□□□□. □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ 12 □□□□.

□□□□□□□: □□□□□□ □□-□□□□□□□□□□ □□-□□□□□□□□, 1970□

□□□□□ □□□□□□, '□□□□□ □□-□□□□□□ □□-□□□□□ □□-□□□□□□□□ □□□□□□ □□-□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□

2 □□□□. □□□□□□: □□□□ □□-□□□□□□□, 1992□

□□□□□ □□□□□, □□□□□□□□ □□. '□□□□. □□□□□□□ □□-□□□□□□ □□-□□□□□□□ 4 □□□□. □□□□□□□: □□□□ □□-□□□□, □□.□□. □□□□□ □□□□□□□, □□□□ □□-□□□□□ □□□□□ □□-□□□□ □□□□□□□□ □□. □□□□□□□□. □□□□□□ □□-□□□□

□□-□□□□□□. 3 □□□□. □□□□□□: □□□□ □□□□□ □□-'□□□□, 1970□ [□□□□□ □□□□□□□□ □□-□□□□□□□□?]□ '□□□□□□□ □□-□□□□□'□ '□□□□□ □□-□□□□□□ □□□□□ □□-□□□□□□' □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□: □□□□ □□-□□□□□□□□, 1997□

□□□□□ □□□□□□□ ['□□□□□ □□□□□□□ □□. □□□□□□□□□]□ '□□□□□ □□-□□□□□□ 4 □□□□. □□□□□□□: □□□□ □□-□□□□□□ □□-□□□□□□□□□, 1930□

□□□□□ □□□□, □□□□□□□□□ □□-□□□□□□ □□-□□□□□□□ □□□□□□□□ '□□□□□ □□-□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□

'□□□. □□□□□□: □□□□ □□□□□□, 1418/1997□

□□□□□□□□, □□□□□□□ "□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□" □□□□□□□□ □□□□□□□□-

□□ 1, □□□□. 1 (1969): 105-38□

इस्फ़हानी, अबू अल-फ़राज अल-। किताब अल-अघानी. इब्राहिम अल-अबयारी द्वारा संपादित। 31 खंड.
काहिरा: दार अल-शाब, 1969।
जबरती, 'अब्द अल-रहमान बी. हसन अल-. 'अजाइब अल-अथर फ़ि अल-तराजिम वा अल-अख़बर।
'अब्द अल-रहमान' अब्द अल-रहमान 'अब्द अल-रहमान' द्वारा संपादित। 4 खंड. काहिरा: डार
अल-कुतुब अल-मिस्रिया, 1998।
जाहिज़, अल- [अबू 'उथमान' अम्र बी। बह्र]। अल-बयान वा अल-तबयिन। 'अब्द' द्वारा संपादित
अल-सलाम हारून. 4 खंड. काहिरा: मकतबत अल-खानजी, 1985। [जवाहरी, इस्माइल बी. हम्माद अल-]। मुख्तार अल-सिहा. मुहम्मद बी द्वारा संक्षिप्त।
अबी बक्र बी. 'अब्द अल-कादिर अल-रज़ी। काहिरा: मतबात वादी अल-निल, 1287 ए.एच. जयवर्धने, कुमारी। तीसरी दुनिया में नारीवाद और राष्ट्रवाद। लंदन: जेड, 1986.
ग्रंथसूची 389

जेनिंग्स, एरिक टी. उपनिवेशवादियों का उपचार: जलचिकित्सा, जलवायु विज्ञान और फ्रांसीसी भाषा
औपनिवेशिक स्पा। डरहम: ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006। जोकिलेहटो, जुक्का। वास्तुकला संरक्षण का इतिहास। ऑक्सफोर्ड: बटरवर्थ-हेनेमैन, 1999।
जुहा, फरीद. अल-हयात अल-फ़िकरिया फ़ी हलब फ़ी अल-क़रन अल-तासी'' अशर। दमिश्क:
अल-अहली, 1988.
जुयनबोल, जी. एच. ए. “कुछ इस्नाद-विश्लेषणात्मक विधियाँ जो के आधार पर सचित्र हैं
हदीस साहित्य से महिलाओं को अपमानित करने वाले कई कथन।" अध्ययन में इस्लामी हदीस की उत्पत्ति और उपयोग, अनुच्छेद 6. एल्डरशॉट, इंग्लैंड लैंड: वेरियोरम,

1996.

कहफ़, मोहजा। मुस्लिम महिला का पश्चिमी चित्रण: झगड़ालू महिला से लेकर ओडालिस्क. ऑस्टिन: यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास प्रेस, 1999. कामेन, माइकल. मिस्टिक कॉर्ड्स ऑफ मेमोरी. न्यूयॉर्क: विंटेज, 1991. कावाकिबी, सलाम. “इतिहास की पुनर्व्याख्या में टेलीविजन की भूमिका.” मा-
ग़रेब/मचरेक 158 (अक्टूबर-दिसंबर 1997): 47-55. कयाली, हसन. अरब और युवा तुर्क: ओटोमनवाद, अरबवाद और इस्लामवाद
ओटोमन साम्राज्य, 1908–1918. बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, 1997. ———. “ओटोमन साम्राज्य में चुनाव और चुनावी प्रक्रिया, 1876–1919.” इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मिडिल ईस्ट स्टडीज़ 27, नं. 3 (1995): 265–86. केड्डी, निक्की आर. “परिचय: मध्य पूर्वी महिलाओं के इतिहास को समझना.”
निक्की आर. केडी और बेथ बैरन द्वारा संपादित, "मध्य पूर्वी इतिहास में महिलाएं: लिंग और लैंगिकता में बदलती सीमाएं" में, पृष्ठ 1-22। न्यू हेवन: येल विश्वविद्यालय
प्रेस, 1991.
कीथ, माइकल और स्टीव पाइल। “परिचय, भाग 2: राजनीति का स्थान।” में
प्लेस एंड द पॉलिटिक्स ऑफ आइडेंटिटी, माइकल कीथ और स्टीव पाइल द्वारा संपादित, 22–40.
लंदन: रूटलेज, 1993।
केनेडी, डेन। द मैजिक माउंटेंस: ब्रिटिश राज के हिल स्टेशन। बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1996।
कैनेडी, ह्यूग। खलीफाओं का दरबार: इस्लाम के सबसे महान राजवंश का उदय और पतन।
नास्टी। लंदन: वेडेनफेल्ड एंड निकोलसन, 2004। केनी, एल. एम. “अल-मुक्ताताफ में पूर्व बनाम पश्चिम, 1875-1900: छवि और आत्म-छवि।” नियाज़ी बर्केस को प्रस्तुत इस्लामी सभ्यता पर निबंध, डी. पी. लिटिल द्वारा संपादित, 140-54। लीडेन: ब्रिल, 1976।
केर्मेली, ई., और ओ. ओज़ेल, संपादक। ओटोमन साम्राज्य: मिथक, वास्तविकताएँ और अश्वेत

होल्स, कॉलिन इम्बेर के सम्मान में योगदान। इस्तांबुल: आईएसआईएस, 2006। खालिदी, तारिफ। शास्त्रीय काल में अरबी ऐतिहासिक विचार। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994।
खैर अल-दीन अल-तुनिसी। “मेरे बच्चों के लिए। मेरे निजी और राजनीतिक जीवन के संस्मरण।” खरेदीन: राजनेता; मोहम्मद-सलाह मज़ली और जीन पिग्नन द्वारा संपादित ऐतिहासिक दस्तावेजों पर टिप्पणी, पृष्ठ 15-105। ट्यूनिस: ट्यूनीशियन हाउस ऑफ
संस्करण, 1971।
खेचेन, मोना। “परिवर्तन में स्थानिक पैटर्न: पुराने अलेप्पो के लिए एक पुनर्वास ढांचा।” डिज़ाइन में डॉक्टरेट थीसिस, हार्वर्ड विश्वविद्यालय, 2004। खौरी, दीना रिज़क। “सीमाएँ खींचना और स्थान परिभाषित करना: ओटोमन इराक में महिलाएं और स्थान।” इस्लामी इतिहास में महिलाएं, परिवार और तलाक कानून 390 ग्रंथ सूची में।
इतिहास, अमीरा एल अज़हरी सोनबोल द्वारा संपादित, पृष्ठ 173-87। सिरैक्यूज़, न्यूयॉर्क: सिरैक्यूज़
यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996।
किलपैट्रिक, हिलेरी। “महिलाओं के बारे में अब्बासिद और ममलुक काल की कुछ उत्तरकालीन पुस्तकें:
एक साहित्यिक ऐतिहासिक दृष्टिकोण।” अरेबिका 42 (1995): 69–75. किर्शेनब्लाट-गिम्ब्लेट, बारबरा। गंतव्य संस्कृति: पर्यटन, संग्रहालय और विरासत। बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1998। ———। “नृविज्ञान से विरासत तक: संग्रहालय की भूमिका।” मुख्य भाषण, सोसाइटी इंटरनेशनेल डी एथनोलॉजी एट डी फोकलोर की 8 वीं कांग्रेस, मार्सिलेस, 28 अप्रैल, 2004।
कोसेओग्लू, सेंगिज़। "टॉपकापी पैलेस के हरम अपार्टमेंट का दौरा।" में टोपकापी सराय संग्रहालय: वास्तुकला, हरम और अन्य इमारतें, संपादित
जे. माइकल रोजर्स द्वारा, 27–36. लंदन: थेम्स एंड हडसन, 1988. कोयमेन, ओया. "उन्नीसवीं शताब्दी में ओटोमन साम्राज्य में मुक्त व्यापार का आगमन और परिणाम." बाल्कन स्टडीज 2 (1971): 47–55. कुर्दिश, फातिना. "अल-तताव्वुर अल-उमरानी ली-हलाब और मुवाजाहा अल-ताथिरात अल-उरुब्बिया." बुलेटिन ऑफ ओरिएंटल स्टडीज 52 (2000): 347–56. लाकान, जेम्स. "अचेतन में अक्षर का

उदाहरण." जैक्स लाकान, लेखन: एक चयन, 138–68. ब्रूस फिंक द्वारा अनुवादित. न्यूयॉर्क: नॉर्टन, 2002.
———. “लिंग का अर्थ।” जैक्स लाकान, एक्रिट्स: एक चयन में,
271–80. ब्रूस फिंक द्वारा अनुवादित। न्यूयॉर्क: नॉर्टन, 2002. लाल, रूबी। प्रारंभिक मुगल जगत में घरेलू जीवन और सत्ता: ऐतिहासिककरण
हरम। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005। ———। “हरम का ऐतिहासिककरण: एक राजकुमारी के संस्मरण की चुनौती।” फेमी-
एनआईएसटी स्टडीज 30, नं. 3 (2004): 590–616. लैलेमंड, चार्ल्स. ट्यूनिस औ XIXe siècle. पेरिस: मैसन क्वांटिन, 1890. लेन, एडवर्ड विलियम. आधुनिक काल के रीति-रिवाजों और परंपराओं का विवरण
मिस्रवासी। 1836. पुनर्मुद्रण, लंदन: जे. एम. डेंट, 1936. ———, संपादक। कुरान से चयन, संपादक और अनुवादक एडवर्ड विलियम लेन।
लंदन: जेम्स मैडेन, 1843।
लेन-पूल, स्टेनली। काहिरा की कहानी। 1902। पुनर्मुद्रण, लिकटेंस्टीन: नेन्डेलन।

1971.

लार्गुएचे, डलेंडा। "महिला और शहर के लिए उपहार: इतिहास के बीच अज़ीज़ा उस्माना"
और स्मृति।" वुमेन इन सिटीज़ में, डेलेंडा लार्गुएचे द्वारा संपादित, 35-53: काहियर्स डू सेरेस, 2005।
ट्यूनिस रीजेंसी में अवकाश, सामाजिकता और सांस्कृतिक परिवर्तन
ओटोमन युग। मेलांगेस मेडिटेरैनेंस डी'अमिटिए एट डे टोही में
आंद्रे रेमंड, अब्देलजेलिल टेमीमी द्वारा संपादित, 1:155-65। ट्यूनिस: फ़ॉन्डेशन टेमिमी, 2004।
लारौई, अब्दुल्ला। अरब बुद्धिजीवी का संकट: परंपरावाद या इतिहासवाद? बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1976।
लेडर, स्टीफ़न, और हिलेरी किलपैट्रिक। “शास्त्रीय अरबी गद्य साहित्य: एक शोधकर्ता का रेखाचित्र।” जर्नल ऑफ़ अरेबिक लिटरेचर 22, नं. 1 (1992): 2–
25। लेफ़ेब्रे, हेनरी। अंतरिक्ष का निर्माण। डोनाल्ड निकोलसन-स्मिथ द्वारा अनुवादित। ऑक्सफ़ोर्ड: ब्लैकवेल, 1991।
ग्रंथसूची 391

लेहमान, उलरिच। टाइगर लीप: आधुनिकता में फैशन। कैम्ब्रिज: प्रेस के साथ।

2000.

लेज्यून, फिलिप। आत्मकथात्मक संधि. पेरिस: एडिशन डी सेउइल, 1975। लुईस, रीना। लिंग निर्धारण प्राच्यवाद: नस्ल, स्त्रीत्व और प्रतिनिधित्व। लंदन: रूटलेज, 1996।
प्राच्यवाद पर पुनर्विचार: महिलाएं, यात्रा और ओटोमन हरम। लंदन:
आई. बी. टॉरिस, 2004.
लुईस, रीना और नैन्सी मिकलराइट, संपादक। लिंग, आधुनिकता और स्वतंत्रता: मध्य पूर्वी और पश्चिमी महिलाओं के लेखन; एक आलोचनात्मक स्रोतपुस्तिका। लंदन:
आई. बी. टॉरिस, 2006.
लिपस्टैड, हेलेन। “‘बर्बर घर का [लगभग] कोई उल्लेख नहीं है
यह दस्तावेज़: वास्तुकला के लिए बॉर्डियू के मानवविज्ञान के ‘अच्छे उपयोग’ के लिए। सोसाइटी फॉर आर्किटेक्चरल की वार्षिक बैठक में प्रस्तुत पत्र। इतिहासकार, डेनवर, कोलोराडो, 23-27 अप्रैल, 2003।
लॉर्सिन, पेट्रीसिया। “अफ्रीका में रोम और फ्रांस: औपनिवेशिक अल्जीरिया के लैटिन को पुनः प्राप्त करना”
अतीत।” फ्रेंच हिस्टोरिकल स्टडीज 25 (वसंत 2002): 295–329। लो, सेथा एम., और डेनिस लॉरेंस-ज़ुनिगा, संपादक। अंतरिक्ष और मानवविज्ञान
स्थान: संस्कृति का पता लगाना। माल्डेन, मैसाचुसेट्स: ब्लैकवेल, 2003। लोवे, लिसा। "ओरिएंटलिज़्म में पुनर्पाठ: मोंटेस्क्यू के 'लेट्रेस पर्सनेस' में प्राच्य आविष्कार और प्राच्य के आविष्कार।" सांस्कृतिक आलोचना संख्या 15 (1990): 115-43।
लोवेनथल, डेविड। अतीत एक विदेशी देश है। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1985।
अतीत के वश में: विरासत अभियान और इतिहास की लूट। नया
यॉर्क: फ्री प्रेस, 1996।
लुत्फी, होडा। “चौदहवीं शताब्दी की काहिरा की महिलाओं के रीति-रिवाज और परंपराएँ:
मुस्लिम धार्मिक ग्रंथों में स्त्री अराजकता बनाम पुरुष शरिया व्यवस्था।

मध्य पूर्वी इतिहास में महिलाएं: लिंग और लैंगिकता में बदलती सीमाएं, निक्की आर. केडी और बेथ बैरन द्वारा संपादित, 99-118। न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991।
———. “अल-सखावी की किताब अल-निसा’ सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य के स्रोत के रूप में”
"पंद्रहवीं शताब्दी ईस्वी के दौरान मुस्लिम महिलाओं का इतिहास" मुस्लिम विश्व
71 (1981): 104–24.
माब्रो, जूडी। छिपे हुए अर्ध-सत्य: मध्य पूर्व के बारे में पश्चिमी यात्रियों की धारणाएँ
महिलाएँ। लंदन: आई. बी. टॉरिस, 1991।
मैकफार्लेन, एलन। शांति के बर्बर युद्ध: इंग्लैंड, जापान और माल्थसियन ट्रैप. ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल, 1997.
मैकेंज़ी, जॉन। प्राच्यवाद: इतिहास, सिद्धांत और कला। मैनचेस्टर, इंग्लैंड।
मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995।
मालिनास, अल्बर्ट। कोरबूस जल-खनिज समूह (ट्यूनीशिया) पर सूचना। ट्यूनिस: रैपिड, 1909.
मार्मन, शॉन। इस्लामी समाज में हिजड़े और पवित्र सीमाएँ। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995।
मार्टेल, आंद्रे। लुइस-अर्नोल्ड और जोसेफ एलेग्रो: बोन में ट्यूनिस के बे के कौंसल।
पेरिस: प्रेसेस यूनिवर्सिटेयर्स डी फ़्रांस, 1967।
392 ग्रंथसूची

मैसी, डोरेन। अंतरिक्ष के लिए। लंदन: सेज, 2005। ———। अंतरिक्ष, स्थान और लिंग। मिनियापोलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस।

1994.

——— श्रम का स्थानिक विभाजन: सामाजिक संरचनाएं और उत्पादन का भूगोल-लंदन: मैकमिलन, 1984।
मसूदी, अबू अल-हसन अल-। मुरुज अल-दहाब वा मादीन अल-जवाहर। द्वारा संपादित चार्ल्स पेलेट. 7 खंड. बेरूत: लेबनानी यूनिवर्सिटी प्रेस, 1973-74। ———. मुरुज अल-धाहब और मादीन अल-जवाहर। मुफीद मुहम्मद कुमैहा द्वारा संपादित। 4 खंड. बेरूत: दार अल-कुतुब अल-इल्मियाह, 1986. मैकडॉवेल, लिंडा। लिंग, पहचान और स्थान: नारीवादी भूगोल को समझना।
मिनियापोलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस, 1999।
मैकडॉवेल, लिंडा, और जोआन पी. शार्प, संपादक। स्थान, लिंग, ज्ञान: नारीवादी पठन सामग्री। लंदन: अर्नोल्ड, 1997। मेलेक हनीम। हरम में तीस वर्ष, 1872। इरविन सी. शिक द्वारा परिचय सहित प्रतिकृति पुनर्मुद्रण। संवाद में संस्कृतियाँ श्रृंखला 1, खंड 1। पिस्काटावे, न्यू जर्सी: गोरगियास प्रेस, 2005।
मेलमैन, बिली। महिलाओं का अभिविन्यास: अंग्रेजी महिलाएं और मध्य पूर्व, 1718-1918;
यौनिकता, धर्म और कार्य। एन आर्बर: यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस, 1992। मेरिवेदर, मार्गरेट एल., और जूडिथ टकर। परिचय। एक सामाजिक इतिहास में आधुनिक मध्य पूर्व में महिलाएं और लिंग, मार्गरेट एल. मेरिवेदर और जूडिथ टकर द्वारा संपादित। बोल्डर, कोलोराडो: वेस्टव्यू, 1999। मर्निसी, फातिमा। अतिक्रमण के सपने: एक हरम की लड़की के बचपन की कहानियां। रीडिंग, मैसाचुसेट्स: एडिसन-वेस्ली, 1994।
———. ले हरेम एट ल'ऑक्सीडेंट। पेरिस: एल्बिन मिशेल, 2001। ———. द वेल एंड द मेल एलीट: ए फेमिनिस्ट इंटरप्रिटेशन ऑफ वूमेन्स राइट्स इन
इस्लाम। मैरी जो लेकलैंड द्वारा अनुवादित। रीडिंग, मैसाचुसेट्स: एडिसन-वेस्ली, 1991। मेयर, एरिक। “‘मैं तुम्हें नहीं जानता, मैं तुम्हारी जाति से घृणा करता हूँ’: दूसरे की नज़र में रोमांटिक प्राच्यवाद।” ईएलएच 58, संख्या 3 (1991): 657–99। मिकलेराइट, नैन्सी। मध्य पूर्व में एक विक्टोरियन यात्री: फोटोग्राफी

□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□: □□□□□, 2003□ □□□□□□,
□□□□□□□□□ "□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□" "□□□ □□
□□□□□: □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□," 181-201□ □□□□□ □□□,
□□□□□ □□□□□□ 32, □□□ 2 (□□□□ 1999)□ □□□□□□□□□, □□□□ □□□ □□□□□□□□
□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□. □□. □□□□□□□□□ □□ □□. □□. □□□□□□□□□□□ □□□□□□
□□□□□□□□□ 4 □□□□ □□□□□□□□□: □□□□□ □□□□□□□□, 1921□
□□□□□□□ □□-□□□□□ □□. □□. □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ 6 □□□□ □□□□□□□□□:
□□□□□ □□□□□□□□, 1920□
□□□□□, □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□: □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□,
□□□□□□□□□: □□□□□□□, 2000□
□□□□□, □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□: □□□□□□□□□□
□□□□□□□□□□□ □□□□□□

1988.

मोअल्ला, अस्मा। ट्यूनिस की रीजेंसी और ओटोमन पोर्टे, 1777-1814: सेना और अठारहवीं शताब्दी के अंत में उत्तरी अफ्रीका के एक ओटोमन साम्राज्य के शासन-
ट्यूरी. लंदन: रूटलेज, 2005.
ग्रंथसूची 393

मॉमसेन, जेनेट हेंशाल, और जेनेट जी. टाउनसेंड, संपादक। लिंग का भूगोल तीसरी दुनिया। अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, 1987। मोनचिकोर्ट, चार्ल्स। नाइसेन, फ़िलिपी और कैलिगारिस के अप्रकाशित वृत्तांत (1788, 1829,
1834). पेरिस: सोसाइटी डी'एडिशन जियोग्राफिक्स, मैरिटाइम्स एट कॉलोनियल्स, 1929। मोंटागु, लेडी मैरी वोर्टली। पत्र. इसोबेल ग्रुंडी द्वारा संपादित। लंदन: पेंगुइन, 1997.
मोंटेस्क्यू, बैरन ऑफ ब्रेडे एट डे। फारसी पत्र। अनुवादक:
जॉर्ज आर. हीली. इंडियानापोलिस: हैकेट, 1999.
मूसा, मत्ती। आधुनिक अरबी कथा साहित्य की उत्पत्ति। द्वितीय संस्करण। बोल्डर, कोलोराडो।
लिन रीनर, 1997।
मोर्टिमर, मिल्ड्रेड। “यह किसका घर है? कैलिक्सथे बेयाला की रचना में स्थान और जगह”
सूरज ने ही मुझे और उस छोटी सी लैम्पपोस्ट वाली लड़की को जला दिया। विश्व साहित्य
आज 73, नहीं. 3 (ग्रीष्म 1999): 467-73। मौराडगिया डी'ओहसन, इग्नेस। लेमपायर ओथोमन की सामान्य झांकी। 7 खंड. पेरिस: डी ल'इम्प्रिमेरी डी महाशय फ़िरमिन डिडोट, 1787-1824। मुदिरिया अल-अम्मा लिल-अथर वा अल-मताहिफ, अल-। दलिल अल-मताहिफ़ वा अल-मवाक़ी'
अल-अथरिया फ़ि सुरिया। दमिश्क: अल-मुदिरिया अल-अम्मा लिल-अथर वा अल-मताहिफ, 1979.

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1927.

- मुदक्किरत वसीफा मिसरिया। काहिरा: मकतब अल-नश्र वा अल-तालिफ़, 1927. मूसा, सलामा। अल-यौम वा अल-ग़ाद। काहिरा: सलामा मूसा नश्र वा तावज़ी', 1927. मुसल्लम, बसीम। इस्लाम में सेक्स और समाज. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1983।
नजमाबादी, अफसानेह। “पुरुषत्व की कल्पनाओं के रूप में ‘महिलाओं की चाल’ की कहानियों का अध्ययन।” कल्पित पुरुषत्व: आधुनिक युग में पुरुष पहचान और संस्कृति में।
मध्य पूर्व, माई घौसौब और एम्मा सिंक्लेयर-वेब द्वारा संपादित, 147-68।
लंदन: साकी, 2000।
नीड, लिंडा। महिला नग्नता: कला, अश्लीलता और कामुकता। लंदन: रूटलेज, 1992।
नेसिपोग्लू, गुलरु। वास्तुकला, समारोह और शक्ति: टोपकापी महल
पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी। कैम्ब्रिज: एमआईटी प्रेस, 1991। ———। “ओटोमन, सफ़वी और मुग़ल महलों में दृष्टि को आकार देना।” आर्स
ओरिएंटलिस 23 (1993): 303–42.
निरंजना, सीमंथिनी। लिंग और स्थान: नारीत्व, यौनिकरण और
महिला शरीर। नई दिल्ली: सेज, 2001। नोचलिन, लिंडा। "काल्पनिक पूर्व।" आर्ट इन अमेरिका 71 (मई 1983): 118-31, 187-91।
नूरानी, यासीन। "प्रारंभिक इस्लामी संस्कृति में विषमलोक और शराब कविता।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मिडिल ईस्ट स्टडीज 36, नं. 3 (2004): 345–66. नॉर्ड, डेबोरा एपस्टीन. वॉकिंग द विक्टोरियन स्ट्रीट्स: वीमेन, रिप्रेजेंटेशन, एंड
शहर. इथाका: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995। नुसायर, आयडा इब्राहिम। अल-कुतुब अल-अरबिया अलति नुशीरत फ़ी मिसर बयना 'अमय
1926–1940. काहिरा: अमेरिकन यूनिवर्सिटी इन काहिरा प्रेस, 1980. ओकमैन, कैरोल. इंग्रेस के कामुक शरीर: सर्प रेखा का पता लगाना. न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995.
394 ग्रंथसूची

ओ'डोनेल, जोसेफ डीन। ट्यूनीशिया में लैविगेरी: साम्राज्यवाद और गलत धारणाओं का अंतर्संबंध।
sionary. एथेंस: यूनिवर्सिटी ऑफ़ जॉर्जिया प्रेस, 1979. ओस्ट्रुप, जे. “अहमद मिधात.” द एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इस्लाम में, एम.टी. (मार्टिजन थियोडोर) हाउत्स्मा द्वारा संपादित, 1:199–200. 9 खंड. लेडेन: ब्रिल, 1913–38. ओवेन, रोजर. “1838 एंग्लो-तुर्की कन्वेंशन: एक अवलोकन.” न्यू पर्सपेक्टिव-
तुर्की पर लेख 7 (वसंत 1992): 7–14. ओज़ेन्डेस, एंगिन. सेबाह और जोइलियर से फोटो सबाह तक: फोटोग्राफी में प्राच्यवाद. इस्तांबुल: यापी क्रेडी प्रकाशन, 1993.
पैटर्सन, ऑरलैंडो। दासता और सामाजिक मृत्यु। कैम्ब्रिज: हार्वर्ड विश्वविद्यालय
प्रेस, 1982।
पीकमैन, जूली, संपादक। वेश्याओं की जीवनियाँ 1700-1825। 4 खंड। लंदन: पिकरिंग एंड
चैटो, 2006.
पीयर्स, लेस्ली। द इंपीरियल हरेम: ओटोमन साम्राज्य में महिलाएं और संप्रभुता।
पायर. ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993. ———. “‘कानून निष्क्रिय नहीं होगा’: सोलहवीं शताब्दी के ओटोमन कानूनी प्रवचन में सामाजिक वर्ग और सार्वजनिक आचरण।” हर्मेन्यूटिक्स और सम्मान में: इस्लामी/इस्लामी समाजों में महिलाओं के ‘सार्वजनिक’ स्थान पर बातचीत, अस्मा अफसारुद्दीन द्वारा संपादित, पृष्ठ 140–58। हार्वर्ड मिडिल ईस्टर्न मोनोग्राफ। कैम्ब्रिज: हार्वर्ड
हार्वर्ड विश्वविद्यालय के मध्य पूर्वी अध्ययन केंद्र के लिए यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999।
नैतिकता की कहानियाँ: ऐनताब के ओटोमन दरबार में कानून और लिंग। बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2003।
पेनज़र, नॉर्मन एम. हरम: उस समय मौजूद संस्था का विवरण
तुर्की सुल्तानों का महल और इसकी स्थापना से लेकर भव्य सेराग्लियो का इतिहास-

आधुनिक समय के लिए संचार। लंदन: हैरैप, 1936। पर्किन्स, केनेथ जे. "इतना नज़दीक और फिर भी इतना दूर: अल्जीयर्स में ब्रिटिश पर्यटक, 1875-1914।" मध्य पूर्व अध्ययन संघ की वार्षिक बैठक, बोस्टन, 2006 में प्रस्तुत पत्र। पेरनिओला, मारियो। “कपड़ों और नग्नता के बीच।” फ़्रैग्मेंट्स फ़ॉर ए हिस्ट्री ऑफ़ द
मानव शरीर, भाग 2, मिशेल फेहर द्वारा संपादित, 236–65। न्यूयॉर्क: ज़ोन, 1989। पेरोट, फिलिप। बुर्जुआ वर्ग का निर्माण: उन्नीसवीं शताब्दी में वस्त्रों का इतिहास
सेंचुरी. प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994. पेट्री, कार्ल एफ. “वर्ग एकजुटता बनाम लैंगिक लाभ: उत्तर मध्यकालीन मिस्र में संपत्ति की संरक्षक के रूप में महिलाएं।” मध्य पूर्वी इतिहास में महिलाएं: बदलाव-निक्की आर. केडी और बेथ बैरन द्वारा संपादित, सेक्स और जेंडर में सीमाएं 122–42. न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991.
पेटज़ेन, बारबरा। “हरम में ‘मैटमाज़ेल’: शाही काल में यूरोपीय गवर्नेंस” ओटोमन।" उत्पत्ति 1, संख्या 1 (2002): 61-84। गुर्गी ज़ायदान: उनका जीवन और विचार: ओरिएंट-इंस्टीट्यूट डेर डॉयचे मोर्गनलैंड गेसेलशाफ्ट।
———. “जुरजी ज़ायदान के विचारों में राष्ट्रीय चेतना।” अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ मिडिल ईस्ट स्टडीज 4, नं. 1 (1973): 3–22. पोंस, मोनसिग्नोर ए. द न्यू चर्च ऑफ अफ्रीका: ऑर कैथोलिकिज्म इन अल्जीरिया, इन
1833 से ट्यूनीशिया और मोरक्को। ट्यूनिस: नामुरा, 1930।
ग्रंथसूची 395

पुलाहा, सेलामी, और यासर युसेल। 1. सेलिम के कानून कोड (1512-1520)। अंकारा:
तुर्की ऐतिहासिक सोसायटी प्रकाशन गृह, 1995।
क़त्तान, नजवा अल-। "मुस्लिम न्यायालय में धिम्मिस: कानूनी स्वायत्तता और धार्मिक भेदभाव।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मिडिल ईस्टर्न स्टडीज़ 31 (1990): 429-44।
कुदसी, अदली. "अलेप्पो: संरक्षण के लिए एक संघर्ष।" वास्तुकार 12 (1984): 18-23। कुर्तुबी, अबू 'अब्दुल्ला मुहम्मद बी. अहमद अल-अंसारी अल-. अल-जमी' ली-अहकम

कुरान. 20 खंड. काहिरा: दार अल-कुतुब अल-मिसरियाह, 1364. रागिब अल-इस्फ़हानी, अल-। मुहादरत अल-उदाबा।' 'उमर अल-तब्बा' द्वारा संपादित। बेरूत: दार अल-अरकम बी। अबी अल-अरक़म,
रेमंड, आंद्रे। ट्यूनिस के राजाओं और मूलभूत संधि का इतिहास। 2 खंड। ट्यूनिस: अलिफ़, 1994।
रेडहाउस, जेम्स डब्ल्यू. एक तुर्की और अंग्रेजी शब्दकोश। लंदन: बर्नार्ड क्वारिच।

1861.

रीड, डोनाल्ड मैल्कम। “काहिरा विश्वविद्यालय और प्राच्यविद्।” अंतर्राष्ट्रीय
जर्नल ऑफ मिडिल ईस्ट स्टडीज 19, नं. 1 (1987): 51–75. ———. फराह अंतुन की ओडिसी: एक सीरियाई ईसाई की धर्मनिरपेक्षता की खोज।
मिनियापोलिस: इस्लामिक लाइब्रेरी, 1975।
———. “अरब जगत में सीरियाई ईसाई और प्रारंभिक समाजवाद।” इंटर-
नेशनल जर्नल ऑफ मिडिल ईस्ट स्टडीज 5, नं. 2 (1974): 177–93. ———. “सीरियाई ईसाई, गरीबी से अमीरी की कहानी, और मुक्त उद्यम।”
इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मिडिल ईस्ट स्टडीज 1, नं. 4 (1970): 358–67. रेप्प, रिचर्ड. इस्तांबुल के मुफ्ती: ओटोमन साम्राज्य के विकास का एक अध्ययन सीखा पदानुक्रम। लंदन: इथाका, 1986। रिबेरो, एलीन। फैशन में इंग्रेस: इन-में पोशाक और दिखावट का प्रतिनिधित्व।
ग्रेस की महिलाओं की छवियां। न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999। रिज़ास, जी. अब्दुल हामिद: उनका राजनीतिक और निजी जीवन, 33 वर्षों का अत्याचार, सभी रहस्य।
गुप्त संगठन का पर्दाफाश, यंग तुर्क पार्टी के असाधारण प्रयास। द्वितीय संस्करण। इस्तांबुल:
ई. पल्लमरी, 1909.
रॉबर्ट्स, मैरी। “सांस्कृतिक पारगमन: परिधान संबंधी रोमांच, व्यंग्यात्मक कथाएँ,
और उन्नीसवीं सदी के यूरोप में स्वदेशी सक्रियता का प्रश्न और
निकट पूर्व।" एजेस ऑफ एम्पायर: ओरिएंटलिज्म एंड विजुअल कल्चर में, जोसेलिन हैकफोर्थ-जोन्स और मैरी रॉबर्ट्स द्वारा संपादित, 70-94। लंदन: ब्लैकवेल, 2005। ———। अंतरंग बाहरी लोग: ओटोमन और ओरिएंटलिस्ट कला और यात्रा में हरम
साहित्य। डरहम: ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007। रोडेड, रूथ। इस्लामी जीवनी संग्रहों में महिलाएं: इब्न साद से लेकर...
कौन. बोल्डर, कोलोराडो: लिन रीनर, 1994. रोजर्स, जे. माइकल, संपादक. टोपकापी सराय संग्रहालय: वास्तुकला, हरम और

अन्य इमारतें। लंदन: थेम्स एंड हडसन, 1988। रोज़, गिलियन। नारीवाद और भूगोल: भौगोलिक ज्ञान की सीमाएँ।
मिनियापोलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस, 1993।
रोज़, सुसान डी. “ईसाई कट्टरवाद: पितृसत्ता, कामुकता और मानव”
अधिकार।" धार्मिक कट्टरवाद और महिलाओं के मानवाधिकार, कर्टनी डब्ल्यू. हाउलैंड द्वारा संपादित, 9-20। न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन, 1999।
396 ग्रंथसूची

रोसेन्थल, डोनाल्ड ए. ओरिएंटलिज़्म: फ्रांसीसी चित्रकला में निकट पूर्व 1800-1880।
रोचेस्टर, एन.वाई.: मेमोरियल आर्ट गैलरी ऑफ़ द यूनिवर्सिटी ऑफ़ रोचेस्टर, 1982. रस्किन, जॉन. जॉन रस्किन की रचनाएँ. ई. टी. कुक और अलेक्जेंडर वेडरबर्न द्वारा संपादित. 39 खंड. न्यूयॉर्क: जॉर्ज एलन, 1903–12. सबाई, नादिया. मुस्तफा साहब एट्टाबा: तुनी में एक उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति-
19 वीं शताब्दी। एल-मोख्तार बे द्वारा प्रस्तावना। कार्थेज: एडिशन्स कार्टागिनोई।
श्रृंखला, 2007।
सबी', हिलाल अल-। किताब तुहफत अल-उमरा' फाई तारीख अल-वुजारा'। एच. एफ. अमेड्रोज़ द्वारा संपादित। बेरूत: कैथोलिक प्रेस, 1904।
———. रुसुम दार अल-ख़िलाफ़ा। मिखाइल अव्वाद द्वारा संपादित। बगदाद: मतबात
अल-अनी, 1964.
सईद, अमीना अल-। "हाल ता'उदु अल-मारा इला 'असर अल-हरिम?" अल-हिलाल, सितंबर 1987,

30–35.

सईद, एडवर्ड। प्राच्यवाद। न्यूयॉर्क: पैंथियन, 1978। सलामंद्रा, क्रिस्टा। "मूंछ के बाल खो गए: दमिश्क, सीरिया में रमजान टेलीविजन धारावाहिक और पहचान का निर्माण।" दृश्य नृविज्ञान 10, संख्या।
2–4 (1998): 227–46.
———. एक नया पुराना दमिश्क: शहरी सीरिया में प्रामाणिकता और विशिष्टता।
ब्लूमिंगटन: इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004।

सेलर, माइकल। "आधुनिकता और मोह: एक इतिहासलेखन समीक्षा।"
अमेरिकन हिस्टोरिकल रिव्यू 111, नं. 3 (जून 2006): 692–716. सौवागेट, जीन. अलेप्पो: एक बड़े सीरियाई शहर के विकास पर निबंध, इसके इतिहास की उत्पत्ति से लेकर इसके ऐतिहासिक विकास तक।
उन्नीसवीं सदी के मध्य में महिलाओं के लिए। 2 खंड। पेरिस: गेथनर, 1941। अल-सय्यिद-मार्सोट, अफफ लुत्फी। "मिस्र में क्रांतिकारी महिला।" मुस्लिम दुनिया में महिलाएं, लोइस बेक और निक्की केडी द्वारा संपादित, 261-76।
कैम्ब्रिज: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1978।
शाच्ट, जोसेफ। इस्लामी कानून का परिचय। ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस।
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1954।
शेचटर, रेली। आधुनिक युग में घरेलू उपभोग और पारिवारिक जीवन में परिवर्तन।
पूर्वी मध्य पूर्व। न्यूयॉर्क: पालग्रेव मैकमिलन, 2003। शिक, इरविन सी. द इरोटिक मार्जिन: अल्टरिटिस्ट डिस्कोर्स में कामुकता और स्थानिकता।
लंदन: वर्सो, 1999।
शिमेल, ऐन मैरी। "इस्लाम में स्वर्गीय उद्यान।" द इस्लामिक गार्डन में, संपादित।
एलिजाबेथ बी. मैकडॉगल और रिचर्ड एटिंगहॉसन द्वारा। वाशिंगटन, डी.सी. डंबर्टन ओक्स, 1976, 13–39.
शुमान, क्रिस्टोफ़। "व्यापक अपेक्षाओं की पीढ़ी: राष्ट्रवाद,
सीरिया और लेबनान में शिक्षा और आत्मकथा, 1930-58।" द वर्ल्ड ऑफ
इस्लाम 41, संख्या 2 (2001): 174–205.
सीरिया और लेबनान में कट्टरपंथी राष्ट्रवाद; राजनीतिक समाजीकरण और अभिजात वर्ग का गठन, 1930-1958। हैम्बर्ग: जर्मन ओरिएंट इंस्टीट्यूट, 2001। स्कॉट, डेविड, और चार्ल्स हिर्शकिंड, संपादक। धर्मनिरपेक्ष आधुनिकता की शक्तियाँ: तलल
असद और उनके वार्ताकार। स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006। सेंग, यवोन। "न्याय के द्वार पर खड़ी: सोलहवीं शताब्दी के आरंभिक काल के इस्तांबुल के उस्कुदर की विधि अदालतों में महिलाएं।" विवादित राज्य: कानून, आधिपत्य-
ग्रंथसूची 397

धन और प्रतिरोध, एम. लाजरस-ब्लैक और एस. एफ. हिर्श द्वारा संपादित, 184-206। न्यूयॉर्क: रूटलेज, 1994।
सेरेफ़, 'अब्दुर्रहमान। "टोपकापु सराय-ए हुमायुनि।" तारिह-ए-उस्मानी एन्कू में-
मेकमुआसी (1910-12), संख्या। 5-12. इस्तांबुल: मेक्टेब-ए मुल्किये-ए सहाने उनकी कार्यशाला।
शारावी, हुदा। हरेम के वर्ष: एक मिस्र की नारीवादी के संस्मरण। अनुवादित मार्गोट बदरन द्वारा एक परिचय के साथ। लंदन: विरागो, 1986। शफ़ीई, अल-[मुहम्मद बी. इदरीस]। किताब अल-उम्म. मुहम्मद बद्र अल-दीन हसन द्वारा संपादित। 10 खंड. बेरूत: दार कुतैबा, 1996। शफीक, अहमद। अल-रिक्क़ फ़ि अल-इस्लाम। काहिरा: अल-मतबा अल-अहलिया अल-अमीरिया बि-बुलक, 1892।
शारवी, अंतवान। “अल अल-मरराश वा अल-सलूनात अल-अदबिया फ़ी हलब फ़ी अल-निस्फ़ अल-थानी मिन अल-क़रन अल-तासी'' अशर।'' मजल्लत अल-दाद 65, संख्या 9 (सितंबर 1995): 23-65।
शारवी, हुडा। मुधक्किरत। काहिरा: दार अल-हिलाल, 1981. शीही, स्टीफन। "दोहरापन और द्वंद्व: जुरजी ज़ायदान का अल-मामलुक अल-शरीद
और बनने के रूपक।" जर्नल ऑफ अरेबिक लिटरेचर 30, नं. 1 (1999): 90–105. आधुनिक अरब पहचान की नींव। गेन्सविले: यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ
फ्लोरिडा, 2004।
सिबली, डेविड। बहिष्कार का भूगोल: पश्चिम में समाज और अंतर। लंदन:
रूटलेज, 1995।
———. “समाज और स्थान में बाहरी लोग।” इन्वेंटिंग प्लेसेस: स्टडीज इन कल्चरल में
भूगोल, के एंडरसन और फे गेल द्वारा संपादित, 107-22। मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया: लॉन्गमैन चेशायर, 1992।
सिमेल, जॉर्ज। "खंडहर।" जॉर्ज सिमेल, 1858-1918: निबंधों का एक संग्रह। अनुवाद और ग्रंथसूची सहित, कर्ट एच. वोल्फ द्वारा संपादित, 259-66. कॉलम— बस: ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस, 1959।
सियावुस्गिल, साबरी एसाट। "अहमद मिधात एफेंदी।" इस्लाम अंसिकलोपेदेसी में, 1:184-87,

एम.टीएच द्वारा संपादित. (मार्टिजन थियोडूर) हाउटस्मा। अंकारा: मिल्ली एघिटिम प्रेस, 1950-। 13 खंड.
सोजा, एडवर्ड। उत्तरआधुनिक भूगोल: आलोचनात्मक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में स्थान की पुनः पुष्टि।
सिद्धांत। लंदन: वर्सो, 1989।
थर्डस्पेस: भौगोलिक कल्पना का विस्तार। ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल,

1996.

सोलोमन-गोडेउ, अबीगैल। “नारीवादियों के लिए समस्याएं और सुख।” कला में अमेरिका 84, संख्या 7 (जुलाई 1996): 27–31. सोर्डेल, डोमिनिक. 749 से 936 तक अब्बासिद वज़ीर. खंड 1. दमिश्क: फ्रेंच इंस्टीट्यूट ऑफ दमिश्क, 1959– 60.
स्पेन, डैफ्ने। लैंगिक स्थान। चैपल हिल: उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय। प्रेस, 1992.
स्पर्ल, स्टीफ़न। अरबी कविता में शैलीवाद। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय
प्रेस, 1989।
स्टेहेली, लिन। “प्रचार, निजता और महिलाओं की राजनीतिक कार्रवाई।” पर्यावरण
और प्लानिंग डी: सोसायटी और स्पेस 14, नं. 5 (1996): 601–19.
398 ग्रंथसूची

स्टैलीब्रास, पीटर, और एलोन व्हाइट। उल्लंघन की राजनीति और काव्यशास्त्र। लंदन: मेथुएन, 1986।
स्टेटकेविच, जारोस्लाव। नाजद की हवाएँ। शिकागो: शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

1993.

स्टेटकेविच, सुज़ैन। मूक अमर बोलते हैं। इथाका: कॉर्नेल विश्वविद्यालय प्रेस, 1993.
इस्लामी वैधता की काव्यशास्त्र। ब्लूमिंगटन: इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस।

2002.

स्टीवर्ट, कैथलीन। “उदासीनता: एक विवाद।” सांस्कृतिक नृविज्ञान 3, संख्या 3 (1988):

227–41.

स्टीवर्ट, मैरी लिन। स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए: फ्रांसीसी महिलाओं के लिए शारीरिक संस्कृति।
1880-1930 का दशक। बाल्टीमोर: जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001। स्टॉकडेल, नैन्सी एल. अंग्रेजी और फिलिस्तीनी महिलाओं के बीच औपनिवेशिक मुठभेड़,
1800–1948. गेन्सविले: यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ फ्लोरिडा, 2007. स्टोवासेर, बारबरा. कुरान, परंपराओं और व्याख्या में महिलाएं. ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994.
सुली, अबू बक्र अल-. मा लाम युनशार मिन अव्रक अल-सुली: अख़बार अल-सनावत 295-315।
हिलाल नाजी द्वारा संपादित। बेरूत: 'आलम अल-कुतुब, 2000। सुरेय्या बे, मेहमद, सिसिल-ए उस्मानी: द ओटोमन नेशनल बायोग्राफी। वेस्ट-मीड, फ़ार्नबरो, इंग्लैंड भूमि: ग्रेग इंटरनेशनल पब्लिशर्स, 1971। तबरी, अबू जाफ़र मुहम्मद इब्न जरीर, अल-। ताविल अल-कुरान के लिए जमीअत अल-बयान। 12
खंड. बेरूत: दार अल-कुतुब अल-इल्मियाह, 1418/1997।
तब्बख, रागिब अल-। इलम अल-नुबाला' द्वि-तारीख हलब अल-शहबा।' 1923-26। 7 खंड. मुहम्मद कमाल द्वारा संपादित। अलेप्पो: दार अल-क़लम अल-अरबी, 1988-92। तनपिनार, अहमत हमदी। XIX असीर तुर्क एडेबियाति तारिही। इस्तांबुल: कैग्लायन किताबेवी, 1956।
तनुखी, अबू 'अली अल-मुहासिन अल-। किताब अल-फराज ब'दा अल-शिद्दा। द्वारा संपादित
'अब्बूद अल-शलजी। 5 खंड. बेरूत: दार सादिर, 1978.
———. निश्वार अल-मुहदारा वा अख़बार अल-मुधकारा। 'अब्बूद' द्वारा संपादित al-Shalji. 8 vols. Beirut: Dar Sadir, 1971.
तराज़ी, फ़िलिब दी. तारिख़ अल-सिहाफ़ा अल-अरबिया। 1913. पुनर्मुद्रण, बेरूत: डार सादिर, 1967।

2 खंड।
टेम्पल, मेजर सर ग्रेनविले टी. भूमध्य सागर में भ्रमण। अल्जीयर्स और ट्यूनिस।
2 खंड। लंदन: सॉन्डर्स एंड ओटली, 1835।
थॉम्पसन, एलिजाबेथ। "मध्य पूर्वी महिलाओं के इतिहास में सार्वजनिक और निजी।"
जर्नल ऑफ वूमेन्स हिस्ट्री 15 (वसंत 2003): 52–69. थॉर्नटन, अर्लैंड. “विकासात्मक प्रतिमान, इतिहास को अलग-अलग दृष्टिकोण से पढ़ना, और पारिवारिक परिवर्तन.” डेमोग्राफी 38, संख्या 4 (2001): 449–65. टिट्ज़े, एंड्रियास. “मुस्तफा अली विलासिता और ओटोमन सज्जनों के प्रतिष्ठा प्रतीकों पर.” स्टुडिया टर्कोलोजीका मेमोरिया एलेक्सिस बॉम्बासी डिक्टाटा में, एल्डो गैलोटा और यूगो माराज़ी द्वारा संपादित, 557–90. नेपल्स: इंस्टीट्यूटो यूनिवर्सिटारियो ओरिएंटेल, 1982.
टोलेडानो, एहूद आर. “दासता की उत्तरकालीन ओटोमन अवधारणाएँ (1830-1880 के दशक)।” पोएटिक्स
आज 14, संख्या 3 (1993): 477–506.
ग्रंथसूची 399

———. ओटोमन दास व्यापार और उसका दमन, 1840–1890. प्रिंसटन:
प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982।
———. ओटोमन मध्य पूर्व में दासता और उन्मूलन। सिएटल: यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस, 1998।
ट्रॉट पॉवेल, ईव एम. उपनिवेशवाद का एक अलग पहलू: मिस्र, ग्रेट ब्रिटेन और सूडान पर प्रभुत्व। बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2003।
तुआन, यी-फू। स्थान और जगह: अनुभव का परिप्रेक्ष्य। मिनियापोलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस, 1977।
टकर, जूडिथ। उन्नीसवीं सदी के मिस्र में महिलाएं। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1985।
तुर्जुमन, सिहाम। दमिश्क की बेटी, या मल अल-शाम से ली गई। एंड्रिया रूघ द्वारा अनुवादित। ऑस्टिन: टेक्सास विश्वविद्यालय प्रेस, 1994. ———. या मल अल-शाम। दमिश्क: मताबी इदरत अल-तौजीह अल-मनवी, 1969। टवेरिटिनोवा,

अन्ना एस. सुल्तान आई. सेलिम'इन कानून-नामेसी। मॉस्को: नौका, 1969. उडोविच, अवराम। "इस्लामी कानून और मध्यकालीन मध्य पूर्व में विनिमय का सामाजिक संदर्भ।" इतिहास और मानवविज्ञान 1 (1985): 445-65। उलकेन, ज़िया हिल्मी। तुर्कियेदे Çağdaş Düşünce Tarihi। इस्तांबुल: उल्केन यायिनलारि,

1992.

उलुचाय, एम. कागताय। “बायज़िद द्वितीय का परिवार।” तारिह डेर्गिसी 10 (1959): 105–24। ———। सुल्तानों की पत्नियाँ और बेटियाँ। अंकारा: तुर्की ऐतिहासिक सोसायटी प्रकाशन गृह, 1980।
'उमर बी. अबी रबिया. शरह दीवान 'उमर बी. अबी रबिया. मुहयी अल-दीन द्वारा संपादित
'अब्द अल-हामिद. बेरूत: दार अल-अंडालस, 1983।
उज़ुनकार्सिलि, आई. एच. उस्मान डेवलेटिनिन सराय टेस्किलाटी। अंकारा, 1945. वडेट, जीन क्लाउड। "लेस ग्रैंड्स थीम्स डे ल'अदब डान्स ले रबी' अल-अबरार डी'अल-ज़मख़्शारी।" रिव्यू डेस एट्यूड्स इस्लामिक 58 (1990): 189-
205। वाका ब्राउन, डेमेट्रा। हरेमलिक: तुर्की के जीवन के कुछ पन्ने महिलाएँ। 1909। यिओर्गोस कालोगेरास द्वारा लिखित परिचय सहित प्रतिकृति पुनर्मुद्रण।
संवाद में संस्कृतियाँ श्रृंखला 1, खंड 2. पिस्काटावे, एन.जे.: गोरगियास प्रेस, 2005. वैन न्यूवकेर्क, कैरिन. “अन्य किसी भी व्यापार की तरह”: महिला गायिकाएँ और नर्तकियाँ
मिस्र. ऑस्टिन: टेक्सास विश्वविद्यालय प्रेस, 1995। वाहिदी, अल-। असबाब अल-नुज़ुल. अल-सैय्यद अल-जुमायली द्वारा संपादित। बेरूत: दार अल-किताब अल-अरबी, 1414/1994।
वाश्शा', अल-. अल-मुवाश्शा। 'अब्द अल-अमीर' अली मुहन्ना द्वारा संपादित। बेरूत: डार
अल-फिक्र अल-लुबनानी, 1990.
वाटेनपॉघ, हेघनार जेड. “ज्ञान, विरासत, प्रतिनिधित्व: अलेप्पो में आंगन वाले मकानों का व्यावसायीकरण।” स्टेट्स एंड सोसाइटीज़ ऑफ़ द ओरिएंट में अरब लोग भविष्य की तलाश में, 1945-2005, गेरार्ड डी. खौरी और नादिन द्वारा संपादित।
मेउची, 2:209-18. पेरिस: गेउथनर, 2007.
सीरिया में संग्रहालय और राष्ट्रीय इतिहास का निर्माण
लेबनान।" तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में ब्रिटिश और फ्रांसीसी जनादेश, नादिन मेउची और पीटर स्लगलेट द्वारा संपादित, 185-202। लीडेन: ब्रिल,

2004। वीनट्रॉब, जेफ। "सार्वजनिक/निजी भेद का सिद्धांत और राजनीति।" विचार और व्यवहार में सार्वजनिक और निजी: एक भव्य द्वंद्व पर परिप्रेक्ष्य, 400 ग्रंथ सूची।
जेफ वेनट्रॉब और कृष्ण कुमार द्वारा संपादित, 1–42. शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ
शिकागो प्रेस, 1997।
वेइसमैन, लेस्ली केन्स। डिज़ाइन द्वारा भेदभाव: पुरुष की नारीवादी आलोचना।
मेड एनवायरनमेंट। अर्बाना: यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोइस प्रेस, 1992।
वेन्सिनक, ए. जे. मुस्लिम परंपरा की सामंजस्य और सूचकांक। दूसरा संस्करण।
8 खंड। लीडेन: ब्रिल, 1992।
विग, लीफ। बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटिनोपल से फोटोग्राफिक दृश्य/फोटोग्राफिक
बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटिनोपल के दृश्य। स्टॉकहोम: फ़ोटोग्राफ़िस्का म्यूज़िट,

1984.

विगली, मार्क। “शीर्षकहीन: लिंग का आवास।” यौनिकता और स्थान में, संपादित। बीट्रिज़ कोलोमिना द्वारा, 328–89. प्रिंसटन: प्रिंसटन आर्किटेक्चरल प्रेस, 1992. विंड्लर, क्रिश्चियन. कूटनीति एक दूसरे के अनुभव के रूप में: फ्रांसीसी वाणिज्य दूतावास
मगरेब (1700–1840)। जिनेवा: ड्रोज़, 2002। ज़ेनोफ़ोन। साइरस की शिक्षा। वेन एम्बलर द्वारा अनुवादित। इथाका: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001। याकूत इब्न 'अब्दुल्ला अल-हमावी। मुअज़म अल-बुलदान। 5 खंड. बेरूत: डार सादिर, 1984। येज़ेल, रूथ बी. हरम्स ऑफ़ द माइंड: पैसेज ऑफ़ वेस्टर्न आर्ट एंड लिटरेचर। न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000।
येगेनोउलू, मायदा। औपनिवेशिक कल्पनाएँ: प्राच्यवाद की नारीवादी व्याख्या की ओर।
कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1998।
यूसुफ, मुहम्मद अहमद. समाज अभी भी जीवित है. काहिरा: मतबात अल-क़ाहिरा, एन.डी. ज़बिदी, मुहम्मद मुर्तदा अल-। ताज अल-अरुस मिन जवाहिर अल-क़मुस। 10 खंड. बेरूत: दार मकतब अल-हयाह, एन.डी.
ज़न्नाद [बुशरारा], ट्राकी। शारीरिक प्रतीकवाद और मुस्लिम स्थान। ट्यूनिस:
सेरेस प्रोडक्शंस, 1984।
ज़ैदान, जुरजी। अल-अब्बासा उख्त अल-रशीद और नकबत अल-बारमिका। 1911. काहिरा: डार
अल-हिलाल, 1965.
———. असिर अल-मुतमहदी. 1891. द्वितीय संस्करण. काहिरा: दार अल-हिलाल, 1901. ———. जॉर्ज ज़ायदान की आत्मकथा. थॉमस फिलिप द्वारा संपादित और अनुवादित. बोल्डर, कोलोराडो: लिन रीनर.
———. अल-इंक़िलाब अल-उथमानी। 1911. काहिरा: दार अल-हिलाल, 1966. ———. इस्तिबदाद अल-ममालिक. काहिरा: दार अल-हिलाल, 1965. ———. जिहाद अल-मुहिब्बिन. तीसरा संस्करण. काहिरा: दार अल-हिलाल, 1909. ———. अल-मामलुक अल-शरीद। 1891. काहिरा: दार अल-हिलाल, 1965. ———. शजारत अल-दुर्र। 1914. काहिरा: दार अल-हिलाल, 1965. ———. इस्लामी सभ्यता का इतिहास. 2 खंड.

काहिरा: दार अल-हिलाल, 1968. ज़ेनेब हनौम। एक तुर्की महिला की यूरोपीय छापें। 1913. रीना लुईस द्वारा एक परिचय के साथ प्रतिकृति पुनर्मुद्रण। संवाद में संस्कृतियाँ श्रृंखला 1, खंड 3. पिस्काटावे, एन.जे.: गोरगियास प्रेस, 2005.
ज़िग्लर, एंटजे। "अल-हरका बराका! मेय ज़ियादा की देर से पुनः खोज वर्क्स।” डाई वेल्ट डेस इस्लाम 39, नं. 1 (1999): 103–15. ज़ियादा, मेय्य. ‘आयशा अल-तैमूर: शाइरात अल-तलिया. काहिरा: दार अल-मुक्ततफ, 1926. ज़ोनाना, जॉयस. “सुल्तान और गुलाम: नारीवादी प्राच्यवाद और जेन आयर की संरचना.” साइंस 18, नं. 3 (1993): 592–617.
8

योगदानकर्ता 8

8

अस्मा अफसरुद्दीन इंडियाना विश्वविद्यालय, ब्लूमिंगटन के निकट पूर्वी भाषा एवं संस्कृति विभाग में इस्लामी अध्ययन की प्रोफेसर हैं और इससे पहले वे नोट्रे डेम विश्वविद्यालय, हार्वर्ड विश्वविद्यालय और जॉन्स हॉपकिंस विश्वविद्यालय में पढ़ा चुकी हैं। वे 'द फर्स्ट मुस्लिम्स: हिस्ट्री एंड मेमोरी' (2008) और 'एक्सीलेंस एंड प्रेसीडेंस: मेडिवल इस्लामिक डिस्कोर्स ऑन लेजिटिमेट लीडरशिप' (2002) की लेखिका हैं; 'हर्मेन्यूटिक्स एंड ऑनर: नेगोशिएटिंग फीमेल 'पब्लिक' स्पेस इन इस्लामिक/एट सोसाइटीज' (1999) की संपादक हैं; और 'ह्यूमनिज्म, कल्चर, एंड लैंग्वेज इन द नियर ईस्ट: स्टडीज इन ऑनर ऑफ जॉर्ज क्रोटकॉफ' (1997) की सह-संपादक हैं। उनके शोध को गुगेनहाइम फाउंडेशन और कार्नेगी कॉर्पोरेशन द्वारा वित्त पोषित किया गया है, जिसने उन्हें 2005 के लिए कार्नेगी स्कॉलर नामित किया था।

ओरिट बशकिन शिकागो विश्वविद्यालय के निकट पूर्वी भाषा और सभ्यता विभाग में मध्य पूर्वी अध्ययन और इतिहास की सहायक प्रोफेसर हैं। उनके पीएचडी

शोध प्रबंध में अंतरयुद्ध काल के दौरान इराकी सार्वजनिक क्षेत्र के निर्माण और इराक में लोकतांत्रिक विमर्शों के उद्भव का अध्ययन किया गया है। उनकी शोध रुचियों में अरब बौद्धिक इतिहास, अरबी साहित्य, आधुनिक इराकी इतिहास और इराक और इज़राइल में अरब यहूदियों का इतिहास शामिल हैं। वह 'द अदर इराक: प्लूरलिज़्म एंड कल्चर इन हाशेमाइट इराक, 1921-1958' (2008) पुस्तक की लेखिका हैं।

मैरिलिन बूथ एडिनबर्ग विश्वविद्यालय में अरबी और इस्लामी अध्ययन में इराक चेयर का पद संभालती हैं। इससे पहले वे निदेशक थीं।
वह इलिनोइस अर्बाना-शैम्पेन विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई और मध्य पूर्वी अध्ययन केंद्र की प्रोफेसर और तुलनात्मक और विश्व साहित्य कार्यक्रम में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। 'मे हर लाइक्स बी मल्टीप्लाइड: बायोग्राफी एंड जेंडर पॉलिटिक्स इन इजिप्ट' (2001) और 'बायराम अल-तुनिसीज इजिप्ट: सोशल क्रिटिसिज्म एंड नैरेटिव स्ट्रैटेजीज' (1990) की लेखिका होने के साथ-साथ उन्होंने अरबी से कई उपन्यासों का अनुवाद भी किया है। उन्होंने संस्मरण, स्थानीय कविता, सेंसरशिप और साहित्य, लिंग और आधुनिक अरबी उपन्यास, प्रारंभिक अरबी लिंग विमर्श में जीवनी और पुरुषत्व की संरचनाएं, और साहित्यिक अनुवाद के सिद्धांत और व्यवहार पर निबंध प्रकाशित किए हैं। उन्होंने ब्राउन विश्वविद्यालय और काहिरा स्थित अमेरिकन विश्वविद्यालय में भी पढ़ाया है।

जूलिया क्लैंसीस्मिथ एरिजोना विश्वविद्यालय में मध्य पूर्वी इतिहास की प्रोफेसर हैं। उनका काम उत्तरी अफ्रीका में उपनिवेशवाद और लैंगिक समानता पर केंद्रित रहा है। वह 'रेबेल एंड सेंट: मुस्लिम नोटेबल्स, पॉपुलिस्ट प्रोटेस्ट, कॉलोनियल एनकाउंटर्स (अल्जीरिया और ट्यूनीशिया, 1800-1904)' (1994), 'मेडिटेरेनियन्स: नॉर्थ अफ्रीका एंड यूरोप इन एन एज ऑफ माइग्रेशन, 1800-1900' (2010) और 'एक्ज़ेम्पलरी विमेन एंड सेक्रेड जर्नीज: विमेन एंड जेंडर इन जूडाइज्म, क्रिश्चियनिटी एंड इस्लाम' (2006) की लेखिका हैं। उन्होंने उत्तरी अफ्रीका, महिलाओं और औपनिवेशिक इतिहास पर कई पुस्तकों का संपादन या सह-संपादन किया है, जिनमें सबसे हाल ही में ज़ेनेप सेलिक और फ्रांसेस टेरपाक के साथ 'वॉल्स ऑफ अल्जीयर्स: नैरेटिव्स ऑफ द सिटी थ्रू

टेक्स्ट एंड इमेज' (लॉस एंजिल्स और सिएटल: गेट्टी रिसर्च इंस्टीट्यूट और यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस, 2009) शामिल है। उनकी वर्तमान पुस्तक परियोजना औपनिवेशिक उत्तरी अफ्रीका में लड़कियों की शिक्षा पर केंद्रित है।

साइमन रॉक स्थित बार्ड कॉलेज में कला इतिहास की प्रोफेसर जोन डेलप्लाटो, मल्टीपल वाइव्स, मल्टीपल प्लेज़र्स: रिप्रेजेंटिंग द हरेम, 1800-1875 (2002) की लेखिका हैं, जिसे कॉलेज आर्ट एसोसिएशन से मिलार्ड मीस प्रकाशन अनुदान प्राप्त हुआ था। सह-संपादक जूली कोडेल के साथ मिलकर वे "ओरिएंटल इरोटिक्स: द मिडिल-ईस्टर्न बॉडी, विजुअल कल्चर, एंड मॉडर्निटी" नामक पुस्तक तैयार कर रही हैं।

नादिया मारिया अल शेख बेरूत स्थित अमेरिकन यूनिवर्सिटी में इतिहास की प्रोफेसर हैं, जहाँ वे अरब और मध्य पूर्वी अध्ययन केंद्र की निदेशक भी रह चुकी हैं। उन्होंने 'बायज़ेंटियम व्यूड बाय द अरब्स' (2004) पुस्तक लिखी है। उनकी नवीनतम परियोजना चौथी/दसवीं शताब्दी के आरंभिक काल में हरम और दरबार के अंतर्संबंधों की जाँच के माध्यम से अब्बासिद दरबार की कार्यप्रणाली का अन्वेषण करती है। इस क्षेत्र में उनके सबसे हालिया योगदानों में "सर्वेंट्स एट द गेट: यूनेक्स एट द कोर्ट ऑफ अल-मुक्तादिर," जर्नल ऑफ द सोशल एंड इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ द ओरिएंट 48, नं. 2 (2005): 234-52; और "द कोर्ट ऑफ अल-मुक्तादिर: इट्स स्पेस एंड इट्स ऑक्यूपेंट्स," प्रोसीडिंग्स ऑफ द सेवंथ कॉन्फ्रेंस ऑफ द स्कूल ऑफ अब्बासिद स्टडीज, ओरिएंटालिया लोवानेंसिया एनालेक्टा, नं. 177 (जल्द ही प्रकाशित होने वाली) शामिल हैं।

जतीन लाड लंदन और भारत के पांडिचेरी में रहने वाले एक वास्तुकार, लेखक और फोटोग्राफर हैं। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, हार्वर्ड विश्वविद्यालय और मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में अध्ययन किया, जहाँ उनके शोध में हरम और हरम को अनुष्ठानिक और योगदान दोनों ही दृष्टियों से निषिद्ध और संरक्षित पवित्र स्थलों के रूप में खोजा गया।

राजसी संदर्भ। वह वर्तमान में जयपुर के हवा महल में प्रदर्शन और बहुलता की अवधारणाओं पर काम कर रहे हैं, जो उनकी व्यापक रूप से प्रदर्शित फोटोग्राफिक कथा, भूलभुलैया, जालियां और निगाह: शाही जयपुर का बदलता ज़नाना का विषय था।

नैन्सी मिकलराइट वाशिंगटन, डी.सी. में फ्रीर और सैकलर गैलरीज़ में विद्वतापूर्ण कार्यक्रमों और प्रकाशनों की प्रमुख हैं। फ्रीर और सैकलर में शामिल होने से पहले, वे नौ वर्षों तक गेटी फाउंडेशन में वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी थीं। गेटी फाउंडेशन में आने से पहले, वे कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया में विक्टोरिया विश्वविद्यालय में इस्लामी कला और वास्तुकला के इतिहास और फोटोग्राफी के इतिहास की प्रोफेसर थीं। लिंग को विश्लेषण की एक श्रेणी के रूप में उनकी गहरी रुचि रही है और उन्होंने इसका उपयोग उत्तरकालीन ओटोमन कला (चित्रकला, पोशाक और फोटोग्राफी) के पहलुओं पर अपने लेखन में किया है। वे 'ए विक्टोरियन ट्रैवलर इन द मिडिल ईस्ट: द फोटोग्राफी एंड ट्रैवल राइटिंग ऑफ एनी लेडी ब्रासी' (2003) की लेखिका और रीना लुईस के साथ 'जेंडर, मॉडर्निटी एंड लिबर्टी: मिडिल ईस्टर्न एंड वेस्टर्न विमेंस राइटिंग्स; ए क्रिटिकल सोर्सबुक' (2006) की संपादक हैं। उत्तरकालीन ओटोमन काल में फोटोग्राफी का इतिहास उनके निरंतर शोध रुचियों में से एक है।

यासीन नूरानी एरिजोना विश्वविद्यालय में निकट पूर्वी अध्ययन के सहायक प्रोफेसर हैं और तुलनात्मक साहित्य (अरबी और फारसी) में विशेषज्ञता रखते हैं। मध्य पूर्व में पूर्व-आधुनिक और आधुनिक आदर्शों के बीच संबंधों में उनकी गहरी रुचि है। वे 'कल्चर एंड हेगेमनी इन द कोलोनियल मिडिल ईस्ट' (2010) के लेखक और 'काउंटरहेगेमनी इन द कॉलोनी एंड पोस्ट-कॉलोनी' (2007) के सह-संपादक हैं।

लेस्ली पियर्स न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय में इतिहास की सिल्वर प्रोफेसर हैं, जहाँ वे ओटोमन अध्ययन और पूर्व-आधुनिक मध्य पूर्व के इतिहास का अध्यापन करती हैं। इससे पहले वे कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले के इतिहास और निकट पूर्वी अध्ययन विभागों में पढ़ा चुकी हैं। वे 'द इंपीरियल

हरेम: वीमेन एंड सॉवरेनिटी इन द ओटोमन एम्पायर' (1993) और 'मोरैलिटी टेल्स: लॉ एंड जेंडर इन द ओटोमन कोर्ट ऑफ ऐनताब' (2003) की लेखिका हैं। दोनों पुस्तकों ने टर्किश स्टडीज एसोसिएशन का द्विवार्षिक कोप्रुलू पुस्तक पुरस्कार जीता, और दूसरी पुस्तक ने मध्य पूर्व अध्ययन एसोसिएशन का अल्बर्ट हौरानी पुस्तक पुरस्कार जीता। वे वर्तमान में ओटोमन राजनीतिक जीवन, लोक महाकाव्य और कानून में अपहरण के अध्ययन पर काम कर रही हैं।

इरविन सेमिल चिक ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय और मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में पढ़ाया है और वर्तमान में इस्तांबुल शहर विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं। उनकी पुस्तकों में द इरोटिक मार्जिन: सेक्सुअलिटी एंड स्पेशियलिटी इन अल्टरिटिस्ट डिस्कोर्स (1999), द फेयर सर्कसियन: एडवेंचर्स ऑफ एन ओरिएंटलिस्ट मोटिफ (2004), यूरोपियन फीमेल कैप्टिव्स एंड देयर मुस्लिम मास्टर्स: नैरेटिव्स ऑफ कैप्टिविटी इन “टर्किश” लैंड्स (2005), और राइटिंग्स ऑन इस्लाम, जेंडर, एंड कल्चर (जल्द ही प्रकाशित होने वाली) शामिल हैं। वे 404 लेखकों के योगदानकर्ता भी हैं। ओटोमन बाल्कन में महिलाएं: लिंग, संस्कृति और इतिहास (2007) की सह-संपादक (अमीला बुटुरोविक के साथ)।

होली शिस्लर शिकागो विश्वविद्यालय के निकट पूर्वी भाषा एवं सभ्यता विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं और उत्तरकालीन ओटोमन इतिहास में विशेषज्ञता रखती हैं। वह "बिटवीन टू एम्पायर्स: अहमत आगाओग्लू एंड द न्यू टर्की" (2002) की लेखिका हैं। उनका हालिया शोध तुर्की गणराज्य के प्रारंभिक वर्षों में महिलाओं और सामाजिक इंजीनियरिंग पर केंद्रित है।

हेगनर ज़ेइटलियन वातेनपाउघ कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस में कला इतिहास की एसोसिएट प्रोफेसर हैं। उन्होंने प्रारंभिक आधुनिक इस्लामी शहरीकरण, लिंग और स्थान के मुद्दों, और आधुनिक मध्य पूर्वी समाजों में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद के युग में वास्तुकला के संरक्षण और व्यावसायीकरण पर कई शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उनकी पुस्तक "द इमेज ऑफ एन ओटोमन सिटी: इंपीरियल आर्किटेक्चर एंड अर्बन एक्सपीरियंस इन अलेप्पो इन द सिक्सटींथ एंड सेवेंटींथ सेंचुरीज़" (2004) को सोसाइटी ऑफ आर्किटेक्चरल

[illegible]

8

अनुक्रमणिका 8

8

जहां “हनीम” या इसका कोई रूप सम्मानसूचक शब्द के रूप में आता है, वह अनुक्रमित नाम के बाद आता है: उदाहरण के लिए, लैला हनीम, ज़ेनेब हनोम।

'अब्बासा उख्त अल-रशीद, अल-अहमद III (ओटोमन सुल्तान),
(ज़ायदान), 303–11 159
अब्बासिद काल, 12, 23-44, अहमत मिधात एफेंदी, 238,
52, 59, 71, 85–101, 294–96, 276; का करियर, 319; कथा
303–11 द्वारा, 319, 321–40; पत्रिका के रूप में-
अब्बासिद कविता और गद्य, इस्त, 319; के राजनीतिक विचार,
59–65, 229 15–16, 320–22; पर विचार
‘अब्द अल-हमीद द्वितीय (ओटोमन हरम, 321. शीर्षक भी देखें)
सुल्तान), 227, 293, 296–306, व्यक्तिगत कृतियों में से 309–12 ‘आयशा बिन्त अबी बक्र, 40, 46
अपहरण, 53, 109, 114–31, एन. 22, 71
300, 325, 331 अल्बर्टी, लियोन बतिस्ता, 76, 78
'अब्दुह, मुहम्मद, 312 अलेप्पो (सीरिया), 13, 213-18, अबू अल-उयुन, महमूद, 355, 221-33
358–60, 364 अल्जीरिया, 196–97, 203, 265, 268
अबू बक्र (ख़लीफ़ा), 30; अली, मुस्तफ़ा, 147; अफ़सरुद्दीन, आसमा, 10, 17, 21; अली बे अल-कबीर, 295, 301; अहमद बे (हुसैनिद बे), अली पाशा (ट्यूनिस की खाड़ी), 183
184, 188-89, 191, 194, 196, अल-इसाबा फाई तमीज़ अल-सहाबा 200 ('असकलानी, इब्न हजर अल-),
अहमद, लीला, 7–8, 89, 373 25, 29–30, 32–39, 43–44, 46

एन. 69 एन. 36 406 इंडेक्स
अलीये हनीम, फातमा, 256-57 बार्डो (महल परिसर), 180, 186, 190-
अलौला, मालेक, 19 एन. 21, 258 एन. 6, 276 95, 203-4 अमीन, कासिम, 293, 309, 312, 316 एन। 51 बार्कन, ओमेर लुत्फी, 120-21 अनातोलिया, 104, 120-26, 130, 331, 334 बैरन, बेथ, 291, 297 एंडरसन, अमांडा, 354, 364 बैश्किन, ओरिट, 14-15, 171-72 एन। 5, 238,
अंसार (“सहायक”), 29–32 263, 276 प्राचीनता, 51–52, 76, 126, 183–84, 268 बटाले, जॉर्जेस, 269 एप्टर, एमिली, 90, 94 बेट्स, डैनियल, 124 अरेबियन नाइट्स, 274, 283, 294 स्नानघर, 72, 105, 184–85, 202, 272। वास्तुकला, घरेलू, 6, 13, 70–71, साथ ही गर्म झरने; समुद्री स्नान 76–77, 79–80, 98– 100, 154, 177–78, युद्ध, 9, 24, 26–30, 33, 35–38, 41, 67 देखें।
192–94, 213–18, 221–23; प्रतिनिधित्व करता है— n. 36, 122
जीवनी में, 225-33; उपन्यासों में, 220, 238, 26-35 में, बाया (मुहम्मद के प्रति निष्ठा की शपथ) का प्रतिनिधित्व;
322–23, 352, 357. घरेलू बायज़िद द्वितीय (ओटोमन सुल्तान) भी देखें, 107, 111,
आंतरिक सज्जा; हरम; घर 113–21, 127–28, 130–31 आर्डेनर, शर्ली, 75 बेली, सी. ए., 196 अरकून, मोहम्मद, 87–88 बायराम (परिवार), 181, 183, 201 अर्मेनियाई, 134 एन. 37, 173 एन. 18, 221, 258 बायट, 26, 38–39, 46 एन. 36, 52, 64, 66
एन. 5, 297–300, 314 एन. 3, 316 एन. 48, 331 एन. 4, 367 कला: यूरोपीय, हरम चित्रण, बैत अल-बहर, 177, 182
और, 3, 5–6, 9, 11, 14, 82 एन. 18, 89, बैत ‘अरबी, 213
136-38, 183, 237-38, 262-84; यूरो- बेहार, केम, 71
पीआन, ओटोमन परिवारों में, 194; "क्या आपने कहा कि कुंवारापन सुल्तान होने जैसा है?"
यूरोपियन में नग्न चित्र, 262–72, 281, 284 (अहमद मिधात), 322–23
खंड 1, 284–85 खंड 3; ओटोमन, 147, 155, परोपकार। दान देखें; वक्फ
193, 237; कजर, 193। फ़ोटोग्राफ़ी भी देखें- बर्गग्रेन, विलियम, 245-48 कला; व्यक्तिगत कलाकारों के नाम जीवनी, 8–11, 13, 23–40, 213–14, कला आलोचना। उपभोग 224–33, 294, 343, 347–48 देखें। असिर अल-मुतमहदी (ज़ायदान), 295, संस्मरण 297 भी देखें। शरीर, 7–8, 11–12, 14, 22, 65, 78–79।

अस्थमा' बी.टी. अबी बक्र, 31 109, 136-37, 169-70, 193, 237, 270-72, 'अस्कलानी, इब्न हज़र अल-, 25 275-77, 281-82; शारीरिक संपर्क
आत्मकथा: संरचनाएँ, 343–48, और, 28, 34–35। कला भी देखें: 366–67 में नग्न चित्र। संस्मरण यूरोपीय भी देखें; बधियाकरण; स्वच्छता;
‘अज़्म, असद पाशा अल-: महल, 218– पोशाक
19, 230, 234 एन. 19, 234 एन. 22 किसान, इंगे, 294
बूथ, मर्लिन, 16–17, 238, 263, 287
बाबायान, कैथरीन, 90
एन. 38–39, 291, 293, 315 एन. 36
बद्र, 'अब्द अल-मुहसिन ताहा, 292, 310
बौचरा, ट्राकी ज़न्नाद, 80
बद्रान, मार्गोट, 89
बोर्डियू, पियरे, 79–80
बेयर, गैब्रियल, 307–8
ब्रे, जूलिया, 97
बगदाद, 12, 14, 67 एन. 12, 87–101, 304, वेश्यालय। वेश्यावृत्ति 310 देखें बहलौल, जोएल, 178 बुयुत सिर्रिया, 348, 362
इंडेक्स 407

बीजान्टिन साम्राज्य और प्रजा, 92, उपनिवेशवाद और औपनिवेशिक विमर्श, 107, 120, 130, 308 यूरोपीय, 16, 18, 73, 178, 182, 185,
201–5, 216, 264–65, 268, 290, 303,

काहिरा, 6, 11, 16, 190, 225, 227, 301, 348,
307, 312–13, 342, 352–55, 357, 365–66
353, 355–58, 364

कारिये (जारिया), 139, 150–51, 155, 161–62, 263–70. यह भी देखें दासता और दास 324, 330–31, 335–36. यह भी देखें कॉन्कु—आचरण नियमावली, 10–11, 25, 39–43, द्विआधारी और रखैलें; दासता और 346 दास भवनों का संरक्षण। देखें प्रेसर—नपुंसकता, 114–15, 119, 124, 127, 171 वेशन एनएन. 3 –4 कॉन्स्टेंटिनोपल (एन. ई. मौरिन), 272– Çelik, Zeynep, 256–57 76, 282–84

दान: हिजड़े और, 167; सुधारक संवैधानिक क्रांति (तुर्की, और, 320; महिलाएं और, 65, 190, 368 1908), 293, 296–300, 312 खलीफा, 39, 90–91, 95, 160, 294. देखें 91–92, 95, 101, 102 n. 27, 109, 139, 141, रखैल और रखैलें, 88, साथ ही हरम: खलीफा या शाही; 150, 161, 174 n. 29, 181, 296–303, 305– शासक की माता; indi-6, 308, 312, 324, 327–30, 335–36, 358 के नाम; यूरोपीय कला में व्यक्तिगत खलीफाओं के चित्रण, संज्ञा 1
उपभोग, 372 एन. 49; यूरोपीय
बच्चे को जन्म देना और उसका पालन-पोषण करना, 46
कला, 268–72, 278–79, 283–84, 285
एन. 30, 90–91, 102 एन. 27, 139, 160, 175
संज्ञा 8; उपन्यासों, संस्मरणों और पत्रिकाओं के संदर्भ में—
एन. 31, 190, 225, 227, 297, 299, 323,
327–28, 335. यह भी देखें: बच्चे 344–47, 357, 360; लोकप्रिय साहित्य के, 250, 257, 291–93, 297, 315 n. 36, बच्चे, 34, 53, 182, 191–92; जैसे कि cate-ture, 294; महिलाएं और, 292, 297, 315
खूनी (सामाजिक या कानूनी), 5, 63, 117, 130, n. 36, 357, 371 n. 43. ओरियन-220, 334 भी देखें; पितृत्व, 99, 125, 128–30, ताबीज
154, 161, 300, 334, 349–53, 359–61, वेशभूषा। पोशाक 364–65 देखें; हरम या घरेलू अपराध के रूप में, 108–32। दुलकादिर सदस्यों को भी देखें, 5, 73, 89– 92, 99, 116, 154,
174 एन. 29, 176 एन. 48, 197, 199, 227, कनुन्नामे; कनुन्नामे-ए उस्मानी; कानून
240, 309, 313, 317–18 n. 92, 345; शाब्दिक अर्थ—
क्रॉस-ड्रेसिंग, 248–49, 281
16, 60–63 का संक्षिप्त प्रतिनिधित्व,
225, 231, 297, 300, 307, 323, 349–51; दमिश्क, 217–21, 224–25, 232
पाठकों के रूप में, 292. यह भी देखें चाइल्डबियरिंग डार, 31, 52, 64, 70, 90– 91, 98, 178, 187
और बच्चों का पालन-पोषण, बेटियाँ, 31, 89, 99, 106, 110, 114, 116, ईसाई धर्म और ईसाई, 76–77, 120, 125, 127, 156, 181, 191, 225, 250– 110, 112–14, 125, 134 n. 37, 143, 154, 51, 322–26, 336–37, 349–53, 356–61,

178, 181, 188, 198, 324, 325–26, 331, 365–66

354; सीरियाई, 221, 226, 258 एन. 5, 290- डी लॉरेटिस, टेरेसा, 73
92, 300, 303, 347, 349। मिस भी देखें- डेलप्लेटो, जोन, 9, 14, 82 एन। 18, 237 डेर्नश्वम, हैंस, 104, 122 क्लैंसी-स्मिथ, जूलिया, 13, 86 इच्छा, 50, 54–62, 269–72, 274–75, स्वच्छता, 41, 185। स्नान भी देखें; 281–82, 328–29, 332, 362–63
स्वच्छता देवशिरमे, 154 वस्त्र। पोशाक देखें डायल्मी, अब्देसमाद, 80
408 इंडेक्स

कूटनीति, 13, 178–80, 186–99, 203–4 एन. 2, 294; अब्बासिद प्रमुख हिजड़ा, 91,
तलाक, 91, 98, 284 n. 2, 301, 350, 357, 93–94; ओटोमन मुख्य हिजड़ा (किज़- 364; और व्यभिचारी पत्नियाँ, 112–13, lar ağası), 139, 142–43, 153, 156, 163– 116, 124, 128, 134 n. 37; कानूनी dis— 69, 172 n. 9
पाठ्यक्रम और अभ्यास, 112, 116-17, 119, यूरोपीय और अमेरिकी
129–30, 134 n. 37 मध्य पूर्व, 177–82, 184, 186; घरेलू आंतरिक सज्जा, 249– 58, 272–73, विकास विशेषज्ञों के रूप में, 217. देखें
276. हरम भी देखें: ईसाई धर्म और ईसाइयों की सजावट; घरेलू जीवन, पंथ, विचारधारा या आदर्श के रूप में, उपनिवेशवाद और सांस्कृतिक विघटन-8, 23, 47 एन. 52, 50, 52, 63, 76-77, पाठ्यक्रम; मिशनरी; फोटोग्राफी;
291–93, 352 महिलाएँ: ब्रिटिश; महिलाएँ: यूरोपीय
दहेज प्रथा, 325, 331
पतन, 263, 331, 337–38, 342–45,
ड्रेस, 8–9, 14, 16–17, 34, 40–41, 72,
348–49, 353–54, 359–60, 363–65,
80–81, 89, 98–99, 136, 191–94, 229–

369 एन. 4
30, 259 n. 11, 356; यूरोपीय दृश्य में परिवार: खलीफा, 90–92; विधि में, 104– कला, 262–72, 275–83, 284 एन. 1; में 32; बाजार बल और, 15, 320–25,

उपन्यास और संस्मरण, 297, 309, 323, 329–37; ओटोमन साम्राज्य, 104,
325–26, 329, 331, 335, 357–59, 367–68,

136–70; ओटोमन, फोटोग्राफिक
372 एन. 49; फोटोग्राफी में, 237, 243–
प्रतिनिधित्व, 249–55; सामाजिक रूप से
45, 247–49, 251–52, 254–55, 257, 260

एन. 22, 289 एन. 73. हिजाब इकाई, 16, 50–51, 76–77, 86, 100, 118 भी देखें। 178, 182–83, 206 एन. 5, 224, 320–21;
अप्रैल, एलन, 71
11, 16 के पाठ्य निरूपण
दुलकादिर विधि संहिता, 121–28, 130–31;
39–40, 50–51, 59–61, 66 एन. 4, 199,
ओटोमन कानूननामे से संबंध,
206 एन. 5, 299–302, 307, 320–40, 366.
125–26, 134 एन. 31
डंकन, नैन्सी, 77–78 यह भी देखें वास्तुकला, घरेलू;
बच्चे; अपराध; विवाह;
एबू सूद (तुर्क प्रमुख मुफ़्ती), पुरुष; औरत
104–5, 119, 129, 131 पितृत्व। देखें बच्चे; पुरुष एडिब अदिवर, हलीदे, 3 फतवा (कानूनी राय), 8, 59, 105–6, 134 शिक्षा, 15, 17, 293, 312, 357; लड़कियाँ n. 31
और, 225-28, 302, 324, 346, 349-50, फेलातुन बे इले रकीम एफेंदी (अहमत 352-53, 357, 360, 368 एन. 1 मिडहैट), 321, 323-25, 327-30, 334-
मिस्र, 7, 14, 190, 207 एन. 14, 264–65, 36, 340
279, 290–95, 342–49; प्राचीन, 351; नारीत्व, 44, 57–59, 62–65, 77, 79, दासता, 307–8. काहिरा 227, 262–63, 308–9, 342, 352, 356 भी देखें।
एल शेख, नादिया मारिया, 12, 66 एन। 11, महिलाएं भी
85–86, 294, 315 n. 16 नारीवाद: सक्रियता और, 292, 312, 352–
इंग्लैंड और उसके विषय, 2, 7–8, 50–51, 55, 359–60, 365–68, 368 एन. 1, 373 एन. 67;

187, 192, 197, 198, 242, 262, 277–79, स्थानिक सोच और, 7, 72–75, 342 284 एन. 2, 313, 324, 346। विक्टो भी देखें- फेंटन, रोजर, 241-43, 257 रियान प्रथाएँ; महिलाएँ: ब्रिटिश फौकॉल्ट, मिशेल, 73–74, 115, 162, 165– हिजड़े, 12–13, 76, 86, 88, 90–91, 66, 281, 309
93–94, 96, 98, 100–101, 136–70, 171 फ्रांस और उसके विषय, 51, 182–83,
एन. 3, 173 एन. 18–20, 180, 203, 284 185–89, 193–202, 205, 206 एन. 5, 216, इंडेक्स 409

258 n. 5, 261–62, 264–65, 268, 274– हराम: परिभाषित, 5, 52–53; घरेलू 79, 282, 284 nn. 2–3, 294, 372 n. 49. स्थान, 67 nn. 13–14; पवित्र बाड़े के रूप में-
यह भी देखें महिलाएं: यूरोपीय; निश्चित नाम, 5, 53, 83 n. 39
व्यक्तिगत हरम, 4–5, 11, 69–70, 89–90, 105, फ्रायड, सिगमंड, 271 109, 138– 39, 179, 206 एन. 6, 229, 239–40, 321–22, 339–40, 343, 345; अरबी गैब्रिएली, फ्रांसेस्को, 97
उपन्यास और संस्मरणों पर, 290–93,
गार्डन, 183, 186, 205; अज़बकिया,
296–310, 348–53, 357–61, 365–68;
313; सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में, 279; साहित्यिक निर्मित स्थान के रूप में, 4, 12–13, 52, 62, 64,
और रूपांकन, 2, 56, 300, 304, 330, 352,
78, 89–91, 93–94, 98, 102 n. 34, 105,
358; चित्रों और तस्वीरों में,
136–70, 180–83, 322–23; खलीफा या
155, 193, 252, 277–80, 282–83; में इंपीरियल, 5, 12, 85–86, 88, 90–96, कुरान, 32, 279; टोपकापी, 142, 154-136–70, 180, 322; सीमा पार करना— 55, 158

मेष राशि, 15–16, 98–101, 147–48, 151, गौटियर, थियोफाइल, 268-72, 274-75,

154–56, 164, 176 एन. 48, 180–81, 343,
286 एन. 13
356–58; सजावट, 136, 140, 142, 144,
लिंग: प्रारंभिक इस्लाम में इसके द्वारा भेद किया जाता था।
152–55, 159, 166–69, 193, 195, 209

32, 43, 50; अवकाश और, 189–90; यात्रा—
संज्ञा 58; की कल्पनाएँ और रूढ़ियाँ,
विशेष रूप से उपहार देने और देने के संबंध में, 190–
97. यह भी देखें 2–3, 5, 9, 14–15, 17–18, 50, 52, 71, 76, बेटियाँ; नारीत्व; 81, 85–89, 100–101, 102 n. 34, 106,
लिंग संबंधी भूमिकाएँ; हरम; पुरुषत्व;
136–38, 144–45, 170 एन. 1, 171 एन. 2–3,
पुरुष; यौन व्यवहार; स्थानिक चिंतन—
171 एन. 5, 172 एन. 6, 178–79, 206 एन. 5,
इंग; महिलाएं
237–49, 253–54, 257–58, 262–84,

लिंग भूमिकाएँ, 26, 36, 39, 44, 50,
285 एन. 8, 285–86 एन. 11, 294–95, 299,
98–100, 213–14, 225–33, 274, 293–95,

339–40, 342–43, 350. यह भी देखें फेमी— का देर से विकास, 9, 15, 18, 21–25, 303–4, 312–13, 347–48; संस्था के रूप में, नौवां; विवाह; मर्दानगी; पुरुष; 50-53, 63, 66-67 एन. 11, 73-81, 111; मो
औरत
की क्षमता, 177–78, 181–82, 350, 352,
जॉर्जियन, फ़्रांस्वा, 320
358; फोटोग्राफी, 239–58, 263;
गेरोम, जीन-लियोन, 136-38, 140 राजनीतिक रूपक के रूप में, 3–4, 6, 14–15, ग़ज़ाली, अल-, 63, 66 एन. 9 , 87
17–18, 85–86, 284 एन. 2, 290, 294–300, ग़ाज़ी, कामिल अल-, 214, 229

305-6, 311-12, 316 एन. 54, 330-31; Po-
ग्रैबर, ओलेग, 91
ग्रांडे ओडालिस्क लिटिकल पावर और, 86, 88, 90, 92–96, (इंग्रस), 263–72, 100–101, 142, 156, 158, 162, 165–70,
282–84, 285 एन. 8
173 एन. 21, 179–80, 194–97, 298, 303;
ग्रीस (शास्त्रीय), 51–52, 76, 268–69;
जैसे कि जेल, 16, 95, 100, 160–61, 193,
आधुनिक, 269
298–99, 312, 353, 361; पुनर्आविष्कार
ग्रोसरीचार्ड, एलेन, 144, 161
359, 366; छात्रवृत्ति और गैर-छात्रवृत्ति—
गुरलिट, कॉर्नेलियस, 146–47
कथा लेखन, 6, 9–10, 16, 50,
हैबरमास, जुर्गन, 11, 50–52, 54 73, 89–90, 139–40, 145–47, 170 एन. 1, हदीस और हदीस-प्रसारण, 25, 171 एन. 3, 190; यात्रा साहित्य और, 28, 30, 31, 32, 33– 36, 40, 41–44, 45 1–3, 6, 8–9, 11, 14–17, 190, 193, 202–3,
एन। 5, 47 एन. 50, 70-71 238, 240, 266-67, 280-82, 294, 347; हल्लाज, उमर अब्दुलअज़ीज़, 217 तुर्की उपन्यास, 321-40; vari-410 inDex
हरम (जारी) 337–38, 350–53, 357. यह भी देखें: आर्कि-क्षमता, 3–4, 12, 16, 71–72, 77, 86, घरेलू वास्तुकला; घरेलू आंतरिक-
88–90, 128–32, 148, 190, 345, 365–66; अन्य; घरेलू जीवन; हरम; घर-
महिलाओं का समुदाय और, 2, 8, 16, धारण करता है; महिलाओं का एकांतवास
81, 89–91, 295, 300–302, 311, 356–57, होमोइरोटिसिज्म, 109, 116–18, 124– 25,
366, 373 एन. 69. घरेलू मामलों के लिए भी देखें— 127–28, 308–9, 313, 363 टेरियर्स; हरीम; हाउसहोल्ड्स; सेक्लू- ऑनर, 16, 69–70, 109, 112, 118, 124, महिलाओं का शन 128–29, 147, 338, 343, 351–52, 357–59,
हरम यात्राएँ, 179, 190–97, 202–4, 240, 363–68, 373 n. 65
248, 257, 258–59 n. 11, 266–67. देखें “ऑनर किलिंग”, 110, 114, 122, 124, 127,

also Sociability 130 Harīm: semantic field, 5, 52–53, 66–67 Hossain, Rokeya Sakhawat, 16
एन. 11, 67 एनएन. 12–13, 69–70, 89, 138. हॉट स्प्रिंग्स देखें, 183–85, 196, 199–202
इसके अलावा हरम परिवार, 10, 15, 51–52, 63, 117–18,
हारून अल-रशीद (अब्बासिद खलीफा), 71, 128–29, 147, 178–81; प्रवचन
303–6, 309–11 आधुनिकता और, 293, 300, 320–21,
वह केवल 17 वर्ष का था (अहमद मिधात), 323; यूरोपीय, ट्यूनीशिया में, 182, 321, 325–26, 330–34, 336–40 185–87, 198–99; रॉयल, 5, 12, 85–86,
हर्बर्ट, मैरी एलिजाबेथ (बैरोनेस 88, 90–96, 136–70, 180, 322; टर्मि- हर्बर्ट ऑफ़ ली), 195–97, 202–3 नोलॉजी ऑफ़, 53, 66 एन. 8. हेरिटेज भी देखें, 212–17, 231–32 हरेम हेस्से-वार्टेग, अर्न्स्ट वॉन (बैरन), “हाउसहोल्ड हरेम,” 86, 88, 96–101,
182, 187, 195–96 322 हिजाब (पर्दा, सिर ढकने वाला वस्त्र, “घूंघट”), हुरम, 53, 90, 138
8–9, 17–18, 70–72, 80–81, 89, 105, दिनांक, 21–22, 53, 67 n. 14, 69–70
278, 297, 316 n. 51, 331, 352, 356, हुर्रेम (सुलेमान प्रथम की पत्नी), 141 367-68, 370 एन. 25; प्रतीकात्मक या मेटा- हुसैन, कादरिया, 347-48
फोरिक, 155, 347 हुसैन बे (हुसैनिद बे), 183–84,
हिजरा (मक्का से मदीना के लिए), 187, 190, 195
28–29, 32 हुसैनिद (राजवंश), 177–80, 183, 185,
हिलाल, अल-, 4, 15, 291–92, 304, 310, 347, 190–205, 206 एन. 7, 206 एन. 9. यह भी देखें
370 n. 16 व्यक्तियों के नाम हिल, जेन, 231 हुसैन, लोकमान बिन सैय्यिद, 147 हिमसी, कुस्ताकी अल-, 228–30 जल चिकित्सा। गर्म झरनों को देखें; समुद्री इतिहास, उपयोग, 50, 53, 87–88, 97–98, स्नान 211–33, 238–39, 257–58, 291, 295–96, स्वच्छता, 13, 201–2, 215, 302। यह भी देखें
310 स्नानघर; स्वच्छता

हॉलैंडर, ऐनी, 261-62, 265-66, 270; इब्न 'अब्द अल-बर्र, अल-इस्तियाब फ़ि म'रीफत होम, 2-3, 8, 11-13, 17, 70, 238, 343; अल-अशब, 25, 34, 38-39

अलेप्पिन, 13, 213–33; किराया और उपहार—
का आईएनजी, 184-87, 193, 199, 203-4; प्रतिनिधि- इब्न अब्द रब्बीह (अल-इक़द अल-फ़रीद), 62
इब्न अबी दियाफ़, अहमद, 190-91
साहित्य में प्रस्तुतियाँ और
इब्न अल-फ़ुरात (अल-मुक्तदिर का वज़ीर),
फोटोग्राफी, 2, 6–7, 12–17, 38–41,
90, 92–93, 95, 98–99
220, 228–33, 238–59, 266–67, 322–23,

इब्न अल-जावज़ी, 39-40, 47 एन. 53, 93
इंडेक्स 411

इब्न बतूता, 104, 130 (कानून की पुस्तक), 12, 106-32। इब्न हनबल देखें, 41-42 और दुलकादिर कानूननमे इब्न क़य्यिम अल-जौज़िया, 40-42 कज़फ़ (यौन बदनामी), 109, 112, 125 इब्न कुतैबा ('उयुन अल-अख़बर), 62 केडी, निक्की, 89 इब्न साद, मुहम्मद: किताब कैनेडी, डेन, 201
अल-तबक़त अल-कुबरा, 25-36, 38-39, 41, कैनेडी, ह्यूग, 90
45 एन. 11, 46 एन. 25 किरशेनब्लैट-गिम्बलेट, बारबरा, 212 इकबाल, 160-62 किज़लर अगासी। देखें हिजड़ों का अनाचार, 350-51, 353, 357 कोसेम (मान्य सुल्तान), 166 व्यक्तिगत, राजनीतिक विचार में, 6, 15, कुएबा बीटी। साद अल-असलमिया, 28
53–54, 69, 74, 320–21, 330, 332, 339–

लैकन, जैक्स, 269, 271
40, 346–47; की कानूनी स्थिति, 117–18,
198–99. यह भी देखें लाड, जतीन, 12–13, 78, 86 निजी; सार्वजनिक लाल, रूबी, 100
इंग्रेस, जीन अगस्टे डोमिनिक, 14,
लेन, एडवर्ड विलियम, 170 एन. 1, 280–
263–72, 274, 282–84, 285 n. 8

इंकलाब अल-उथमानी, अल- 83, 288 एन। 61, 288 एन. 63 (ज़ायदान), 296-300, 305,
312। लारौई, अब्दुल्ला, 87 'अब्द लॉ, 4, 23, 86, 105-32, 147, 276 भी देखें;

cus-

अल-हमीद द्वितीय
टोमरी, 86, 109–16, 119–20, 124–31,
बुद्धिजीवी: अरब पुरुष और महिला, 6,
133 एन. 20; यूरोपीय, 2, 77, 202, 294;
15–16, 215, 227–29, 238, 290–93, 346–

47; महिला, 13, 227–28, 347; तुर्क-शरिया (“इस्लामी कानून”), 93–94, 105, इश, 6, 16, 238, 320. 108–10, 112–15, 124–25, 129–31, 171 के नाम भी देखें। व्यक्ति n. 3, 303–6, 350; के पाठ, 62–63, 99,
बेय के बगीचे में, एशिया माइनर manî 171 n. 3. यह भी देखें Kanunname-i Os-(लुईस), 277–84
लैला बिन्त अल-खातिम, 31
इस्तांबुल (कॉन्स्टेंटिनोपल), 1, 6–7, 14, सेराग्लियो का रक्षक (गेरोम), 136–38
71, 86, 107, 190, 193, 219, 297, 322, 325,

लेहमान, उलरिच, 265
334; फोटोग्राफिक उत्पादन के स्थल के रूप में—
लुईस, जॉन फ्रेडरिक, 14, 277–84, 288
शन, 240–53
इस्तिबदाद अल-ममालिक एन. 61, 288 एन. 63 (ज़ायदान), 295,
लुईस, रीना, 2–3, 15, 90

301–2

साक्षरता, 6, 49, 68 एन. 35, 295, 297, 346,
इटली और इटालियन, 181, 189, 195, 205
353; दृश्य, 257. उपभोग भी देखें—
जाफर. देखें मुक़्तदिर, अल-तियोन जाहिलिया, 351 साहित्य, अरबी, 21-22, 226, 238; जरिया. देखें कैरिये अदब, 40, 49, 55, 62, 85, 88, 93-94, जेनिंग्स, एरिक, 201-2 97-101; विषाद और, 231; कविता, पत्रकारिता. समाचार पत्र और मागा देखें- 49, 54-62, 227-29; ज़ीन्स उपन्यासों के स्रोत के रूप में, 294-95,

307-9। बायोग भी देखें—यहूदी धर्म और यहूदी, 110, 114, 125, 183, 185, रैफ़ी; संस्मरण; उपन्यास; अनुवाद 198, 205, 306 और अनुवादक; कहफ़, मोहजा और 6 लेखकों के नाम
साहित्य, ओटोमन तुर्की, 126,

कनुननामे-ए उस्मानी (शाही ओटोमन साम्राज्य के लेखक कामेन, माइकल, 231 147, 238)। सूचकांक में व्यक्ति 412 के नाम भी देखें।
मैब्रो, जूडी, 5 पुरुष: अधिकार और जिम्मेदारी
महरम, 71, 99, 156 महिलाओं के संबंध में, 21, 50, 53, 60-65,
मालुफ़, ईसा इस्कंदर, 227-28 80, 86, 110, 112, 114-18, 129-30, 299-मामलुक अल-शरीद, अल- (ज़ायदान), 295, 300, 305-6, 321, 326-27, 336-38, 302–3, 307 350–51; ममलुकों पर टिप्पणीकारों के रूप में, 25, 39–43, 47 n. 53, 120, 126, हरम और लिंग-आधारित स्थान, 2–3, 8,
167, 173 एन. 20, 176 एन. 55, 196, पोर- 347, 359–65; पिता के रूप में, 60–63, 99,
साहित्य में प्रस्तुत, 295, 300–304 116–18, 161, 297–300, 309, 323–25, मार्मन, शॉन, 66 एन. 11, 171 एन. 3, 176 328, 336–37, 343, 349–53, 356–57, एन. 55 363, 365–68; लिंग आधारित अवकाश और,
मार्राश, 'अब्दल्लाह, 225-26, 228 189-90, 323-24, 329, 363; हरम के रूप में मर्राश, फ्रांसिस, 225–26, 228–30 कर्मचारी और ग्राहक, 92–93, 143, मर्राश, मारियाना: जीवनियाँ, 13, 154–55, 161, 165; अवैध यौन आचरण 213–14, 225–33; की शिक्षा, 225– और, 110–19, 122–30, 273–76, 323–25,
26; असाधारणता, 225–26; मार्च- 328–29, 332–36, 350–51, 358, 362–64; परिवार और संतान, 227; कवि के रूप में हरम या परिवार के निवासी
और लेखक, 227–28, 230; सैलून ऑफ, स्पेस, 71–72, 106, 116, 138–43, 154– 227–30, 233 63, 191, 232, 240, 296–300, 321, 334–

विवाह, 24–26, 60–63, 66 n. 9, 71, 35; हरम तक सीमित पहुँच,
91–92, 115, 123–24, 129, 139, 297, 94, 99, 147, 322, 345; सामाजिक स्थिति ओटोमन के 300-302, 304-6, 321-23, 326-32, 147। अहमत 346, 358-60 भी देखें; साथी, 293, मिधाट एफेंदी; ज़ैदान, जुरजी
295, 300, 305–6, 312, 320–21, 326–30, मर्निसी, फातिमा, 9, 70, 89; के सपने

338–39, 353, 360–61; □□□□□□□, 181; □□□□□□□□□, 16, 372 □□. 53, 373 □□. 69
□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□□□, 13-14, 237-38 □□□ □□□□□□□□□
□□□, 276. □□□□□□□□, □□□□□□□□□ □□ □□□□□□— 263, 293, 315 n. 16
□□□, □□□ □□□□ □□□□□□, □□□□ (□□□□□□□□), 238, 276;
□□□□□□□□□, 57–59, 77, 85–86, 129, □□ □□□□□□, 319; □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□,
319, 321–40;
308–9. □□ □□ □□□□□□: □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□, 319; □□ □□□□□□□□□ □□□□□□,
□□□□, □□□□□□, 74, 81 15–16, 320–22; □□□ □□ □□□□□□,
□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□□□, 14, 272–321□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□
□□□□□□□
76, 282–84 □□□□□□□, 188, 202, 294 □□□□□□, 5–6, 17, 25–30, 32, 36–37, 53, 55,
□□□□□□, □□□, 77–79
59, 70, 83 □□. 39, 120, 138, 167–68 □□□□□□□□□, 15, 17, 22, 178–79, 204, 206
□□□□□□, 5, 25-29, 32, 53, 70, 83 □□□ 39, □□. 5, 214-15, 238, 296-97, 320-21,
120, 138, 167–68 349–52 □□□□□□□ □□□□ (□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□, 2, 12, 16,
71–72, 89, 98–99,
□□□□□□ III), 142, 145, 172 n. 9 101, 181, 270 □□□□□□□ II (□□□□□□ □□□□□□□□), 107–
9, □□□□□□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□□□□, 8, 111–21, 128, 131 266–67, 283, 286 n. 25,
288–89 n. 71,
□□□□□□□ □□□□□□□ (□□□□□□ □□□□□□□□), 166 289 □□. 74 □□□□□□ □□□□□ (□□□□□ □□ □□□□),
15–17 □□□□□□□□□□□□□, □ □□□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□, 1–3, 8–9, 15–17, 213, 342–
68. 85–86, 294, 312
□□□□□□□□ □□ □□□□□□; □□□□□ □□□□ - □□□□□ (□□□□□□, □□□□□□□□□) □□ □□□□
(□□ □□), 14, 86, 88, 100, 139, 161–62, 165,
□□□□□□□□□ 413

196, 294; □□□□□□□□□□□□ □□□□, 90, 148–50, □□□□□□□□□□□□□□□, 13, 213–15, 218–21,
225, 231–
155–57, 161–62, 174 n. 29. □□ □□ □□□□□□ 33

कोसेम; शघाब उपन्यास, 6–7, 11, 14–17, 213, 220, 238, मातृत्व और माताएँ। देखें बच्चा— 290–313, 319, 321, 323–40, 344, 362, जन्म देना और बच्चे का पालन-पोषण; माँ 368 n. 1, 369 n. 14, 371 n. 43
शासक नुसायबा बीटी। का'ब (उम्म उमरा), मुहद्देरे, 105, 119, 129, 131 29-30, 33-34, 35, 37

मुहाजिरात, 25–29, 31–32 ओकमैन, कैरोल, 268, 285 एन. 8 मुहम्मद (इस्लाम के पैगंबर), 10, आदेश, सार्वजनिक या सामाजिक, 50–65, 87–88, 21, 23–36, 38, 40, 43, 47 एन. 50, 70–71, 108–9, 114–116, 118, 128–30, 198. देखें 93, 153, के अवशेष, 155, 159, 160; मकबरा भी कानून; मानदंड; महिलाएं: सार्वजनिक, 167 स्थान और मुहम्मद अली (मिस्र के शासक), 295, प्राच्यवाद, 2, 9, 14, 73, 82 एन. 18, 301-2, 311, 354 87-88, 89, 100, 171 एन. 2, 179, 239, मुहम्मद अल-सादिक बे (हुसैनिद 257-58, 262, 282-83; गृह सज्जा बे), 188-89, 201 और, 223-24, 237-38, 293-9 1-3, 198 12-16, 53, 86, 104-32, 180, 214, 219, मुक्ताफी, अल-(खलीफा), 90 225, 237-58, 276, 292-94, 311-12; 90–96, 319–40, 349. इस्तांबुल 98, 100 ओटोमन शाही परिवार, 104, 136–70 मुराद तृतीय (ओटोमन सुल्तान), 142–43 भी देखें।
मुस्तफा प्रथम (ओटोमन सुल्तान), 166 चित्र। कला देखें मुस्तफा आगा (मुख्य हिजड़ा), 166 स्वर्ग: यूरोपीय चित्रकला में, मुअतदिद, अल- (खलीफा), 91 280; कुरान में, 279-80

नाहदा पालन-पोषण। देखें बच्चे का जन्म और बच्चे का पालन-पोषण, 225-26; बच्चे ना'इम (अल-मुक्तादिर की माँ)। देखें पैटरसन, ऑरलैंडो, 137, 171 एन. 4 शग़ाब किसान, 105, 110 नासिफ़, मलक हिफ़नी, 293 पियर्स, लेस्ली, 12, 52-53, 86, 89-90, राष्ट्रवाद, 16-17, 47 एन. 52, 178, 206 100, 322 एन. 7, 311-12, 342-43, 346, 352, 365-68 पर्किन्स, केनेथ, 203 नेड, लिंडा, 267 पर्निओला, मारियो, 269-70 नर्वल, जेरार्ड डी, 307 पेरोट, फिलिप, 266-67 समाचार पत्र और पत्रिकाएँ, 6, 225-26, 267; फ़ारसी पत्र, द (मोंटेस्क्यू), 228, 290-91, 293, 296-97, 319, 346- 85-86, 294, 312 47, 353, 355-57, 362; फिलिप, थॉमस, 295, 305 250, 257, 357, 365, 370 एन का चित्रण। 22 फ़ोटोग्राफ़ी, 13-14, 237-38; सह-निरंजना, सीमांतिनी, 79 सुमेर, 240, 242-43, 246, 257, नूरानी,

यासीन, 11, 21, 86 258 एन। 4; उत्तरी, डेबोरा एप्सटीन के यूरोपीय उत्पादक, 349 240-48, 253-54, 257; यूरोपीय मानदंड, सामाजिक और कानूनी, 52-55, 63, 66 विषयों के रूप में, 247-48; मॉडल इन, एन. 8, 105–6, 109–10, 130–32, 179, 203, 242–47, 257; ओटोमन उत्पादक 223, 297, 352. सम्मान; कानून; और विषय, 237–41, 249–57; प्रतिनिधि-मुहद्दरे; महिलाओं का एकांत, प्रतिनिधित्व संबंधी अस्थिरता, 239–41, 414 (सूची में) भी देखें।
फोटोग्राफी (जारी) रब्बत, नासिर, 4, 19 एन. 8
246–47; पर्यटक और, 242–43, 246– जाति: शाही हरम पदानुक्रम और,
48, 253, 256 142–44, 147–48, 173 n. 20; त्वचा का रंग
दलाल, 112–13, 115, 119, 127–28, 357–59 भेदों को मार्कर के रूप में, 14–15, 82
राजनीतिक शक्ति। देखें हरेम n. 15, 83 n. 28, 136–38, 180, 201–2, राजनीतिक प्रतीक। हरम 272, 297, 299, 305–7, 312–13 बहुविवाह (बहुविवाह), 2, 12, 71, 72, रीड, सर थॉमस, 186–87, 194–95 देखें;
88–89, 91–92, 97–99, 101, 181, 225, परिवार, 192, 195, 204
270, 276, 284 एन. 2, 287 एन. 39, 294, रीड, डोनाल्ड, 293–94
305–6 रिबेरो, एलीन, 264 पूर्व-इस्लामिक युग: लिंग और, 293, 351; रॉबर्ट्स, मैरी, 204, 257
कविता में, 55–58; गद्य में, 62, 291, रोमन साम्राज्य। पुरातनता 351 रोस्तम, नाइला, 205 संरक्षण, 212 देखें; अलेप्पोरी घर सईद, अमीना अल-, 4, 10, 15
और, 217–18, 222–25, 234 n. 16; लिंग
सबीका (वरीयता), 29, 32, 39, 43, 46
और, 213; संग्रहालय और, 218–20, 231;
क्रमांक 25
राष्ट्रवाद और, 211–12, 215–17, 220
सफाविद युग, 90, 121–22
मुद्रण एवं प्रकाशन, 226, 291, सहाबियात (महिला सहाबा)
346–47 पैगंबर मुहम्मद), 21, 23–48. देखें
निजी, 11, 15, 22, 50–65, 66 एनएन. 8–9, 77–78, 86, 198–99, 364–65. व्यक्तिगत नाम भी देखें।

सैद, एडवर्ड, 9, 267, 282–83
सार्वजनिक; महिलाएं: सार्वजनिक स्थान और संतों की समाधियाँ, 184, 200–201 वेश्यावृत्ति, 16–17, 112, 287 एन. 39, 293, सलामंद्रा, क्रिस्टा, 221, 224, 232
321, 325–26, 331–34, 336–39, 341

सैलून, 189, 227–30, 302
एन. 23, 342–46, 348–49, 352–68, 372
सामी, अली, 249–50, 257
एन. 49; वैधीकरण, 343, 354–60,
364. यह भी देखें शिख, इरविन, 5, 11, 22, 86, 315 एन. 16 पिम्प्स सी बाथिंग, 13, 177, 179, 182–83, 185;
नीतिवचन, 51, 229
वास्तुकला, 177, 182–85, 197–99,
सार्वजनिक (क्षेत्र), 11, 22, 50–54, 64–65,
203–5; विनियम और, 197–99
77–78, 80, 92, 100, 116, 232, 292, 346,

364–65. सेबाह और जोइलियर, 243–47, 250–51 भी देखें। महिलाएं: सार्वजनिक
257, 258 एन. 5
स्थान और
पर्दा, 70. महिलाओं के एकांतवास, 10, 12, 15-17, 21 भी देखें। एकांत
23, 39–42, 44, 46 एन. 36, 46 एन. 38, 49,
महिलाएं; लिंग के आधार पर पृथक्करण
54, 62–63, 65, 72, 76, 89–90, 94–97,

नायिका (हरम की परिचारिका), 99, 104–6, 129–30, 141–42, 155–58,
93–96, 100–101 177–79, 238, 293, 311–12; संबोधित
क़स्तली, इब्न दरराज अल-, 54, 59–62, 64 उपन्यासों और संस्मरणों में, 290– 92, कुरान, द, 26–27, 30–32, 38–39, 295–96, 298–99, 302–11, 321, 331–32,

45 n. 5, 45 n. 11, 46 n. 36, 68 n. 35, 350–52, 357; पुरुषों के, 16, 141–42, 144,
70–71, 108, 112, 142, 152–53, 158, 155–56, 161–62, 225, 304–5, 308–11,

162, 172 n. 7, 175 n. 38; स्वर्ग में, 337–38 यह भी देखें हरम 279–80 पृथक्करण: लिंग के आधार पर, 4, 16, 44, 49,
कुतुब, सैय्यद, 351 65, 70-72, 81, 129, 141, 158-59, 163-
66, 175 एन. 44, 198–99, 225, 229, 304,
इंडेक्स 415

330, 349; और हरम यात्राएँ, 195, 203; स्थानिक सोच: लिंग और, 7, 9–11, वेश्याओं की संख्या, 355–56; जाति के अनुसार, 82 14, 69–81, 85–86, 220, 225, 230–33,
संज्ञा 15; प्रजा से शासक परिवार का, 342, 346–47, 352, 354, 358, 361; मुस

—

141–42, 156–58, 304, 310–11. लिम समुदायों और, 8–9, 63–64, महिलाओं: सार्वजनिक स्थान और 70–73, 80–81, 147, 162, 342–43, 354; सेलामलिक, 70, 77, 154 सीरियाई उपन्यास और, 220, 313; सिद्धांत सेलिम प्रथम (ओटोमन सुल्तान), 107, 110–11, और, 7, 11, 63–64, 72–81 भी देखें
116–21, 126–30, 142, 173 n. 20 स्पेंसर, हर्बर्ट, 305 सेल्जुक, 25, 39–43 स्टेहेली, लिन, 77–78 सेराग्लियो, 136, 148, 171 n. 2, 172 n. 6, 196 स्टैलीब्रास, पीटर, 74–75 यौन आचरण, 99, 106–32, 188–89; स्टीवर्ट, मैरी लिन, 202
यूरोपीय कला में चित्रित, 273–76. सुलेमान प्रथम (ओटोमन सुल्तान), 107, 109,
यह भी देखें: बेटियाँ; समलैंगिकता; 111, 117, 119, 121, 124–31, 141–43, 154 विवाह; पुरुष सुल्तान, ओटोमन, 12, 86, 106–32, यौन निंदा (कज़फ़), 109, 112, 125 139–40, 206 n. 9; का एकांतवास, 16, शग़ाब (अल-मुक्तादिर की माँ), 105, 139, 141–44, 154, 159–60, 165; 91-93, 95 प्रतीकात्मक पिता, 154 के रूप में। इंदी-शजरात अल-दुर (ज़ायदान) भी देखें, 303 व्यक्तिगत नाम शा'रावी, अंतवान, 228-31, 233 सीरिया और सीरियाई, 10, 13, 120-21, 189, शा'रावी (शारावी), हुडा, 89, 206, 199, 211-32, 349. ईसाई धर्म n भी देखें। 7, 302,

306, 349 और ईसाई: सीरियाई; ज़ायदान, शीही, स्टीफ़न, 307 जुर्जी; ज़ियादा, मेय शिबली, मान, 217
तब्बख, रागिब अल-, 224, 226-28
शिस्लर, ए. होली, 15, 171–72 एन. 5, 238,
Tanukhi, al-, 88, 90, 93, 97–101
276, 287 एन. 39, 287 एन. 49, 293, 370
तंजीमत, 174 संख्या 25
एन. 15
ताराज़ी, फिलिप, 225, 228
सिबली, डेविड, 75–76
तैमूर, आयशा, 7
दास बाजार और दास व्यापार, 144, 173
टेलीविजन धारावाहिक, 213, 220
एन. 20, 306–8 टेरकुमान-ए हकीकत, 319 गुलामी और गुलाम: घरों में या थॉम्पसन, एलिजाबेथ, 53
हरम, 15, 66 n. 4, 89, 105–6, 116, हज़ार और एक रातें, 274, 283, 294
117, 139, 162, 171 एन. 4, 181, 225, 299;
टोलेडानो, एहूद, 299
और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, 282 एन. 2;
टोपकापी पैलेस (इस्तांबुल), 136-70
ओटोमन प्रजा के रूप में, 110–11; के रूप में
पर्यटन, 13–14, 174 एन. 26, 177, 183–85,
फोटोग्राफिक विषय, 248; प्रतिनिधि—
189–90, 195–97, 200–205, 217–20,

प्रस्तुत, 268–69, 272, 297–99, 302,
304–9, 321–23, 327–31. यह भी देखें 237, 242–43, 246–49, 256 अनुवाद और अनुवादक, 274, 290– रसोइया और रखैलें; हिजड़े
92, 302, 319, 323, 347–48, 363

सामाजिकता, 178–81, 185, 188, 203–4, 230,

233, 302, 366. ट्यूनिस और ट्यूनीशिया भी देखें, 6, 13, 86, 177–205 हरम यात्राएँ; सैलून तुर्की, 1–3, 190. इस्तांबुल भी देखें; ओटोमन साम्राज्य और प्रजा
सोडोमी, 127–28
सॉर्डेल, डोमिनिक, 97 तुर्की दूतावास पत्र (मोंटेगु), 8,
266–67, 283

स्पेन, डैफ्ने, 7, 19 एन. 26, 360
तुर्कमेन, 120–22, 126
416 इंडेक्स

उलकेन, हिल्मी ज़िया, 320 67 एन। 36, 70; मिस्र, 89, 193, 281,
उमर बिन अबी रबीआ, 54–59, 62 291, 293, 301–3, 342–68; यूरोपीय,
‘Umar b. al-Khattab (caliph), 31, 46 3, 13, 16, 86, 181, 188–202, 248, 294, एन. 22, 71 324, 327–31, 336, 348–49, 352; जैसा कि फिक-
उमय्यद बिन्त क़ैस, 27–28 राष्ट्रीय चरित्र, 291–92, 296–307,
उमय्यद कविता, 54–59, 62 323–40, 343–45, 349–53, 357–61,
उम्म 'उमारा (नुसायबा बीटी. का'ब), 363-65; अवैध यौन आचरण और,
29–30, 33–35, 37 55–56, 106, 110–17, 122, 305–6; में
उम्म अल-वलाद। उपपत्नी प्रथा और शाही ओटोमन हरम, उपपत्नियाँ 138–39, 141– 43, 150–56, 160–66, 174 देखें
उम्म अयमान, 26, 44 एन. 29, 175 एन. 31; कवियों और पाठकर्ताओं के रूप में- उम्म हबीबा बीटी. नबाती अल-असदी, कविता के 29 वर्ष, 65, 67 एनएन। 35-36, 324;
उम्म कब्शा, 28–29, 36–37 सार्वजनिक स्थान और, 10–11, 13, 15–16,
उम्म कुल्थम बीटी। 'उकबा, 26-27, 45 21-22, 24-25, 32-44, 47-48 एन. 54,
एन. 11 65, 70–72, 76–77, 80–81, 89, 91–92,
उम्म सलामा, 28, 30, 46 एन. 22 95-96, 104-5, 111, 113, 128-29, 182,
उम्म सिनान अल-इस्लामिया, 28, 35, 36, 207 एन. 14, 214, 228, 232, 327, 330-32,
41 342–43, 349, 353–68; सीरियाई, 213,
उम्म उमरा अल-अंसारी, 30, 220, 225-33; ट्यूनीशियाई, 13, 80, 86,

उम्म पेपर बीटी. 'अब्द अल्लाह बी. 177–78, 181–84, 190–203, 206 एन. 7; अल-हरिथ (अल-शाहिदा), 31, 38-39 तुर्की और तुर्क, 1-3, 15-16,
यूनेस्को, 216–17 104–32, 249–57, 296–98; धन और
शहरी नियोजन और विकास, की शक्ति, 93, 96, 143, 167, 190, 294,
214–18 303. यह भी देखें: बच्चे को जन्म देना और पालना; बेटियाँ; माँ वाडेट, जीन क्लाउड, 97
शासक; वेश्यावृत्ति

वैध सुल्तान। शासक की माता देखें वुड, क्रिस्टीना, 188–89, 195, 197, 199 काउ ब्राउन, डेमेट्रा, 1–4, 8–9, 14 महिलाओं के अधिकार। नारीवाद देखें पर्दा प्रथा। देखें हिजाब वुड, रिचर्ड, 188–89, 199 विक्टोरियन प्रथाएं, 259 एन. 19, 281, 284– 85 एन. 3, 309, 354, 372 एन. 49 यंग तुर्क, 298–99, 316 एन. 54
वक्फ, 167-69, 176 एन. 54 ज़ाविया. संतों की कब्रें देखें वेटेनपॉघ, हेघ्नार ज़िटलियान, 4, ज़ायदान, जुर्जी, 14-15, 238, 316 एन। 55, 347;
13, 86 द्वारा लिखित उपन्यास, 291–313; जीवन, 290–91;
व्हाइट, एलोन, 75 राजनीतिक दर्शन, 302, 305,
विधवाएँ, 91, 114, 116, 128, 191 311–12; नस्ल संबंधी चित्र, 306–7, 310– विगली, मार्क, 76, 78 13; दासता पर, 308. यह भी देखें हरम: महिलाएं: अब्बासिद, 10, 12, 40-41, राजनीतिक रूपक के रूप में; व्यक्तियों की उपाधियाँ-
86–101, 294, 303–11; युद्धक्षेत्र और व्यक्तिगत रचनाएँ
युद्ध में भूमिकाएँ, 9, 24, 26–30, 33, ज़नाना, 16. यह भी देखें हरम 35–38, 41, 67 n. 36, 122; ब्रिटिश, 2–3, ज़ेनेब हनोम (उपनाम), 2–3, 9
76–77, 187–90, 203, 281; प्रारंभिक मुस- ज़िना। यौन आचरण लिम, 10, 22–48, 50, 52–65, 67 एन. 35, ज़ियादा, मय्य, 7, 227, 347–48 देखें
मैरिलिन बूथ एडिनबर्ग विश्वविद्यालय में अरबी और इस्लामी अध्ययन में इराक चेयर का पद संभालती हैं।

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा

□□□ □□ □□□□□□□: □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ / □□□□□□□□ □□□,
□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□.
□□□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□
isBn 978-0-8223-4858-0 (□□□□□□ : □□□□□□ □□□□□)
isBn 978-0-8223-4869-6 (pbk. : alk. paper)
1. □□□□ □□. □□□, □□□□□□□□
HQ1170.H288 2010
306.84′23091767—dc22
2010024127